।। पूर्ण परमात्मने नमः ।।

जीने की राह

(Way of Living)

लेखक :- संत रामपाल दास
शिष्य
स्वामी रामदेवानंद जी महाराज

जीव हमारी जाति है, मानव (Mankind) धर्म हमारा।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

अवश्य देखिये

संत रामपाल जी महाराज के मंगल प्रवचन

STV HARYANA NEWS पर सुबह 06:00 से 07:00

पर दोपहर 02:00 से 03:00

MH ONE

साधना पर रात 07:30 से 08:30

ईश्वर पर रात 08:30 से 09:30

खबर fast पर रात 09:30 से 10:30

प्रकाशक :- प्रचार प्रसार समिति तथा सर्व संगत
सतलोक आश्रम, हिसार-टोहाना रोड़ बरवाला
जिला-हिसार (प्रान्त-हरियाणा) भारत।

मुद्रक :- कबीर प्रिंटर्स
C-117, सैक्टर-3, बवाना इन्डस्ट्रियल ऐरिया, नई दिल्ली।

सम्पर्क सूत्र :- 08222880541, 08222880542, 08222880543
08222880544, 08222880545

e-mail :- jagatgururampalji@yahoo.com
visit us at :- www.jagatgururampalji.org

विषय सूची

❑❑❑

भूमिका

जीने की राह पुस्तक घर-घर में रखने योग्य है। इसके पढ़ने तथा अमल करने से लोक तथा परलोक दोनों में सुखी रहोगे। पापों से बचोगे, घर की कलह समाप्त हो जाएगी। बहू-बेटे अपने माता-पिता की विशेष सेवा किया करेंगे। घर में परमात्मा का निवास होगा। भूत-प्रेत, पित्तर-भैरव-बेताल जैसी बुरी आत्माऐं उस परिवार के आसपास नहीं आएंगी। देवता उस भक्त परिवार की सुरक्षा करते हैं। अकाल मत्यु उस भक्त की नहीं होगी जो इस पुस्तक को पढ़कर दीक्षा लेकर मर्यादा में रहकर साधना करेगा।

इस पुस्तक को पढ़ने से उजड़े परिवार बस जाऐंगे। जिस परिवार में यह पुस्तक रहेगी, इसको पढ़ेंगे। जिस कारण से नशा अपने आप छूट जाएगा क्योंकि इसमें ऐसे प्रमाण हैं जो आत्मा को छू जाते हैं। शराब, तम्बाकू तथा अन्य नशे के प्रति ऐसी घणा हो जाएगी कि इनका नाम लेने से रूह काँप जाया करेगी। पूरा परिवार सुख का जीवन जीएगा। जीवन का सफर आसानी से तय होगा क्योंकि जीवन का मार्ग साफ हो जाता है।

इस पुस्तक में, पूर्ण परमात्मा कौन है? उसका नाम क्या है? उसकी भक्ति कैसी है? सब जानकारी मिलेगी। मानव जीवन सफल हो जाएगा। परिवार में किसी प्रकार की बुराई नहीं रहेगी। परमात्मा की कपा सदा बनी रहेगी। जीने की राह उत्तम मिलने से यात्रा आसान हो जाएगी। जो इस पुस्तक को घर में नहीं रखेगा, वह जीवन की राह उत्तम न मिलने से संसार रूपी वन में भटककर अनमोल जीवन नष्ट करेगा। परमात्मा के घर में जाकर पश्चाताप के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं लगेगा। उस समय आपको पता चलेगा कि जीने की राह उत्तम न मिलने से जिंदगी बर्बाद हो गई। फिर आप परमात्मा से विनय करेंगे कि हे प्रभु! एक मानव जीवन और बख्श दो। मैं सच्चे मन से सत्य भक्ति करूंगा। जीवन की सच्ची राह की खोज करने सत्संग में जाया करूंगा। आजीवन भक्ति करूंगा। अपना कल्याण करवाऊँगा। उस परमात्मा के दरबार (कार्यालय) में आपके पूर्व के जन्मों की फिल्म चलाई जाएगी जिनमें आप प्रत्येक बार जब-जब मानव जीवन प्राप्त हुआ था, आपने यही कहा था कि एक मानव जीवन और दे दो, कभी बुराई नहीं करूंगा। आजीवन भक्ति भी करूंगा। घर का कार्य निर्वाह के लिए भी करूंगा। पूर्ण सतगुरू से दीक्षा लेकर कल्याण करवाऊँगा। जो गलती अबके मानव जीवन में हुई है, कभी नहीं दोहराऊँगा/दोहराऊँगी।

फिर परमात्मा जी कहते हैं कि अपने आपको तो मूर्ख बनाकर जीवन नष्ट करके आ खड़ा हुआ पापों की गाड़ी भरकर, मुझे भी मूर्ख बनाना चाहता है। चल नरक में। फिर चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में चक्र लगा। जब कभी

मानव (स्त्री-पुरूष) शरीर मिले, सावधान होकर संतों का सत्संग सुनना और अपना कल्याण कराना।

पाठकजनों से निवेदन है कि इस पवित्र पुस्तक के पढ़ने से आपकी एक सौ एक (101) पीढ़ी लोक तथा परलोक में सुखी रहेगी। इसको परमात्मा का आदेश मानकर पूरा परिवार पढ़ें। एक पढ़े, अन्य सुनें या एक से अधिक पुस्तक लेकर भिन्न-भिन्न प्रतिदिन पढ़ें। इसमें लिखे प्रत्येक प्रकरण को सत्य मानें। मजाक में न लें। यह किसी सांगी की बनाई नहीं है, यह परमेश्वर के गुलाम रामपाल दास द्वारा हृदय से मानव कल्याण के उद्देश्य से लिखी गई है। लाभ उठायें।

।।सत साहेब।।

लेखक

दासन दास रामपाल दास
पुत्र/शिष्य स्वामी रामदेवानंद जी
सतलोक आश्रम बरवाला
जिला-हिसार, हरियाणा (भारत)

दो शब्द

प्राणी की जीवन की यात्रा जन्म से प्रारम्भ हो जाती है। उसकी मंजिल निर्धारित होती है। यहाँ इस पवित्र पुस्तक में मानव जीवन की यात्रा के मार्ग पर विस्तारपूर्वक वर्णन है। मानव (स्त्री/पुरूष) की मंजिल मोक्ष प्राप्ति है। उसके मार्ग में पाप तथा पुण्य कर्मों के गढ़ढ़े तथा काँटे हैं। आप जी को आश्चर्य होगा कि पाप कर्म तो बाधक होते हैं, पुण्य तो सुखदाई होते हैं। इनको गढ़ढ़े कहना उचित नहीं। इसका संक्षिप्त वर्णन :-

पाप रूपी गढ़ढ़े व काँटे :- मानव जीवन परमात्मा की शास्त्रविधि अनुसार साधना करके मोक्ष प्राप्त करने के लिए प्राप्त होता है। पाप कर्म का कष्ट भक्ति में बाधा करता है। उदाहरण के लिए पाप कर्म के कारण शरीर में रोग हो जाना, पशु धन में तथा फसल में हानि हो जाना। ऋण की वंद्धि करता है। ऋणी व्यक्ति दिन-रात चिंतित रहता है। वह भक्ति नहीं कर पाता। पूर्ण सतगुरू से दीक्षा लेने के पश्चात् परमेश्वर उस भक्त के उपरोक्त कष्ट समाप्त कर देता है। तब भक्त अपनी भक्ति अधिक श्रद्धा से करने लगता है। परमात्मा पर विश्वास बढ़ता है, दंढ़ होता है। परंतु भक्त को परमात्मा के प्रति समर्पित होना चाहिए। जैसे पतिव्रता स्त्री अपने पति के अतिरिक्त किसी अन्य पुरूष को कामपूर्ति (Sexual Satisfaction) के लिए स्वपन में भी नहीं चाहती चाहे कोई कितना ही सुंदर हो। उसका पति अपनी पत्नी को हरसंभव कोशिश करके सर्व सुविधाऐं उपलब्ध करवाता है। विशेष प्रेम करता है। इसी प्रकार दीक्षा लेने के पश्चात् आत्मा का संयोग परमात्मा से होता है। गुरू जी आत्मा का विवाह परमात्मा से करवा देता है। यदि वह मानव शरीरधारी आत्मा अपने पति परमेश्वर के प्रति पतिव्रता की तरह समर्पित रहती है यानि पूर्ण परमात्मा के अतिरिक्त अन्य किसी देवी-देवता से मनोकामना की पूर्ति नहीं चाहती है तो उसका पति परमेश्वर उसके जीवन मार्ग में बाधक सब पाप कर्मों के काँटों को बुहार देता है। उस आत्मा की जीने की राह सुगम व बाधारहित हो जाती है। उसको मंजिल सरलता से मिल जाती है। उस आत्मा के लिए परमात्मा क्या करता है? उसको संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्राप्त ज्ञान को इस प्रकार बताया है :-

गरीब, पतिव्रता जमीं पर, ज्यों–ज्यों धरि है पाँवै।
समर्थ झाड़ू देत है, ना काँटा लग जावै।।

कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

कबीर, साधक के लक्षण कहूँ, रहै ज्यों पतिव्रता नारी।
कह कबीर परमात्मा को, लगै आत्मा प्यारी।।
पतिव्रता के भक्ति पथ को, आप साफ करे करतार।
आन उपासना त्याग दे, सो पतिव्रता पार।।

भक्ति करने से पाप नष्ट हो जाते हैं जो भक्ति की राह में रोड़े बनते हैं।

कबीर, जब ही सत्यनाम ह्दय धरो, भयो पाप को नाश।

जैसे चिंगारी अग्नि की, पड़ै पुराने घास।।

इसलिए पूर्ण गुरू से दीक्षा लेकर प्रत्येक स्त्री-पुरूष, बालक (तीन वर्ष के पश्चात्) वृद्ध-युवा को भक्ति अवश्य करनी चाहिए।

❖ पुण्य भी भक्ति की राह में बाधक है :-

पूर्व जन्म के पुण्यों के कारण घर में धन होता है। सर्व सुविधाऐं होती हैं। किसी को राज पद प्राप्त होता है जो भक्ति में बाधक होता है। वह सुख उसको परमात्मा से कोसों (कई किलोमीटर) दूर कर देता है। ऐसा सुख भी जीने की राह में रोड़ा है। परमात्मा प्राप्ति की मंजिल को दूर कर देता है।

कबीर, सुख के माथे पत्थर पड़ो, नाम ह्रदय से जावै।
बलिहारी वा दुख के, जो पल–पल नाम रटावै।।

एक धनी व राज पद प्राप्त व्यक्ति को परमात्मा की कथा सुनाने की कोशिश करके देखें। उसकी बिल्कुल रूचि नहीं बनेगी। दूसरी ओर पाप कर्मों की मार झेल रहे व्यक्ति को परमात्मा चर्चा सुनायें। उसे बताऐं कि परमात्मा सर्व कष्ट दूर कर देता है। आप परमात्मा की भक्ति किया करो। देखो, अपने गाँव का अमूक व्यक्ति उस संत से दीक्षा लेकर सुखी हो गया। वह भी आपकी तरह कष्ट में था। तो वह दुःखी व्यक्ति भक्ति पर लग जाता है। उसके लिए वह दुःख वरदान बन गया। जो सुखी है, उसको कैसे समझाऐं, उसके पास तो पुण्यों की मलाई पर्याप्त है। वह धनी व्यक्ति अपने पुण्यों को खा-खर्च कर खाली होकर तथा पापों की मालगाड़ी भरकर मृत्यु उपरांत परमात्मा के दरबार में मुँह लटकाकर भयभीत होकर जाएगा, कुत्ते-गधे, सूअर के जन्म पाएगा। इसके विपरीत दुःखी-निर्धन व्यक्ति परमात्मा की भक्ति करके दान-धर्म करके वर्तमान जीवन में भी सुखी हो जाएगा। पाप कर्मों से बचकर पुण्यों की मालगाड़ी भरकर भक्ति धन का धनी होकर परमात्मा के दरबार में निर्भय होकर जाएगा। परमात्मा सीने से लगाएगा। उस भक्त को मोक्ष देकर सदा सुखी कर देगा।

यदि धनी-राज्य पद प्राप्त सुखी व्यक्ति भी भक्ति पर लग जाए तो उसका तो कार्य बना-बनाया है, मोक्ष में कोई अड़चन नहीं है।

प्रश्न :- एक सज्जन पुरूष ने कहा कि मैं कोई नशा नहीं करता, सब बुराईयों से दूर हूँ। दूसरे की बहन-बेटियों को अपनी समझता हूँ। कोई पाप नहीं करता। मुझे भक्ति की कोई आवश्यकता नहीं है। सत्संग में ऐसे-ऐसे स्त्री-पुरूष जाते देखे हैं जो प्रत्येक बुराई करते थे, बदनाम थे।

उत्तर :- जैसे दो एकड़ जमीन है। एक एकड़ को बाहकर संवार रखा है यानि उसके झाड़-बोझड़े, घास काटकर हल या ट्रैक्टर से बाह (गुड़ाई) करके साफ-सुथरा कर रखा है और बीज बोया नहीं।

दूसरे एकड़ जमीन में सब खरपतवार, झाड़-बोझड़े तथा घास अड़ा खड़ा है तो दोनों ही व्यर्थ हैं। यदि दूसरे एकड़ को किसी ने संवारकर साफ करके गेहूँ बो दिया और पहले साफ किए में कुछ नहीं बोया तो दूसरा उस पहले वाले से कई

गुणा उपयोगी (अच्छा) है जिसको संवारकर छोड़ दिया, बीज बोया नहीं।

इसलिए यदि आप विकार-बुराई रहित हैं तो आप जी को भक्ति बीज बोना पड़ेगा, तभी आप जी के शरीर रूपी जमीन का लाभ होगा।

जो बुराई करते थे, उनको ज्ञान हुआ और बुराई त्यागकर भक्ति करते हैं तो उन्होंने अपनी जीने की राह बदल ली, साफ कर ली। मंजिल निकट हो गई।

आप आगे पढ़ेंगे कि एक वैश्या ने कबीर परमात्मा जी का सत्संग सुना और अपनी राह बदल ली तथा नाम दीक्षा लेकर सत्संग में जाने लगी। नगर के लोगों को अच्छा नहीं लगा। मुँह जोड़कर बातें बनाने लगे कि कबीर के सत्संग में बदनाम औरतें जाती हैं। ये अच्छे संत नहीं हैं। सब ऐसे ही लोग-लुगाई इसके सत्संग में जाते हैं। अपनी बहन-बेटियों को वहाँ मत जाने देना। यह विचार लोगों के सुनकर कुछ भक्त भी गुरू जी से गाँव वालों की भाषा बोलने लगे। तब परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि :-

कुष्टी हो संत बंदगी कीजिए। जे हो वैश्या को प्रभु विश्वास, चरण चित दीजिए।।

भावार्थ :- यदि किसी भक्त को कुष्ट रोग है और वह भक्ति करने लगा है तो भक्त समाज को चाहिए कि उससे घृणा न करे। उसको प्रणाम करे जैसे अन्य भक्तों को करते हैं। उसका सम्मान करना चाहिए। उसका हौंसला बढ़ाना चाहिए। भक्ति करने से उसका जीवन सफल होगा, रोग भी ठीक हो जाएगा। इसी प्रकार किसी वैश्या बेटी-बहन को प्रेरणा बनी है भक्ति करने की, सत्संग में आने की तो उसको परमात्मा पर विश्वास हुआ है। वह सत्संग विचार सुनेगी तो बुराई भी छूट जाएगी। उसका कल्याण हो जाएगा। समाज से बुराई निकल जाएगी। यदि वह सत्संग में आएगी ही नहीं तो उसको अपने पाप कर्मों का अहसास कैसे होगा? जैसे मैला वस्त्र जल तथा साबुन के संपर्क में नहीं आएगा तो निर्मल कैसे होगा? इसलिए ऐसी बदनाम स्त्री भी भक्ति करती है तो उसको भी विशेष आदर से बुलायें ताकि उसको सत्संग में आने में संकोच न हो। यदि उसको रोकोगे तो आप पाप के भागी बन जाओगे। इससे आगे की कथा आप इसी पुस्तक ''जीने की राह'' में पृष्ठ 107 पर पढ़ें जिसकी हैडिंग है, ''कबीर जी द्वारा शिष्यों की परीक्षा''।

श्रीमद्भगवत गीता के अध्याय 9 श्लोक 30 में भी यही प्रमाण है। लिखा है कि कोई अतिश्य दुराचारी व्यक्ति भी है। यदि वह विश्वास के साथ परमात्मा की भक्ति करने लग गया है तो उसे महात्मा के तुल्य मानना चाहिए। वह संतो के विचार सुनकर सुधर जाएगा और अपना कल्याण करवा लेगा। इसलिए मानव शरीरधारी प्राणी को परमात्मा की भक्ति तथा शुभ कर्म, दान-धर्म गुरू जी की शरण में आकर अवश्य करने चाहिऐं।

पूज्य कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

कबीर, मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारं–बार।
तरवर से पत्ता टूट गिरे, बहुर ना लागे डार।।

भावार्थ :- कबीर परमात्मा जी ने समझाया है कि हे मानव शरीरधारी प्राणी!

यह मानव जन्म (स्त्री/पुरूष) बहुत कठिनता से युगों पर्यन्त प्राप्त होता है। यह बार-बार नहीं मिलता। इस शरीर के रहते-रहते शुभ कर्म तथा परमात्मा की भक्ति कर, अन्यथा यह शरीर समाप्त हो गया तो आप पुनः इसी स्थिति यानि मानव शरीर को प्राप्त नहीं कर पाओगे। जैसे वृक्ष से पत्ता टूटने के पश्चात् उसी डाल पर पुनः नहीं लगता।

इसलिए इस मानव शरीर के अवसर को व्यर्थ न गँवा। कबीर जी ने फिर कहा है कि :-

कबीर, मानुष जन्म पाय कर, नहीं रटैं हरि नाम।
जैसे कुंआ जल बिना, बनवाया क्या काम।।

भावार्थ :- मानव जीवन में यदि भक्ति नहीं करता तो वह जीवन ऐसा है जैसे सुंदर कुंआ बना रखा है। यदि उसमें जल नहीं है या जल है तो खारा (पीने योग्य नहीं) है, उसका भी नाम भले ही कुंआ है, परंतु गुण कुंए (Well) वाले नहीं हैं। इसी प्रकार मनुष्य भक्ति नहीं करता तो उसको भी मानव कहते हैं, परंतु मनुष्य वाले गुण नहीं हैं।

पूर्व जन्मों में किए शुभ-अशुभ कर्मों तथा भक्ति के कारण कोई स्वस्थ है। वह अचानक रोगी हो जाता है और लाखों रूपये उपचार पर खर्च करके मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। कोई जन्म से रोगी होता है, आजीवन कष्ट भोगकर मर जाता है। कोई निर्धन होता है, कोई धनवान ही जन्मता है। किसी के लड़के-लड़की होते हैं तो किसी को संतान प्राप्त ही नहीं होती। किसी को पुत्री-पुत्री ही संतान होती है, चाहने पर भी पुत्र नहीं होता। यह सब पूर्व जन्मों के कर्मों का फल मानव भोगता है। जब तक पुनः भक्ति प्रारम्भ नहीं करता तो तब तक पूर्व वाले संस्कार ही प्राणी को प्राप्त होते हैं। जिस समय पूर्ण सतगुरू से दीक्षा लेकर मर्यादा से भक्ति करने लगता है तो शुभ संस्कारों में वृद्धि होने से दुःख का वक्त सुख में बदलने लग जाता है।

''मानव जीवन की आम धारणा''

जब तक यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान नहीं होता तो जन-साधारण की धारणा होती है कि :-

1. बड़ा होकर पढ़-लिखकर अपने निर्वाह की खोज करके विवाह कराकर परिवार पोषण करेंगे। बच्चों को उच्च शिक्षा तक पढ़ाऐंगे। फिर उनको रोजगार मिल जाए। उनका विवाह करेंगे। परमात्मा संतान को संतान दे। फिर हमारा कर्तव्य पूरा हुआ। कई बार गाँव या गवांड (पड़ौसी गाँव) के वृद्ध इकट्ठे होते तो आपस में कुशल-मंगल जानते तो एक ने कहा कि परमात्मा की कृपा से दो लड़के तथा दो लड़की हैं। कठिन परिश्रम करके पाला-पोसा तथा पढ़ाया, विवाह कर दिया। सब के सब बेटा-बेटियों वाले हैं। मेरा कार्य पूर्ण हुआ। 75 वर्ष का हो गया हूँ। अब बेशक मौत हो जाए, मेरा जीवन सफल हुआ। वंश बेल चल पड़ी, संसार में नाम रहेगा।

विवेचन :- उपरोक्त प्रसंग में जो भी प्राप्त हुआ, वह पूर्व निर्धारित संस्कार

ही प्राप्त हुआ, नया कुछ नहीं मिला।

एक व्यक्ति का विवाह हुआ। संतान रूप में बेटी हुई। मानव समाज की धारणा रही है कि पुत्र नहीं है तो उसका वंश नहीं चलता। (परंतु आध्यात्मिक ज्ञान की दृष्टि से पुत्र-पुत्री में कोई अंतर नहीं माना जाता) आशा लगी कि दूसरा पुत्र तो बेटा होगा। दूसरी भी लड़की हुई। फिर आशा लगी कि परमात्मा तीसरा तो पुत्र दे। परंतु तीसरी भी लड़की हुई। इस प्रकार कुल पाँच बेटियाँ हुई। पुत्र का जन्म हुआ ही नहीं। इस उदाहरण से स्पष्ट होता है कि न तो मानव का चाहा हुआ और न किया हुआ। जो कुछ हुआ, संस्कारवश ही हुआ। यह परमेश्वर का विधान है। मानव शरीर प्राप्त प्राणी को वर्तमान जन्म में पूर्ण संत से दीक्षा लेकर भक्ति करनी चाहिए तथा पुण्य-दान, धर्म तथा शुभ कर्म अवश्य करने चाहिऐं, अन्यथा पूर्व जन्म के पुण्य मानव जीवन में खा-खर्च कर खाली होकर परमात्मा के दरबार में जाएगा। फिर पशु आदि के जीवन भोगने पड़ेंगे।

❖ जैसे किसान अपने खेत में गेहूँ, चना आदि बीजता है। फिर परिश्रम करके उन्हें परिपक्व करके घर लाकर अपने कोठे (कक्ष) में भर लेता है। यदि वह पुनः बीज बो कर फसल तैयार नहीं करता है और पूर्व वर्ष के गेहूँ व चने को खा-खर्च रहा है तो वर्तमान में तो उसे कोई आपत्ति नहीं आएगी क्योंकि पूर्व वर्ष के गेहूँ-चना शेष है, परंतु एक दिन वह पूर्व वाला संग्रह किया अन्न समाप्त हो जाएगा और वह किसान परिवार भिखारी हो जाएगा। ठीक इसी प्रकार मानव शरीर में जो भी प्राप्त हो रहा है, वह पूर्व के जन्मों का संग्रह है। यदि वर्तमान में शुभ कर्म तथा भक्ति नहीं की तो भविष्य का जीवन नरक हो जाएगा।

अध्यात्म ज्ञान होने के पश्चात् मानव बुद्धिमान किसान की तरह प्रतिवर्ष प्रत्येक मौसम में दान-धर्म, स्मरण रूपी फसल बोएगा तथा अपने घर में संग्रह करके खाएगा तथा बेचकर अपना खर्च भी चलाएगा यानि पूर्ण गुरू जी से दीक्षा लेकर उनके बताए अनुसार साधना तथा दान-धर्म प्रति समागम में करके भक्ति धन को संग्रह करेगा। इसलिए परम संत मानव को जीने की राह बताता है। उसका आधार सत्य आध्यात्मिक ज्ञान सर्व ग्रन्थों से प्रमाणित होता है।

जैसा कि पूर्वोक्त प्रसंग में एक वृद्ध ने बताया कि सर्व संतान का पाल-पोसकर विवाह कर दिया। मेरे मानव जीवन का कार्य पूरा हुआ, मेरा जीवन सफल हुआ। अब बेशक मौत आ जाए। विचारणीय विषय है कि उसने तो पूर्व का जमा ही खर्च कर दिया, भविष्य के लिए कुछ नहीं किया। जिस कारण से उस व्यक्ति का मानव जीवन व्यर्थ गया।

कबीर जी ने कहा है कि :-

क्या मांगुँ कुछ थिर ना रहाई। देखत नैन चला जग जाई।।
एक लख पूत सवा लख नाती। उस रावण कै दीवा न बाती।।

भावार्थ :- यदि एक मनुष्य एक पुत्र से वंश बेल को सदा बनाए रखना चाहता है तो यह उसकी भूल है। जैसे श्रीलंका के राजा रावण के एक लाख पुत्र थे तथा

सवा लाख पौत्र थे। वर्तमान में उसके कुल (वंश) में कोई घर में दीप जलाने वाला भी नहीं है। सब नष्ट हो गए। इसलिए हे मानव! परमात्मा से यह क्या माँगता है जो स्थाई ही नहीं है। यह अध्यात्म ज्ञान के अभाव के कारण प्रेरणा बनी है। परमात्मा आप जी को आपका संस्कार देता है। आपका किया कुछ नहीं हो रहा। उस वृद्ध की बात को मानें कि पुत्र के होने से वंश वृद्धि होने से संसार में नाम बना रहता है। एक गाँव में प्रारम्भ में चार या पाँच व्यक्ति थे। उनके वंश के सैंकड़ों परिवार बने हैं। उनका वंश चल रहा है। उनका संसार में नाम भी चल रहा है। परंतु शास्त्रोक्त विधि से भक्ति न करने के कारण परमात्मा के विधानानुसार वह भला पुरूष कहीं गधा बनकर कष्ट उठा रहा होगा। वहाँ पर गधे के वंश की वृद्धि करके फिर कुत्ते का जन्म प्राप्त करके वहाँ उस कुल की वृद्धि करके अन्य प्राणियों के शरीर प्राप्त करके असंख्यों जन्म कष्ट उठाएगा। भावार्थ है कि मानव जीवन प्राप्त प्राणी को चाहिए कि सांसारिक कर्तव्य कर्म करते-करते आत्म कल्याण का कार्य भी करे। जिस कारण से परिवार से आने वाली पूर्व पाप की मार भी टलेगी, परिवार खुशहाल रहेगा। अन्यथा शुभ-अशुभ दोनों कर्मों का फल भोगने से कभी सुख तथा कभी दुःख का कहर भी झेलना पड़ता है।

एक समय दास (लेखक) एक गाँव में तीन दिन का सत्संग-पाठ कर रहा था। उसी परिवार का एक रिश्तेदार एक चार वर्ष के लड़के को साथ लिए आया। चर्चा में उसने बताया कि मुझे चार पुत्र, दो पुत्री संतान रूप में प्राप्त हुई। सबका विवाह कर दिया। मेरे जैसा सुखी हमारे गाँव में शायद ही कोई था। फिर ऐसी नौबत आई कि दो वर्ष में घर उजड़ गया। दो बेटे मोटरसाईकिल पर ससुराल जा रहे थे, दुर्घटना में भगवान के घर चले गए। उनकी पत्नी भी अन्य गाँव में विवाह दी। एक वर्ष पश्चात् एक पुत्र को खेत में ट्यूबवैल पर रात्रि में सर्प ने डस लिया, मृत मिला। चौथा इस दुःख से हृदयघात से चल बसा। सब बहुऐं भी चली गई। पत्नी का मानसिक संतुलन बिगड़ गया। यह लड़का बड़ी लड़की का है जिसके सहारे दिन काट रहा हूँ। बेटी को घर पर रखा है। प्रिय पाठकों से निवेदन है कि विवेक से काम लें और मानव जीवन की सच्ची राह पकड़ें, भक्ति अवश्य करें।

❖ संतान होना या ना होना यह आपके पूर्व के कर्मों का फल है। यदि संतान को धर्म-कर्म का ज्ञान नहीं है तो वह चाहे कितनी ही नेक है, कभी न कभी गलती कर ही देगी। वह सब पाप कर्मों के कारण होगा। एक व्यक्ति ने बताया कि मेरा ससुर चार एकड़ का जाट किसान था। उसने दिन-रात मेहनत करके कुल सोलह एकड़ जमीन खरीदकर बना ली यानि बारह एकड़ जमीन और मोल ले ली। चार लड़के थे और एक लड़की थी। सबकी शादी कर दी। साठ वर्ष की आयु में मेरे ससुर जी को अधरंग मार गया। चारों लड़के भिन्न रहते थे।

कुछ दिन बड़े बेटे में रहा, परंतु 6 महीने में ही कपड़ों में बदबू आने लगी। फिर तीसरे नम्बर वाले के घर में रहा, कुछ दिन बाद उसने भी हाथ खड़े कर दिए। इस प्रकार चारों पुत्र सेवा से तंग आ गए। गाँव की पंचायत ने मेरे ससुर जी की

सेवा कराने के उद्देश्य से दो एकड़ जमीन उसको अधिक देने का फैसला किया जो बेटा अपने पिता की सेवा करेगा। इस लालच में छोटे वाले ने सेवा करने की बात मान ली। 6 महीने में उसने कहा कि मेरे बस की बात नहीं है। रिश्तेदार इकट्ठे हुए। सब बच्चों को सभी प्रकार से समझाया, परंतु कोई सेवा को तैयार नहीं हुआ। वह भक्त बता रहा था कि मेरा ससुर बोल भी नहीं पा रहा था। जब छोटा पोता सामने आया तो गर्दन के संकेत से कह रहा था कि आजा मेरे पास, लाड करूंगा। यह भूल पड़ी है। बेटों ने तो कर दी मौज, पोतों की कसर बाकी है। उन दो एकड़ को ठेके पर देकर उसके लिए एक नौकर रखा, दुर्गति से मरा।

विचार करें कि ऐसे कमेरे (मेहनती) व्यक्ति को यह भी ज्ञान होता कि भक्ति तथा धर्म के बिना मानव जीवन नरक बन जाता है तो वह उसके साथ-साथ परमात्मा की भक्ति भी करता तथा ऐसी दशा को प्राप्त नहीं होता। बच्चे भी सेवा करते। सत्संग में यही शिक्षा दी जाती है। श्रद्धालुओं को दया-धर्म का पाठ पढ़ाया जाता है। आश्रम में सत्संग के दौरान वृद्ध, रोगी, अपंग, छोटे बच्चों सहित माताऐं, बहनें, बेटियां आते हैं। आश्रम में पुराने भक्तों तथा भक्तमतियों की ड्यूटी लगाई जाती है। वे आने वाले वृद्धों, रोगियों तथा अन्य असहायों की सेवा करते हैं। उनको स्नान कराते हैं। उनके वस्त्र धोते हैं। भोजनालय से भोजन-प्रसाद लाकर पण्डाल में बैठों को खिलाते हैं। चाय-दूध भी वहीं बैठों को लाकर देते हैं। विचार करें कि जो बच्चे (सत्संग में जाने वाले) तथा बेटी, बहनें, माई व भक्त-भाई सत्संग में आने वाले गैरों की सेवा करते हैं तो वे घर पर अपने माता-पिता, भाई-बहन, सास-ससुर की भी उसी भाव से सेवा करेंगे क्योंकि उनका स्वभाव बन जाता है। उनके दिलों में दया भरी रहती है। उनको परमात्मा का विधान अच्छी तरह याद होता है। जैसा कि पूर्व में प्रसंग है कि एक कमेरे (मेहनती) किसान को अधरंग मारना और बच्चों द्वारा अनदेखा करना। यदि वे लड़के तथा बहुऐं सत्संग में जाते तो वे अपने पिता की बहुत सेवा करते। यदि वह किसान परमात्मा की भक्ति करता तो उसका शरीर स्वस्थ रहता और उसकी भक्ति के कारण भजन के तेज से प्रभावित होकर परिवार अपने-आप आदर करता है। उदाहरण के लिए साधु-संत भक्ति ही करते हैं, जिस कारण गाँव का गाँव उनका सेवा-सत्कार करता है। इसी प्रकार भक्ति करने से परमात्मा की शक्ति अपने आप अन्य को प्रेरित करके भक्त के अनुकूल परिस्थिति बना देती है। इसीलिए भक्ति करने की प्रेरणा संत जन देते हैं। सत्संग से जीने की राह अच्छी बनती है।

❖ **कबीर परमेश्वर जी ने फिर बताया है कि :-**

कबीर, काया तेरी है नहीं, माया कहाँ से होय।
भक्ति कर दिल पाक से, जीवन है दिन दोय।।
बिन उपदेश अचम्भ है, क्यों जिवत हैं प्राण।
भक्ति बिना कहाँ ठौर है, ये नर नाहीं पाषाण।।

भावार्थ :- परमात्मा कबीर जी कह रहे हैं कि हे भोले मानव! मुझे आश्चर्य

है कि बिना गुरू से दीक्षा लिए किस आशा को लेकर जीवित है। न तो शरीर तेरा है, यह भी त्यागकर जाएगा। फिर सम्पत्ति आपकी कैसे है?

जिनको यह विवेक नहीं कि भक्ति बिना जीव का कहीं भी ठिकाना नहीं है तो वे नर यानि मानव नहीं हैं, वे तो पत्थर हैं। उनकी बुद्धि पर पत्थर गिरे हैं। कबीर जी ने फिर कहा है कि :-

बेगार की परिभाषा :-

अगम निगम को खोज ले, बुद्धि विवेक विचार।
उदय–अस्त का राज मिले, तो बिन नाम बेगार।।

भावार्थ :- पुराने समय में पुलिस थानों में जीप-कार आदि गाड़ियाँ नहीं होती थी। जब पुलिस वालों को कहीं रैड (छापा) मारनी होती तो किसी प्राइवेट थ्री व्हीलर या फोर व्हीलर वाले को जबरदस्ती पकड़ लेते और उसके व्हीकल (थ्री व्हीलर या फोर व्हीलर) में बैठकर जहाँ जाना होता, ले जाते। ड्राईवर भी थ्री व्हीलर वाला होता था तथा पैट्रोल-डीजल भी वही अपनी जेब से डलवाता था। उस दिन की दिहाड़ी भी नहीं कर पाता था। पुलिस वाले उसको सारा दिन इधर-उधर घुमाते रहते थे। आम व्यक्ति तो यह विचार करता था कि ये थ्री व्हीलर वाला आज तो बहुत ज्यादा कमाई करेगा। सारा दिन चला है, परंतु उसका मन ही जानता था। उस दिन उसके साथ क्या बीती होती थी। ऐसे ही राजा लोग इस जन्म में भक्ति ना करके केवल राज्य व्यवस्था को बनाए रखने में जीवन समाप्त कर रहे हैं तो वे बेगार करके जाते हैं। पूर्व जन्म के धर्म-कर्म से राजा बनता है। वर्तमान जन्म में उसी पुण्य को खर्च-खा रहा होता है। जनता को तो लगता है कि राजा बड़ी मौज कर रहा है। आध्यात्मिक दृष्टि से वह बेगार कर रहा है। भक्ति कमाई नहीं कर रहा है। यदि व्यक्ति पूर्ण गुरू से दीक्षा लेकर भक्ति नहीं करता है तो उसको चाहे उदय-अस्त का यानि पूरी पृथ्वी का राज्य भी मिल जाए तो भी वह थ्री व्हीलर वाले की तरह व्यर्थ की मारो-मार यानि गहमा-गहमी कर रहा है। उसे कुछ लाभ नहीं होना। इसलिए राजा हो या प्रजा, धनी हो या निर्धन, सबको नए सिरे से भक्ति करनी चाहिए। उसी से उनका भविष्य उज्जवल होगा।

❖ परमात्मा कबीर जी ने अपने शिष्य संत गरीबदास जी को तत्वज्ञान समझाया जो इस प्रकार है :- (राग आसावरी शब्द नं. 1)

मन तू चलि रे सुख के सागर, जहाँ शब्द सिंधु रत्नागर। (टेक)
कोटि जन्म तोहे मरतां होगे, कुछ नहीं हाथ लगा रे।
कुकर–सुकर खर भया बौरे, कौआ हँस बुगा रे।।(1)
कोटि जन्म तू राजा किन्हा, मिटि न मन की आशा।
भिक्षुक होकर दर–दर हांड्या, मिल्या न निर्गुण रासा।।(2)
इन्द्र कुबेर ईश की पद्वी, ब्रह्मा, वरूण धर्मराया।
विष्णुनाथ के पुर कूं जाकर, बहुर अपूठा आया।।(3)
असँख्य जन्म तोहे मरते होगे, जीवित क्यूं ना मरै रे।

द्वादश मध्य महल मठ बौरे, बहुर न देह धरै रे।।(4)
दोजख बहिश्त सभी तै देखे, राज–पाट के रसिया।
तीन लोक से तप्त नाहीं, यह मन भोगी खसिया।।(5)
सतगुरू मिलै तो इच्छा मेटैं, पद मिल पदै समाना।
चल हँसा उस लोक पठाऊँ, जो आदि अमर अस्थाना।।(6)
चार मुक्ति जहाँ चम्पी करती, माया हो रही दासी।
दास गरीब अभय पद परसै, मिलै राम अविनाशी।।(7)

सूक्ष्मवेद की वाणी का भावार्थ :-

वाणी का सरलार्थ :- आत्मा और मन को पात्र बनाकर संत गरीबदास जी ने संसार के मानव को समझाया है। कहा है कि ‘‘यह संसार दुःखों का घर है। इससे भिन्न एक और संसार है। जहाँ कोई दुःख नहीं है। वह स्थान (सनातन परम धाम = सत्यलोक) है तथा वहाँ का प्रभु (अविनाशी परमेश्वर) सुखों का सागर है।

सुख सागर अर्थात् अमर परमात्मा तथा उसकी राजधानी अमर लोक की संक्षिप्त परिभाषा बताई है :-

शंखों लहर मेहर की ऊपजैं, कहर नहीं जहाँ कोई।
दास गरीब अचल अविनाशी, सुख का सागर सोई।।

भावार्थ :- जिस समय मैं (लेखक) अकेला होता हूँ, तो कभी-कभी ऐसी हिलोर अंदर से उठती है, उस समय सब अपने-से लगते हैं। चाहे किसी ने मुझे कितना ही कष्ट दे रखा हो, उसके प्रति द्वेष भावना नहीं रहती। सब पर दया भाव बन जाता है। यह स्थिति कुछ मिनट ही रहती है। उसको मेहर की लहर कहा है। सतलोक अर्थात् सनातन परम धाम में जाने के पश्चात् प्रत्येक प्राणी को इतना आनन्द आता है। वहाँ पर ऐसी असँख्यों लहरें आत्मा में उठती रहती हैं। जब वह लहर मेरी आत्मा से हट जाती है तो वही दुःखमय स्थिति प्रारम्भ हो जाती है। उसने ऐसा क्यों कहा?, वह व्यक्ति अच्छा नहीं है, वो हानि हो गई, यह हो गया, वह हो गया। यह कहर (दुःख) की लहर कही जाती है।

उस सतलोक में असँख्य लहर मेहर (दया) की उठती हैं, वहाँ कोई कहर (भयँकर दुःख) नहीं है। वैसे तो सतलोक में कोई दुःख नहीं है। कहर का अर्थ भयँकर कष्ट होता है। जैसे एक गाँव में आपसी रंजिश के चलते विरोधियों ने दूसरे पक्ष के एक परिवार के तीन सदस्यों की हत्या कर दी, कहीं पर भूकंप के कारण हजारों व्यक्ति मर जाते हैं, उसे कहते हैं कहर टूट पड़ा या कहर कर दिया। ऊपर लिखी वाणी में सुख सागर की परिभाषा संक्षिप्त में बताई है। कहा है कि वह अमर लोक अचल अविनाशी अर्थात् कभी चलायमान अर्थात् ध्वंस नहीं होता तथा वहाँ रहने वाला परमेश्वर अविनाशी है। वह स्थान तथा परमेश्वर सुख का समुद्र है। जैसे समुद्री जहाज बंदरगाह के किनारे से 100 या 200 किमी. दूर चला जाता है तो जहाज के यात्रियों को जल अर्थात् समुद्र के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं देता। सब ओर जल ही जल नजर आता है। इसी प्रकार सतलोक (सत्यलोक) में

सुख के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है अर्थात् वहाँ कोई दुःख नहीं है।

अब पूर्व में लिखी वाणी का सरलार्थ किया जाता है :-

मन तू चल रे सुख के सागर, जहाँ शब्द सिंधु रत्नागर।।(टेक)
कोटि जन्म तोहे भ्रमत होगे, कुछ नहीं हाथ लगा रे।
कुकर शुकर खर भया बौरे, कौआ हँस बुगा रे।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने अपनी अच्छी आत्मा संत गरीबदास जी को सूक्ष्मवेद समझाया, उसको संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, हरियाणा प्रान्त) ने आत्मा तथा मन को पात्र बनाकर विश्व के मानव को काल ब्रह्म के लोक का कष्ट तथा सतलोक का सुख बताकर उस परमधाम में चलने के लिए सत्य साधना जो शास्त्रोक्त है, करने की प्रेरणा की है। मन तू चल रे सुख के सागर अर्थात् सनातन परम धाम में चल जहाँ पर शब्द नष्ट नहीं होता। इसलिए शब्द का अर्थ अविनाशीपन से है कि वह स्थान अमरत्व का सिंधु अर्थात् सागर है और मोक्ष रूपी रत्न का आगर अर्थात् खान है। इस काल ब्रह्म के लोक में आप जी ने भक्ति भी की। परंतु शास्त्रानुकूल साधना बताने वाले तत्वदर्शी संत न मिलने के कारण आप करोड़ों जन्मों से भटक रहे हो। करोड़ों-अरबों रूपये संग्रह करने में पूरा जीवन लगा देते हो, फिर मत्यु हो जाती है। वह जोड़ा हुआ धन जो आपके पूर्व के संस्कारों से प्राप्त हुआ था, उसे छोड़कर संसार से चला गया। उस धन के संग्रह करने में जो पाप किए, वे आप जी के साथ गए। आप जी ने उस मानव जीवन में तत्वदर्शी संत से दीक्षा लेकर शास्त्रविधि अनुसार भक्ति की साधना नहीं की। जिस कारण से आपको कुछ हाथ नहीं आया। पूर्व के पुण्यों के बदले धन ले लिया। वह धन यहीं रह गया, आपको कुछ भी नहीं मिला। आपको मिले धन संग्रह तथा भक्ति शास्त्रानुकूल न करने के पाप।

जिनके कारण आप कुकर = कुत्ता, खर = गधा, सुकर = सूअर, कौआ = एक पक्षी, हँस = एक पक्षी जो केवल सरोवर में मोती खाता है, बुगा = बुगला पक्षी आदि-आदि की योनियों को प्राप्त करके कष्ट उठाया।

कोटि जन्म तू राजा कीन्हा, मिटि न मन की आशा।
भिक्षुक होकर दर–दर हांड्या, मिला न निर्गुण रासा।।

सरलार्थ :- हे मानव! आप जी ने काल (ब्रह्म) की कठिन से कठिन साधना की। घर त्यागकर जंगल में निवास किया, फिर गाँव व नगर में घर-घर के द्वार पर हांड्या अर्थात् घूमा। भिक्षा प्राप्ति के लिए जंगल में साधनारत साधक निकट के गाँव या शहर में जाता है। एक घर से भिक्षा पूरी नहीं मिलती तो अन्य घरों से भोजन लेकर जंगल में चला जाता है। कभी-कभी तो साधक एक दिन भिक्षा माँगकर लाते हैं, उसी से दो-तीन दिन निर्वाह करते हैं। रोटियों को पतले कपड़े रूमाल जैसे कपड़े को छालना कहते हैं। छालने में लपेटकर वक्ष की टहनियों से बाँध देते थे। वे रोटियाँ सूख जाती हैं। उनको पानी में भिगोकर नर्म करके खाते थे। वे प्रतिदिन भिक्षा माँगने जाने में जो समय व्यर्थ होता था, उसकी बचत करके

उस समय को काल ब्रह्म की साधना में लगाते थे। भावार्थ है कि जन्म-मरण से छुटकारा पाने के लिए अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्ति के लिए वेदों में वर्णित विधि तथा लोकवेद से घोरतप करते थे। उनको तत्वदर्शी संत न मिलने के कारण निर्गुण रासा अर्थात् गुप्त ज्ञान जिसे तत्वज्ञान कहते हैं। वह नहीं मिला क्योंकि यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10 में तथा चारों वेदों का सारांश रूप श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 32 तथा 34 में कहा है कि जो यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का विस्तृत ज्ञान स्वयं सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म अपने मुख कमल से बोलकर सुनाता है, वह तत्वज्ञान अर्थात् सूक्ष्मवेद है। गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने कहा है कि उस तत्वज्ञान को तू तत्वज्ञानियों के पास जाकर समझ, उनको दण्डवत् प्रणाम करने से नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म तत्व को भली-भाँति जानने वाले तत्वदर्शी संत तुझे तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे। इससे सिद्ध हुआ कि तत्वज्ञान न वेदों में है और न ही गीता शास्त्र में। यदि होता तो एक अध्याय और बोल देता। कह देता कि तत्वज्ञान उस अध्याय में पढ़ें। संत गरीबदास जी ने मन के बहाने मानव शरीरधारी प्राणियों को समझाया है कि वह निर्गुण रासा अर्थात् तत्वज्ञान न मिलने के कारण काल ब्रह्म की साधना करके आप जी करोड़ों जन्मों में राजा बने। फिर भी मन की इच्छा समाप्त नहीं हुई क्योंकि राजा सोचता है कि स्वर्ग में सुख है, यहाँ राज में कोई सुख-चैन नहीं है, शान्ति नहीं है।

निर्गुण रासा का भावार्थ :- निर्गुण का अर्थ है कि वह वस्तु तो है परंतु उसका लाभ नहीं मिल रहा। वृक्ष के बीज में फल तथा वृक्ष निर्गुण रूप में है, उस बीज को मिट्‌टी में बीजकर सिंचाई करके वह सरगुण वस्तु (वृक्ष, वृक्ष को फल) प्राप्त की जाती है। यह ज्ञान न होने से आम के फल व छाया से वंचित रह जाते हैं। रासा = झंझट अर्थात् उलझा हुआ कार्य।

सूक्ष्मवेद में परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

नौ मन (360 कि.ग्रा.) सूत = कच्चा धागा

कबीर, नौ मन सूत उलझिया, ऋषि रहे झख मार।
सतगुरू ऐसा सुलझा दे, उलझे न दूजी बार।।

सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि अध्यात्म ज्ञान रूपी नौ मन सूत उलझा हुआ है। एक कि.ग्रा. उलझे हुए सूत को सीधा करने में एक दिन से भी अधिक जुलाहों का लग जाता था। यदि सुलझाते समय धागा टूट जाता तो कपड़े में गाँठ लग जाती। गाँठ-गठीले कपड़े को कोई मोल नहीं लेता था। इसलिए परमेश्वर कबीर जुलाहे ने जुलाहों का सटीक उदाहरण बताकर समझाया है कि अधिक उलझे हुए सूत को कोई नहीं सुलझाता था। अध्यात्म ज्ञान उसी नौ मन उलझे हुए सूत के समान है जिसको सतगुरू अर्थात् तत्वदर्शी संत ऐसा सुलझा देगा जो पुनः नहीं उलझेगा। बिना सुलझे अध्यात्म ज्ञान के आधार से अर्थात् लोकवेद के अनुसार साधना करके स्वर्ग-नरक, चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के जीवन, पृथ्वी पर किसी टुकड़े का राज्य, स्वर्ग का राज्य प्राप्त किया, पुनः फिर जन्म-मरण

के चक्र में गिरकर कष्ट पर कष्ट उठाया। परंतु काल ब्रह्म की वेदों में वर्णित विधि अनुसार साधना करने से वह परम शांति तथा सनातन परम धाम प्राप्त नहीं हुआ जो गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है और न ही परमेश्वर का वह परम पद प्राप्त हुआ जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है। काल ब्रह्म की साधना से निम्न लाभ होता रहता है।

वाणी नं 3 :– इन्द्र–कुबेर, ईश की पदवी, ब्रह्मा वरूण धर्मराया।
विष्णुनाथ के पुर कूं जाकर, बहुर अपूठा आया।।

सरलार्थ :- काल ब्रह्म की साधना करके साधक इन्द्र का पद भी प्राप्त करता है। इन्द्र स्वर्ग के राजा का पद है। इसको देवराज अर्थात् देवताओं का राजा तथा सुरपति भी कहते हैं। यह सिंचाई विभाग अर्थात् वर्षा मंत्रालय भी अपने अधीन रखता है।

प्रश्न :- इन्द्र की पदवी कैसे प्राप्त होती है?

उत्तर :- अधिक तप करने से तथा सौ मन (4 हजार कि.ग्रा.) गाय या भैंस के घी का प्रयोग करके धर्मयज्ञ करने से एक धर्मयज्ञ सम्पन्न होती है। ऐसी-ऐसी सौ धर्मयज्ञ निर्विघ्न करने से इन्द्र की पदवी साधक प्राप्त करता है। तप या यज्ञ के दौरान यज्ञ या तप की मर्यादा भंग हो जाती है तो नए सिरे से यज्ञ तथा तप करना पड़ता है। इस प्रकार इन्द्र की पदवी प्राप्त होती है।

प्रश्न :- इन्द्र का शासन काल कितना है? मृत्यु उपरांत इन्द्र के पद को छोड़कर प्राणी किस योनि को प्राप्त करता है?

उत्तर :- इन्द्र स्वर्ग के राजा के पद पर 72 चौकड़ी अर्थात् 72 चतुर्युग तक बना रहता है। एक चतुर्युग में सत्ययुग+त्रेतायुग+द्वापरयुग तथा कलयुग का समय होता है। जो 1728000+1296000+864000+432000 क्रमशः सत्ययुग + त्रेतायुग + द्वापरयुग + कलयुग का समय अर्थात् 43 लाख 20 हजार वर्ष का समय एक चतुर्युग में होता है। ऐसे बने 72 चतुर्युग तक वह साधक इन्द्र के पद पर स्वर्ग के राजा का सुख भोगता है। एक कल्प अर्थात् ब्रह्मा जी के एक दिन में (जो एक हजार आठ (1008) चतुर्युग का होता है) 14 जीव इन्द्र के पद पर रहकर अपना किया पुण्य-कर्म भोगते हैं। इन्द्र के पद को भोगकर वे प्राणी गधे का जीवन प्राप्त करते हैं।

कथा :- ''मार्कण्डेय ऋषि तथा अप्सरा का संवाद''

एक समय बंगाल की खाड़ी में मार्कण्डेय ऋषि तप कर रहा था। इन्द्र के पद पर विराजमान आत्मा को यह शर्त होती है कि यदि उसके शासनकाल में 72 चौकड़ी युग के दौरान यदि पृथ्वी पर कोई व्यक्ति इन्द्र पद प्राप्त करने योग्य तप या धर्मयज्ञ कर लेता है और उसकी क्रिया में कोई बाधा नहीं आती है तो उस साधक को इन्द्र का पद दे दिया जाता है और वर्तमान इन्द्र से वह पद छीन लिया जाता है। इसलिए जहाँ तक संभव होता है, इन्द्र अपने शासनकाल में किसी साधक का तप या धर्मयज्ञ पूर्ण नहीं होने देता। उसकी साधना भंग करा देता है, चाहे कुछ भी करना पड़े।

जब इन्द्र को उसके दूतों ने बताया कि बंगाल की खाड़ी में मार्कण्डेय नामक ऋषि तप कर रहे हैं। इन्द्र ने मार्कण्डेय ऋषि का तप भंग करने के लिए उर्वसी (इन्द्र की पत्नी) भेजी। सर्व श्रंगार करके देवपरी मार्कण्डेय ऋषि के सामने नाचने-गाने लगी। अपनी सिद्धि से उस स्थान पर बसंत ऋतु जैसा वातावरण बना दिया। मार्कण्डेय ऋषि ने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई। उर्वसी ने कमर का नाड़ा तोड़ दिया, निःवस्त्र हो गई। तब मार्कण्डेय ऋषि बोले, हे बेटी!, हे बहन!, हे माई! आप यह क्या कर रही हो? आप यहाँ गहरे जंगल में अकेली किसलिए आई? उर्वसी ने कहा कि ऋषि जी मेरे रूप को देखकर इस आरण्य खण्ड (बन-खण्ड) के सर्व साधक अपना संतुलन खो गए परंतु आप डगमग नहीं हुए, न जाने आपकी समाधि कहाँ थी? कप्या आप मेरे साथ इन्द्रलोक में चलो, नहीं तो मुझे सजा मिलेगी कि तू हार कर आ गई। मार्कण्डेय ऋषि ने कहा कि मेरी समाधि ब्रह्मलोक में गई थी, जहाँ पर मैं उन उर्वसियों का नाच देख रहा था जो इतनी सुंदर हैं कि तेरे जैसी तो उनकी 7-7 बांदियाँ अर्थात् नौकरानियाँ हैं। इसलिए मैं तेरे को क्या देखता, तेरे पर क्या आसक्त होता? यदि तेरे से कोई सुंदर हो तो उसे ले आ। तब देवपरी ने कहा कि इन्द्र की पटरानी अर्थात् मुख्य रानी मैं ही हूँ। मुझसे सुन्दर स्वर्ग में कोई औरत नहीं है।

तब मार्कण्डेय ऋषि ने पूछा कि इन्द्र की मत्यु होगी, तब तू क्या करेगी? उर्वसी ने उत्तर दिया कि मैं 14 इन्द्र भोगूँगी। भावार्थ है कि श्री ब्रह्मा जी के एक दिन में 1008 चतुर्युग होते हैं जिसमें 72-72 चतुर्युग का शासनकाल पूरा करके 14 इन्द्र मत्यु को प्राप्त होते हैं। इन्द्र की रानी वाली आत्मा ने किसी मानव जन्म में इतने अत्यधिक पुण्य किए थे। जिस कारण से वह 14 इन्द्रों की पटरानी बनकर स्वर्ग सुख तथा पुरूष सुख को भोगेगी।

मार्कण्डेय ऋषि ने कहा कि वे 14 इन्द्र भी मरेंगे, तब तू क्या करेगी? उर्वसी ने कहा कि फिर मैं मत्य लोक (पथ्वी लोक को मनुष्य लोक अर्थात् मर्त्यः लोक कहते हैं) में गधी बनाई जाऊँगी और जितने इन्द्र मेरे पति होंगे, वे भी पथ्वी पर गधे की योनि प्राप्त करेंगे।

मार्कण्डेय ऋषि बोले कि फिर मुझे ऐसे लोक में क्यों ले जा रही थी जिसका राजा गधा बनेगा और रानी गधी की योनि प्राप्त करेगी? उर्वसी बोली कि अपनी इज्जत रखने के लिए, नहीं तो वे कहेंगे कि तू हारकर आई है।

मार्कण्डेय ऋषि ने कहा कि गधियों की कैसी इज्जत? तू वर्तमान में भी गधी है क्योंकि तू चौदह खसम करेगी और मत्यु उपरांत तू स्वयं स्वीकार रही है कि मैं गधी बनूंगी। गधी की कैसी इज्जत? इतने में वहीं पर इन्द्र आ गया। विधानानुसार अपना इन्द्र का राज्य मार्कण्डेय ऋषि को देने के लिए। कहा कि ऋषि जी हम हारे और आप जीते। आप इन्द्र की पदवी स्वीकार करें। मार्कण्डेय ऋषि बोले अरे-अरे इन्द्र! इन्द्र की पदवी मेरे किसी काम की नहीं। मेरे लिए तो काग (कौवे) की बीट के समान है। मार्कण्डेय ऋषि ने इन्द्र से फिर कहा कि तू मेरे बताए अनुसार साधना

कर, तेरे को ब्रह्मलोक ले चलूँगा। इस इन्द्र के राज्य को छोड़ दे। इन्द्र ने कहा कि हे ऋषि जी अब तो मुझे मौज-मस्ती करने दो। फिर कभी देखूंगा।

पाठकजनो! विचार करो :- इन्द्र को पता है कि मृत्यु के उपरांत गधे का जीवन मिलेगा, फिर भी उस क्षणिक सुख को त्यागना नहीं चाहता। कहा कि फिर कभी देखूंगा। फिर कब देखेगा? गधा बनने के पश्चात् तो कुम्हार देखेगा। कितना वजन गधे की कमर पर रखना है? कहाँ-सी डण्डा मारना है? ठीक इसी प्रकार इस पृथ्वी पर कोई छोटे-से टुकड़े का प्रधानमंत्री, मंत्री, मुख्यमंत्री या राज्य में मंत्री बना है या किसी पद पर सरकारी अधिकारी या कर्मचारी बना है या धनी है। उसको कहा जाता है कि आप भक्ति करो नहीं तो गधे बनोगे। वे या तो नाराज हो जाते हैं। कहते हैं कि हम क्यों बनेंगे गधे? फिर से मत कहना। कुछ सभ्य होते हैं, वे कहते हैं कि किसने देखा है, गधे बनते हैं? फिर उनको बताया जाता है कि सब संत तथा ग्रन्थ बताते हैं। तो अधिकतर कहते हैं कि देखा जाएगा।

उनसे निवेदन है कि मृत्यु के पश्चात् गधा बनने के बाद आप क्या देखोगे, फिर तो कुम्हार देखेगा कि आप जी के साथ कैसा बर्ताव करना है? देखना है तो वर्तमान में देख। बुराई छोड़कर शास्त्रानुकूल साधना करो जो वर्तमान में विश्व में केवल मेरे (रामपाल दास के) पास है। आओ ग्रहण करो और अपने जीव का कल्याण कराओ।

ऊपर लिखी वाणी नं. 3 में बताया है कि इन्द्र-कुबेर तथा ईश की पदवी प्राप्त करने वाले तथा ब्रह्मा जी का पद तथा वरूण, धर्मराय का पद प्राप्त करके तथा विष्णु जी के लोक को प्राप्त कर देव पद प्राप्त भी वापिस जन्म-मरण के चक्र में रहता है।

स्वर्ग लोक में 33 करोड़ देव पद हैं। जैसे भारत वर्ष की संसद में 540 सांसदों के पद हैं। व्यक्ति बदलते रहते हैं। उन्हीं सांसदों में से प्रधानमंत्री तथा अन्य केन्द्रीय मंत्री आदि-आदि बनते हैं।

इसी प्रकार उन 33 करोड़ देवताओं में से ही कुबेर का पद अर्थात् धन के देवता का पद प्राप्त होता है जैसे वित्त मंत्री होता है। ईश की पदवी का अर्थ है प्रभु पद जो लोकवेद में कुल तीन माने गए हैं :- 1. श्री ब्रह्मा जी 2. श्री विष्णु जी तथा 3. श्री शिव जी।

वरूणदेव जल का देवता है। धर्मराय मुख्य न्यायधीश है जो सब जीवों को कर्मों का फल देता है, उसे धर्मराज भी कहते हैं। ये सर्व काल ब्रह्म की साधना करके पद प्राप्त करते हैं। पुण्य क्षीण (समाप्त) होने के पश्चात् सर्व देवता पद से मुक्त करके पशु-पक्षियों आदि की 84 लाख प्रकार की योनियों में डाले जाते हैं। फिर नए ब्रह्मा जी, नए विष्णु जी तथा नए शिव जी इन पदों पर विराजमान होते हैं।

ये सर्व उपरोक्त देवता जन्मते-मरते हैं। ये अविनाशी नहीं हैं। इनकी स्थिति आप जी को ''सृष्टि रचना'' अध्याय में इसी पुस्तक में स्पष्ट होगी कि ये कितने प्रभु हैं? किसके पुत्र हैं तथा कौन इनकी माता जी हैं?

अन्य प्रमाण :- श्री देवी पुराण (सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी, गीता प्रैस

गोरखपुर से प्रकाशित) के तीसरे स्कंद में पृष्ठ 123 पर लिखा है कि तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार आप से ही उद्भासित हो रहा है। मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर आपकी कृपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव अर्थात् जन्म तथा तिरोभाव अर्थात् मृत्यु हुआ करता है। आप प्रकृति देवी हैं।

शंकर भगवान बोले कि हे देवी! यदि ब्रह्मा के पश्चात् उत्पन्न होने वाले विष्णु आप से उत्पन्न हुए हैं तो क्या मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या आपकी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हो। हम तो केवल नियमित कार्य ही कर सकते हैं अर्थात् जिसके भाग्य में जो लिखा है, हम वही प्रदान कर सकते हैं। न अत्यधिक कर सकते, न कम कर सकते।

पाठकजनो! इस श्री देवी पुराण के उल्लेख से स्पष्ट हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शंकर जी नाशवान हैं। इनकी माता जी का नाम श्री देवी दुर्गा है। अधिक जानकारी आप ''सृष्टि रचना'' अध्याय से ग्रहण करेंगे जो इसी पुस्तक में पीछे पृष्ठ 254 पर लिखी है। ये प्रधान देवता हैं। अन्य इनसे निम्न स्तर के देव हैं। ये सर्व जन्मते-मरते हैं, अविनाशी राम नहीं हैं, अविनाशी परमात्मा नहीं हैं।

श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में लिखा है कि गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने कहा है कि ''मेरी उत्पत्ति को न तो देवता जानते और न महर्षिजन जानते क्योंकि इन सबका आदि कारण मैं ही हूँ अर्थात् ये सर्व मेरे से उत्पन्न हुए हैं।''

गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में गीता ज्ञान बोलने वाले ने कहा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। गीता अध्याय 2 श्लोक 12 में भी स्पष्ट है कि तू-मैं तथा सब राजा-सेना पहले भी जन्में थे, आगे भी जन्मेंगे।

गीता अध्याय 14 श्लोक 3 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! मेरी प्रकृति अर्थात् दुर्गा तो गर्भ धारण करती है, मैं उसके गर्भ में बीज स्थापित करता हूँ जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है।

गीता अध्याय 14 श्लोक 4 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! नाना प्रकार की सब योनियों में जितने शरीरधारी मूर्तियाँ उत्पन्न होती हैं (महत्) प्रकृति तो उन सबकी गर्भ धारण करने वाली माता है। (अहम् ब्रह्म) मैं ब्रह्म बीज स्थापित करने वाला पिता हूँ।

गीता अध्याय 14 श्लोक 5 :- गीता ज्ञान दाता ने स्पष्ट किया है कि हे अर्जुन! सत्वगुण श्री विष्णु जी, रजगुण श्री ब्रह्मा जी तथा तमगुण श्री शिव जी, ये प्रकृति अर्थात् दुर्गा देवी से उत्पन्न तीनों देवता अर्थात् तीनों गुण अविनाशी जीवात्मा को कर्मों के अनुसार शरीर में बाँधते हैं।

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि उपरोक्त देवता नाशवान हैं तथा काल ब्रह्म की संतान हैं।

प्रसंग चल रहा है कि वाणी सँख्या 3 का सरलार्थ :-

इन्द्र, कुबेर, ईश अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शिव तक की पदवी प्राप्त करके तथा

वरूण, धर्मराय की पदवी तथा श्री विष्णुनाथ के लोक को प्राप्त करके भी जन्म-मरण के चक्र में रहते हैं।

❖ मार्कण्डेय ऋषि जी ब्रह्म साधना कर रहे थे। उसी को सर्वोत्तम मान रहे थे। इसीलिए इन्द्र को कह रहे थे कि आ तेरे को ब्रह्म साधना का ज्ञान कराऊँ। ब्रह्म लोक की तुलना में स्वर्ग का राज्य हलवे की तुलना में जैसे कौवे की बीट है।

पाठकजनो! आप जी ने ब्रह्म साधना करने वाले श्री चुणक ऋषि, श्री दुर्वासा ऋषि तथा कपिल मुनि जिन्होंने ब्रह्म साधना की थी, उनकी साधना को गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अनुत्तम अर्थात् घटिया बताया है। उसी श्रेणी की साधना मार्कण्डेय ऋषि जी की थी। जिसको अति उत्तम मानकर कर रहे थे तथा इन्द्र जी को भी राय दे रहे थे कि ब्रह्म साधना कर ले।

सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

औरों पंथ बतावहीं, आप न जाने राह।।1
मोती मुक्ता दर्शत नाहीं, यह जग है सब अन्ध रे।
दिखत के तो नैन चिसम हैं, फिरा मोतिया बिन्द रे।।2
वेद पढ़ें पर भेद ना जानें, बांचे पुराण अठारा।
पत्थर की पूजा करें, भूले सिरजनहारा।।3

वाणी नं. 1 का भावार्थ :- अन्य को मार्गदर्शन करते हैं, स्वयं भक्ति मार्ग का ज्ञान नहीं।

वाणी नं. 2 का भावार्थ :- तत्वदर्शी संत के अभाव के कारण मोती मुक्ता यानि मोक्ष रूपी मोती अर्थात् मोक्ष मंत्र दिखाई नहीं देता। यह सर्व संसार अध्यात्म ज्ञान नेत्रहीन अन्धा है। जिस किसी को मोतियाबिन्द जो एक प्रकार का नेत्ररोग है जिसमें आँखें स्वस्थ दिखाई देती हैं, परंतु उस रोगग्रस्त व्यक्ति को कुछ दिखाई नहीं देता। यह उदाहरण देकर बताया है कि फर्राटेदार संस्कृत भाषा बोलते हैं। लगते हैं महाविद्वान हैं, परंतु सद्ग्रन्थों के गूढ़ रहस्यों को नहीं जानते। इनको अज्ञान रूपी मोतियाबिन्द हुआ है।

वाणी नं. 3 का भावार्थ :- वेदों को पढ़कर कंठस्थ करने वाले वेदों के गूढ़ रहस्यों को न समझकर उनके विरूद्ध साधना करते-कराते हैं। वेदों में पत्थर की मूर्ति की पूजा का कहीं उल्लेख नहीं है, वे वेदों के विद्वान कहलाने वाले पत्थर पूजा करते तथा कराते हैं। वेदों में वर्णित सिरजनहार को भुला दिया है।

श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 25 से 29 तक यही बताया है कि जो साधक जैसी भी साधना करता है, उसे उत्तम मानकर कर रहा होता है, सर्व साधक अपनी-अपनी भक्ति को पापनाश करने वाली जानते हैं।

गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में स्पष्ट किया है कि यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का ज्ञान स्वयं सच्चिदानन्द घन ब्रह्म ने अपने मुख कमल से बोली वाणी में विस्तार के साथ कहा है, वह तत्वज्ञान है। जिसे जानकर साधक सर्व पापों से मुक्त हो जाता है।

गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में स्पष्ट किया है कि उस तत्वज्ञान को तत्वदर्शी संत जानते हैं, उनको दण्डवत प्रणाम करने से, नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे तत्वज्ञान को जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

वह तत्वज्ञान जिसे ऊपर की वाणी में निर्गुण रासा कहा है, नहीं मिलने से सर्व साधक जन्म-मरण के चक्र में रह गए।

मार्कण्डेय ऋषि ब्रह्म साधना कर रहा था। श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में कहा है कि ब्रह्मलोक में गए साधक भी पुनरावर्ती अर्थात् बार-बार जन्म-मरण के चक्र में ही रहते हैं।

पूर्व शब्द की वाणी सँख्या 4 = असंख जन्म तोहे मरतां होगे, जीवित क्यों न मरै रे।
द्वादश मध्य महल मठ बोरे, बहुर न देह धरै रे।।

सरलार्थ :- हे मानव! तू अनन्त बार जन्म और मर चुका है। सत्य साधना कर तथा जीवित मर। जीवित मरने का तात्पर्य है कि भक्त को ज्ञान हो जाता है कि इस संसार की प्रत्येक वस्तु अस्थाई है। यह शरीर भी स्थाई नहीं है। जन्म-मृत्यु का बखेड़ा भी भयँकर है। इस संसार में दुःख के अतिरिक्त कुछ नहीं है। मानव शरीर प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त नहीं किया तो पशु जैसा जीवन जीया। जैसे गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में कहा है कि जो साधक केवल जरा अर्थात् वृद्धावस्था के कष्ट तथा मरण के दुःख से ही मुक्ति के लिए जो साधनारत हैं, वे तत् ब्रह्म को तथा सम्पूर्ण आध्यात्म को तथा कर्मों को जानते हैं।

इसी प्रकार तत्वज्ञान होने के पश्चात् मानव को अनावश्यक वस्तुओं की इच्छा नहीं होती, तम्बाकू, शराब-माँस सेवन नहीं करता। नाच-गाना मूर्खों का काम लगता है। जैसा भोजन मिल जाए, उसी में संतुष्ट रहता है।

❖ आत्म कल्याण कराने के लिए साधक विचार करता है कि यदि मैं सत्संग में नहीं आऊँगा तो गुरू जी के दर्शन नहीं कर पाऊँगा। सत्संग विचार न सुनने से मन फिर से विकार करने लगेगा। वह साधक सर्व कार्य छोड़कर सत्संग सुनने के लिए चल पड़ता है। वह विचार करता है कि हम प्रतिदिन सुनते हैं तथा देखते हैं कि छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर पिता संसार से चला जाता है, मर जाता है। बड़े-बड़े पूंजीपति दुर्घटना में मर जाते हैं। सर्व सम्पत्ति जो सारे जीवन में जोड़ी थी, उसे छोड़कर चले जाते हैं, दोबारा उस सम्पत्ति को सँभालने नहीं आते। मृत्यु से पहले एक दिन भी कार्य छोड़ने का दिल नहीं करता था, अब परमानैन्ट कार्य छूट गया।

''आज भाई को फुरसत''

एक भक्त सत्संग में जाने लगा। दीक्षा ले ली, ज्ञान सुना और भक्ति करने लगा। अपने मित्र से भी सत्संग में चलने तथा भक्ति करने के लिए प्रार्थना की। परंतु दोस्त नहीं माना। कह देता कि कार्य से फुर्सत (खाली समय) नहीं है। छोटे-छोटे बच्चे हैं। इनका पालन-पोषण भी करना है। काम छोड़कर सत्संग में जाने लगा तो सारा धँधा चौपट हो जाएगा।

वह सत्संग में जाने वाला भक्त जब भी सत्संग में चलने के लिए अपने मित्र से कहता तो वह यही कहता कि अभी काम से फुर्सत नहीं है। एक वर्ष पश्चात् उस मित्र की मृत्यु हो गई। उसकी अर्थी उठाकर कुल के लोग तथा नगरवासी चले, साथ-साथ सैंकड़ों नगर-मौहल्ले के व्यक्ति भी साथ-साथ चले। सब बोल रहे थे कि राम नाम सत् है, सत् बोले गत् है।

भक्त कह रहा था कि राम नाम तो सत् है परंतु आज भाई को फुर्सत है। नगरवासी कह रहे थे कि सत् बोले गत् है, भक्त कह रहा था कि आज भाई को फुर्सत है। अन्य व्यक्ति उस भक्त से कहने लगे कि ऐसे मत बोल, इसके घर वाले बुरा मानेंगे। भक्त ने कहा कि मैं तो ऐसे ही बोलूँगा। मैंने इस मूर्ख से हाथ जोड़कर प्रार्थना की थी कि सत्संग में चल, कुछ भक्ति कर ले। यह कहता था कि अभी फुर्सत अर्थात् खाली समय नहीं है। आज इसको परमानैंट फुर्सत है। छोटे-छोटे बच्चे भी छोड़ चला जिनके पालन-पोषण का बहाना करके परमात्मा से दूर रहा। भक्ति करता तो खाली हाथ नहीं जाता। कुछ भक्ति धन लेकर जाता। बच्चों का पालन-पोषण तो परमात्मा करता है। भक्ति करने से साधक की आयु भी परमात्मा बढ़ा देता है। भक्तजन ऐसा विचार करके भक्ति करते हैं, कार्य त्यागकर सत्संग सुनने जाते हैं।

भक्त विचार करते हैं कि परमात्मा न करे, हमारी मृत्यु हो जाए। फिर हमारे कार्य कौन करेगा? हम यह मान लेते हैं कि हमारी मृत्यु हो गई। हम तीन दिन के लिए मर गए, यह विचार करके सत्संग में चलें, अपने को मृत मान लें और सत्संग में चले जायें। वैसे तो परमात्मा के भक्तों का कार्य बिगड़ता नहीं, फिर भी हम मान लेते हैं कि हमारी गैर-हाजिरी में कुछ कार्य खराब हो गया तो तीन दिन बाद जाकर ठीक कर लेंगे। यदि वास्तव में टिकट कट गई अर्थात् मृत्यु हो गई तो परमानैंट कार्य बिगड़ गया। फिर कभी ठीक करने नहीं आ सकते। इस स्थिति को जीवित मरना कहते हैं।

वाणी का शेष सरलार्थ :- द्वादश मध्य महल मठ बौरे, बहुर न देहि धरै रे।

सरलार्थ :- श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते अर्थात् उनका पुनर्जन्म नहीं होता। वे फिर देह धारण नहीं करते। सूक्ष्मवेद की यह वाणी यही स्पष्ट कर रही है कि वह परम धाम द्वादश अर्थात् 12वें द्वार को पार करके उस परम धाम में जाया जाता है। आज तक सर्व ऋषि-महर्षि, संत, मंडलेश्वर केवल 10 द्वार बताया करते। परंतु परमेश्वर कबीर जी ने अपने स्थान को प्राप्त कराने का सत्यमार्ग, सत्य स्थान स्वयं ही बताया है। उन्होंने 12वां द्वार बताया है। इससे भी स्पष्ट हुआ कि आज तक (सन् 2012 तक) पूर्व के सर्व ऋषियों, संतों, पंथों की भक्ति काल ब्रह्म तक की थी। जिस कारण से जन्म-मृत्यु का चक्र चलता रहा।

वाणी सँख्या 5 :– दोजख बहिश्त सभी तै देखे, राजपाट के रसिया।

तीन लोक से तृप्त नाहीं, यह मन भोगी खसिया।।

सरलार्थ :- तत्वज्ञान के अभाव में पूर्णमोक्ष का मार्ग न मिलने के कारण कभी दोजख अर्थात् नरक में गए, कभी बहिश्त अर्थात् स्वर्ग में गए,कभी राजा बनकर आनन्द लिया। यदि इस मानव को तीन लोक का राज्य भी दे दें तो भी तृप्ति नहीं होती।

उदाहरण :- यदि कोई गाँव का सरपंच बन जाता है तो वह इच्छा करता है कि विधायक बने तो मौज होवे। विधायक इच्छा करता है कि मन्त्री बनूं तो बात कुछ अलग हो जाएगी। मंत्री बनकर इच्छा करता है कि मुख्यमंत्री बनूं तो पूरी चौधर हो। आनन्द ही न्यारा होगा। सारे प्रान्त पर कमांड चलेगी। मुख्यमंत्री बनने के पश्चात् प्रबल इच्छा होती है कि प्रधानमंत्री बनूं तो जीवन सार्थक हो। तब तक जीवन लीला समाप्त हो जाएगी। फिर गधा बनकर कुम्हार के लठ (डण्डे) खा रहा होगा। इसलिए तत्वज्ञान में समझाया है कि काल ब्रह्म द्वारा बनाई स्वर्ग-नरक तथा राजपाट प्राप्ति की भूल-भुलईया में सारा जीवन व्यर्थ कर दिया। कहीं संतोष नहीं हुआ, यह मन ऐसा खुसरा (हिजड़ा) है।

एक अब्राहिम सुल्तान अधम नाम का ईराक देश के बलख शहर का राजा था। वह पूर्व जन्म का बहुत अच्छा भक्त था। परंतु वर्तमान के ऐश्वर्य में मस्त होकर परमात्मा को भूल चुका था। राज के ठाठ में तथा महलों में आनंदमान बैठा था। एक दिन परमात्मा सत्यलोक से आकर एक यात्री का रूप बनाकर राजा के महल में गए तथा कहा कि हे सराय वाले! एक कमरा किराए पर दे, पैसे बता, रात्रि बितानी है। राजा ने कहा हे भोले यात्री! आपको यह सराय (धर्मशाला) दिखाई देती है। मैं राजा हूँ और यह मेरा महल है। यात्री रूप में परमात्मा ने पूछा कि आप से पहले इस महल में कौन रहते थे? राजा ने कहा कि मेरे पिता, दादा-परदादा रहते थे। यात्री रूप में परमेश्वर ने पूछा कि आप कितने दिन रहोगे इस महल में? राजा ने कहा एक दिन मैं भी चला जाऊँगा इन्हें छोड़कर। परमेश्वर बोले कि यह सराय नहीं तो क्या है? यह सराय है। जैसे तेरे बाप-दादा गए, ऐसे ही तू चला जाएगा, इसलिए मैंने महलों को धर्मशाला बताया है। राजा को वास्तविकता का ज्ञान हुआ। संसार की इच्छा त्यागकर आत्म-कल्याण करवाया। सदा रहने वाला सुख तथा अमर जीवन प्राप्त करने के लिए दीक्षा ली और आजीवन भक्ति की, अपना मानव जीवन सफल किया।

वाणी सँख्या 6 :—सतगुरू मिलैं तो इच्छा मेटैं, पद मिल पदे समाना।
चल हंसा उस लोक पठाऊँ, जो आदि अमर अस्थाना।।

सरलार्थ :- यदि तत्वदर्शी संत सतगुरू मिलें तो उपरोक्त ज्ञान बताकर काल ब्रह्म के लोक की सर्व वस्तुओं से तथा पदों से इच्छा समाप्त करके ''पद मिल पदे समाना'' इसमें एक 'पद' का अर्थ है पद्धति अर्थात् शास्त्रविधि अनुसार साधना। दूसरे 'पद' का अर्थ है 'परम पद' यानि 'पदवी'। सतगुरू शास्त्रविधि अनुसार पद्यति बताकर परमेश्वर के उस परम पद की प्राप्ति करवा देता है जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। हे भक्त! चल तुझे उस लोक

में भेज दूँ जो आदि अमर अस्थान है अर्थात् गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में वर्णित सनातन परम धाम है जहाँ पर परम शांति है।

वाणी सँख्या 7 :- चार मुक्ति जहाँ चम्पी करती, माया हो रही दासी।
दास गरीब अभय पद परसै, मिले राम अविनाशी।।

सरलार्थ :- उस सनातन परम धाम में परम शान्ति तथा अत्यधिक सुख है। काल ब्रह्म के लोक में चार मुक्ति मानी जाती हैं, जिनको प्राप्त करके साधक अपने को धन्य मानता है। परंतु वे स्थाई नहीं हैं। कुछ समय उपरांत पुण्य समाप्त होते ही फिर 84 लाख प्रकार की योनियों में कष्ट उठाता है। परंतु उस सत्यलोक में चारों मुक्ति वाला सुख सदा बना रहेगा। माया आपकी नौकरानी बनकर रहेगी।

संत गरीबदास जी ने बताया है कि अमर लोक में जाने के पश्चात् प्राणी निर्भय हो जाता है और उस सनातन परम धाम में वह अविनाशी राम अर्थात् परमेश्वर मिलेगा। इसलिए पूर्ण मोक्ष के लिए शास्त्रानुकूल भक्ति करनी चाहिए जिससे उस भगवान तक जाया जा सकता है।

उपरोक्त वाणी तथा पूर्वोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा शिव जी और इनके पिता काल ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष व अक्षर पुरूष सर्व राम अर्थात् प्रभु नाशवान हैं। केवल परम अक्षर ब्रह्म ही अविनाशी राम अर्थात् प्रभु है। इस परमेश्वर की भक्ति से ही परमशांति तथा सनातन परम धाम अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त होगा जहाँ पर चार मुक्ति का सुख सदा रहेगा। माया अर्थात् सर्व सुख-सुविधाऐं साधक के नौकर की तरह हाजिर रहती हैं। सूक्ष्मवेद में कहा है किः-

कबीर, माया दासी संत की, उभय दे आशीष।
विलसी और लातों छड़ी, सुमर–सुमर जगदीश।।

भावार्थ :- सर्व सुख-सुविधाऐं धन से होती हैं। वह धन शास्त्रविधि अनुसार भक्ति करने वाले संत-भक्त की भक्ति का स्वतः होने वाला, जिसको प्राप्त करना उद्देश्य नहीं, वह फिर भी अवश्य प्राप्त होता है, By Product होता है। जैसे जिसने गेहूँ की फसल बोई तो उसका उद्देश्य गेहूँ का अन्न प्राप्त करना है। परंतु भुष अर्थात् चारा भी अवश्य प्राप्त होता है। चारा, तूड़ा गेहूँ के अन्न का By Product है। इसी प्रकार सत्य साधना करने वाले को अपने आप धन माया मिलती है। साधक उसको भोगता है, वह चरणों में पड़ी रहती है अर्थात् धन का अभाव नहीं रहता अपितु आवश्यकता से अधिक प्राप्त रहती है। परमेश्वर की भक्ति करके माया का भी आनन्द भक्त, संत प्राप्त करते हैं तथा पूर्ण मोक्ष भी प्राप्त करते हैं।

❖ उसी प्रसंग को आगे बढ़ाते हैं कि मानव शरीर प्राप्त प्राणी को अपना उद्देश्य याद रखना चाहिए। भक्ति करके अपना कल्याण करवाना चाहिए। सूक्ष्म वेद में लिखा है कि :- (राग आसावरी शब्द नं. 71)

यह सौदा फिर नाहीं सन्तो, यह सौदा फिर नाहीं।
लोहे जैसा ताव जात है, काया देह सराही।।
तीन लोक और भुवन चतुर्दश, सब जग सौदे आहीं।

दुगने–तिगुने किए चौगुने, किन्हूँ मूल गवाहीं।।

भावार्थ :- जैसे दो व्यापारी (Businessmen) दूर किसी शहर में सौदा करने गए और 5-5 लाख रूपये मूलधन ले गए। एक ने अपने धन का सदुपयोग किया। धर्मशाला या होटल में किराए पर कमरा लिया। सामान खरीदा और महंगे मोल बेचा। जिससे उसने 20 लाख रूपये और कमा लिए। दो वर्ष में वापिस अपने घर आ गया। सब जगह प्रसंशा हुई और धनी बन गया।

दूसरे ने भी होटल या धर्मशाला में कमरा किराए पर लिया। शराब पीने लगा, वेश्याओं के नत्य देखता, खाता और सो जाता। उसने अपना मूल धन 5 लाख रूपये भी नष्ट कर दिया, वापिस घर आया तो ऋण (कर्जा) हो गया। जिससे 5 लाख रूपये उधार लेकर गया था, उसने अपने रूपये मांगे। न देने पर उसको अपना मजदूर रखा, उससे अपना 5 लाख का धन पूरा किया। उपरोक्त वाणी का यही तात्पर्य है कि तीन लोक (स्वर्ग लोक, पाताल लोक तथा पथ्वी लोक) में जितने भी प्राणी हैं, वे सब अपना राम-नाम का सौदा करने आए हैं। किसी ने तो दुगना, तीन गुना, चार गुना धन कमा लिया अर्थात् पूर्ण सन्त से दीक्षा लेकर मनुष्य जीवन के श्वांसों की पूँजी जो मूल धन है, उसको सत्य भक्ति करके बढ़ाया। अन्य व्यक्ति जिसने भक्ति नहीं की या शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण किया या अन्अधिकारी गुरू से दीक्षा लेकर भक्ति की, उसको कोई लाभ नहीं मिलता। यह पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में प्रमाण है। जिस कारण से उसने भी अपना मनुष्य जीवन के श्वांस रूपी मूलधन को सत्य भक्ति बिना नष्ट कर लिया।

❖ भक्ति न करने से हानि का अन्य विवरण :-

(शब्द नं. 71 का शेष)

यह दम टूटै पिण्डा फूटै, हो लेखा दरगाह मांही।
उस दरगाह में मार पड़ैगी, जम पकड़ेंगे बांही।।
नर–नारायण देहि पाय कर, फेर चौरासी जांही।
उस दिन की मोहे डरनी लागे, लज्जा रह के नांही।।
जा सतगुरू की मैं बलिहारी, जो जामण मरण मिटाहीं।
कुल परिवार तेरा कुटम्ब कबीला, मसलित एक ठहराहीं।
बाँध पींजरी आगै धर लिया, मरघट कूँ ले जाहीं।।
अग्नि लगा दिया जब लम्बा, फूंक दिया उस ठाहीं।
पुराण उठा फिर पण्डित आए, पीछे गरूड पढाहीं।।

भावार्थ :- यह दम अर्थात् श्वांस जिस दिन समाप्त हो जाऐंगे। उसी दिन यह शरीर रूपी पिण्ड छूट जाएगा। फिर परमात्मा के दरबार में पाप-पुण्यों का हिसाब होगा। भक्ति न करने वाले या शास्त्रविरूद्ध भक्ति करने वाले को यम के दूत भुजा पकड़कर ले जाऐंगे, चाहे कोई किसी देश का राजा भी क्यों न हो, उसकी पिटाई की जाएगी। सन्त गरीबदास को परमेश्वर कबीर जी मिले थे। उनकी आत्मा को ऊपर लेकर गए थे। सर्व ब्रह्माण्डों को दिखाकर सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान समझाकर

वापिस शरीर में छोड़ा था। सन्त गरीब दास जी आँखों देखा हाल बयान कर रहे हैं कि :- हे मानव! आपको नर शरीर मिला है जो नारायण अर्थात् परमात्मा के शरीर जैसा अर्थात् उसी का स्वरूप है। अन्य प्राणियों को यह सुन्दर शरीर नहीं मिला। इसके मिलने के पश्चात् प्राणी को आजीवन भगवान की भक्ति करनी चाहिए। ऐसा परमात्मा स्वरूप शरीर प्राप्त करके सत्य भक्ति न करने के कारण फिर चौरासी लाख वाले चक्र में जा रहा है, धिक्कार है तेरे मानव जीवन को! मुझे तो उस दिन की चिन्ता बनी है, डर लगता है कि कहीं भक्ति कम बने और उस परमात्मा के दरबार में पता नहीं इज्जत रहेगी या नहीं। मैं तो भक्ति करते-करते भी डरता हूँ कि कहीं भक्ति कम न रह जाए। आप तो भक्ति ही नहीं करते। यदि करते हो तो शास्त्रविरूद्ध कर रहे हो। तुम्हारा तो बुरा हाल होगा और मैं तो राय देता हूँ कि ऐसा सतगुरू चुनो जो जन्म-मरण के दीर्घ रोग को मिटा दे, समाप्त कर दे। जो सत्य भक्ति नहीं करते, उनका क्या हाल होता है मृत्यु के पश्चात्। आस-पास के कुल के लोग इकट्ठे हो जाते हैं। फिर सबकी एक ही मसलत अर्थात् राय बनती है कि इसको उठाओ। (उठाकर शमशान घाट पर ले जाकर फूँक देते हैं, लाठी या जैली की खोद (ठोकर) मार-मारकर छाती तोड़ते हैं। सम्पूर्ण शरीर को जला देते हैं। जो कुछ भी जेब में होता है, उसको निकाल लेते हैं। फिर शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण कराने और करने वाले उस संसार से चले गए जीव के कल्याण के लिए गुरू गरूड पुराण का पाठ करते हैं।)

तत्वज्ञान (सूक्ष्मवेद) में कहा है कि अपना मानव जीवन पूरा करके वह जीव चला गया। परमात्मा के दरबार में उसका हिसाब होगा। वह कर्मानुसार कहीं गधा-कुत्ता बनने की पंक्ति में खड़ा होगा। मृत्यु के पश्चात् गरूड पुराण का पाठ उसके क्या काम आएगा। यह व्यर्थ का शास्त्रविरूद्ध क्रियाक्रम है। उस प्राणी का मनुष्य शरीर रहते उसको भगवान के संविधान का ज्ञान करना चाहिए था। जिससे उसको अच्छे-बुरे का ज्ञान होता और वह अपना मानव जीवन सफल करता।

प्रेत शिला पर जाय विराजे, फिर पितरों पिण्ड भराहीं।
बहुर श्राद्ध खान कूं आया, काग भये कलि माहीं।।

भावार्थ :- भावार्थ है कि मृत्यु उपरान्त उस जीव के कल्याण अर्थात् गति कराने के लिए की जाने वाली शास्त्रविरूद्ध क्रियाऐं व्यर्थ हैं। जैसे गरूड पुराण का पाठ करवाया। उस मरने वाले की गति अर्थात् मोक्ष के लिए। फिर अस्थियाँ गंगा में प्रवाहित की उसकी गति (मोक्ष) करवाने के लिए। फिर तेहरवीं या सतरहवीं को हवन व भण्डारा (लंगर) किया उसकी गति कराने के लिए। पहले प्रत्येक महीने एक वर्ष तक महीना क्रिया करते थे, उसकी गति कराने के लिए, फिर छठे महीने छःमाही क्रिया करते थे, उसकी गति कराने के लिए, फिर वर्षी क्रिया करते थे उसकी गति कराने के लिए, फिर उसकी पिण्डोदक क्रिया कराते हैं, उसकी गति कराने के लिए श्राद्ध निकालते हैं अर्थात् श्राद्ध क्रिया कराते हैं, श्राद्ध वाले दिन पुरोहित भोजन स्वयं बनाता है और कहता है कि कुछ भोजन मकान की छत पर

रखो, कहीं आपका पिता कौआ (काग) न बन गया हो। जब कौवा भोजन खा जाता तो कहते हैं कि तेरे पिता या माता आदि जो मृत्यु को प्राप्त हो चुका है जिसके हेतु यह सर्व क्रिया की गई है और यह श्राद्ध किया गया है। वह कौवा बना है, इसका श्राद्ध सफल हो गया। इस उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि वह व्यक्ति जिसका उपरोक्त क्रियाकर्म किया था, वह कौवा बन चुका है।

श्राद्ध करने वाले पुरोहित कहते हैं कि श्राद्ध करने से वह जीव एक वर्ष तक तृप्त हो जाता है। फिर एक वर्ष में श्राद्ध फिर करना है।

विचार करें :- जीवित व्यक्ति दिन में तीन बार भोजन करता था। अब एक दिन भोजन करने से एक वर्ष तक कैसे तृप्त हो सकता है? यदि प्रतिदिन छत पर भोजन रखा जाए तो वह कौवा प्रतिदिन ही भोजन खाएगा।

दूसरी बात :- मृत्यु के पश्चात् की गई सर्व क्रियाऐं गति (मोक्ष) कराने के उद्देश्य से की गई थी। उन ज्ञानहीन गुरूओं ने अन्त में कौवा बनवाकर छोड़ा। वह प्रेत शिला पर प्रेत योनि भोग रहा है। पीछे से गुरू और कौवा मौज से भोजन कर रहा है। पिण्ड भराने का लाभ बताया है कि प्रेत योनि छूट जाती है। मान लें प्रेत योनि छूट गई। फिर वह गधा या बैल बन गया तो क्या गति कराई?

नर से फिर पशुवा कीजै, गधा, बैल बनाई।
छप्पन भोग कहाँ मन बौरे, कहीं कुरड़ी चरने जाई।।

भावार्थ :- मनुष्य जीवन में हम कितने अच्छे अर्थात् 56 प्रकार के भोजन खाते हैं। भक्ति न करने से या शास्त्रविरूद्ध साधना करने से गधा बनेगा, फिर ये छप्पन प्रकार के भोजन कहाँ प्राप्त होंगे, कहीं कुरड़ियों (रूड़ी) पर पेट भरने के लिए घास खाने जाएगा। इसी प्रकार बैल आदि-आदि पशुओं की योनियों में कष्ट पर कष्ट उठाएगा।

जै सतगुरू की संगत करते, सकल कर्म कटि जाईं।
अमर पुरि पर आसन होते, जहाँ धूप न छाँइ।।

भावार्थ :- सन्त गरीब दास ने परमेश्वर कबीर जी से प्राप्त सूक्ष्मवेद में आगे कहा है कि यदि सतगुरू (तत्वदर्शी सन्त) की शरण में जाकर दीक्षा लेते तो उपरोक्त सर्व कर्मों के कष्ट कट जाते अर्थात् न प्रेत बनते, न गधा, न बैल बनते। अमरपुरी पर आसन होता अर्थात् गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में वर्णित सनातन परम धाम प्राप्त होता, परम शान्ति प्राप्त हो जाती। फिर कभी लौटकर संसार में नहीं आते अर्थात् जन्म-मरण का कष्टदायक चक्र सदा के लिए समाप्त हो जाता। उस अमर लोक (सत्यलोक) में धूप-छाया नहीं है अर्थात् जैसे धूप दुःखदाई हुई तो छाया की आवश्यकता पड़ी। उस सत्यलोक में केवल सुख है, दुःख नहीं है।

सुरत निरत मन पवन पयाना, शब्दै शब्द समाई।
गरीब दास गलतान महल में, मिले कबीर गोसांई।।

भावार्थ :- सन्त गरीबदास जी ने कहा है कि मुझे कबीर परमेश्वर मिले हैं।

मुझे सुरत-निरत, मन तथा श्वांस पर ध्यान रखकर नाम का स्मरण करने की विधि बताई। जिस साधना से सतलोक में हो रही शब्द धुनि को पकड़कर सतलोक में चला गया। जिस कारण से सत्यलोक (शाश्वत स्थान) में अपने महल में आनन्द से रहता हूँ क्योंकि सत्य साधना जो परमेश्वर कबीर जी ने सन्त गरीब दास को जो बताई थी और उस स्थान (सत्यलोक) को गरीब दास जी परमेश्वर के साथ जाकर देखकर आए थे। जिस कारण से विश्वास के साथ कहा कि मैं जो शास्त्रानुकूल साधना कर रहा हूँ, यह परमात्मा ने बताई है। जिस शब्द अर्थात् नाम का जाप करने से मैं अवश्य पूर्ण मोक्ष प्राप्त करूँगा, इसमें कोई संशय नहीं रहा। जिस कारण से मैं (गरीब दास) सत्यलोक में बने अपने महल (विशाल घर) में जाऊँगा, जिस कारण से निश्चिन्त तथा गलतान (महल प्राप्ति की खुशी में मस्त) हूँ क्योंकि मुझे पूर्ण गुरू स्वयं परमात्मा कबीर जी अपने लोक से आकर मिले हैं।

गरीब, अजब नगर में ले गए, हमको सतगुरू आन।
झिलके बिम्ब अगाध गति, सूते चादर तान।।

भावार्थ :- गरीबदास जी ने बताया है कि सतगुरू अर्थात् स्वयं परमेश्वर कबीर जी अपने निज धाम सत्यलोक से आकर मुझे साथ लेकर अजब (अद्भुत) नगर में अर्थात् सत्यलोक में बने शहर में ले गए। उस स्थान को आँखों देखकर मैं परमात्मा के बताए भक्ति मार्ग पर चल रहा हूँ। सत्यनाम, सारनाम की साधना कर रहा हूँ। इसलिए चादर तानकर सो रहा हूँ अर्थात् मेरे मोक्ष में कोई संदेह नहीं है।

चादर तानकर सोना = निश्चिंत होकर रहना। जिसका कोई कार्य शेष न हो और कोई चादर ओढ़कर सो रहा हो तो गाँव में कहते है कि अच्छा चादर तानकर सो रहा है। क्या कोई कार्य नहीं है? इसी प्रकार गरीबदास जी ने कहा है कि अब बड़े-बड़े महल बनाना व्यर्थ लग रहा है। अब तो उस सत्यलोक में जाऐंगे। जहाँ बने बनाए विशाल भवन हैं, जिनको हम छोड़कर गलती करके यहाँ काल के मत्यु लोक में आ गए हैं। अब दॉव लगा है। सत्य भक्ति मिली है तथा तत्वज्ञान मिला है।

सज्जनों! वह सत्य भक्ति वर्तमान में मेरे (रामपाल दास के) पास है। जिससे इस दुःखों के घर संसार से पार होकर वह परम शान्ति तथा शाश्वत स्थान (सनातन परम धाम) प्राप्त हो जाता है जिसके विषय में गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है तथा गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वदर्शी सन्त से तत्वज्ञान प्राप्त करके, उस तत्वज्ञान से अज्ञान का नाश करके, उसके पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए। जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आता।

''भक्ति न करने से बहुत दुःख होगा''

सूक्ष्मवेद में कहा है :-

यह संसार समझदा नाहीं, कहंदा शाम दुपहरे नूँ।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूँ।।

भावार्थ :- आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में परमात्मा के विधान से अपरिचित होने के कारण यह प्राणी इस दुःखों के घर संसार में महान कष्ट झेल रहा है और इसी को सुख स्थान मान रहा है।

जैसे एक व्यक्ति जून के महीने में दिन के 12 या 1 बजे, हरियाणा प्रान्त में शराब पीकर चिलचिलाती धूप में गिरा पड़ा है, पसीनों से बुरा हाल है, रेत शरीर से लिपटा है। एक व्यक्ति ने कहा हे भाई! उठ, तुझे वक्ष के नीचे बैठा दूँ, तू यहाँ पर गर्मी में जल रहा है। शराबी बोला कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ, मौज हो रही है, कोई कष्ट नहीं है।

❖ एक व्यक्ति किसी कारण कोर्ट में गया। वहाँ उसका रिश्तेदार मिला। एक-दूसरे से कुशल-मंगल पूछी, दोनों ने कहा, सब ठीक है, मौज है।

❖ एक व्यक्ति का इकलौता पुत्र बहुत रोगी था। उसको P.G.I. में भर्ती करा रखा था। लड़के की बचने की आशा बहुत कम थी। ऐसी स्थिति में माता-पिता की क्या दशा होती है, आसानी से समझी जा सकती है। रिश्तेदार मिलने आए और पूछा कि बच्चे का क्या हाल है? पिता ने बताया कि बचने का भरोसा नहीं, फिर पूछा और कुशल-मंगल है, पिता ने कहा कि सब मौज है।

विचार करें :- शराब के नशे में घोर धूप के ताप को झेल रहा था। फिर भी कह रहा था कि मौज हो रही है।

❖ कोर्ट कचहरियों में जो रिश्तेदार मिले, दोनों ही कह रहे थे कि सब मौज है। विचार करें जो व्यक्ति कोर्ट के कोल्हू में फँसा है। उसको स्वपन में भी सुख नहीं होता। फिर भी दोनों कह रहे थे कि मौज है अर्थात् आनन्द है।

❖ जिस व्यक्ति का इकलौता पुत्र मत्यु शैय्या पर हो, उसको मौज कैसी? इसलिए सूक्ष्मवेद में कहा है कि इस दुःखालय संसार में यह प्राणी महाकष्ट को सुख मान रहा है।

यह संसार समंझदा नाहीं, कहंदा शाम दोपहरे नूं।
गरीब दास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूँ।।

भावार्थ :- सन्त गरीबदास जी ने बताया है कि मनुष्य जन्म प्राप्त करके जो व्यक्ति भक्ति नहीं करता, वह कुत्ते, गधे आदि-आदि की योनि में कष्ट उठाता है। कुत्ता रात्रि में आसमान की ओर मुख करके रोता है। इसलिए गरीबदास जी ने बताया है कि यह मानव शरीर का वक्त एक बार हाथ से निकल गया और भक्ति नहीं की तो इस समय (इस पहरे) को याद करके रोया करोगे।

''भक्ति मार्ग पर यात्रा''

जब तक आध्यात्मिक ज्ञान नहीं, तब तक तो जीव माया के नशे में अपना उद्देश्य भूल चुका था और जैसा ऊपर बताया है कि शराबी नशे में ज्येष्ठ महीने की गर्मी में दिन के दोपहर के समय धूप में पड़ा-पड़ा पसीने व रेत में सना भी कह रहा होता है कि मौज हो रही है। परंतु नशा उतरने के पश्चात् उसे पता चलता

है कि तू तो जंगल में पड़ा है, घर तो अभी दूर है।

कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, यह माया अटपटी, सब घट आन अड़ी।
किस–किस को समझाऊँ, या कूऐ भांग पड़ी।।

भावार्थ :- अध्यात्म ज्ञान रूपी औषधि सेवन करने से जीव का नशा उतर जाता है। फिर वह भक्ति के सफर पर चलता है क्योंकि उसे परमात्मा के पास पहुँचना है जो उसका अपना पिता है तथा वह सतलोक जीव का अपना घर है।

यात्रा पर चलने वाला व्यक्ति सारे सामान को उठाकर नहीं चल सकता। केवल आवश्यक सामान लेकर यात्रा पर चलता है। इसी प्रकार भक्ति के सफर में अपने को हल्का होकर चलना होगा। तभी मंजिल को प्राप्त कर सकेंगे। भक्ति रूपी राह पर चलने के लिए अपने को मानसिक शांति का होना अनिवार्य है। मानसिक परेशानी का कारण है अपनी परंपराऐं तथा नशा, मान-बड़ाई, लोग-दिखावा, यह भार व्यर्थ के लिए खड़े हैं जैसे बड़ी कोठी-बड़ी मंहगी कार, श्रंगार करना, मंहगे आभूषण (स्वर्ण के आभूषण), संग्रह करना, विवाह में दहेज लेना-देना, बैंड-बाजे, डीजे बजाना, घुड़चढ़ी के समय पूरे परिवार का बेशर्मों की तरह नाचना, मत्यु भोज करना, बच्चे के जन्म पर खुशी मनाना, खुशी के अवसर पर पटाखे जलाना, फिजुलखर्ची करना आदि-आदि जीवन के भक्ति सफर में बाधक होने के कारण त्यागने पड़ेंगे।

''विवाह कैसे करें''

जैसे श्री देवी दुर्गा जी ने अपने तीनों पुत्रों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) का विवाह किया था, इसी पुस्तक में आगे पढ़ेंगे। मेरे (लेखक के) अनुयाई ऐसे ही करते हैं। 17 मिनट की असुर निकंदन रमैणी है। फेरों के स्थान पर उसको बोला जाता है जो करोड़ गायत्री मंत्र (ॐ भूर्भवः ...) से उत्तम तथा लाभदायक है। जिसमें विश्व के सर्व देवी-देव तथा पूर्ण परमात्मा का आह्वान तथा स्तुति-प्रार्थना है। जिस कारण से सर्व शक्तियां उस विवाह वाले जोड़े की सदा रक्षा तथा सहायता करते हैं। इससे बेटी बची रहेगी। जीने की सुगम राह हो जाएगी।

विवाह में प्रचलित वर्तमान परंपरा का त्याग :-

विवाह में व्यर्थ का खर्चा त्यागना पड़ेगा। जैसे बेटी के विवाह में बड़ी बारात का आना, दहेज देना, यह व्यर्थ परंपरा है। जिस कारण से बेटी परिवार पर भार मानी जाने लगी है और उसको गर्भ में ही मारने का सिलसिला शुरू है जो माता-पिता के लिए महापाप का कारण बनता है। बेटी देवी का स्वरूप है। हमारी कुपरम्पराओं ने बेटी को दुश्मन बना दिया। श्री देवीपुराण के तीसरे स्कंद में प्रमाण है कि इस ब्रह्माण्ड के प्रारम्भ में तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) का जब इनकी माता श्री दुर्गा जी ने विवाह किया, उस समय न कोई बाराती था, न कोई भाती था। न कोई भोजन-भण्डारा किया गया था। न डी.जे.

बजा था, न कोई नृत्य किया गया था। श्री दुर्गा जी ने अपने बड़े पुत्र श्री ब्रह्मा जी से कहा कि हे ब्रह्मा! यह सावित्री नाम की लड़की तुझे तेरी पत्नी रूप में दी जाती है। इसे ले जाओ और अपना घर बसाओ। इसी प्रकार अपने बीच वाले पुत्र श्री विष्णु जी से लक्ष्मी जी तथा छोटे बेटे श्री शिव जी को पार्वती जी को देकर कहा कि ये तुम्हारी पत्नियां हैं। इनको ले जाओ और अपना-अपना घर बसाओ। तीनों अपनी-अपनी पत्नियों को लेकर अपने-अपने लोक में चले गए जिससे विश्व का विस्तार हुआ।

शंका समाधान :- कुछ व्यक्ति कहते हैं कि पार्वती जी की मृत्यु हो गई थी। उस देवी का पुनर्जन्म राजा दक्ष के घर हुआ था। युवा होने पर देवी सती (पार्वती) जी ने नारद के बताने के पश्चात् श्री शिव जी को पति बनाने का दृढ़ संकल्प कर लिया और अपनी माता जी के माध्यम से अपनी इच्छा पिता दक्ष को बताई तो राजा दक्ष ने कहा कि वह शिव जी मेरा दामाद बनने योग्य नहीं है क्योंकि वह नग्न रहता है। केवल एक मृगछाल परदे पर बाँधता है। शरीर पर राख लगाकर भांग के नशे में रहता है। सर्पों को साथ रखता है। ऐसे व्यक्ति से मैं अपनी बेटी का विवाह करके जगत में हँसी का पात्र नहीं बनूंगा। परंतु देवी पार्वती भी जिद की पक्की थी। उसने अपनी इच्छा श्री शिव जी के पास भिजवा दी और कहा कि मैं आपसे विवाह करना चाहती हूँ। राजा दक्ष ने पार्वती जी का विवाह किसी अन्य के साथ निश्चित कर रखा था। उसी दिन श्री शिव जी अपने साथ हजारों की सँख्या में भूत-प्रेत, भैरव तथा अपने गणों को लेकर विवाह मंडप पर पहुँच गए। राजा दक्ष के सैनिकों ने विरोध किया। शिव की सेना और दक्ष की सेना में युद्ध हुआ। पार्वती ने शिव जी को वरमाला पहना दी। पार्वती को बलपूर्वक लेकर श्री शिव जी कैलाश पर्वत पर अपने घर ले गए। कुछ व्यक्ति कहते हैं कि देखो! श्री शिव जी भी भव्य बारात लेकर पार्वती से विवाह करने आए थे। इसलिए बारात की परंपरा पुरातन है। इसलिए बारात बिना विवाह की शोभा नहीं होती। इसका उत्तर यह है कि यह विवाह नहीं था, यह तो प्रेम प्रसंग था। श्री शिव जी बारात नहीं सेना लाए थे पार्वती को बलपूर्वक उठाकर ले जाने के लिए। विवाह की पुरातन परम्परा श्री देवी महापुराण के तीसरे स्कंद में है जो ऊपर बता दी है। बेटियों तथा बेटों को चाहिए कि अपने माता-पिता जी की इच्छानुसार विवाह करें। प्रेम विवाह महाक्लेश का कारण बन जाता है। जैसे भगवान शिव जी और पार्वती जी का किसी बात पर मन-मुटाव हो गया। शिव जी ने पार्वती जी से पत्नी व्यवहार बंद कर दिया तथा बोलचाल भी बंद कर दी। पार्वती ने सोचा कि अब यह घर मेरे लिए नरक हो गया है। इसलिए कुछ दिन अपनी माँ के पास चली जाती हूँ। पार्वती जी अपने पिता दक्ष के घर मायके में चली गई। उस दिन राजा दक्ष ने एक हवन यज्ञ का आयोजन किया हुआ था। राजा दक्ष ने अपनी बेटी का सत्कार नहीं किया तथा कहा कि आज क्या लेने आई हो? देख लिया उसका प्रेम, चली जा घर से। पार्वती जी ने अपनी माता से श्री शिव जी के नाराज होने की कथा बता दी थी। माता ने अपने पति दक्ष को

सब बताया था। पार्वती जी को अब न मायके में स्थान था, न ससुराल में। प्रेम विवाह ने ऐसी गंभीर परिस्थिति उत्पन्न कर दी कि दक्ष पुत्री को आत्महत्या के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं देखा और राजा दक्ष के विशाल हवन कुण्ड में जलकर मर गई। धार्मिक अनुष्ठान का नाश किया। अपना अनमोल मानव जीवन खोया। पिता का नाश कराया क्योंकि जब श्री शिव जी को पता चला तो वे अपनी सेना लेकर पहुँचे और अपने ससुर दक्ष जी की गर्दन काट दी। बाद में बकरे की गर्दन लगाकर जीवित किया। उस प्रेम विवाह ने कैसा घमासान मचाया। शिव सेना को बारात बताकर कुप्रथा को जन्म दिया गया है और यह प्रसंग प्रेम विवाह रूपी कुप्रथा का जनक है जो समाज के नाश का कारण है।

विवाह जो सुप्रथा से हुआ, वह आज तक सुखी जीवन जी रहे हैं। जैसे श्री ब्रह्मा जी तथा श्री विष्णु जी।

विवाह करने का उद्देश्य :- विवाह का उद्देश्य केवल संतानोत्पत्ति करना है। फिर पति-पत्नी मिलकर परिश्रम करके बच्चों का पालन करते हैं। उनका विवाह कर देते हैं। फिर वे अपना घर बसाते हैं। इसके अतिरिक्त प्रेम विवाह समाज में अशांति का बीज बोना है। समाज बिगाड़ की चिंगारी है।

प्रेम प्रसंग कैसा होता है?

उत्तर :- जो चरित्रहीन लड़के-लड़की होते हैं, वे चलते समय अजीबो-गरीब ऐक्टिंग करते हैं। उन लजमारों की दष्टि भी टेढ़ी-मेढ़ी चलती है। कभी बनावटी मुस्कराना। मुड़-मुड़कर आगे-पीछे देखना। चटक-मटककर चलना उन पापात्माओं का शौक होता है जो अंत में प्रेम विवाह का रूप बन जाता है। बाद में उनको पता चलता है कि दोनों के अन्य भी प्रेमी-प्रमिकाऐं थी। फिर उनकी दशा भगवान शिवजी-पार्वती वाली होती है। न घर के रहते हैं, न घाट के। विवाह करने का उद्देश्य ऊपर बता दिया है। इससे हटकर जो भी कदम युवा उठाते हैं, वह जीवन सफर को नरक बनाने वाला होता है। यदि किसी का प्रेम सम्बन्ध भी बन जाए तो इस बात का ध्यान अवश्य रखे कि अपने समाज की मर्यादा (जैसे गोत्र, गाँव तथा विवाह क्षेत्र) भंग न होती हो जिससे कुल व माता-पिता की इज्जत को ठेस पहुँचे। गलती से ऐसा हो भी जाए और बाद में पता चले तो लड़के-लड़की को चाहिए कि तुरंत उस प्रेम को तोड़ दें। अंतरजातिय विवाह वर्तमान में करने में कोई हानि नहीं है, परंतु उपरोक्त मर्यादा का ध्यान अवश्य रखें। भगवान शिव जी ने भी देवी पार्वती को इसी कारण से त्यागा था। कथा इस प्रकार है :-

''भगवान शिव का अपनी पत्नी को त्यागना''

जिस समय श्री रामचन्द्र पुत्र श्री दशरथ (राजा अयोध्या) बनवास का समय बिता रहे थे। उस दौरान सीता जी का अपहरण लंका के राजा रावण ने कर लिया था। श्री राम को पता नहीं था। सीता जी के वियोग में श्री राम जी विलाप कर रहे थे। आकाश से शिव-पार्वती ने देखा। पार्वती ने शिव से पूछा कि यह व्यक्ति

इतनी बुरी तरह क्यों रो रहा है? इस पर क्या विपत्ति आई है? श्री शिव जी ने बताया कि यह साधारण व्यक्ति नहीं है। यह श्री विष्णु जी हैं जो राजा दशरथ के घर जन्में हैं। अब बनवास का समय बिता रहे हैं। इनकी पत्नी सीता भी इनके साथ आई थी, उसका किसी ने अपहरण कर लिया है। इसलिए दुःखी है। पार्वती जी ने कहा कि मैं सीता रूप धारण करके इनके सामने जाऊँगी। यदि मुझे पहचान लेंगे तो मैं मानूंगी कि ये वास्तव में भगवान हैं। शिव जी ने पार्वती से कहा था कि यह गलती ना करना। यदि आपने सीता रूप धारण कर लिया तो मेरे काम की नहीं रहोगी। पार्वती जी ने उस समय तो कह दिया कि ठीक है, मैं परीक्षा नहीं लूंगी। परंतु शिव के घर से बाहर जाते ही सीता रूप धारकर श्री राम के सामने खड़ी हो गई। श्री राम बोले कि हे दक्ष पुत्री माया! आज अकेले कैसे आई? श्री शिव जी को कहाँ छोड़ आई? तब देवी जी लज्जित हुई और बोली कि भगवान शिव सत्य ही कह रहे थे कि आप त्रिलोकी नाथ हैं। आप ने मुझे पहचान लिया। मैं परीक्षा लेने आई थी। भगवान शिव को भी पता चल गया कि पार्वती ने सीता रूप धारण करके परीक्षा ली है। पार्वती जी से पूछा कि कर दिया वही काम जिसके लिए मना किया था। पार्वती जी ने झूठ भी बोला कि मैंने कोई परीक्षा नहीं ली है, परंतु शिव जी पूर्ण रूप से नाराज हो गए और प्रेम विवाह नरक का कारण बना जो ऊपर आप जी ने पढ़ा है।

इसलिए युवाओं से निवेदन है कि अपनी कमजोरी के कारण माता-पिता तथा समाज में विष न घोलें। विवाह करना अच्छी बात है। बकवाद करना बुरी बात है। विवाह के लिए माता-पिता समय पर स्वयं चिंतित हो जाते हैं और विवाह करके ही दम लेते हैं। फिर युवा क्यों सिरदर्द मोल लेते हैं? जब तक विवाह नहीं होता, चाव चढ़ा रहता है। विवाह के पश्चात् बच्चे हो जाते हैं। सात साल के पश्चात् महसूस होने लगता है कि ''या के बनी''? जैसे हरियाणवी कवि (स्वांगी) जाट मेहर सिंह जी ने कहा है कि :-

विवाह करके देख लियो, जिसने देखी जेल नहीं है।

जैसे जेल में चार दिवारी के अंदर रहना मजबूरी होती है। इसी प्रकार विवाह के पश्चात् माता-पिता के लिए अपने परिवार के पोषण के लिए ग्रहस्थी जीवन जीने के लिए सामाजिक मर्यादा रूपी चार दिवारी के अंदर रहना अनिवार्य हो जाता है। अपनी मर्जी नहीं चला सकता यानि नौकरी वाला नौकरी पर जाता है। मजदूर मजदूरी पर तथा किसान खेत के कार्य को करने के लिए मजबूर है जो जरूरी है। इसलिए विवाहित जीवन मर्यादा रूपी कारागार कही जाती है। परंतु इस कारागार बिना संसार की उत्पत्ति नहीं हो सकती। अपने माता-पिता जी ने भी विवाह किया। अपने को अनमोल मनुष्य शरीर मिला। इस शरीर में भक्ति करके मानव मोक्ष प्राप्त कर सकता है जो विवाह का ही वरदान है। इस पवित्र सम्बन्ध को चरित्रहीन व्यक्ति कामुक (Sexy) कथा सुनाकर तथा राग-रागनी गाकर युवाओं में वासनाओं को उत्प्रेरित करते हैं जिससे शांत व मर्यादित मानव समाज में आग लग जाती है।

जिस कारण से कई परिवार उजड़ जाते हैं। जैसे समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलता है कि युवक तथा युवती ने गाँव की गाँव में प्रेम करके नाश का बीज बो दिया। लड़की वालों ने अपनी लड़की को बहुत समझाया, परंतु गंदी फिल्मों से प्रेरित लड़की ने एक नहीं मानी। परिवार वालों ने लड़की की हत्या कर दी। जिस कारण से लड़की का भाई-पिता, माता तथा भाभी भी जेल गए। आजीवन कारागार हो गई। उन दोनों ने प्रेम प्रसंग रूपी अग्नि से परिवार जला दिया। बसे-बसाए घर का नाश कर दिया। अन्य बहुत से उदाहरण हैं जिनमें औनर किलिंग का मुकदमा बनने से फांसी तक सजा का प्रावधान है। हे युवा बच्चो! विचार करो! माता-पिता आप से क्या-क्या उम्मीद लिए जीते हैं, आपको पढ़ाते हैं, पालते हैं। आप सामाजिक मर्यादा को भूलकर छोटी-सी भूल के कारण महान गलती करके जीवन नष्ट कर जाते हो। इसलिए बच्चों को सत्संग सुनाना अनिवार्य है। सामाजिक ऊँच-नीच का पाठ पढ़ाना आवश्यक है जिसका लगभग अभाव हो चुका है।

प्रश्न :- बारात का प्रचलन कैसे हुआ?

उत्तर :- राजा लोगों से प्रारम्भ हुआ। वे लड़के के विवाह में सेना लेकर जाते थे। रास्ते में राजा की सुरक्षा के लिए सेना जाती थी। जिसका सब खर्च लड़की वाला राजा वहन करता था।

सेठ-साहूकार दहेज में अधिक आभूषण तथा धन देते थे। वे गाँव के अन्य गरीब वर्ग के व्यक्तियों को दिहाड़ी पर ले जाते थे जो सुरक्षा के लिए होते थे। उनको पहले दिन लड़के वाला अपने घर पर मिठाई खिलाता था। लड़की वाले से प्रत्येक रक्षक को एक चाँदी का रूपया तथा एक पीतल का गिलास दिलाया जाता था। जो गरीब वर्ग अपनी गाड़ी तथा बैल ले जाते थे, उनको कुछ अधिक राशि का प्रलोभन दिया जाता था। पहले जंगल अधिक होते थे। यातायात के साधन नहीं थे। इस प्रकार यह एक परम्परा बन गई। उस समय अकाल गिरते थे। लोग निर्धन होते थे। कोई धनी अकेला मिल जाता था तो उसको लूटना आम बात थी। इस कारण से बारात रूपी सेना का प्रचलन हुआ। फिर यह एक लोग-दिखावा परम्परा बन गई जिसकी अब बिल्कुल आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न :- भात तथा न्योंदा-न्यौंदार कैसे चला?

उत्तर :- उसका मूल भी बारात का आना, दहेज का देना। बारात ले जाने के लिए लड़के वाले द्वारा मिठाई खिलाना। लड़की वाले के लिए भी उस बारात के लिए मिठाई तथा रूपया-गिलास देना आदि के कारण भात तथा न्यौता (न्योंदा) प्रथा प्रारम्भ हुई। न्योता समूह में गाँव तथा आसपास गवांड गाँव के प्रेमी-प्यारे व्यक्ति होते हैं। जिसके लड़के या लड़की का विवाह होता था तो अकेला परिवार खर्च वहन नहीं कर सकता था। उसके लिए लगभग सौ या अधिक सदस्य उस समूह में होते हैं। जिसके बच्चे का विवाह होता था तो सब सदस्य अपनी वित्तीय स्थिति अनुसार न्योता (धन राशि) विवाह वाले के पिता को देते हैं। कोई सौ रूपये, कोई दो सौ रूपये, कोई कम, कोई अधिक जो एक प्रकार का निःशुल्क उधार होता

है। उस पर ब्याज नहीं देना पड़ता। सबका न्योते का धन लिखा जाता है। प्रत्येक सदस्य की बही (डायरी) में प्रत्येक विवाह पर दिया न्योता लिखा होता है। इस प्रकार विवाह वाले परिवार को धन की समस्या नहीं आती है।

भात :- भात भी इसी कड़ी में भरा जाता है। बहन के बच्चों के विवाह में कुछ कपड़े तथा नकद धन देना (भाई द्वारा की गई सहायता) भात कहा जाता है जो धन बहन को लौटाना नहीं होता। जिन बहनों के भाई नहीं हैं, वे उस दिन अति दुःखी होती हैं, एकान्त में बैठकर रोती हैं।

पीलिया :- लड़की को संतान उत्पन्न होने पर मायके वालों की ओर से जच्चा के लिए घर का देशी शुद्ध घी, कुछ गौन्द (घी+आटा भूनकर+गोला+अजवायन+काली मिर्च का मिश्रण गौन्द कहलाता है), नवजात बच्चे के छोटे-छोटे कपड़े (झूगले) भी मायके वाले तथा लड़की की ननंदों द्वारा लाए जाते हैं। यह परंपरा है जो कपड़े एक वर्ष के पश्चात् व्यर्थ हो जाते हैं।

इस तरह की परंपरा को त्यागना है क्योंकि जीवन के सफर में व्यर्थ का भार है। आप अपनी बेटी की सहायता कर सकते हैं। जैसे गाय-भैंस लेनी है। बेटी की वित्तीय स्थिति कमजोर है तो उसको नकद रूपये दे सकते हैं, परंतु विवाह के समय नहीं। बेटी का आपकी संपत्ति में से हक दे सकते हैं, अगर बेटी लेना चाहे तो। बेटी को चाहिए कि आवश्यकता पड़ने पर धन ले ले, परंतु फिर लौटा दे। परमात्मा पर विश्वास रखे। आपका सम्मान बना रहेगा।

समाधान :- इन सबका समाधान है कि विवाह को सूक्ष्मवेद के अनुसार किया जाए। आप जी ने चार वेद सुने हैं :- यजुर्वेद,ऋग्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। परंतु पाँचवा वेद सूक्ष्म वेद है जो स्वयं पूर्ण ब्रह्म जी ने पृथ्वी पर प्रकट होकर अपने मुख कमल से अमृतवाणी द्वारा प्रदान किया है।

मेरे (रामपाल दास के) अनुयाई उसी पाँचवें वेद के अनुसार विवाह रस्म करते हैं जिसमें कोई उपरोक्त परम्परा की आवश्यकता नहीं पड़ती। विवाह पर तथा अन्य अवसरों लड़की-लड़के वाले पक्ष का कोई खर्च नहीं कराना होता। केवल कन्यादान यानि बेटी दान करना है। लड़की अपने पहनने के लिए केवल चार ड्रैस ले जा सकती है। जूता तो पहन ही रखा है, बस। जिस घर में जाएगी, वह परिवार उस बेटी को अपने घर के सदस्य की तरह रखेगा। अपने घर की वित्तीय स्थिति के अनुसार अन्य सदस्य के समान सर्व आवश्यक वस्तुऐं उपलब्ध कराएगा। बेटी अपने माता-पिता, भाई-भाभी पर कोई भार नहीं बनेगी। जब कभी अपने मायके आएगी तो कोई सूट तथा नकद नहीं लेगी। जिस कारण से भाभी-भाई को भी प्यारी लगेगी। भाभी को ननंद इसीलिए खटकती है कि आ गई चार-पाँच हजार खर्च करवा कर जाएगी। परंतु हमारी बेटी सम्मान के साथ आएगी और सम्मान के साथ लौट जाएगी। अपने मायके वालों से कोई वस्तु नहीं लेगी। जिससे दोनों पक्षों का परस्पर अधिक प्रेम सदा बना रहेगा। भक्ति भी अच्छी होगी। इस प्रकार जीने की यथार्थ राह पर चलकर हम शीघ्र मंजिल पर (मोक्ष तक) पहुँचेंगे।

प्रश्न :- जिनको संतान प्राप्त नहीं होती है, उस बेऔलादे (संतानहीन) का तो सुबह या शुभ कर्म को जाते समय मुख देखना भी बुरा मानते हैं? ऐसा क्यों?

उत्तर :- यह संपूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान के टोटे के कारण गलत धारणा है। पाठकजन इसी पुस्तक के पृष्ठ 6 पर पढ़ें कि एक व्यक्ति के चार पुत्र थे, उसको अधरंग हो गया तो किसी ने सेवा नहीं की। क्या उस आदमी के दर्शन इसलिए अच्छे हैं कि उसके संतान हैं। उसकी दुर्गति को कौन देखना अच्छा समझेगा?

कृतघ्नी पुत्र

एक व्यक्ति के दो पुत्र थे। फौज से सेनानिवृत था। पैंशन बनी थी। पुत्र अलग-अलग हो गए। छोटे पुत्र ने माता को अपने घर पर रख लिया क्योंकि बच्चे छोटे थे। माता उनकी देखरेख के लिए चाहिए थी। बड़े के बाँटे पिता आ गया। पिता ने कहा कि मैं पैंशन के रूपये उसको दूँगा जिसमें रोटी खाऊँगा। छोटा बेटा कहता था कि आधी-आधी पैंशन बाँट दिया कर। पिता ने मना कर दिया तो एक दिन पिता के सिर में लाठी मारी। पिता तुरंत मर गया। लड़के को आजीवन कारावास की सजा हो गई। व्यक्ति को पुत्र प्राप्त होने के कारण उसके दर्शन शुभ माने जाते थे जिसके साथ अशुभ हो गया। अब आध्यात्मिक तराजू (Balance) में तोलकर देखते हैं कि बिना संतान वाले के दर्शन शुभ हैं या अशुभ? जैसे इसी पुस्तक में ऊपर स्पष्ट किया है कि परिवार संस्कार से बनता है। कोई कर्ज उतारने के लिए पिता-पुत्र, पत्नी, माता-पिता, बहन-भाई आदि के रूप में जन्म लेकर परिवार रूप में ठाठ से रहते दिखाई देते हैं, परंतु कई युवा अवस्था में मर जाते हैं। कई विवाह होते ही मर जाते हैं। ये सब अपना ऋण पूरा होते ही अविलंब शरीर त्याग जाते हैं। जिनको संतान नहीं हुई है, उनका कोई लेन-देन शेष नहीं है। वे यदि पूर्ण गुरू से दीक्षा लेकर भक्ति करें तो उन जैसा सौभाग्यवान कोई नहीं है। न किसी के जन्म की खुशी, न मृत्यु का दुःख। उन बिना औलाद वालों का दर्शन तो अति शुभ है। यदि भक्ति नहीं करते तो चाहे औलाद (संतान) वाले हों, चाहे बेऔलादे (बिना संतान वाले) दोनों ही अपना जीवन नष्ट कर जाते हैं। यदि भक्ति करते हैं तो दोनों के दर्शन शुभ हैं।

बे-औलादो! सावधान

जिन पुण्यात्माओं को संतान नहीं होती तो आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव से उनकी तड़फ संतान प्राप्ति की बनी रहती है। उसके लिए हरसंभव प्रयत्न करते हैं। फिर भी कोई लेन-देन वाला (संतान) नहीं मिलता है तो आजीवन संतान प्राप्ति न होने के दुःख को झेलते हैं। विशेषकर स्त्री की संतान उत्पन्न करने की इच्छा प्रबल होती है। वह अपने को बांझ कहलवाना नहीं चाहती। भले ही जाँच करके डॉक्टर बता देते हैं कि आप में बांझ के कोई लक्षण नहीं हैं। विधाता की लीला है। परंतु तत्वज्ञानहीन स्त्री इसी तड़फ में मर जाती है। भक्ति न करने के कारण उसका अगला जन्म कुतिया का होता है। फिर जम के दूत उसे कहते हैं कि बहन

जी! अब संतान पैदा करके सारी कसर निकाल ले। एक ब्यांत में आठ-आठ जामैगी (जन्म देगी)। फिर अगला जन्म तेरा सूअरी का होगा। एक बार में बारह संतान को जन्म देगी और सात-आठ ब्यांत करेगी, संतान की सारी भूख मिटा लिए।

हे पुण्यात्मा पाठक भाईयो/बहनो! अध्यात्म ज्ञान को समझो। मानव जीवन को सफल बनाओ। जीने की राह समारो (निर्बाध बनाओ) यानि पूर्ण गुरू से दीक्षा लेकर भक्ति करके कल्याण करवाओ।

विवाह में ज्ञानहीन नाचते हैं

एक दिन समाचार पत्र में पढ़ा कि रोहतक का लड़का भिवानी विवाह के लिए कार में जा रहा था। उसके साथ दोनों बहनों के पति भी उसी कार में सवार थे। पहले दिन सब परिवार वाले (बहनें, माता-पिता, भाई-बटेऊ, चाचे-ताऊ) डी.जे. बजाकर नाच रहे थे। उधमस उतार रखा था। कलानौर के पास दुल्हे वाली गाड़ी बड़े ट्राले से टकराई। सर्व कार के यात्री मारे गए। दुल्हा मरा, दोनों बहनें विधवा हुई। एक ही पुत्र था, सर्वनाश हो गया। अब नाच लो डी.जे. बजाकर। परमात्मा की भक्ति करने से ऐसे संकट टल जाते हैं। इसलिए मेरे (रामपाल दास के) अनुयाईयों को सख्त आदेश है कि परमात्मा से डरकर कार्य करो। सामान्य विधि से विवाह करो। इस गंदे लोक (काल के लोक) में एक पल का विश्वास नहीं कि कब बिजली गिर जाए।

संतों की शिक्षा

एक गाँव का व्यक्ति पहली बार श्री नानक देव जी के पास गया। उसने देखा कि संत जी मायूस अवस्था में एकांत में बैठे थे।(स्मरण कर रहे थे) उस आदमी ने सतनाम-वाहेगुरू बोला। श्री नानक जी ने भी उत्तर दिया। भोजन करवाया। ज्ञान विचार सुनाए। वह व्यक्ति चला गया। एक दिन फिर वही व्यक्ति आया और बोला महाराज जी! आप कभी खुश दिखाई नहीं देते। क्या कारण है? संत नानक जी ने कहा कि :-

ना जाने काल की कर डारे, किस विधि ढ़ल जा पासा वे।
जिन्हाते सिर ते मौत खुड़कदी, उन्हानूं केहड़ा हांसा वे।।

भावार्थ :- संत नानक जी ने कहा कि हे भाई! इस मृत्युलोक में सब नाशवान हैं। पता नहीं किसकी जाने की बारी कब आ जाए? इसलिए जिनके सिर पर मौत गर्ज रही हो, उस व्यक्ति को नाचना-गाना, हँसी-मजाक कैसे अच्छा लगेगा? मूर्ख या नशे वाला व्यक्ति इस गंदे लोक में खुशी मनाता है। जैसे एक व्यक्ति की पत्नी को विवाह के दस वर्ष पश्चात् पुत्र हुआ। उसके उत्पन्न होने की खुशी में लड्डू बनाए, बैंड-बाजे बजाए, उधमस उतार दिया। अगले वर्ष जन्म दिन को ही मृत्यु हो गई। कहाँ तो जन्मदिन की खुशी की तैयारी थी, कहाँ रोआ-पीटी शुरू हो गई। घर नरक बन गया। अब मना लो खुशी।

वह व्यक्ति यह सच्चाई सुनकर काँप गया और बोला कि हे प्रभु! आपकी बातें

सत्य हैं, परंतु क्या आप कभी खुशी नहीं मनाते? श्री नानक जी ने उत्तर दिया कि खुशी मनाता हूँ।

साध मिले साडे शादी हूंदी, बिछुड़दा दिल गीरी वे।
अखदे नानक सुनो जिहाना, मुश्किल हाल फकीरी वे।।

भावार्थ :- जब मेरे शिष्य सत्संग सुनने आते हैं तो साध संगत को देखकर मेरे को खुशी होती है कि सब भक्ति पर लगे हैं। कोई विचलित नहीं हुआ है। जब ये सत्संग के पश्चात् जाते हैं तो मायूसी छा जाती है कि कहीं कोई सिरफिरा इनको भ्रमित करके परमात्मा से दूर न कर दे। श्री नानक जी ने कहा कि ज्ञानहीन संतों ने फकीरी यानि भक्ति को कठिन बना दिया है। वे पूर्ण मोक्ष मार्ग जानते नहीं, भ्रमित करने को गुरू बने हैं जो मीठी-मीठी बातें बनाकर मेरे भक्तों को काल के जाल में ले जाते हैं। इसलिए जब तक वे पुनः सत्संग में सब नहीं आते तो मुझे चिंता बनी रहती है। सब आ जाते हैं तो खुशी होती है, परंतु हम नाचते-गाते नहीं, दिल में महसूस करते हैं। मौत को कभी नहीं भूलते। कबीर जी ने कहा है :-

मौत बिसारी मूर्खा, अचरज किया कौन।
तन मिट्टी में मिल जाएगा, ज्यों आटे में लौन।।

शब्दार्थ :- हे मूर्ख मानव! तूने कैसा आश्चर्य कर रखा है कि मृत्यु को भूला है। तेरा शरीर एक दिन मृत्यु को प्राप्त होकर मिट्टी में मिल जाएगा। तेरा नाम-निशान यानि चिन्ह भी दिखाई नहीं देगा। जैसे आटे में नमक मिलने पर दिखाई नहीं देता। भावार्थ है कि मृत्यु का दिन भूलकर ही मनुष्य (स्त्री-पुरूष) स्वार्थवश गलतियाँ करता है और संसार में बेफिक्र रहता है। यदि मृत्यु याद है तो मानव कभी पाप व गफलत नहीं कर सकता।

अन्य उदाहरण :- एक सेठ एक दिन एक संत के आश्रम में गया। संत की कृपा से उसको अच्छा लाभ हो गया। वह सेठ सेब-संतरों, केलों का बड़ा थैला भरकर गया। संत जी ने एक टोकरे में डाल दिए जिसमें फल प्रसाद रखते थे। सेठ दो दिन बाद गया तो टोकरा फलों से भरा था। कुछ प्रसाद संत ने भक्तों को बाँट दिया। कुछ भक्त फल प्रसाद लाए, वह टोकरे में डाल दिया। सेठ ने संत से कहा कि महाराज! आप फल क्यों नहीं खाते? संत जी बोले कि मेरे को मौत दिखाई देती है। इसलिए खाया नहीं जाता। सेठ ने पूछा, महाराज! कब जा रहे हो संसार से? संत जी बोले, आज से चालीस वर्ष पश्चात् मेरी मृत्यु होगी। सेठ बोले, हे महाराज! यूं तो सबने मरना है, फिर क्यों डरना? यह भी कोई बात हुई। इस तरह तो आम आदमी भी नहीं डरता। आप क्या बात कर रहे हो? सेठ जी दूसरे-तीसरे दिन आए और इसी तरह की बात करे। उस नगरी का राजा भी उस संत जी का भक्त था। संत जी ने राजा से कहा कि आपकी नगरी में किरोड़ीमल सेठ है। चंदन की लकड़ी की दुकान है। उसको फाँसी की सजा सुना दो और एक महीने बाद चांदनी चौदस को फाँसी का दिन रख दो। जेल में सेठ की कोठरी (कक्ष) में फलों की टोकरी भरी रहे तथा दूध का लोटा एक सेर (किलोग्राम) का भरा रहे। खाने को खीर, हलवा,

पूरी, रोटी तथा सब्जी देना। राजा ने आज्ञा का पालन किया। जेल में सेठ जी को बीस दिन बंद हुए हो गए। निर्बल हो गया। संत जेल में गया। प्रत्येक बंदी से मिला। सेठ जी को देखकर संत ने पूछा, कहाँ के रहने वाले हो? क्या नाम है? सेठ बोला, हे महाराज! आपने पहचाना नहीं, मैं किरोड़ीमल हूँ चंदन की दुकान वाला। संत जी बोले, अरे किरोड़ीमल! तुम दुर्बल कैसे हो गए? कुछ खाते-पीते नहीं। अरे! फलों की टोकरी भी भरी है, दूध का लोटा भरा है। थाली में हलवा, खीर रखी है। सेठ जी बोले, हे महाराज! मौत की सजा सुना रखी है। कसम खाकर कहता हूँ कि मैं निर्दोष हूँ। बचा लो महाराज। मेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं। संत जी बोले, भाई मरना तो सबने है। फिर क्या डरना। खा-पीकर मौज कर। सेठ जी ने सलाखों में से हाथ निकालकर चरण पकड़ लिए। बोला, बचा लो महाराज! कुछ ना खाया-पीया जाता, चांदनी चौदस दीखै सै। संत ने कहा, सेठ किरोड़ीमल! जैसे आज तेरे को चांदनी चौदस को मृत्यु निश्चित दिखाई दे रही है, इसी प्रकार साधु-संतों को अपनी चांदनी चौदस दिखाई देती है, चाहे चालीस वर्ष बाद हो।

आप अध्यात्म ज्ञानहीन प्राणी मस्ती मारते हो और अचानक मौत ले जाती है। कुछ नहीं कर पाते। ऐसे ही मुझे अपनी मृत्यु का दिन दिखाई देता है जो चालीस वर्ष बाद आना है। इस कारण से खाना-पीना ठीक-ठीक ही लिया जाता है। मस्ती मन में कभी नहीं आती। परमात्मा की याद बनी रहती है। आपकी ज्ञान की आँखों पर अज्ञान की पट्टी बँधी है जो सत्संग में खोली जाती है जिससे जीने की राह मिल जाती है। मोक्ष प्राप्त होता है। संत ने राजा से कहकर सेठ को बरी करवा दिया। सेठ ने नाम लेकर कल्याण करवाया।

''विवाह के पश्चात् की यात्रा''

विवाह के पश्चात् पति-पत्नी का कर्तव्य बन जाता है कि एक-दूसरे पर अपना विश्वास कायम रखें। भावार्थ है कि दोनों जति-सति की मर्यादा का निर्वाह करें। पति को अटल विश्वास हो कि मेरी पत्नी अन्य पुरूष को कभी समर्पित नहीं हो सकती, चाहे वह कितना ही सुंदर तथा धनी हो। इस प्रकार पत्नी को अटल विश्वास हो कि मेरा पति अन्य औरत से प्रभावित होकर मिलन नहीं कर सकता, चाहे स्वर्ग से कोई अप्सरा भी आ जाए।

➢ कथा :- एक फौजी जवान था। उसकी पत्नी सति यानि पतिव्रता थी। यह बात उसने अपने साथियों को फौज में बता दी। यह बात राजा के मंत्री शेरखान (मुसलमान) के पास पहुँची तो उसने राजा को बताई और इस झूठ-सच की जाँच करने की प्रार्थना की। राजा ने सभा लगाई तथा उस फौजी चाप सिंह चौहान को बुलाया। सभा में राजा ने पूछा कि आप कह रहे हो कि आपकी पत्नी पतिव्रता है, वह अन्य पुरूष से किसी लालच में मिलन नहीं कर सकती। फौजी चाप सिंह ने कहा कि यह शत प्रतिशत सत्य है। राजा ने कहा कि यदि झूठ पाई तो? फौजी ने कहा कि जो सजा आप दें, मंजूर होगी।

शेरखान मंत्री ने कहा कि राजा जी! यह परीक्षा मैं स्वयं करूंगा। राजा ने कहा कि ठीक है। चापसिंह ने कहा कि मेरे विवाह के समय मिली सुहाग की निशानी एक पटका (कपड़े का परणा) तथा कटारी (बड़ा चाकू) मेरी पत्नी नहीं दे सकती। यदि शेरखान यह ले आया तो मैं हार मान लूंगा तथा मेरी पत्नी के शरीर का कोई चिन्ह बता देना। मैं मान लूंगा कि मेरी पत्नी धर्म से गिर गई है।

शेरखान ने चाप सिंह के नगर में जाकर एक मुखबिर स्त्री से कहा कि एक चाप सिंह फौजी की पत्नी रहती है। उसके साथ मेरा मिलन करा दे। तेरे को बहुत धन दूंगा। उस स्त्री ने कहा कि यह किसी कीमत पर संभव नहीं है। फिर शेरखान ने कहा कि किसी तरह उसके घर से विवाह में मिलने वाली सुहाग की निशानी पटका तथा कटारी ला दे, चाहे चुराकर ला दे तथा चाप सिंह की पत्नी सोमवती के गुप्तांग के पास या जांघ-सांथल पर कोई निशान हो तो वह पता कर दे। वह स्त्री मेहमान बनकर चाप सिंह की नकली बुआ बनकर सोमवती के घर गई। सोमवती के विवाह के समय तथा पश्चात् चाप सिंह की बुआ आई नहीं थी। बीमार होने के कारण विवाह में भी नहीं आ सकी थी। कई दिन रूकी। सोमवती को स्नान करते देखा तो निकट जाकर उसके सुंदर शरीर की प्रशंसा करने के बहाने अंग-अंग देखा। सोमवती के गुप्तांग के पास बड़ा तिल था। यह सब निशानी देखकर मुखबिर पटका तथा कटारी चुराकर ले गई और शेरखान मंत्री ने राजा को बताया कि मैं उसके साथ मिलन करके आया हूँ। उसकी जाँघ में काला तिल है। यह सुहाग की वस्तु पतिव्रता किसी को नहीं देती। मेरे प्रेम में तथा धन के लालच में मेरे को दी है।

राजा ने सभा लगाई। चाप सिंह को बुलाया। कहा कि यह पटका तथा कटारी किसकी है। चाप सिंह ने ध्यान से देखा तथा स्वीकारा कि मेरी हैं। शेरखान ने कहा कि और बताऊँ, सुन! तेरी पत्नी की दांई जांघ पर गुप्तांग के पास काला तिल है। चाप सिंह ने कहा कि यह सब सत्य है, परंतु मेरी पत्नी अपने धर्म से नहीं गिर सकती। राजा ने कहा कि तू अब भी वही रट लगा रहा है, तू झूठा है। तेरे को आज से एक महीने बाद फांसी दे दी जाएगी। तेरी जो अंतिम इच्छा हो, वह बता। चाप सिंह ने कहा कि मैं अपनी पत्नी से मिलना चाहता हूँ। राजा ने आज्ञा दे दी। चाप सिंह अपनी पत्नी के पास गया। उसको बेवफाई के कारण ऊँच-नीच कहा और बताया कि मेरे को उस दिन तेरे कारण फांसी लगेगी। सोमवती ने बताया कि आपकी बुआ का नाम लेकर एक स्त्री आई थी। उसने मेरे अंग का चिन्ह देखा तथा पटका और कटारी चुरा ले गई। चाप सिंह ने बताया कि मंत्री शेरखान आया था। उसने यह सब षड़यंत्र रचा है। चाप सिंह वापिस लौट गया। फांसी वाले दिन से एक सप्ताह पहले सोमवती राजा की नगरी में एक नर्तकी (नाचने वाली) बनकर गई और राजा को नृत्य दिखाने के लिए कहा। राजा ने आज्ञा दे दी। पूरे सभासद उपस्थित थे। मंत्री शेरखान भी उपस्थित था। नर्तकी के नृत्य से राजा अति प्रसन्न हुआ तथा नृतका से कहा कि माँगो, क्या माँगती हो, मैं अति प्रसन्न हूँ। नर्तकी

ने कहा कि वचनबद्ध हो जाओ, तब माँगूंगी। राजा ने कहा कि राज्य के अतिरिक्त कुछ भी माँग, मैं वचनबद्ध हूँ।

नर्तकी ने कहा कि आपकी सभा में मेरा चोर है। मेरे घर से चोरी करके लाया है। शेरखान मंत्री नाम है। उसको फांसी की सजा दी जाए। शेरखान से राजा ने पूछा कि बता शेरखान! कितनी सच्चाई है? शेरखान बोला कि हे परवरदिगार! मैंने तो इस औरत की आज से पहले कभी शक्ल भी नहीं देखी थी।

तब सोमवती ने कहा कि यदि आपने मेरी शक्ल भी नहीं देखी थी तो ये पटका और कटारी किसके घर से लाया? मैं उस चाप सिंह की पतिव्रता पत्नी हूँ जिसे तेरी झूठ के कारण फांसी दी जा रही है। चाप सिंह को बुलाया गया। राजा ने चाप सिंह को आधा राज्य सौंप दिया और क्षमा कर दिया तथा शेरखान मंत्री को फांसी की सजा दी गई। धन्य है ऐसी बेटियां जिन पर नाज है भारत को।

गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी ने बताया था कि :-

तुरा न तीखा कूदना, पुरूष नहीं रणधीर।
नहीं पदमनी नगर में, या मोटी तकसीर।।

भावार्थ :- कबीर जी ने बताया है कि गरीबदास! जिस नगर व देश में तुरा (घोड़ा) तेज दौड़ने व ऊँचा कूदने वाला नहीं है और नागरिक रणधीर (शूरवीर) नहीं हैं और जिस देश व नगर में पद्मनी यानि पतिव्रता स्त्री नहीं है तो यह मोटी तकसीर (बहुत बड़ी गलती) है यानि कमी है। इस प्रकार का चरित्रवान स्त्री-पुरूष दोनों का होना अनिवार्य है।

❖ विवाह के पश्चात् ससुराल में कुछ लड़कियाँ सर्व श्रंगार करती हैं। सज-धजकर गलियों से गुजरती हैं। अजीबो-गरीब हरकत करती हैं। असहज लगने वाले भड़कीले-चमकीले वस्त्र पहनकर बाजार या खेतों में या पानी लेने नल या कूँऐ पर जाती हैं। उनका उद्देश्य क्या होता है? स्पष्ट है कि अपने पति के अतिरिक्त अन्य पुरूषों को अपनी ओर आकर्षित करना। अपनी सुंदरता तथा वैभव का प्रदर्शन करना जो एक अच्छी बहू-बेटी के लक्षण नहीं हैं। यदि कहें कि पति को प्रसन्न करने के लिए ऐसा करती हैं तो वे घर तक ही सीमित रहती तो अच्छा होता, परंतु ऐसे लक्षण मन में दोष के प्रतीक होते हैं।

साधारण वस्त्र पहनने चाहिए, चाहे मंहगे हों, चाहे सस्ते। बहन-बेटी-बहू की नजर सामने 12 फुट तक रहनी चाहिए। चलते-बैठते, उठते समय ध्यान रखे कि कोई ऐसी गतिविधि न हो जाए जो किसी के लिए उत्प्रेरक हो। स्त्री की गलत अदा यानि गतिविधि से लफंडर लोगों का हौंसला बढ़ता है। वे परेशान करते हैं। महिला का हँस-हँसकर बातें करना उत्प्रेरक तथा असभ्य होता है जो सामाजिक बुराई है। जैसे बहन-बेटी, बहू यानि युवती अपने परिजनों के साथ रहती है। ऐसा ही आचरण घर से बाहर होना चाहिए। उसकी प्रशंसा सभ्य समाज किया करता है। अन्य युवाओं को उसका उदाहरण बताते हैं। यदि पैट्रोल को चिंगारी नहीं मिलेगी तो वह विस्फोटक नहीं होता।

❖ इसके विपरीत उपरोक्त गतिविधि करना समाज में आग लगाना है। यह बात युवतियों तथा युवाओं दोनों पर लागू होती है।

जवानी बारूद की तरह होती है। यदि कोई चिंगारी लग जाए तो सर्वनाश हो जाता है। यदि चिंगारी नहीं लगे तो वर्षों सुरक्षित रहती है।

❖ प्रत्येक पुरूष चाहता है कि मेरी बेटी-बहन-बहू अच्छे चरित्र वाली हो। गाँव-नगर में कोई यह न कहे कि उनका खानदान ऐसा-वैसा है।

❖ जब हम किसी युवती को देखते हैं और मन में दोष उत्पन्न हो तो तुरंत विचार करें कि यदि कोई हमारी बेटी, बहन, बहू के विषय में गलत विचार करे तथा दुष्कर्म के उद्देश्य से कुछ अटपटी गतिविधि (व्यंग्य करके अपने दुष्विचारों को प्रकट करे, गलत संकेत करे, आँखों को चटकाए-मटकाए, टेढ़ी-नजर से देखे, ऐसी गलत हरकत) करे तो कैसा लगेगा। उत्तर स्पष्ट है कि टाँगें तोड़ देंगे। जो निर्बल हैं, वो एकान्त में बैठकर रोऐंगे। उस समय विचार करें कि :-

जैसा दर्द अपने होवे, ऐसा जान बिराणै।
जो अपनै सो और कै, एकै पीड़ पिछानै।।
कबीर, परनारी को देखिये, बहन—बेटी के भाव।
कह कबीर काम (Sex) नाश का, यही सहज उपाय।।

समाधान :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि :-

यौन उत्पीड़न के प्रेरक :- फिल्में, जिनमें नकली, बनावटी कहानियाँ तथा अदाऐं दिखाई जाती हैं जिनको देखकर जवान बच्चे उसी की नकल करके बेशर्म होने लगते हैं। जैसी गतिविधि फिल्म में दिखाई जाती है, वैसी गतिविधि न घर में, न गली में, न सभ्य समाज में की जा सकती हैं। तो उनको देखने का उद्देश्य क्या रह जाता है? कुछ नहीं। केवल बहाना है मनोरंजन। वही मनोरंजन समाज नाश का मूल कारण है। मेरे (लेखक के) अनुयाई बिल्कुल भी फिल्म नहीं देखते।

अश्लील रागनी, फिल्मी गाने, सांग (स्वांग) तथा अश्लील चर्चा जो निकम्मे युवा करते हैं। उनकी संगत में अच्छे युवा भी प्रेरित होकर बकवाद करने लग जाते हैं। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

कथा करो करतार की, सुनो कथा करतार।
काम (Sex) कथा सुनों नहीं, कह कबीर विचार।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने समझाया है कि या तो परमात्मा की महिमा का गुणगान (कथा) करो या कहीं परमात्मा की चर्चा (कथा) हो रही हो तो वह सुनो। काम यानि अश्लील चर्चा कभी न सुनना। कबीर जी ने यह विचार यानि मत बताया है।

''विशेष मंथन''

काम (Sex) प्रक्रिया को विशेष विवेक के साथ समझें। पति-पत्नी मिलन को समाज मान्यता देता है कि आप दोनों परस्पर संतान उत्पन्न करो। सबके

माता-पिता ने संतानोत्पत्ति की प्रक्रिया की जिसे संभोग कहते हैं, किया। जिससे अपना तथा अपने भाई-बहनों का जन्म हुआ। तो विचार करें कि यह क्रिया कितनी पवित्र तथा अच्छी है जिससे अपने को अनमोल मानव शरीर मिला है। कोई डॉक्टर बना, कोई सैनिक, कोई मंत्री तो कोई इन्जीनियर बना है। कोई किसान बना है जिसने सबको अन्न दिया। कोई मजदूर बना जिसने आपके महल खड़े किए। कोई कारीगर बना। मानव शरीर में हम भक्ति-दान-धर्म के कर्म करके अपने जीव का कल्याण करा सकते हैं। संभोग क्रिया यह है। इसको कितना ही बकवाद करके रागनी गाकर, फिल्मी गाने गा-सुनाकर मलीन वासना रूप दें, बात इतनी ही है। यह पर्दे में करना सभ्यता है। पशु-पक्षी प्रजनन क्रिया करते हैं जो खुले में करते हैं जो अच्छा-सा नहीं लगता। मानव सभ्य प्राणी है। उसको पर्दे में तथा मर्यादा में रहकर सभ्यता को बनाए रखना है।

उपरोक्त विचार पढ़कर आपमें किसी भी बहन-बेटी-बहू की ओर देखकर अश्लील विचार उत्पन्न नहीं हो सकते। यही क्रिया दादा-दादी ने की जिससे अपने पिता जी का जन्म हुआ। नाना-नानी ने की, जिससे माता जी का जन्म हुआ। जिन माता-पिता ने अपने को उत्पन्न किया, पाला-पोसा। कितने अच्छे हैं अपने माता-पिता जिनकी उत्पत्ति भी काम क्रिया से हुई। तो यह क्या अश्लील है? इसको खानाबदोश लोग अश्लीलता से पेश कर अश्लील रंग देकर समाज में आग लगाते हैं।

❖ देश के संविधान में प्रावधान है कि यदि कोई पुरूष किसी स्त्री से छेड़छाड़ करता है तो उसे तीन वर्ष की सजा दी जाती है। यदि किसी स्त्री से रेप करता है तो दस वर्ष की सजा होती है। कानून का ज्ञान होने से इंसान बुराई-दुराचार से डरता है। कानून का ज्ञान होना आवश्यक भी है। इस तरह के पाप काल ब्रह्म करवाता है। काल कौन है? जानें सृष्टि रचना में इसी पुस्तक के पृष्ठ 254 पर।

❖ फिल्म नहीं देखनी है :- फिल्म बनावटी कहानी होती है जिसे देखते समय हम भूल जाते हैं कि जो इसके पात्र हैं, वे रोजी-रोटी के लिए धंधा चला रहे हैं। करोड़ों रूपये एक फिल्म में काम करने के लेते हैं। भोले युवक विवेक खोकर उनके फैन (प्रशंसक) बन जाते हैं। वे अपना धंधा चला रहे हैं, आप मूर्ख बनकर सिनेमा देखने में धन व्यर्थ करते हैं। जिस हीरो-हिरोइन के आप फैन बने हैं, आप उनके घर जाकर देखें। वे आपको पानी भी नहीं पिलाऐंगे। चाय-खाना तो दूर की कौड़ी है। विचार करें कि मैं लड्डू खा रहा हूँ और आप देख रहे हो। आप कह रहे हो कि वाह! लड्डू बड़े स्टाइल से खा रहा है। आपको क्या मिला? यही दशा फिल्मी एक्टरों तथा दर्शकों की है।

❖ हमने अपनी सोच बदलनी है :-

➢ जैसे हम अश्लील मूर्तियाँ देखते हैं तो अश्लीलता उत्पन्न होती है क्योंकि उस उत्तेजक मूर्ति ने अंदर चिंगारी लगा दी, पैट्रोल सुलगने लगा। ऐसी तस्वीरों को तिलांजलि दे दें।

➢ जैसे हम देशभक्तों की जीवनी पढ़ते हैं और मूर्ति देखते हैं तो हमारे अंदर

देशभक्ति की प्रेरणा होती है। ऐसी तस्वीर घर में हों तो कोई हानि नहीं।

➢ यदि हम साधु-संत-फकीरों तथा अच्छे चरित्रवान नागरिकों की जीवनी पढ़ते-सुनते हैं तो सर्व दोष शांत होकर हम अच्छे नागरिक बनने का विचार करते हैं। इसलिए हमें संत तथा सत्संग की अति आवश्यकता है जहाँ अच्छे विचार बताए जाते हैं।

➢ हम अपनी छोटी-सी बेटी को स्नान कराते हैं, वस्त्र पहनाते हैं। इस प्रकार सब करते हैं। वही बेटी विवाह के पश्चात् ससुराल जाती है। अन्य की बेटी हमारे घर पर बहू बनकर आती है। अब नया क्या हो गया? यह शुद्ध विचार से विचारने की बात है। इस प्रकार विवेक करने से खानाबदोश विचार नष्ट हो जाते हैं। साधु भाव उत्पन्न हो जाता है।

➢ समाचार पत्रों में भी इतनी अश्लील तस्वीरें छपती हैं जो युवाओं को असामान्य कर देती हैं। कुछ कच्छे की प्रसिद्धि में लड़कियाँ केवल अण्डरवीयर तथा चोली (ब्रेजीयर) पहनती हैं जो गलत है। इसी प्रकार पुरूष भी अण्डरवीयर (कच्छे) की प्रसिद्धि के लिए केवल कच्छा पहनकर खड़े दिखाई देते हैं जो महानीचता का प्रतीक है। इनको बंद किया जाना चाहिए। इसके लिए सभ्य संगठन की आवश्यकता है जो संवैधानिक तरीके से इस प्रकार की अश्लीलता को बंद कराने के लिए संघर्ष करे तथा मानव को चरित्रवान, दयावान बनाने के लिए अच्छी पुस्तकें उपलब्ध करवाए। सत्संग की व्यवस्था करवाए।

➢ अच्छे विचार सुनने वाले बच्चे संयमी होते हैं। देखने में आता है कि जिस बेटी का पति विवाह के कुछ दिन पश्चात् फौज में अपनी ड्यूटी पर चला गया। लगभग आठ-नौ महीने छुट्टी पर नहीं आता। कुछ बेटियों के पति अपने रोजगार के लिए विदेश चले जाते हैं और तीन वर्ष तक भी नहीं लौटते। वे बेटियाँ संयम से रहती हैं। किसी गैर-पुरूष को स्वपन में भी नहीं देखती। ये उत्तम खानदान की बेटियाँ हैं। पुरूष भी इतने दिन संयम में रहता है। वे बच्चे ऊँचे घर के हैं। असल खानदान के होते हैं। जो भड़वे होते हैं, वे तांक-झांक करते रहते हैं। सिर के बालों की नये स्टाईल से कटिंग कराकर काले-पीले चश्में लगाकर गली-गली में कुत्तों की तरह फिरते हैं। वे खानाबदोश होते हैं। वे किसी गलत हरकत को करके बसे-बसाए घर को उजाड़ देते हैं क्योंकि वे किसी की बहन-बेटी को उन्नीस-इक्कीस कहेंगे जिससे झगड़ा होगा। लड़ाई का रूप न जाने कहाँ तक विशाल हो जाए। किसी की मृत्यु भी हो सकती है। उस एक भड़वे ने दो घरों का नाश कर दिया। इसलिए अपने बच्चों को बचपन से ही सत्संग के वचन सुनाकर विचारवान तथा चरित्रवान बनाना चाहिए।

''चरित्रवान की कथा''

एक शुकदेव ऋषि थे। वे श्री वेदव्यास के पुत्र थे। एक दिन वे दीक्षा लेने के उद्देश्य से राजा जनक जी के पास मिथिला नगरी में गए। राजा जनक ने कहा कि शुकदेव कल सुबह नाम दूँगा। उनके ठहरने की व्यवस्था अलग भवन में कर

दी। एक सुंदर युवती को ऋषि जी की सेवा में परीक्षा लेने के उद्देश्य से भेजा। युवती शुकदेव जी के पलंग पर पैरों की और बैठ गई। ऋषि जी ने पैर सिकोड़कर और मोड़ लिए। युवती ऋषि जी की ओर निकट हुई तो उठकर खड़े हो गए। कहा कि हे बहन! आप अच्छे घर की बेटी दिखाई देती हो। कंपा कमरे से बाहर जाऐं, नहीं तो मैं चला जाता हूँ। लड़की चली गई। राजा जनक से बताया कि सुच्चा व्यक्ति है। ऐसे-ऐसे हुआ। सुबह राजा जनक जी ने ऋषि शुकदेव जी से पूछा कि आपसे मिलने स्त्री आई थी, आपने उसे अंगिकार न करके अच्छे संयम का प्रदर्शन किया है। आप संयमी व्यक्ति हैं। धन्य हैं आपके माता-पिता।

❖ कबीर परमेश्वर जी के विचार इनसे भी उच्च तथा श्रेष्ठ हैं। वे कहते हैं कि ऋषि शुकदेव भी आत्मज्ञानी नहीं था क्योंकि जब युवती शुकदेव के पलंग पर बैठी तो शुकदेव ने उसे स्त्री समझकर अपने शरीर से छूने नहीं दिया और खड़ा होकर बाहर जाने की तैयारी कर दी। इससे स्पष्ट है कि शुकदेव जी को आत्म ज्ञान नहीं था। विचार करें कि यदि युवती के स्थान पर युवक बैठ जाता तो शुकदेव जी क्या करते? वे उससे कुशल-मंगल पूछते और पलंग छोड़कर खड़े नहीं होते। कहते कि भईया! पलंग एक ही है, आप पलंग पर विश्राम करो, मैं नीचे पंथ्वी पर आसन लगा लेता हूँ। यदि युवक सभ्य होता तो कहता कि नहीं ऋषि जी! आप पलंग पर विराजो, मैं पंथ्वी पर विश्राम करूंगा। परंतु युवती होने के कारण ऋषि शुकदेव को काम दोष के कारण भय लगा।

कबीर परमेश्वर जी ने बताया है कि स्त्री तथा पुरूष आत्मा के ऊपर दो वस्त्र हैं। जैसे गीता अध्याय 2 श्लोक 22 में कहा कि अर्जुन! जीव शरीर त्यागकर नया शरीर धारण कर लेता है, इसे मंत्यु कहते हैं। यह तो ऐसा है जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र त्यागकर नए पहन लेता है। इसलिए आत्म तत्व को जान।

उदाहरण :- एक गाँव में सांग (स्वांग) मण्डली आई। कई दिन सांग किया। पुराने जमाने में सांग के नाटक में पुरूष ही स्त्री का अभिनय किया करते थे। एक लड़का अपने साथी के साथ पहली बार सांग देखने गया। सांग में एक लड़के को लड़की के वस्त्र पहना रखे थे। छाती भी युवा लड़की की तरह बना रखी थी। प्रथम बार गए लड़के ने अपने साथी (जो कई बार सांग देख चुका था) से कहा कि देख! कितनी सुंदर लड़की है। साथी बोला, यह लड़की नहीं लड़का है। परंतु प्रथम बार गया लड़का मानने को तैयार नहीं। उसको अपने मित्र की बातों पर विश्वास नहीं हो रहा था। सांग के समाप्त होने के पश्चात् सांगी अपने उस स्थान पर गए जहाँ ठहरे हुए थे। दोनों लड़के भी उनके साथ वहीं गए। उस लड़के ने जो लड़की का स्वांग बनाए हुए था, अपने स्त्री वाले वस्त्र उतारकर खूंटी पर टाँग दिये। छाती से बनावटी दूधी उतारकर बैग में डाल दी। कच्छे-कच्छे में स्नान करने चला गया। यह देखकर नए दर्शक को विश्वास हुआ कि वास्तव में यह लड़का है। अगले दिन उस लड़के दर्शक को वह लड़की के वेश में लड़के में लड़की वाली मलीन वासना दिल में नहीं आई। उसे लड़का दिखाई दे रहा था। इसी प्रकार यदि शुकदेव ऋषि को

अध्यात्म विवेक से आत्म ज्ञान होता तो उससे स्त्री नहीं आत्मा रूप में पुरूष समझकर कहता कि आप पलंग पर विराजो, मैं पृथ्वी पर विश्राम करता हूँ। साधु, संत, फकीर इस विचारधारा से जीवन जीते हैं। साधना करके मोक्ष प्राप्त करते हैं।

‘‘संगत का प्रभाव तथा विश्वास प्रभु का’’

एक गाँव में एक व्यक्ति के विवाह को दस-बारह वर्ष हो चुके थे। संतान नहीं हुई थी। उसी गाँव से बाहर लगभग दो कि.मी. की दूरी पर एक आश्रम था। उसमें एक सिद्ध संत रहता था। वह गाँव में से भिक्षा माँगकर लाता था। उसको तीन-चार या अधिक दिन खाता रहता था। एक दिन वह उस घर से भिक्षा लेने गया जिस व्यक्ति को कोई संतान नहीं थी। स्त्री-पुरूष दोनों ने साधु जी से पुत्र प्राप्ति के लिए चरण पकड़कर प्रार्थना की। साधु ने कहा कि एक शर्त पर संतान हो सकती है। स्त्री-पुरूष ने पूछा कि बताओ। साधु ने कहा कि प्रथम पुत्र उत्पन्न होगा। दो वर्ष होने के पश्चात् मुझे चढ़ाना होगा। उसे मैं अपना उत्तराधिकारी बनाऊँगा। आपको मंजूर हो तो बताओ। उसके पश्चात् लड़की होगी। फिर एक पुत्र होगा। दोनों ने उस शर्त को स्वीकार कर लिया। साधु के आशीर्वाद से दसवें महीने पुत्र हुआ। दो वर्ष का होने पर साधु को सौंप दिया। उस समय स्त्री फिर गर्भवती थी। उसने कन्या को जन्म दिया। फिर एक पुत्र और हुआ। जिस कारण से साधु की महिमा और अधिक हो गई। उस आश्रम में युवा लड़कियों का प्रवेश निषेध था। जब वह लड़का सोलह वर्ष का हुआ तो एक दिन गुरू जी को छाती में स्तन के पास फोड़ा हो गया। जिस कारण साधु जी दर्द के कारण व्याकुल रहने लगा। जड़ी-बूटी बनाकर उस फोड़े पर लगाई। चार-पाँच दिन में वह फोड़ा फूटकर ठीक हुआ। तब साधु सामान्य हुआ। कुछ दिन के पश्चात् साधु को बुखार हो गया। वृद्धावस्था व बुखार के कारण उत्पन्न कमजोरी की वजह से चलने-फिरने में असमर्थ हो गया। साधु ने उस शिष्य को कभी गाँव में भिक्षा लेने नहीं भेजा था। यह विचार करके कि कहीं जवान लड़का गाँव में लड़कों के साथ बैठकर बुरी संगत में पड़कर कोई गलती न कर दे।

कहीं विवाह करने की प्रेरणा न हो जाए। परंतु उस दिन विवश होकर साधु ने अपने शिष्य से कहा कि बेटा! भिक्षा माँगकर ला और गाँव में प्रथम गली में चौथे घर से जो मिले, उसे लेकर आ जाना, आगे मत जाना। लड़का गुरूजी के आदेशानुसार उसी घर के द्वार पर गया और बोला, अलख निरंजन! उस घर से एक 14 वर्षीय लड़की भिक्षा डालने के लिए द्वार पर आई तो साधु लड़का उस लड़की की छाती की ओर गौर से देख रहा था। लड़की ने देख लिया कि साधु की दृष्टि में दोष है। लड़की बोली कि ले बाबा भिक्षा। साधु बोला, हे माई की बेटी! तेरी छाती पर दो फोड़े हुए हैं। आप आश्रम में आ जाना। तेरे फोड़े गुरू जी ठीक कर देंगे। हे माई की बेटी! आपको बहुत पीड़ा हो रही होगी। मेरे गुरू जी को तो एक ही फोड़े ने दुःखी कर रखा था। यह बात लड़के साधु से सुनकर लड़की का

अंदाजा और दढ़ हो गया कि यह साधु नेक नहीं है। लड़की ऊँची-ऊँची आवाज में बोलने लगी कि अपनी माँ-बहन के फोड़े ठीक करा ले, बदतमीज! तेरे को जूती मारूंगी। यह कहकर लड़की ने पैर की जूती निकाल ली और बोली चला जा यहाँ से, फिर कभी मत आना। शोर सुनकर लड़की की माता भी द्वार पर आई और पूछा कि बेटी! क्या बात है? लड़की ने उस साधु की करतूत माता को बताई। माता ने पूछा कि बाबा जी! कहाँ से आये हो? लड़के साधु ने बताया कि इस आश्रम से आया हूँ। मेरे गुरू जी बीमार हो गए हैं, चलने-फिरने में असमर्थ हैं। इसलिए पहली बार मुझे भिक्षा लाने भेजा है। मैं उनका शिष्य हूँ। मैंने तो इस बहन से पूछा था कि तेरी छाती पर दो फोड़े हैं, बहुत दुःखी हो रही होगी। मेरे गुरू जी को तो एक ही फोड़ा हुआ था, दिन-रात दर्द से व्याकुल रहते थे। वे औषधि जानते हैं। आप गुरू जी के पास जाकर फोड़े ठीक करा लो। वह साधु लड़का उसी स्त्री का बेटा था जो साधु को चढ़ा रखा था। वह लड़की उस साधु बाबा की छोटी बहन थी। माता ने बताया कि यह तेरा भाई है जो हमने साधु को चढ़ा रखा है। यह दुनियादारी की खराब बातों से बचा है। इसको कुछ भी पता नहीं है। जो दोष बेटी तुझे लगा, वह इस तेरे भाई में नहीं है। यह तो पाक-साफ आत्मा से बोल रहा था। तूने गाँव के चंचल युवकों वाली शरारत के अनुसार विचार करके धमकाया। माई ने बताया कि साधु जी! मेरी बेटी की छाती पर फोड़े नहीं हैं। ये दूधी हैं, देख! जैसे मेरी छाती पर हैं। इसका विवाह करेंगे। इसको संतान उत्पन्न होगी। तब इन दूधियों से इससे बच्चे दूध पीऐंगे। साधु बच्चा बोला, हे माई! इसका विवाह कब होगा? कब इसको संतान होगी? माई ने बताया कि कभी तीन-चार वर्ष के पश्चात् विवाह करेंगे। फिर दो-तीन वर्ष पश्चात् संतान होगी।

साधु लड़के ने आध्यात्मिक दष्टिकोण से विचार किया कि परमात्मा को जन्म लेने वाले बच्चे की कितनी चिंता है। उसके जन्म से 7-8 वर्ष पूर्व ही दूध पीने की व्यवस्था कर रखी है। क्या वह हमारे खाने की व्यवस्था आश्रम में नहीं करेगा? हम तो गुरू-शिष्य उस परमात्मा के भरोसे बैठे हैं। आज के बाद भिक्षा माँगना बंद। यह विचार कर रहा था कि माई ने पूछा, बाबा जी! क्या चिंता कर रहे हो? साधु बोला कि माई चिंता समाप्त। यह कहकर भिक्षा सहित झोली (थैला) गली में फैंककर आश्रम खाली हाथ आया तो गुरू जी ने पूछा कि भिक्षा क्यों नहीं लाया? झोली किसी ने छीन ली क्या? लड़के ने बताया कि गुरू जी! जब परमात्मा बच्चे के जन्म लेने से 7-8 वर्ष पूर्व ही सर्व खाने की व्यवस्था करता है तो क्या अपनी आश्रम में नहीं करेगा? अवश्य करेगा। इसलिए मैं झोली गली में फैंक आया। साधु समझ गया कि यह कामचोर रास्ते में झोली फैंककर आ गया कि रोज भिक्षा लेने जाना पड़ेगा। साधु विवश था, कुछ नहीं बोला। सोचा कि कल मैं दुःखी-सुखी होकर जैसे-तैसे स्वयं भिक्षा लाऊँगा।

जब साधु बालक झोली तथा भिक्षा गली में फैंककर आश्रम में चला गया तो परमात्मा ने नगर के कुछ व्यक्तियों में प्रेरणा की कि बड़े बाबा अस्वस्थ हैं। छोटे

बाबा को किसी ने कुछ कह दिया, वह भिक्षा व झोली दोनों फैंककर चला गया। साधु भूखा है, बच्चा भी भूखा रहेगा। यह विचार करके अच्छा भोजन तैयार किया। खीर-फुल्के-दाल बनाकर पहले एक लेकर पहुँचा और साधु से कहा कि छोटा बाबा जी किसी के कहने पर रूष्ट होकर भिक्षा नहीं लाया। झोली-भिक्षा फैंक आया। आप भोजन खाओ। साधु ने कहा कि पहले बालक को खिलाओ। बालक बोला कि पहले गुरू जी खाऐंगे, फिर चेला खाएगा। साधु भोजन खाने लगा। इतने में दूसरा हलवा-पूरी-छोले लेकर आ गया। इस प्रकार लगभग दस व्यक्ति गाँव के यही विचार करके भोजन लेकर आश्रम में पहुँचे। चेला बोला कि वाह भगवान! हमें पता नहीं था कि आप कितने अच्छे हो। इसीलिए आपके नाम की चिंता कम भोजन की अधिक रहती थी। गाँव वालों ने नम्बर बाँध लिया कि एक दिन एक घर से साधुओं का भोजन भेजा जाए। ऐसा ही हुआ।

शिक्षा :- जैसी संगत, वैसी रंगत। अपना दोष दूसरे में दिखता है। परमात्मा पर विश्वास बिना भक्त अधूरा है। माँगकर खाना भी शास्त्रविरूद्ध है क्योंकि यदि भक्त की श्रद्धा तथा भावना सच्ची है तो परमात्मा व्यवस्था कर देता है। परंतु गृहस्थी के कर्म करके भोजन ग्रहण करना सर्वोत्तम है। साधु-संत का कर्म सत्संग करना, भक्ति करना है। यदि सच्ची श्रद्धा से करता है तो उसे माँगने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। संत गरीबदास जी ने परमात्मा कबीर जी से प्राप्त ज्ञान से अपनी अमृतवाणी में कहा है कि :-

''वैराग प्रकरण के अंग से कुछ वाणी''

गरीब, नट पेरणा कांजर सांशी मांगत हैं भठियारे।
जाकी तारी लागी तत् में मोति देत उधारे।।(3)
गरीब, द्रोपद सुता के चीर बढ़ाए बिन ही ताने काते।
सकल मनोरथ पूर्ण साहिब तुम क्यों मांगन जाते।।(2)
गरीब, आप तें आवै रत्न बराबर मांग्या आवै लोहा।
लक्षण नहीं जोग के जोगी जा बस्या बन खोहा।।(6)
गरीब, टूकां कारण फिरै कुकरा (कुत्ता) सतघर फिर आवै।
ये तो लक्षण नहीं जोग के क्यों बाणा बिरदल जावै।।(10)
गरीब, जिनको आत्मज्ञान नहीं है वे मांगैं रे भाई।
चावल चून इकट्ठा करकै ब्याज बधावैं जाई।।(24)
गरीब, जो मांगै सो भड़वा कहिये दर—दर फिरै अज्ञानी।
योगी योग सम्पूर्ण जिसका जो मांग न पीवै पानी।।(41)
गरीब, कद नारद जमात चलाई व्यास न टुकड़ा मांग्या।
वसीष्ठ विश्वामित्र ज्ञानी शब्द बिहंगम जाग्या।।(50)
गरीब, कबीर पुरूष कै बालद आई नौ लख बोडी लाहा।
केशव से बणजारे जिस कै देवैं यज्ञ जुलाहा।।(55)

भावार्थ :- उपरोक्त वाणियों का भाव है कि जो सत्य भक्ति शास्त्र अनुकूल

नहीं करते, वे साधु वेश बनाकर ऐसे माँगते फिरते हैं जैसे कुत्ता टूक-रोटी के लिए सत्तर घरों में जाता है। जैसे अन्य जाति वाले नट-पेरणें, कांजर व सांशी लोग रोटी के लिए भटकते थे। यदि साधु भी ऐसे ही करता है तो उसकी साधना में त्रुटि है। परमेश्वर कबीर जी अपना दैनिक कर्म जुलाहे का करते थे तथा सत्य साधना भी करते थे व सत्संग भी करते थे। सत्य भक्ति करने वाले की परमात्मा कैसे सहायता करता है, यह प्रमाण स्वयं कबीर जी ने दिया है। कथा इस प्रकार है :-

''परमेश्वर कबीर जी द्वारा काशी शहर में भोजन-भण्डारा यानि लंगर (धर्म यज्ञ) की व्यवस्था करना''

शेखतकी सब मुसलमानों का मुखिया अर्थात् मुख्य पीर था जो पहले से ही परमेश्वर कबीर जी से खार खाए था अर्थात् पहले से ही ईर्ष्या करता था। सर्व ब्राह्मणों तथा मुल्ला-काजियों व शेखतकी ने मजलिस (मीटिंग) करके षड़यंत्र के तहत योजना बनाई कि कबीर निर्धन व्यक्ति है। इसके नाम से पत्र भेज दो कि कबीर जी काशी में बहुत बड़े सेठ हैं। उनका पूरा पता है कबीर पुत्र नूरअली अंसारी, जुलाहों वाली कॉलोनी, काशी शहर। कबीर जी तीन दिन का धर्म भोजन-भण्डारा करेंगे। सर्व साधु संत आमंत्रित हैं। प्रतिदिन प्रत्येक भोजन करने वाले को एक दोहर (जो उस समय का सबसे कीमती कम्बल के स्थान पर माना जाता था), एक मोहर (10 ग्राम स्वर्ण से बनी गोलाकार की मोहर) दक्षिणा देगें। प्रतिदिन जो जितनी बार भी भोजन करेगा, कबीर उसको उतनी बार ही दोहर तथा मोहर दान करेगा। भोजन में लड्डू, जलेबी, हलवा, खीर, दही बड़े, माल पूड़े, रसगुल्ले आदि-2 सब मिष्ठान खाने को मिलेंगे। सुखा सीधा (आटा, चावल, दाल आदि सूखे जो बिना पकाए हुए, घी-बूरा) भी दिया जाएगा। एक पत्र शेखतकी ने अपने नाम तथा दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी के नाम भी भिजवाया। निश्चित दिन से पहले वाली रात्रि को ही साधु-संत भक्त एकत्रित होने लगे। अगले दिन भण्डारा होना था। परमेश्वर कबीर जी को संत रविदास दास जी ने बताया कि आपके नाम के पत्र लेकर लगभग 18 लाख साधु-संत व भक्त काशी शहर में आए हैं। भण्डारा खाने के लिए आमंत्रित हैं। कबीर जी अब तो अपने को काशी त्यागकर कहीं और जाना पड़ेगा। कबीर जी तो जानीजान थे। फिर भी अभिनय कर रहे थे, बोले रविदास जी झोंपड़ी के अंदर बैठ जा, सांकल लगा ले। अपने आप झख मारकर चले जाएंगे। हम बाहर निकलेंगे ही नहीं। परमेश्वर कबीर जी अपनी राजधानी सत्यलोक में पहुँचे। वहाँ से नौ लाख बैलों के ऊपर गधों जैसा बौरा (थैला) रखकर उनमें पका-पकाया सर्व सामान भरकर तथा सूखा सामान (चावल, आटा, खाण्ड, बूरा, दाल, घी आदि) भरकर पथ्वी पर उतरे। सत्यलोक से ही सेवादार आए। परमेश्वर कबीर जी ने स्वयं बनजारे का रूप बनाया और अपना नाम केशव बताया। दिल्ली के सिकंदर बादशाह तथा उसका धार्मिक पीर शेखतकी भी आया। काशी में भोजन-भण्डारा चल रहा था। सबको प्रत्येक भोजन के पश्चात्

एक दोहर तथा एक मोहर (10 ग्राम) सोना (Gold) दक्षिणा दी जा रही थी। कई बेईमान संत तो दिन में चार-चार बार भोजन करके चारों बार दोहर तथा मोहर ले रहे थे। कुछ सूखा सीधा (चावल, खाण्ड, घी, दाल, आटा) भी ले रहे थे।

यह सब देखकर शेखतकी ने तो रोने जैसी शक्ल बना ली। सिकंदर लोधी राजा के साथ उस टैंट में गया जिसमें केशव नाम से स्वयं कबीर जी वेश बदलकर बनजारे (उस समय के व्यापारियों को बनजारे कहते थे) के रूप में बैठे थे। सिकंदर लोधी राजा ने पूछा आप कौन हैं? क्या नाम है? आप जी का कबीर जी से क्या संबंध है? केशव रूप में बैठे परमात्मा जी ने कहा कि मेरा नाम केशव है, मैं बनजारा हूँ। कबीर जी मेरे पगड़ी बदल मित्र हैं। मेरे पास उनका पत्र गया था कि एक छोटा-सा भण्डारा (भोजन कराने का आयोजन) यानि लंगर का आयोजन करना है, कुछ सामान लेते आइएगा। उनके आदेश का पालन करते हुए सेवक हाजिर है। भण्डारा चल रहा है। शेखतकी तो कलेजा पकड़कर जमीन पर बैठ गया जब यह सुना कि एक छोटा-सा भण्डारा करना है जहाँ पर 18 लाख व्यक्ति भोजन करने आए हैं। प्रत्येक को दोहर तथा मोहर और आटा, दाल, चावल, घी, खाण्ड भी सूखा सीधा रूप में दिए जा रहे हैं। इसको छोटा-सा भण्डारा कह रहे हैं। परंतु ईर्ष्या की अग्नि में जलता हुआ विश्राम गंह में चला गया जहाँ पर राजा ठहरा हुआ था। सिकंदर लोधी ने केशव से पूछा कबीर जी क्यों नहीं आए? केशव ने उत्तर दिया कि उनका गुलाम जो बैठा है, उनको तकलीफ उठाने की क्या आवश्यकता? जब इच्छा होगी, आ जाएंगे। यह भण्डारा तो तीन दिन चलना है। सिकंदर लोधी हाथी पर बैठकर अंगरक्षकों के साथ कबीर जी की झोंपड़ी पर गए। हाथी से उतरकर राजा ने दरवाजे पर दस्तक दी। कहा, परवरदिगार! दरवाजा (Gate) खोलो। आपका बच्चा सिकंदर आया है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा, हे राजन! कुछ व्यक्ति मेरे पीछे पड़े हैं। प्रतिदिन कोई न कोई नया षड़यंत्र रचकर परेशान करते हैं। आज झूठा पत्र डालकर लाखों व्यक्ति बुलाये हैं। मैं निर्धन जुलाहा कपड़े बुनकर परिवार पोषण कर रहा हूँ। मेरे पास भोजन-भण्डारा (लंगर) करवाने तथा दक्षिणा देने के लिए धन नहीं है। मैं रात्रि में परिवार सहित काशी नगर को त्यागकर कहीं दूर स्थान पर चला जाऊँगा। मैं दरवाजा नहीं खोलूँगा। सिकंदर सम्राट बोला, हे कादिर अल्लाह (समर्थ परमात्मा)! मैंने आपको पहचाना है। आप मुझे नहीं बहका सकते। आपने चौपड़ के खुले स्थान पर कैसे भण्डारा लगाया है। आपका मित्र केशव आया है। अपार खाद्य सामग्री लाया है। लाखों लोग भोजन करके आपकी जय-जयकार कर रहे हैं। आपका दर्शन करना चाहते हैं। एक बार किवाड़ खोलकर अपने गुलाम सिकंदर को दर्शन तो दो। कबीर जी ने संत रविदास जी से कहा कि खोल दो किवाड़। दरवाजा खुलते ही सिकंदर राजा ने जूती उतारकर मुकुट सहित दण्डवत् प्रणाम किया। फिर काशी में चल रहे भोजन-भण्डारे में चलने की विनय की। जब कबीर परमात्मा झोंपड़ी से बाहर निकले तो आकाश से सुंदर मुकुट आया और परमात्मा कबीर जी के सिर पर सुशोभित हुआ तथा आसमान से सुगंधित फूल

बरसने लगे। राजा ने कबीर परमेश्वर जी को हाथी पर चढ़ने की प्रार्थना की। कबीर जी ने रविदास जी को साथ लिया। राजा, रविदास जी तथा परमात्मा कबीर जी तीनों हाथी पर चढ़कर भण्डारा स्थल पर आए। सबसे कबीर सेठ का परिचय कराया तथा केशव रूप में स्वयं डबल रोल करके उपस्थित संतों-भक्तों को प्रश्न-उत्तर करके सत्संग सुनाया जो 24 घण्टे तक चला। कई लाख सन्तों ने अपनी गलत भक्ति त्यागकर कबीर जी से दीक्षा ली, अपना कल्याण कराया। भण्डारे के समापन के बाद जब बचा हुआ सब सामान तथा टैंट बैलों पर लादकर चलने लगे, उस समय सिकंदर लोधी राजा तथा शेखतकी, केशव तथा कबीर जी एक स्थान पर खड़े थे, सब बैल तथा साथ लाए सेवक जो बनजारों की वेशभूषा में थे, गंगा पार करके चले गए। कुछ ही देर के बाद सिकंदर लोधी राजा ने केशव से कहा आप जाइये आपके बैल तथा साथी जा रहे हैं। जिस ओर बैल तथा बनजारे गए थे, उधर राजा ने देखा तो कोई भी नहीं था। आश्चर्यचकित होकर राजा ने पूछा कबीर जी! वे बैल तथा बनजारे इतनी शीघ्र कहाँ चले गए? उसी समय देखते-देखते केशव भी परमेश्वर कबीर जी के शरीर में समा गए। अकेले कबीर जी खड़े थे। सब माजरा (रहस्य) समझकर सिकंदर लोधी राजा ने कहा कि कबीर जी! यह सब लीला आपकी ही थी। आप स्वयं परमात्मा हो। शेखतकी के तो तन-मन में ईर्ष्या की आग लग गई, कहने लगा ऐसे-ऐसे भण्डारे हम सौ कर दें, यह क्या भण्डारा किया है? महौछा किया है।

महौछा उस अनुष्ठान को कहते हैं जो किसी गुरू द्वारा किसी वृद्ध की गति करने के लिए थोपा जाता है। उसके लिए सब घटिया सामान लगाया जाता है। जग जौनार करना उस अनुष्ठान को कहते हैं जो विशेष खुशी के अवसर पर किया जाता है, जिसमें अनुष्ठान करने वाला दिल खोलकर रूपये लगाता है। संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

गरीब, कोई कह जग जौनार करी है, कोई कहे महौछा।
बड़े बड़ाई किया करें, गाली काढ़े औछा।।

शब्दार्थ :- उस सभोज यानि भोजन-भण्डारे को देखकर नेक व्यक्ति तो कह रहे थे कि जग जौनार यानि दिल खोलकर धर्म में रूपया खर्च करके धर्म का कार्य किया है यानि धर्म यज्ञ करके जीमनवार की है यानि भोजन खिलाया है। जो अहंकारी दुष्ट व्यक्ति थे, वे कह रहे थे कि महोछा किया है यानि मन मारकर कम खर्च करके भण्डारा किया है।

सारांश :- कबीर जी ने भक्तों को उदाहरण दिया है कि यदि आप मेरी तरह सच्चे मन से भक्ति करोगे तथा ईमानदारी से निर्वाह करोगे तो परमात्मा आपकी ऐसे सहायता करता है।

भक्त ही वास्तव में सेठ अर्थात् धनवंता हैं। भक्त के पास दोनों धन हैं, संसार में जो चाहिए वह भी धन भक्त के पास होता है तथा सत्य साधना रूपी धन भी भक्त के पास होता है।

एक अन्य करिश्मा जो उस भण्डारे में हुआ

वह जीमनवार (लंगर) तीन दिन तक चला था। दिन में प्रत्येक व्यक्ति कम से कम दो बार भोजन खाता था। कुछ तो तीन-चार बार भी खाते थे क्योंकि प्रत्येक भोजन के पश्चात् दक्षिणा में एक मौहर (10 ग्राम सोना) और एक दौहर (कीमती सूती शॉल) दिया जा रहा था। इस लालच में बार-बार भोजन खाते थे। तीन दिन तक 18 लाख व्यक्ति शौच तथा पेशाब करके काशी के चारों ओर ढ़ेर लगा देते। काशी को सड़ा देते। काशी निवासियों तथा उन 18 लाख अतिथियों तथा एक लाख सेवादार जो सतलोक से आए थे। उस गंद का ढ़ेर लग जाता, श्वांस लेना दूभर हो जाता, परंतु ऐसा महसूस ही नहीं हुआ। सब दिन में दो-तीन बार भोजन खा रहे थे, परंतु शौच एक बार भी नहीं जा रहे थे, न पेशाब कर रहे थे। इतना स्वादिष्ट भोजन था कि पेट भर-भरकर खा रहे थे। पहले से दुगना भोजन खा रहे थे। उन सबको मध्य के दिन टैंशन (चिंता) हुई कि न तो पेट भारी है, भूख भी ठीक लग रही है, कहीं रोगी न हो जाऐं। सतलोक से आए सेवकों को समस्या बताई तो उन्होंने कहा कि यह भोजन ऐसी जड़ी-बूटियां डालकर बनाया है जिनसे यह शरीर में ही समा जाएगा। हम तो प्रतिदिन यही भोजन अपने लंगर में बनाते हैं, यही खाते हैं। हम कभी शौच नहीं जाते तथा न पेशाब करते, आप निश्चिंत रहो। फिर भी विचार कर रहे थे कि खाना खाया है, परंतु कुछ तो मल निकलना चाहिए। उनको लैट्रिन जाने का दबाव हुआ। सब शहर से बाहर चल पड़े। टट्टी के लिए एकान्त स्थान खोजकर बैठे तो गुदा से वायु निकली। पेट हल्का हो गया तथा वायु से सुगंध निकली जैसे केवड़े का पानी छिड़का हो। यह सब देखकर सबको सेवादारों की बात पर विश्वास हुआ। तब उनका भय समाप्त हुआ, परंतु फिर भी सबकी आँखों पर अज्ञान की पट्टी बँधी थी। परमेश्वर कबीर जी को परमेश्वर नहीं स्वीकारा।

पुराणों में भी प्रकरण आता है कि अयोध्या के राजा ऋषभ देव जी राज त्यागकर जंगलों में साधना करते थे। उनका भोजन स्वर्ग से आता था। उनके मल (पाखाने) से सुगंध निकलती थी। आसपास के क्षेत्र के व्यक्ति इसको देखकर आश्चर्यचकित होते थे। इसी तरह सतलोक का आहार करने से केवल सुगंध निकलती है, मल नहीं। स्वर्ग तो सतलोक की नकल है जो नकली (Duplicate) है।

प्रश्न :- भक्ति करने के लिए घर त्यागकर जाना या घर पर रहकर भक्ति करना, कौन-सा श्रेष्ठ है?

उत्तर :- शास्त्रविधि अनुसार पूर्ण गुरू से दीक्षा लेकर भक्ति मर्यादा का निर्वाह करते हुए आजीवन साधना करने से मोक्ष होगा। यदि घर त्यागकर वन में चले गए तो भोजन के लिए फिर गाँव या शहर में ग्रहस्थी के द्वार पर आना होगा। गर्मी-सर्दी, बारिश से बचने के लिए कोई कुटी बनानी पड़ेगी। वस्त्र भी माँगने पड़ेंगे। वह फिर घर बन गया। इसलिए घर पर रहो। सत्य साधना करो, मोक्ष निश्चित है। विवाह हो या ना हो, दोनों ही भक्ति करके मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। कई व्यक्ति कहते हैं कि भक्ति ब्रह्मचारी जीवन में ही हो सकती है। इसका भी उत्तर

है कि सत्य साधना शास्त्र अनुसार करके दोनों मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

उदाहरण :- हम मानते हैं कि भक्त ध्रुव जी तथा भक्त प्रहलाद जी ने मोक्ष प्राप्त किया है। इन दोनों ने विवाह कराया था। बच्चे भी थे। प्रहलाद जी का पुत्र बैलोचन था। पोता राजा बली था जिसने सौ यज्ञ की थी। भगवान ने बावना रूप धारण करके तीन कदम जमीन दक्षिणा में माँगी थी। जो कहते हैं कि ब्रह्मचारी पुरूष ही मोक्ष के अधिकारी हैं तो विचार करें कि हिजड़े (खुसरे) तो सदा ही ब्रह्मचारी हैं, वे तो और अधिक अधिकारी हुए।

सत्य साधना करने से हिजड़े, ब्रह्मचारी, ग्रहस्थी तथा स्त्री सब मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं। संत गरीबदास जी ने कबीर जी के ज्ञान को बताया है कि :-

गरीब, डेरे डांडै खुश रहो, खुसरे लहें ना मोक्ष।
ध्रुव–प्रहलाद पार हुए, फिर डेरे (घर) में क्या दोष।।1
गरीब, केले की कोपीन है, फूल–पात–फल खांई।
नर का मुख नहीं देखते, बस्ती निकट नहीं जाईं।।2
गरीब, वे जंगल के रोझ हैं, जो मनुष्यों बिदके जाहीं।
निश दिन फिरो उजाड़ में, यूं सांई पावै नाहीं।।3
गरीब, गाड़ी बाहो घर रहो, खेती करो खुशहाल।
सांई सिर पर राखिये, सही भक्त हरलाल।।4

भावार्थ :- वाणी सँख्या 1 का भाव ऊपर बता दिया है।

वाणी सँख्या 2-3 का भावार्थ :- कुछ व्यक्ति बता रहे थे कि हम संतों की खोज में पहाड़ों, जंगलों में गए। एक जगह जंगल में एक साधु रहता था। उसके विषय में वहाँ के आसपास के गाँव वाले बता रहे थे कि वह साधु पर्दे पर केले के पत्ते लंगोट रूप में बाँधता है और जंगल में पत्ते-फल-फूल खाता है। गाँव के निकट भी नहीं आता। मनुष्य का तो मुख भी नहीं देखता। देखते ही पूरी गति से भागकर जंगल में चला जाता है। लोग कह रहे थे कि जिसको भी उसके दर्शन हो जाते हैं, मालामाल हो जाता है। हम कई दिन तक दर्शन के लिए उस जंगल में सुबह जाते और शाम तक रहते। एक दिन भागते की पीठ-पीठ दिखी। दर्शन हो जाते तो पौबारह हो जाते। विचार करें कि ऐसा व्यक्ति अपराधी होता है जो पुलिस से बचने के लिए ढ़ोंग किए है। संत गरीबदास जी ने ऐसे व्यक्ति को रोझ (नीलगाय) की उपमा दी है जो आदमियों से डरकर बिदककर भागते-फिरते हैं, ऐसे व्यक्ति चाहे दिन-रात जंगल-उजाड़ में भटको, परमात्मा प्राप्त नहीं हो सकता।

वाणी सँख्या 4 का भावार्थ :-

गरीब, गाड़ी बाहो घर रहो, खेती करो खुशहाल। सांई सिर पर राखिये, सही भक्त हरलाल।।

भावार्थ :-

हरलाल जाट की कथा

गाँव-बेरी (जिला-झज्जर, प्रान्त-हरियाणा) में एक हरलाल नाम का जाट किसान था जो धार्मिक प्रवत्ति का था। उसका सर्व परिवार धार्मिक विचारों वाला

था। भगवा वेश में एक व्यक्ति गाँव-बेरी की चौपाल में रूका। उसने कुछ दिन सत्संग किया। भक्त हरलाल जी ने उनका परिचय पूछा तो पता चला कि उसके घर पर कोई नहीं है। माता-पिता बचपन में चल बसे थे। भक्ति के लिए घर छोड़ा है। भक्त हरलाल जी ने निवेदन किया कि आप हमारे घर पर रहो। हमें संत की सेवा मिलेगी। आपको भक्ति का पूरा समय मिलेगा। भगवा वेशधारी ने हाँ कर दी। भक्त हरलाल जी के दो मकान थे। एक में स्त्रियाँ रहती थी। दूसरा कुछ दूरी पर था जिसमें पशु बाँधते थे तथा पुरूष सदस्य रहते थे जिसे घेर या पौली कहते हैं। इस पौली के ऊपर एक चौबारा था। उसमें उस साधु को रहने के लिए आग्रह किया। पूरा परिवार उसकी सेवा करता। दोनों-तीनों समय भोजन कराता। कुछ वर्षों के पश्चात् वह संत शरीर त्याग गया। उसका अंतिम संस्कार करके उसकी यादगार अपने खेत में बना दी।

श्री हरलाल जाट जी बैलगाड़ी के द्वारा व्यापारियों का सामान एक मण्डी से दूसरी मण्डी में किराए पर लाता-ले जाता था। जैसे वर्तमान में ट्रक या कैंटर आदि से भाड़े पर माल एक मण्डी से दूसरी मण्डी में लाते-ले जाते हैं। सन् 1750 के आसपास का समय था। जब बैलगाड़ियों द्वारा शक्कर, बूरा, चावल, गेहूँ, ज्वार, गुड़-बाजरा, गवार आदि-आदि को भाड़े पर ढ़ोते थे। बेरी से नजफगढ़ की मण्डी का रास्ता गाँव छुड़ानी से होकर जाता था। श्री हरलाल जी का एक बैल गोरे रंग का था जो कामचोर था। गाड़ी में चलते-चलते कुछ देर बाद बैठ जाता। उसको डण्डों से मारपीट करके उठाया जाता। कुछ दूरी पर फिर बैठ जाता। यह सिलसिला चलता रहा। एक दिन गर्मियों के मौसम में सुबह के लगभग 4 बजे श्री हरलाल जी नजफगढ़ की मण्डी से गाड़ी भरकर लौट रहा था। गाँव छुड़ानी के पास एक कूंए से कुछ दूरी पर वह बैल बैठ गया। हरलाल जी उसको डण्डा मारने लगा। उस कूंए पर गाँव छुड़ानी के संत गरीबदास जी स्नान कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हे हरलाल! मत मार, गऊ का जाया है। संत गरीबदास जी जाट किसान थे। साधारण वेशभूषा जो हरियाणा की थी, धोती-कुर्ता पहनते थे। हरलाल जी बोले, भाई! इसनै मेरा खून पी राख्या है। आधा मील चलता है, बैठ जाता है। संत गरीबदास जी उस बैल के पास गए और उसके कान में कुछ बोला। उसी समय वह गोरा बैल तुरंत खड़ा हो गया। संत गरीबदास जी बोले, अब यह बैल ठीक चलेगा। श्री हरलाल जी को विश्वास नहीं हुआ। गाड़ी लेकर चल पड़ा। वह गोरा बैल दूसरे बैल से भी तेज गति से चलने लगा। छुड़ानी गाँव से बेरी तक बैठा भी नहीं तो श्री हरलाल जी के आश्चर्य तथा खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसने घर पर अपने परिवार वालों से बताया तो उनको भी यकीन नहीं हो रहा था। उसके पश्चात् हरलाल जाट गाँव छुड़ानी में गया। उससे गलती यह लगी थी कि उसने उस स्नान करने वाले का नाम नहीं पूछा था। उल्टे पाँव गाँव छुड़ानी को चल पड़ा। विचार किया था कि शायद प्रतिदिन उसी समय स्नान करने आता होगा। इसलिए सुबह 4 बजे उसी कूंए पर पहुँचा तो संत गरीबदास जी ने पूछा कि हे हरलाल भाई!

उस बैल के बारे में जानने आए हो क्या? हरलाल जी ने कहा कि आपसे कुछ नहीं छुपा है। मैं आपसे यही जानने आया हूँ कि आपने क्या जादू कर दिया? वह बैल तो दूसरे से भी तेज चलता है। संत गरीबदास जी ने पूछा कि यह बता, आपके चौबारे में एक साधु रहता था, उसका क्या हाल है? मैं एक दिन उससे मिलकर आया था। उस दिन आप गाड़ी लेकर कहीं गए हुए थे। हरलाल जी ने बताया कि वह तो चार वर्ष पहले चोला त्याग गया। उसकी यादगार (मैण्डी) भी बना रखी है। संत गरीबदास जी ने कहा कि यह गोरा बैल वही पाखण्डी बाबा है। मैंने उससे ज्ञान चर्चा की थी। उसको समझाया था कि आपकी भक्ति गलत है। आप भक्ति भी नहीं करते हो, खाते हो और सो जाते हो। परमात्मा के दरबार में जब लेखा होगा, तब आपको पता चलेगा। जो खा रहे हो, यह देना पड़ेगा।

गरीब, नर से फिर पशुवा कीजै, गधा—बैल बनाय।
छप्पन भोग कहाँ मन बोरे, कुरड़ी चरने जाय।।
गरीब, तुमने उस दरगाह का महल ना देखा। धर्मराज कै तिल—तिल का लेखा।।

परंतु वह नाराज हो गया और बोला, तू ग्रहस्थी है, मैं बाल ब्रह्मचारी हूँ। आप जाईये। एक साधु को शिक्षा देने आया है।

कबीर, राम नाम से खिज मरैं, कुष्टि हो गल जाय।
शुकर होकर जन्म ले, नाक डूबता खाय।।

भावार्थ :- कबीर जी ने कहा है कि अभिमानी व्यक्ति राम नाम की चर्चा से खिज जाता है। फिर कोढ़ (कुष्ट रोग) लगकर गलकर मर जाता है। अगला जन्म सूअर का प्राप्त करके गंद खाता है। सूअर की नाक भी गंद में डूबी रहती है। इस प्रकार का कष्ट वह प्राणी उठाता है जो भक्ति नहीं करता या नकली संत बनकर जनता में फोकट महिमा बनाता है।

हे हरलाल! मैंने उसके कान में बताया था कि वह दिन याद कर, मैंने क्या कहा था, आप माने नहीं थे। हे जीव! आपको इस किसान का कर्ज उतारना पड़ेगा। लठ खाकर उतार, चाहे राजी-खुशी उतार। वैसे पीछा नहीं छुटेगा। उस बैल शरीरधारी नकली बाबा के बात समझ में आ गई है। यह पहले किसी जन्म में परमेश्वर कबीर जी का शिष्य बना था। परंतु फिर गिरी पंथ में चला गया था। जिस कारण से यह सूमार्ग त्यागकर जन्म-मरण का कष्ट भोग रहा है। अब यह कभी नहीं बैठेगा। हरलाल जी गरीबदास जी के चरणों में गिर गए और कहा कि हे संत महाराज! मुझे अपना शिष्य बना लो। मैं तो घर-बार त्यागकर आपके साथ रहूंगा। मेरी तो आँखें खुल गई। भक्ति बिना जीव कितना कष्ट उठाता है। संत गरीबदास जी ने यह वाणी बोली :-

गरीब, गाड़ी बाहो घर रहो, खेती करो खुशहाल।
सांई सिर पर राखिये, सही भगत हरलाल।।

भावार्थ :- परमात्मा प्राप्ति के लिए घर त्यागने की आवश्यकता नहीं है। अपना खेती का कार्य तथा गाड़ी बाहने (ट्रांसपोर्ट) का कार्य खुशी-खुशी करो। घर

पर रहो। परमात्मा की भक्ति जो मैं बताऊँ, वह करते रहो। आप सही भक्त कहलाओगे।

गरीब, नाम उठत नाम बैठत, नाम सोवत जाग रे।
नाम खाते नाम पीते, नाम सेती लाग रे।।

यही प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 40 के मंत्र 15 में है कि :-

वायु अनिलम् अथइदम् अमंतम् भस्मन्तम् शरीरं।
ओम् (ॐ) कंतु स्मर किलवे स्मर कंतम् स्मर।।

भावार्थ :- संत गरीबदास जी ने कहा कि जो सत्य साधना के सत्य मंत्र मैं आपको दूँगा, उनका जाप खाते-पीते-जागते समय यानि सुबह सोकर उठो, कुछ समय जाप करो। सोने से पूर्व कुछ समय जाप करो। बैठते समय, फिर उठते समय परमात्मा का नाम जाप करो। इस प्रकार घर का कार्य भी होता है, स्मरण भी। जैसे गाँव में देखते हैं कि लोग सारा-सारा दिन ताश खेलते हैं। हुक्के पर वक्त जाया करते हैं। राजनीति की बातें या किसी व्यक्ति की निंदा की चर्चा या सांग-सिनेमा देखने में समय नष्ट करते हैं। उस समय को परमात्मा की भक्ति तथा सत्संग चर्चा सुनने में सदुपयोग करें तो मोक्ष सम्भव है।

श्री हरलाल जाट जी दीक्षा लेकर घर आया। घरवालों को सब बात बताई। उस नकली बाबा की यादगार (समाधि) तोड़ फैंकी और पूरे परिवार को छुड़ानी ले गए। संत गरीबदास जी से दीक्षा दिलाई। अपना तथा अपने परिवार का कल्याण कराया। संत गरीबदास जी के आदेश से उस गोरे बैल को कभी गाड़ी या हल में नहीं जोता। उसको सब पशुओं से भिन्न कमरे में बाँधकर अच्छा चारा खिलाया। संत गरीबदास जी ने बताया कि यह भक्त था। कर्म बिगड़ने से पशु बना है। इससे काम ना लें। वह बैल पाँच वर्ष जीया। भक्त हरलाल जी ने उसकी भक्त मानकर सेवा की। परमात्मा कबीर जी ने अपने भूले-भटके भक्त की पशु जीवन में सहायता की। उसको फिर कभी मानव जन्म मिला तो और आगे उसके भाग्य में कोई पूरा गुरू मिला तो मुक्ति है, अन्यथा फिर चौरासी लाख योनियों में कष्ट तैयार हैं।

भक्त हरलाल की संतान बेरी में आज भी इस घटना की साक्षी हैं।

''तम्बाकू सेवन करना महापाप है''

संत गरीबदास जी ने भक्त हरलाल जी से कहा कि आप (जो भी दीक्षा लेता है) तम्बाकू का (हुक्का, बीड़ी, सिगरेट, चिलम आदि में डालकर भी) कभी सेवन नहीं करना और अन्य नशीली वस्तुओं का प्रयोग न करना। भक्त ने कहा कि हे महाराज जी! तम्बाकू तो लगभग सब किसान पीते हैं। इसमें क्या हानि है?

उत्तर :- संत गरीबदास जी ने बताया कि आपने रामायण तथा महाभारत की कथा तो सुनी होंगी। उसमें हुक्का सेवन का कहीं वर्णन नहीं है। तम्बाकू की उत्पत्ति बताऊँ कैसे हुई है, सुन!

''तम्बाकू की उत्पत्ति कथा''

एक ऋषि तथा एक राजा साढ़ू थे। एक दिन राजा की रानी ने अपनी बहन ऋषि की पत्नी के पास संदेश भेजा कि पूरा परिवार हमारे घर भोजन के लिए आऐं। मैं आपसे मिलना भी चाहती हूँ, बहुत याद आ रही है। अपनी बहन का संदेश ऋषि की पत्नी ने अपने पति से साझा किया तो ऋषि जी ने कहा कि साढ़ू से दोस्ती अच्छी नहीं होती। तेरी बहन वैभव का जीवन जी रही है। राजा को धन तथा राज्य की शक्ति का अहंकार होता है। वे अपनी बेइज्जती करने को बुला रहे हैं क्योंकि फिर हमें भी कहना पड़ेगा कि आप भी हमारे घर भोजन के लिए आना। हम उन जैसी भोजन-व्यवस्था जंगल में नहीं कर पाऐंगे। यह सब साढ़ू जी का षड़यंत्र है। आपके सामने अपने को महान तथा मुझे गरीब सिद्ध करना चाहता है। आप यह विचार त्याग दें। हमारे न जाने में हित है। परंतु ऋषि की पत्नी नहीं मानी। ऋषि तथा पत्नी व परिवार राजा का मेहमान बनकर चला गया। रानी ने बहुमूल्य आभूषण पहन रखे थे। बहुमूल्य वस्त्र पहने हुए थे। ऋषि की पत्नी के गले में राम नाम जपने वाली माला तथा सामान्य वस्त्र साध्वी वाले जिसे देखकर दरबार के कर्मचारी-अधिकारी मुस्कुरा रहे थे कि यह है राजा का साढ़ू। कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली। यह चर्चा ऋषि परिवार सुन रहा था। भोजन करने के पश्चात् ऋषि की पत्नी ने भी कहा कि आप हमारे यहाँ भी इस दिन भोजन करने आईएगा।

निश्चित दिन को राजा हजारों सैनिक लेकर सपरिवार साढ़ू ऋषि जी की कुटी पर पहुँच गया। ऋषि जी ने स्वर्ग लोक के राजा इन्द्र से निवेदन करके एक कामधेनु (सर्व कामना यानि इच्छा पूर्ति करने वाली गाय, जिसकी उपस्थिति में खाने की किसी पदार्थ की कामना करने से मिल जाता है, यह पौराणिक मान्यता है।) माँगी। उसके बदले में ऋषि जी ने अपने पुण्य कर्म संकल्प किए थे। इन्द्र देव ने एक कामधेनु तथा एक लम्बा-चौड़ा तम्बू (Tent) भेजा और कुछ सेवादार भी भेजे। टैण्ट के अंदर गाय को छोड़ दिया। ऋषि परिवार ने गऊ माता की आरती उतारी। अपनी मनोकामना बताई। उसी समय छप्पन (56) प्रकार के भोग चांदी की परातों, टोकनियों, कड़ाहों में स्वर्ग से आए और टैण्ट में रखे जाने लगे। लड्डू, जलेबी, कचौरी, दही बड़े, हलवा, खीर, दाल, रोटी (मांडे) तथा पूरी, बुंदी, बर्फी, रसगुल्ले आदि-आदि से आधा एकड़ का टैण्ट भर गया। ऋषि जी ने राजा से कहा कि भोजन जीमो। राजा ने बेइज्जती करने के लिए कहा कि मेरी सेना भी साथ में भोजन खाएगी। घोड़ों को भी चारा खिलाना है। ऋषि जी ने कहा कि प्रभु कृपा से सब व्यवस्था हो जाएगी। पहले आप तथा सेना भोजन करें। राजा उठकर भोजन करने वाले स्थान पर गया। वहाँ भी सुंदर कपड़े बिछे थे। राजा देखकर आश्चर्यचकित रह गया। फिर चांदी की थालियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजन ला-लाकर सेवादार रखने लगे। अन्नदेव की स्तुति करके ऋषि जी ने भोजन करने की प्रार्थना की। राजा ने देखा कि इसके सामने तो मेरा भोजन-भण्डारा कुछ भी

नहीं था। मैंने तो केवल ऋषि-परिवार को ही भोजन कराया था। वह भी तीन-चार पदार्थ बनाए थे। राजा शर्म के मारे पानी-पानी हो गया। खाना खाते वक्त बहुत परेशान था। ईर्ष्या की आग धधकने लगी, बेइज्जती मान ली। सर्व सैनिक खाऐं और सराहें। राजा का रक्त जल रहा था। अपने टैण्ट में जाकर ऋषि को बुलाया और पूछा कि यह भोजन जंगल में कैसे बनाया? न कोई कड़ाही चल रही है, न कोई चुल्हा जल रहा है। ऋषि जी ने बताया कि मैंने अपने पुण्य तथा भक्ति के बदले स्वर्ग से एक गाय उधारी माँगी है। उस गाय में विशेषता है कि हम जितना भोजन चाहें, तुरंत उपलब्ध करा देती है। राजा ने कहा कि मेरे सामने उपलब्ध कराओ तो मुझे विश्वास हो। ऋषि तथा राजा टैण्ट के द्वार पर खड़े हो गए। अन्दर केवल गाय खड़ी थी। द्वार की ओर मुख था। टैण्ट खाली था क्योंकि सबने भोजन खा लिया था। शेष बचा सामान तथा सेवक ले जा चुके थे। गाय को ऋषि जी की अनुमति का इंतजार था। राजा ने कहा कि ऋषि जी! यह गाय मुझे दे दो। मेरे पास बहुत बड़ी सेना है। उसका भोजन इससे बनवा लूंगा। तेरे किस काम की है? ऋषि ने कहा, राजन! मैंने यह गऊ माता उधारी ले रखी है। स्वर्ग से मँगवाई है। मैं इसका मालिक नहीं हूँ। मैं आपको नहीं दे सकता। राजा ने दूर खड़े सैनिकों से कहा कि इस गाय को ले चलो। ऋषि ने देखा कि साढू की नीयत में खोट आ गया है। उसी समय ऋषि जी ने गऊ माता से कहा कि गऊ माता! आप अपने लोक अपने धनी स्वर्गराज इन्द्र के पास शीघ्र लौट जाऐं। उसी समय कामधेनु टैण्ट को फाड़कर सीधी ऊपर को उड़ चली। राजा ने गाय को गिराने के लिए गाय के पैर में तीर मारा। गाय के पैर से खून बहने लगा और पथ्वी पर गिरने लगा। गाय घायल अवस्था में स्वर्ग में चली गई। जहाँ-जहाँ गाय का रक्त गिरा था, वहीं-वहीं तम्बाकू उग गया। फिर बीज बनकर अनेकों पौधे बनने लगे। संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

तमा + खू = तमाखू।

खू नाम खून का तमा नाम गाय। सौ बार सौगंध इसे न पीयें–खाय।।

भावार्थ :- भावार्थ है कि फारसी भाषा में ''तमा'' गाय को कहते हैं। खू = खून यानि रक्त को कहते हैं। यह तमाखू गाय के रक्त से उपजा है। इसके ऊपर गाय के बाल जैसे रूंग (रोम) जैसे होते हैं। हे मानव! तेरे को सौ बार सौगंद है कि इस तमाखू का सेवन किसी रूप में भी मत कर। तमाखू का सेवन गाय का खून पीने के समान पाप लगता है। मुसलमान धर्म के व्यक्तियों को हिन्दुओं से पता चला कि तमाखू की उत्पत्ति ऐसे हुई है। उन्होंने गाय का खून समझकर खाना तथा हुक्के में पीना शुरू कर दिया क्योंकि गलत ज्ञान के आधार से मुसलमान भाई गाय के माँस को खाना धर्म का प्रसाद मानते हैं। वास्तव में हजरत मुहम्मद जो मुसलमान धर्म के प्रवर्तक माने जाते हैं, उन्होंने कभी-भी जीव का माँस नहीं खाया था।

गरीब, नबी मुहम्मद नमस्कार है, राम रसूल कहाया।
एक लाख अस्सी कू सौगंध, जिन नहीं करद चलाया।।

गरीब, अर्स कुर्श पर अल्लह तख्त है, खालिक बिन नहीं खाली।
वै पैगंबर पाक पुरूष थे, साहेब के अबदाली।।

भावार्थ :- नबी मुहम्मद तो आदरणीय महापुरूष थे जो परमात्मा के संदेशवाहक थे। ऐसे-ऐसे एक लाख अस्सी हजार पैगंबर मुसलमान धर्म में (बाबा आदम से लेकर मुहम्मद तक) माने गए हैं। वे सब पाक (पवित्र) व्यक्ति थे जिन्होंने कभी किसी पशु-पक्षी पर करद यानि तलवार नहीं चलाई। वे तो परमात्मा से डरने वाले थे। परमात्मा के कृपा पात्र थे। बाद में कुछ मुल्ला-काजियों ने माँस खाने की परम्परा शुरू कर दी जो आगे चलकर धार्मिकता का अपवाद (बिगड़ा रूप) बन गई। उसी आधार से सर्व मुसलमान भाई पाप को खा रहे हैं। फिर भ्रमित मुसलमानों ने तम्बाकू का सेवन (खाना, हुक्का बनाकर पीना) प्रारम्भ कर दिया। भोले हिन्दु धर्म के व्यक्तियों ने उनकी चाल नहीं समझी। उनके कहने से तमाखू का सेवन जोर-शोर से शुरू कर दिया। वर्तमान में तो यह पंचायत का प्याला बन गया है जो भारी भूल है। अज्ञानता का पर्दा है। इसे भूलकर भी सेवन नहीं करना चाहिए। संत गरीबदास जी ने फिर बताया है कि हे भक्त हरलाल जी! और सुन तमाखू सेवन के पाप :-

गरीब, परद्वारा स्त्री का खोलै। सत्तर जन्म अंधा हो डोलै।।1
मदिरा पीवै कड़वा पानी। सत्तर जन्म श्वान के जानी।।2
मांस आहारी मानवा, प्रत्यक्ष राक्षस जान।
मुख देखो न तास का, वो फिरै चौरासी खान।।3
सुरापान मद्य मांसाहारी। गमन करै भोगै पर नारी।।4
सत्तर जन्म कटत है शीशं। साक्षी साहेब है जगदीशं।।5
सौ नारी जारी करै, सुरापान सौ बार।
एक चिलम हुक्का भरै, डूबै काली धार।।6
हुक्का हरदम पीवते, लाल मिलांवे धूर।
इसमें संशय है नहीं, जन्म पीछले सूअर।।7

उपरोक्त वाणियों का भावार्थ :-

वाणी सँख्या 1 में कहा है कि जो व्यक्ति अन्य स्त्री से अवैध सम्बन्ध बनाता है, उस पाप के कारण वह सत्तर जन्म अंधे के प्राप्त करता है। अंधा गधा-गधी, अंधा बैल, अंधा मनुष्य या अंधी स्त्री के लगातार सत्तर जन्मों में कष्ट भोगता है।

वाणी सँख्या 2 :- कड़वी शराब रूपी पानी जो पीता है, वह उस पाप के कारण सत्तर जन्म तक कुत्ते के जन्म प्राप्त करके कष्ट उठाता है। गंदी नालियों का पानी पीता है। रोटी ने मिलने पर गुह (टट्टी) खाता है।

वाणी सँख्या 3 :- जो व्यक्ति माँस खाते हैं, वे तो स्पष्ट राक्षस हैं। उनका तो मुख भी नहीं देखना चाहिए यानि उनके साथ रहने से अन्य भी माँस खाने का आदी हो सकता है। इसलिए उनसे बचें। वह तो चौरासी लाख योनियों में भटकेगा।

वाणी सँख्या 4-5 :- (सुरा) शराब (पान) पीने वाले तथा परस्त्री को भोगने

वाले, माँस खाने वालों को अन्य पाप कर्म भी भोगना होता है। उनके सत्तर जन्म तक मानव या बकरा-बकरी, भैंस या मुर्गे आदि के जीवनों में सिर कटते हैं। इस बात को मैं परमात्मा को साक्षी रखकर कह रहा हूँ, सत्य मानना।

वाणी सँख्या 6 :- एक चिलम भरकर हुक्का पीने वाले को देने से भरने वाले को जो पाप लगता है, वह सुनो। एक बार परस्त्री गमन करने वाला, एक बार शराब पीने वाला, एक बार माँस खाने वाला पाप के कारण उपरोक्त कष्ट भोगता है। सौ स्त्रियों से भोग करे और सौ बार शराब पीऐ, उसे जो पाप लगता है, वह पाप एक चिलम भरकर हुक्का पीने वाले को देने वाले को लगता है। विचार करो तम्बाकू सेवन (हुक्के में, बीड़ी-सिगरेट में पीने वाले, खाने वाले) करने वाले को कितना पाप लगेगा? इसलिए उपरोक्त सर्व पदार्थों का सेवन कभी न करो।

वाणी सँख्या 7 :- समाज के व्यक्तियों को देखकर कुछ व्यक्ति हुक्का या अन्य नशीली वस्तुऐं सेवन करने लग जाते हैं। यदि सत्संग सुनकर बुराई त्याग देते हैं तो वे जीव पिछले जन्म में भी मनुष्य थे। उनके अंदर नशे की गहरी लत नहीं बनती। परंतु जो बार-बार सत्संग सुनकर भी तम्बाकू आदि नशे का त्याग नहीं कर पाते, वे पिछले जन्म में सूअर के शरीर में थे। सूअर के शरीर में बदबू (Bad Smell) सूंघने से तम्बाकू की बदबू पीने-सूंघने की गहरी आदत होती है। वे शीघ्र हुक्का व अन्य नशा नहीं त्याग पाते। वे अपने अनमोल मानव शरीर रूपी लाल को मिट्टी में मिला रहे हैं। उनको अधिक सत्संग सुनने की राय दी जाती है। निराश न हों। सच्चे मन से परमात्मा कबीर जी से नशा छुड़वाने की पुकार प्रार्थना करने से सब नशा छूट जाता है।

''तम्बाकू के विषय में अन्य विचार''

तम्बाकू यानि हुक्का पीने वालों की स्थिति बताई है :-

(संत गरीबदास जी के ग्रन्थ में 'अथ तमाखू की बैंत' नामक अध्याय में)

पित बाई खांसी निबासी निबास। कफ दल कलेजा लिया है गिरास।।
काला तमाखू अरू गोरा पिवाक। दस बीस लंगर जहाँ बैठे गुटाक।।
बाजे नै गुड़ गुड़ अरू हुक्के हजूम। कोरे कुबुद्धि बीसा हैं न सूम।।
बांकी पगड़ी अरू बांकी ही नै खुद डूबै अरू डुबोए है कै।
गुटाकड़ अटाकड़ मटाकड़ लहूर। एक बेठैगा अड़कर एक बेठैगा दूर।।
पीवै तमाखू पड़ै कर्म मार। अमली के मुख में मुत्र की धार।।
कड़वा ही कड़वा तू करता हमेश। कड़वा ही ले प्यारे कड़वा ही पेश।।
कामी क्रोधी तूं लोभी लबूट। बचन मान मेरा धूंमा न घूंट।।
हुक्का हरामी गुलामी गुलाम। धनी के सरे में न पहुँचे अलाम।।
पामर परम धाम जाते न कोई। झूठे अमल पर दई जान खोई।।
मुरदा मजावर हरामी हराम। पीवैं तमाखू सो इन्द्री के गुलाम।।
अज्ञान नींद न सो उठ जाग, पीवैं तमाखू गए फुटि भाग।।

भांग तमाखू पीवैं ही, सुरापान से हेत। गोसत मिट्टी खायकर जंगली बनैं प्रेत।।
गरीब, पान तमाखू चाबहीं, सांस नाक में देत। सो तो अकार्थ गए, ज्यों भड़भूजे का रेत।।
भांग तमाखू पीवहीं, गोसत गला कबाब। मोर मंग कूं भखत हैं, देंगे कहां जवाब।।
भांग तमाखू पीवते, चिसम्यों नालि तमाम। साहिब तेरी साहिबी, जानें कहाँ गुलाम।।
गऊ आपनी अम्मा है, इस पर छुरी ना बाहय। गरीबदास घी दूध को, सब ही आत्म खाय।।

भावार्थ :- उपरोक्त वाणियों का भावार्थ है कि मानव शरीर को ऑक्सीजन की आवश्यकता है। उसके स्थान पर तम्बाकू का धुँआ (कार्बनडाईऑक्साइड) प्रवेश करता है तो उनको खाँसी रोग हो जाता है। पित्त तथा बाई (बाय) का रोग हो जाता है। हुक्का पीने वाले का बैठने का स्टाईल बताया है कि हुक्का पीने वाले एक-दो तो हुक्के के निकट बैठेंगे। एक कुछ दूरी पर बैठेगा और कहेगा कि सरकाइये थोड़ा-सा। दूसरे उसकी ओर हुक्का देंगे। फिर नै (नली जिससे धुँआ खींचते हैं) गुरड़-गुरड़ बाजैगी। आप तो हुक्का पीकर डूबे हैं और छोटे बच्चे भी उनको देखकर वही पाप करके नरक की काली धार में डूबेंगे, जो तम्बाकू पीते हैं, उनके तो भाग फूटे ही हैं। अन्य को तम्बाकू पीने के लिए उत्प्रेरक बनकर डुबोते हैं। उपरोक्त बुराई करने वाले तो अपना जीवन ऐसे व्यर्थ कर जाते हैं जैसे भड़भूजा बालु रेत को आग से खूब गर्म करके चने भूनता है। फिर सारा कार्य करके रेत को गली में फैंक देता है। इसी प्रकार जो मानव उपरोक्त बुराई करता है, वह भी अपने मानव जीवन को इसी प्रकार व्यर्थ करके चला जाता है। उस जीव को नरक तथा अन्य प्राणियों के जीवन रूपी गली में फैंक दिया जाता है। जो व्यक्ति उपरोक्त पाप करते हैं, वे भगवान के दरबार में क्या जवाब देंगे यानि बोलने योग्य नहीं रहेंगे।

फिर कहा है कि गाय अपनी माता के तुल्य है जिसका सब धर्म-जाति वाले दूध-घी पीते-खाते हैं। इसलिए गाय को मत मारो। विषय तम्बाकू का चल रहा है:-

भक्ति मार्ग में तम्बाकू सबसे अधिक बाधा करता है। जैसे अपने दोनों नाकों के मध्य में एक तीसरा रास्ता है जो छोटी सूई के नाके जितना है। जो तम्बाकू का धुँआ नाकों से छोड़ते हैं, वह उस रास्ते को बंद कर देता है। वही रास्ता ऊपर को त्रिकुटी की ओर जाता है जहाँ परमात्मा का निवास है। जिस रास्ते से हमने परमात्मा से मिलना है, उसी को तम्बाकू का धुँआ बंद कर देता है। हुक्का पीने वालों को देखा है, प्रतिदिन हुक्के की नै (नली) में लोहे की गज (एक पतला-सा सरिया) घुमाते हैं जिनमें से धुँए का जमा हुआ मैल निकलता है। वह नै रूक जाती है। मानव जीवन परमात्मा प्राप्ति के लिए ही मिला है। परमात्मा को प्राप्त करने वाले मार्ग को तम्बाकू का धुँआ बंद कर देता है। इसलिए भी तम्बाकू भक्त के लिए महान शत्रु है। वैसे भी हुक्का पीने वाले भी मानते हैं कि तम्बाकू अच्छी चीज नहीं है। जब कोई छोटा बच्चा अपने दादा-ताऊ, पिता-चाचा को हुक्का पीते देखता है तो वह भी नकल करता है। हुक्के को पीने लगता है तो बड़े व्यक्ति जो स्वयं हुक्का पीते हैं, उस बच्चे को धमकाते हैं कि खबरदार! अगर हुक्का पीया तो। यह अच्छा नहीं है। यदि आप जी इसे अच्छा पदार्थ मानते हैं तो बच्चों को भी पीने दो। आप

मना करते हैं तो मानते हो कि यह अच्छा नहीं है, हानिकारक है। सर्दियों में एक मकान में छोटे बच्चे भी सो रहे होते हैं। उसी में हुक्का पीने वाला हुक्का पी रहा होता है। वह स्वयं तो पाप कर ही रहा है, अपने परिवार को धुँआ पिलाकर पाप का भागी बना रहा है। छोटे बेटा-बेटी को दादा-पिताजी अपने हिस्से के दूध से पिलाने की कोशिश करता है कि ले, थोड़ा ओर पी ले, देख तेरी चोटी बढ़ रही है, और पी जा। इस प्रकार उसे दूध का गिलास पिलाकर दम लेता है क्योंकि दूध बच्चे के लिए लाभदायक है। हुक्का-बीड़ी पीने से मना करता है तो दिल तो कहता है कि तम्बाकू पीना बुरा है, परंतु समाज में यह बुराई आम हो चुकी है। इसलिए पाप नहीं लगता। जैसे कई कबीले माँस खाते हैं, उनके बच्चों के लिए वह पाप आम बात है।

इसी प्रकार तम्बाकू पीना भी महापाप है, परंतु परम्परा पड़ गई है, पाप नहीं लगता। इसे त्याग देना चाहिए। भक्त हरलाल जी ने उसी दिन हुक्का तोड़ दिया। चिलम फोड़ दी। सर्व परिवार को वे सब बातें सुनाई। नाम-दीक्षा दिलाई। कई पीढ़ी तक बेरी के उन परिवारों में हुक्का नहीं था। बाद में सत्संग के अभाव में फिर से कुछ-कुछ पीने लगे हैं।

''तम्बाकू से गधे-घोड़े भी घंणा करते हैं''

एक दिन संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर वाले) किसी कार्यवश घोड़े पर सवार होकर जींद जिले में किसी गाँव में जा रहे थे। मार्ग में गाँव मालखेड़ी (जिला जींद) के खेत थे। उन खेतों में से घोड़े पर बैठकर जा रहे थे। गेहूँ की फसल खेतों में खड़ी थी। घोड़ा रास्ता छोड़कर गेहूँ की फसल के बीचों-बीच चलने लगा। खेतों में फसल के रखवाले थे। वे लाठी-डण्डे लेकर दौड़े और संत गरीबदास जी को मारने लगे कि तेरा दिमाग खराब हो गया है क्या? हमारी फसल का नाश करा दिया। घोड़े को सीधा नहीं चला सकता। ज्यों ही उन्होंने संत गरीबदास जी को लाठी मारने की कोशिश की तो उनके हाथ ऊपर को ही जाम हो गए। सब अपनी-अपनी जगह पत्थर की मूर्ति के समान खड़े हो गए। पाँच मिनट तक उसी प्रकार रहे। फिर संत गरीबदास जी ने अपना हाथ आशीर्वाद देने की स्थिति में किया तो उनकी स्तंभता टूट गई और सब पीठ के बल गिरे। लाठियाँ हाथ से छूट गई। ऐसे हो गए जैसे अधरंग हो गया हो। रखवालों को समझते देर नहीं लगी कि यह सामान्य व्यक्ति नहीं है। सबने रोते हुए क्षमा याचना की। तब संत गरीबदास जी ने कहा कि भले पुरूषो! क्या राह चलते व्यक्ति के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं। मारने को दौड़े हो। पहले तो यह जानना चाहिए था कि किस कारण से घोड़ा फसल के बीच में ले गए हो? वे किसान बोले, अब बताईये जी, घोड़ा किस कारण से फसल में चला गया था? संत गरीबदास जी ने पूछा कि इस खेत में इस फसल से पहले क्या बीज रखा था। उन्होंने बताया कि ज्वार बोई थी। उससे पहले क्या बोया था? उन्होंने बताया कि तम्बाकू बीजा था। संत गरीबदास

जी ने बताया कि उस तम्बाकू की बदबू अभी तक इस खेत में उठ रही है। उसकी बदबू से परेशान होकर मेरा घोड़ा रास्ता त्यागकर दूर से जाने लगा। उस तम्बाकू को आप पीते हो, आप तो पशुओं से भी गये-गुजरे हो। सुन लो ध्यान से! इस के बाद इस गाँव में कोई व्यक्ति हुक्का नहीं पीएगा, तम्बाकू सेवन नहीं करेगा। यदि आज्ञा का पालन नहीं हुआ तो गाँव को बहुत हानि हो जाएगी। उस समय तो सबने हाँ कर दी। संत के चले जाने के पश्चात् बोले कि भर ले न हुकटी! जब होकटी (छोटा हुक्का) भरने लगे तो हाथ से चिलम छूटकर फूट गई। दूसरी होकटी की चिलम लाए, वह भी हाथ में ही चूर-चूर हो गई। खेत में जितनी होक्की थी, सब टूट गई। चिलम भी फूट गई। रखवाले डर गए कि उस संत की लीला है। गाँव गए तो गाँव के सब हुक्के टूट गए, चिलम फूट गई। पूरे गाँव में हड़कंप मच गया। भय का वातावरण हो गया। रखवाले गाँव में आए तो कारण का पता चला। उस दिन के पश्चात् गाँव में वर्तमान तक हुक्का (तम्बाकू सेवन) कोई नहीं पीता। गाँव का नाम है ''मालखेड़ी''।

❖ हुक्का पीने वाले कहते हैं कि ले मेरे पास कड़वा तम्बाकू है, यह भर ले चिलम में। दूसरा कहता है कि यह मेरे वाला अधिक कड़वा है। संत गरीबदास जी ने बताया है कि मत्यु के उपरांत यम के दूत उस कड़वा तम्बाकू पीने वाले के मुख में मूत देते हैं। कहते हैं कि तू अधिक कड़वा-कड़वा तम्बाकू पीना चाहता था, ले प्यारे! कड़वा मूत पी ले। मुत्र की धार उसका मुख खोलकर मुख में लगाते हैं।

संत गरीबदास जी ने यह तो एक लीला करके बुराई छुड़ाई थी। ज्ञान से जो प्रभाव पड़ता है, वह सदा के लिए बुराई छुड़ा देता है। ज्ञान सत्संग से होता है। सत्संग सुनने की रूचि पैदा करो। सत्संग सुनो।

निवेदन :- उपरोक्त बुराई सर्वथा त्याग दें। इससे जीवन का मार्ग सुहेला हो जाएगा।

''नशा करता है नाश''

नशा चाहे शराब, सुल्फा, अफीम, हिरोईन आदि-आदि किसी का भी करते हो, यह आपका सर्वनाश का कारण बनेगा। नशा सर्वप्रथम तो इंसान को शैतान बनाता है। फिर शरीर का नाश करता है। शरीर के चार महत्वपूर्ण अंग हैं :- 1. फेफड़े, 2. जिगर (लीवर), 3. गुर्दे (Kidney), 4. हृदय। शराब सर्वप्रथम इन चारों अंगों को खराब करती है। सुल्फा (चरस) दिमाग को पूरी तरह नष्ट कर देता है। हिरोईन शराब से भी अधिक शरीर को खोखला करती है। अफीम से शरीर कमजोर हो जाता है। अपनी कार्यशैली छोड़ देता है। अफीम से ही चार्ज होकर चलने लगता है। रक्त दूषित हो जाता है। इसलिए इनको तो गाँव-नगर में भी नहीं रखे, घर की बात क्या। सेवन करना तो सोचना भी नहीं चाहिए।

❖ एक व्यक्ति दिल्ली पालम हवाई अड्डे पर नौकरी करता था। सन् 1997 की बात है। उस समय उसकी सेलरी (Pay) बारह हजार रूपये महीना थी। दिल्ली के

गाँव में यह दास (रामपाल दास) सत्संग करने गया। वहाँ एक वृद्धा अपनी तीन पोतियों के साथ सत्संग वाले घर में आई जो नाते में सत्संग कराने वालों की चाची थी। वह गाँव के बाहरी क्षेत्र में प्लॉट में मकान बनाकर रहती थी। वह लड़का भी उसी का था जो दिल्ली हवाई अड्डे पर नौकर था। बहुत शराब पीता था। घर की ठौर बिटोड़ा बना रखा था। पत्नी-बच्चों को पीटता था क्योंकि उसका प्रतिदिन शराब पीकर आना, पत्नी ने टोका-टाकी करनी, प्रतिदिन की महाभारत थी। पत्नी बच्चों को छोड़कर अपनी माँ के घर चली गई। दादी ने बच्चों को संभाला। फिर स्वयं जाकर अपनी पुत्रवधु को समझा-बुझाकर लाई। उस रात्रि में वह वृद्धा अपनी पुत्रवधु तथा पोतियों सहित आई थी क्योंकि खुद के जेठ के घर सत्संग था। इसलिए आना पड़ा। सत्संग में प्रत्येक पहलू पर व्याख्यान देना होता है। पहले परमात्मा की भक्ति करने से लाभ तथा न करने से हानि बताई जाती है जो पूरे विस्तार से बताई जाती है। उस दिन वह शराबी पहले घर गया। घर पर कोई नहीं मिला तो कुछ देर घर पर बैठा। फिर एक पड़ोसी ने बताया कि आपकी माताजी आपके ताऊ के घर पूरे परिवार को लेकर गई है। उनके यहाँ सत्संग हो रहा है। वहीं सबका खाना है। परमात्मा की करनी हुई, वह भी सत्संग में चला गया और सबसे पीछे बैठ गया क्योंकि शराब पी रखी थी।

सत्संग वचन :- सत्संग में बताया गया कि मानव जन्म प्राप्त करके जो व्यक्ति शुभ कर्म नहीं करता तो उसका भविष्य नरक बन जाता है। जो नशा करता है, उसका वर्तमान तथा भविष्य दोनों नरक ही होते हैं। नशा इंसानों के लिए नहीं है। यह तो इंसान से राक्षस बनाता है। जो व्यक्ति पूर्व जन्म के पुण्यकर्मों वाले हैं, उनको इस जन्म में उन शुभ कर्मों के प्रतिफल में अच्छी नौकरी मिली है या अच्छा कारोबार है। यदि वर्तमान में शुभ कर्म, भक्ति व दान-धर्म नहीं करोगे तो भविष्य के जन्मों में गधा-कुत्ता, सूअर-बैल बनकर धक्के व गंद खाओगे।

जैसे मानव (स्त्री/पुरूष) जीवन में पूर्व के शुभ कर्म अनुसार अच्छा भोजन मिला है। अच्छा मानव शरीर मिला है। जब चाहो, खाना खाओ। प्यास लगे, पानी पीओ। इच्छा बने तो चाय-दूध पीयो। फल तथा मेवा (काजू-बादाम) खाओ। यदि पूरा गुरू बनाकर सच्चे दिल से भक्ति व सत्संग सेवा, दान-धर्म नहीं किया तो अगले जन्म में गधा-बैल-कुत्ता बनकर दुर्दशा को प्राप्त हो जाओगे। न समय पर खाना मिलेगा, न पानी। न कोई गर्मी-सर्दी से, मच्छर-मक्खी से बचने का साधन होगा। मानव जीवन में तो मच्छरदानी, ऑल-आऊट से बचाव कर लेते हैं। गर्मी से बचने के उपाय खोज लिए हैं। परंतु जब पशु बनोगे, तब क्या मिलेगा? संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्राप्त ज्ञान को इस प्रकार बताया है :-

गरीब, नर सेती तू पशुवा कीजै, गधा बैल बनाई।
छप्पन भोग कहाँ मन बोरे, कुरड़ी चरने जाई।।

भावार्थ :- मानव शरीर छूट जाने के पश्चात् भक्ति हीन तथा शुभकर्म हीन होकर जीव गधे-बैल आदि-आदि की योनियों (शरीरों) को प्राप्त करेगा। फिर मानव

शरीर वाला आहार नहीं मिलेगा। गधा बनकर कुरड़ी (कूड़े के ढ़ेर) पर गंद खाएगा। बैल बनकर नाक में नाथा (एक रस्सी) डाली जाएगी। रस्से से बँधा रहेगा। न प्यास लगने पर पानी पी सकेगा, न भूख लगने पर खाना खा सकेगा। मक्खी-मच्छर से बचने के लिए एक दुम होगी। उसको कूलर समझना, पंखा या मच्छरदानी समझना। जिन प्राणियों के अधिक पापकर्म होते हैं, पशु जीवन में उनकी दुम भी कट जाती है। एक-डेढ़ फुट का डण्डा शेष बचता है, उसे घुमाता रहता है।

एक बैल के पिछले पैर के खुर के बीच में लगभग 1½ इंच बड़ी कील लग गई। चलने से और अधिक अंदर चली गई। बैल पैर से लंग करने लगा। हाली को लगा कि झटका लग गया है। नस पर नस चढ़ गई होगी, चलने से ठीक हो जाएगा। कई बार ऐसा होता है कि नस पर नस चढ़ जाती तो बैल चलते-चलते ठीक हो जाता था, परंतु अबकी बार ऐसा नहीं हुआ। सारा दिन बैल हल में चला। घर तक आया तो पैर को कठिनाई से पथ्वी पर रख पा रहा था। धीरे-धीरे चल पा रहा था। घर पर आते ही बैठ गया। चारा भी नहीं चरा। आँखों से आँसू निकल रहे थे क्योंकि दर्द अधिक था। सुबह बैल उठा ही नहीं, लेट गया। पैर पर सोजन अधिक थी। गाँव से पशुओं का डॉक्टर बुलाया। पुराने समय की बात है। उस समय ऐसा ही इलाज होता था। डॉक्टर ने देखकर बताया कि इसके घुटने में बाय है। पुराने गुड़ को कूटकर नर्म करके पट्टी बाँध दो, ठीक हो जाएगा। कील लगी थी खुर में (पैर के नीचे वाले हिस्से में), उपचार हो रहा था घुटने का। लगभग एक महीने ऐसा चला। एक दिन घर के आदमी ने देखा कि बैल के पैर के तलवे (खुर के बीच) से मवाद निकल रहा है। उसको साफ किया तो पाया कि कील लगी है। किसी औजार से कील निकाली। तब एक सप्ताह में बैल ठीक हो गया। पेटभर चारा खाया-पानी पीया।

विचार करें :- जब यह प्राणी मानव शरीर में था तो उसने स्वपन में भी नहीं सोचा था कि एक दिन मैं बैल भी बन जाऊँगा। अब बोलकर भी नहीं बता पा रहा था कि दर्द कहाँ पर है? कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, जिव्हा तो वोहे भली, जो रटै हरिनाम।
ना तो काट के फैंक दियो, मुख में भलो ना चाम।।

भावार्थ :- जैसे जीभ शरीर का बहुत महत्वपूर्ण अंग है। यदि परमात्मा का गुणगान तथा नाम-जाप के लिए प्रयोग नहीं किया जाता है तो व्यर्थ है क्योंकि इस जुबान से कोई किसी को कुवचन बोलकर पाप करता है। बलवान व्यक्ति निर्बल को गलत बात कह देता है जिससे उसकी आत्मा रोती है। बद्दुवा देती है। बोलकर सुना नहीं सकता क्योंकि मार भी पड़ सकती है। यह पाप हुआ। फिर किसी की निंदा करके, किसी की झूठी गवाही देकर, किसी को व्यापार में झूठ बोलकर ठगकर अनेकों प्रकार के पाप मानव अपनी जीभ से करता है। परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि यदि जीभ का सदुपयोग नहीं करता है यानि शुभ वचन-शीतल

वाणी, परमात्मा का गुणगान यानि चर्चा करना, धार्मिक सद्ग्रन्थों का पठन-पाठन तथा भगवान के नाम पर जाप-स्मरण जीभ से नहीं कर रहा है तो इसे काटकर फैंक दो। कोरे पाप इकट्ठे कर रहा है।

(जीभ को काटने को कहना तो मात्र उदाहरण है जो सतर्क करने को है। कहीं जीभ काटकर मत फैंक देना। अपने शुभ कर्म, शुभ वचन शुरू करना। यदि रामनाम व गुणगान नहीं कर रहा है तो पवित्र मुख में इस जीभ के चाम को रखना अच्छा नहीं है।)

❖ मानव शरीरधारी प्राणी को वर्तमान में (सन् 1970 से) विशेष सुविधाऐं प्राप्त हैं। जिस कारण से दिनों-दिन परमात्मा से दूर होता जा रहा है। उतनी ही गति से मानव के दुःख निकट आ रहे हैं। वित्तीय स्थिति में सुधार है, परंतु मानसिक शांति समाप्त है। नशा इसका मुख्य कारण है। एक पिता नौकरी पर गया है। बच्चों की आशा होती है कि पिता जी आएंगे, कुछ आवश्यक वस्तुऐं लाऐंगे। पिता जी आते हैं तो छोटे-छोटे बच्चे दौड़कर लिपटते हैं, प्यार पाते हैं। जिन बच्चों का पिता नशा करता है। उनके घर में कलह का होना स्वाभाविक है। बच्चे भयभीत रहते हैं। उनका मानसिक विकास, शारीरिक विकास दोनों ही नहीं हो पाते। वह घर नरक समान हो जाता है। आज जो शराब पीकर मस्त हैं, उनकी इज्जत समाज में भी नहीं होती।

अगले जन्म में वह व्यक्ति कुत्ता बनेगा, टट्टी खाएगा। गंदी नाली का पानी पीएगा। फिर पशु-पक्षी बनकर कष्ट पर कष्ट उठाएगा। इसलिए सर्व नशा व बुराई त्यागकर इंसान का जीवन जीओ। सभ्य समाज को भी चैन से जीने दो। एक शराबी अनेकों व्यक्तियों की आत्मा दुःखाता है :- पत्नी की, पत्नी के माता-पिता, भाई-बहनों की, अपने माता-पिता, बच्चों की, भाई आदि की। केवल एक घण्टे के नशे ने धन का नाश, इज्जत का नाश, घर के पूरे परिवार की शांति का नाश कर दिया। क्या वह व्यक्ति भविष्य में सुखी हो सकता है? कभी नहीं। नरक जैसा जीवन जीएगा। इसलिए विचार करना चाहिए, बुराई तुरंत त्याग देनी चाहिऐं।

प्रश्न :- किसने देखा है कि अगले जन्म में क्या होता है?

उत्तर :- उदाहरण के लिए एक समय एक अंधा व्यक्ति जंगल की ओर जा रहा था। आगे एक सज्जन व्यक्ति खड़ा था। उसने कहा कि हे सूरदास जी! इधर मत जाओ, यह रास्ता भयंकर जंगल में जाता है। खुंखार शेर-चीते आदि-आदि जानवर रहते हैं। आप लौट जाईये। यदि अंधे ने नशा नही कर रखा होगा तो तुरंत मुड़ जाएगा। यदि नशे में है तो कहेगा कि किसने देखा है कि जंगल में भयंकर शेर-चीते सर्प आदि जानवर रहते हैं और यह कहकर अपने पथ पर बढ़ जाता है।

विचार करें :- अंधे को दिखाई नहीं देता और आँखों वाले की बात पर विश्वास नहीं करता तो उसको कौन-से तरीके से समझाया जाए? यदि नहीं मानता है तो उसकी वही दशा होगी जो आँखों वाला बता रहा था, शेर मार डालेंगे।

इसी प्रकार संतजन आँखों (ज्ञान नेत्र) वाले हैं। उन्होंने हमें बताया है जो

ऊपर वर्णन किया गया है। हम ज्ञान नेत्रहीन (अंधे) हैं। यदि हम संतों की शिक्षा पर विश्वास करके रास्ता नहीं बदलेंगे तो वही होगा जो ऊपर बताया गया है।

नर से फिर पीछे तू पशुवा कीजै, गधा बैल बनाई।
छप्पन भोग कहां मन बौरे, कुरड़ी चरने जाई।।

❖ कुछ व्यक्ति तो यहाँ तक कह देते हैं कि ''देखा जाएगा जो होगा।'' उनसे निवेदन है कि गधा बनने के पश्चात् आप क्या देखोगे, फिर तो कुम्हार देखेगा। इस प्रकार के प्रवचन सत्संग में अवश्य सुनाये जाते हैं।

वह शराबी भी सत्संग में आ बैठा क्योंकि घर पर कोई नहीं था, ताला लगा था। कुछ देर के बाद नशा उतर गया और सब सत्संग सुनना पड़ा। उस दिन के पश्चात् उस व्यक्ति ने कभी शराब नहीं पी और कोई नशा नहीं किया। दीक्षा ली, पूरे परिवार को दीक्षा दिलाई। हम (लेखक तथा साथ सत्संग में गए कुछ भक्त) सुबह गाँव के बाहर घूमने के लिए गए तो रास्ते में उस व्यक्ति (Airport वाले) का घर था। गली में उसकी माता जी खड़ी थी। उसने कहा कि महाराज जी! चाय पीकर जाना। गाँव के भक्त ने बताया कि इनके घर अवश्य चलो, उजड़ा पड़ा है यह परिवार। साधु-संतों के चरण पड़ने से घर पवित्र हो जाता है। हम सब उनके घर चले गए। हम कुल पाँच जने थे। चारपाई आँगन में डली थी। मई का महीना था। वृक्ष की छाया थी। उसकी माता जी ने अपनी पुत्रवधु से कहा कि बेटी! चाय बना। उस बेटी ने चुल्हे में आग जलाकर डेगची में पानी डालकर चाय बनाना शुरू कर दिया। आधे घण्टे बाद हमने कहा कि चाय शीघ्र लाओ। हमने घूमने जाना है। फिर किसी अन्य गाँव में सत्संग के लिए जाना है। परंतु फिर भी वह बेटी डेगची के नीचे आग जलाए जा रही थी। दोबारा कहा तो वह रोने लग गई।

गाँव का भक्त उठकर गया तो पता चला कि घर पर न चीनी है, न चाय-पत्ती और न ही दूध है। उस व्यक्ति की माता जी भी रोने लगी। कहा कि उजड़े पड़े हैं महाराज! बचा सको तो बचा लो। वह व्यक्ति दीक्षा लेकर वक्त से अपनी ड्यूटी पर चला गया था।

कुछ दिन के पश्चात् हम दिल्ली में ही पंजाबखोड़ गाँव में सत्संग कर रहे थे। वहाँ पर वह व्यक्ति अपनी माता तथा पत्नी व तीनों बेटियों को कार में बैठाकर सत्संग में लाया। पहले एक टूटी-सी मोटरसाईकिल थी। सब बच्चों ने सुंदर वस्त्र पहन रखे थे। कह रहे थे कि पिताजी अब मम्मी के साथ कभी नहीं लड़ते। सब तनख्वाह दादी जी को देते हैं। हम तो स्वर्ग में रहने लगे। दादी जी बोली कि उस दिन आपके ऐसे दर्शन हुए कि हम तो उजड़े बस गए। मैंने कहा कि माई! तेरा बेटा बुरा नहीं था। इसने ये अच्छे विचार कभी सुने ही नहीं थे। यदि पहले ये विचार सुनने को मिल जाते तो यह बुराई करता ही नहीं। यह सब परमेश्वर कबीर जी की कृपा है जो उस दिन यह सत्संग में आ गया और इसकी आत्मा का मैल साफ हो गया। आपका परिवार नरक से निकलकर स्वर्ग में निवास कर रहा है। परमात्मा की मर्यादा में रहना, कभी कष्ट नहीं आएगा। भक्ति करते रहना, कई पीढ़ी का

उद्धार हो जाएगा। इस प्रकार सत्संग से मानव उद्धार होकर विश्व में शांति, आपसी-प्रेम बढ़ता है। सत्संग विचार अवश्य सुना करो। पढ़ें 'भक्ति मर्यादा' पृष्ठ 287 पर।

''माता-पिता की सेवा व आदर करना परम कर्तव्य''

प्रत्येक माता-पिता की तमन्ना होती है कि मेरी संतान योग्य बने। समाज में बदनामी न ले। अच्छे चरित्र वाली हो, आज्ञाकारी हो। वृद्धावस्था में हमारी सेवा करे। हमारी बहु हमारे कहने में चलने वाली आए। समाज में हमारी इज्जत रखे। वृद्धावस्था में हमारी सेवा करे। प्यार से व्यवहार करे। सत्ययुग, त्रेता, द्वापर तक यह मर्यादा चरम पर रही। सब सुखी जीवन जीते थे। कलयुग में कुछ समय तक तो ठीक रहा, परंतु वर्तमान में स्थिति विपरीत ही है। इसे सुधारने का उद्देश्य लेखक (रामपाल दास) रखता है। आशा भी करता हूँ कि भगवान की कृपा से ज्ञान के प्रकाश से सब संभव हो जाता है, हो भी रहा है और होगा, यह मेरी आत्मा मानती है।

➢ माता का संतान के प्रति प्यार :-

एक लड़के का पिता मृत्यु को प्राप्त हो गया। उस समय वह 10-11 वर्ष का था। माता ने अपने इकलौते पुत्र की परवरिश की। माता तथा पिता दोनों का प्यार माता जी ने दिया कि कहीं पुत्र को पिता का अभाव कष्ट न दे। लड़का युवा होकर शराब का आदी हो गया तथा वैश्या गमन करने लगा। माता से नित्य रूपये माँगे और आवारागर्दी में उड़ाए। एक दिन माता के पास पैसे नहीं थे। शराब के नशे में माता को पीटा तथा वैश्या के पास गया। उस दिन पैसे नहीं थे तो वैश्या ने कहा कि अपनी माता का दिल निकाल ला। उल्टा घर आया, माता बेहोश थी। छुरा मारकर माता का दिल निकालकर चल पड़ा। नशे में ठोकर लगी और गिर गया। माता के दिल से आवाज आई कि बेटा! तेरे को चोट तो नहीं लगी।

नशे से बना शैतान वैश्या के पास माता का दिल लेकर पहुँचा तो वैश्या ने कहा कि जब तू अपनी माता का हितैषी नहीं है तो मेरा क्या होगा? किसी के बहकावे में आकर तू मुझे भी मार डालेगा। मेरे को तो तेरे से पीछा छुड़ाना था कि तू अब निर्धन हो गया है, मेरे किस काम का। इसलिए यह शर्त रखी थी कि तू माता का दिल निकाल नहीं सकता क्योंकि वह तेरे को कभी किसी वस्तु के लिए मना नहीं करती थी। हे शैतान! चला जा मेरी आँखों के सामने से। यह कहकर वैश्या ने उसे घर से बाहर धक्का देकर द्वार बंद कर लिया। वह शैतान घर आया। माता के शव पर विलाप करने लगा। कहा कि माता जी! हो सके तो भगवान के दरबार में भी मुझे बचाना। आवाज आई कि बेटा! कुछ नहीं हुआ, बस तेरे को खुश देखना चाहती हूँ। उसी समय नगर के लोग आए। थाने में सूचना दी। उस अपराधी को राजा ने फाँसी की सजा दी।

राजा ने फाँसी चढ़ाने से पूर्व उसकी अंतिम इच्छा जानी तो उस लड़के ने

कहा कि कुछ नागरिकों को बुलाया जाए, मैं अपनी कारगुजारी को सबके साथ साझा करना चाहता हूँ। नगर के व्यक्ति आए। उस लड़के ने अपना जुल्म कबूला और बताया कि मैंने उपरोक्त जुल्म किया। मेरी माँ की आत्मा अंतिम समय में भी मेरे सुखी रहने की कामना करती रही। मेरे को नशे ने शैतान बना दिया। मैंने वैश्या गमन करके समाज को दूषित किया। आप लोग मेरे से नसीहत लेना। जो घोर पाप मैंने अपनी माता जी को परेशान करके किया, कोई मत करना। माता जैसी हमदर्द संसार में पत्नी भी नहीं हो सकती, भले ही वह कितनी ही नेक हो। माता अपने बेटा-बेटी को इतना प्यार करती है कि सर्दियों में बच्चा पेशाब कर देता है तो माता स्वयं उसके पेशाब से भीगे ठण्डे वस्त्र पर लेटती है, बच्चे के नीचे सूखा बिछौना कर देती है। यदि बच्चा भूख से रो रहा होता है तो खाना बीच में छोड़कर उसे पहले अपना दूध पिलाकर शांत करती है।

''पिता बच्चों की हर संभव गलती क्षमा कर देता है''

परमात्मा कबीर जी ने कहा है कि पिता अपने पुत्र-पुत्री के सर्व अपराध क्षमा कर देता है :-

अवगुण मेरे बाप जी, बक्शो गरीब नवाज।
जो मैं पूत–कपूत हूँ, तो भी पिता को लाज।।

शब्दार्थ :- परमात्मा सर्व प्राणियों का पिता है। पिता में विशेषता होती है कि उसका बेटा-बेटी अज्ञानता में गलती कर देते हैं और वे पिता से क्षमा-याचना कर लेते हैं कि भविष्य में कभी गलती नहीं करेंगे तो पिता उनको तुरंत क्षमा कर देता है। इसलिए भक्त परमात्मा से विनय करता है कि हे दीन दयाल! आप तो सबके पिता हो। मेरे अवगुण (अपराध) पिता होने के नाते क्षमा करना। मैं कपूत यानि निकम्मा पुत्र भी हूँ तो भी आप पिता का कर्तव्य पालन करके क्षमा करना।

➢ रामभक्त की पत्नी का देहांत हो गया। उस समय उसका पुत्र तीन वर्ष का था। उस व्यक्ति की रिश्तेदारी में एक घटना ऐसी घटी थी जिसने उसको झंझोर कर रख दिया। कथा इस प्रकार है :-

उसके मामा जी अपनी बहन यानि रामभक्त की माता जी से लगभग दस वर्ष बड़े थे। मामा जी के दो पुत्र थे। रामभक्त की मामी जी का देहांत हो गया। मामा जी ने दूसरा विवाह कर लिया। दूसरी पत्नी को पुत्र हुआ। दूसरी पत्नी पहले वाली के पुत्रों से ईर्ष्या करने लगी। यह विचार किया कि 15 एकड़ जमीन है। तीन जगह बँटेगी। उसने उन बच्चों को काँच पीसकर दूध तथा खाने में खिला-पिला दिया जिससे दोनों की धीरे-धीरे रोगी होकर मृत्यु हो गई। डॉक्टर ने बताया कि बच्चे काँच खा गए हैं। जिस कारण से इनकी मृत्यु हो गई है। एक दिन उसकी पत्नी ने पड़ोसन से बताया कि मैंने ऐसे-ऐसे किया। मेरे बेटे को पन्द्रह एकड़ जमीन मिल गई। उस स्त्री ने मेरे मामा जी को बताया। मामा जी छोटी मामी को बहुत प्यार करते थे और उस पर विश्वास करते थे। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था। एक

दिन छोटी मामी अपने भाई से बता रही थी कि मैंने ऐसे-ऐसे किया। तेरे भानजे को पन्द्रह एकड़ जमीन मिल गई। यह बात मेरा मामा भी सुन रहा था क्योंकि वह खिड़की से बाहर स्वाभाविक खड़ा था। मामी का भाई बोला कि बहन! तूने जुल्म कर दिया। इस पाप को कहाँ रखेगी? आज के बाद मैं तेरी शक्ल देखने भी नहीं आऊँगा। मामा जी का दिमाग फटने को हो गया। घर त्यागकर अपनी बहन के घर आ गया यानि हमारे (रामभक्त के) घर पर जीवन व्यतीत किया। कुछ वर्ष के पश्चात् छोटी मामी से जन्मा वह पुत्र भी मर गया। वह छोटी मामी किसी के साथ भाग गई। पता चला कि उस व्यक्ति ने उसके गहने छीनकर मारकर कुएं में डाल दिया। पुलिस को पता चला तो उस व्यक्ति को फाँसी लगाई गई। इस सर्वनाश महाभारत को याद करके रामभक्त ने दूसरा विवाह नहीं किया। लड़के को अपने साथ रखता। हल जोतता था तो पुत्र को कंधे पर बैठाकर रखता था। थक जाता तो वृक्ष के नीचे लेटा देता। स्वयं खाना बनाता, स्वयं स्नान कराता, कपड़े साफ करता। जैसे-तैसे लड़का जवान हुआ। विवाह कर दिया। फिर भी सब कार्य करता था। लड़का भी काम में हाथ बँटाता था, परंतु कठिन कार्य स्वयं ही करता था। वृद्धावस्था ने जोर दिया। कार्य कुछ नहीं कर पा रहा था। पुत्रवधु को व्यर्थ का खर्च लगने लगा। जिस कारण से अपने ससुर को रूखा-सूखा बासी भोजन देने लगी। फिर पेटभर भोजन भी नहीं देती थी। लड़का पूछता था कि पिता जी! सेवा ठीक हो रही है। पिता जी कहते कि बेटा! कोई कसर नहीं है। बड़ी भाग्यवान बहू आई है। मेरा विशेष ध्यान रखती है। यह बात बहू भी सुनती। और अधिक परेशान करती कि मेरे पति को पता नहीं है। वृद्ध भी मेरी चाल से अपरिचित है। एक दिन लड़के ने देखा कि पिता जी को भोजन ठीक नहीं मिला तो उसने पत्नी को कहा तो पाखण्ड करने लगी कि घर देखकर खाया जाता है। आपको घर की चिंता नहीं है। सारा घर मेरे से चल रहा है। मुझे पता है कि खर्च कैसे चलाना है। एक दिन वृद्ध को चक्कर आए और गिर गया। टाँग टूट गई। वैद्य ने बताया कि आहार पूरा न मिलने से शारीरिक कमजोरी है। दूध दो समय आधा-आधा सेर (किलो) पिलाओ। ताजा भोजन खिलाओ। वैद्य चला गया। पत्नी ने कहा कि ऐसे तो घर का दिवाला निकल जाएगा। पति यानि लड़के को भी बात पसंद आई। वृद्ध की कोई परवाह नहीं की। वृद्ध के ससुराल वाले चोट लगने की खबर सुनकर मिलने आए। उन्होंने पूछा कि बेटा-बहू ठीक सेवा कर रहे हैं क्या? रामभक्त ने कहा कि पूछो ना। ऐसे पुत्र तथा पुत्रवधू सबको दे भगवान। मेरे को कोई कष्ट नहीं होने देते। यह तो कोई कर्म की मार से चोट लग गई है। उसी गाँव में दो बहनों का विवाह हुआ था। एक का रामभक्त से, दूसरी का पड़ोस में। जब वे अपनी दूसरी लड़की के घर गए तो पता चला कि उस रामभक्त की कोई सेवा नहीं हो रही है। लड़का भी निकम्मा है। यह बात ससुराल वालों के गले नहीं उतरी क्योंकि वे रामभक्त के मुख से सुनकर आए थे कि सेवा में कोई कसर नहीं है। वे कुछ समय बाद पुनः रामभक्त के घर गए तो उस समय वह बासी रोटी पानी में भिगो-भिगोकर

खा रहा था। यह देखकर उनको रोना आ गया। लड़के को बुलाया तथा कहा कि तेरे को शर्म नहीं आती। पता है तेरे को कैसे पाल-पोषकर बड़ा किया है। लड़के की बहू भी आ गई। दोनों बोले कि हम तो ऐसे ही सेवा करेंगे। रामभक्त बोला कि आप जाओ, घर में झगड़ा ना कराओ। मेरी किस्मत में जो लिखा है, वह मिल रहा है। मैं अपने पुत्र को दुःखी नहीं देख सकता। रामभक्त की बूआ का लड़का रामनिवास सत्संगी था। वह रामभक्त को बहुत कहता था कि आप कुछ समय भगवान की भक्ति किया करो। मेरे साथ संत के सत्संग सुनने चला करो तो रामभक्त कहता था कि मैं तो अपने बेटे की पूजा करूंगा, यह सुखी रहे, यही मेरी तमन्ना है। बूआ के लड़के ने कहा कि बेटे की पूजा पूरी हो चुकी हो तो अब भी बना ले कुछ कर्म। फिर भी यह कहा कि बेटे-बहू को देख-देखकर जी रहा हूँ। बहुत कहने के पश्चात् रामभक्त अपनी बूआ के लड़के रामनिवास के साथ सत्संग में गया। फिर रामनिवास अपने घर ले गया, उसकी दवा कराई। अच्छा खाना खिलाया। कई महीने अपने पास रखा। रामभक्त भक्ति पर पूरा दृढ़ हो गया। घर पर गया तो बच्चों से कहा बेटा-बेटी (पुत्रवधु)! आज तक मैंने आप से कुछ नहीं माँगा। आज एक भीख माँग रहा हूँ। आप मेरे साथ सत्संग में एक बार चलो। उन्होंने कहा कि पीछे से पशुओं तथा बच्चों को कौन संभालेगा? रामभक्त ने कहा कि बेटा घर पर रह जाएगा। बेटी तथा पोता-पोती मेरे साथ चलो। ऐसा ही किया। जब उस पुत्रवधु ने सत्संग के वचन सुने, वहाँ आने वाले सब भक्तों की सेवा पुराने भक्त-भक्तमति ऐसे कर रहे थे जैसे विशेष मेहमानों की घर पर करते हैं। वृद्ध, रोगी, अपंग श्रद्धालुओं की भी विशेष सेवा कर रहे थे। सत्संग में यह बताया जाता है कि जीव पर दया बनाए रखने से परमात्मा प्रसन्न होता है। दुःखियों-असहायों की सहायता करना मानव मात्र का परम कर्तव्य है।

दया–धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान। कह कबीर दयावान के पास रहे भगवान।

शब्दार्थ :- धर्म वही करता है जिसके हृदय में दया है। दया धर्म की जड़ है तथा पाप वह करता है जिसमें अभिमान भरा है। अभिमान पाप की जड़ है। कबीर परमात्मा ने कहा है कि दयावान के साथ परमात्मा रहता है। अभिमानी के पास नहीं रहता।

भक्त रामभक्त की पुत्रवधु जिस भक्तमति के पास बैठी थी, वह बोली कि बहन! आप भी कुछ सेवा कर लो।

''सत्संग वचन'' :- गुरूदेव जी बताते हैं कि जो सेवा-भक्ति करेगा, उसी को फल मिलेगा। मैं भोजन खाऊँगा तो मेरा पेट भरेगा। आप खाओगे तो आपका पेट भरेगा। सब प्राणी परमात्मा के बच्चे हैं। आप धनी के बच्चे समझकर सेवा करो। जैसे एक धनी की लड़की 8-9 वर्ष की थी। उसकी देखरेख के लिए एक नौकरानी रखी थी। वह उस लड़की को गर्मियों में स्कूल छोड़ने जाती थी तो उस लड़की के ऊपर छाते (छतरी) से छाया करके चलती थी, स्वयं धूप सहन करती थी जिससे धनी खुश रहता था और नौकरानी को तनख्वाह देता था। आप सब यह विचार

करके अपने-परायों का ध्यान रखें। सास-ससुर की सेवा, छोटे-बड़े की सेवा, सबका सम्मान करना आप जी का परम कर्तव्य है। यदि आप-अपने सास-ससुर, माता-पिता या अन्य आश्रितों की सेवा करोगे तो परमात्मा आपकी सेवा का प्रबंध करेगा। आप अपने छोटे-बड़े बच्चों को भी सत्संग में साथ लाया करो। बच्चों में भी छोटे-बड़ों की सेवा करने, अच्छा व्यवहार करने के संस्कार पड़ेंगे। वे बच्चे बड़े होकर आपकी (वृद्ध हो जाओगे, तब) भी सेवा ऐसे ही करेंगे। जैसे बेटी एक बाप-माँ को छोड़कर नए माता (सास)-पिता (ससुर) के पास आती है। अब जन्म के माता-पिता तो इतने ही साथी थे। उन्होंने पाल-पोसकर नए माता-पिता को सौंप दिया। सास-ससुर का कर्तव्य है कि आने वाली बेटी को अपनी बेटी की तरह प्यार दे। भेदभाव स्वपन में भी नई बेटी व अपनी जन्म की बेटी में न करे जो झगड़े की जड़ है। पुत्रवधु को चाहिए कि नए घर की परिस्थितियों के अनुसार अपने को ढ़ाले। माँ के घर वाले बर्ताव को कम प्रयोग करे। अब पुत्रवधु का घर-परिवार यही (ससुराल) है।

शिक्षा कथा :- एक पुत्रवधु अपनी सास को बहुत दुःखी रखती थी। उसको फूटे हुए मिट्टी के घड़े के टुकड़े (ठीकरे) में भोजन खिलाती थी जैसे कुत्तों को खिलाते हैं। कभी-कभी साफ करती थी। उसके लड़के का विवाह हुआ। कुछ समय उपरांत सास की मृत्यु हो गई। तब वह अपनी पुत्रवधु से बोली कि इस ठीकरे को फोड़कर बाहर फैंक दो। वह पुत्रवधु बोली कि सास जी! आपको भी इसी ठीकरे में भोजन दिया करूंगी। आपने बड़े जुल्म वृद्धा के साथ किए हैं। तब वह अपनी गलती को समझकर बहुत रोई। पुत्रवधु बुद्धिमान थी। शाम तक उस ठीकरे को नहीं फोड़ा। उसकी सास को वह ठीकरा दुःश्मन दिखाई देने लगा। पुत्रवधु ने कहा कि माता जी! मैंने सत्संग सुने हैं। मैं अपने कर्म खराब नहीं करूंगी। यह कहकर ठीकरा फोड़ दिया। पाप कर्म के कारण सास को कैंसर का रोग हो गया। सारा-सारा दिन चिल्लाए। पुत्रवधु उसकी सेवा करे, कोई कसर नहीं छोड़ती थी। परंतु कहती थी कि सासु माँ! सेवा तो मैं दिलोजान से करूंगी, परंतु तेरे पाप को मैं नहीं बाँट पाऊँगी। यह कष्ट तो आपको ही भोगना पड़ेगा। यदि सत्संग सुने होते तो यह दिन नहीं देखने पड़ते। तब उस जालिम औरत ने कहा कि बेटी! मैं महापापिनी हूँ। क्या मेरा भी उद्धार हो सकता है? मैं भी दीक्षा लेना चाहती हूँ? लड़की सत्संगी घर की थी। उसको पता था कि दीक्षा लेकर भक्ति करने से पाप कर्म नष्ट होते हैं। जिनके अधिक पाप हैं, भक्ति करने से लाभ ही होगा, पाप कम ही होंगे तथा भविष्य में मानव जन्म भी मिल जाता है यदि मर्यादा में रहकर अंतिम श्वांस तक साधना करता रहे। सत्संग में गुरूदेव जी उदाहरण देकर समझाते हैं कि जैसे किसी का वस्त्र कम मैला है तो थोड़े प्रयास से ही निर्मल हो जाता है। यदि अधिक मैला है तो दो-तीन बार साबुन-पानी से धोने से निर्मल हो जाता है। जिसने अधिक मैला कर रखा है तथा अन्य दाग भी लगाए हैं तो ड्राईक्लीन से साफ हो जाता है। यदि साफ करने का इरादा दृढ़ हो तो मिस्त्री का काला हुआ वस्त्र भी साफ हो सकता है। लड़की (पुत्रवधु) को पता था कि सास जी ने तो मिस्त्री

वाली दशा कर ली। फिर भी परमात्मा की शरण से अवश्य लाभ ही होता है। इस उद्देश्य से अपनी सासू माँ को दीक्षा दिला दी। कुछ समय पश्चात् कैंसर में कुछ पीड़ा कम हो गई। सत्संग सुनकर उसे रोना आया कि माता-पिता की बहू-बेटों से क्या आकांक्षा होती है? मुझ पापिन ने अपनी सासू जी के साथ क्या बर्ताव किया। मुझे तो यह रोग होना ही था। यदि पहले यह ज्ञान सुनने को मिल जाता तो मैं क्यों यह पाप करती? निर्मल जीवन जीती। सासू माँ की आत्मा भी खुश करती। अपना जीवन सफल कर लेती। उपरोक्त वचन सुनकर रामभक्त जी की पुत्रवधु उस अपनी सहेली (पुरानी भक्तमति) से लिपटकर फूट-फूटकर रोने लगी। आधा घंटे तो अपने को रोक नहीं सकी। अधिक सांत्वना के पश्चात् सुबकी रूकी और अपने ससुर पिता के साथ किए बर्ताव का उल्लेख रोते-रोते किया। अपने ससुर जी की इंसानियत भी बताई कि कभी अपने बेटे से भी नहीं बताया कि तेरी बहू मेरे साथ ऐसा बुरा बर्ताव कर रही है। बेटे के पूछने पर यही कहता था कि बेटा किसी प्रकार की सेवा में कमी नहीं है। बड़े अच्छे घर की बेटी है, समझदार है। हमारा सौभाग्य है कि यह अपने घर आ गई। हमारा तो इस बेटी ने घर बसा दिया है। मैं पापिन ये शब्द सुनकर भी नरम नहीं पड़ी क्योंकि मेरी आत्मा पर पाप कर्मों की परत चढ़ चुकी थी जो दो-तीन बार सत्संग सुनने के पश्चात् पाप की परत उतरी है। आत्मा में अच्छे संस्कार उठने लगे हैं। तीन दिन सत्संग सुनकर भक्त रामभक्त, पोता-पोती तथा पुत्रवधु के साथ घर पर आ गया। बच्चों ने भी वहाँ छोटे बच्चों को खाना खिलाने, पानी पिलाने की सेवा करते अन्य पुराने सत्संगी बच्चों को देखा तो वे भी सेवा करने लगे। घर पर आकर अपने दादा जी के लिए पानी की बाल्टी भरकर दोनों भाई-बहन लटका लाए और बोले, दादा जी! स्नान कर लो। रामभक्त जी ने कहा कि बच्चो! तुम्हारे पेट में दर्द हो जाएगा। इतना भार मत उठाओ। मैं अपने आप ले आऊँगा। बच्चे बोले कि दादा जी! सत्संग में गुरू जी ने बताया था कि सेवा करने से लाभ ही लाभ मिलता है, कोई कष्ट नहीं होता। हम रोटी खाऐंगे तो हमारा पेट भरेगा। हम सेवा करेंगे तो हमें पुण्य मिलेगा। यदि रोग भी हो तो भक्ति और सेवा से समाप्त हो जाता है। वहाँ आश्रम में अनेकों माई-भक्त बता रहे थे कि हम बीमार रहते थे। नाम लेने के पश्चात् जैसी सेवा कर सके, करने लगे। हम स्वस्थ हो गए। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था। देखो! हमारी दवाईयों की पर्चियाँ, चार वर्ष से उपचार चल रहा था। अब कोई दवाई नहीं खाते। (ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 161 मंत्र 2 में भी यही प्रमाण है कि यदि रोगी मत्यु के निकट पहुँच गया है यानि उसको असाध्य रोग भी हो गया हो। यदि वह भक्ति पर लग जाए तो परमात्मा उसको मत्यु के मुख से निकालकर ले आए। उसे स्वस्थ करके शत प्रतिशत यानि पूरी आयु जीवन दे देता है। -लेखक)

इतनी देर में पुत्रवधु आई और कहा, पिता जी! स्नान कर लो। धोती यहीं छोड़ देना। मैं आप साफ कर दूंगी। रामभक्त जी ने कहा कि बेटी! आपको घर का बहुत कार्य करना होता है, खाना बनाना, पानी लाना, पशु संभालना है। मैं आप

धो लूंगा। मेरी टाँग भी अब ठीक हो गई है। बस थोड़ा-सा लंग रहता है। रामभक्त स्नान करके धोती बदलकर धोती धोने लगा। उसी समय बच्चों ने आकर धोती छीन ली और लेकर अंदर भाग गए और अपनी माता जी को दे दी। फिर कुर्ता भी ले गए। दूसरा कुर्ता लाकर दे दिया। लड़का खेत से पशुओं का चारा लेकर आया और पहले की तरह पिता को देखा और बिना बोले आगे घर में चला गया। उसने देखा कि पत्नी निर्मला हलवा बना रही थी। उसने सोचा कोई त्यौहार होगा। फिर सब्जी-रोटी बनाई। सर्वप्रथम गुरू भगवान को दो कटोरियों में भोग लगाया तथा फिर एक थाल में रोटी, कटोरियों में हलवा तथा सब्जी डालकर अपने ससुर जी के पास लेकर गई और बोली, पिता जी! भोजन खा लो। भूख लगी होगी, दूर से आए हैं। रामभक्त बोला, बेटी! मेरे को यह हजम नहीं होता। सूखी रोटियाँ ला दे, मैं बीमार हो जाऊँगा। रामभक्त जी ने सोचा था कि भावना में बहकर बेटी आज तो सब सेवा कर देगी, परंतु लड़का इसको धमकाएगा क्योंकि उसको सत्संग का ज्ञान नहीं है। कहीं घर में झगड़ा ना हो जाए। इतने में लड़का भी आ गया। अपनी पत्नी को बोला, पिता जी ठीक कह रहे हैं, ले चल अंदर। पिता का कमरा गली पर था। बच्चों का रहने का अंदर को था। पत्नी बोली, चुप रह, मैंने बहुत पाप इकट्ठे कर लिये। अब पिता जी की सेवा मैं स्वयं करूंगी। लड़का चुप हो गया। रामभक्त ने दोनों बच्चों को थोड़ा-थोड़ा हलवा दिया। पुत्रवधु को देने लगा तो बोली कि आप क्या खाओगे? घर पर और भी बहुत सारा हलवा प्रसाद बचा है। पिता जी आप खाओ। नहीं खाओगे तो मेरी आत्मा रोएगी। भक्त रामभक्त जी ने गुरूदेव भगवान का स्मरण किया और भोजन खाया। प्रतिदिन पुत्रवधु स्वयं नरम-नरम रोटियाँ गर्म-गर्म लाकर अपने हाथों खिलाए। प्रतिदिन वस्त्र साफ करे और कहे, पिता जी! भजन कर लो।

एक दिन रामभक्त जी की बूआ का लड़का भक्त रामनिवास आया। रामभक्त जी ने उसको सीने से लगा लिया और बोला रै भाई! हमारा घर तो तेरी कृपा से स्वर्ग बन गया। भक्त रामनिवास बोला कि मामा के बेटे रामनिवास से कुछ ना हुआ, गुरूदेव जी की शब्द-शक्ति का करिश्मा है। आप और मैं तो पहले इकट्ठे न बत्ती-डण्डा खेला करते। मेरे करने से होता तो पहले ही हो जाता। गुरू जी कह रहे थे कि रामभक्त पिछले जन्मों में भक्त था। इससे घर के मोह के कारण मर्यादा में चूक बनी थी। उसके कारण इतना कष्ट उठाया है। अब यह महादुःखी हो चुका था। तब तेरे साथ आया है। नहीं तो आप कितनी बार रामभक्त से पहले कह चुके थे कि सत्संग में चल, परंतु मोह-माया में अन्धा हो चुका था। यह कष्ट और पुत्र-पुत्रवधु का व्यवहार इसके लिए वरदान बन गया है।

कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, सुख के माथे पत्थर पड़ो, जो नाम हृदय से जाय।
बलिहारी वा दुःख के, जो पल–पल राम रटाय।।

भावार्थ :- हे परमात्मा! इतना सुख भी ना देना जिससे तेरी भूल पड़े। जिस

दु:ख से परमात्मा की पल-पल याद बनी रहे, वैसे दु:ख सदा देते रहना। मैं बलिहारी जाऊँ उस दु:ख को जिसके कारण परमात्मा की शरण मिली।

भक्त रामभक्त जी ने भक्त रामनिवास जी से कहा कि अब के सत्संग में बेटे प्रेम सिंह को ले जाना। इसका उद्धार हो जाएगा। अगले सत्संग में जो एक महीने पश्चात् होना था। भक्त रामनिवास जी आए और प्रेम सिंह को अपने घर ले जाने के बहाने ले गए। घर से सत्संग में ले गए। तीन दिन तक आश्रम में रहे, सत्संग सुना। अन्य पुराने भक्तों से उनकी आप-बीती सुनी तो सत्संग के रंग में रंग गया। भक्त रामभक्त जी का परिवार एकदम बदल गया। भक्ति-सेवा करके कल्याण को प्राप्त हुआ।

''सत्संग से घर की कलह समाप्त होती है''

एक माई अपनी पुत्रवधु पर बात-बात पर क्रोध करती थी। छोटी-छोटी गलतियों को बढ़ा-चढ़ाकर अपने पुत्र से कहती। पुत्र अपनी पत्नी को धमकाता। इस प्रकार घर नरक बना हुआ था। पुत्रवधु अपनी सासू-माँ से कभी-कभी कहती थी कि आप सत्संग जाया करो। अपनी पड़ोसन भी जाती है। सासू-माँ बोली कि सत्संग में तो आई-गई यानि बदचलन स्त्रियाँ जाती हैं जिनका संसार में सम्मान नहीं होता, जो अच्छे कुल की नहीं हैं। हम खानदानी हैं। हमारा क्या काम सत्संग में? ऐसे पुत्रवधु ने कई बार कोशिश की, परंतु माई मानने को तैयार नहीं होती। एक दिन गाँव की स्त्री किसी कार्यवश उनके घर आई तो सास अपनी पुत्रवधु को गालियाँ दे रही थी, धमका रही थी कि आने दे तेरे खसम को, आज तेरी खाल उतरवाऊँगी। बात क्या थी कि गिलास में चाय रखी थी जो सास के लिए डालकर पुत्रवधु बच्चे को लेने अंदर चली गई थी जो सोया था, जागने पर रो रहा था। उस बच्चे को उठाकर लाने में एक मिनट भी नहीं लगी थी कि इसी बीच में कुत्ता आया और चाय के गिलास में जीभ मारने लगा। गिलास गिर गया। चाय पृथ्वी पर बिखर गई। सासू-माँ आँगन में उस गिलास से मात्र बीस फुट की दूरी पर चारपाई पर बैठी थी। हट्टी-कट्टी थी। खेतों में सैर करके आती थी, परंतु काम के हाथ नहीं लगाती थी। इसी बात पर कलह कर रही थी। गाँव के दूसरे मोहल्ले से आई माई सत्संग में जाती थी। सब बात सुनकर उसने भतेरी (उस सास का नाम भतेरी था) से कहा कि आप सत्संग चला करो। उसका वही उत्तर था। उस सत्संग वाली भक्तमति ने बहुत देर सत्संग में सुनी बातें बताई, परंतु भतेरी मानने को तैयार नहीं थी। भतेरी की दूसरी बहन उसी मोहल्ले में विवाह रखी थी, जिस पान्ने की वह सत्संग वाली माई जानकी थी। भतेरी की बहन का नाम दयाकौर था। जानकी ने जाकर दयाकौर से बताया कि तेरी बहन भतेरी ने तो घर का नरक बना रखा है। बिना बात की लड़ाई करती है। मैं कल किसी कामवश गई थी। एक चाय का गिलास कुत्ते ने गिरा दिया। उसी का महाभारत बना रखा था। दयाकौर भी जानकी के कहने से सत्संग सुनने गई थी और दीक्षा ले ली थी। जानकी ने कहा कि उसको

जैसे-तैसे एक बार सत्संग में ले चल। जब तक संतों के विचार सुनने को नहीं मिलते तो व्यक्ति व्यर्थ की टैंशन (चिंता) स्वयं रखता है तथा घर के सदस्यों को भी चिंता में रखता है। दयाकौर अगले दिन अपनी बहन के घर गई। किसी बहाने भतेरी को अपने घर ले गई। वहाँ से कई अन्य औरतें सत्संग में जाने के लिए जानकी के घर के आगे खड़ी थी। वे दयाकौर को सत्संग में चलने के लिए कहने उसके घर गई। वहाँ उसकी बहन भतेरी को देखकर उसे भी कह-सुनकर साथ ले गई। भतेरी ने जीवन में प्रथम बार सत्संग सुना। आश्रम में कैसे स्त्री-पुरूष रहते हैं, सब आँखों देखा तो अच्छा लगा। जैसा अनाप-सनाप सुना करती थी, वैसा आश्रम में कहीं देखने को नहीं मिला। सत्संग में बताया गया कि कई व्यक्ति अपनी बहन, बेटियों-बहुओं तथा अन्य स्त्रियों को सत्संग नहीं भेजते और न स्वयं जाते हैं। वे कहते हैं कि हमारे सत्संग में जाने से घर की इज्जत का नाश हो जाएगा। हमारी बहू-बेटियाँ बदनाम हो जाएंगी। उनको विचार करना चाहिए कि सत्संग में न आने से परमात्मा के विधान का ज्ञान नहीं होता कि भक्ति न करने वाले स्त्री-पुरूष अगले जीवन में महान कष्ट भोगते हैं।

❖ सूक्ष्मवेद में बताया है कि जो मनुष्य शरीर प्राप्त करके भक्ति नहीं करते, उनको क्या हानि होती है?

कबीर, हरि के नाम बिना, नारि कुतिया होय। गली–गली भौकत फिरै, टूक ना डालै कोय।।

सन्त गरीब दास जी की वाणी से :-

बीबी पड़दै रहे थी, ड्योडी लगती बाहर। अब गात उघाड़ै फिरती हैं, बन कुतिया बाजार।
वे पड़दे की सुन्दरी, सुनों संदेशा मोर। गात उघाड़ै फिरती है करें सरायों शोर।।
नक बेसर नक पर बनि, पहरें थी हार हमेल। सुन्दरी से कुतिया बनी, सुन साहेब (प्रभु) के खेल।।

भावार्थ :- मनुष्य जीवन प्राप्त प्राणी यदि भक्ति नहीं करता है तो वह मंत्यु के उपरान्त पशु-पक्षियों आदि-आदि की योनियाँ प्राप्त करता है, परमात्मा के नाम जाप बिना स्त्री अगले जन्म में कुतिया का जीवन प्राप्त करती है। फिर निःवस्त्र होकर नंगे शरीर गलियों में भटकती रहती है, भूख से बेहाल होती है, उसको कोई रोटी का टुकड़ा भी नहीं डालता। जिस समय वह आत्मा स्त्री रूप में किसी राजा, राणा तथा उच्च अधिकारी की बीवी (पत्नी) थी। वे उसके पूर्व जन्मों के पुण्यों का फल था जो कभी किसी जन्म में भक्ति-धर्म आदि किया था। वह सर्व भक्ति तथा पुण्य स्त्री रूप में प्राप्त कर लिए, वह आत्मा उच्च घरानों की बहू-बेटियाँ थीं। तब पर्दों में रहती थी, काजु-किशमिश डालकर हलवा तथा खीर खाती थी, उनका झूठा छोड़ा हुआ नौकरानियाँ खाती थी। उनको सत्संग में नहीं जाने दिया जाता था क्योंकि वे उच्च घरानों की बहुऐं तथा बेटियाँ थी, घर से बाहर जाने से बेइज्जती मानती थी। बड़े घरों की इज्जत इसी में मानी जाती थी कि बहू-बेटियाँ का पर्दों में घर में रहना उचित है। इन कारणों से वह पुण्यात्मा सत्संग विचार न सुनने के कारण भक्ति से वंचित रह जाती थी। उस मानव शरीर में वह स्त्री गले मे नौ-नौ लाख रूपये के हमेल-हार पहनती थी, नाक में सोने की नाथ पहनती थी, उसी

हार-सिंगार में अपना जीवन धन्य मानती थी। भक्ति न करने से वे अब कुतिया का जीवन प्राप्त करके नंगे शरीर गलियों में एक-एक टुकड़े के लिए तरस रही होती हैं, शहर में पहले सराय (धर्मशाला) होती थी। यात्री रात्रि में उनमें रूकते थे, सुबह भोजन खाकर प्रस्थान करते थे। वह पर्दे में रहने वाली सुन्दर स्त्री कुतिया बनकर धर्मशाला में रूके यात्री का डाला टुकड़ा खाने के लिए सराय (धर्मशाला) में भौंकती है। रोटी का टुकड़ा धरती पर डाला जाता है। उसके साथ कुछ रेत-मिट्टी भी चिपक जाती है, वह सुन्दरी जो काजु-किशमिश युक्त हलवा-खीर खाती थी, भक्ति नही करती थी, उस रेत-मिट्टी युक्त टुकड़े को खा रही है। यदि मनुष्य शरीर रहते-रहते पूरे सन्त से नाम लेकर भक्ति कर लेती तो ये दिन नहीं देखने पड़ते।

''पुहलो बाई की नसीहत''

एक राजा ने पुहलो बाई के ज्ञान-विचार सुने, बहुत प्रभावित हुआ। उस राजा की तीन रानियाँ थी। राजा ने अपनी रानियों को पुहलो बाई के विषय में बताया। राजा ने कई बार पुहलो बाई भक्तिन की अपनी रानियों के सामने प्रशंसा की। अपने पति के मुख से अन्य स्त्री की प्रशंसा सुनकर रानियों को अच्छा नहीं लगा। परंतु कुछ बोल नहीं सकी। उन्होंने भक्तमति पुहलो बाई को देखने की इच्छा व्यक्त की। राजा ने पुहलो बाई को अपने घर पर सत्संग करने के लिए कहा तो पुहलो बाई ने सत्संग की तिथि तथा समय राजा को बता दिया। सत्संग के दिन रानियों ने अति सुंदर तथा कीमती वस्त्र पहने तथा सब आभूषण पहने। अपनी सुंदरता दिखाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी। रानियों ने सोचा था कि पुहलो बहुत सुंदर होगी। भक्तमति पुहलो राजा के घर आई। उसने खद्दर का मैला-सा वस्त्र धारण कर रखा था। हाथ में माला थी, चेहरे का रंग भी साफ नहीं था। भक्तमति पुहलो को देखकर तीनों रानियाँ खिल-खिलाकर हँसने लगी और बोली कि यह है वह पुहलो, हमने तो सोचा था कि बहुत सुंदर होगी। उनकी बात सुनकर भक्तमति पुहलो बाई ने कहा किः-

वस्त्र–आभूषण तन की शोभा, यह तन काच्चो भाण्डो।
भक्ति बिना बनोगी कुतिया, राम भजो न रांडो।।

भावार्थ :- सुंदर वस्त्र तथा आभूषण शरीर की शोभा बढ़ाते हैं। यह शरीर नाशवान है जैसे कच्चा घड़ा होता है। यह शरीर क्षण भंगुर है। न जाने किस कारण से, किस आयु में और कब कष्ट हो जाए। यदि भक्ति नहीं की तो अगले जन्म में कुतिया का जन्म पाओगी। फिर निःवस्त्र भटकती फिरोगी। इसलिए कहा है 'राण्डो' अर्थात् स्त्रियों भक्ति करो। 'राण्ड' शब्द विधवा के लिए प्रयोग होता है। परंतु सामान्य रीति में स्त्रियाँ अपनी प्रिय सखियों को प्यार से सम्बोधित करने में (प्यारी गाली के साथ) प्रयोग किया करती। अब शिक्षित होने पर यह शब्द प्रयोग नहीं होता। भक्तमति पुहलो बाई ने सत्संग सुनाया। कबीर परमेश्वर जी की साखियाँ सुनाई :-

कबीर, हरि के नाम बिना, नारी कुतिया होय।

गली–गली भौंकत फिरे, टूक ना डाले कोय।।
कबीर, राम रटत कोढ़ी भलो, चू–चू पड़े जो चाम।
सुंदर देहि किस काम की, जा मुख नाहीं नाम।।
कबीर, नहीं भरोसा देहि का, विनश जाए छिन माहीं।
श्वांस–उश्वांस में नाम जपो, और यत्न कुछ नाहीं।।
कबीर, श्वांस–उश्वांस में नाम जपो, व्यर्था श्वांस मत खोओ।
ना जाने इस श्वांस का, आवन हो के ना होय।।
गरीब, सर्व सोने की लंका थी, रावण से रणधीरम्।
एक पलक में राज्य गया, जम के पड़े जंजीरम्।।
गरीब, मर्द–गर्द में मिल गए, रावण से रणधीरम्।
कंस, केसि, चाणूर से, हिरणाकुश बलबीरम्।।
गरीब, तेरी क्या बुनियाद है, जीव जन्म धरि लेत।
दास गरीब हरि नाम बिन, खाली रह जा खेत।।

❖ शब्दार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने अध्यात्म का विधान बताया है। कहा है कि जो स्त्री भक्ति नहीं करती, वह अगले जन्म में कुतिया का जीवन प्राप्त करके गली-गली भौंकती फिरती है। कोई उसको भोजन का ग्रास भी नहीं डालता। मानव जीवन में सब भोजन समय पर मिल रहा था। भक्ति न करने से यह दशा होगी।

❖ परमात्मा की भक्ति कुष्ट रोगी (जिसके शरीर की खाल भी कट-कटकर गिर रही है, उससे रक्त निकलकर गिर रहा है) भी करता है तो बहुत अच्छा है। भक्ति करने से उसका कुष्ट रोग भी ठीक हो जाएगा। भविष्य भी उज्जवल होगा। जो भक्ति नहीं करता, वह चाहे सुंदर शरीर वाला भी क्यों न हो, उसका सुंदर स्वस्थ शरीर किसी काम का नहीं है।

❖ इस मानव शरीर का कोई विश्वास नहीं है कि यह कब तथा किस कारण से नष्ट हो जाए। इसे बचाकर नहीं रखा जा सकता। इसका एक उपाय है, भक्ति करो। इतना स्मरण करो कि एक श्वांस भी नाम के जाप बिना खाली ना जाए।

❖ श्वांस छोड़ते समय तथा लेते समय प्रत्येक श्वांस में नाम जपो। श्वांस को नाम के जाप बिना व्यर्थ न खोओ। इस श्वांस को ज्ञान नहीं है, यह अंदर गया है तो बाहर आएगा कि नहीं आएगा। इसलिए गफलत न करके भक्ति में लग जाओ।

❖ यदि आपके पास धन है और सुविधाऐं भी हैं। इनके कारण भक्ति करना न भूलना। श्रीलंका के राजा रावण के पास अत्यधिक धन था। उसने स्वर्ण के मकान बना रखे थे और स्वयं भी योद्धा था। परंतु श्री रामचन्द्र के साथ युद्ध हुआ। मारा भी गया और स्वर्ण भी लूट लिया गया। राज्य भी गया। यह सब एक पलक में हो गया यानि राम जी के तीर से मारा गया। कुछ ही समय में सब कुछ नष्ट हो गया तथा यम के दूत यानि मत्यु देवता के नौकर उस रावण को जंजीरों में बाँधकर ले गए। नरक में डाला गया।

❖ रावण जैसे मर्दाने (शूरवीर) मिट्टी में मिल गए तथा मथुरा का राजा कंश,

उसका प्रसिद्ध पहलवान चाणूर, कंस का नौकर केशी रूपधारी राक्षस तथा हिरण्यकशिपु जैसे बलवान भी भक्ति बिना जीवन व्यर्थ कर गए। हे सामान्य प्राणी! तेरी क्या बुनियाद है यानि तू किस आधार से बचेगा? तू कर्मों के अनुसार भिन्न-भिन्न जीवों के शरीर धारण कर लेता है। संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी के बताए ज्ञान से कहा है कि भक्ति न करने से तेरे को ऐसी हानि होगी जैसे किसान खेत में बीज न बोने से भूखा मरता है। उसे कोई लाभ नहीं होता।

भक्तिन पुहलो ने इस संसार की वास्तविकता बताई तथा भक्ति बिना होने वाले कष्ट बताए। छोटे-से राज्य के टुकड़े को प्राप्त करके आप इतना गर्व कर रहे हो, यह व्यर्थ है। लंका का राजा रावण ने सोने (Gold) के मकान बना रखे थे। सत्य भक्ति न करने से राज्य भी गया, स्वर्ण भी यहीं रह गया, नरक का भागी बना। राजा-रानियों ने उपदेश लेकर भक्ति की तथा जीवन धन्य बनाया।

कबीर, हरि के नाम बिन, राजा रषभ होय।
मिट्टी लदे कुम्हार के, घास न नीरै कोए।।

भगवान की भक्ति न करने से राजा गधे का शरीर प्राप्त करता है। कुम्हार के घर पर मिट्टी ढ़ोता है, घास स्वयं जंगल में खाकर आता है।

फिर पीछे तू पशुआ किजै, दीजै बैल बनाय।
चार पहर जंगल में डोले, तो नहीं उदर भराय।।
सिर पर सींग दिए मन बौरे, दूम से मच्छर उड़ाय।
कांधै जूआ जोतै कूआ, कोंदों का भुस खाय।।

भावार्थ :- गधे का शरीर पूरा करके वह प्राणी बैल की योनि प्राप्त करता है। मानव शरीर में जीव को कितनी सुविधाऐं प्राप्त थी। भूख लगते ही खाना खाओ, दूध पीओ, चाय पीओ, प्यास लगे तो पानी पी लो। भक्ति न करने से वही प्राणी बैल बनकर सुबह से शाम तक चार पहर अर्थात् 12 घण्टे तक जंगल में फिरता है, हल में जोता जाता है। दिन में केवल दो बार आहार बैल को खिलाया जाता है दोपहर 12 बजे तथा रात्रि में। परंतु बैल को बीच में भूख लगी है और चारों ओर चारा भी पड़ा होता है, लेकिन खा नहीं सकता। हाली उसको घास नहीं खाने देता, पानी भी समय पर दिन में दो या तीन बार पिलाया जाता है। सिर पर सींग तथा एक दुम (पूँछ) लगे होंगे। जब मानव शरीर में था, तब वह जीव कूलर, पंखे तथा ए.सी. कमरों में रहता था। अब एक दुम है, इसको चाहे कूलर की जगह, चाहे पंखे की जगह प्रयोग करो, उसी से मच्छर उड़ाता है।

❖ सत्संग में यह भी बताया गया कि घर में कलह का कारण परमात्मा के विधान को न समझकर संसार के भाव में चलना है। घर का कोई सदस्य घर में हानि नहीं करना चाहता। किसी कारण से हानि हो जाती है तो उसको लेकर कलह नहीं करनी चाहिए। जो हानि होनी थी, वह तो हो चुकी है, वह तो ठीक होनी नहीं। व्यर्थ की कलह करना समझदारी नहीं है। जिससे गलती से कोई हानि हो जाती है तो उसे कहना चाहिए, हे बेटा-बेटी, माता-पिता या सास-बहू! यह जो हो

गया, यह अपने भाग्य में नहीं था। आपने जान-बूझकर तो किया नहीं है। इस बात से घर में शांति कायम रहती है। कलह में काल निवास करता है। भूत-प्रेतों का उस घर में डेरा होता है। जो कलह नहीं करते, वे सुख से बसते हैं। जिस घर में परमात्मा की भक्ति (आरती-स्तुति, ज्योति यज्ञ) होती है, उस घर में देवताओं का निवास होता है।

सत्संग सुनकर सब अपने-अपने घर चली गई। सत्संग दिन के 12 बजे से 02 बजे तक हुआ था। पुत्रवधु को पता नहीं था कि सासू-माँ सत्संग में गई थी। अगले दिन सुबह भैंस का दूध निकालकर पुत्रवधु उस दूध की भरी बाल्टी को छत में लगे कुण्डे वाले सरिये में प्रतिदिन की तरह टांगने लगी। उसे लगा कि बाल्टी टंग गई, परंतु सरिये के उल्टी ओर बाल्टी का कड़ा लगा था। पुत्रवधु ने सोचा कि ठीक लगा है और बाल्टी छोड़ दी। बाल्टी पथ्वी पर गिर गई। दूध बिखर गया। आवाज सुनकर भतेरी आई और पुत्रवधु दूध की बजाय सासू-माँ की ओर मायूसी से देख रही थी। बोलना उचित नहीं समझा क्योंकि पुत्रवधु को पता था कि सासू-माँ किसी भी सफाई के वचन नहीं सुनती थी। सोच रही थी कि आज का सारा दिन कलह में जाएगा। शाम को पति आएगा, उससे भी पिटाई करवाएगी। हे परमात्मा! यह कौन बनी? ऐसी गलती तो कभी नहीं हुई थी। हे सतगुरू! कुछ तो दया करो। मैं तो आपकी भक्ति भी भूलने को हो रही हूँ। मुझे तो सारा दिन सासू-माँ के श्लोक याद रहते हैं। भतेरी बोली, बेटी! जो होना था, वह हो गया। आज हमारे भाग्य में दूध है नहीं। चिंता ना कर। इस दूध को ऊपर से हाथों से बाल्टी में डालकर भैंस को पिला दे। यह कहकर जो नाम दीक्षा ली थी, उसका जाप करने लग गई। पुत्रवधु को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। सोच रही थी कि माता जी आज पता नहीं कौन-सा स्टेशन (रेडियो आकाशवाणी) पकड़ गई। ये शीतल वचन भतेरी की बोरी (बारदाना) में नहीं थे। इसमें खल भरी थी। आसपास से निकलती थी, तब भी बड़बड़ की झल निकलती थी। पुत्रवधु का नाम निशा था। वह सोच रही थी कि :- निशा आज निशा (रात्रि) में तेरी बुरी होगी दशा।

निशा की सोच थी कि पति को बताएगी। वह माता की बात सुनकर मेरी कुछ नहीं सुनता। अच्छी-बुरी कहेगा। सारा दिन और रात्रि रोने में जाएगी। निशा ने दूध बाल्टी में डालकर भैंस को पिला दिया। बाल्टी धोकर रख दी। भतेरी आई और बोली कि बेटी! रोटी खा ले। चिंता मत कर। बेटी! मैं कल मेरी बहन दयाकौर के साथ दिन में सत्संग में गई थी। मेरी तो आँखें खुल गई। मैं तो बहुत कलहारी बनी हुई थी। बेटी हो सके तो क्षमा कर देना। पीछे हुआ सो हुआ, आगे से अपनी बेटी को पलकों पर रखूँगी। मेरी असली बेटी तो तू है। जन्मी बेटी तो अगलों की थी, वह चली गई। अपना दुःख-सुख साझा है। मेरी तो एक दिन के सत्संग ने ही आँखें खोल दी। बेटी! अगले रविवार को आप भी चलना, मैं भी चलूँगी। धीरे-धीरे बेटे को भी ले चलेंगे। निशा ने अपने गुरू जी का फोटो (स्वरूप) कपड़ों में छिपा रखा था। फोटो निकालकर चरणों में शीश रखकर कहा कि हे गुरूवर! आज आपने

अपनी बेटी की पुकार सुन ली। घर स्वर्ग बना दिया। शाम को चत्तर सिंह आया तो माता ने दूध गिरने का जिक्र भी नहीं किया। कुछ दिन बाद चत्तर सिंह को भी नाम दिला दिया। कुछ समय पश्चात् निशा के गुरू जी आ गए। निशा ने बताया कि गुरू जी! मेरी सासू-माँ बहुत अच्छी हैं। इसने भी गुरू का नाम ले लिया है। भतेरी ने कहा, महाराज जी! निशा ने कभी नहीं बताया कि इसने दीक्षा ले रखी है। यह मेरी कलह से डरती होगी। अब बताया है जब मैंने नाम ले लिया। अच्छा किया इसने, यदि पहले बता देती तो मैं और अधिक दुःखी करती और पाप की भागी बनती। निशा के गुरू जी ने कहा, माई भतेरी! आप तो आसमान से गिरी और खजूर में अटकी हो क्योंकि आपकी दीक्षा शास्त्रानुकूल नहीं है। सत्य साधना बिना मोक्ष नहीं हो सकता। जैसे रोग की सही औषधि खाने से ही रोग से मोक्ष मिलता है। इसी प्रकार सत्य साधना करने से जन्म-मरण के रोग से मुक्ति मिलती है। निशा ने सोचा कि सासू-माँ नाराज ना हो जाए। इसलिए बीच में ही बोल उठी कि गुरू जी! सुना है आपने नई पुस्तक लिखी है, वह संगत ने छपवाई है। क्या आपके पास है? गुरू जी बोले, हे बेटी! आपको देने के लिए आया हूँ। यह कहकर गुरू जी दूसरे कक्ष में गए जिसमें ठहरे थे। उसमें थैला रखा था। निशा भी साथ-साथ गई और बोली, गुरूदेव! भिरड़ के छत्ते को मत छेड़ो, मुश्किल से शांत हुआ है। गुरू जी बोले, हे बेटी! अब तेरी सास जी की पूरी रूचि भक्ति में है, अब यह मानेगी। गुरू जी तीन दिन रूके, तत्वज्ञान समझाया। भतेरी ने भी गुरू बदल लिया और अपना कल्याण करवाया।

सत्संग से घर स्वर्ग बन गया। चारों ओर शांति हो गई। जहाँ गाली-गलौच के सारा दिन गोले छूटते थे, अब उस घर में परमात्मा के ज्ञान की गंगा बहने लगी।

भक्तमति निशा के गुरू जी परमेश्वर कबीर जी थे जो अन्य वेश में सत्य भक्ति प्रचार करने के लिए घूमते-फिरते थे। उन्होंने बताया कि किस प्रभु की भक्ति करनी चाहिए? पढ़ें इसी पुस्तक के पष्ठ 226 पर।

निष्कर्ष :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि :-

मन नेकी कर ले, दो दिन का मेहमान।।टेक।।
मात–पिता तेरा कुटम कबीला, कोए दिन का रल मिल का मेला।
अन्त समय उठ चले अकेला, तज माया मण्डान।।1
कहाँ से आया, कहाँ जाएगा, तन छूटै तब कहाँ समाएगा।
आखिर तुझको कौन कहेगा, गुरू बिन आत्म ज्ञान।।2
कौन तुम्हारा सच्चा सांई, झूठी है ये सकल सगाई।
चलने से पहले सोच रे भाई, कहाँ करेगा विश्राम।।3
रहट माल पनघट ज्यों भरिता, आवत जात भरै करै रीता।
जुगन–जुगन तू मरता जीता, करवा ले रे कल्याण।।4
लख–चौरासी की सह त्रासा, ऊँच–नीच घर लेता बासा।
कह कबीर सब मिटाऊँ रासा, कर मेरी पहचान।।5

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने अपने मन को सम्बोधित करके हम प्राणियों को सतर्क किया है कि इस संसार में दो दिन का यानि थोड़े समय का मेहमान है। इस थोड़े-से मानव जीवन में आत्म ज्ञान के अभाव से अनेकों पाप इकट्ठे करके अनमोल मानव जीवन नष्ट कर जाता है। धन कमाने की विधि तो संसार के व्यक्ति बता सकते हैं, परंतु गुरूदेव जी के बिना आत्म ज्ञान यानि जीव कहाँ से आया? मनुष्य जीव का मूल उद्देश्य क्या है? सतगुरू धारण किए बिना यानि दीक्षा लिए बिना जीव का मानव जन्म नष्ट हो जाता है। यह बात गुरू जी के बिना कोई नहीं बताएगा। चाहे पृथ्वी का राजा भी बन जा, परंतु भविष्य में पशु जन्म मिलेगा। जन्म-मरण का चक्र गुरू जी के ज्ञान व दीक्षा मंत्र (नाम) बिना समाप्त नहीं हो सकता। जब तक जन्म-मरण का चक्र समाप्त नहीं होता तो बताया है कि :-

यह जीवन हरहट का कुँआ लोई। या गल बन्धा है सब कोई।।
कीड़ी–कुंजर और अवतारा। हरहट डोर बन्धे कई बारा।।

भावार्थ :- जैसे रहट के कूँए में लोहे की चक्री लगी होती है। उसके ऊपर बाल्टियों की चैन वैल्ड की जाती है। उसको रहट कहा जाता था। पहले बैल या ऊँट से चलाते थे, जैसे कोल्हू बैल-ऊँट से चलाते हैं। (पहले अधिक चलाते थे) रहट की बाल्टियाँ नीचे कूँए से पानी भरकर लाती है। ऊपर खाली हो जाती है। यह चक्र सदा चलता रहता है। इसी प्रकार पृथ्वी रूपी कूँए से पाप तथा पुण्यों की बाल्टी भरी ऊपर स्वर्ग-नरक में खाली की। इस प्रकार जन्म-मरण के चक्र में जीव सदा रहता है। ऊपर के शब्द में यही समझाया है कि संसार में परिवार-धन सब त्यागकर एक दिन अकेला चला जाएगा। फिर कहीं अन्य स्थान पर जन्म लेकर यही क्रिया करके चला जाएगा। यदि आप घर से किसी अन्य शहर में जाते हैं तो जाने से पहले निश्चित करते हो कि वहाँ जाऐंगे। उसके बाद कहाँ विश्राम करेंगे। परंतु संसार छोड़कर जाते हो तो कभी विचार नहीं करते कि कहाँ विश्राम करोगे। हे जीव! चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में प्रताड़ना सहन करता है। मरता-जीता (नये प्राणी का जीवन प्राप्त करता) है। कभी राजा बनकर उच्च बन जाता है, कभी कंगाल बनकर नीच कहलाता है। परमात्मा कबीर जी समझा रहे हैं कि अवतार गण (राम, कृष्ण आदि-आदि) भी सत्य साधना न मिलने के कारण जन्म-मरण के चक्र में पड़े हैं। सत्य साधना मेरे पास है। हे प्राणी! तू मेरे को पहचान, मैं समर्थ परमात्मा हूँ। मैं तेरा जन्म-मरण का सर्व झंझट समाप्त कर दूँगा।
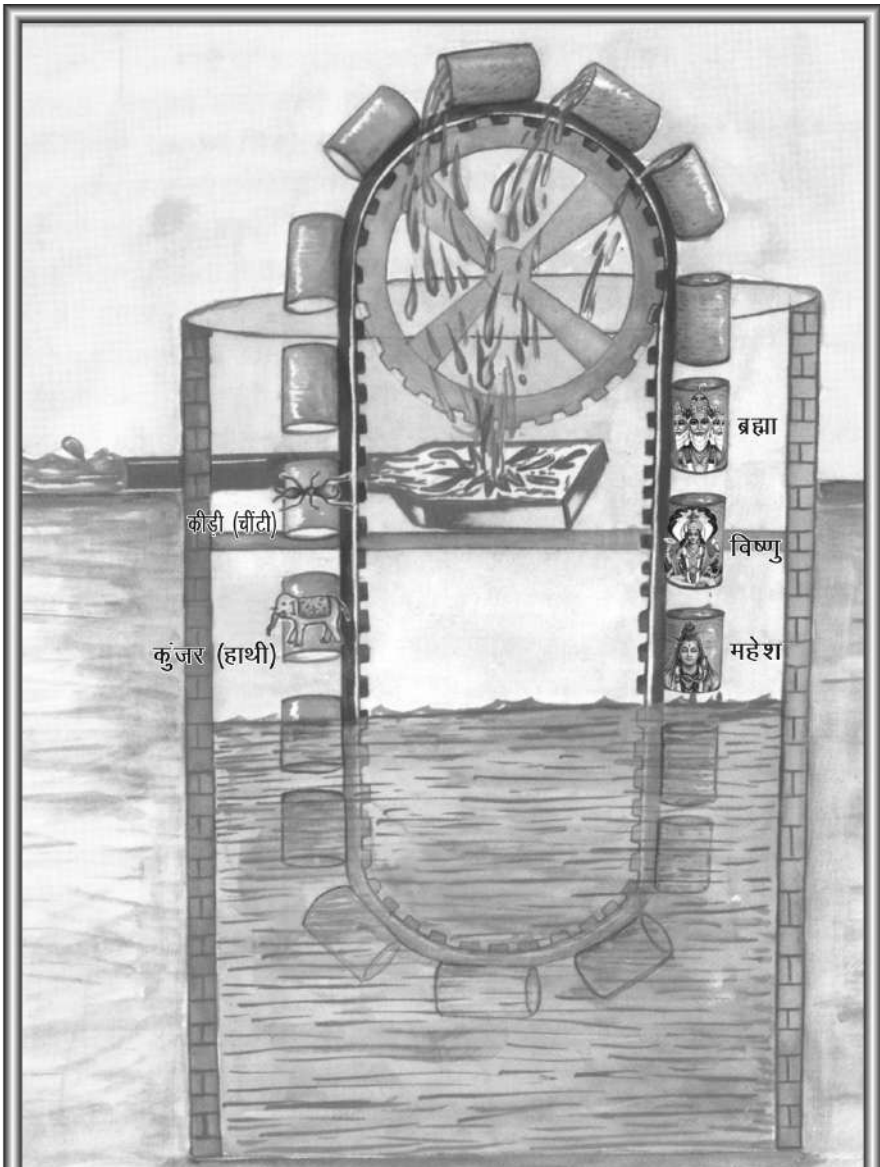
योह हरहट का कुआँ लोई, या गल बंध्या है सब कोई।
कीड़ी कुंजर और अवतारा, हरहट डोरी बंधे कई बारा।।

काल लोक में जन्म–मरण रूपी हरहट (चक्र)

(शब्द नं. 2)

नाम सुमरले सुकर्म करले, कौन जाने कल की।। खबर नहीं पल की (टेक)
कोड़ि–2 माया जोड़ी बात करे छल की,
पाप पुण्य की बांधी पोटरिया, कैसे होवे हल्की।।1।।
मात–पिता परिवार भाई बन्धु, त्रीरिया मतलब की,
चलती बरियाँ कोई ना साथी, या माटी जंगल की।।2।।
तारों बीच चंद्रमा ज्यों झलकै, तेरी महिमा झला झल्की,
बनै कुकरा, विष्टा खावै, अब बात करै बल की।।3।।
ये संसार रैन का सपना, ओस बूंद जल की,
सतनाम बिना सबै साधना गारा दलदल की।।4।।
अन्त समय जब चलै अकेला, आँसू नैन ढलकी,
कह कबीर गह शरण मेरी हो रक्षा जल थल की।।5।।

भावार्थ :- परमात्मा कबीर जी ने बताया है कि हे भोले मानव (स्त्री/पुरूष)! परमात्मा का नाम जाप कर, शुभ कर्म कर। पता नहीं कल यानि भविष्य में क्या दुर्घटना हो जाएगी। एक पल का भी ज्ञान नहीं है।

धन का संग्रह छल-कपट किए बिना होगा ही नहीं जिसमें से कुछ धर्म पर भी खर्च कर देता है। इस प्रकार पाप तथा पुण्य की दो गठरी बाँध ली। ये कैसे हल्की होंगी। पाप नरक में पुण्य स्वर्ग में भोगता है। माता-पिता, भाई-पत्नी आदि-आदि परिजन अपने-अपने मतलब की बातें सोचते हैं। पूर्व जन्मों के कारण परिवार रूप में जुड़े हैं। जिस-जिसका समय पूरा हो जाएगा, संस्कार समाप्त होता जाएगा, वह तुरंत परिवार छोड़कर चला जाएगा। जैसे रेल में डिब्बा भरा होता है, जिस-जिसने जहाँ-जहाँ की टिकट ले रखी है, वहाँ-वहाँ उतरकर चले जाते हैं। यह परिवार रेल के डिब्बे की तरह है। मृत्यु के उपरांत यह शरीर मिट्टी हो जाता है। उस समय तेरा कोई परिवार का सदस्य साथी नहीं होगा।

एक व्यक्ति अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता था। वृद्ध हुआ तो उसकी मृत्यु निकट थी। उसने अपनी पत्नी से कहा कि आप मेरे साथ चलोगी। वह तुरंत मना कर गई कि ‘‘ना मैं ना मरूं तेरे साथ। तेरे तै तीन साल छोटी सूं।’’ वृद्ध को उस दिन सदमा हो गया। उसने उससे बात करना भी बंद कर दिया। निकट आए तो मुँह मोड़ ले। बोले कुछ नहीं। 60 वर्ष के साथ में उस वृद्ध को पहली बार अहसास हुआ कि कोई किसी का नहीं है। यदि उस वृद्धा को समझ होती और वास्तविक प्रेम होता तो कहती कि मुझे भी साथ ले चलना। वृद्ध ने क्या साथ ले जाना था। उसका मन खुश हो जाता। आसानी से मर जाता। समय से पूर्व वृद्धा को कौन मारता? इससे सिद्ध है कि वास्तविक प्रेम की बातें दूर की कौड़ी है। सब स्वार्थ के कारण जुड़े हैं। हे मानव! पूर्व जन्म के जप-तप तथा धर्म संस्कार से वर्तमान में मंत्री, प्रधानमंत्री या उच्च अधिकारी बनकर ऐसे सुशोभित हो रहा है जैसे रात्रि में तारों के मध्य में चाँद की शोभा होती है। यदि सत्संग विचार नहीं सुने तो आत्म ज्ञान के बिना परमात्मा की भक्ति न करके भविष्य के जन्म में कुत्ता बनकर बिष्टा

(गोबर-टट्टी) खाएगा। अब तू अपने बल यानि शारीरिक शक्ति, पद की ताकत की बातें करता है। फिर पशु बनकर महान कष्ट उठाएगा।

नर से फिर पशुवा कीजै, गधा–बैल बनाई। छप्पन भोग कहाँ मन बोरे, कुरड़ी चरने जाई।।

शब्दार्थ :- जो मनुष्य (स्त्री/पुरूष) सत्य भक्ति शास्त्र अनुसार गुरू से दीक्षा लेकर नहीं करता। वह मत्यु के पश्चात् पशु जीवन प्राप्त करता है। वह गधे या बैल के शरीर प्राप्त करता है। मानव शरीर में स्वादिष्ट भोजन खाता था। गधा बनने के पश्चात् अच्छा खाना नहीं मिलता। गधे का शरीर धारण करके जंगल में कूड़े के ढ़ेर से गंदा भोजन व घास खाता है। इसलिए भक्ति करो।

हे मानव! संसार में तेरा जीवन ऐसे है जैसे सुबह ओस के जल की बूँदें घास पर चमक रही होती हैं जो कुछ समय में समाप्त हो जाती हैं। इसलिए पूर्ण सतगुरू से सतनाम यानि सच्चे नाम जाप मंत्र लेकर भक्ति करके जीव का कल्याण करा ले। सच्चे शास्त्रानुकूल भक्ति मंत्र के अतिरिक्त सब शास्त्रविरूद्ध साधना तो दलदल की गारा के समान है। निकालने की बजाय दुगना फँसाती है। वह साधना परमेश्वर कबीर जी के पास थी तथा कुछ संतों को भी परमेश्वर कबीर जी ने बताई थी, परंतु उनको अन्य को बताने को मना किया था। वर्तमान में (सन् 1997 से) मुझ दास (रामपाल) के पास है। मेरे अतिरिक्त वर्तमान में किसी भी संत व गुरू के पास शास्त्र प्रमाणित भक्ति मंत्र नहीं हैं। आओ दीक्षा लो और अपना तथा अपने परिवार का जीवन सफल बनाओ। यदि आप जी ने मेरे (रामपाल के) अतिरिक्त किसी अन्य पंथ के संत या गुरू से दीक्षा ले ली तो वही बात होगी कि आसमान से गिरे और खजूर में अटके। घर के रहोगे ना घाट के। मैं (लेखक) पहले गाँव-गाँव में सत्संग करता था। मेरा सत्संग सुनते जो आत्मा को हिलाकर रख देता है। मेरे से नाम दीक्षा नहीं लेते, अन्य संतों से दीक्षा लेते थे। वहाँ से कोई लाभ नहीं हुआ। कई वर्ष भटक कर मेरे से दीक्षा ली तो सुखी हुए।

उपरोक्त सत्संग वचनों से निष्कर्ष निकलता है कि यदि सत्संग के विचार सुनने को मिल जाऐं तो घर स्वर्ग बन जाता है। उसके बिना नरक-सा जीवन जीना पड़ता है। इस प्रकार विश्व उद्धार संभव है। सब प्रेम-प्यार से जीवन यापन करके मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। यह अति अनिवार्य है।

वर्तमान की कुछ सत्य कथाऐं

(नोट :- निम्न कथा यहाँ पर तथा शेष पष्ठ 299 पर पढ़ें।)

''भक्त सुरेश दास के उजड़े परिवार को बसाया''

गाँव-डीघल पान्ना-गंजा भक्त का नाम सुरेश अहलावत तथा भक्तमति का नाम यशवन्ती। डीघल गाँव गवाह है कि भक्त सुरेश शराब, सुल्फा, तम्बाकू का घणा आदी था। घर की ठौर-बटोड़ कर रखा था। बहन यशवन्ती (सुरेश की पत्नी) असाध्य रोग से पीड़ित थी। दो लड़के छोटी आयु के थे जो पिता को घर पर आते देख छुप जाते थे। घर में झगड़ा रहता था। बहन यशवन्ती का एक भाई हरियाणा

पुलिस में D.S.P. था जो अब सेवा निवृत हो चुका है। नाम है भक्त राजेन्द्र सिंह राठी, गाँव-भापड़ोदा। उसने अपनी बहन के उपचार में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। परंतु व्यर्थ रही। मेरा एक भक्त जो हरियाणा पुलिस में नौकरी कर रहा है, वह आर्य समाज के महान प्रचारक श्री जौहरी सिंह जी का बेटा है। (गाँव-जसराना जिला-सोनीपत) इसके साथ मेरा छोटा भाई महेन्द्र सिंह भी हरियाणा पुलिस में नौकरी करता था जिसको सन् 2016 में रिटायर होना था, परंतु परमार्थी मिशन के उद्देश्यों को समझकर सन् 2005 में रिटायरमेंट लेकर मेरे साथ हाथ बंटा रहा है। मेरा भाई S.P. रोहतक का ड्राईवर था। भक्त जयबीर मलिक D.S.P. झज्जर का ड्राईवर था। दोनों जब मिलते थे तो मेरा भाई उससे इस ज्ञान की चर्चा करता था। पहले तो आर्य समाजी होने के कारण भक्त जयबीर जी बहुत दुःखी हुए। अपने आचार्यों से मिले, परंतु अंत में सत्य को आँखों देखकर मान लिया कि सच्चाई यही है। उसने सन् 1994 में मेरे से दीक्षा ले ली। सन् 1995-1996 तक भक्त राजेन्द्र सिंह राठी झज्जर में कार्यरत थे तथा जयबीर जी उनके ड्राईवर थे। भक्त राजेन्द्र जी का एक भाई पुलिस में नौकरी करता था। बहन यशवन्ती वाली बीमारी उसको भी थी। जिस कारण से सन् 1995 में उसकी मृत्यु हो गई। ड्राईवर के नाते भक्त जयबीर जी भी D.S.P. के साथ उनके घर गए। सब हालात का ज्ञान हुआ। वापिस आने पर एक दिन जयबीर जी ने D.S.P. साहब से निवेदन किया कि आप अपने परिवार को बचाना चाहते हो तो (संत रामपाल जी) से दीक्षा ले लो। पहले तो नहीं माना, परंतु ट्रायल करने के लिए अपनी बहन यशवन्ती को अपने छोटे भाई सुखबीर के साथ दीक्षा दिलाने भेजा। यह दास (रामपाल दास) सिंचाई विभाग में जूनियर इंजीनियर (J.E.) के पद पर कार्यरत था। गुरू जी के आदेश से दीक्षा देने लगा तथा प्रचार करने लगा। मिशन के उद्देश्य से परिचित होकर जनहित तथा जगहित में सन् 1995 में नौकरी से त्याग पत्र देकर प्रचार-प्रसार में लग गया था। (त्याग पत्र हरियाणा सरकार द्वारा स्वीकृत है।) गाँव-गाँव में संत गरीबदास जी महाराज की वाणी का अखण्ड पाठ करता था, सत्संग करता था। तीन दिन यह अनुष्ठान चलता था। ज्ञान समझाकर बुराई छुड़वाकर दीक्षा देता था। जिस कारण उपदेशी को आश्चर्यजनक लाभ होता था। इसी क्रम में एक दिन सन् 1996 में गाँव-पंजाबखोड़ (दिल्ली) में भक्त जगदीश जी के घर पाठ चल रहा था। भक्त जगदीश भी प्रथम श्रेणी का शराबी, उत्पाती (शराब पीकर) था तथा D.T.C. दिल्ली में नौकरी करता है। उसकी पत्नी की लाईलाज बीमारी भी मुझ दास से दीक्षा लेने के पश्चात् ठीक हो गई थी। करता परमात्मा है, उसकी शक्ति संत के माध्यम से आती है। जैसे तार द्वारा बिजली आती है, तार बिजली नहीं है। इसी प्रकार संत परमात्मा भले ही नहीं हैं, परंतु तार अवश्य होता है। उस समय बहन यशवन्ती की जीभ काम करना बंद कर गई थी। वह गूंगी हो चुकी थी। सुखबीर जी अपनी बहन को साथ लेकर शाम के समय भक्त जगदीश जी के घर आए। मेरे को सब समस्या बताई। वे दोनों भाई-बहन रात्रि में सत्संग सुनकर वहीं रूक गए। बहन यशवन्ती को नाम दिया, प्रसाद खिलाया। सुबह उठकर वह अपने भाई से बोली, भाई! मैं बोलने लग

गई हूँ। मैं ठीक हो गई हूँ। यह चमत्कार देखकर दोनों भाई-बहन उपस्थित व्यक्तियों (जो सत्संग सुनने और भोग लगने के समय पहुँचे थे) को बता रहे थे कि कमाल हो गया। उसके पश्चात् D.S.P. साहब ने तथा सर्व परिवार तथा रिश्तेदारों ने दीक्षा ले ली। आज सब सकुशल हैं, भक्ति कर रहे हैं। भक्त सुरेश प्रथम श्रेणी का शराबी था। अपनी पत्नी को ठीक हुआ देखकर सत्संग में आने लगा। शराब तथा सर्व नशा त्यागकर नाम लेकर सुधर गया। उस समय तक कोई आश्रम नहीं बनाया था। गाँव-गाँव में प्रचार किया जाता था। अब बहन यशवन्ती के परिवार की पूरे डीघल गाँव में मिसाल है। सुरेश चौधरी भक्त बन गया। सर्व बुराई त्याग दी। दोनों लड़के दिल्ली पुलिस में एक ही दिन सिपाही भर्ती हो गए। लोगों को लगा होगा कि पैसे देकर भर्ती कराए होंगे। परंतु सत्य यह है कि एक पैसा भी किसी को नहीं दिया। आप स्वयं जाँच कर सकते हैं। दोनों लड़कों के विवाह में एक रूपया से अधिक कुछ नहीं लिया। यह भी जाँच का विषय है। ऐसे-ऐसे अनेकों उदाहरण हैं। यह कहानी बताने का मेरा उद्देश्य यह है कि जैसे गीता अध्याय 16 श्लोक 23 और 24 में कहा है कि शास्त्र विधि त्यागकर मनमाना आचरण करने वाले को कोई लाभ परमात्मा से नहीं मिलता। शास्त्रोक्त भक्ति करने से परमात्मा की शक्ति से सर्व असंभव कार्य भी सिद्ध हो जाते हैं। मोक्ष भी मिलता है। ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 161 मंत्र 2 में भी प्रमाण है कि परमात्मा की भक्ति करने वाले का असाध्य रोग भी नष्ट हो जाता है। यदि रोगी मौत के निकट भी पहुँच गया हो तो सत्य भक्ति करने वाले को स्वस्थ करके परमात्मा शत् प्रतिशत आयु प्रदान कर देता है यानि भक्त पूरी आयु जीवित रहता है।

जैसे पहले बिजली का विस्तार नहीं हुआ था तो आटा हाथ से चलने वाली चक्की से माता-बहन पीसा करती थी। पुरूष हाथ से फरसे (दरात) से पशुओं का चारा (शानी) काटा करते थे। फिर हाथ से चलाने वाली मशीन (गंडासे) का आविष्कार हुआ। वह भी कठिन कार्य था। वर्तमान में बिजली की शक्ति से आटा-चक्की चलती है, गंडासे (शानी काटने की मशीनें) चलते हैं। असंभव कार्य हो रहा है। शीघ्र तथा सुगम हो रहा है। बिजली का विधिवत कनैक्शन लेना होता है। बिजली की मर्यादा का पालन करना होता है, अन्यथा सुखदायी बिजली विनाश कारण बन जाती है। इसी प्रकार परमात्मा का कनैक्शन लेना पड़ता है और परमात्मा की मर्यादाओं का पालन करना होता है। तब सर्व सुख तथा मोक्ष परमात्मा देता है। मर्यादा भंग होने से परमात्मा की शक्ति आनी बंद हो जाती है। सर्व सुविधाऐं मिलनी बंद हो जाती हैं। डीघल गाँव के व्यक्ति उन झूठे आचार्यों की बात को सत्य मानकर करौंथा आश्रम में जाने वाले अपने गाँव वालों को रोकते थे। तो भक्त सुरेश जी तथा बहन यशवंती जी हाथ जोड़कर गाँव के उन व्यक्तियों से कहते थे कि गाम-राम, मारो चाहे छोड़ो, हम आश्रम में जाना बंद नहीं करेंगे। हमारा तो घर वहीं से बसा है, नहीं तो हम आज उजड़ गए होते। परमात्मा ने उनकी सच्ची भक्ति का फल भी ऐसा ही दे रखा है।

भक्त सुरेश का मोबाईल नं. 9034029495 है।

''सत्संग न सुनने से सर्वनाश हुआ''

कबीर, राम–नाम कड़वा लागै, मीठे लागें दाम।
दुविधा में दोनों गए, माया मिली ना राम।।

शब्दार्थ :- सत्संग न सुनने वाले मानव (स्त्री/पुरूष) को परमात्मा के विधान का ज्ञान नहीं होता। जिस कारण से उसको परमात्मा के विषय में चर्चा भी अच्छी नहीं लगती। धन संग्रह करना अच्छा लगता है। जिस कारण से उसको दोनों से हाथ धोने पड़ते हैं यानि उसे न तो परमात्मा मिलता है और मत्यु के पश्चात् धन भी यहीं रह गया। उसके दोनों ही हाथ से निकल गए।

पंजाब प्रान्त में मेरे (रामपाल दास के) पूज्य गुरूदेव जी का आश्रम ''तलवण्डी भाई की'' नामक कस्बे में है। उनके सतलोक चले जाने के पश्चात् उनका दास (रामपाल दास) महीने के दूसरे रविवार को सत्संग करने जाता था। मेरे गुरूदेव जी के कुछ शिष्य तलवण्डी भाई की कस्बे के सेठ भी हैं। उनका रिश्तेदार शुक्रवार को एक वद्धा की मौत पर शोक व्यक्त करने सपरिवार आया था। वह शनिवार 2 बजे बाद दोपहर को अपने घर चण्डीगढ़ जाने लगा तो सत्संगी रिश्तेदारों ने उनसे कहा कि आज-आज और रूक जाओ, कल सुबह 8-10 बजे सत्संग होगा। आप सत्संग सुनकर प्रसाद लेकर जाना। रिश्तेदार ने कहा कि कल रविवार को एक पार्टी आएगी। दो बजे उससे मेरा अनुबंध होना है जिसमें मुझे पाँच लाख का लाभ होगा। यह घटना सन् 1998 की है। सत्संगियों ने आग्रह किया कि आप रविवार को ग्यारह बजे सुबह चलोगे तो भी आप समय पर पहुँच सकते हो। फोन करके उन्हें सूचित कर देंगे कि वे कुछ देर से आ जाऐंगे। परंतु वह नहीं माना। उसके परिवार में कुल चार सदस्य थे, पत्नी तथा बेटा-बेटी। चारों अपनी मारूति कार में सवार होकर चण्डीगढ़ के लिए शनिवार को रवाना हो गए।

चण्डीगढ़ से कुछ पहले अम्बाला शहर के पास एक बजरी का भरा ट्रक खराब हालत में खड़ा था। उसके पिछले पहिये निकाल रखे थे। जैक लगा रखा था। माया के लोभी को केवल पाँच लाख का लाभ ही नजर आ रहा था। कार पूरी गति से चला रहा था। कार उस बजरी के भरे ट्रक के नीचे घुस गई, जैक हट गया। पूरा परिवार कुचला गया। बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि यदि सत्संग सुनने के लिए रूक जाता तो यह नाश नहीं होता। माया के बिना तो काम चल जाता, परंतु काया के बिना नहीं चलता क्योंकि शरीर है तो परमात्मा की भक्ति करके आत्म-कल्याण कराया जा सकता है। परमेश्वर कबीर जी ने सतर्क किया है कि:-

कबीर, रामनाम कड़वा लगै, मीठे लागें दाम।
दुविधा में दोनों गए, माया मिली ना राम।।

शब्दार्थ :- सत्संग न सुनने वाले मानव (स्त्री/पुरूष) को परमात्मा के विधान का ज्ञान नहीं होता। जिस कारण से उसको परमात्मा के विषय में चर्चा भी अच्छी नहीं लगती। धन संग्रह करना अच्छा लगता है। जिस कारण से उसको दोनों से

हाथ धोने पड़ते हैं यानि उसे न तो परमात्मा मिलता है और मृत्यु के पश्चात् धन भी यहीं रह गया। उसके दोनों ही हाथ से निकल गए।

इसलिए हे भाई-बहनो! सत्संग की ओर रूचि करो। आत्म-कल्याण कराओ और जीवन की राह को आसान बनाओ।

''सत्संग में जाने से बड़ी आपत्ति टल जाती है''

कबीर, संत शरण में आने से, आई टलै बला।
जै भाग्य में सूली हो, कांटे में टल जाय।।

भावार्थ :- समर्थ कबीर परमेश्वर के कृपा पात्र सच्चे गुरू (सतगुरू) से दीक्षा लेने वाले भक्त/भक्तमति की परमात्मा रक्षा करता है। यदि पूर्व जन्म के पाप के कारण साधक को मौत की सजा सूली यंत्र के द्वारा मिलनी भाग्य में लिखी हो जो अत्यधिक पीड़ादायक होती है तो परमात्मा उस साधक के उस मृत्युदंड को समाप्त करके कुछ छोटा-मोटा दण्ड जैसे पैर में काँटा लगना देकर टाल देता है। भयंकर दण्ड को नाममात्र के दण्ड में बदल देता है जो बहुत बड़ी बला यानि परेशानी थी।

एक गाँव में संत का आश्रम था जो गाँव से लगभग दो किलोमीटर दूर बना था। उस गाँव के कई परिवार संत जी के शिष्य थे। संत जी वर्ष में केवल दो बार उस आश्रम में आते थे। उसके साथ कुछ स्थाई शिष्य भी आते थे। वह संत अपनी मण्डली के साथ प्रत्येक बार दो महीने उस आश्रम में रहता। फिर अन्य आश्रमों में जाता था। संत जी अपने कार्यक्रम के अनुसार दो महीने के लिए आया हुआ था। उस गाँव के भक्तों ने भोजन की व्यवस्था अपने-अपने घरों से कर रखी थी। एक परिवार एक दिन का भोजन आश्रम वालों को घर बनाकर लाकर खिलाता था। प्रत्येक भक्त की इच्छा रहती थी कि अपने गुरू जी को उत्तम भोजन खीर व सब्जी-रोटी खिलाऐं। एक परिवार का भोजन का दिन था। उस दिन दूध खराब हो गया। उस माई का नाम कस्तूरी था। उसी के पड़ोस में एक परिवार था जिसमें केवल दो माँ-बेटा थे। कारण यह था कि उस बहन रामों के पति की मृत्यु उस समय हो गई जब लड़का दो वर्ष का था। उस बहन ने एक घटना देखी थी कि उसके परिवार में दूसरे दादसरे की संतान में एक बहू विधवा हो गई थी। एक पुत्र तीन वर्ष का था। उसने अपने देवर से शादी कर ली। देवर भी शादीशुदा (married) था। देवर से भी उसको एक पुत्र प्राप्त हो गया। देवर-देवरानी उससे मजदूर के समान बर्ताव करते थे। रूखा-सूखा-झूठा टुकड़ा पहले बेटे तथा माता को देते थे। जिस कारण से लड़के ने बड़ा होने पर आत्महत्या करनी पड़ी। वह भी पागल होकर कहीं चली गई। (सब देवर-जेठ बुरे नहीं होते।) इस घटना को याद करके उस रामों बहन ने जेठ-देवर से विवाह नहीं किया। (लत्ता नहीं ओढ़ा।) अपने बेटे कर्मपाल को पाला-पोसा। मेहनत-मजदूरी की। कुछ जमीन भी थी। उसी में मेहनत करके गाय-भैंस को पालती थी। अपने बेटे को अच्छा घी-दूध पिलाती-खिलाती थी। विचार करती थी कि बेटा शीघ्र जवान हो जाएगा। इसका विवाह करूंगी। यह अपने कार्य को संभाल लेगा। मैं सुख का जीवन जीऊँगी। परंतु सत्संग बिना ज्ञान

नहीं, ज्ञान सतगुरू देता है। भक्ति बिना जीव सुखी नहीं हो सकता चाहे कितना ही धनी क्यों न हो। सिर पर पिता का साया नहीं था। बेटा माँ के लाड से बिगड़ता ही है। माँ का स्वभाव अपनी संतान को सर्व संभव सुख देना होता है। कहावत है कि रांड (विधवा) का बेटा तथा रंडुए (विधुर) की बेटी बिगड़ती (आवारा होती) ही है। कारण पिता कार्यवश बेटी की गतिविधि पर ध्यान नहीं रख पाता। माँ बेटे की गतिविधि पर ध्यान नहीं दे पाती। बेटी को तो अपने साथ रखती है। जिस कारण से कर्मपाल नशा करने लगा। माता से झगड़ा करके रूपये या बाजरा-ज्वार, चना ले जाता, उसे बेचकर नशा करता था। माँ सारा दिन रोती रहती थी कि सोचा क्या था, यह कैसी कर्मगति? आगे से आगे सब उल्टा हो रहा है। जिस चिंता के कारण दुबली-पतली हो गई थी। भक्तमति कस्तूरी अपनी पड़ोसन रामों (रामप्यारी) के घर गई। पहले कुशल-मंगल की औपचारिकता करते हुए पूछा कि बेटा क्या कर रहा है? कैसे हो माँ-बेटा? यह बात सुनकर बहन रामों रोने लगी और बोली कि बहन! कैसे भी नहीं हैं। लड़का बिगड़ गया है। नशा करता है। कहना नहीं मानता है। झगड़ा करता है। गाली-गलौच पर उतर आता है। आपको तो पता है परिवार तथा गाँव वालों ने मेरे ऊपर कितना दबाव डाला था जेठ का लत्ता ओढ़ने (पति के बड़े भाई से पुनः विवाह करने) के लिए। मैंने राजवंती की घटना से डरकर जेठ से विवाह नहीं किया अपने बेटे को सुखी देखने के लिए। आज इसने उससे भी अधिक दुःख दे दिया। मन करता है कि कहीं चली जाऊँ या आत्महत्या कर लूँ। भक्तमति कस्तूरी ने कहा कि बहन! गलत बात नहीं सोचा करते। बड़ा होकर सुधर जाएगा। आप मर गई तो तेरे को पता है चाचे-ताऊ सारी जमीन हड़प लेंगे। लड़के को अधिक नशा कराकर मार डालेंगे। ऐसा विचार न कर। एक काम करो, मेरे साथ सत्संग में चला करो। यहाँ अकेली के मन में ऐसे विचार आते रहेंगे। सूखकर काँटा हो गई हो। रामों बोली, ना बहन ना। मेरे को तो नगर के लोग वैसे ही शक की नजर से देखते हैं। कोई व्यक्ति किसी कार्यवश घर आ जाता है तो छतों पर चढ़कर एक आँख से देखते हैं। आपके तो सिर पर धनी (पति) है। मैं सत्संग में चली गई तो जीना हराम कर देंगे। मुझे मरना ही पड़ेगा। बहन यूं बता, आज सुबह-सुबह कैसे आना हुआ? कस्तूरी ने कहा कि बहन आपको तो पता ही है कि हमारे गुरूजी आश्रम में ठहरे हैं। आज भोजन कराने की बारी मेरी है। बहन खीर बनानी थी। दूध खराब हो गया। कुछ दूध उधारा दे दे, कल लौटा दूँगी। यह बात सुनकर बहन रामों में करंट-सा आया और दूध निकालकर बाल्टी खूंटी (Hanger) से लटका रखी थी, उठकर सारा का सारा दूध कस्तूरी की बाल्टी में डाल दिया। कस्तूरी ने कहा कि बहन! कुछ तो रख ले। रामों बोली, बहन! ना जाने कौन-से जन्म का पुण्य उदय हुआ है, मुझ निर्भाग का दूध पुण्य में लगेगा। बस बहन ले जा, संतों-भक्तों को भोजन करा। कस्तूरी बहन आश्चर्यचकित थी कि सारा का सारा दूध तो मैं सत्संगी होते हुए भी नहीं दे सकती थी। किलो-दो किलो तो रखती। बहन रामों को तो सत्संग की प्रेरणा की आवश्यकता है। उस दिन तो

कस्तूरी को समय नहीं मिला। अगले दिन के 11-12 बजे रामों के घर गई। गाँव में 12 से 2 तक दिन का समय महिलाओं को बातें करने का मिल जाता है। दो घण्टे तक सत्संग की बातें जो गुरू जी से सुनी थी, सारी बताई। परंतु लोकलाज के कारण रामों मानने को तैयार नहीं थी। बहन कस्तूरी ने बताया कि हे बहन! आप ने मीराबाई का नाम सुना है। रामों बोली कि हाँ, कृष्ण जी की भक्तिन थी। कस्तूरी बोली कि वह मंदिर में जाती थी। ठाकुर परिवार में जन्म था। महिलाओं को घर से बाहर जाने पर प्रतिबंध था, परंतु मीराबाई ने किसी की प्रवाह नहीं की। फिर उसका विवाह राजा से हो गया। राणा जी धार्मिक विचार के थे। उसने मीरा को मंदिरों में जाने से नहीं रोका, अपितु लोक चर्चा से बचने के लिए मीरा जी के साथ तीन-चार महिला नौकरानी भेजने लगा। जिस कारण से सब ठीक चलता रहा। कुछ वर्ष पश्चात् मीरा जी के पति की मृत्यु हो गई। देवर राजगद्दी पर बैठ गया। उसने कुल के लोगों के कहने से मीरा को मंदिर में जाने से मना किया, परंतु मीराबाई जी नहीं मानी। जिस कारण से राजा ने मीरा को मारने का षड़यंत्र रचा। विचार किया कि ऐसी युक्ति बनाई जाए कि यह भी मर जाए और बदनामी भी न हो। राजा ने विचार किया कि इसे कैसे मारें? राजा ने कहा कि सपेरे एक ऐसा सर्प ला दे कि डिब्बे को खोलते ही खोलने वाले को डंक मारे और व्यक्ति मर जाए। ऐसा ही किया गया। राणा जी ने अपने लड़के का जन्मदिन मनाया। उसमें रिश्तेदार तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति आमंत्रित किये। राजा ने मीरा जी की बांदी (नौकरानी) से कहा कि ले यह बेशकीमती हार है। मेरे बेटे का जन्मदिन है। दूर-दूर से रिश्तेदार आये हैं। मीरा को कह दे कि सुंदर कपड़े पहनकर इस हार को गले में पहन ले, नहीं तो रिश्तेदार कहेंगे कि अपनी भाभी जी को अच्छी तरह नहीं रखता। मेरी इज्जत-बेइज्जती का सवाल है। बांदी ने उस आभूषण के डिब्बे को मीराबाई को दे दिया और राजा का आदेश सुना दिया। उस आभूषण के डिब्बे में विषैला काले-सफेद रंग का सर्प था। मीरा ने बांदी के सामने ही उस डिब्बे को खोला। उसमें हीरे-मोतियों से बना हार था। मीराबाई ने विचार किया कि यदि मैं हार नहीं पहनूंगी तो व्यर्थ का झगड़ा होगा। मेरे लिए तो यह मिट्टी है। यह विचार करके मीरा जी ने वह हार गले में डाल लिया। राजा का उद्देश्य था कि आज सर्प डंक से मीरा की मृत्यु हो जाएगी तो सबको विश्वास हो जाएगा कि राजा का कोई हाथ नहीं है। हमारे सामने सर्प डसने से मीरा की मृत्यु हुई है। कुछ समय उपरांत राजा मंत्रियों सहित तथा कुछ रिश्तेदारों सहित मीरा के महल में गया तो मीरा बाई जी के गले में सुंदर मंहगा हार देखकर राणा बौखला गया और बोला, बदचलन! यह हार किस यार से लाई है? मीरा बाई जी के आँखों में आँसू थे। बोली कि आपने ही तो बांदी के द्वारा भिजवाया था, वही तो है। बांदी को बुलाया तथा पूछा कि वह डिब्बा कहाँ है? बांदी ने पलंग के नीचे से निकालकर दिखाया। यह रहा राजा जी जो आपने भेजा था। राजा वापिस आ गया। राजा ने सोचा कि अब की बार इसको विष मैं अपने सामने पिलाऊँगा, नहीं पीएगी तो सिर काट दूँगा।

मीराबाई को विष से मारने की व्यर्थ कोशिश

एक सपेरे से कहा कि भयंकर विष ला दे जिसे जीभ पर रखते ही व्यक्ति मर जाए। ऐसा विष लाया गया। राजा ने मीरा से कहा कि यह विष पी ले अन्यथा तेरी गर्दन काट दी जाएगी। मीरा ने सोचा कि गर्दन काटने में तो पीड़ा होगी, विष पी लेती हूँ। मीरा ने विष का प्याला परमात्मा को याद करके पी लिया। लेकिन उन्हें कुछ नहीं हुआ। सपेरा बुलाया और उससे कहा कि यह नकली विष लाया है। सपेरे ने कहा कि वह प्याला कहाँ है? उसे प्याला दिया गया। सपेरे ने उस प्याले में दूध डालकर एक कुत्ते को वहीं पिला दिया। कुत्ता दूसरी बार जीभ भी नहीं लगा पाया था, मर गया।

❖ राजा ने देख लिया कि यह किसी तरह मरने वाली नहीं है। तब उसको मंदिर में जाने से नहीं रोका। उसके साथ कई नौकरानी तथा पुरूष रक्षक भी भेजने लगा कि लोग यह नहीं कहेंगे कि आवारागर्दी में जाती है।

''मीरा को सतगुरू शरण मिली''

जिस श्री कृष्ण जी के मंदिर में मीराबाई पूजा करने जाती थी, उसके मार्ग में एक छोटा बगीचा था। उसमें कुछ घनी छाया वाले वृक्ष भी थे। उस बगीचे में परमेश्वर कबीर जी तथा संत रविदास जी सत्संग कर रहे थे। सुबह के लगभग 10 बजे का समय था। मीरा जी ने देखा कि यहाँ परमात्मा की चर्चा या कथा चल रही है। कुछ देर सुनकर चलते हैं।

परमेश्वर कबीर जी ने सत्संग में संक्षिप्त सृष्टि रचना का ज्ञान सुनाया। कहा कि श्री कृष्ण जी यानि श्री विष्णु जी से ऊपर अन्य सर्वशक्तिमान परमात्मा है। जन्म-मरण समाप्त नहीं हुआ तो भक्ति करना न करना समान है। जन्म-मरण तो श्री कृष्ण जी (श्री विष्णु) का भी समाप्त नहीं है। उसके पुजारियों का कैसे होगा। जैसे हिन्दू संतजन कहते हैं कि गीता का ज्ञान श्री कृष्ण अर्थात् श्री विष्णु जी ने अर्जुन को बताया। गीता ज्ञानदाता गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5, अध्याय 10 श्लोक 2 में स्पष्ट कर रहा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। इससे स्वसिद्ध है कि श्री कृष्ण जी का भी जन्म-मरण समाप्त नहीं है। यह अविनाशी नहीं है। इसीलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता बोलने वाले ने कहा है कि हे भारत! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमेश्वर की कृपा से ही तू सनातन परम धाम को तथा परम शांति को प्राप्त होगा।

परमेश्वर कबीर जी के मुख कमल से ये वचन सुनकर परमात्मा के लिए भटक रही आत्मा को नई रोशनी मिली। सत्संग के उपरांत मीराबाई जी ने प्रश्न किया कि हे महात्मा जी! आपकी आज्ञा हो तो शंका का समाधान करवाऊँ। कबीर जी ने कहा कि प्रश्न करो बहन जी!

प्रश्न :- हे महात्मा जी! आज तक मैंने किसी से नहीं सुना कि श्री कृष्ण जी से ऊपर भी कोई परमात्मा है। आज आपके मुख से सुनकर मैं दोराहे पर खड़ी हो गई हूँ। मैं मानती हूँ कि संत झूठ नहीं बोलते। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि आपके धार्मिक अज्ञानी गुरूओं का दोष है जिन्हें स्वयं ज्ञान नहीं कि आपके सद्ग्रन्थ क्या ज्ञान बताते हैं? देवी पुराण के तीसरे स्कंद में श्री विष्णु जी स्वयं स्वीकारते हैं कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर नाशवान हैं। हमारा आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) होता रहता है। (लेख समाप्त)

मीराबाई बोली कि हे महाराज जी! भगवान श्री कृष्ण मुझे साक्षात दर्शन देते हैं। मैं उनसे संवाद करती हूँ। कबीर जी ने कहा कि हे मीराबाई जी! आप एक काम करो। भगवान श्री कृष्ण जी से ही पूछ लेना कि आपसे ऊपर भी कोई मालिक है। वे देवता हैं, कभी झूठ नहीं बोलेंगे। मीराबाई को लगा कि वह पागल हो जाएगी यदि श्री कृष्ण जी से भी ऊपर कोई परमात्मा है तो। रात्रि में मीरा जी ने भगवान श्री कृष्ण जी का आह्वान किया। त्रिलोकी नाथ प्रकट हुए। मीरा ने अपनी शंका के समाधान के लिए निवेदन किया कि हे प्रभु! क्या आपसे ऊपर भी कोई परमात्मा है। एक संत ने सत्संग में बताया है। श्री कृष्ण जी ने कहा कि मीरा! परमात्मा तो है, परंतु वह किसी को दर्शन नहीं देता। हमने बहुत समाधि व साधना करके देख ली है। मीराबाई जी ने सत्संग में परमात्मा कबीर जी से यह भी सुना था कि उस पूर्ण परमात्मा को मैं प्रत्यक्ष दिखाऊँगा। सत्य साधना करके उसके पास सतलोक में भेज दूँगा। मीराबाई ने श्री कृष्ण जी से फिर प्रश्न किया कि क्या आप जीव का जन्म-मरण समाप्त कर सकते हो? श्री कृष्ण जी ने कहा कि यह संभव नहीं। कबीर जी ने कहा था कि मेरे पास ऐसा भक्ति मंत्र है जिससे जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त हो जाता है। वह परमधाम प्राप्त होता है जिसके विषय में गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वज्ञान तथा तत्वदर्शी संत की प्राप्ति के पश्चात् परमात्मा के उस परमधाम की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। उसी एक परमात्मा की भक्ति करो। मीराबाई ने कहा कि हे भगवान श्री कृष्ण जी! संत जी कह रहे थे कि मैं जन्म-मरण समाप्त कर देता हूँ। अब मैं क्या करूं। मुझे तो पूर्ण मोक्ष की चाह है। श्री कृष्ण जी बोले कि मीरा! आप उस संत की शरण ग्रहण करो, अपना कल्याण कराओ। मुझे जितना ज्ञान था, वह बता दिया। मीरा अगले दिन मंदिर नहीं गई। सीधी संत जी के पास अपनी नौकरानियों के साथ गई तथा दीक्षा लेने की इच्छा व्यक्त की तथा श्री कृष्ण जी से हुई वार्ता भी संत कबीर जी से साझा की। उस समय छूआछात चरम पर थी। ठाकुर लोग अपने को सर्वोत्तम मानते थे। परमात्मा मान-बड़ाई वाले प्राणी को कभी नहीं मिलता। मीराबाई की परीक्षा के लिए कबीर जी ने संत रविदास जी से कहा कि आप मीरा राठौर को प्रथम मंत्र दे दो। यह मेरा आपको आदेश है। संत रविदास जी ने आज्ञा का पालन किया। संत कबीर परमात्मा जी ने मीरा से कहा कि बहन जी! वो बैठे संत जी, उनके पास जाकर दीक्षा ले लें। बहन मीरा जी तुरंत

रविदास जी के पास गई और बोली, संत जी! दीक्षा देकर कल्याण करो। संत रविदास जी ने बताया कि बहन जी! मैं चमार जाति से हूँ। आप ठाकुरों की बेटी हो। आपके समाज के लोग आपको बुरा-भला कहेंगे। जाति से बाहर कर देंगे। आप विचार कर लें। मीराबाई अधिकारी आत्मा थी। परमात्मा के लिए मर-मिटने के लिए सदा तत्पर रहती थी। बोली, संत जी! आप मेरे पिता, मैं आपकी बेटी। मुझे दीक्षा दो। भाड़ में पड़ो समाज। कल को कुतिया बनूंगी, तब यह ठाकुर समाज मेरा क्या बचाव करेगा? सत्संग में बड़े गुरू जी (कबीर जी) ने बताया है कि :-

कबीर, कुल करनी के कारणे, हंसा गया बिगोय।
तब कुल क्या कर लेगा, जब चार पाओं का होय।।

शब्दार्थ :- कबीर परमेश्वर जी सतर्क कर रहे हैं कि हे भक्त (स्त्री/पुरूष)! जो कुल परिवार व संसार की शर्म के कारण भक्ति नहीं करते, कहते हैं कि घर-परिवार वाले व संसार के व्यक्ति मजाक करेंगे कि नाम दीक्षा लेकर दण्डवत् प्रणाम करते हो। अन्य देवी-देवताओं की पूजा नहीं करते हो। श्राद्ध-पिण्डदान नहीं करते हो। तुम्हें शर्म आनी चाहिए। उन्होंने अपना मानव जीवन नष्ट कर लिया। भक्ति न करने से जब चार पैर के पशु यानि गधे, कुत्ते, सूअर, बैल आदि बनोगे, तब ये कुल व संसार के व्यक्ति क्या बचाव करेंगे। भक्ति ने बचाव करना था, वह की नहीं। इसलिए भक्ति करो।

संत रविदास जी उठकर संत कबीर जी के पास गए और सब बात बताई। परमात्मा बोले कि देर ना कर, ले आत्मा को अपने पाले में। उसी समय संत रविदास जी ने बहन मीरा को प्रथम मंत्र केवल पाँच नाम दिए। {ये पाँच नाम शरीर में बने कमलों को खोलने वाले हैं। राधास्वामी पंथ वाले नहीं हैं तथा न दामाखेड़ा वाले गद्दी से दिए जाने वाले हैं। उनसे भिन्न मोक्ष में सहयोगी मंत्र हैं।} मीराबाई को बताया कि यह इनकी पूजा नहीं है, इनकी साधना है। इनके लोक में रहने के लिए, खाने-पीने के लिए जो भक्ति धन चाहिए है, वह इन मंत्रों से ही मिलता है। यहाँ का ऋण उतर जाता है। फिर मोक्ष के अधिकारी होते हैं। परमात्मा कबीर जी तथा संत रविदास जी वहाँ एक महीना रूके। मीराबाई पहले तो दिन में घर से बाहर जाती थी, फिर रात्रि में भी सत्संग में जाने लगी क्योंकि सत्संग दिन में कम तथा रात्रि में अधिक होता था। कोई दिन में समय निकाल लेता, कोई रात्रि में। मीरा के देवर राणा जी मीरा को रात्रि में घर से बाहर जाता देखकर जल-भुन गए, परंतु मीरा को रोकना तूफान को रोकने के समान था। इसलिए राणा जी ने अपनी मौसी जी यानि मीरा की माता जी को बुलाया और मीरा को समझाने के लिए कहा। कहा कि इसने हमारी इज्जत का नाश कर दिया। बेटी माता की बात मान लेती है। मीरा की माता ने मीरा को समझाया। मीरा ने उसका तुरंत उत्तर दिया :-

''शब्द''

सतसंग में जाना मीरां छोड़ दे ए, आए म्हारी लोग करैं तकरार।
सतसंग में जाना मेरा ना छूटै री, चाहे जलकै मरो संसार।।टेक।।

थारे सतसंग के राहे मैं ऐ, आहे वहाँ पै रहते हैं काले नाग,
कोए–कोए नाग तनै डस लेवै। जब गुरु म्हारे मेहर करैं री,
आरी वै तो सर्प गंडेवे बन जावैं।।1।।
थारे सतसंग के राहे में ऐ, आहे वहाँ पै रहते हैं बबरी शेर,
कोए–कोए शेर तनै खा लेवै। जब गुरुआं की मेहर फिरै री,
आरी व तो शेरां के गीदड़ बन जावैं।।2।।
थारे सतसंग के बीच में ऐ, आहे वहां पै रहते हैं साधु संत,
कोए–कोए संत तनै ले रमै ए। तेरे री मन मैं माता पाप है री,
संत मेरे मां बाप हैं री, आ री ये तो कर देगें बेड़ा पार।।3।।
वो तो जात चमार है ए, इसमैं म्हारी हार है ए।
तेरे री लेखै माता चमार है री, मेरा सिरजनहार है री।
आरी वै तो मीरां के गुरु रविदास।।4।।

शब्दार्थ :- मीरा बाई की माता ने कहा कि हे मीरा! तू सत्संग में जाना बंद कर दे। संसार के व्यक्ति हमारे विषय में गलत बातें करते हैं। मीरा ने कहा कि हे माता! मैं सत्संग में जाना बंद नहीं करूँगी, संसार भले ही ईर्ष्या की आग में जलकर मर जाए। माता ने मीरा को भय कराने के लिए बताया कि जिस रास्ते से तू रात्रि में सत्संग सुनने के लिए जाती है, उस रास्ते में सर्प तथा सिंह रहते हैं। वे तुझे मार देंगे। मीरा ने उत्तर दिया कि मेरे गुरू जी इतने समर्थ हैं, वे कपा करेंगे तो सिंह तो गीदड़ की तरह व्यवहार करेंगे और सर्प ऐसे निष्क्रिय हो जाएेंगे जैसे गंडेवे प्राणी होते हैं जो सर्प जैसे आकार के होते हैं, परंतु छः या आठ इंच के लंबे और आधा इंच गोलाई के मोटे होते हैं, वे डसते नहीं। मीरा की माता ने फिर कहा कि सत्संग सुनने वाले स्थान पर कुछ युवा भक्त पुरूष भी रहते हैं। कोई तेरे को कहीं ले जाएगा और गलत कार्य करेगा। मीरा ने उत्तर दिया कि हे माता! आपके मन में दोष है। इसीलिए आपके मन में ऐसे विचार आए हैं। हे माता! वे संत व भक्त तो मेरे माता-पिता के समान हैं। वे ऐसा गलत कार्य नहीं करते। मीरा की माता ने छूआछात के कारण मीरा को रोकना चाहा, कहा कि हे मीरा! तेरा गुरू रविदास तो अनुसूचित जाति का चमार है। इससे हम राजपूतों की बेइज्जती हो रही है। सत्संग में जाना बंद कर दे। मीरा ने कहा कि हे माता! आपके विचार से मेरे गुरू जी अनुसूचित जाति के चमार हैं। मेरे लिए तो मेरे परमात्मा हैं। मैं उनकी बेटी, वे मेरे पिता हैं। सत्संग में जाना बंद नहीं होगा।

यह कथा सुनकर रामप्यारी (रामों) की आँखें-सी खुल गई। अगले दिन कस्तूरी के साथ सत्संग में गई और एक सत्संग सुनते ही दीक्षा ले ली। फिर एक दिन के भोजन की सेवा माँगी। सब परिवारों ने कहा कि बहन! हम अपनी सेवा नहीं छोड़ सकते। गुरू जी अगली बार आऐंगे, तब तेरी बारी लगवा देंगे। भक्तमति रामों को तो पल की भी चैन नहीं थी। रोने जैसा चेहरा कर लिया। उसी समय कस्तूरी बोली कि बहन! आगे जब मेरी बारी आएगी तो सुबह का भोजन मैं करा

दूँगी, रात्रि का आप करा देना। रामों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। कहीं-कहीं पैर टिके। बारी आने पर रात्रि का भोजन तैयार किया। खीर-हलवा-सब्जी, मांडे (पतली रोटी-फुल्के) बनाए। परंतु लीला सतगुरू की, रामों को तेज बुखार हो गया। शरीर अंगार की तरह जलने लगा। एक कदम भी चलने की हिम्मत नहीं रही। उसी समय रामों का लड़का आ गया। बहन रामों ने कहा कि बेटा! आज मेरा एक काम कर दे, तेरा जिंदगी-भर एहसान नहीं भुलुँगी। बेटा मैंने गुरू बनाया है। आज रात्रि का भण्डारा तेरी ताई भक्तमति कस्तूरी की बारी से माँगकर लिया है। बेटा देख मेरे को तेज बुखार हो गया है। बदन आग की तरह जल रहा है। चलने की हिम्मत नहीं है। लड़का बोला कि मुझे समय नहीं है। मैं ना देकर आऊँ भोजन आश्रम में। माता जी आप उस आश्रम में ना जाया करो। मुझे आपके बारे में बहुत कुछ सुनना पड़ता है। यह सुनकर भक्तमति रामों फूट-फूटकर रोने लगी। लड़के को दया आई। परंतु झुंझलाकर बोला, कहाँ है भोजन, दे आता हूँ। रामों बहन तुरंत उठी और सब भोजन दे दिया। लड़का उस भोजन को एक तसले में रखकर आश्रम में ले गया। रामों गुरू जी से बार-बार निवेदन करती थी कि गुरू जी लड़का नशा करता है। घर की ठौर बिटौड़ा कर रखा है। बात नहीं मानता। उसको भी शरण में ले लो महाराज! अगले दिन लड़के को आश्रम में देखकर अन्य भक्त तथा भक्तमति कहने लगे कि गुरू जी ने सुन ली रामों दुःखिया की। बेटा स्वयं भोजन लेकर आ गया। गुरू जी को पता चला तो हर्ष हुआ कि बेटी रामों बसगी। सुन ली भगवान ने। लड़का बोला, महाराज जी! मेरी माता जी को ज्वर हो गया है, मैं भेजा हूँ। भोजन करो। संत जी भोजन के लिए बैठ गए और सोचा लड़का पहली बार आया है, कुछ ज्ञान सुना दूँ। संत जी ने कहना शुरू किया कि बेटा! माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। मोक्ष के लिए गुरू बनाकर सत्य भक्ति करनी चाहिए। नशे ने तो बड़े-बड़े घर उजाड़ दिये। लड़का तो जला-भुना बैठा था। उसे तो पल-पल की देरी महसूस हो रही थी क्योंकि उस रात्रि में उसने अपने साथी चोरों के साथ राजा के घर में चोरी करने जाना था। रात्रि के बारह बजे नगर से बाहर मंदिर में इकट्ठा होकर चोरी करने जाना था। उनकी कल्पना थी कि रानियों के मँहगे-मँहगे हार होते हैं। वे चुराकर लाऐंगे, मालामाल हो जाएंगे। इसलिए लड़का संत जी से बोला कि बाबा जी! जल्दी भोजन खा ले, मुझे शिक्षा की आवश्यकता नहीं है। संत जी को अच्छा-सा नहीं लगा। मन में विचार किया कि रामों वास्तव में दुःखी है इस शैतान से। खाना खाते ही बिना बर्तन धोए बर्तन उठाकर चल पड़ा नगर की ओर। आधे रास्ते से अधिक तय करने के पश्चात् उसके पैर में मोटी शूल (कीकर का काँटा) लग गई। पैर में बहुत पीड़ा हुई। चलने में भी कठिनाई हुई। जैसे-तैसे घर आया। आँगन में बर्तन पटककर लगा अपनी माता को उलहाने देने। आज ही तेरे गुरू जी के दर्शन किए। आज ही मेरे भाग फूट गए। मेरे पैर में काँटा लग गया। मैं चलने लायक भी नहीं रहा। आज के पश्चात् आश्रम की ओर मुख करके भी ना सोऊँ। रामों का बुखार हल्का हो चुका था। शीघ्र उठी

और काँटा लगे पैर को धोया। उसके ऊपर तेल की गाध (तेल के नीचे जमा मैल) को कपड़े से बाँध दिया और सुबह काँटा निकलवाने की योजना बनाई। लड़का अपनी माता से बहुत लड़ा, ओच्छी-मंदी बातें भी कही क्योंकि लड़के कर्मपाल को तो चोरी में शामिल न होने के कारण बहुत बड़ी हानि हुई लग रही थी। जैसे-तैसे सुबह हुई। लड़के का काँटा निकलवा दिया। माता (रामों) घर के कार्य में लग गई। कुछ देर में एक बैंड-बाजा बजता हुआ आया। नगर निवासियों को पता होता था कि इस प्रकार का साज उस समय शहर में बजाया जाता है जब किसी को मौत की सजा दी जाती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने घरों के बाहर खड़े हो जाते थे और जाना करते थे कि किसको किस कारण सूली तोड़ा जा रहा है। राजा के सिपाही उन चारों व्यक्तियों से कहलवा रहे थे कि अपना दोष बताओ। वे कह रहे थे कि हम राजा के घर चोरी करने गए थे। हमने घोर अपराध किया है। आज शाम को हमें सूली पर चढ़ाया जाएगा। कोई सुनता हो तो कभी ऐसी गलती ना करना। कर्मपाल को अपने साथी चोरों को पहचानते देर नहीं लगी और माजरा भी समझ गया। रामों बोली कि ठीक हुआ और करना चोरी, तुम्हें यही सजा चाहिए थी, करके खाया नहीं जाता। रामों अपने घर में चली गई। कर्मपाल द्वार पर भयभीत स्थिति में डरा-डरा-सा खड़ा रहा। फिर घर में जाकर जोर-जोर-से रोने लगा। रामों ने देखा कि कर्मपाल क्यों रो रहा है? पूछा कि बेटा क्या हो गया? काँटा भी निकल गया। अब क्या दर्द हो रहा है? कर्मपाल उठा और अपनी माता के सीने से लिपट गया। बोला, माँ! भला हो आपके गुरू जी का जिसने तेरे बेटे की सूली की सजा काँटे में टाल दी। माँ! आज तेरा बेटा सूली चढ़ना था। माँ आप कैसे जीवित रहती? रामों बोली कि मेरा बेटा क्या चोर है? क्यों टूटता सूली? चोरों को सजा मिलती है। कर्मपाल बोला, हाँ माँ! तेरा बेटा चोर था। आज के बाद कसम है माँ तेरी, कभी नशा नहीं करूंगा। आपके साथ सत्संग में चला करूंगा। आपके साथ घर के काम में हाथ बटाऊंगा। मैं अपनी जिंदगी में अपनी माँ को कभी दुःखी नहीं करूंगा। रामों बोली कि रे निकम्मे! चोरी भी करने लग गया था। लड़का बोला कि हाँ माँ! पक्का चोर हो गया था। धन्य हैं आपके सतगुरू, धन्य है मेरी माँ जिसे ऐसे महापुरूष की शरण मिली है। माँ आज ही चल, मुझे दीक्षा दिलाकर ला। रामों तुरंत लड़के को भक्तमति कस्तूरी के पास लेकर गई। सब वृत्तान्त बताया। कस्तूरी भी सब कार्य छोड़कर उनके साथ आश्रम में गई और गुरू जी का धन्यवाद किया। सब घटना को बताया, लड़के को नाम दिलाया। एक अन्य गाँव के सत्संगी परिवार की लड़की से कर्मपाल का विवाह हो गया। पूरा परिवार सत्संग में आने लगा तथा सेवा करके सुखी जीवन जीने लगा।

रामों तो सत्संग के रंग में ऐसी रंगी, जब-जब सतगुरू जी मंडली समेत आकर आश्रम में रूकते, वह तो सुबह चली जाती, देर शाम को आती और सेवा करती, बर्तन साफ करती, गुरू जी के वस्त्र धोती। सत्संग का तो एक शब्द भी नहीं छोड़ती थी। एक समय सर्दी का मौसम था। सुबह 10 बजे सत्संग शुरू हुआ।

गुरू जी ने रामों से बोला कि बेटी! वस्त्र धो ला नदी पर। धूप थोड़ी देर रहती है, सत्संग के बाद जाएगी तो वस्त्र सूख नहीं पाऐंगे। रामों बहन वस्त्र बाल्टी में डालकर चल पड़ी। नदी थोड़ी दूरी पर थी। कपड़े पानी में बाल्टी में भिगोकर सोडा डाल दिया। सोचा कि जितनी देर वस्त्र सोडा में भीगेंगे, तब तक सत्संग सुन आती हूँ। आश्रम के बाहर दीवार के साथ कान लगाकर सत्संग वचन सुनने लगी। सत्संग समापन पर ''सत साहेब'' की ध्वनि सुनी तो रामों को कपड़े याद आए। दौड़ी-दौड़ी नदी की ओर चली और डरी हुई थी कि आज तो गलती हो गई। गुरू जी के वचन की अवहेलना हो गई। मेरे ऊपर डाँट पड़ेगी। गुरू जी नाराज हो गए तो मेरी तो सेवा पर पानी फिर जाएगा। हे भगवान! यह कौन बनी? इन्हीं विचारों में नदी पर पहुँची तो देखा कि बाल्टी खाली थी और वस्त्र धोकर झाड़ियों पर सुखा रखे थे जो सूख चुके थे। रामों उन बहनों से बोली जो पहले से नदी पर अपने वस्त्र धो रही थी कि हे बहनों! ये वस्त्र आपने धोकर सुखाए हैं क्या? सब अन्य महिलाऐं रामों की ओर देखने लगी। एक बोली कि बहन! तेरा दिमाग चल गया है क्या या मजाक कर रही है? आप स्वयं तो कपड़े धो रही थी बेसब्री होकर। हमारे भी छींटे लग रहे थे। तेरे को टोका भी था कि धीरे-धीरे कपड़े धो। तू खुद झाड़ियों पर सुखाकर गई थी। अब क्या भाँग का नशा कर आई है? रामों रोने लगी और सब कपड़े उठाकर बाल्टी में डालकर आश्रम की ओर चली। आश्रम में किसी सेवादार ने रामों को आश्रम के बाहर बैठे सत्संग सुनते देर तक देखा था। उसने गुरू जी को बताया कि आज आपके कपड़े गीले ही रहेंगें क्योंकि रामों तो सत्संग समापन तक बाहर दीवार के कान लगाकर सत्संग सुन रही थी। अभी गई है कपड़े धोने। इतने में रामों ने आश्रम में प्रवेश किया और कपड़े गुरू जी के पास रखकर फूट-फूटकर रोने लगी। संत जी ने कपड़े छूए तो पूर्ण रूप से सूखे थे। रामों से रोने का कारण पूछा तो बताया कि गुरू जी! आपने दुःखी होकर स्वयं कपड़े धोए हैं। मेरे से गलती हो गई। मैंने ऐसे-ऐसे सोचा था कि कुछ देर सत्संग सुनकर कपड़े धोऊँगी। परंतु ध्यान नहीं रहा। गुरू जी बोले कि बेटी! परमात्मा कबीर जी रामों बनकर कपड़े धो गए हैं।

ज्यों बच्छा गऊ की नजर में, यूं सांई कूं संत। भक्तों के पीछे फिरे, भक्त वच्छल भगवन्त।।

शब्दार्थ :- जैसे गाय अपने बच्चे के ऊपर एकटक नजर रखती है कि कोई पशु-पक्षी या मनुष्य मेरे बच्चे को मार न दे। इसी प्रकार परमात्मा अपने भक्त के ऊपर दृष्टि रखता है। जैसे गाय का बच्चा खेलता-कूदता किसी ओर दौड़ जाता है तो गाय भी उसके पीछे-पीछे उसकी सुरक्षा के लिए दौड़ती है। इसी प्रकार परमात्मा जो भक्तों का हितकारी है, अपने भक्तों के पीछे-पीछे फिरता है। उनकी सुरक्षा के लिए साथ रहता है।

परमात्मा ने अब्राहिम सुल्तान अधम को नरक से निकालने के लिए बांदी रूप स्त्री बनकर शरीर पर कोरड़े खाए थे। बेटी दुःखी ना हो, तेरा उद्देश्य गलत नहीं था। परमात्मा तो सच्ची लगन व भाव के भूखे हैं। रामों शांत हुई। सत्संग से रामों बस गई। मोक्ष भी मिला।

कबीर, सतगुरू शरण में आने से, आई टलै बला।
जै भाग्य में सूली लिखी हो, कांटे में टल जाय।।

भावार्थ :- समर्थ कबीर परमेश्वर के कृपा पात्र सच्चे गुरू (सतगुरू) से दीक्षा लेने वाले भक्त/भक्तमति की परमात्मा रक्षा करता है। यदि पूर्व जन्म के पाप के कारण साधक को मौत की सजा सूली यंत्र के द्वारा मिलनी भाग्य में लिखी हो जो अत्यधिक पीड़ादायक होती है तो परमात्मा उस साधक के उस मृत्युदंड को समाप्त करके कुछ छोटा-मोटा दण्ड जैसे पैर में काँटा लगना देकर टाल देता है। भयंकर दण्ड को नाममात्र के दण्ड में बदल देता है जो बहुत बड़ी बला यानि परेशानी थी।

“चोर कभी धनी नहीं होता”

कबीर परमेश्वर जी अपने विधानानुसार एक नगर के बाहर जंगल में आश्रम बनाकर रहते थे। कुछ दिन आश्रम में रहते थे, सत्संग करते थे। फिर भ्रमण के लिए निकल जाते थे। उनका एक जाट किसान शिष्य था जो कुछ ही महीनों से शिष्य बना था। किसान निर्धन था। उसके पास एक बैल था। उसी से किसी अन्य किसान के साथ मेल-जोल करके खेती करता था। दो दिन अन्य का बैल स्वयं लेकर दोनों बैलों से हल चलाता था। फिर दो दिन दूसरा किसान उसका बैल लेकर अपने बैल के साथ जोड़कर हल जोतता था। किसान अपने कच्चे मकान के आँगन में बैल को बाँधता था। एक रात्रि में चोर ने उस किसान के बैल को चुरा लिया। किसान ने देखा कि बैल चोरी हो गया तो सुबह वह आश्रम में गया। गुरूदेव जी से अपना दुःख सांझा किया। गुरूदेव जी ने कहा कि बेटा! विश्वास रख परमात्मा पर, दान-धर्म-भक्ति करता रह, आपको परमात्मा दो बैल देगा। जो चुराकर ले गया है, वह पाप का भागी बना है। परमेश्वर की कृपा से बारिश अच्छी हुई। किसान भक्त की फसल चौगुनी हुई। भक्त किसान ने दो बैल मोल लिये और उनको अच्छी खुराक खिलाई। बैल खागड़ों (सांडों) जैसे ताकतवर हो गए। गाँव में उसके बैलों की चर्चा होती थी। एक वर्ष पश्चात् वही चोर उसी क्षेत्र में चोरी करने आया। कहीं दाँव नहीं लगा। उसने विचार किया कि जिसका बैल चुराया था, उसके घर देखता हूँ, हो सकता है कोई बैल ले आया हो। देखा तो दो बैल खागड़ों जैसे बँधे थे। चोर ने दोनों चुरा लिए। किसान जागा तो बैल चोरी हो चुके थे। गुरू जी से बताया तो गुरू जी ने कहा कि बेटा! तेरे घर चार बैल देगा भगवान। चोर कभी सेठ नहीं हो सकता। पाप-पाप इकट्ठे करता है। रजा परमात्मा की, आशीर्वाद गुरूदेव का, बारिश ने किसानों की मौज कर दी। भक्त किसान के पास जमीन पर्याप्त थी, परंतु बारिश के अभाव से खेती थोड़े क्षेत्र में करता था। बारिश अच्छी हो गई। दो बैल मोल लिए, दो कर्जे पर लिए, खेती अधिक जमीन में की। एक नौकर हाली रखा। एक वर्ष में सब कर्ज भी उतर गया। बैल चार हो गए खागड़ों जैसे मोटे-मोटे, तगड़े-तगड़े। मकान भी पक्का बना लिया। चोर दो वर्ष के पश्चात् उधर गया और पहले उसी किसान की स्थिति देखने गया। चोर ने देखा कि चार बैल सांडों जैसे बैठे थे और चोर के पास दो दिन का आटा शेष था। अधिक निर्धन हो गया था।

चोर ने किसान को रात्रि में नींद से उठाया तो किसान बोला, कौन हो आप? चोर ने कहा कि मैं चोर हूँ जिसने तेरे तीन बैल चुराए थे। किसान बोला, भाई! मेरी नींद खराब ना कर, तू अपना काम कर। परमात्मा अपना कर रहा है, मुझे सोने दे। चोर ने पैर पकड़ लिए और बोला, हे देवता! मेरे से अब चोरी नहीं हो रही। एक बात बता, आपका चोर आपके सामने खड़ा है, आप पकड़ भी नहीं रहे हो। हे भाई! तेरा एक बैल मैंने चुराया, तेरे घर अगले वर्ष दो बैल खागड़ों जैसे बँधे थे, वे दोनों भी मैं चुरा ले गया। आज दो वर्ष पश्चात् आपके आँगन में चार बैल खागड़ों जैसे बँधे हैं। मेरा सर्वनाश हो चुका है। बालक भी भूखे रहते हैं। मुझे मार चाहे छोड़, मुझे तेरे विकास का राज बता। मैं भी जाट किसान हूँ, जमीन भी है। निर्धनता बेअन्त है। भक्त किसान ने उसको कहा कि आप स्नान करो, खाना खाओ। चोर ने वैसा ही किया। फिर भक्त उस चोर को आश्रम में लेकर गया। गुरूदेव से सब घटना बताई। गुरू देव ने चोर को समझाया। सात-आठ दिन भक्त किसान ने अपने घर पर रखा और प्रतिदिन गुरू जी से मिलाकर सत्संग सुनाया। चोर ने दीक्षा ली। गुरू जी ने कहा कि भक्त बेटा! नए भक्त को एक बैल दे दे उधारा। खेती करेगा, तेरे पैसे लौटा देगा। भक्त ने कहा, गुरूजी! ठीक है। भक्त किसान ने नए भक्त को एक बैल दे दिया। नया भक्त प्रति महीना सत्संग में आता था। पूरे परिवार को नाम (दीक्षा) दिला दिया। दो वर्ष में वित्तीय स्थिति अच्छी हो गई। एक बैल + तीन पहले वाले (चोरी वाले) बैलों के रूपये लेकर चोर भक्त उस किसान भक्त के घर आया। उसके बच्चे भी साथ थे। किसान भक्त से उस चोर भक्त ने सब पैसे देकर कहा कि मुझे क्षमा करना। आपका उपकार मेरी सात पीढ़ी भी नहीं उतार पाएगी। पुराना भक्त बोला कि हे भाई! यह सब गुरूदेव जी की कपा है। उनका वचन फला है। आप यह सब रूपये गुरू जी को दान रूप में दो। मेरे को तो उन्होंने पहले ही कई गुणा बैलों की पूंजी दे दी थी। मेरे काम की नहीं। दोनों भक्त गुरू जी के पास गए और सर्व दान राशि चरणों में दख दी। गुरू जी ने भोजन-भण्डारा (लंगर) में लगा दी, सत्संग किया। इस प्रकार चोरी का धन मोरी में जाता है। भक्त सदा फलता-फूलता है।

➢ ''संस्कार छूत के रोग की तरह फैलते हैं'' :-

अच्छे तथा बुरे संस्कार संक्रमण रोग की तरह फैलते हैं जैसे भक्त के हाथ से बोये गए बीज में भी भक्ति संस्कार प्रवेश होते हैं। जो उस अन्न को खाता है, उसमें भी भक्ति की प्रेरणा होती है।

यदि कोई नशा करने वाला तथा किसी प्रकार के अन्य विचारों को मन में मंथन करता हुआ हाली बीज बोता है तो उस बीज में भी उसके विचार प्रवेश होते हैं जो उस अन्न को खाने वाले को प्रभावित करते हैं।

उदाहरण :- एक बहन ने गुरू दीक्षा ले रखी थी। उसके घर पर गुरू जी आए तथा साथ में एक शिष्य भी था। उस बहन की बहन भी किसी कार्यवश उसी दिन आ गई।

उसका दामाद म‍ृत्यु को प्राप्त हो गया था। लड़की के छोटे-छोटे बच्चे थे। वह बहुत चिंतित थी। रह-रहकर विचार उठ रहे थे कि बेटी का निर्वाह कैसे होगा? बेटी तो उजड़ गई। देवर-जेठ किसी के नहीं होते। बच्चो को कौन पालेगा? हे भगवान! यह क्या बनी? कौन-से जन्म का पाप आड़े आ गया? उपदेशी बहन भोजन बनाने लगी तो उसकी बहन उसकी सहायता करने लगी। अधिक भोजन उस बहन ने बनाया जिसका दामाद मर गया था। संत-भक्त खाना खाकर सो गए। सुबह भक्त ने गुरू देव जी से कहा कि हे गुरूदेव! आज रात्रि में निंद्रा के दौरान मन बहुत दुःखी रहा। जैसे मेरा दामाद मर गया। बेटी के छोटे-छोटे बच्चे हैं। उनकी बेहद चिंता सताती रही। इनका क्या होगा? कैसे निर्वाह होगा? गुरू जी ने अपनी शिष्या से पूछा कि बेटी! रात्रि का भोजन किसने बनाया था? उसने उत्तर दिया कि मेरी छोटी बहन आई है, उसने बनाया था। संत ने पूछा कि उसको कोई कष्ट है क्या? शिष्या ने उत्तर दिया कि गुरूदेव! कष्ट तो बहुत ज्यादा है। लड़की के छोटे-छोटे बच्चे हैं। दामाद की म‍ृत्यु हो गई है। सारा-सारा दिन मेरी बहन इसी चिंता में रहती है। दिन में कई-कई बार यह कहती रहती है कि बेटी का क्या होगा? कैसे बच्चों का पालन करेगी?

गुरू जी ने शिष्य को बताया कि उस बेटी के विचार भोजन में प्रविष्ट हुए और खाने वाले को प्रभावित किया। मेरे को भी यही परेशानी सारी रात रही थी। इसी प्रकार यदि भक्ति नाम-स्मरण या आरती या संतों की वाणी का मनन करते-करते भोजन बनाया जाए तो खाने वाले में वे सुसंस्कार अच्छी प्रेरणा करते हैं। भक्ति की रूचि बढ़ती है। कोई हाली गाने-रागनी गाता हुआ बीज बोता है या खाना बनाने वाली गाने या रागनी गाती हुई भोजन बनाती है तो उस अन्न में वे संस्कार प्रवेश हो जाते हैं। उसे खाने वाले का स्वभाव भी उसी प्रकार बकवाद करने को प्रेरित होता है जिसका परिणाम वर्तमान (1997 के आसपास) में दिखाई दे रहा है। अच्छाई में कम बुराई में अधिक सँख्या में मानव लगा है।

यदि संतों की वाणी-पाठ-आरती-स्मरण करने वालों की सँख्या अधिक हो जाएगी तो वातावरण भक्तिमय हो जाएगा। प्रत्येक व्यक्ति के मन में भक्त जैसे भाव उपजेंगे। उस वातावरण को बनाने के लिए घर-घर में आरती, रमैणी तथा नित्य-नियम चलना चाहिए। गुरू से दीक्षा लेकर नाम का स्मरण करना चाहिए जिससे वातावरण में भक्ति के विचारों के तत्व अधिक भर जाएंगे तथा बुरे संस्कारों वाले विचार ऊपर उठ जाएंगे। भक्ति संस्कार ऑक्सीजन जानों तथा बुरे विचार कार्बन-डाईऑक्साईड समझें। ऑक्सीजन रूपी भक्ति संस्कार के सिलेंडर के सिलेंडर खोलने पड़ेंगे यानि सद्ग्रन्थ साहिब के पाठ पर पाठ करने पड़ेंगे तथा तीनों समय की संध्या (नित्य कर्म) करने होंगे। स्मरण करना होगा। भक्ति करने वालों की सँख्या बढ़ेगी तो भक्ति के विचार भी प‍ृथ्वी पर अधिक फैलेंगे जिनसे प्रत्येक के मन में शांति का आभास होगा। सत्संग करने किसी के घर जाते थे तो पहले दिन तो हमारा भी मन अशांत-सा हो जाता था। फिर प्रत्येक भक्त अपनी-अपनी रमैणी,

सुबह के नित्य-नियम, शाम की आरती तथा स्मरण करते, फिर सत्संग सुनाता, तब उस घर से बुरे विचार (कुसंस्कार) निकल जाते। सुसंस्कारों की अधिकता होने से मन शांत होता। जब हम सत्संग या पाठ करके अगले गाँव जाने लगते थे तो पूरा परिवार रोने लग जाता था। उनको इतनी शांति संत व भक्तों के संग में मिलती थी। उन संस्कारों का प्रभाव महीनों रहता है। यदि नाम लेकर प्रतिदिन की तीनों संध्या व स्मरण परिवार के लोग करने लग जाऐं तो वह शांति सदा बनी रहती है।

❖ जो बीड़ी-हुक्का में तमाखू (तम्बाकू) पीता है और वह बीज बोता है तो उस अन्न में भी तमाखू की वासना (सूक्ष्म तत्व) प्रवेश कर जाते हैं। उस अन्न को खाने वाले में भी तमाखू सेवन करने की प्रेरणा बन जाती है। जिस कारण से नशा तेजी से युवाओं में बढ़ रहा है। जब तक बच्चे हैं, तब तक तो पिता-चाचा-ताऊ, दादा जी के डर से तम्बाकू सेवन नहीं करते, परंतु युवा होते ही वे संस्कार प्रबल हो जाते हैं और नशे की आदत शीघ्र पड़ जाती है। मेरा उद्देश्य है कि मानव समाज से नशा तथा अन्य सर्व बुराई जड़ से समाप्त करके धरती पर स्वर्ग बनाऊँ। परमात्मा कबीर जी का कहा वचन साकार हुआ देखना चाहता हूँ। उन्हीं की प्रेरणा व शक्ति से यह अनमोल कार्य सफल हो सकता है। यह दास तथा मेरे अनुयाई सच्ची नीयत से इस मिशन की सफलता के लिए प्रयत्नशील हैं। सफलता की पूरी आशा है।

''सांसारिक चीं-चूं में ही भक्ति करनी पड़ेगी''

एक थानेदार घोड़ी पर सवार होकर अपने क्षेत्र में किसी कार्यवश जा रहा था। ज्येष्ठ (June) का महीना, दिन के एक बजे की गर्मी। हरियाणा प्रान्त। एक किसान रहट से फसल की सिंचाई कर रहा था। बैलों द्वारा कोल्हू की तरह रहट को चलाया जाता था। बाल्टियों की लड़ी (Chain) जो पूली (चक्री) के ऊपर चलती थी जिससे कूंए से पानी निकलकर खेत में जाने वाली नाली में गिरता था। रहट के चलने से जोर-जोर की चीं-चूं की आवाज हो रही थी। दरोगा तथा घोड़ी दोनों प्यास से व्याकुल थे। थानेदार ने पानी पीने तथा घोड़ी को पिलाने के लिए रहट की ओर प्रस्थान किया। रहट से हो रही जोर-जोर की चीं-चूं की आवाज से घोड़ी फड़क (डरकर दूर भाग) गई। थानेदार ने किसान से कहा कि इस चीं-चूं को बंद कर। किसान ने बैलों को रोक दिया। रहट चलना बंद हो गया। कूंए से पानी निकलना बंद हो गया। जो पानी पहले निकला था, उसे जमीन ने अपने अंदर समा लिया। दरोगा घोड़ी को निकट लाया तो देखा कि नाली में पानी नहीं था। दरोगा ने कहा, हे किसान! पानी निकाल। किसान ने बैल चला दिए, रहट से चीं-चूं की आवाज और पानी दोनों चलने लगे। घोड़ी फिर फड़क गई और एक एकड़ (200 फुट) की दूर पर जाकर रूकी। दरोगा ऊपर बैठा था। दरोगा ने फिर कहा कि किसान! शोर बंद कर। किसान ने बैल रोक दिए, पानी नाली से जमीन में जाते ही समाप्त था। घोड़ी को निकट लाया, पानी नहीं मिला तो फिर पानी निकालने का आदेश दिया। रहट चलते ही घोड़ी दौड़ गई। किसान ने कहा कि दरोगा जी!

इस रहट की चीं-चूं में ही पानी पीना पड़ेगा, नहीं तो दोनों मरोगे। दरोगा घोड़ी से उतरा, लगाम पकड़कर धीरे-धीरे घोड़ी को निकट लाया, चलते रहट में ही दोनों ने पानी पीया और जीवन रक्षा की। इसलिए सांसारिक कार्यों को करते-करते ही भक्ति, दान-धर्म, स्मरण करना पड़ेगा, अवश्य कीजिए।

❖ अब भक्ति से क्या होगा? आयु तो थोड़ी-सी शेष है।

जिला जींद में गाँव 'मनोरपुर' में भक्त रामकुमार जी के घर तीन दिन का पाठ तथा सत्संग हो रहा था। गाँव में पुरूष सत्संग को पाखण्ड मानते हैं क्योंकि पुराने जमाने में सत्संग का आयोजन वृद्ध स्त्रियाँ करती थी। रात्रि में सत्संग करती थी, दिन में पुत्रवधु को भाई-भतीजों की गालियों से कोसती (बद्दुआ देती) थी। कोई-कोई तो दूसरे के बिटोड़े से गोसे (उपले) तक चुरा लेती थी। कभी पकड़ी जाती थी तो बदनामी होती थी। इसी तरह की घटनाओं से सत्संग नाम से लोगों को एलर्जी थी। भक्त रामकुमार जी के पूरे परिवार ने दीक्षा ले रखी थी। उनको पता था कि यह सत्संग भिन्न है। जब रामकुमार जी के पिता जी को पता चला कि हमारे घर में बड़ा बेटा सत्संग करा रहा है तो बहुत बेइज्जती मानी और सोचा कि गाँव क्या कहेगा? इसलिए वह वृद्ध तीन दिन तक अपने बड़े बेटे के घर पर नहीं आया। छोटे बेटे के घर चौबारे में रहा। दिन में खेतों में चला जाए, रात्रि में चौबारे में हुक्का पीवे और दुःख मनावै कि ये कैसे दिन देख रहा हूँ।

रात्रि में दास (लेखक) ने सत्संग किया। लाऊड स्पीकर लगा रखा था। रामकुमार के लड़के को पता था कि दादा जी ऊपर चौबारे में है। उसने एक स्पीकर का मुख दादा जी के चौबारे की ओर कर दिया। सत्संग का वचन सुनना वृद्ध की मजबूरी बन गई। दो दिन सत्संग सुनकर वृद्ध तीसरे दिन पाठ के भोग पर रामकुमार जी के घर आ गया। रामकुमार जी की पत्नी ने बताया कि मैंने सोचा था कि बूढ़ा बात बिगाड़ने आया है। महाराज जी को गलत बोलेगा। पाठ का भोग लगने के पश्चात् रामकुमार जी के पिता जी मेरे सामने बैठ गए और कहने लगे, महाराज जी! मैं तो इस सत्संग से घना नाराज था, परंतु दो दिन आपकी बात सुनी, मेरे को झंझोड़कर रख दिया। मैंने तो मनुष्य जीवन का पूरा ही नाश कर दिया। मैंने आठ एकड़ जमीन और मोल ली, दोनों बेटों को पाला-पोसा, दिन-रात खेती के काम में लगा रहा। आपके विचारों से पता चला है कि मैंने तो जीवन नाश कर दिया। अब 75 वर्ष की आयु हो चुकी है। अब भक्ति से क्या बनेगा? यह बात कहकर वह वृद्ध रोने लगा। हिचकी लग गई। मैंने उसे सांत्वना देते हुए कहा कि आप विश्वास करो अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। एक उदाहरण तो गुरू जी से इस दास (रामपाल दास) ने सुना था। बताया कि जैसे कूंए में बाल्टी छूट गई हो और उसकी नेजू (रस्सी जो बाल्टी से बाँधी जाती है, जिससे बाल्टी द्वारा कूंए से पानी निकाला जाता है। पुराने समय में कूंए लगभग 100-150 फुट गहरे होते थे।) भी कूंए में जा रही हो। यदि दौड़कर नेजू को पकड़ने की कोशिश करने से नेजू की पूँछ (अंतिम सिरा) भी हाथ में आ जाए तो कुछ भी नहीं गया। बाल्टी भी मिल गई

और पानी भी प्राप्त हो गया। यदि यह विचार करे कि बाल्टी तो गई, जाने दे तो मूर्खता है। इसी प्रकार आपकी आयु रूपी नेजू की पुछड़ी (End) बची है। अब दीक्षा लेकर सर्व नशा त्यागकर मर्यादा में रहकर साधना करो, मोक्ष हो जाएगा। उसी समय उस भक्तात्मा ने दीक्षा ली और पूरी लगन के साथ भक्ति की। वह 85 वर्ष की आयु में शरीर त्यागकर गया। जीवन सफल किया। वह हुक्का पीता था। उसी दिन त्याग दिया और आजीवन हाथ भी नहीं लगाया। रामकुमार के छोटे भाई के परिवार ने भी नाम लिया। वृद्ध भक्त उनको स्वयं लेकर सत्संग आता था। भक्ति करने को कहता था। गाँव मनोरपुर के लोग आश्चर्यचकित थे कि इतना हुक्का पीने वाले ने कैसे हुक्का छोड़ दिया? हुक्का पीने वालों के पास भी नहीं बैठता।

एकै चोट सिधारिया जिन मिलन दा चाह।

हरियाणवी कहावत है कि :-

घाम का और ज्ञान का चमका–सा लाग्या करै।

शब्दार्थ :- भावार्थ है कि भादुआ के महीने में धूप (घाम) का जोर अधिक होता है। खेत में काम करने वालों को घाम मार जाता है। (घाम मारना = धूप से शरीर में हानि होना, जिस कारण से शरीर में गर्मी बढ़ जाती है, ज्वर हो जाता है। इसको कहते हैं घाम मार गया।) वह व्यक्ति वैद्य को कहता था कि मुझे तो पता भी नहीं चला कब घाम मार गया। वैद्य कहता था कि घाम का तो चमका-सा लगता है यानि अचानक प्रभाव पड़ जाता है। इसी प्रकार जिनको ज्ञान का प्रभाव होना हो तो एक-दो बिंदु पर ही ज्ञान हो जाता है, भक्ति पर लग जाता है।

''चौधरी जीता जाट को ज्ञान हुआ''

गाँव खेखड़ा, जिला-बागपत (उत्तर प्रदेश) में लगभग दो सौ पचहत्तर वर्ष पूर्व एक जीता राम जाट था। नौ सौ बीघा जमीन थी। गाँव का नम्बरदार था। सबसे धनी तथा पंचायती आदमी था। सत्य का पक्ष लेता था। झूठ को महत्व नहीं देता था। उसी गाँव (खेखड़ा) में एक संत घीसा दास जी उस समय में सत्संग किया करते थे। वे चमार जाति से थे। उस समय छुआछात चरम पर थी। संत घीसा दास जी को परमेश्वर कबीर जी लगभग सात-आठ वर्ष की आयु में जंगल में मिले थे। उनको यथार्थ ज्ञान तथा दीक्षा देकर अंतर्ध्यान हो गए थे। बड़े होकर संत श्री घीसा दास जी सत्संग करने लगे। आसपास के व्यक्ति सत्संग सुनकर दीक्षा लेकर संकटमुक्त होने लगे। दिन में अपने निर्वाह के लिए कार्य करते तथा रात्रि में सत्संग सुनते थे। महीने में दो दिन सत्संग करते थे। रात्रि के सत्संग में स्त्रियाँ-पुरूष दोनों जाते थे। गाँव में चर्चा चलने लगी कि रात्रि में स्त्रियों का जाना उचित नहीं है। कुछ भी अप्रिय घटना हो सकती है। इसलिए सत्संग को बंद करा दिया जाए। गाँव खेखड़ा की पंचायत हुई। पंचायत में सत्संग बंद कराने का निर्णय लिया गया और यह संदेश स्वयं पंचायत का प्रमुख चौधरी जीताराम जी को कहा गया। चौधरी जीताराम जी संत घीसाराम जी के घर गए। उस दिन सत्संग चल

रहा था। गाँव की पंचायत के फैसले की चर्चा पूरे गाँव में हो चुकी थी। जब चौधरी जीताराम जी पहुँचे तो सत्संग श्रोताओं को लगा कि चौधरी साहब जाट दिमाग के हैं। संत जी से झगड़ा करेंगे। जीताराम जी घर से लाठी लेकर चले थे जो रास्ते में एक वृक्ष के साथ खड़ी करके आगे चले। विचार आया कि भक्त कोई झगड़ा थोड़े-ही करते हैं। अच्छी सभा में लाठी लेकर जाना पंचायती को शोभा नहीं देता। सत्संग चल रहा था। चौधरी साहब ने विचार किया कि कुछ इसकी बात सुनता हूँ, फिर कह-सुन लूँगा। सत्संग में वही ज्ञान बताया गया जो आप जी हरलाल जी के प्रकरण में पढ़ आए हैं। चौधरी साहब तो भावुक हो गए। आँखों से आंसूओं की धारा बह चली। उठकर संत घीसा जी के चरणों में सिर रख दिया और कहा कि हे गुरूदेव! मुझ अपराधी को मार चाहे छोड़, गलती बहुत बड़ी कर दी है। मैं तुच्छ जीव सत्संग बंद करने का आदेश लेकर आया हूँ। क्षमा करो प्रभु। आप दिल खोलकर सत्संग करो, कोई नहीं रोकेगा। संत घीसा जी ने कहा कि चौधरी साहब! जो काम करने आए थे, वह कीजिए। जीता जाट फिर रोने लगा और बोला, क्षमा करो, क्षमा करो, मुझे दीक्षा दो। चौधरी जीता राम जाट जी भक्त बन गए। स्वयं भी रात्रि में सत्संग सुनने लगा। गाँव खेखड़ा के घर-घर में चौधरी साहब जीतराम जी की संत घीसाराम जी की शरण में जाने की निंदा होने लगी। कहने लगे संत घीसाराम सेवड़ा है, जादू-जंत्र जानता है। गाँव के चौधरी पर तांत्रिक क्रिया करके अपने वश कर लिया है। सम्मोहन जंत्र-मंत्र जानता है। चौधरी जीताराम जी के घर वाले लड़के तथा भाई-चाचा-ताऊ सब जीताराम जाट तथा घीसाराम संत के विरोधी हो गए। गाँव वाले चौधरी जीताराम से कहने लगे कि चौधरी साहब! बुढ़ापे (वृद्ध अवस्था) में आप भी बिगड़ गए। चौधरी जीताराम जी को आध्यात्मिक घाम मार गया था यानि ज्ञान का प्रबल प्रभाव हो गया था। वह कहते थे कि हे गाँव वालो! मेरे तो भाग्य जाग गए जो मैं भक्त बन गया और आपकी नजर में बिगड़ गया। भगवान करे मेरे की ढ़ब (तरह) तुम सारे बिगड़ जाओ। बिना बिगड़े काम नहीं चलेगा। कुछ दिनों के पश्चात् गाँव की पंचायत हुई और संत घीसादास जी तथा भक्त जीताराम जी को गाँव छोड़ने का फरमान सुना दिया। दोनों गुरू-शिष्य तुरंत गाँव छोड़कर दूर स्थान पर एक गाँव में सत्संग करके जनता को समझाने लगे। बहुत से व्यक्ति अनुयाई हो गए। संतों के चले जाने के पश्चात् गाँव खेखड़ा में अकाल मृत्यु होने लगी। पंचायतियों के घरों में परमात्मा का प्रकोप प्रारम्भ हो गया। किसी के चारे में आग लगे, किसी के पशु मरने लगे। किसी के परिवार में प्रेत बोलने लगे, किसी की बेटी विधवा हो गई, किसी को अधरंग की शिकायत। गाँव में पशुओं में रोग फैल गया। गाँव के कुछ व्यक्ति किसी बूझा-पूछा करने वाले के पास गाँव में हो रहे उपद्रव का कारण जानने के लिए गए। बूझा-पूछा वाले ने बताया कि आपके गाँव में दो संत-भक्त रहते थे, वे गाँव से चले गए हैं। वे वापिस आएंगे तो गाँव बसेगा अन्यथा उजड़ जाएगा। उन व्यक्तियों ने गाँव में आकर पंचायत करके सब बात बताई। गाँव के गणमान्य व्यक्ति संत-भक्त को वापिस लाने के लिए

उस गाँव में गए। भक्त जीता दास ने गुरू जी घीसादास जी से कहा कि लगता है गुरूदेव! यहाँ से भी निकलवाने गाँव वाले आ गए हैं। देखो! वे आ रहे हैं। संत घीसा दास जी बोले, रख लो चद्दर कंधे पर, चलते बनेंगे। इतने में गाँव के चौधरी निकट आ गए और अपने-अपने सिर के साफे (खण्डके) संत घीसा व भक्त जीता जी के चरणों में रख दिए। सब लोग बोले, महाराज जी! गलती क्षमा करो। आपके आने के पश्चात् गाँव उजड़ने लग रहा है। बचाया जाए तो बचा लो। नहीं तो हम भी यहीं आपके पास ही रहेंगे। उस गाँव के व्यक्ति भी इकट्ठे हो गए। सर्व घटना का पता चला। वर्तमान गाँव वाले कहने लगे कि चौधरियो! तुम बसोगे तो हम उजड़ेंगे। जब से ये दो देवता गाँव में आए हैं, गाँव में किसी की तू-तू, मैं-मैं भी नहीं हुई। दो बार बारिश हो चुकी है। देखो! फसल लहला रही हैं। खेखड़ा वालों ने विशेष विनय की तो दोनों महापुरूषों ने लौटने की हाँ कर दी और वर्तमान गाँव वालों से कहा कि हम समय-समय पर आते रहेंगे। प्रत्येक पूर्णमासी को आप खेखड़ा आया कीजिए। परमात्मा कबीर जी सब ठीक रखेंगे। दोनों महापुरूषों के आते ही पूरे गाँव में पूर्ण शांति हो गई। पशु धन स्वस्थ हो गया। अगले दिन भारी बारिश हो गई। किसान लोग फूले नहीं समा रहे थे। 36 बिरादरी खुश थी। सब उपद्रव बंद हो गए। आज तक उस गाँव में संत घीसा दास जी तथा भक्त जीता दास जी के नाम के मेले लगते हैं। संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

गरीब, जिस मण्डल साधु नहीं, नदी नहीं गुंजार।
तज हंसा वह देशड़ा, जम की मोटी मार।।

शब्दार्थ :- जिस क्षेत्र में महात्मा, गुरूजन नहीं होते और नदी आसपास न बह रही हो। हे भक्त! उस देश को त्याग दे। वहाँ काल की भयंकर प्रताड़ना है।

इसलिए हे पाठकजनो! जब भी जिस आयु में सतगुरू मिल जाए, भक्ति प्रारम्भ कर देना। संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

गरीब, चली गई सो जान दे, ले रहती कूं राख।
उतरी लाव चढ़ाईयो, करो अपूठी चाक।।

भावार्थ :- हे मानव! जो आयु बिना सतगुरू मिले बीत चुकी है, वह तो व्यर्थ गई। उसकी चिंता छोड़कर सच्ची लगन से शेष बची आयु में भक्ति करके कल्याण करवा ले। भक्ति पर लगने के पश्चात् संसारिक कार्य भी आसान हो जाऐंगे जैसे कूँए से पानी निकालते समय नेजू (बाल्टी से बँधी रस्सी) चक्र से उतर जाती तो बाल्टी को खींचना कठिन हो जाता था। नेजू को फिर से चक्र पर चढ़ाकर बाल्टी खींचना बहुत आसान हो जाता है। सतगुरू की शरण में आने से पहले लाव (रस्सी) चक्र से उतरी हुई के समान पानी निकालना कठिन हो रहा था। उसी प्रकार सब कार्य कठिनता से बन रहे थे। भक्ति शुरू करते ही कार्य आसानी से बनने लगे जैसे रस्सी चक्र पर चढ़ने के पश्चात् पानी आसानी से निकलता है। यह विचार नहीं करना चाहिए कि अब तो आयु कम रहती है। अब क्या भक्ति करेंगे। जब भी सत्संग से ज्ञान हो जाए। उसी आयु में दृढ़ता व लगन से भक्ति पर लग जाना चाहिए।

भावार्थ :- जो आयु चली गई, उसकी चिंता छोड़कर शेष की रक्षा करो यानि भक्ति, दान-सेवा में लगा दो। जैसे पुराने समय में कूंए से खेती की सिंचाई के लिए चमड़े की चड़स प्रयोग होती थी जिसमें दो-तीन क्विंटल पानी भर जाता था। उसको काष्ठ की चक्री के ऊपर लाव (मोटी रस्सी) चढ़ाकर बाँधकर खींचते थे। यदि लाव (रस्सी) चक्री से उतर जाती थी (फिसल जाती थी) तो उसे खींचना कठिन हो जाता था। उसको जैसे-तैसे पुनः चक्री (काष्ट के मोटे घेरे) पर चढ़ाया जाता था जिससे चड़स को बाहर निकालना आसान होता था जो उससे लाभ लेने का यथार्थ तरीका है। इसलिए हे मानव! यदि गुरू शरण नहीं ली है तो आपकी लाव उतरी पड़ी है, जीवन का प्रत्येक कार्य मुसीबत बना खड़ा है। उस जीवन की लाव को पुनः पुली (चक्री) पर चढ़ा लो। फिर चलाओ, आसान हो जाएगा यानि गुरू जी की शरण लेकर अपने जीवन की राह को आसान बनाओ।

''वैश्या का उद्धार''

❖ सत्संग सुनने से जीवन सुधर जाता है :-

परमेश्वर कबीर जी रात्रि में घर-घर में सत्संग करते थे। दिन में अपने निर्वाह के लिए सब श्रोता तथा कबीर जी कार्य करते थे।

एक रात्रि में सत्संग चल रहा था। थोड़ी दूरी पर काशी शहर की प्रसिद्ध वैश्या चम्पाकली का आलीशान मकान था। उस रात्रि में वैश्या को ग्राहकों का टोटा था। जिस कारण से इंतजार में जाग रही थी। उसको परमात्मा कबीर जी के मुख कमल से प्रिय अमतवाणी सुनाई दी। सत्संग में बताया गया कि मानव (स्त्री/पुरूष) का जीवन बड़े पुण्यों से प्राप्त होता है। जो स्त्री-पुरूष भक्ति नहीं करते, दान-सेवा नहीं करते, वे परमात्मा के चोर हैं। (गीता अध्याय 3 श्लोक 12 में भी कहा कि जो व्यक्ति परमात्मा से प्राप्त धन का कुछ अंश दान-धर्म में लगाए बिना स्वयं ही पेट भरता रहता है, वह तो परमात्मा का चोर ही है।) जो मानव चोरी, डकैती, ठगी, वैश्यागमन करते हैं, वे महाअपराधी हैं। जो स्त्रियाँ वैश्या का धंधा करती हैं, वे भी महाअपराधी हैं। परमात्मा के दरबार में उनको कठिन दण्ड दिया जाएगा। मानव जीवन शुभ कर्म करने तथा भक्ति करने के लिए प्राप्त होता है।

कबीर, चोरी जारी वैश्या वति, कबहु ना करयो कोए।
पुण्य पाई नर देही, ओच्छी ठौर न खोए।।

शब्दार्थ :- हे मानव! चोरी-जारी यानि परस्त्री गमन, वैश्यावति यानि परपुरूषों से धन के लोभ में स्त्री का संभोग करना कोई भी ना करना। यह मानव शरीर (स्त्री/पुरूष) बहुत पुण्यों से प्राप्त हुआ है। इससे पाप कार्यों को करके गलत स्थान पर जाकर नष्ट मत कर। शुभ कर्म कर, गुरू धारण करके अपना कल्याण करवाओ।

मानव शरीर प्राप्त प्राणी को चाहिए कि सर्वप्रथम पूर्ण गुरू की शरण में जाकर दीक्षा प्राप्त करे। फिर आजीवन गुरू जी की मर्यादा में रहकर साधना तथा

सेवा, दान-धर्म करता रहे। अपना दैनिक कार्य भी करे, परंतु सर्व बुराई त्याग दे। उसका कल्याण अवश्य होता है। अध्यात्म ज्ञान के अभाव से मानव (स्त्री/पुरूष) केवल धन उपार्जन को अपना मुख्य लक्ष्य बनाकर जीवन सफर को तय करता है। यदि आपके पास अरब-खरब तक धन-संपत्ति है जो आपने पूरे जीवन में अट-पट, छल-कपट करके संग्रह की है। अचानक मृत्यु हो जाती है। सारे जीवन का जोड़ा धन तो यहीं रह गया, साथ तो शरीर भी नहीं गया, साथ गए तो वे पाप जो पूरे जीवन में माया के संग्रह में हुए थे।

काया तेरी है नहीं, माया कहाँ से होय। गुरू चरणों में ध्यान रख, इन दोनों को खोय।।
कबीर, सब जग निर्धना, धनवंता ना कोय। धनवान वह जानिये, जापे राम नाम धन होय।।

भावार्थ :- जिस काया को रोगमुक्त कराने के लिए मानव अपनी संपत्ति को भी बेचकर उपचार कराता है। कहा है कि काया भी आपके साथ नहीं जाएगी, माया की तो बात ही क्या है। पूर्ण गुरू जी से दीक्षा लेकर दिन-रात्रि भक्ति कर। गुरू जी के बताए ज्ञान को आधार बनाकर जीवन की राह पर चल। काया तथा माया से मोह हटाकर भक्ति धन संग्रह कर।

हे मानव! मानव का पिछला इतिहास देख ले।

सर्व सोने की लंका थी, रावण से रणधीरं।
एक पलक में राज नष्ट हुआ, जम के पड़े जंजीरं।।
गरीब, भक्ति बिना क्या होत है, भ्रम रहा संसार।
रती कंचन पाया नहीं, रावण चली बार।।

भावार्थ :- संत गरीबदास जी ने भी इसी बात का समर्थन किया कि भक्ति बिना जीव को कोई लाभ नहीं होता। माया जोड़ने के लिए आजीवन भटकता रहता है। श्रीलंका के राजा रावण के पास अनन्त धन, स्वर्ण आदि था, परंतु संसार त्यागकर जाते समय एक ग्राम स्वर्ण भी साथ नहीं ले जा सका। सत्य भक्ति सत्य पुरूष की न करने से यमदूतों के द्वारा बेल (हथकड़ी) बाँधकर ऊपर यमराज के पास ले जाया गया। नरक में डाला गया। इसलिए हे मानव! अशुभ कर्मों से डर, सत्य भक्ति गुरू धारण करके कर।

शंका समाधान करते हुए परमेश्वर कबीर जी ने सत्संग में बताया कि आध्यात्मिक ज्ञान के न होने के कारण अच्छे व्यक्तियों से भी पाप हुए हैं। जब उन्होंने सत्संग सुना तो सर्व अपराध त्यागकर भक्ति करके अपना कल्याण कराया है। परमात्मा कबीर जी ने बताया कि मेरे पास साधना के वे यथार्थ मंत्र हैं जो सर्व पापों को नष्ट कर देते हैं। पुण्य बच जाते हैं। (जैसे वर्तमान में वैज्ञानिकों ने ऐसी औषधि खोजी है जो खेती में डालने से घास व खरपतवार को नष्ट कर देती है, फसल सुरक्षित रहती है।) ये मंत्र मैं अपने लोक से लेकर आया हूँ।

सोहं शब्द हम जग में लाए। सार शब्द हम गुप्त छिपाए।।

शब्दार्थ :- शब्दार्थ ऊपर किया है।

(ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 95 मंत्र 2 में भी प्रमाण है कि "परमात्मा इस संसार

में प्रत्यक्ष प्रकट होकर अपनी अमृतवाणी द्वारा मुक्ति के सत्य मार्ग की प्रेरणा करता है। वह परमात्मा सब देवों का देव यानि सर्व का मालिक भक्ति के गुप्त नामों का आविष्कार करता है।) यदि कोई महापापी भी है, सत्य साधना करने लग जाता है और भविष्य में कोई पाप नहीं करता है तो उसके सर्व पाप समाप्त हो जाते हैं, भक्ति करके अपना कल्याण करा सकता है।

उपरोक्त अमृतवचन सुनकर वह बहन वैश्या जैसे गहरी नींद से जागी हो। कांपने लग गई। घर में ताला लगाकर सत्संग स्थल पर गई। पीछे ही महिलाओं की ओर बैठ गई। सत्संग समाप्त होने के पश्चात् आवाज लगी कि जो दीक्षा लेना चाहता है, वह आगे गुरू देव जी के पास आ जाए। कुछ स्त्री तथा पुरूष उठकर आगे आए। वह वैश्या भी आई और गुरूदेव जी को अपना परिचय दिया और बताया कि मैंने तो 40 वर्ष की आयु में प्रथम बार ये उपकारी वचन सुनने को मिले हैं। हे परमात्मा! क्या मेरे जैसी पापिन का भी कल्याण संभव है? वैसे तो आप जी ने सर्व समाधान सत्संग में बता दिया, परंतु जब अपने घृणित जीवन की ओर झांकती हूँ तो ग्लानि होती है तथा विश्वास नहीं हो रहा कि मेरे जैसे अपराधी को क्षमा कर दिया जाएगा। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि :-

कबीर, जब ही सत्यनाम हृदय धरा, भयो पाप को नाश।
जैसे चिनंगी अग्नि की, पडै पुरानै घास।।

भावार्थ :- जैसे करोड़ टन सूखे घास का ढ़ेर लगा हो। यदि उसमें एक तीली माचिस की जलाकर डाल दी जाए तो उस घास को राख बना देती है। फिर हवा चलेगी जो उस राख को भी उड़ाकर ले जाएगी। काम-तमाम हुआ। इसी प्रकार करोड़ों जन्मों के भी पाप क्यों न हों, मेरे सच्चे मंत्र का जाप उसे जलाकर राख कर देगा। भविष्य में कोई गलती न करना, कल्याण हो जाएगा।

(यजुर्वेद के अध्याय 8 मंत्र 13 में भी यही प्रमाण है कि परमात्मा अपने भक्त (एनसः एनसः) घोर पापों का नाश कर देता है। जीव का कल्याण कर देता है।)

उस बहन ने पाप का कार्य (वैश्या का धंधा) त्याग दिया। परमात्मा कबीर जी से दीक्षा लेकर मर्यादा का पालन करते हुए आजीवन साधना करके चम्पाकली ने मोक्ष प्राप्त किया।

''रंका-बंका की कथा''

परमेश्वर कबीर जी से चम्पाकली ने पूछा कि हे भगवान! इस पाप की संपत्ति और रूपये का क्या करूं? परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि बेटी! इस नरक के धन को दान कर दे। घर पर जाकर चम्पाकली ने विचार किया कि यदि सर्व धन दान कर दिया तो खाऊँगी क्या? कोई कार्य और है नहीं। चम्पाकली सत्संग में अधिक समय जाने लगी। एक दिन सत्संग में बताया गया कि :-

रंका (पुरूष) तथा बंका (स्त्री) परमात्मा के परम भक्त थे। तत्वज्ञान को ठीक से समझा था। उसी आधार से अपना जीवन यापन कर रहे थे। उनकी एक बेटी

थी जिसका नाम अबंका था। (अंबिका को अबंका कहते थे।) एक दिन नामदेव भक्त ने अपने गुरू जी से कहा कि गुरूदेव आपके भक्त रंका व बंका बहुत निर्धन हैं। आप उन्हें कुछ धन दे दो तो उनको जंगल से लकडियाँ लाकर शहर में बेचकर निर्वाह न करना पड़े। दोनों जंगल में जाते हैं। लकड़ियाँ चुगकर लाते हैं। भोजन का काम कठिनता से चलता है। गुरूदेव बोले, भाई! मैंने कई बार धन देने की कोशिश की है, परंतु ये सब दान कर देते हैं। दो-तीन बार तो मैं स्वयं वेश बदलकर लकड़ी खरीदने वाला बनकर गया हूँ। उनकी लकड़ियों की कीमत अन्य से सौ गुणा अधिक दी थी। उनकी लकड़ियाँ प्रतिदिन दो-दो आन्ना की बिकती थी। मैंने दस रूपये में खरीदी थी। उन्होंने चार आन्ना रखकर शेष रूपये मेरे को सत्संग में दान कर दिए। अब आप बताओ कि कैसे धन दूँ? भक्त नामदेव जी ने फिर आग्रह किया कि अबकी बार धन देकर देखो, अवश्य लेंगे। गुरू तथा नामदेव जी उस रास्ते पर गए जिस रास्ते से रंका-बंका लकड़ी लेकर जंगल से आते थे। गुरू जी ने रास्ते में सोने (Gold) के बहुत सारे आभूषण डाल दिए जो लाखों रूपयों की कीमत के थे। नामदेव तथा गुरूदेव एक झाड़ के पीछे छिपकर खड़े हो गए। रंका आगे-आगे चल रहा था सिर पर लकडियाँ रखकर तथा उसके पीछे लकडियाँ लेकर बंका दो सौ फुट के अंतर में चल रही थी। भक्त रंका जी ने देखा कि स्वर्ण आभूषण बेशकीमती हैं और बंका नारी जाति है, कहीं आभूषणों को देखकर लालच आ जाए और अपना धर्म-कर्म खराब कर ले। इसलिए पैरों से उन आभूषणों पर मिट्टी डालने लगा। भक्तमति बंका भी पूरे गुरू की चेली थी। उसने देखा कि पतिदेव गहनों पर मिट्टी डाल रहा है, उद्देश्य भी जान गई। आवाज लगाकर बोली कि चलो भक्त जी! क्यों मिट्टी पर मिट्टी डाल रहे हो। बंका जी समझ गए कि इरादे की पक्की है, कच्ची नहीं है। दोनों उस लाखों के धन का उल्लंघन करके नगर को चले गए। गुरू जी ने कहा कि देख लिया भक्त नामदेव जी! भक्त हों तो ऐसे।

एक दिन शाम 4 बजे गुरू जी सत्संग कर रहे थे। सत्संग स्थल रंका जी की झोंपड़ी से चार एकड़ की दूरी पर था। रंका तथा बंका दोनों सत्संग सुनने गए हुए थे। उनकी बेटी अबंका (आयु 19 वर्ष) झोंपड़ी के बारह चारपाई पर बैठी थी। झोंपड़ी में आग लग गई। सब सामान जल गया। अबंका दौड़ी-दौड़ी आई और देखा कि सत्संग चल रहा था। गुरू जी सत्संग सुना रहे थे। श्रोता विशेष ध्यान से सत्संग सुनने में मग्न थे। शांति छायी थी। अबंका ने जोर-जोर से कहा कि माता जी! झोंपड़ी में आग लग गई। सब सामान जल गया। माता बंका उठी और बेटी को एक ओर ले गई और पूछा कि क्या बचा है? बेटी अबंका ने बताया कि एक चारपाई बाहर थी, वही बची है। भक्त रंका भी उठकर आ गया था। दोनों ने कहा कि बेटी! उस चारपाई को भी आग के हवाले करके आजा, सत्संग सुन ले। झोंपड़ी नहीं होती तो आग नहीं लगती, आग नहीं लगती तो सत्संग के वचनों का आनंद भंग नहीं होता। अबंका गई और चारपाई को झोंपड़ी वाली आग में डालकर सत्संग सुनने आ गई। सत्संग के पश्चात् घर गए। उस समय का खाना सत्संग में लंगर में खा लिया

था। रात्रि में जली झोंपड़ी के पास एक पेड़ के नीचे बिना बिछाए सो गए। भक्ति करने के लिए वक्त से उठे तो उनके ऊपर सुंदर झोंपड़ी थी तथा सर्व बर्तन तथा आटा-दाल आदि-आदि मिट्टी के घड़ों में भरा था। उसी समय आकाशवाणी हुई कि भक्त परिवार! यह परमात्मा की मेहर है। आप इस झोंपड़ी में रहो, यह आज्ञा है गुरूदेव की। तीनों प्राणियों ने कहा कि जो आज्ञा गुरूदेव! सूर्योदय हुआ तो नगर के व्यक्ति देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि जो झोंपड़ी दूसरे वक्ष के साथ डली थी, उस पुरानी की राख पड़ी थी। नई झोंपड़ी एक सप्ताह से पहले बन नहीं सकती थी। सबने कहा कि यह तो इनके गुरू जी का चमत्कार है। नगर के लोग देखें और गुरू जी से दीक्षा लेने का संकल्प करने लगे। हजारों नगरवासियों ने दीक्षा ली। (यह सब लीला परमेश्वर कबीर जी ने काशी शहर में प्रकट होने से लगभग दो सौ वर्ष पूर्व की थी। उस समय भक्त नामदेव जी को भी शरण में लिया था।)

उपरोक्त कथा प्रसंग सुनकर भक्तमति चम्पाकली के मन का भय समाप्त हो गया और सर्व सम्पत्ति तथा धन परमात्मा कबीर गुरू जी को समर्पित कर दिया। परमात्मा ने कहा कि बेटी! जब तू ही मेरी हो गई तो सम्पत्ति तो अपने आप ही मेरी हो गई। इस मेरी सम्पत्ति को उतनी रख ले जितने में तेरा निर्वाह चले, शेष दान करती रह। भक्तमति चम्पाकली ने वैसा ही किया। मकान रख लिया और अधिकतर रूपये गुरू जी की आज्ञानुसार भोजन-भण्डारे (लंगर) में दान कर दिए।

''कबीर जी द्वारा शिष्यों की परीक्षा लेना''

बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी द्वारा अनेकों अनहोनी लीलाऐं करने से प्रभावित होकर चौंसठ लाख शिष्य बने थे। परमेश्वर तो भूत-भविष्य तथा वर्तमान की जानते हैं। उनको पता था कि ये सब चमत्कार देखकर तथा इनको मेरे आशीर्वाद से हुए भौतिक लाभों के कारण मेरी जय-जयकार कर रहे हैं। इनको मुझ पर विश्वास नहीं है कि मैं परमात्मा हूँ। परंतु देखा-देखी कहते अवश्य हैं कि कबीर जी हमारे सद्गुरू जी तो स्वयं परमात्मा आए हैं। अपने लाभ भी बताते थे। एक दिन परमेश्वर कबीर जी ने शिष्यों की परीक्षा लेनी चाही कि देखूं तो कितने ज्ञान को समझे हैं। यदि इनको विश्वास ही नहीं है तो ये मोक्ष के अधिकारी नहीं हैं। ये तो मेरे सिर पर व्यर्थ का भार हैं। यह विचार करके एक योजना बनाई। अपने परम शिष्य रविदास से कहा कि एक हाथी किराए पर लाओ।

काशी नगर में एक सुंदर वैश्या थी। उसके मकान से थोड़ी दूरी पर किसी कबीर जी के भक्त का मकान था। कबीर जी उसके आँगन में रात्रि के समय सत्संग कर रहे थे। उस दिन उस वैश्या के पास भी ग्राहक नहीं थे। सत्संग के वचन सुनने के लिए वह अपने मकान की छत पर कुर्सी लेकर बैठ गई। पूर्ण रात्रि सत्संग सुना और उठकर सत्संग स्थल पर गई तथा परमात्मा कबीर जी को अपना परिचय दिया तथा कहा कि गुरू जी! क्या मेरे जैसी पापिनी का भी उद्धार हो सकता है। मैंने अपने जीवन में प्रथम बार आत्म कल्याण की बातें सुनी हैं। अब मेरे पास दो ही

विकल्प हैं कि या तो मेरा कल्याण हो, या मैं आत्महत्या करके पापों का प्रायश्चित करूँ। परमात्मा कबीर जी ने कहा, बेटी! आत्महत्या करना महापाप है। भक्ति करने से सर्व पाप परमात्मा नष्ट कर देता है। आप मेरे से उपदेश लेकर साधना करो और भविष्य में पापों से बचकर रहना। उस बहन ने प्रतिज्ञा की और परमात्मा कबीर जी से दीक्षा लेकर भक्ति करने लगी तथा जहाँ भी प्रभु कबीर जी सत्संग करते, वहीं सत्संग सुनने जाने लगी। जिस कारण से कबीर जी के भक्तों को उसका सत्संग में आना अच्छा नहीं लगता था। वे उस लड़की को कहते थे कि तेरे कारण गुरू जी की बदनामी होती है। तू सत्संग में मत आया कर। तू सबसे आगे गुरू जी के पास बैठती है, वहाँ ना बैठा कर। लड़की ने ये बातें गुरू कबीर जी को बताई और फूट-फूटकर रोने लगी। परमेश्वर जी ने कहा कि बेटी! आप सत्संग में आया करो। कबीर जी ने सत्संग वचनों द्वारा स्पष्ट किया कि मैला कपड़ा साबुन और पानी से दूर रहकर निर्मल कैसे हो सकता है? इसी प्रकार पापी व्यक्ति सत्संग से तथा गुरू से दूर रहकर आत्म कल्याण कैसे करा सकता है? भक्त वैश्या तथा रोगी से नफरत नहीं करते, सम्मान करते हैं। उसको ज्ञान चर्चा द्वारा मोक्ष प्राप्ति की प्रेरणा करते हैं। परमात्मा कबीर जी के बार-बार समझाने पर भी भक्तजन उस लड़की को सत्संग से मना करते रहे तथा बहाना करते थे कि तेरे कारण गुरू जी काशी में बदनाम हो गए हैं। काशी के व्यक्ति हमें बार-बार कहते हैं कि तुम्हारे गुरू जी के पास वैश्या भी जाती है। वह काहे का गुरू है।

उस लड़की से कहा कि बेटी! आप मेरे साथ हाथी पर बैठकर चलोगी। लड़की ने कहा, जो आज्ञा गुरूदेव! अगले दिन सुबह लगभग 10:00 बजे हाथी के ऊपर तीनों सवार होकर काशी नगर के मुख्य बाजार में से गुजरने लगे। संत रविदास जी हाथी को चला रहे थे। लड़की रविदास जी के पीछे कबीर जी के आगे यानि दोनों के बीच में बैठी थी। कबीर जी ने एक बोतल में गंगा का पानी भर लिया। उस बोतल को मुख से लगाकर घूंट-घूंटकर पी रहे थे। लोगों को लगा कि कबीर जी शराब पी रहे हैं। शराब के नशे में वैश्या को सरेआम बाजार में लिये घूम रहे हैं। काशी के व्यक्ति एक-दूसरे को बता रहे हैं कि देखो! बड़े-बड़े उपदेश दिया करता कबीर जुलाहा, आज इसकी पोल-पट्टी खुल गई है। ये लोग सत्संग के बहाने ऐसे कर्म करते हैं। काशी के व्यक्ति कबीर जी के शिष्यों को पकड़-पकड़ लाकर दिखा रहे थे कि देख तुम्हारे परमात्मा की करतूत। शराब पी रहे हैं, वैश्या को लिए सरेआम घूम रहा है। यह लीला देखकर वे चौंसठ लाख नकली शिष्य कबीर जी को त्यागकर चले गए। पहले वाली साधना करने लगे। लोक-लाज में फँसकर गुरू विमुख हो गए।

परमात्मा कबीर जी विशेषकर ऐसी लीला उस समय किया करते जिस समय दिल्ली का सम्राट सिकंदर लोधी काशी नगरी में आया हो। उस समय सिकंदर लोधी राजा काशी में उपस्थित था। काजी-पंडितों ने राजा को शिकायत कर दी कि कबीर जुलाहे ने जुल्म कर दिया। शर्म-लाज समाप्त करके सरेआम वैश्या के

साथ हाथी के ऊपर गलत कार्य कर रहा था। शराब पी रहा है। राजा ने तुरंत पकड़कर गंगा में डुबोकर मारने का आदेश दिया। अपने हाथों से राजा सिकंदर ने हाथों में हथकड़ी तथा पैरों में बेड़ी तथा गले में तोक लगाई। नौका में बैठाकर गंगा दरिया के मध्य में ले जाकर दरिया में सिपाहियों ने पटक दिया। हथकड़ी, बेड़ी तथा तोक अपने आप टूटकर जल में गिर गई। परमात्मा जल पर पद्म आसन लगाकर बैठ गए। नीचे से गंगा जल चक्कर काटता हुआ बह रहा था। परमात्मा जल के ऊपर आराम से बैठे थे। कुछ समय उपरांत परमात्मा कबीर जी गंगा के किनारे आ गए। सिपाहियों ने शेखतकी के आदेश से कबीर जी को पकड़कर नौका में बैठाकर कबीर परमात्मा के पैरों तथा कमर पर भारी पत्थर बाँधकर हाथ पीछे को रस्सी से बाँधकर गंगा दरिया के मध्य में फैंक दिया। रस्से टूट गए। पत्थर जल में डूब गए। परमेश्वर कबीर जी जल के ऊपर बैठे रह गए। जब देखा कि कबीर गंगा दरिया में डूबा नहीं तो क्रोधित होकर शेखतकी ने राजा से कहकर तोब के गोले मारने का आदेश दे दिया। पहले कबीर जी को पत्थर मारे, गोली मारी, तीर मारे। अंत में तोब के गोले चार पहर यानि बारह घण्टे तक कबीर जी के ऊपर चलाए। कोई तो वहीं किनारे पर गिर जाता, कोई दूसरे किनारे पर जाकर गिरता, कोई दूर तालाब में जाकर गिरता। एक भी गोला, पत्थर, बंदूक की गोली या तीर परमेश्वर कबीर जी के आसपास भी नहीं गया। इतना कुछ देखकर भी काशी के व्यक्ति परमेश्वर को नहीं पहचान पाए। तब परमेश्वर कबीर जी ने देखा कि ये तो अक्ल के अँधे हैं। उसी समय गंगा के जल में समा गए और अपने भक्त रविदास जी के घर प्रकट हो गए। दर्शकों को विश्वास हो गया कि कबीर जुलाहा गंगा जल में डूबकर मर गया है। उसके ऊपर रेत व रेग (गारा) जम गई होगी। सब खुशी मनाते हुए नाचते-कूदते हुए नगर को चल पड़े। शेखतकी अपनी मण्डली के साथ संत रविदास जी के घर यह बताने के लिए गया कि जिस कबीर जी को तुम परमात्मा कहते थे, वह डूब गया है, मर गया है। संत रविदास जी के घर पर जाकर देखा तो कबीर जी इकतारा (वाद्य यंत्र) बजा-बजाकर शब्द गा रहे थे। शेखतकी की तो माँ सी मर गई। राजा सिकंदर के पास जाकर बताया कि वह आँखें बचाकर भाग गया है। रविदास के घर बैठा है। यह सुनकर बादशाह सिंकदर लोधी संत रविदास जी की कुटी पर गया। परमात्मा कबीर जी वहाँ से अंतर्ध्यान होकर गंगा दरिया के मध्य में जल के ऊपर समाधि लगाकर जैसे जमीन पर बैठते हैं, ऐसे बैठ गए। रविदास से पूछा कि कबीर जी कहाँ पर हैं? संत रविदास जी ने कहा कि हे बादशाह जी! वे पूर्ण परमात्मा हैं, वे ही अलख अल्लाह हैं। आप इन्हें पहचानो। वे तो मर्जी के मालिक हैं। जहाँ चाहें चले जाएें। मुझे कुछ नहीं पता, कहाँ चले गए? वे तो सबके साथ रहते हैं। उसी समय किसी ने बताया कि कबीर जी तो गंगा के बीच में बैठे भक्ति कर रहे हैं। सब व्यक्ति तथा राजा व सिपाही गंगा दरिया के किनारे फिर से गए। राजा ने नौका भेजकर मल्लाहों के द्वारा संदेश भेजा कि बाहर आऐं। मल्लाहों ने नौका कबीर जी के पास ले जाकर राजा का आदेश

सुनाया कि आपको सिकंदर बादशाह याद कर रहे हैं। आप चलिए। परमेश्वर कबीर जी उस जहाज (बड़ी नौका) में बैठकर किनारे आए।

राजा सिकंदर ने फिर गिरफ्तार करवाकर हाथ-पैर बाँधकर खूनी हाथी से मरवाने की आज्ञा कर दी। चारों और जनता खड़ी थी। सिकंदर ऊँचे स्थान पर बैठे थे। परमात्मा को बाँध-जूड़कर पृथ्वी पर डाल रखा था। महावत (हाथी के ड्राइवर) ने हाथी को शराब पिलाई और कबीर जी को कुचलकर मरवाने के लिए कबीर जी की ओर बढ़ा। कबीर जी ने अपने पास एक बब्बर सिंह खड़ा दिखा दिया। वह केवल हाथी को दिखा। हाथी चिंघाड़कर डर के मारे वापिस भाग गया। महावत को नौकरी का भय सताने लगा। हाथी को भाले मार-मारकर कबीर जी की ओर ले जाने लगा, परंतु हाथी उल्टा भागे। तब पीलवान (महावत) को भी शेर खड़ा दिखाई दिया तो डर के मारे उसके हाथ से अंकुश गिर गया। हाथी भाग गया। परमेश्वर कबीर जी के बंधन टूट गए। कबीर जी खड़े हुए तथा अंगड़ाई ली तो लंबे बढ़ गए। सिर आसमान को छूआ दिखाई देने लगा। प्रकाशमान शरीर दिखाई देने लगा। सिकंदर राजा भय से काँपता हुआ परमेश्वर कबीर जी के चरणों में गिर गया। क्षमा याचना की तथा कहा कि आप परमेश्वर हैं। मेरी जान बख्शो। मेरे से भारी भूल हुई है। मैं अब आपको पहचान गया हूँ। आप स्वयं अल्लाह पृथ्वी पर आए हो। तब परमेश्वर कबीर जी काशी नगर में आए तथा उसी गणिका के मकान के चौंक में बैठ गए। लड़की परमात्मा के चरण दबा रही थी। परमेश्वर कबीर जी के पैर अपनी साथलों (घुटनों से ऊपर की टाँग) पर रख लिए।

नोट :- इन वाणियों का शब्दार्थ ऊपर संक्षेप में किया है।

फिर गणिका कै संग चले, शीशी भरी शराब। गरीबदास उस पुरी में, जुलहा भया खराब।।726।।
तारी बाजी पुरी में, भिष्ट जुलहदी नीच। गरीबदास गनिका सजी, दहूं संतौं कै बीच।।727।।
गावत बैंन बिलासपद, गंगाजल पीवंत। गरीबदास विह्वल भये, मतवाले घूमंत।।728।।
भड़ुवा भड़ुवा सब कहैं, कोई न जानैं खोज। दास गरीब कबीर करम, बांटत शिरका बोझ।।729।।
देखो गनिका संगि लई, कहते कौंम छतीस। गरीबदास इस जुलहदी का, दर्शन आन हदीस।।730।।
शाह सिकंदर कूं सुनी, भिष्ट हुये दो संत। गरीबदास च्यारों वरण, उठि लागे सब पंथ।।731।।
च्यारि वरण षट आश्रम, दोनौं दीन खुशाल। गरीबदास हिंदू तुरक, पड़्या शहर गलि जाल।।732।।
शाह सिकंदरकै गये, सुनि कबले अरदास। गरीबदास तलबां हुई, पकरे दोनौं दास।।733।।
कहौ कबीर यौह क्या किया, गनिका लिन्हीं संग। गरीबदास भूले भक्ति, पर्‌या भजन में भंग।।734।।
सुनौं सिकंदर बादशाह, हमरी अरज अवाज। गरीबदास वह राखिसी, जिन यौह साज्या साज।।735।।
जड़ियां तौंक जंजीर गल, शाह सिकंदर आप। गरीबदास पद लीन है, तारी अजपा जाप।।736।।
हाथौं जड़ी हथकड़ी, पग बेड़ी पहिराय। गरीबदास बीच गंग में, तहां दीन्हा छिटकाय।।737।।
झड़ि गये तौंक जंजीर सब, लगै किनारै आय। गरीबदास देखै खलक, स्यौं काजी बादशाह।।738।।
नीचै नीचै गंगाजल, ऊपर आसन थीर। गरीबदास बूड़ै नहीं, बैठे अधर कबीर।।739।।
योह अचरज कैसा भया, देखैं दोनौं दीन। गरीबदास काजी कहैं, बांधि दिया जल सीन।।740।।
गल में फांसी डारि करि, बांधौ शिला सुधारि। गरीबदास यौह जुलहदी, जब बूड़ै गंगधार।।741।।

शिला धरी जब नाव में, बांधी गलै कबीर। गरीबदास फंद टूटि कै, ना डूबै जलनीर।।742।।
शिला चली शाह और कौं, देखत काशी ख्याल। गरीबदास कबीर का आसन अधर हमाल।।743।।
तीर बाण गोली चलैं, तोप रहकल्यौं शोर। गरीबदास उस जुलहदीकै, गई एक नहीं ओर।।744।।
अधर धार गोले बहैं, जलकै बीच गभाक। गरीबदास उस जुलहदी पर, शस्त्र छूटैं लाख।।745।।
तोप रहकले सब चलैं, तीर बाण कमान। गरीबदास वह जुलहदी, जल पर रहै अमान।।746।।
अधरि धार अपार गति, जल परि लगी समाधि। गरीबदास निज ब्रह्मपद, खेलैं आदि अनादि।।747।।
जुलम हुआ बूड़े नहीं, शस्त्र लगै न बाण। गरीबदास इब कौंन गति, कैसैं लीजै प्राण।।748।।
लगी समाधी अगाध में, बिचरै काशी गंग। गरीबदास किलोल सर, छूहैं चरण तरंग।।749।।
च्यारि पहर गोले बगे, धमी मुलक मैदान। गरीबदास पोखर सुखैं, रहे कबीर अमान।।750।।
अपनी करनी सब करी, थाके दोनौं दीन। गरीबदास अब जुलहदी, पैठि गये जलमीन।।751।।
डूब्या डूब्या सब कहैं, हो गये गारत गोर। गरीबदास कबले धनी, तुम आगै क्या जोर।।752।।
आनंद मंगल होत है, बटैं बधाई बेग। गरीबदास उस जुलहदी पर फिर गई रेती रेघ।।753।।
हस्ती घोड़े चढत हैं, पान मिठाई चीर। गरीबदास काशी खुसी, बूड़े गंग कबीर।।754।।
जावो घरि रैदासकै, हिलकारे हजूर। गरीबदास खुसिया कहौ, कहियो नहीं कसूर।।755।।
झालरि ढोलक बजत हैं, गावैं शब्द कबीर। गरीबदास रैदास संगि, दोनौं एकही तीर।।756।।
काजी पंडित सब गये, शाह सिकंदर उठ। गरीबदास रैदासकै, भेष गये जटजूट।।757।।
कोठी कुठले सब झके, बासन टींडर गोलि। गरीबदास रहदास सुनौं, कहां गये वह बोल।।758।।
वे प्रगट पूरण पुरूष हैं, अबिनाशी अलख अल्लाह। गरीबदास रैहदास कहैं, सुनौं सिकंदर शाह।।759।।
सूरजमुखी सुभांन सर, खिले फूल गुलजार। गरीबदास काजी पंडित करता शाह पुकार।।760।।
शाह सिकंदर फिर गये, उस गंगा कै तीर। दास गरीब कबीर हरी, बैठे ऊपर नीर।।761।।
बैठि मलाह जिहाज में, गये धार कै बीच। गरीबदास हरि हरि करैं, प्रेम फुहारे सीच।।762।।
करी अरज मलाह तहां, दीन दुनी बादशाह। गरीबदास आसन उधर, लगी समाधि जुलाह।।763।।
भंवर फिरत हैं गंग जल, फूल उगानें कोटि। गरीबदास तहां बंदगी, हरिजन हरि की ओट।।764।।
संकल सीढी लाय करि, उतरे तहां मलाह। गरीबदास हम बंदगी, याद किये बादशाह।।765।।
बैठ कबीर जहाज में, आये गंगा घाट। गरीबदास काशी थकी, हांडे बौह बिधि बाट।।766।।

शब्दार्थ :- वाणी नं. 726-730 का शब्दार्थ :- परमात्मा कबीर जी ने शिष्यों की परीक्षा लेने के उद्देश्य से एक शीशी में गंगा दरिया का जल भर लिया। काशी शहर की प्रसिद्ध वैश्या और रविदास संत जी के साथ किराए के हाथी पर चढ़कर काशी शहर के मुख्य बाजार की गलियों में घूमने लगे। शीशी से मुख लगाकर जल पी रहे थे, परंतु अदा कर रहे थे जैसे शराब पी रहे हैं। रविदास जी हाथी को चला रहे थे। पीछे वैश्या बैठी थी। वैश्या के पीछे कबीर जी वैश्या के गले में हाथ डालकर आशिक की तरह अभिनय कर रहे थे। काशी शहर के व्यक्ति यह सब देखकर हाथों से तालियाँ बजाने लगे और कहने लगे कि देखो कबीर नीच जुलाहा वैश्या को साथ लेकर शराब के नशे में वैश्या के गले में हाथ डालकर मतवाला होकर घूम रहा है। परमात्मा कबीर जी भक्ति के शब्द-कविता गा रहे थे और झूम रहे थे। जनता समझ रही थी कि गाने गा रहा है, अभद्र तरीके से वैश्या से लिपटा बैठा है। इसने

लोकलाज भी उतार दी है। काशी नगर के सब नागरिक कबीर जी को भड़वा-भड़वा यानि व्यभिचारी-व्यभिचारी कहने लगे, परंतु इस राज को कोई नहीं समझ पा रहा था कि परमात्मा कबीर जी सतगुरू रूप में अनेकों शिष्यों को दीक्षा दे चुके थे। उनके पापों का भार अपने सिर पर ले रखा था। शिष्य गुरू आज्ञा का पालन नहीं कर रहे थे। उनके भार से मुक्त हो रहे थे। शिष्यगण यह लीला देखकर नाम दीक्षा त्यागकर कबीर जी से दूर हो गए। उनके सत्संग विचार भी सुनने के लिए सत्संग जाना भी त्याग दिया। जितने शिष्यों ने नाम त्यागा, उनका भार कबीर जी के सिर से उतर गया। काशी शहर के छत्तीस बिरादरी के व्यक्ति कह रहे थे कि देखो गणिक (वैश्या) को साथ लेकर चल रहा है। इस जुलाहे कबीर के दर्शन से भी पाप लगता है।

वाणी नं. 731-754 का शब्दार्थ :- उन दिनों में दिल्ली का राजा सिकंदर लोधी काशी में ठहरा हुआ था क्योंकि वह पूरे पुराने भारत का सम्राट था। उसके आधीन छोटे राज्य भी थे। काशी नगर का नरेश बीरदेव सिंह बघेल भी सिकंदर के आधीन था। परमात्मा कबीर जी भी अनोखी लीला उसी समय किया करते थे जिस समय दिल्ली का राजा सिकंदर काशी शहर में आया हो। परमेश्वर तो जानते हैं कि जितने भी मानव जिस-जिस धर्म के हैं तथा अन्य जीव सब उसी के अपने बच्चे हैं। उन्हीं के वचन से उत्पन्न हैं। पिता होने के नाते परमेश्वर कबीर जी भी अपने बच्चों को काल ब्रह्म के चंगुल से निकालने के लिए प्रयत्न करते रहते हैं। परमेश्वर कबीर जी चाहते थे कि किसी तरह सिकंदर को मेरे सामर्थ्य का पता चल जाए और यह अपने राज वाले क्षेत्र में मेरे सत्य ज्ञान के प्रचार में सहयोग करे तथा अपना भी कल्याण करवाए।

भारत में हिन्दू गुरू ब्राह्मणों तथा मुसलमान काजी-मुल्लाओं की आपस में कभी नहीं बनती थी। धर्म के नाम पर झगड़ा खड़ा किए रहते थे। परंतु जब कबीर जी की त्रुटि उन्हें मिल जाती तो सब एक होकर कबीर जी का जोरदार विरोध करते थे। कारण यह था कि परमात्मा कबीर जी दोनों धर्मों के प्रचारकों के ज्ञान को गलत सिद्ध करते थे। कहते थे कि इन धर्म प्रचारकों को अपने धर्मग्रन्थों का भी ज्ञान नहीं है। सबके सब शास्त्रों के विरूद्ध ज्ञान व भक्ति बताते हैं। जिस कारण से साधकों को कोई अध्यात्म लाभ परमात्मा की ओर से नहीं मिल रहा है।

कबीर जी से दीक्षा लेने वालों को तुरंत लाभ मिलता था। यही कारण था कि उस समय परमात्मा कबीर जी के चौंसठ लाख शिष्य हो गए थे। सब महादुःखी थे। दीक्षा व आशीर्वाद से सबका कष्ट नष्ट होकर सब सुखी हो गए थे। कबीर जी के अनुयाई हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही बहुसँख्या में बन रहे थे। जिस कारण से वे धर्म प्रचारक (धर्मगुरू) कबीर जी से घोर ईर्ष्या रखते थे। इस घटना से उनको पंख लग गए। विचार किया कि दिल्ली का सम्राट भी आया है। आज इस जुलाहे को मौत की सजा दिलाऐंगे। यह विचार करके हजारों की सँख्या में दोनों धर्मों के व्यक्ति राजा सिकंदर के पास विश्राम गृह में गए। कारण का पता लगने पर राजा

सिकंदर ने जनता को प्रसन्न करने के लिए कहा कि अभी गिरफ्तार करवाकर उस कबीर को मौत के घाट उतारता हूँ। संत रविदास जी तथा परमात्मा कबीर जी दोनों को पुलिस पकड़ लाई। संत रविदास जी को तो छोड़ दिया क्योंकि कबीर जी ने सब अपनी गलती मानी थी। कहा था कि न रविदास का दोष है, न गणिका का, सब कुछ मैंने किया है।

सिकंदर लोधी का असाध्य रोग परमेश्वर कबीर जी के आशीर्वाद से समाप्त हुआ था। कमाल लड़के को तथा कमाली लड़की को तथा स्वामी रामानंद को जिसकी हत्या सिकंदर लोधी राजा ने की थी, राजा के सामने मुर्दों को जीवित किया था। राजा सिकंदर भी कबीर जी को गुरू मानता था, परंतु अधिक जनता को देखकर तथा अक्षम्य अपराध मानकर कानून व्यवस्था राज में बनाए रखने के उद्देश्य से सिकंदर ने कबीर जी को गिरफ्तार करवाया। फिर भी कुछ गुरू मर्यादा का ध्यान रखते हुए प्रश्न किया कि हे कबीर जी! आप इतने नेक विचारों वाले थे। यह क्या कर बैठे? आपने वैश्या को साथ लिया। आप भक्ति भूल गए। आपका भजन यानि नाम खण्ड हो गया। भक्ति का नाश कर लिया। कबीर जी ने उत्तर दिया कि हे सिकंदर बादशाह! आपके प्रश्न का उत्तर सुनो। जिस परमेश्वर ने सब ब्रह्मण्डों को बनाकर सुरक्षित रखा है, वह मेरी भी रक्षा करेगा। सिकंदर लोधी राजा ने जनता को शांत करने के उद्देश्य से अपने हाथों से कबीर परमेश्वर के हाथों में हथकड़ी, पैरों में बेड़ी, गले में तोक पहनाकर गंगा दरिया के मध्य में डालकर मारने का आदेश सुना दिया। राजा के आदेशानुसार कबीर जी को गंगा नदी के मध्य में नौका के द्वारा ले जाकर जल में डाल दिया। परमेश्वर कबीर जी के हाथों की हथकड़ी, पैरों की बेड़ी तथा गले की तोक वाली जंजीर टूटकर जल में गिर गई और परमात्मा कबीर जी जल के ऊपर बैठे रहे। यह देखकर काजियों ने कहा कि इसने जादू-जंत्र करके जल को बाँध दिया है। इस कारण से नहीं डूब रहा। कुछ समय तक जल पर बैठे रहे। फिर गंगा नदी के किनारे की ओर उसी स्थान पर आ गए जिस स्थान से नौका में बैठाकर ले गए थे। उस स्थान पर यानि गंगा दरिया के किनारे पर कई हजार व्यक्ति देखने के लिए उपस्थित थे। राजा सिकंदर भी उपस्थित था। काजी व मुल्ला तथा ब्राह्मणों ने विचार करके राजा से कहा कि इसके गले में पत्थर की भारी वजन वाली शिला बाँधकर दरिया के मध्य डाला जाए, यह तब डूबेगा। नौका में कबीर जी को बैठाकर गले में लोहे की मोटी जंजीर से पत्थर की भारी शिला बाँधकर गंगा नदी के मध्य में जल में पटक दिया। जंजीर टूट गई। पत्थर की शिला जल के ऊपर तैरती हुई तेजी से चलकर सिकंदर राजा की ओर आई। कबीर जी जल के ऊपर पालथी लगाकर सुखासन पर बैठे रहे। अथाह जल नीचे-नीचे बह रहा है। परमात्मा कबीर जी जल में डूबे नहीं। जल की लहरें परमेश्वर जी के चरण छूकर उछल-उछलकर किलोल कर रही थी। राजा ने आदेश दिया कि तीर मारकर इसका अंत कर दो। जब बहुत समय तक तीर-बाणों से कबीर जी नहीं मरे तो तोब यंत्र मंगाया गया। तोब के गोले तथा तीर दोनों ही छोड़े

गए, परंतु एक भी परमेश्वर कबीर जी की ओर नहीं गया। कोई गोला उसी किनारे के पास दरिया में गिरे, कोई दूर गिरे। कई तोब के गोले तो दूर तालाबों में गिरे जिनका जल ही सूख गया। तोब के कुछ गोले दांये-बांये गिर रहे थे। परमात्मा कबीर जी के निकट एक भी तीर-बाण व तोब का गोला नहीं गया। यह प्रयत्न चार पहर यानि बारह घण्टे तक चला, परंतु कबीर जी नहीं मरे। पूर्ण परमात्मा कबीर जी अविनाशी हैं। अविनाशी को कौन मार सकता है? वे जनता को लीला के माध्यम से अपना सामर्थ्य दिखा रहे थे, परंतु काल ब्रह्म ने बुद्धि हर रखी थी। किसी के भी विचार में यह बात नहीं आई कि यह सामान्य व्यक्ति नहीं है। जब राजा तथा प्रजा ने सब कोशिश कर ली तो कहने लगे कि इसको कैसे मारा जाए? जब सब जुल्म करके थक लिए, तब परमात्मा कबीर जी गंगा नदी के जल में गोता लगा गए। उपस्थित जनता तथा राजा ने मान लिया कि कबीर जल में डूबकर मर गया। इसके शव पर रेत व गारा फिर गई। कबीर जी के मरने की खुशी में लोग ढ़ोल बजाने लगे, नाचने-गाने लगे और मिठाई बाँटने लगे। राजा विश्राम गृह में चला गया। काजी, मुल्ला व पंडितजन मिलकर रविदास के घर गए। वहाँ पर उनको अंदर से कबीर जी की आवाज सुनाई दी। वे परमात्मा की महिमा के शब्द (कविता) गा रहे थे। रविदास जी को बताने गए थे कि जिसे आप अविनाशी कहते थे, वह कबीर मर गया है। घर के अंदर गए तो कबीर जी रविदास जी के पास बैठे थे। दोनों शब्द गा रहे थे। देखकर वापिस जाकर सिकंदर को बताया कि कबीर मरा नहीं, वह तो रविदास के घर पर बैठा है। हजारों की सँख्या में काशी के काजी-मुल्ला, पंडित तथा जनता रविदास जी के घर गए। वहाँ पर कबीर जी नहीं मिले। रविदास जी से पूछा कि कबीर कहाँ है। वे बोले कि अभी मेरे पास से गए हैं। कह रहे थे कि गंगा में स्नान करके आता हूँ। राजा तथा सब व्यक्ति गंगा के उसी किनारे पर गए तो परमात्मा कबीर जी जल के ऊपर पहले की तरह बैठे मिले। दरिया के मध्य में बैठे थे। छोटा समुद्री जहाज में मल्लाह यानि जहाज चालक व अन्य कुछ व्यक्ति गए और कहा कि आपको राजा सिकंदर बुला रहा है। जहाज से सीढ़ी जंजीरों से बाँधकर जल में लटकाई। कबीर जी सीढ़ी से चढ़कर जहाज में बैठकर गंगा नदी से बाहर आए तो तुरंत पकड़ लिए यानि गिरफ्तार कर लिए।

''खूनी हाथी से कबीर परमेश्वर को मरवाने की कुचेष्टा''

खूनी हाथी मस्त है, पग बंधे जंजीर। गरीबदास जहां डारिया, मसक बांधि कबीर।।767।।
सिंह रूप साहिब धर्‌या, भागे उलटे फील। गरीबदास नहीं समझती, याह दुनिया खलील।।768।।
बने केहरी सिंह जित, चौंर शिखर असमांन। गरीबदास हस्ती लख्या, दीखै नहीं जिहांन।।769।।
कूटै शीश महावतं, अंकुश शीर गरगाप। गरीबदास उलटा भगै, तारी दीजैं थाप।।770।।
भाले कोखौं मारिये, चरखी छूटैं पाख। गरीबदास नहीं निकट जाय, किलकी देवैं लाख।।771।।
जैसी भक्ति कबीर की, ऐसी करै न कोय। गरीबदास कुंजर थके, उलटे भागे रोय।।772।।
दुंम गोवैं मूंडी धुनैं, सैंन न समझै एक। गरीबदास दीखै नहीं, आगै खड़ा अलेख।।773।।

पीलवान देख्या तबै, खड़ा केहरी सिंघ। गरीबदास आये तहां, धरि मौला बहु रंग।।774।।
उतरे मौला अरस तैं, भाव भक्ति कै हेत। गरीबदास तब शाह लखे, कबीर पुरूष सहेत।।775।।
लीला की कबीर ने, दो रूप में रहे दीस। दासगरीब कबीर कै, पास खड़े जगदीश।।776।।
जंभाई अंगडाईयां, लंबे भये दयाल। गरीबदास उस शाह कूं, मानौं दर्श्या काल।।777।।
कोटि चन्द्र शशि भान मुख, गिरद कुंड दुम लील। गरीबदास तहां ना टिके, भागि गये रनफील।।778।।
नयन लाल भौंह पीत हैं, डूंगर नक पहार। गरीबदास उस शाह कूं, सिंह रूप दीदार।।779।।
मस्तक शिखर स्वर्ग लग, दीरघ देह बिलंद। गरीबदास हरि ऊतरे, काटन जम के फंद।।780।
गिरद नाभि निरभै कला, दुदकारै नहीं कोय। गरीबदास त्रिलोकि में, गाज तास की होय।।781।।
ज्यूं नरसिंह प्रहलादकै, यूं वह नरसिंह एक। गरीबदास हरि आईया, राखन जनकी टेक।।782।।
बार–बार सताय कर, मस्तक लीना भार। गरीबदास शाह यौं कहै, बकसौ इबकी बार।।783।।
तहां सिंह ल्यौलीन हुआ, परचा इबकी बार। गरीबदास शाह यौं कहै, अल्लह दिया दीदार।।784।।
सुन काशी के पण्डितौ, काजी मुल्लां पीर। गरीबदास इसके चरण ल्यौह, अलह अलेख कबीर।।785।।
यौह कबीर अल्लाह है, उतरे काशी धाम। गरीबदास शाह यौं कहैं, झगर मूंये बे काम।।786।।
काजी पंडित रूठिया, हम त्याग्या योह देश। गरीबदास षटदल कहैं, जादू सिहर हमेश।।787।।
इन जादू जंतर किया, हस्ती दिया भगाय। गरीबदास इत ना रहैं, काशी बिडरी जाय।।788।।
काशी बिडरी चहौं दिशा, थांभन हारा एक। गरीबदास कैसे थंभै, बिडरे बौहत अनेक।।789।।

शब्दार्थ :- वाणी नं. 767-789 :- परमात्मा कबीर जी के हाथ-पैर बाँधकर एक मैदान के अंदर डाल दिया जहाँ पर घोर अपराधियों को कठोर दंड दिया जाता था। वर्तमान के स्टेडियम जैसा वह मैदान होता था। राजा तथा पदाधिकारी स्टेज पर बैठते थे। दर्शक चारों ओर खड़े होते थे। मनुष्यों को मारने के लिए हाथी को प्रशिक्षित किया जाता था। उसे शराब तथा रक्त पीने का चस्का लगाया जाता था। उसे खूनी हाथी कहते थे। राजा सिकंदर तथा अन्य मंत्रीगण बैठे थे। प्रजा चारों ओर खड़ी थी। खूनी हाथी को महावत (हाथी को वश करके चलाने वाला व्यक्ति) कबीर जी की ओर मारने के लिए लाया तो परमेश्वर कबीर जी ने एक सिंह का रूप दिखाया जो केवल हाथी को दिखाई दे रहा था। हाथी ने शराब पी रखी थी। सिंह को देखकर भय के कारण उल्टा भाग लिया। महावत ने हाथी को भालों से मारा, परंतु कबीर जी की ओर हाथी नहीं गया। परमात्मा कबीर जी ने महावत को भी सिंह खड़ा दिखा दिया। महावत भी डरकर हाथी से गिर गया। हाथी भाग गया। परमात्मा कबीर जी के बँधन टूट गए और खड़े हुए। खड़ा होकर अंगड़ाई ली और जम्भाई (ऊबासी) ली। बहुत लंबे हो गए। सिर आकाश को छू रहा था। शरीर से असँख्यों सूर्यों का प्रकाश निकल रहा था। यह केवल राजा सिकंदर को दिखाई दिया। राजा भयभीत होकर खड़ा होकर मैदान में आया और कहा कि मेरी जान बख्श दो, मेरे से बड़ी गलती हुई है। मेरे को परमात्मा का दर्शन हो गया है। जनता से राजा ने कहा कि यह अल्लाहु अकबर है, कबीर रूप में पथ्वी पर आया है। इसके चरण छूकर अपना कल्याण करवा लो। परंतु कर्महीन काजी-मुल्ला व पंडित कहने लगे कि कबीर ने जादू-जंत्र करके हाथी को भगा दिया। हम जा रहे हैं। यह कहकर

वे पाप आत्मा सब चले गए। परमात्मा ने अपना शरीर सामान्य किया और सिंह को अदृश्य कर दिया। अपनी कुटी में चले गए।

''दीक्षा के पश्चात्''

पूर्ण गुरूदेव जी से दीक्षा लेकर पूर्ण विश्वास के साथ गुरूदेव द्वारा बताई साधना पूरी निष्ठा के साथ करे।

➢ **कबीर जी ने बताया है कि :- 1. धीरज रखे।**

कबीर, धीरे–धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौं घड़ा, समय आए फल होय।।

भावार्थ :- जैसे माली आम का बीज बोता है। उसकी सिंचाई करता है। कुछ दिन पश्चात् अंकुर दिखाई देता है। फिर भी समय-समय पर सिंचाई करता रहता है। रक्षा के लिए कांटेदार झांड़ियों की बाड़ (Fences) करता है। एक आम के पौधे को पेड़ बनने में लगभग 8-10 वर्ष लग जाते हैं। तब तक माली (पौधा लगाने वाला बाग का मालिक या नौकर) उस पौधे की सिंचाई करता रहता है। जब आम का पेड़ बन जाता है तो आम के फल लगते हैं। इतने लगते हैं कि स्वयं का परिवार भी खाता है तथा बेचकर अपना निर्वाह भी करता है। इसी प्रकार भक्ति नाम रूपी बीज को बो कर यानि दीक्षा लेकर उसका स्मरण, दान रूपी सिंचाई करते रहना चाहिए। आम के पौधे की तरह धीरे-धीरे भक्ति रूपी पेड़ बनने के पश्चात् सुखों का अम्बार लग जाएगा। जैसे आम के पेड़ को टनों आम लगे, खाए और बेचकर धन कमाया। इसी प्रकार भक्त को धीरज रखना चाहिए। धीरे-धीरे भक्ति का परिणाम आने लगेगा।

➢ **2. विश्वास :-**

परमात्मा की भक्ति का लाभ उसी को होता है जो परमात्मा की महिमा पर पूर्ण विश्वास रखता है।

''परमात्मा के लिए कुछ भी असंभव नहीं है''

एक नगर के बाहर जंगल में दो महात्मा साधना कर रहे थे। एक चालीस वर्ष से घर त्यागकर साधना कर रहा था। दूसरा अभी दो वर्ष से साधना करने लगा था। परमात्मा के दरबार से एक देवदूत प्रतिदिन कुछ समय उन दोनों साधकों के पास व्यतीत करता था। दोनों साधकों के आश्रम गाँव के पूर्व तथा पश्चिम में थे। बड़े का स्थान पश्चिम में तथा छोटे का स्थान गाँव के पूर्व में जंगल में था।

देवदूत प्रतिदिन एक-एक घण्टा दोनों के पास बैठता, परमात्मा की चर्चा चलती। दोनों साधकों का अच्छा समय व्यतीत होता। एक दिन देवदूत ने भगवान विष्णु जी से कहा कि भगवान! कपिला नगरी के बाहर आपके दो परम भक्त रहते हैं। श्री विष्णु जी ने कहा कि एक परम भक्त हे, दूसरा तो बनावटी भक्त है। देवदूत ने विचार किया कि जो चालीस वर्ष से साधनारत है, वह पक्का भक्त होगा क्योंकि लंबी-लंबी दाढ़ी, सिर पर बड़ी जटा (केश) है और समय भी चालीस वर्ष बहुत होता

है। देवदूत बोला कि हे प्रभु! जो चालीस वर्ष से आपकी भक्ति कर रहा है, वह होगा परम भक्त। प्रभु ने कहा, नहीं। दूसरा जो दो वर्ष से साधना में लगा है। प्रभु ने कहा कि देवदूत! मेरी बात पर विश्वास नहीं हुआ। देवदूत बोला, प्रभु ऐसा नहीं है। परंतु मेरी तुच्छ बुद्धि यही मान रही है कि बड़ी आयु वाला भी अच्छा भक्त है। श्री विष्णु जी ने कहा कि कल आप देर से पथ्वी पर जाना। दोनों ही देर से आने का कारण पूछेंगे तो आप बताना कि आज प्रभु जी ने हाथी को सूई के नाके से निकालना था। वह लीला देखकर आया हूँ। इसलिए आने में देरी हो गई। जो उत्तर मिले, उससे आपको भी पता लग जाएगा कि परम भक्त कौन है? पहले प्रतिदिन देवदूत सुबह आठ बजे के आसपास बड़े के पास जाता था और 10 बजे के आसपास छोटी आयु वाले के पास जाता था। अगले दिन बड़ी आयु वाले के पास दिन के 12 बजे पहुँचा। देर से आने का कारण पूछा तो देवदूत ने बताया कि आज 11:30 बजे दिन के परमात्मा ने लीला करनी थी, वह देखकर आया हूँ। चालीस वर्ष वाले ने पूछा कि क्या लीला की प्रभु ने? बताईएगा। देवदूत ने कहा कि श्री विष्णु जी ने कमाल कर दिया, हाथी को सूई के नाके (छिद्र) में से निकाल दिया। यह सुनकर भक्त बोला कि देवदूत! ऐसी झूठ बोल जो सुने उसे विश्वास हो। यह कैसे हो सकता है कि हाथी सूई के नाके में से निकल जाए। मेरे सामने निकालकर दिखाओ। देवदूत समझ गया कि भगवान सत्य ही कह रहे थे। यह तो पशु है, भक्त नहीं जिसे परमात्मा पर ही विश्वास नहीं कि वह सक्षम है। जो कार्य मानव नहीं कर सकता, परमात्मा कर सकता है। उसकी भक्ति व्यर्थ तथा बनावटी है। देवदूत नमस्ते करके चल पड़ा और छोटे भक्त के पास आया। भक्त ने देरी से आने का कारण पूछा तो देवदूत ने संकोच के साथ बताया कि कहीं यह कोई गलत भाषा न बोल दे। कहा कि भक्त क्या बताऊँ? परमात्मा ने तो अचरज कर दिया। कमाल कर दिया। देखकर आँखें फटी की फटी रह गई। परमात्मा ने हाथी को सूई के नाके (धागा डालने वाले छिद्र) के अंदर से निकाल दिया। यह सुनकर भक्त बोला कि देवदूत जी! इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है? परमात्मा निकाल दे पूरी पथ्वी को सूई के नाके में से, हाथी तो बात ही क्या है? देवदूत ने भक्त को सीने से लगाया और कहा कि धन्य हैं आपके माता-पिता जिनसे जन्म हुआ। कुर्बान हूँ आपके परमात्मा पर अटल विश्वास पर।

पाठकजनो! यह तो एक उदाहरण है। वास्तव में भक्त को परमात्मा पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए कि परमात्मा जो चाहे सो कर सकता है। यदि कोई कहे कि परमात्मा यह नहीं कर सकता, वह नहीं कर सकता तो उसको भक्ति अधिकार ही नहीं है। क्यों अपना समय भक्ति का नाटक करके व्यर्थ करे? परमात्मा पर पूर्ण विश्वास करके भक्ति राह पर चलेगा तो मंजिल पर पहुँचेगा।

➢ 3. ''परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है''

दीक्षा लेने के उपरांत भक्त के ऊपर भक्ति की राह में कितना ही कष्ट आए, मन में यही आए कि परमात्मा जो करता है, भक्त के भले में ही करता है।

कथा :- एक राजा तथा महामंत्री गुरू के शिष्य थे। महामंत्री जी को पूर्ण विश्वास था, परंतु राजा को सत्संग सुनने का समय कम मिलता था। जिस कारण से वह परमात्मा के विधान से पूर्ण परिचित नहीं था, परंतु भक्ति श्रद्धा से करता था। महामंत्री को राजा हमेशा अपने साथ रखता था। उसकी सबसे अधिक इज्जत करता था। एक मंत्री को महामंत्री से इसी बात पर ईर्ष्या थी। वह महामंत्री को राजा की नजरों में गिराने के लिए राजा को महामंत्री के विषय में निंदा करता था। एक मंत्री चाहता था कि राजा मुझे महामंत्री बना दे। उसके लिए बार-बार कहता था कि राजन! यह महामंत्री विश्वास पात्र नहीं है। यह आपको कभी भी धोखा दे सकता है। एक दिन राजा तथा महामंत्री तथा वह चापलूस मंत्री व अन्य मंत्रीगण किसी अन्य शहर में जाने की तैयारी में महल के अंदर हॉल में खड़े थे। राजा अपनी तलवार को निकालकर उसकी धार (तीखापन) चैक करने लगा और अन्य मंत्रियों से बातें भी कर रहा था। जिस कारण से राजा के हाथ की एक अंगुली कटकर गिर गई। चापलूस बोला कि हे राजा! यह क्या हो गया? हमारे राजा कितने सुंदर थे। आज हमारा दुर्भाग्य का दिन है, हाय! यह क्या हो गया? प्रजा का कौन-सा भार अपने ऊपर ले लिया? महामंत्री बोला, अच्छा हुआ। परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है। राजा दर्द से व्याकुल था तथा ऊपर से ये शब्द सुने तो महामंत्री के प्रति गुस्सा आया और सैनिकों से कहा कि इसे जेल में डाल दो। ऐसा ही किया गया। चापलूस चुगलखोर को महामंत्री नियुक्त कर लिया। अंगुली का उपचार कराया। छः महीने में अंगुली का घाव भरकर ठीक हो गया। कोई दर्द नहीं रहा। अब राजा के दांये हाथ में तीन अंगुली और एक अंगूठा बचा था। राजा अपने नए महामंत्री से अति प्रसन्न था क्योंकि उसका दाँव लग गया था। वह राजा से कहता था कि हे राजन! मैंने तो आप जी को बहुत बार कहा था कि यह आपको धोखा देगा। उस दिन आपने अपने कानों सुन लिया कि वह बोला अंगुली कट गई तो अच्छा हुआ। वह तो आप जी के मरने में खुश था। कभी आपको मरवा देता। राजा उस चापलूस की प्रत्येक बात को सत्य मानने लगा था। एक दिन राजा उस नए महामंत्री के साथ जंगल में शिकार खेलने गया। दोनों जंगल में गहरे चले गए। आगे कुछ भील लोग थे। उन्होंने उन दोनों को पकड़ लिया और अपने पुरोहित के पास ले गए। उस दिन जंगली लोगों का कोई त्यौहार था। एक व्यक्ति को काटकर देवी की भेंट चढ़ाना था। उनके हाथ दो लग गए। पुरोहित ने कहा कि दो ले आए हो तो दोनों की ही बलि चढ़ा देते हैं। देवी और अधिक प्रसन्न होगी। परंतु पहले इनकी जाँच करो कि कोई अंग-भंग न हो यानि काना-कोतरा, हाथ या अंगुली कटी न हो। जाँच की तो पता चला कि एक व्यक्ति के हाथ की एक अंगुली कटी है। पुरोहित ने कहा कि इसे छोड़ दो, दूसरा ठीक है तो इसकी गर्दन काट दो। उसी समय राजा को छोड़ दिया और चापलूस महामंत्री की गर्दन राजा के सामने ही काट दी और देवी को भेंट कर दी। राजा चल पड़ा और अपने महल में आया। सीधा जेल पर गया और महामंत्री को रिहा किया। राजा ने महामंत्री जी को सीने से

लगाया और कहा कि जब मेरी हाथ की अंगुली कटी थी और आपने कहा था कि अच्छा हुआ। भगवान जो करता है, अच्छा ही करता है, वह सही बात है। यदि उस दिन मेरी अंगुली नहीं कटी होती तो आज मेरी जान जाती। भगवान ने अच्छा किया। राजा ने फिर कहा कि मेरे लिए तो अच्छा हुआ, परंतु आपको छः महीने जेल व्यर्थ में बिना दोष के काटनी पड़ी। आपके लिए क्या अच्छा हुआ? महामंत्री बोला कि आज मैं जेल में न होता तो आपके साथ जाता। वहाँ मेरी गर्दन कटनी थी। मेरी मौत होनी थी। छः महीने की कैद से मेरी जान बच गई। मेरे लिए यह अच्छा हुआ।

इस प्रकार भक्त को परमात्मा पर विश्वास करके अपने जीवन के सफर पर चलना है।

❖ ''एक लेवा एक देवा दूतं। कोई किसी का पिता न पूतं।''

एक किसान के घर एक पुत्र उत्पन्न हुआ। पुत्र आठ वर्ष का हुआ तो पत्नी की मृत्यु हो गई। किसान के पास 16 एकड़ जमीन थी। कुछ वर्ष पश्चात् किसान ने दूसरी शादी की। उस पत्नी से भी एक पुत्र उत्पन्न हुआ। कुछ वर्ष पश्चात् उस पत्नी की भी मृत्यु हो गई। किसान का प्रथम पत्नी वाला पुत्र 16 वर्ष का हुआ। उसका विवाह कर दिया। किसान की भी मृत्यु हो गई। छोटा लड़का 10-12 वर्ष की आयु में रोगी हो गया। कुछ दिन उपचार कराया, फिर बड़े भाई (मौसी का बेटा) ने तथा उसकी पत्नी ने विचार किया कि उपचार पर क्यों खर्च किया? यदि मर गया तो इसके हिस्से के आठ एकड़ जमीन अपने पास रह जाएगी। यह विचार करके पड़ोस के गाँव से जो वैद्य उपचार के लिए आता था, उससे कहा कि इस लड़के को औषधि में विष मिलाकर दे दो। हम आपको धन दे देंगे। पाँच सौ रूपये के लालच में वैद्य ने उस लड़के को औषधि में विष खिलाकर मार दिया। गाँव वालों को बताया गया कि रोग के कारण मृत्यु हो गई। किसी को शंका नहीं हुई। बच्चे की मृत्यु रोग के कारण हुई मान ली।

उस मौसी के बेटे की मृत्यु के एक वर्ष पश्चात् बड़े भाई को पुत्र प्राप्त हुआ। खुशी का ठिकाना नहीं रहा। बच्चे के जन्म की खुशी में जीमनवार (लंगर) किया। पूरे गाँव में मिठाई बाँटी गई। उसके पश्चात् कोई संतान नहीं हुई। इकलौते पुत्र को प्रेम से पाला। अच्छा घी-दूध, दही खिला-पिलाकर हृष्ट-पुष्ट कर दिया। सोलह वर्ष की आयु में विवाह कर दिया। उस समय बाल विवाह को गर्व की बात माना जाता था। वह लड़का रोगी हो गया। वैद्य पर वैद्य बुलाए। मंहगे से मंहगी औषधि खिलाई, परंतु व्यर्थ रहा। उस समय एक महीने में एक-एक हजार की औषधि खिलाई गई। हीरा तथा मोती भस्म भी औषधि में मिलाकर लड़के को खिलाया गया। जिस कारण से आठ एकड़ जमीन भी बेचनी पड़ी, परंतु रोग घटने की बजाय बढ़ता ही चला गया और अंतिम दिन आ गया। लड़के का पिता चिंतित अवस्था में पुत्र के पास बैठा था। उसी समय लड़का बोला, भाई साहब! एक काम कर। पिता ने कहा कि बेटा! मैं तेरा पिता हूँ। लड़का बोला कि मैं तेरा वह भाई हूँ जिसको

आपने विष देकर मरवाया था। मैं ही अपना बदला लेने आपके पुत्र रूप में जन्मा हूँ। उस लड़के की माता जी भी वहीं विराजमान थी। लड़का बोला कि आठ एकड़ जमीन मेरे हिस्से की थी, वह मैंने वसूल कर ली है। अब केवल कफन तथा लकड़ियों का हिसाब शेष है, उसकी तैयारी करो। यह बात सुनकर पिता उर्फ भाई का मुख फटा का फटा रह गया। अपने किए पर दोनों (पति-पत्नी) ने पश्चाताप किया। परमात्मा का विधान अटल है। बड़े भाई ने पुत्र रूप में जन्मे छोटे भाई से प्रश्न किया कि हमने लालच में आकर जो पाप किया, हमें तो परमात्मा ने फल दे दिया। जिस उद्देश्य के लिए आपकी जान ली थी, वह आठ एकड़ जमीन गई तथा अन्य संतान है नहीं। यह शेष जमीन कोई और ही लेगा। हमारा तो नाश हुआ सो हुआ, यह तो होना ही चाहिए था। परमात्मा ने न्याय किया, परंतु जो लड़की आपकी पत्नी रूप में आई है, इसने कौन-सा अपराध किया है? जिस कारण से यह सती प्रथा के तहत आपके साथ जिंदा जलाई जाएगी। इसके साथ भगवान ने अन्याय किया है। छोटा भाई उर्फ पुत्र बोला कि मेरी मृत्यु के दो वर्ष पश्चात् वह वैद्य मर गया था जिसने मुझे पाँच सौ रूपये के लालच में विष देकर मारा था। यह पत्नी वही वैद्य (डॉक्टर) वाली आत्मा है। इसको वह फल मिलेगा, जिंदा जलाई जाएगी। उस समय सती प्रथा जोरों पर थी। पति की मृत्यु के पश्चात् पत्नी को जिंदा उसी चिता में जलाया जाता।

प्रिय पाठको! विचार करो, परमात्मा की दृष्टि से कुछ नहीं छुपा है। जैसा करेगा, वैसा भरना पड़ेगा। प्रत्येक परिवार इसी प्रकार संस्कार के कारण एक-दूसरे से जुड़ा है। कोई पूर्व जन्म का कर्ज उतारने के लिए जन्मा है, कोई पूर्व जन्म का कर्ज लेने जन्मा है। उदाहरण के लिए :-

पिता ने लड़के को पढ़ाया। शादी से दो दिन पहले दुर्घटनाग्रस्त होकर मर गया। वह अपना कर्ज पिता से लेने आया था। बेटा जवान हुआ। कार्य करके निर्वाह करने लगा। पिता रोगी हो गया, लाखों रूपये लगे, व्यर्थ रहे, मर गया। यह पिता पिछले जन्म का कर्ज लेने आया था। कुछ देने आया था। लड़की का विवाह किया, दो वर्ष पश्चात् लड़की मर गई। बहुत दहेज दिया था। वह दामाद पूर्व जन्म के ऋण के बदले में लड़की भी ले गया और धन भी। वर्तमान में जो किसी के साथ धोखा करके धन हड़प लेते हैं, वह धन अगले जन्म में दामाद बनकर वसूलेगा। परमात्मा का अटल विधान है। बुद्धिमान को संकेत ही पर्याप्त है। उपरोक्त केवल कथा नहीं है, यह हकीकत है। कोई यह कहता है कि यह तो डराने के लिए कथा बनाई। किसने देखा है क्या होगा? जैसे चोर को भद्रपुरूष समझाते हैं कि भाई! चोरी मत किया कर। जब पकड़ा जाएगा तो पहले तो जनता पिटाई करेगी, फिर पुलिस पीटेगी और जेल में भी कष्ट उठाना पड़ेगा। यदि कोई कहे कि यह तो चोर को डराने के लिए कहा है। किसने देखा है कि आगे क्या होता है? विचार करें कि चोर को सच्चाई से अवगत करवाकर डराया है और सच्चाई भी है। यदि चोर सच्चाई से डरकर चोरी करना त्याग देगा तो उसकी भलाई है। यदि कहेगा कि

किसने देखा है, आगे क्या होता है? उसके साथ वह सब गुजरेगी जो पहले बताई गई थी। इसी प्रकार जो उपरोक्त कथा को केवल समझाने-डराने के लिए ही मानेगा तो दुर्भाग्य होगा। इसको इतनी ही सत्य समझना, जैसे चोर को सतर्क किया है।

❖ लेखक ने यह कथा सन् 1978 में एक पशुओं के डॉक्टर से सुनी थी जो किसान के दो पुत्रों वाली कथा ऊपर बताई है। वह इस कथा को अपने पास बैठने वाले को अवश्य सुनाता था, परंतु अमल कतई नहीं करता था। दस रूपये की दवाई देकर चार Distilled Water के इन्जैक्शन लगाकर 200-300 रूपये वसूलता था। फिर शाम को मिलता तो अपने कारनामे भी बताता था कि यदि कम रूपये लूंगा तो भैंस वाला यह समझेगा कि अच्छी दवाई नहीं दी। भैंस को स्वस्थ तो दस रूपये की दवाई से ही हो जाना था। विचार करें कि ऐसे व्यक्तियों की कथनी और करनी में अंतर है तो उनके द्वारा सुनाई इन कथाओं का अन्य पर कैसे प्रभाव होगा? संत गरीबदास जी ने कहा है कि ये बातें कहन-सुनन की नहीं हैं, कर पाड़ने की हैं यानि इन पर अमल करना चाहिए। परमात्मा के विधान को समझकर निर्मल जीवन यापन करो। जीवन की राह को कांटों रहित बनाऐं।

एक लेवा एक देवा दूतं

जिस समय श्री शिव जी ने अपनी पत्नी पार्वती जी को अमरनाथ स्थान पर एक सूखे वृक्ष के नीचे बैठकर नाम दीक्षा (अमर मंत्र) दिया था। उस वृक्ष की खोगड़ (तने में बने बिल) में मादा तोते ने अण्डे उत्पन्न कर रखे थे। स्वस्थ अण्डे तो शिव जी की हाथों से बजाई ताली से बच्चे बनकर उड़ गए। उनमें एक अण्डा गंदा (अस्वस्थ) था। उसका जीव उसके अंदर था। जब श्री शिव जी ने श्री पार्वती जी को दीक्षा मंत्र सुनाया तो वह गंदा अण्डा स्वस्थ हो गया और तोते का बच्चा बन गया। पंख लग गई, उड़ने योग्य हो गया। पार्वती जी की समाधि लग गई। उसने हाँ-हाँ करना बंद कर दिया। तोता हाँ-हाँ करने लगा तो श्री शिव जी ने देखा कि पार्वती की तो समाधि लगी है, सुन-बोल कुछ नहीं रही है। हाँ-हाँ की आवाज किसकी है? देखा तो वृक्ष के तने के बिल (खोगड़) में तोता बोल रहा है। श्री शिव जी ने उसे मारना चाहा तो तोता उड़ गया। पीछे-पीछे श्री शिव जी सिद्धि से उड़कर मारने चले। ऋषि वेदव्यास जी की पत्नी ने जम्बाई ली। मुँह खोला तो तोते के शरीर को त्यागकर जीव व्यास की पत्नी के गर्भ में मुख से प्रवेश कर गया। श्री शिव जी ने व्यास की पत्नी से कहा कि मेरा ज्ञान चुराकर जीव तोते के शरीर को त्यागकर आपके गर्भ में चला गया है। यह मेरा चोर है, इसे मारूंगा। उसी समय ऋषि वेदव्यास जी भी आ गए थे, सब बातें सुन रहे थे। व्यास जी ने पूछा, हे भगवान! कौन-कैसा चोर? श्री शिव जी ने बताया कि मैं पार्वती जी को दीक्षा दे रहा था। अंदर के कमलों का भेद बता रहा था तो इस तोते ने सुन लिया। यह किसी अनाधिकारी को मंत्र बता देगा तो वह अमर होकर जनता को पीड़ा देगा। यह अमर हो गया। मैं इस जीव को मारूंगा। व्यास जी बोले, हे शिव जी भगवान!

जब यह अमर हो गया तो आप मारोगे कैसे? यह बात सुनकर श्री शंकर जी पार्वती के पास लौट गए। पार्वती जी को सब बातें बताई। श्री वेदव्यास जी ने अपनी दिव्य दृष्टि से देखा तो पता चला कि पत्नी के गर्भ में पुत्र है। बारह वर्ष के पश्चात् पुत्र उत्पन्न हुआ। माता कहती थी कि पुत्र का नाम सुखदेव रखना है। इसके गर्भ में रहते हुए मुझे कोई दुःख नहीं हुआ। मन में खुशी बनी रहती थी। सुख का आभास होता रहता है। इसलिए गर्भ में ही उस बालक का नाम सुखदेव रख दिया था। तोते के अण्डे में रहने और तुरंत मानव शरीर प्राप्त करने के कारण ब्राह्मण लोग उसे शुक देव (शुक माने तोता) भी कहते थे। ऋषि शुकदेव जी का जन्म लेते ही बारह वर्ष का शरीर बन गया और उठकर चलने लगे तो ऋषि वेदव्यास जी ने कहा, हे पुत्र! कहाँ चला? शुकदेव जी अपने माता-पिता की ओर पीठ करके बोले, आपका और मेरा इतना ही संग है। (संस्कार है।) ऋषि व्यास जी ने कहा, हे पुत्र सुखदेव! हमने तेरे जन्म लेने की बारह वर्ष प्रतिक्षा की और आज आप छोड़कर जा रहे हो। एक बार मुख तो दिखा दे। सुखदेव ऋषि बोले, हे ऋषि जी! बहुत बार आप मेरे पिता बने, अनेको बार मैं आपका पिता बना। यह तो बड़ा बखेड़ा (झंझट) है। मैं भक्ति करके जन्म-मरण से मुक्ति करवाऊँगा। मैं आपकी ओर मुख इसलिए नहीं कर रहा हूँ कि कहीं मेरा आप में मोह न हो जाए। यह कह संत गरीबदास जी ने वाणी द्वारा बताया है कि :-

एक लेवा एक देवा दूतं, कोई काहू का पिता न पूतं।
ऋण सम्बन्ध जुड़ा एक ठाठा, अंत समय सब बारा बाटा।।

भावार्थ :- शुकदेव जी ने कहा कि जो परिवार के सदस्य बेटा-पिता आदि-आदि नातों में हैं, वे सब पूर्व जन्मों का ऋण लेने या देने के लिए जुड़े हैं। वास्तव में कोई किसी का पिता-पुत्र नहीं है। मृत्यु के उपरांत सब अपने-अपने संस्कारवश भिन्न स्थानों पर जाकर अन्य शरीर धारण कर लेते हैं। इसलिए कोई किसी का पिता-पुत्र नहीं है।

पाठको ने ऊपर किसान के पुत्रों वाली कथा में पढ़ा है कि बड़े भाई ने छोटे मौसी के पुत्र को आठ एकड़ जमीन के लालच में मरवाया तो वही जीव उसका पुत्र बनकर अपना ऋण लेने जन्मा और अपना हिसाब चुकता करके मर गया। इसलिए कहा है कि :-

एक लेवा (ऋण लेने वाला) एक देवा (ऋण चुकाने वाला) दूतम। कोई काहू का पिता नहीं पूतं। ऋण सम्बन्ध जुड़ा एक ठाठा यानि परिवार रूप में ठाठ से रहते दिखाई देते हैं, अचानक मृत्यु हो जाती है। अंत समय में बारा बाटा यानि मुत्यु के पश्चात् कोई कहीं और जन्म लेगा यानि बारा (12) बाट (रास्तों) पर चले जाऐंगे। इतनी वार्ता पिता से करके शुकदेव आकाश में उड़कर अन्य स्थान पर चला गया। प्रिय पाठको! इसलिए भक्ति करो और जीव का कल्याण करवाओ। केवल परिवार के चिपककर अपना जीवन नष्ट न करो। परमात्मा की भक्ति से ऋण भी सरलता से उतर जाएगा।

''कथनी और करनी में अंतर घातक है''

एक व्यक्ति प्रसिद्ध कथावाचक था तथा प्रतिदिन रामायण का पाठ भी करता था। एक दिन किसी कार्यवश पाठी जी को शहर जाना पड़ा। उसके साथ उसका साथी भी था। गाँव से तीन किलोमीटर दूर रेल का स्टेशन था। सुबह पाँच बजे गाड़ी पर चढ़ना था। इसलिए स्नान करके स्टेशन पर पहुँच गए। विचार किया कि पाठ गाड़ी में कर लूँगा। गाड़ी में चढ़ गए। जिस डिब्बे में वे दोनों चढ़े, वह भरा था। कोई सीट खाली नहीं थी। कुछ व्यक्ति खड़े थे। गाड़ी चल पड़ी। कुछ देर पश्चात् उस पाठी ने सीट पर बैठे दो व्यक्तियों से कहा कि भाई साहब! कपा मुझे सीट दे दें। मैंने रामायण का पाठ करना है। आज गाड़ी पकड़ने की शीघ्रता के कारण घर पर नहीं कर सका। सज्जन पुरूषों ने पूरी सीट ही खाली कर दी। वे खड़े हो गए और बोले, हे विप्र जी! हमारा अहो भाग्य है कि आज हमको भी पवित्र ग्रन्थ रामायण जी का अमतज्ञान सुनने को मिलेगा। पंडित जी ने पाठ ऊँचे स्वर में बोलना शुरू किया। प्रसंग था - भरत ने अपने बड़े भाई के अधिकार वाले राज्य को स्वीकार नहीं किया। जब तक श्री रामचन्द्र जी बनवास पूर्ण करके नहीं आए, तब तक राजगद्दी पर अपने भाई रामचन्द्र की जूती रखी और स्वयं पथ्वी पर बैठा और नौकर बनकर राज-काज संभाला। जब भाई रामचन्द्र अयोध्या लौटे तो उनको राज्य लौटा दिया। भाई हो तो ऐसा। पाठ सम्पूर्ण होने पर सबने कहा कि वाह पंडित जी वाह! कमाल कर दिया। एक व्यक्ति उसी डिब्बे में ऐसा बैठा था जिसने अपने पिता जी की वर्षी पर एक दिन का पाठ करना था। कोई पाठी नहीं मिल रहा था। वर्षी अगले दिन ही थी। उसने पंडित जी से कहा कि हे गुरू जी! कल मेरे पिता जी की वर्षी के उपलक्ष्य में पाठ कर दो। पंडित जी बोले कि कल नहीं कर सकता। सब उपस्थित यात्रियों ने कहा कि पंडित जी! आपका तो कार्य यही है। इस बेचारे के लिए मुसीबत बनी है। परंतु पाठी साफ मना कर रहा था। सबने पूछा कि ऐसा क्या आवश्यक कार्य है जो आप कल पाठ को मना कर रहे हो। पंडित जी बात को टाले, बस वैसे ही, बस वैसे ही। उसका साथी बोला कि मैं सच्चाई बताऊँ, यह कल क्यों पाठ नहीं कर सकता। इसने अपने भाई पर पचास गज की कुरड़ी के गढ्ढे पर मुकदमा कर रखा है। मैं इसका गवाह हूँ, कल की तारीख है। उपस्थित व्यक्ति बोले कि हे पंडित जी! कथा तो कैसी मार्मिक सुनाई और आप अमल कतई नहीं करते। ऐसे व्यक्ति के द्वारा की गई कथा का श्रोताओं पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, करनी तज कथनी कथैं, अज्ञानी दिन रात।
कुकर (कुत्ते) ज्यों भौंकत फिरैं, सुनी सुनाई बात।।(1)

गरीबदास जी ने भी कहा है :-

गरीब, बीजक की बातां कहैं, बीजक नांही हाथ।
पथ्वी डोबन उतरे, ये कह कह मीठी बात।।(2)

शब्दार्थ :- जो व्यक्ति कहते हैं ज्ञान की बातें, औरों को शिक्षा देते हैं कि किसी का बुरा मत करो, परंतु स्वयं गलती करते हैं। वे आध्यात्मिक गुरू उस कुत्ते के समान हैं जो व्यर्थ में भौंकता रहता है। उसी प्रकार ये धर्मगुरू एक-दूसरे से कथा सुनकर शिष्यों को सुनाते रहते हैं। स्वयं अमल नहीं करते।(1)

वाणी नं. 2 :- वे अज्ञानी धर्मगुरू तत्वज्ञान कहकर कोरे अज्ञान का प्रचार करते हैं क्योंकि उनको तत्वज्ञान का पता नहीं है। वे झूठे व्यक्ति पृथ्वी पर मानव के अनमोल जीवन का नाश करने के लिए जन्में होते हैं।(2)

सत्संग से मिली भक्ति की राह

संत नित्यानंद जी का बचपन का नाम नंदलाल था। वे ब्राह्मण कुल में जन्मे थे। संत गरीबदास जी (गाँव छुड़ानी जिला-झज्जर) के कुछ समय समकालीन थे। संत गरीबदास जी का जीवन सन् 1717-1778 तक रहा था। उस समय ब्राह्मणों का विशेष सम्मान किया जाता था। सर्वोच्च जाति मानी जाती थी। जिस कारण से गर्व का होना स्वाभाविक था। नंदलाल जी के माता-पिता का देहांत हो गया था। उस समय वे 7-8 वर्ष के थे। आप जी के नाना जी नारनौल के नवाब के कार्यालय में उच्च पद पर विराजमान थे। आप जी का पालन-पोषण नाना-नानी जी ने किया। शिक्षा के उपरांत नाना जी ने अपने दोहते नंदलाल को नारनौल में तहसीलदार लगवा दिया। एक तो जाति ब्राह्मण, दूसरे उस समय तहसीलदार का पद। जिस कारण से अहंकार का होना सामान्य बात है। तहसीलदार जी का विवाह भी नाना-नानी ने कर दिया था। तहसीलदार जी के महल से थोड़ी दूरी पर एक वैष्णव संत श्री गुमानी दास जी अपने किसी भक्त के घर सत्संग कर रहे थे। वे श्री विष्णु जी के भक्त थे। सर्व संत जन अपने सत्संग में परमात्मा कबीर जी की अमृतवाणी का सहयोग अवश्य लेते थे। सत्संग में बताया गया कि मानव जीवन किसलिए प्राप्त होता है, परंतु सत्संग न सुनने के कारण सांसारिक उठा-पठक में अपना अनमोल मानव जीवन नष्ट कर जाता है। अज्ञान के कारण जीव धन, पद तथा जाति का अभिमान करता है। भक्ति न करने वाला प्राणी अगले जन्म में गधे-कुत्ते, बैल आदि पशु-पक्षियों के शरीर में कष्ट उठाता है। इसलिए अभिमान त्यागकर पूर्ण संत से दीक्षा लेकर अपना कल्याण करवाना चाहिए। अन्यथा पर्वत से भारी कष्ट भोगना पड़ेगा।

सत्संग की आवाज सुनकर तहसीलदार मकान की छत पर कुर्सी लेकर बैठ गया। पूरा सत्संग सुना। दीक्षा लेने की प्रबल प्रेरणा बन गई, परंतु जाति और पद का अहंकार परेशान कर रहा था। ब्राह्मणों की कितनी इज्जत है। फिर मैं तहसीलदार हूँ। सत्संग में सामान्य लोग जाते हैं। मुझे शर्म लगेगी। कैसे जाऊँगा आश्रम में? स्वामी गुमानी दास जी का आश्रम नारनौल शहर से लगभग डेढ़ (1½) कि.मी. पर था। अंत में एक दिन निर्णय लिया कि सुबह वक्त से आश्रम में पहुँच जाऊँगा। अन्य व्यक्ति जाऐंगे, तब तक तो दीक्षा लेकर लौट आऊँगा। सत्संग करके संत जी आश्रम में चले गए। सुबह उठकर कुछ देर सैर करते थे। एक दिन नंदलाल

जी घोड़े पर बैठकर सुबह आश्रम की ओर जा रहे थे। गुमानी दास जी सैर के लिए उसी रास्ते पर जा रहे थे। संत जी ने सिर के बाल कटा रखे थे, उस्तरा फिरा रखा था। सिर पर कोई वस्त्र नहीं था। नंदलाल जी ब्राह्मण होने के नाते सौंण-कसौंण पर विश्वास रखते थे। किसी अच्छे कार्य के लिए जाते और आगे से कचकोल काढ़े (सिर पर उस्तरा फिराऐ) कोई आ जाता तो अपना जाना रद्द कर देते थे। आश्रम में दीक्षा लेने जा रहे थे, जिंदगी का सर्वोत्तम दिन था। आगे से सिर पर उस्तरा फिराए एक व्यक्ति मिल गया। नंदलाल जी का माथा ठनका और क्रोध आया। विचार किया कि आज दीक्षा का अवसर नहीं छोड़ना है, परंतु अपने सौण-कसौण को भी निस्क्रिय करना था। इसलिए अपने आप समाधान निकाल लिया कि इस मनहूस के सिर में टोला (हाथ की एक ऊँगली का उल्टा भाग) मार देता हूँ, कसौण समाप्त हो जाएगा। इसी उद्देश्य से घोड़ा उस व्यक्ति (संत गुमानी दास जी) के पास जाकर रोका और कहा कि हे कम्बख्त! तूने आज ही सिर मुंडवाकर मेरे सामने आना था। आज मैं अपनी जिंदगी के सबसे उत्तम कार्य के लिए आश्रम में जा रहा था। यह कहकर गुमानी दास जी के सिर पर टोले मारे और घोड़ा आश्रम की ओर चला दिया। संतो के साथ ऐसी घटनाऐं आम होती हैं। वे अधिक ध्यान नहीं देते। विचार तो किया कि व्यक्ति सभ्य तथा कोई उच्च अधिकारी तथा उच्च कुल का लग रहा था, कार्य पालियों वाले कर गया। नंदलाल आश्रम में गया। वहाँ संत के शिष्य मिले, राम-राम हुई। आने का कारण बताया। घोड़ा वक्ष से बाँध दिया और संत जी के आसन के पास बिछी बोरी पर बैठ गया। संत गुमानी दास जी सैर के पश्चात् स्नान करके आसन पर बैठे तो घोड़ा देखा। फिर समझते देर न लगी। नंदलाल जी ने देखा तो शर्म के मारे नीची गर्दन कर ली। गुमानी दास को आश्रम के भक्तों ने बता दिया था कि यह तहसीलदार जी दीक्षा लेने आए हैं। नंदलाल जी संत के चरणों में गिर गए और टोला मारने का कारण बताया। संत गुमानी दास जी ने कहा कि हे भक्त! जब हम एक आन्ने का घड़ा कुम्हार के पास से लेने जाते हैं तो उसको टोले मार-मारकर बजाकर जाँचते हैं कि कहीं फूटा तो नहीं है। आप जी तो जिंदगी का सौदा करने आए हो, आपने गुरू जी बजाकर देख लिया तो कोई पाप नहीं किया। नितानंद जी संत जी के शीतल स्वभाव से और भी अधिक प्रभावित हुए। दीक्षा ले ली। संत गुमानी दास जी ने उनका नाम बदलकर नित्यानंद रख दिया। जब सत्संग से जीने की राह मिली तो नितानंद जी ने वाणी बोली :-

ब्राह्मण कुल में जन्म था, मैं करता बहुत मरोड़।
गुरू गुमानी दास ने, दिया कुबुद्धि गढ़ तोड़।।(1)

फिर कितने आधीन हुए, वह इस वाणी से पता चलता है :-

सिर सौंपा गुरूदेव को, सफल हुआ यह शीश।
नित्यानंद इस शीश पर, आप बसै जगदीश।।(2)

भावार्थ :- जब तक सत्संग के विचार सुनने को नहीं मिलते तो भूलवश मानव

अहंकार में सड़ता रहता है। जब ज्ञान होता है कि आज राजा है, मत्यु उपरांत गधा, कुत्ता बनेगा तो इस अहंकार का क्या बनेगा? इसलिए भक्त अपने उस अड़ंगे को ज्ञान से साफ करके भक्ति पथ पर चलते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं। श्रीलंका के राजा रावण ने भक्ति बहुत की, परंतु अहंकार नहीं गया। जिस कारण से विनाश को प्राप्त हुआ। रावण भी ब्राह्मण था। नित्यानंद जी भी ब्राह्मण थे। सत्संग सुनकर निर्मल हो गए। रावण को सत्संग सुनने को नहीं मिला। जिस कारण से जीवन व्यर्थ गया और अमिट कलंक भी लग गया। नित्यानंद जी ने कहा कि मेरा जन्म ब्राह्मण कुल में होने के कारण जाति अभिमान के कारण पूर्ण मरोड़ (अहंकार) करता था। जब गुरू जी गुमानी दास जी के सत्संग वचन सुने तो जाति का अहंकार रूपी कुबुद्धि का गढ़ समाप्त हो गया। जीवन सफल हुआ।(1)

वाणी नं. 2 का भावार्थ :- सत्संग सुनकर नित्यानंद जी बहुत आधीनी करने लगे। अहंकार त्याग दिया। कहा कि मैंने अपने गुरू जी को अपना सिर दान कर दिया यानि जैसे गुरू जी रखेंगे, वैसे ही रहूँगा। मेरा सिर सफल हो गया, अन्यथा किसी रोग के कारण जीवन चला जाता। अब मेरे सिर पर परमात्मा का निवास है। मेरी रक्षा परमात्मा करता है। मुझे कोई चिंता नहीं।

नित्यानंद जी का शब्द :-

और बात तेरे काम ना आवै सन्तों शरणै लाग रे।
क्या सोवै गफलत में बन्दे जाग–जाग नर जाग रे।।
तन सराय में जीव मुसाफिर करता रहे दिमाग रे।
रात बसेरा करले डेरा चलै सवेरा त्याग रे। और बात————————।
उमदा चोला बना अनमोला लगे दाग पर दाग रे।
दो दिन क गुजरान जगत में जलै बिरानी आग रे। और बात————।
कुबद्ध कांचली चढ रही चित पर तू हुआ मनुष से नाग रे।
सूझै नहीं सजन सुख सागर बिना प्रेम बैराग रे। और बात——————।
हर सुमरै सो हंस कहावै कामी क्रोधी काग रे।
भंवरा ना भरमै विष के बन में चल बेगमपुर बाग रे। और बात———।
शब्द सैन सतगुरु की पहचानी पाया अटल सुहाग रे।
नितानन्द महबूब गुमानी प्रकटे पूर्ण भाग रे। और बात——————————।

(वास्तव में यह ऊपर लिखा शब्द कबीर साहेब जी का है। फिर भी हमने ज्ञान प्राप्त करना है।)

शब्दार्थ :- हे मानव (स्त्री/पुरूष)! परमात्मा की चर्चा व भक्ति के अतिरिक्त अन्य कोई बात यानि चर्चा तेरे काम की नहीं है। आपको तत्वज्ञान नहीं है। इसलिए मोह-ममता व अज्ञानता की नींद में सो रहा है यानि परमात्मा को भूला है। जाग-जाग यानि संभल जा और संतों से सत्संग सुनकर आत्म कल्याण करवा। यह मानव शरीर में जीव ऐसे हैं जैसे यात्री किसी होटल में कमरा किराए पर लेकर रात्रि व्यतीत करता है और सुबह त्यागकर अपने कार्य पर चला जाता है। इसी प्रकार

इस शरीर रूपी होटल में जीव यात्री के समान है। जब मृत्यु का समय आएगा, तब सवेरा हो जाएगा यानि शरीर रूपी सराय यानि होटल को त्यागने का समय हो गया है। आप शरीर त्यागकर भक्ति न करके खाली हाथ जाओगे।

❖ मानव शरीर रूपी वस्त्र अनमोल हैं। तत्वज्ञान के अभाव से भक्ति न करके पाप पर पाप करके इस पर दाग लगा रहा है। इस संसार में जीवन अधिक नहीं है। अपने परिवार के पोषण में तथा धन संग्रह करने में जो परेशानी उठा रहा है। पाप करके धन जोड़ रहा है। मृत्यु के पश्चात् परिवार तथा संपत्ति धन बेगानी हो जाएगी। इसे जोड़ने में किए पाप तुझे नरक में जलाऐंगे। पाप करके दूसरे की (बिरानी) आग में न जलकर मर।

❖ सत्संग सुने बिना पाप-पुण्य तथा शिष्टाचार का ज्ञान नहीं होता। मानव शरारती बुद्धि का हो जाता है। मानवता को भूलकर अपनी शक्ति के द्वारा निर्बल को सताकर सर्प वाला कार्य कर रहा है जो तेरे नाश का कारण बनता है। हे सज्जन पुरूष! यह ज्ञान है जो बिना प्रेम व सच्ची लगन से सत्संग सुने बिना नहीं होता।

❖ जो व्यक्ति भक्ति करता है तो उसे भक्त कहते हैं यानि हंस पक्षी जैसा अहिंसावादी कहा जाता है अर्थात् भक्त किसी को कष्ट नहीं देता। हंस पक्षी भी सरोवर की मछली व कीड़े नहीं खाता। केवल मोती खाता है। काग पक्षी स्वार्थवश जीवित पशु-पक्षी का माँस नोच-नोचकर खाता है, कष्ट देता है। इसी प्रकार सत्संग न सुनने वाला व्यक्ति अध्यात्म ज्ञान के अभाव से स्वार्थवश अन्य से धन लूटता है। चोरी करता है या अन्य कष्ट देता है जो पाप है। हे जीव रूपी भंवरा! विषय विकारों काम, क्रोध, मोह, लोभ रूपी विष के वन न भटक। यह काल लोक तो कष्ट का घर है। उस बिना कष्ट वाले सतलोक में चल, वह सुखदायक बाग है।

❖ नितानंद जी ने कहा है कि मैंने अपने गुरू जी का सत्संग सुना और उनका संकेत समझ गया जो ऊपर बताया है। अपना जीवन धन्य कर लिया। मुझे मेरे प्यारे महबूब गुरू गुमानी दास जी मिले। यह मेरा कोई पूर्व जन्म का सौभाग्य था।

शब्द

तन मन शीश ईश अपने पै, पहलम चोट चढावै।
जब कोए राम भक्त गति पावै, हो जी।।टेक।।
सतगुरु तिलक अजपा माला, युक्त जटा रखावावै।
जत कोपीन सत का चोला, भीतर भेख बनावै।।1।।
लोक लाज मर्याद जगत की, तृण ज्यों तोड़ बगावै।
कामनि कनक जहर कर जानै, शहर अगमपुर जावै।।2।।
ज्यों पति भ्रता पति से राती, आन पुरुष ना भावै।
बसै पीहर में प्रीत प्रीतम में, न्यूं कोए ध्यान लगावै।।3।।
निन्दा स्तुति मान बड़ाई, मन से मार गिरावै।
अष्ट सिद्धि की अटक न मानै, आगै कदम बढावै।।4।।
आशा नदी उल्ट कर डाटै, आढा बंध लगावै।

भवजल खार समुन्द्र में बहुर ना खोड़ मिलावै।।5।।
गगन महल गोविन्द गुमानी, पलक मांहि पहुंचावै।
नितानन्द माटी का मन्दिर, नूर तेज हो जावै।।6।।

शब्दार्थ :- संत नित्यानंद जी ने भक्ति को सफल करने की विधि बताई है। कहा है कि गुरू जी से दीक्षा लेने के पश्चात् परमेश्वर को पूर्ण रूप से समर्पित हो जाना चाहिए और तन-मन-धन अपने परमेश्वर को पहलम चोट चढ़ावै यानि प्रारम्भ से ही कुर्बानी का भाव बन जाए। तब भक्त की गति यानि मुक्ति होगी।

❖ वाणी नं. 1 :- कुछ साधक बाहरी वेश बनाते हैं। वे मस्तिक पर तिलक लगाते हैं। माला से मंत्र जाप करते हैं। सिर पर बड़े-बड़े बाल बढ़ाकर रखते हैं। कच्छे के स्थान पर केवल कोपीन (चार इंच चौड़ा कपड़ा) बाँधते हैं तथा शरीर पर लंबा कुर्ता जो घुटनों से भी नीचे तक लंबा होता है, पहनते हैं। इस बाहरी दिखावे के स्थान पर अपने सतगुरू को सम्मान दो। उसको मस्तिक पर बैठाओ यानि गुरू का भक्त बनकर प्रत्येक मर्यादा व आज्ञा का पालन करके जनता में उदाहरण बने कि भक्त हो तो ऐसा जिससे गुरू जी की शिक्षा-दीक्षा का परिणाम दूर से दिखाई दे जैसे माथे पर तिलक दूर से दिखाई देता है जो भक्त की पहचान है। भक्त की पहचान बाहरी आडम्बर की बजाय क्रिया से करवाई जाए। शुभ कर्म करे, बुराईयों से बचे। श्वांस के जाप की माला श्वांस-उश्वांस से अजपा जाप करे। सिर पर बड़े बालों की जटा के स्थान पर सतगुरू द्वारा बताई भक्ति की युक्ति को दृढ़ता से अपनाए। गुप्तांग पर केवल कोपीन से संयम नहीं रहता। संयम रहता है जति भाव अपनाने से, वह अपनाए। युवा स्त्री को देखकर मन में दोष न आने दे। सत्य वचन बोले। यह भक्त का असली चोला यानि भक्त दिखाई देने वाला वस्त्र है। सत्यज्ञान से पता चलता है कि यह सत्य भक्ति कर रहा है या अपना जीवन गलत साधना में नष्ट कर रहा है।(1)

❖ संसार के व्यक्तियों के व्यगों व लाज (शर्म) के कारण भक्ति में बाधा न आने दे। उस लोक लाज यानि यह शर्म कि लोग क्या कहेंगे, मैं सत्संग में जाता हूँ, दण्डवत् करता हूँ, परंपरागत भक्ति त्याग दी है। इस लोकलाज को तिनके की तरह तोड़कर फैंक दे यानि उसको बाधा न बनने दे। कनक यानि स्वर्ण तथा कामिनि यानि सुंदर युवती को देखकर अपनी नीयत में दोष न आने दे। उसे विष के तुल्य जाने। तब साधक अमर लोक में जा सकेगा।(2)

❖ अपने इष्टदेव के प्रति पतिव्रता स्त्री की तरह समर्पित रहे। जैसे पतिव्रता स्त्री अपने पति के अतिरिक्त अन्य किसी पुरूष को पति रूप में इच्छा नहीं करती, चाहे कितना ही सुंदर व धनवान हो। अपने परमात्मा की भक्ति को कभी न भूलें। लोग-दिखावा न करके हृदय से मन-मन में श्वांस-उश्वांस से परमात्मा के नाम का स्मरण करता रहे। (भक्त से तात्पर्य है कि स्त्री या पुरूष कोई भी हो।) जैसे पतिव्रता स्त्री अपने मायके घर चली जाती है तो वह परिवार को पता नहीं लगने देती कि वह अपने पति को याद करती है। इस प्रकार साधक अपना ध्यान प्रभु

चिंतन में लगाए।(3)

❖ पूर्ण सतगुरू से सत्य भक्ति प्राप्त करने के पश्चात् कोई भक्त की निंदा करता है तो बुरा न मानें। यदि कोई प्रशंसा करता है तो उससे प्रभावित न हों। सत्य भक्ति शास्त्रानुसार विधि विधान से करते हैं तो साधक को कुछ सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं जो मोक्ष में सहायक नहीं होती। वे सँख्या में आठ हैं। उनके द्वारा साधक किसी को हानि, किसी को लाभ देकर अपनी भक्ति नष्ट करता है। वह चमत्कार दिखाकर प्रसिद्ध तो हो जाता है, परंतु उसका भविष्य नरक बन जाता है। पशु-पक्षियों की योनियों को प्राप्त करता है। इसलिए मोक्ष प्राप्ति की इच्छा करते हुए साधक इन अष्ट सिद्धियों वाली फोकट प्रभुता में न अटके। इनको त्यागकर मोक्ष प्राप्ति के उद्देश्य से इनसे आगे की आशा करे, आगे को बढ़े।(4)

❖ इस पृथ्वी लोक के धन-वैभव, राज, संपत्ति की अनेकों इच्छाओं रूपी नदी को रोके। आढ़ा बंद लगाना यानि दृढ़ निश्यच रूपी मजबूत बन्द लगाए। संसार रूपी खारे यानि दुःखों से भरे समुद्र में फिर जन्म न ले।(5)

❖ जिस इष्ट की भक्ति गुरू बताता है, वह गुरू अपने अनुयाईयों को उस इष्ट के धाम में जो आकाश में है, पहुँचाने में पूरा सहयोग करता है। नित्यानंद जी के गुरू जी श्री गुमानी दास जी श्री विष्णु जी के भक्त थे। नित्यानंद जी ने उसी की प्राप्ति की महिमा बताई है तथा कहा है कि अपनी साधना की शक्ति को सुरक्षित रखने से सूक्ष्म शरीर जो स्थूल शरीर के अंदर है, वह भक्ति की शक्ति से तेजोमय हो जाता है। यदि भक्ति नहीं करता तो वह शरीर मिट्टी के तुल्य था। इस शब्द से यह प्रमाणित हुआ है कि जैसे खिलाड़ी जिला स्तर पर खेलते हैं तो खेल के नियम वही होते हैं जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलने वाले खेल के होते हैं। नित्यानंद जी तो राज्य स्तर पर खेल खेला करते थे। उसको सफल किया। हम परमात्मा कबीर जी को इष्ट मानकर भक्ति करते हैं, नियम वही हैं। हम अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी हैं।(6)

संत नित्यानंद जी ने अपने जीवन के अंतिम दिन जटैला तालाब पर भक्ति करके व्यतीत किये। जटैला तालाब भिवानी जिले की तहसील दादरी में कई गाँवों की सीमा पर बना है। (गाँव-माजरा, बिगोवा, बास आदि-आदि की सीमा पर है।) संत नित्यानंद जी श्री विष्णु (श्री कृष्ण) जी की भक्ति करते थे। उनके गुरू श्री गुमानी दास जी दिल्ली के संत श्री चरण दास वैष्णव के शिष्य थे। पाठकजन पढ़ें सृष्टि रचना इसी पुस्तक के पृष्ठ 254 पर। आप जी को ज्ञान होगा कि संत नित्यानंद जी को किस श्रेणी का मोक्ष प्राप्त हुआ है। संत गरीबदास जी को परमात्मा कबीर जी मिले थे। उन्होंने संत गरीबदास जी को बताया कि संत-भक्त किसी भी स्तर की भक्ति कर रहा है, वह आदरणीय है। परंतु जब तक परम सतगुरू (पूर्ण गुरू) नहीं मिलेगा जो दो अक्षर का सच्चा नाम दीक्षा में देता है, तब तक न तो उस गुरू की मुक्ति है और न शिष्य की।

गरीब, साध–साध सब नेक हैं, आप आपनी ठौर।

जो निज धाम पहुँचावहीं, सो साधु कोई और।।
गरीब, साध हमारे सगे हैं, ना काहू को दोष।
जो सारनाम बतावहीं, सो साधु सिर पोष।।

शब्दार्थ :- संत गरीबदास जी ने कहा है कि जो परमात्मा का सत्य मार्ग बताते हैं, वे संत अच्छी आत्माऐं हैं। उनका उद्देश्य गलत नहीं है। जो जहाँ तक का ज्ञान रखता है, वह उस स्थान पर ठीक है यानि जैसे कोई विष्णु की साधना बताता है, कोई शिव की तथा कोई ब्रह्म की साधना वेदों अनुसार करता तथा करवाता है। वह उस स्थिति तक तो ठीक है, परंतु उस साधना से निज धाम यानि सनातन परम धाम (सतलोक) प्राप्त नहीं हो सकता। जो संत सतलोक प्राप्ति का मार्गदर्शन करते हैं, वे संत उपरोक्त संतों से भिन्न हैं।

जो संत परमात्मा के लिए प्रयत्नशील हैं, वे सब संत हमारे सगे यानि रिश्तेदार हैं। हमारे खास साथी हैं। इनको हम दोष नहीं देते क्योंकि इनको पूर्ण मोक्ष मंत्र सारनाम का ज्ञान नहीं है। इन संतों का शिष्य बनने से जीव का पूर्ण मोक्ष नहीं होता, जन्म-मरण बना रहता है। जो संत सारनाम की दीक्षा देते हैं, वे हमारे सिर के ताज हैं। वे सिर-माथे पर रखने योग्य हैं अर्थात् विशेष आदरणीय हैं।

श्री विष्णु जी का स्वयं जन्म-मरण रहता है तो उपासक को वह मोक्ष नहीं मिल सकता जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि ''तत्वदर्शी संत से तत्वज्ञान प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आता।'' केवल उस परमेश्वर की भक्ति करो जिसने संसार रूपी वृक्ष की रचना की है। संसार का विस्तार जिनसे हुआ है।

हिन्दु समाज के गुरूजन कहते हैं कि गीता का ज्ञान श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को सुनाया। श्री कृष्ण जी श्री विष्णु जी का अवतार यानि स्वयं विष्णु जी माने जाते हैं। श्रीमद्भगवत गीता के अध्याय 4 श्लोक 5 में गीता बोलने वाले ने कहा कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। (इससे स्पष्ट हुआ कि श्री विष्णु जी नाशवान हैं, जन्म-मृत्यु होता रहता है।) श्री देवीपुराण के तीसरे स्कंद में स्वयं विष्णु जी ने कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर जन्मते-मरते हैं। हमारा तो अविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) हुआ करता है। {इससे भी स्पष्ट है कि श्री विष्णु जी अविनाशी नहीं हैं। गीता अध्याय 2 श्लोक 17, गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में अविनाशी परमात्मा तो गीता ज्ञान दाता से भी अन्य कहा है। फिर गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता ने कहा कि ''हे भारत! सर्वभाव से तू उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।}

इन प्रमाणों से सहज में पता चलता है कि श्री नित्यानंद जी को गीता में वर्णित पूर्ण मोक्ष प्राप्त नहीं हुआ। कबीर जी ने कहा है कि :-

जो जाकि शरणा बसै, ताको ताकी लाज। जल सौंही मछली चढ़े, बह जाते गजराज।।

भावार्थ :- जो भक्त जिस भी देवी-देव की भक्ति करता है, वह ईष्ट अपने भक्त को राहत अवश्य देता है जो सामान्य व्यक्ति के लिए अनहोनी के समान होती है। उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति ने थानेदार की सेवा कर रखी है यानि मित्रता कर रखी है तो थानेदार अपने मित्र को थाने में आने पर कुर्सी पर बैठाता है। चाय-भोजन खिलाता-पिलाता है जो सामान्य व्यक्ति के लिए संभव नहीं है। यह सामान्य व्यक्ति के लिए अनहोनी से कम नहीं है। यदि किसी ने पुलिस अधीक्षक (S.P.) से पहचान बना रखी है तो उसको और अधिक लाभ होता है। इसी प्रकार हम ऊपर चलें तो प्रान्त में यदि मुख्यमंत्री जी से पहचान है तो उसको जो लाभ होगा, वह नीचे वालों की तुलना में अनहोनी होगी। इसी प्रकार यदि देश के प्रधानमंत्री जी से मेल हो जाए तो लाभ का वार-पार नहीं।

लेखक यह कहना चाहता है कि यदि कोई देवी-देवताओं की भक्ति करता है तो लाभ तो उनको भी मिलता है, परंतु जो लाभ पूर्ण परमात्मा की भक्ति से सर्व लाभ होता है। यदि प्रधानमंत्री का व्यक्ति है तो उसके साथ देश के सर्व मुख्यमंत्री, मंत्री तथा अन्य अधिकारी-कर्मचारी हो जाते हैं। सब उसका सहयोग करते हैं। विरोध का स्थान नहीं रहता। इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने वाले भक्त के साथ विश्व के सब देवी-देवता हो जाते हैं। वे उसकी हरसंभव सहायता करते हैं, बाधा नहीं करते। यदि कोई भूत-पित्तर, प्रेत, भैरव, बेताल पूर्ण परमात्मा के भक्त को हानि करने की सोचता भी है तो देवी-देवता ही उनको दूर कर देते हैं और बताते हैं कि तुम्हें पता है यह किसकी शरण में है। फिर वे शैतान शक्तियाँ भय मानकर कोई हानि करने की हिम्मत नहीं करते। यदि गलती से किसी भूत-प्रेत ने कुछ छेड़छाड़ परमेश्वर के भक्त से कर दी तो उसे परमेश्वर के गण पकड़कर ले जाते हैं और पिटाई करके सलाखों के अंदर बंद कर देते हैं। परमात्मा कबीर जी ने कहा है कि :-

एकै साधै सब सधै, सब साधें सब जाय। माली सींचै मूल को, फूलै—फलै अघाय।।

शब्दार्थ :- आम या अन्य वृक्ष के पौधे की जड़ को जमीन में गढ्ढा बनाकर रोपते हैं। जड़ की सिंचाई करते हैं। एक जड़ को साधने यानि पूजा करने से पौधे के सर्व अंग विकसित होते हैं। पौधा अच्छी तरह फलता-फूलता है। पौधा पेड़ बनकर छाया, लकड़ी तथा फल देता है। यदि उस पौधे की शाखाओं को जमीन में गढ्ढे में रोपकर सब शाखाओं की सिंचाई करेंगे और मूल की सिंचाई नहीं करेंगे तो सब कुछ नष्ट हो जाएगा। माली यानि पौधा रोपण का जानकार जिसे माली कहते हैं, वह मूल की ओर से पौधे को जमीन में लगाता है, मूल की सिंचाई करता है। लाभ लेता है। इसी प्रकार तत्वदर्शी संत संसार रूपी पौधे की मूल यानि परम अक्षर ब्रह्म को इष्ट मानकर पूजा करता तथा करवाता है। वह उस एक की पूजा करके सर्व देवों को साध लेता है। सर्व देवता उसी सतपुरूष की आज्ञा में चलते हैं। साधक का कार्य सिद्ध करते हैं। यदि सब देवों की पूजा करेंगे तो सतपुरूष रूष्ट हो जाएगा। उसकी आज्ञा के बिना देवता कुछ नहीं कर पाते यानि साधक की साधना

शास्त्र के विरूद्ध होने के कारण कुछ लाभ नहीं मिलता।

इसलिए पूर्ण परमात्मा की भक्ति करें। वर्तमान में मेरे (रामपाल दास) के अतिरिक्त विश्व में किसी को सत्य ज्ञान नहीं है। आप आऐं और दीक्षा लेकर अपना तथा परिवार का कल्याण करवाऐं।

''मनीराम कथा वाचक पंडित की करनी''

मनीराम नाम का कथावाचक पंडित प्रसिद्ध था। हरियाणा के एक गाँव में रामायण की कथा का आयोजन किया। रामायण की कथा अधिक से अधिक ग्यारह (11) दिन में संपूर्ण हो जाती है। मनीराम पंडित जी ने तीस दिन में संपूर्ण की। विचार किया था कि अधिक दिन कथा चलेगी तो प्रतिदिन दान आएगा। इस प्रकार अधिक दक्षिणा प्राप्त होगी। तीस दिन की कथा में मनीराम पंडित जी को तीस रूपये ही प्राप्त हुए। गाँव के कुछ व्यक्तियों ने जिस दिन मनीराम ने कथा का समापन करना था, उस दिन उसी समय दिल्ली से नाचने-गाने वाली प्रसिद्ध नर्तका चम्पाकली का नाच-गाना करा दिया। सारा गाँव नाच-गाना देखने-सुनने उमड़ पड़ा। दो घण्टे में चम्पाकली को पाँच सौ रूपये मिले। मनीराम जी को तीस दिन में कुल तीस रूपये प्राप्त हुए। पंडित जी के दुःख का कोई वार-पार नहीं रहा। रास्ते में गाँव छुड़ानी था। मनीराम जी को पता था कि यहाँ गरीबदास जी परम संत रहते हैं, उनसे मिलकर आगे चलूँगा। संत गरीबदास जी के पास गाँव तथा आसपास के गाँवों (गवांड) के दस-बारह भक्त बैठे थे। उसी समय पंडित मनीराम जी पहुँच गए। संत गरीबदास जी से राम-राम किया। संत गरीबदास जी ने भी राम-राम कहा तथा उचित आसन देकर बैठाया। कुशल-मंगल पूछा तो मनीराम बोले, हे महाराज! कलयुग का पहरा (समय) आ गया है। धर्म का नाश हो लिया है। जान गेड़ा आ लिया है अर्थात् जनता का धर्म के प्रति भाव समाप्त हो चुका है। धरती-आसमान फट जाऐं तो भी आश्चर्य की बात नहीं है। उपस्थित भक्तों ने पूछा कि हे पंडित जी! ऐसी क्या बात हो गई? मनीराम जी बोले कि क्या बताऊँ? संत गरीबदास जी तो सब जानते हैं। भक्तों ने पूछा कि हे महाराज जी! ऐसी क्या बात हो गई जिससे पंडित जी को ठेस लगी है? संत गरीबदास जी ने कहा कि :-

गरीब, फूटि आँख विवेक की, अंधा है जगदीश।
चम्पाकली को पाँच सौ, मनीराम को तीस।।

भावार्थ :- जिस जगदीश नाम के व्यक्ति ने जान-बूझकर शरारत करके मनीराम जी की कथा के भोग लगने वाले दिन नाचने-गाने वाली चम्पाकली का प्रोग्राम कराया था। वह ज्ञान नेत्रहीन अंधा है। गाँव के व्यक्तियों का भी विवेक (सोच-विचार) की आँखें फूटी हैं यानि उन्होंने भी विचार नहीं किया कि धर्म कथा चल रही है। उसका विरोध ऐसे अभद्र तरीके से नहीं करना चाहिए था। हे भक्तो! मनीराम जी ने ग्यारह दिन में संपूर्ण होने वाली कथा को अधिक दक्षिणा प्राप्त करने लालचवश तीस दिन तक खींचा। गाँव के कुछ शरारती व्यक्ति भी मनीराम जी के

उद्देश्य से परिचित थे। जिस कारण से उन्होंने पंडित जी को सबक सिखाने के लिए नतका को बुलाकर महापाप किया है। यह सच्चाई संत गरीबदास जी के मुख से सुनकर मनीराम जी के आश्चर्य का ठिकाना नहीं था। वह सोच रहा था कि आज 11:30 बजे सुबह भोग लगाकर मैं सीधा यहाँ पहुँचा हूँ। संत गरीबदास जी को कैसे पता चला? ये तो परमात्मा हैं। सब जानते हैं। मनीराम आसन से उठा और संत गरीबदास जी के चरणों में गिर गया और बोला, प्रभु! आपने सच कहा है कि मैंने भी लालचवश कथा को लंबा खींचा था। आप तो जानीजान हो। हे प्रभु! धर्म-कर्म तथा जीने की सच्ची राह दिखाएं। तब संत गरीबदास जी ने सत्संग करके उस पुण्यात्मा मनीराम जी को बताया कि :-

हे मनीराम जी! आप पाठ करके जनता से धन लेते हो। यह आप पर ऋण बनता है। इसको ब्याज समेत लौटाना पड़ता है। आपको यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है। आप कथा-पाठ तथा सत्संग करने के अधिकारी भी नहीं हो। आप ने लोगों को आकर्षित करने के लिए गले में कण्ठी (एक तुलसी के मनके को डोरे में डालकर गले में डालते हैं जो वैष्णव पंथ की पहचान होती है) डाल रखी है। एक माला 108 (एक सौ आठ) रूद्राक्ष के मणकों की डाल रखी है जो मंत्र जाप के लिए होती है जिसे संतजन सुमरणी कहते हैं। मस्तिक में तिलक लगाकर रखा है। पीले वस्त्र धारण कर रखे हैं। संत गरीबदास जी ने वाणी द्वारा समझाया कि :-

कण्ठी माला सुमरणी, पहरे से क्या होय। ऊपर डूंडा साध का, अन्तर राखा खोय।।

भावार्थ :- हे मनीराम जी! ऊपर के दिखावे से तो आप साधु लगते हो यानि बारही आडम्बर का तो डूंडा-ठा रखा है। आपकी वेशभूषा को देखकर तो भक्त समाज कटकर मर जाए। परंतु अंदर गुण साधु के बिल्कुल नहीं। लालच के कारण अंतःकरण मलीन बना रखा है। साधुता खो रखी है यानि संत भाव नहीं है। इसलिए कण्ठी-माला-सुमरणी को गले में डालने से साधु नहीं बनता। आत्म-कल्याण के लिए पूर्ण संत से दीक्षा लेकर आजीवन मर्यादा में रहकर भक्ति करने से कल्याण होता है। आप पाठ करने के अधिकारी नहीं हो। अधिकारी बिना पाठ करना यजमान के साथ धोखा है। आपके पूर्वज ऋषिजन वास्तव में पंडित थे। विद्वान पुरूष थे। वे ऐसी गलती नहीं करते थे। संत गरीबदास जी ने उदाहरण द्वारा समझाया है किः-

''राजा परीक्षित का उद्धार''

जिस समय राजा परीक्षित को ऋषि के शॉपवश तक्षक सर्प ने डसना था तो राजा परीक्षित जी के उद्धार के लिए श्रीमद् भागवत (सुधा सागर) की सात दिन की कथा करनी थी। पथ्वी के सर्व ऋषियों तथा पंडितों से श्रीमद् भागवत की कथा परीक्षित को सुनाने का आग्रह किया गया। वे वास्तव में पंडित थे। वे परमात्मा के विधान को जानते थे। उनको यह भी पता था कि सातवें दिन परिणाम आएगा। विश्व के बुद्धिजीव व्यक्तियों की दष्टि सातवें दिन परीक्षित का क्या होगा, इस पर टिकी थी। पथ्वी के सर्व पंडितों ने श्रीमद् भागवत की कथा सुनाने से मना कर

दिया तथा कह दिया कि हम अधिकारी नहीं हैं। हम किसी के मानव जीवन के साथ खिलवाड़ करके पाप के भागी नहीं बनेंगे। जिस वेदव्यास जी ने श्रीमद् भागवत को लिखा था, उसने भी कथा सुनाने से इंकार कर दिया। सब ऋषियों ने बताया कि स्वर्ग से ऋषि सुखदेव जी को इस कार्य के लिए बुलाया जाए। वे कथा सुनाने के अधिकारी हैं। राजा परीक्षित के लिए स्वर्ग से सुखदेव ऋषि को बुलाया गया। कुछ समय नरक भोगकर युद्धिष्ठिर स्वर्ग में पुण्य फल भोग रहा है। उसने वंश के मोहवश होकर अर्जुन के पौत्र परीक्षित के उद्धार के लिए अपने कुछ पुण्यों को सुखदेव (शुकदेव) ऋषि को दान किया। उस पुण्यों की कीमत से श्री शुकदेव ऋषि जी विमान में बैठकर पृथ्वी पर परीक्षित राजा को श्रीमद् भागवत की कथा सुनाने आए। सात दिन कथा सुनाकर परीक्षित का राज तथा परिवार से मोह समाप्त किया। तक्षक सर्प ने परीक्षित को कथा के दौरान ही डसा। उसी समय राजा की मृत्यु हो गई। परंतु कथा सुनने से परीक्षित का ध्यान संसार से हटकर स्वर्ग के सुख में लीन था। राजा के पद पर रहते हुए परीक्षित जी ने बड़े-बड़े धर्म यज्ञ किए थे। जिस कारण से उनके पुण्यों का ढ़ेर लगा था। वाणी में परमात्मा का विधान बताया है कि :-

कबीर, जहाँ आशा तहाँ बासा होई। मन कर्म वचन सुमरियो सोई।।

शब्दार्थ :- गीता अध्याय 8 श्लोक 6 में भी यही प्रमाण है कि ''हे भारत! परमात्मा का यह विधान है कि जो अन्त समय में जिसमें भाव यानि आस्था रखकर स्मरण करता है, वह उसी को प्राप्त होता है।'' इसी विधानानुसार राजा परीक्षित का जीव स्थूल शरीर त्यागकर (जो सर्प विष से मर गया था) सूक्ष्म शरीर युक्त शुकदेव ऋषि के साथ विमान में बैठकर स्वर्ग में चला गया।

संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर) ने मनीराम जी को बताया कि शुकदेव ऋषि के द्वारा सुनाई कथा से राजा परीक्षित का मन संसार से हटकर स्वर्ग की प्राप्ति के लिए प्रेरित हो गया था। जिस कारण से मृत्यु के उपरांत उस जन्म में राज के दौरान किए पुण्यों के फलस्वरूप स्वर्ग चला गया। जन्म-मरण का चक्र अभी शेष है। काल ब्रह्म के लोक में स्वर्ग-महास्वर्ग (ब्रह्मलोक) प्राप्ति को ही उद्धार हुआ मानते हैं जो सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान के टोटे का परिणाम है। काल ब्रह्म के लोक वाला उद्धार भी पृथ्वी के किसी ऋषि पंडित के स्तर का नहीं है क्योंकि इनका पाठ व कथा यानि सत्संग करने में मान-बड़ाई उद्देश्य रहता है। एक-दूसरे ऋषि के प्रति प्रसिद्धि की चाह में ईर्ष्या रोग भी लगा रहता है। शुकदेव जी एक संत जनक जी के शिष्य थे। राजा जनक को पूर्ण परमात्मा कबीर जी मिले थे। उनको सोहं नाम जाप दिया था। राजा जनक के प्रमुख तथा प्रिय शिष्य शुकदेव जी थे। जनक जी ने यह मंत्र केवल शुकदेव को दिया था। जिस कारण से शुकदेव का स्वर्ग समय अधिक है। राजा जनक के साथ काल ने धोखा किया था। उन्होंने अपने आधे पुण्य बारह करोड़ नरक भोग रहे जीवों को दान कर दिए थे। जिस कारण से उनका स्वर्ग समय कम रह गया था और वे सन् 1469 में पंजाब

प्रान्त में (भारत देश में) श्री कालूराम महता (खत्री-अरोड़ा) के घर श्री नानक नाम से जन्मे थे। (वर्तमान में पाकिस्तान देश में है।) शुकदेव जी को पृथ्वी पर किसी से कोई द्वेष तथा इर्ष्या या मान-बड़ाई की चाह नहीं थी। उनके द्वारा सुनाई कथा का प्रभाव परीक्षित के मन पर पड़ा। जिस कारण से उनका स्वर्गवास हुआ। यदि अन्य ऋषि कथा करता तो राजा का मन राज व परिवार में रह जाता। उनका पुनः जन्म पृथ्वी पर होता। पुण्यों को राजा बनकर नष्ट करता।

संत गरीबदास जी ने बताया कि हे मनीराम! जब तक जीव का जन्म-मरण समाप्त नहीं होता तो उसको परम शांति नहीं होती। फिर राजा बनकर राज की हानि-लाभ की आग में जलता है। निर्धन बनकर कष्ट उठाता है। फिर पशु-पक्षी आदि-आदि के शरीरों में कष्ट उठाता है। आप श्री विष्णु उर्फ श्री कृष्ण जी के भक्त हो। (वैष्णव साधु श्री विष्णु जी को ईष्ट रूप में मानते हैं।) आप यह भी मानते हो कि श्री कृष्ण यानि श्री विष्णु जी ने श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान अर्जुन को सुनाया। गीता ज्ञान सुनाने वाला गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में स्पष्ट करता है कि मेरे से अन्य कोई परम ईश्वर है। हे भारत! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम (सत्यलोक) को प्राप्त होगा।

गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि ''जो साधक जरा (वृद्धावस्था) तथा मरण (मृत्यु) से छुटकारा यानि मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील हैं। (काल लोक के राज्य तथा स्वर्ग-महास्वर्ग तक की इच्छा नहीं रखते।) वे तत् ब्रह्म से सम्पूर्ण अध्यात्म से तथा सर्व कर्मों से परिचित हैं।

❖ गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में अर्जुन ने गीता ज्ञान देने वाले से प्रश्न किया कि जिस तत् ब्रह्म के विषय में अध्याय 7 के श्लोक 29 में कहा है कि वह तत् ब्रह्म क्या है? इसका उत्तर गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 8 के श्लोक 3 में दिया है। बताया है कि वह परम अक्षर ब्रह्म है।

गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 5 तथा 7 में गीता ज्ञान दाता ने अपनी भक्ति करने को कहा है जिससे मेरी प्राप्ति होगी और गीता के अध्याय 8 के श्लोक 8, 9, 10 में उस अपने से अन्य परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करने को कहा है जिससे उसकी प्राप्ति होती है।

गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5, अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान बोलने वाले ने बताया है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। आगे भी होते रहेंगे।

गीता अध्याय 2 श्लोक 17 में जो अविनाशी परमात्मा कहा है तथा अध्याय 15 श्लोक 16-17 में तीन पुरूष (प्रभु) बताए हैं। श्लोक 16 में क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष का वर्णन है। दोनों नाशवान बताए हैं। फिर अध्याय 15 श्लोक 17 में अविनाशी परम अक्षर ब्रह्म की जानकारी बताई है। वह उत्तम पुरूष यानि सर्वश्रेष्ठ परमात्मा कहा है। वही तीनों लोकों का पालन-पोषण करता है, वास्तव में अविनाशी

है। गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में गीता ज्ञान देने वाले ने स्पष्ट किया है कि तत्वदर्शी संत मिलने के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् फिर लौटकर साधक संसार में कभी नहीं आते। उस परमात्मा की ही भक्ति करनी चाहिए जिससे संसार रूपी वृक्ष की प्रवृति विस्तार को प्राप्त हुई है यानि जिस परमात्मा ने विश्व की रचना की है।(गीता का उल्लेख समाप्त)

संत गरीबदास जी ने मनीराम को बताया कि परम अक्षर ब्रह्म यानि तत् ब्रह्म की भक्ति मेरे (संत गरीबदास जी के) पास है। यदि आप जी को पूर्ण मोक्ष करवाना है तो दीक्षा लो और कल्याण करवा लो। मनीराज जी को गीता के सर्व श्लोक कण्ठस्थ थे। तुरंत समझ गए और दीक्षा लेकर पाखण्ड त्यागकर कल्याण करवाया।

''पंडित की परिभाषा''

पंडित कहते हैं विद्वान को। मेरे पूज्य गुरू जी ब्राह्मण जाति में गाँव-बड़ा पैंतावास, तहसील-चरखी दादरी, जिला-भिवानी (हरियाणा) में जन्मे थे। वे अपने आपको कभी पंडित नहीं कहते थे।

मेरे दादा गुरूजी (मेरे गुरू जी के गुरू जी) गाँव-छावला (दिल्ली में नजफगढ़ के पास) के जाट थे। वे छोटी आयु में ही संत गंगेश्वरानंद जी के सत्संग से प्रभावित होकर उनके साथ हरिद्वार चले गए थे। संत गंगेश्वरानंद जी ने उनको काशी विद्यापीठ में पढ़ने के लिए छोड़ा। वे तीक्ष्ण बुद्धि के धनी थे। चार विषयों में आचार्य की डिग्री प्राप्त की। जिस कारण से जाट होते हुए भी पंडित चिदानंद जी के नाम से पुकारे जाते थे। गाँव गोपालपुर (तहसील-खरखोदा, जिला-सोनीपत, प्रान्त-हरियाणा) में उनका आश्रम है। उस पर बोर्ड लगा है, ''पंडित चिदानंद जी (गरीब दासी) आश्रम, गोपालपुर।'' उनका नाम चिदांनद जी था। कोई ब्राह्मण भाई दुःख ना माने, इसलिए पंडित की परिभाषा बताना अनिवार्य था, सो बताई है।

सुदामा जी पंडित थे

सुदामा जी ब्राह्मण कुल में जन्में थे। निर्धनता चरम पर थी। कई बार बच्चे भी भूखे सो जाते थे। सुदामा जी की धर्मपत्नी को पता था कि द्वारिका के राजा श्री कृष्ण जी के साथ सुदामा जी की अच्छी मित्रता रही है। पत्नी ने बहुत बार कहा कि आप अपने राजा मित्र कृष्ण से कुछ धन माँग लाओ। सुदामा जी कहते थे कि पंडित का काम माँगना नहीं होता। परमात्मा के विधान को समझकर उसके अनुकूल जीवन यापन करना होता है। गरीबदास जी ने भी कहा है कि :-

गरीब, नट, पेरणा कांजर सांसी, मांगत हैं भठियारे।
जिनकी भक्ति में लौ लागी, वो मोती देत उधारे।।
गरीब, जो मांगै सो भड़ूवा कहिए, दर–दर फिरै अज्ञानी।
जोगी जोग सम्पूर्ण जाका, मांग ना पीवै पानी।।

शब्दार्थ :- ''नट'' ये लोग जनता में कुछ खेल दिखाते थे। जैसे लंबे बाँस को बिना पृथ्वी में गाड़े उसके ऊपर चढ़ना जो अनोखा व कठिन कार्य होता था।

उस खेल के समापन पर कटोरा लेकर तमासा (खेल) देखने के लिए उपस्थित भीड़ से रूपये-पैसे माँगते थे। इसी प्रकार अन्य जाति के व्यक्ति कंजर, सांसी, भठियारे अपनी कला दिखाकर रूपये या कणक (गेहूँ, बाजरा, चना) माँगते थे। यदि योगी यानि साधक भी ऐसी सिद्धियों का प्रदर्शन करके रूपये व कणक इकट्ठे करता है तो उसकी सत्य साधना नहीं है। यदि सत्य साधक होता, शिष्यों को आशीर्वाद रूपी मोती देकर धनी बनाता है जो साधक के भाग्य से अलग अपनी ओर से उधार रूप में होता है। यदि संत दर-दर पर जाकर माँगता फिरता है तो वह अज्ञानी है। उसके पास शास्त्र अनुसार साधना नहीं, वह संत नहीं भड़वा है। भड़वा का अर्थ यहाँ पर बेशर्म है। जोगी यानि साधक की भक्ति सम्पूर्ण उसकी मानी जाती है जो किसी से कुछ नहीं माँगे। उसके उदाहरण में कहा है कि वह साधक और वस्तु तो छोड़ो, पानी भी माँगकर नहीं पीता।

परंतु पत्नी के बार-बार आग्रह करने पर विप्र सुदामा जी अपने मित्र श्री कृष्ण जी के पास चले गए। श्री कृष्ण जी ने उनका विशेष सत्कार किया। मुठ्ठीभर चावल साथ लेकर गए थे जो श्री कृष्ण जी ने चाव के साथ खाए। चरण तक धोये और कुशल-मंगल पूछा तो पंडित सुदामा जी ने कहा कि हे भगवान! मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। आपकी कृपा से ठीक निर्वाह हो रहा है। एक सप्ताह श्री कृष्ण जी के पास रूककर सुदामा जी घर को चल पड़े। एक बार भी नहीं कहा कि कुछ धन दे दो। वे जानते थे कि :-

कबीर, बिन माँगे मोती मिलें, माँगे मिले न भीख।
माँगन से मरना भला, यह सतगुरू की सीख।।

शब्दार्थ :- कबीर परमात्मा ने भी बताया है कि जो पूर्ण परमात्मा की सत्य साधना करता है, उसे माँगना नहीं चाहिए। माँगने से परमात्मा रूष्ट हो जाता है। उसको भिक्षा भी नहीं मिलती। वह साधक परमात्मा पर विश्वास रखकर नहीं माँगेगा तो परमात्मा उसकी इच्छा पूरी करेगा यानि मोती जैसी बहुमूल्य वस्तु भी दे देगा। पूर्ण सतगुरू यही शिक्षा देता है कि माँगने से तो व्यक्ति जीवित ही मर जाता है। माँगने से तो मरना भला है। भावार्थ आत्महत्या से नहीं है। यहाँ अपनी इच्छाओं का दमन करके मृतक बनकर रहने से है।

श्री कृष्ण जी राजा थे। अपने मित्र की स्थिति को समझकर विश्वकर्मा जी को आदेश देकर एक सप्ताह में सुदामा जी का महल बनवा दिया तथा बहुत सारा धन भी दे दिया। पंडित सुदामा जी अपने धर्म-कर्म पर डटे रहे। जिस कारण से उनको लाभ हुआ। इसे पंडित कहते हैं। जो माँगे सो भडूवा कहलाता है, पंडित की यह परिभाषा है।

प्रसंग चल रहा है :- दीक्षा (नाम लेने) के पश्चात् भक्त की आस्था संसार तथा परमात्मा में कैसी होनी चाहिए। उस प्रसंग में पवित्र कबीर सागर ग्रन्थ के अध्याय ''अनुराग सागर'' में परमेश्वर कबीर जी ने अपनी प्रिय आत्मा धर्मदास जी को इस प्रकार बताया है :-

अध्याय ''अनुराग सागर'' का सारांश

अनुराग सागर पृष्ठ 3 से 5 तक का सारांश :-

पृष्ठ 3 से :- धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्रश्न किया :-

प्रश्न :- प्रभु! दीक्षा प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर में कैसी आस्था होनी चाहिए?

उत्तर :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि जैसे मृग (हिरण) शब्द पर आसक्त होता है, वैसे साधक परमात्मा के प्रति लग्न लगावै।

❖ हिरण (मृग) पकड़ने वाला एक यंत्र से विशेष शब्द करता है जो हिरण को अत्यंत पसंद होता है। जब वह शब्द बजाया जाता है तो हिरण उस ओर चल पड़ता है और शिकारी जो शब्द कर रहा होता है, उसके सामने बैठकर मुख जमीन पर रखकर समर्पित हो जाता है। अपने जीवन को दॉव पर लगा देता है। इसी प्रकार उपदेशी को परमात्मा के प्रति समर्पित होना चाहिए। अपना जीवन न्यौछावर कर देना चाहिए।

❖ दूसरा उदाहरण :-

पतंग (पंख वाला कीड़ा) को प्रकाश बहुत प्रिय है। अपनी प्रिय वस्तु को प्राप्त करने के लिए वह दीपक, मोमबत्ती, बिजली की गर्म लाईट के ऊपर आसक्त होकर उसे प्राप्त करने के उद्देश्य से उसके ऊपर गिर जाता है और मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार भक्त को परमात्मा प्राप्ति के लिए मर-मिटना चाहिए। समाज की परंपरागत साधना को तथा अन्य शास्त्र विरूद्ध रीति-रिवाजों को त्यागने तथा सत्य साधना करने में कठिनाईयां आती हैं। उनका सामना करना चाहिए चाहे कुछ भी कुर्बानी देनी पड़े, पीछे नहीं हटे।

❖ तीसरा उदाहरण :-

पुराने समय में पत्नी से पहले यदि पति की मृत्यु हो जाती थी तो पत्नी अपने पति से इतना प्रेम करती थी कि वह अपने मृत पति के साथ उसी चिता में जलकर मर जाती थी। उस समय घर तथा कुल के व्यक्ति समझाते थे कि तेरे छोटे-छोटे बच्चे हैं। इनका आपके बिना कौन पालन करेगा? चाचे-ताऊ किसी के बच्चों को नहीं पालते।

जब तक माता-पिता होते हैं, तब तक कुल के व्यक्ति प्यार की औपचारिकता करते हैं। वास्तव में प्रेम तो अपनों में ही होता है। आप इन छोटे-छोटे बच्चों की ओर देखो। बच्चे पिता के वियोग में रो रहे होते हैं। माता का पल्लु पकड़ रोकते हैं। उस स्त्री को उसके स्वर्ण के आभूषण भी दिखाए जाते हैं। देख इनका क्या होगा? कितने सुंदर तथा बहुमुल्य आभूषण हैं। आप अपने बच्चों में रहो। परंतु वह स्त्री प्रेमवश होकर उसी चिता में जिंदा जलकर मर जाती थी। पीछे कदम नहीं हटाती थी। पहले तो इस प्रकार सती होती थी। कोई एक-दो ही होती थी। बाद में यह रीति-रिवाज कुल की मर्यादा का रूप ले गई थी। पति की मृत्यु के पश्चात् स्त्री को जबरन उसी चिता में जलाया जाने लगा था जिससे सती प्रथा का जन्म हुआ। बाद में यह संघर्ष के पश्चात् समाप्त हो गई।

इस कथा का सारांश है कि जैसे एक पत्नी अपने पति के वैराग्य में जिंदा जलकर मर जाती है। मुख से राम-राम कहकर चिता में जल जाती है।

जगत में जीवन दिन—चार का, कोई सदा नहीं रहे।
यह विचार पति संग चालि कोई कुछ कहै।।

शब्दार्थ :- बहुत पुराने समय में स्त्री अपने मृत पति के साथ जलकर मर जाती थी। उस समय उसकी आस्था अपने पति के अतिरिक्त किसी धन-सम्पत्ति, बालकों या आभूषण में नहीं रहती थी। वह विचार करती थी कि संसार में आज नहीं तो कुछ दिन बाद मृत्यु होगी। संसार के व्यक्ति कुछ भी कहें, वह किसी की परवाह नहीं करती थी। इस तरह का विचार करके वह स्त्री अपने पति के साथ जलकर मरती थी। यह कुरीति थी, परंतु उस समय बहुत महत्व माना जाता था। अब शिक्षित समाज ने इस कुरीति व जुल्म का अंत कर दिया है। भक्ति में दृढ़ता उत्पन्न करने के लिए यह उदाहरण सटीक है कि भक्त को भी ऐसी आस्था परमात्मा प्राप्ति के लिए बनानी चाहिए। संसार के व्यक्तियों की संसारिक बातों पर ध्यान न देकर अपने उद्देश्य की सफलता के लिए दृढ़ता से भक्ति करे। मर्यादा का पालन करे। नीचे की वाणियों में यही समझाया है कि भक्त सतपुरूष की प्राप्ति के लिए ऐसे ही लगन लगाए। संसार के नाते, संपत्ति को भूल जाए और केवल परमात्मा में ध्यान लगाए।

हे धर्मदास! इसी प्रकार भक्त का विचार होना चाहिए।

ऐसे ही जो सतपुरूष लौ लावै। कुल परिवार सब बिसरावै।।1
नारि सुत का मोह न आने। जगत रू जीवन स्वपन कर जानै।।2
जग में जीवन थोड़ा भाई। अंत समय कोई नहीं सहाई।।3
बहुत प्यारी नारि जग मांही। मात—पिता जा के सम नाहीं।।4
तेही कारण नर शीश जो देही। अंत समय सो नहीं संग देही।।5
चाहे कोई जलै पति के संगा। फिर दोनों बनैं कीट पतंगा।।6
फिर पशु—पक्षी जन्म पावै। बिन सतगुरू दुःख कौन मिटावै।।7
ऐसी नारि बहुतेरी भाई। पति मरै तब रूधन मचाई।।8
काम पूर्ति की हानि विचारै। दिन तेरह ऐसे पुकारै।।9
निज स्वार्थ को रोदन करही। तुरंत ही खसम दूसरो करही।।10
सुत परिजन धन स्वपन स्नेही। सत्यनाम गहु निज मति ऐही।।11
स्व तन सम प्रिय और न आना। सो भी संग नहीं चलत निदाना।।12
ऐसा कोई ना दिख भाई। अंत समय में होय सहाई।।13
आदि अंत का सखा भुलाया। झूठे जग नातों में फिरै उमाहया।।14
अंत समया जम दूत गला दबावै। ता समय कहो कौन छुड़ावै।।15
सतगुरू है एक छुड़ावन हारा। निश्चय कर मानहू कहा हमारा।।16
काल को जीत हंस ले जाही। अविचल देश जहां पुरूष रहाही।।17
जहां जाय सुख होय अपारा। बहुर न आवै इस संसारा।।18

ऐसा दृढ़ मता कराही। जैसे सूरा लेत लड़ाई।।19
टूक–टूक हो मरै रण के मांही। पूठा कदम कबहू हटावै नांही।।20
जैसे सती पति संग जरही। ऐसा दृढ़ निश्चय जो करही।।21
साहेब मिलै जग कीर्ति होई। विश्वास कर देखो कोई।।22
हम हैं राह बतावन हारा। मानै बचन भव उतरै पारा।।23
छल कपट हम नहीं कराहीं। निस्वार्थ परमार्थ करैं भाई।।24
जीव एक जो शरण पुरूष की जावै। प्रचारक को घना पुण्य पावै।।25
कोटि धेनु जो कटत बचाई। एता धर्म मिलै प्रचारक तांही।।26
लावै गुरू शरण दीक्षा दिलावै। आपा ना थापै सब कुछ गुरू को बतावै।।27
जो कोई प्रचारक गुरू बनि बैठै। परमात्मा रूठे काल कान ऐठै।।28
लाख अठाइस झूठे गुरू रोवैं। पड़े नरक में ना सुख सोवैं।।29
अब कहे हैं भूल भई भारी। हे सतगुरू सुध लेवो हमारी।।30
बोऐ बबूल आम कहां खाई। कोटि जीवन को नरक पठाई।।31
ऐसी गलती ना करहूं सुजाना। सत्य वचन मानो प्रमाना।।32

शब्दार्थ :- उपरोक्त वाणियों का भावार्थ है कि :-

जब लड़का युवा होता है तो उसका विवाह हो जाता है। विवाह के पश्चात् माता-पिता से भी अधिक लगाव अपनी पत्नी में हो जाता है। फिर बच्चों से ममता हो जाती है। यदि पति की मृत्यु हो जाती है तो पत्नी साथ नहीं जाती। कुछ समय पश्चात् यानि तेरहवीं क्रिया के पश्चात् छोटे-बड़े पति के भाई के साथ सगाई-विवाह कर लेती है। पति को पूर्ण रूप से भूल जाती है। यदि कोई अपने पति के साथ जल मरती है तो अगले जन्म में पक्षी या पशु योनि में दोनों भटक रहे होंगे।

जिस पत्नी के लिए पुरूष अपनी गर्दन तक कटा लेता है। यदि कोई किसी की पत्नी को बुरी नजर से देखता है, मना करने पर भी नहीं मानता है तो पति अपनी पत्नी के लिए लड़-मरता है। फिर वही पत्नी पति की मृत्यु के उपरांत अन्य पुरूष से मिल जाती है। यह भले ही समय की आवश्यकता है, परंतु भक्त के लिए ठोस शिक्षा है।

इसी प्रकार किसी व्यक्ति की पत्नी की मृत्यु हो जाती है तो वह कुछ समय उपरांत दूसरी पत्नी ले आता है। पत्नी अपने पति के लिए अपना घर, भाई-बहन, माता-पिता त्यागकर चली आती है, परंतु पत्नी की मृत्यु के उपरांत स्वार्थ के कारण रोता है। परंतु जब अन्य व्यक्ति विवाह के लिए कहते हैं तो सब भूलकर तैयार हो जाता है।

भावार्थ है कि सब स्वार्थ का नाता है। इसलिए सत्य भक्ति करके उस सत्यलोक में चलो जहाँ पर जरा (वृद्धावस्था) तथा मरण (मृत्यु) नहीं है।

आगे चेतावनी दी है कि हे भक्त! अपने शरीर के समान इंसान को कुछ भी प्रिय नहीं होता। अपने शरीर की रक्षार्थ लाखों रूपये ईलाज (Treatment) में खर्च कर देता है यह विचार करके कि यदि जीवन बचा तो मेहनत-मजदूरी करके रूपये

तो फिर बना लूँगा। यदि रूपये नहीं होते हैं तो संपत्ति को भी यही विचार करके बेच देता है और अपना शरीर बचाता है। परमेश्वर कबीर जी ने समझाया कि हे धर्मदास!

स्व तनु सम प्रिय और न आना। सो भी संग न चलत निदाना।।

शब्दार्थ :- अपने शरीर के समान अन्य कुछ वस्तु प्रिय नहीं है, वह शरीर भी आपके साथ नहीं जाएगा। फिर अन्य कौन-सी वस्तु को तू अपना मानकर फूले और भगवान भूले फिर रहे हो। सर्व संपत्ति तथा परिजन एक स्वपन जैसा साथ है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि मेरी अपनी राय यह है कि पूर्ण संत से सत्य नाम (सत्य साधना का मंत्र) लेकर अपने जीव का कल्याण कराओ और जब तक आप स्वपन (संसार) में हैं, तब तक स्वपन देखते हुए पूर्ण संत की शरण में जाकर सच्चा नाम प्राप्त करके अपना मोक्ष कराओ। सर्व प्राणी जीवन रूपी रेलगाड़ी (Train) में सफर कर रहे हैं। जिस डिब्बे (Compartment) में बैठे हो, वह आपका नगर है। जिस सीट पर बैठे हो, वह आपका परिवार है। जिस-जिसकी यात्रा पूरी हो जाएगी, वे अपने-अपने स्टेशन पर उतरते जाएंगे। यही दशा इस संसार की है। जैसे यात्रियों को मालूम होता है कि हम कुछ देर के साथी हैं। सभ्य व्यक्ति उस सफर में प्यार से रहते हैं। एक-दूसरे का सहयोग करते हैं। इसी प्रकार हमने अपने स्वपन वाले मानव जीवन के समय को व्यतीत करना है। स्वपन टूटेगा यानि शरीर छूटेगा तो पता चलेगा यह क्या था? वह परिवार तथा संपत्ति कहाँ है जिसको संग्रह करने में अनमोल जीवन नष्ट कर दिया। संसार के अंदर परमात्मा के अतिरिक्त ऐसा कोई नहीं है जो मृत्यु के समय में यम के दूत कण्ठ को बंद करेंगे, उस समय आपकी सहायता करे। परमेश्वर उसी की मदद करता है जिसने पूर्ण संत से दीक्षा ले रखी होगी। परमेश्वर उस सतगुरू के रूप में उपदेशी की सहायता करता है। इसलिए सतगुरू जी की शरण में आने के पश्चात् ज्ञानवान साधक परमेश्वर में ऐसी लग्न लगाए जैसी 1. मृग 2. पतंग 3. सती 4. शूरवीर लगाते हैं। अपने उद्देश्य से पीछे नहीं हटते। शूरवीर टुकड़े-टुकड़े होकर पृथ्वी पर गिर जाना बेहतर मानते हैं। पीछे कदम नहीं हटाते। पुराणों में तथा श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 2 श्लोक 38 में कहा है कि अर्जुन! यदि सैनिक युद्ध में मारा जाता है तो स्वर्ग में सुख प्राप्त करता है। भक्त भक्ति मार्ग में संघर्ष करते हुए भक्ति करके शरीर त्याग जाता है तो सतलोक सुख सागर में सदा के लिए सुखी हो जाता है। जन्म-मरण का संकट सदा के लिए समाप्त हो जाता है। जैसे हमारा जन्म पृथ्वी पर हुआ। हमारे को ज्ञान नहीं था कि हम किसके घर पुत्र या पुत्री रूप में जन्म लेंगे। फिर हमारे को नहीं पता था कि हमारा विवाह संयोग किसके साथ होगा? यह भी ज्ञान नहीं था कि हमारे घर बेटा जन्म लेगा या बेटी? यह सब पूर्व जन्म के संस्कारवश होता चला गया। आपस में कितना प्यार तथा अपनापन बन गया। सदा साथ रहने की इच्छा रहती है। कोई ना मरे, यह कामना करते रहते हैं। इस काल ब्रह्म के लोक में कोई सदा नहीं रहेगा। एक-एक करके पहले-पीछे सब मरते जाएंगे। सारे जीवन में जो

संपत्ति इकट्ठी की थी, वह यहीं रह जाएगी। जीव खाली हाथ जाएगा। परंतु जो पूर्ण संत से सच्चे नाम की दीक्षा लेकर साधना करेगा, वह सत्यलोक चला जाएगा। वहाँ पर ऐसे ही जन्म होगा जैसे पृथ्वी पर होता है। उसी प्रकार परिवार बनता चला जाएगा। वहाँ पर कोई कर्म नहीं करना पड़ता। सर्व खाद्य पदार्थ प्रचूर मात्रा में सत्यलोक में हैं। सदाबहार पेड़-पौधे, फुलवाड़ी, मेवा (काजू, किशमिश, मनुखा दाख आदि) दूधों के समुद्र (क्षीर समुद्र) हैं। सतलोक में वृद्ध अवस्था नहीं है। मृत्यु भी नहीं है। इसको अक्षय मोक्ष कहते हैं। पूर्ण मुक्ति कहते हैं जो गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है तथा जिस सिद्धी मोक्ष शक्ति को ''नैष्कर्म्य'' सिद्धि कहा है जिसका वर्णन गीता अध्याय 3 श्लोक 4, अध्याय 18 श्लोक 49 से 62 में है। इस काल ब्रह्म यानि ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्माण्डों के क्षेत्र में सर्व प्राणी कर्म करके ही आहार प्राप्ति करते हैं। सत्यलोक में ऐसा नहीं है। वहाँ बिना कर्म किए सर्व सुख पदार्थ प्राप्त होते हैं। जैसे बाग में फलों से लदपद वृक्ष तथा बेल होते हैं। फल तोड़ो और खाओ। सर्व प्रकार का अनाज भी ऐसे ही उगा रहता है। सदा बहार हैं। जो इच्छा है, बनाओ और खाओ। वहाँ पर खाना बनाना नहीं पड़ता। भोजनालय में रखो जो खाना चाहते हो, अपने आप तैयार हो जाता है। यह सब परमेश्वर की शक्ति से होता है। उस सतलोक (शाश्वत स्थान) को प्राप्त करने के लिए आप जी को सती तथा शूरमा की तरह कुर्बान होना पड़ेगा। भावार्थ है कि अपने उद्देश्य यानि पूर्ण मोक्ष प्राप्ति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संसार के सर्व लोभ-लाभ त्यागने पड़ें तो विचारने की आवश्यकता नहीं है। तुरंत छोड़ो और अपने स्मरण ध्यान में मगन रहो। यदि सतगुरू की शरण ग्रहण नहीं की तो जिस समय अंत समय आएगा, तब भक्तिहीन प्राणी के कंठ को यमदूत बंद करते हैं। उन यमदूतों से परिवार का कोई व्यक्ति नहीं छुड़वा सकता। केवल सतगुरू जी उस आपत्ति के समय सहायता करते हैं। इसलिए परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि:-

अंत समय जम दूत गला दबावैं। ता समय कहो कौन छुड़ावै।।
सतगुरू एक छुड़ावन हारा। निश्चय कर मानहु कहा हमारा।।

शब्दार्थ :- शब्दार्थ ऊपर कर दिया है।

यदि कोई भक्त ज्ञान समझकर दीक्षित होकर अन्य भोले-भूले जीवों को ज्ञान चर्चा करके सत्य ज्ञान प्रचार द्वारा सतगुरू शरण में लाकर दीक्षा दिलाता है तो उसको एक जीव को सत्य भक्ति मार्ग बताकर गुरू से दीक्षा दिलाने का इतना पुण्य होता है जितना एक करोड़ गायों को काटने से कसाई से बचाने का मिलता है। एक मानव का जीवन इतना बहुमुल्य तथा इतने पुण्यों से प्राप्त होता है। यदि कोई मूर्ख प्रचारक मान-बड़ाई के वश होकर स्वयं दीक्षा देता है, स्वयं गुरू बन बैठता है तो वह महा अपराधी होता है। उससे परमेश्वर रूष्ट हो जाता है तथा काल उसको कान पकड़कर घसीटकर ले जाता है। जैसे खटिक (कसाई) बकरे-बकरी को ले जाता है। कबीर सागर के अध्याय ''अम्बुसागर'' पृष्ठ 48 पर प्रमाण है कि :-

तब देखा दूतन कहं जाई। चौरासी तहां कुण्ड बनाई।।
कुण्ड–कुण्ड बैठे यमदूता। देत जीवन कहं कष्ट बहुता।।
तहां जाय हम ठाड (खड़े) रहावा। देखत जीव विनय बहुत लावा।।

''झूठे कड़िहार (नकली सतगुरू) की दशा''

पड़ै मार जीव करें बहु शोरा। बाँध–बाँध कुंडन में बोरा।।
लाख अठाइस पड़े कड़िहारा। बहुत कष्ट तहां करत पुकारा।।
हम भूले स्वार्थ संगी। अब हमरे नाहीं अर्धंगी।।
हम तो जरत हैं अग्नि मंझारा। अंग अंग सब जरत हमारा।।
कौन पुरूष अब राखे भाई। करत गुहार चक्षु ढल जाई।।

''ज्ञानी (कबीर जी) वचन''

करूणा देख दया दिल आवा। अरे दूत त्रास भास दिखावा।।

यह वाणी बनावटी है, वास्तविक वाणी नीचे है।

दुर्दशा देख दया दिल आवा। अरे दूत तुम जीवन भ्रमावा।।
जीव तो अचेत अज्ञाना। वाको काल जाल तुम बंधाना।।
चौरासी दूतन कहं बांधा। शब्द डोर चौदह यम सांधा।।
तब हम सबहन कहँ मारा। तुम हो जालिम बटपारा।।
हमरे भगतन को तुम भ्रमावा। पल पल सुरति जीवन डिगावा।।
गहि चोटि दूत घसियाए। यम रू दूत विनय तब लाए।।

''दूत (जो नकली गुरू बने थे) वचन''

चुक हमारी छमा कर दीजै। मन माने तस आज्ञा कीजै।।
हम तो धनी (काल) कहयो जस कीन्हा। सो वचन मान हम लीन्हा।।
अब नहीं जीव तुम्हारा भ्रमावैं। हम नहीं कबहू गुरू कहावैं।।

''ज्ञानी (कबीर जी) वचन''

सुन ज्ञानी बहुते हंसाई। दूतन दुष्ट बंध न छोड़ो जाई।।
पल इक जीवन सुख दीना। तब संसार गमन हम कीन्हा।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने बताया कि जो झूठे सतगुरू बनकर मान-बड़ाई के वश होकर काल प्रेरणा से भोले जीवों को भ्रमाया करते थे। उनको भी दण्ड मिलता है। उनको भी नरक में डालकर यातनाऐं दी जाती हैं। उनके शिष्य भी उसी नरक में गिरते हैं। जब मैं उस नरक के पास गया जिसमें वे मान-बड़ाई के भूखे नकली कड़िहार (संसार से काड़ने वाले यानि सतगुरू) बनकर महिमा बनाए हुए थे। लाखों जीवों को शिष्य बनाकर नरक में अपने साथ ले गए। फिर परमेश्वर के विद्यान अनुसार वे भी अपराधी होने के कारण नरक में पड़े थे। उस नरक क्षेत्र में कुण्ड बने हैं। प्रत्येक कुण्ड में जीव पड़े है तथा यमदूत सता रहे हैं। वे अठाईस लाख नकली सतगुरूओं ने मुझे देखकर अर्जी लगाई कि हमें बचा लो प्रभु! कारण यह था कि जो यमदूत उन्हें नरक में मार-पीट रहे थे, वे सब परमेश्वर कबीर जी की शक्ति के सामने काँपने लगे। इस कारण से उन नकली सतगुरूओं को लगा

कि ये कोई परम शक्ति वाले देव हैं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि तुमने भोले जीवों को भ्रमित किया। अपने आपको पूर्ण सतगुरू सिद्ध किया। तुम्हें पता भी था कि तुम्हारे पास नाम दीक्षा का अधिकार नहीं। तुम्हें पूर्ण मोक्ष का ज्ञान नहीं। अपने स्वार्थवश लाखों मनुष्यों के अनमोल जीवन का नाश कर दिया। वे काल जाल में फंसे रह गए। फिर मैंने उन दूतों (काल के बनाए कड़िहारों) को तथा अन्य यमदूतों को मारा, चोटी पकड़कर घसीटा। फिर नकली सतगुरूओं ने कहा कि हमने तो अपने धनी यानि मालिक काल ब्रह्म की आज्ञा का पालन किया है। अब आप जैसे कहोगे, हम वैसे करेंगे। मैंने कहा कि अब तुमको छोड़ा नहीं जाएगा। जो जीव उन नकली गुरूओं के शिष्य बनकर जीवन नष्ट कर गए थे। वे भी वहीं उनके साथ नरक में पड़े थे। जब तक मैं (कबीर परमेश्वर जी) वहाँ रहा, उन जीवों को नरक का कष्ट नहीं हो रहा था। इस प्रकार उनको कुछ समय का सुख देकर वहाँ से चलकर संसार में आया। मेरे आने के पश्चात् वे नकली गुरूओं तथा उनके भौंदू शिष्यों को फिर से नरक की यातना प्रारम्भ हो गई। इसलिए पूर्वोक्त वाणी में कहा है कि यदि कोई प्रचारक स्वयं गुरू बन बैठा तो परमेश्वर रूष्ट हो जाएगा और काल कान ऐंठेगा अर्थात् कष्ट देगा। इसलिए हे सज्जन पुरूष! कभी ऐसी गलती न करना। मेरे वचन को प्रमाणित मानना।

''भक्त का स्वभाव कैसा हो?''

(अनुराग सागर के पृष्ठ 6 से वाणी नं. 7 से 17)

धर्मदास वचन

मृतक भाव प्रभु कहो बुझाई। जाते मनकी तपनि नसाई।।
केहि विधि मृतक हो यह जीवन। कहो विलोय नाथ अमृतधन।।

कबीर वचन-मृतक के दृष्टांत (उदाहरण)

धर्मदास यह कठिन कहानी। गुरूगम ते कोई विरले जानी।।

भृंगी का दृष्टांत (उदाहरण)

मृतक होय के खोजहिं संता। शब्द विचारि गहैं मगु अन्ता।।
जैसे भृंग कीट के पासा। कीट गहो भृंग शब्द की आशा।।
शब्द घातकर तेही महैं डारे। भृंगी शब्द कीट जो धारे।।
तब लैगौ भृंगी निज गेहा। स्वाती देह कीन्हो समदेहा।।
भृंगी शब्द कीट जो माना। वरण फेर आपन करजाना।।
बिरला कीट जो होय सुखदाई। प्रथम अवाज गहे चितलाई।।
कोइ दूजे कोइ तीजे मानै। तन मन रहित शब्द हित जानै।।
भृंगी शब्द कीट ना गहई। तौ पुनि कीट आसरे रहई।।
एक दिन कीट गहेसी भृंग भाषा। वरण बदलै पूरवै आशा।।

''मृतक के और दृष्टांत''

(अनुराग सागर के पृष्ठ 7 से वाणी नं. 7 से 20)

सुनहु संत यह मृतक सुभाऊ। बिरला जीव पीव मग धाऊ।।
औरै सुनहु मृतक का भेवा। मृतक होय सतगुरू पद सेवा।।
मृतक छोह तजै शब्द उरधारे। छोह तजै तो जीव उबारे।।

पृथ्वी का दृष्टांत

जस पृथ्वी के गंजन होई। चित अनुमान गहे गुण सोई।।
कोई चन्दन कोई विष्टा डारे। कोई कोई कृषि अनुसारे।।
गुण औगुण तिन समकर जाना। तज विरोध अधिक सुखमाना।।

ऊख का दृष्टांत

औरो मृतक भाव सुनि लेहू। निरखि परखि गुरू मगु पगु देहू।।
जैसे ईख किसान उगावै। रती रती कर देह कटावे।।
कोल्हू महँ पुनि ताही पिरावै। पुनि कड़ाह में खूब उँटावे।।
निज तनु दाहे गुड़ तब होई। बहुरि ताव दे खांड विलोई।।
ताहू मांहि ताव पुनि दीन्हा। चीनी तबै कहावन लीन्हा।।
चीनी होय बहुरित तन जारा। ताते मिसरी है अनुसारा।।
मिसरीते जब कंद कहावा। कहे कबीर सबके मन भावा।।
यही विधिते जो शिष करही। गुरू कृपा सहजे भव तरई।।

भावार्थ :- अनुराग सागर पृष्ठ 6 पर लिखी पंक्ति नं. 7 से 17 तक का भावार्थ है कि धनी धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से विनयपूर्वक प्रश्न किया कि हे प्रभु! मुझे मृतक का स्वभाव समझाओ कैसा होता है? किस प्रकार जीवित मरना होता है। हे अमर परमात्मा! हे स्वामी! कृप्या बिलोय अर्थात् निष्कर्ष निकालकर वह अमृत धन अर्थात् अमर होने का मार्ग बताऐं।

''परमेश्वर कबीर वचन = मृतक के दृष्टान्त''

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! यह जो प्रश्न आपने किया है, यह जटिल कथा प्रसंग है। सतगुरू शरण में रहकर ज्ञान का इच्छुक ही इसको समझकर खरा उतरता है।

''भृंगी का दृष्टांत''

संत-साधकजन जीवित मृतक होकर परमात्मा को खोजते हैं। शब्द विचार यानि यथार्थ नाम मंत्रों को समझ विचार करके उस मार्ग के अंत यानि अंतिम छोर तक पहुँचते हैं अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करते हैं।

जैसे एक भृंग (पंखों वाला नीले रंग का कीड़ा) होता है जिसे भंभीरी कहते हैं जिसको इन्जनहारी आदि-आदि नामों से जाना जाता है जो भीं-भीं की आवाज

करती रहती है। वह अपना परिवार नर-मादा के मिलन वाली विधि से उत्पन्न नहीं करती। वह एक कीट (कीड़े) विशेष के पास जाती है। उसके पास अपनी भीं-भीं की आवाज करती है। जो कीड़ा उसकी आवाज से प्रभावित हो जाता है। उसको उठाकर पहले से तैयार किया मिट्टी के घर में ले जाती है। वह गोल आकार का दो इंच परिधि का एक-दो मुख वाला गारा का बना होता है। फिर दूसरा-तीसरा ले जाती है। फिर उनके ऊपर अपनी भीं-भीं की आवाज करती रहती है। फिर औस के जल को अपने मुख से लाकर उन कीटों के मुख में डालती है। उस भंभीरी यानि भंग की बार-बार आवाज को सुनकर वह कीट उसी रंग का हो जाता है तथा उसी तरह पंख निकल आते हैं। वह आवाज भी उसी की तरह भीं-भीं करने लगता है। भंभीरी ही बन जाती है। इसी प्रकार पूर्ण संत अपने ज्ञान को भंभीरी की तरह बार-बार बोलकर सामान्य व्यक्ति को भी भक्त बना लेता है। फिर वह भक्त भी सतगुरू से सुने ज्ञान को अन्य व्यक्तियों को सुनाने लगता है। संसार की रीति-रिवाजों को त्याग देने से अन्य व्यक्ति कहते हैं कि इसका रंग-ढ़ंग बदल गया है। यह तो भक्त बन गया है। जैसे भंग (भंभीरी) कीटों को अपनी आवाज सुनाती है तो कोई शीघ्र सक्रिय हो जाता है, कोई दूसरी, कोई तीसरी बार कोशिश करने से मानता है। इसी प्रकार जब सतगुरू कुछ व्यक्तियों को अपना सत्संग रह-रहकर सुनाते हैं तो कोई अच्छे संस्कार वाला तो शीघ्र मान जाता है, कोई एक-दो बार फिर सत्संग सुनकर मार्ग ग्रहण कर लेता है, दीक्षा ले लेता है। कुछ कीट ऐसे होते हैं, कई दिनों के पश्चात् अपना स्वभाव बदलते हैं। यदि वह कीट भंगी नहीं बना है और उस भंग कीट की शरण में रह रहा है तो अवश्य एक दिन परिवर्तन होगा। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! यदि शिष्य इसी प्रकार गुरू जी के विचारों को सुनता रहेगा तो उस भंग कीट की तरह प्रभावित होकर संसारिक भाव बदलकर भक्त बनकर हंस दशा को प्राप्त होगा।

पंष्ठ 7 से पंक्ति 7 से 20 तक का भावार्थ :-

कबीर जी ने कहा कि हे संतो! सुनो यह मंतक का स्वभाव। इस प्रकार कोई बिरला जीव ही अनुसरण करता है। वह पीव यानि परमात्मा को प्राप्त करने का मग यानि मार्ग प्राप्त करता है। उपरोक्त यानि भंग वाले उदाहरण के अतिरिक्त और सुनो मंतक का भाव जिससे मंतक यानि जीवित मंतक होकर सतगुरू के पद (पद्यति) के अनुसार साधना करता है।

''पंथ्वी का उदाहरण''

जैसे पंथ्वी में सहनशीलता होती है। इसी प्रकार पंथ्वी वाले गुण को जो ग्रहण करेगा, वह जीवित मंतक है और वही सफल होता है। पंथ्वी के ऊपर कोई बिष्टा (टट्टी) करता है। डालता है, कोई खेती करता है तो चीरफाड़ करता है। कोई-कोई धरती पूजन करता है। पंथ्वी गुण-अवगुण नहीं देखती। जिसकी जैसी भावना है, वह वैसा ही करता है। यह विचार करके धरती विरोध न करके सुखी रहती है।

भावार्थ है कि जैसे जमीन सहनशील है, वैसे ही भक्त-संत का स्वभाव होना चाहिए। चाहे कोई गलत कहे कि यह क्या कर रहे हो यानि अपमान करे, चाहे कोई सम्मान करे, अपने उद्देश्य पर दृढ़ रहकर भक्त सफलता प्राप्त करता है।

''उख (ईख यानि गन्ने) का दृष्टांत''

जैसे किसान ईख बीजता है। उस समय गन्ने के एक-एक फुट के टुकड़े करके धरती में दबा देता है। ईख गन्ना बनने के पश्चात् कोल्हु में पीड़ा जाता है। फिर रस को कड़ाहे में अग्नि की आँच में उबाला जाता है। तब गुड़ बनता है। यदि अधिक ताव गन्ने के रस को दिया जाता है तो वह खांड बन जाता है जो गुड़ से भी स्वादिष्ट होती है। और अधिक ताव देने से चीनी बन जाती है। और भी अधिक गर्म किया जाता है तो मिश्री बन जाता है। फिर मिसरी से कंद बन जाता है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि हे धर्मदास! इस प्रकार यदि शिष्य भक्ति मार्ग में कठिनाईयां सहन करता है तो उतना ही परमात्मा का प्रिय बहुमुल्य होता चला जाता है।

(८) 132 अनुरागसागर

मृतकभाव कौन धारण कर सकता है? छन्द

मिरतक भाव है कठिन धर्मनि, लहे विरलशूरहो ॥
कादर सुनतेहि तनमन दहै,पाछे न चितवतकूरहो॥
ऐसे शिष्य आप सम्हारे, नाव सही गुरुज्ञानको ॥
लहै भेदी भेद निश्चय, जाय दीप अमानको ॥६॥

मृतक ही साधु होता है

सोरठा–मृतक हो सो साधु, सो सतगुरुको पावई॥
मेटे सकल उपाध, तासु देव आसा करें ॥ ६ ॥

साधु किसे कहते हैं

साधूमार्ग कठिन धर्मदासा । रहनी रहे सो साधु सुबासा ॥
पांचों इन्द्री सम करि राखे ।नाम अमीरसनिशिदिन चाखे॥

चक्षुवशीकरण

प्रथमहिं चक्षु इन्द्री कहँ साधे। गुरु गम पंथ नाम अवराधे ॥
सुन्दर रूप चक्षुकी पूजा । रूप कुरूप न भावे दूजा ॥
रूप कुरूपहिं सम करजाने । दरस विदेह सदा सुख माने ॥

श्रवणवशीकरण

इन्द्री श्रवण वचन शुभ चाहै । उत्कट वचनसुनत चित दाहै॥
बोल कुबोल दोउ सह लेखे । हृदय शुद्ध गुरुज्ञान विशेखे ॥

नासिकावशीकरण

नासिका इन्द्री बास अधीना । यहि सम राखै संत प्रवीना॥

जिह्वावशीकरण

जिभ्या इन्द्री चाहै स्वादा । खट्टा मीठा मधुर सवादा ॥
सहज भावमें जो कछु आवे । रूखा फीका नहिं बिलगावे ॥
जो कोई पंचामृत ले आवे । ताहि देख नहिं हरष चढ़ावे॥
तजे न रूखा साग अलूना । अधिक प्रेमसौ पावैं दूना ॥

अनुरागसागर 133 (९)

शिश्नवशीकरण

इन्द्री दुष्ट महा अपराधी ।कुटिलकाम होई विरलेसाधी॥
कामिनि रूप कालकी खानी । तजहु तासु सँग हो गुरुज्ञानी॥

कामवशीकरण

जबही काम उमंग तन आवै । ताहि समय जो आप जुगावै॥
शब्द विदेह सुरत लै राखे । गहिमन मौन नामरसचाखे ॥
जब निहतत्त्वमें जाय समाई । तबहीं काम रहै मुरझाई ॥

कामदेव लुटेरा है । छन्द

काम परबल अति भयंकर, महा दारुण काल हो॥
सुरदेव मुनिगणयक्षगंधर्व,सबहि कीन्ह विलास हो॥
सबहिं लूटे विरल छूटे, ज्ञान गुण निज दृढ गहे ॥
गुरुज्ञान दीप समीप सतगुरु,भेदमारग तिन लहे॥७॥

कामलुटेरेसे बचने का उपाय

सोरठा–दीपक ज्ञान प्रकाश,भवन उजेरा करि रहो॥
सतगुरुशब्द विलास,भाज चोर अँजोरा जब॥७॥

अनलपक्षिका दृष्टान्त

गुरू कृपासों साधु कहावै । अनलपच्छ है लोक सिधावै॥
धर्मदास यह परखो बानी ।अनलपच्छ गम कहों बखानी॥
अनलपच्छ जो रहै अकाशा ।निशि दिन रहै पवनकी आशा॥
दृष्टिभाव तिनरति विधिठानी ।यहविधिगरभ रहेतिहिजानी॥
अंडप्रकाश कीन्ह पुनि तहवां । निराधार आलंबहिं जहवां ॥
मारग माहिं पुष्ट भो अंडा । मारग माहिं त्रिरह नौखण्डा॥
मारग माहिं चक्षु तिन पावा । मारग माहिं पंख पर भावा॥
महि ढिग आवा सुधि भइताहीं। इहां मोर आश्रम नहिं आहीं॥
सुरति सम्हार चले पुनि तहवां ।मात पिताको आश्रम जहवां॥

अनुराग सागर के पृष्ठ 8 तथा 9 का सारांश है कि साधक वही है जो अपनी सर्व इन्द्रियों को संयम में रखता है। जैसा मिल जाए, उसी में संतोष करे। रूप को

देखकर उस पर आकर्षित नहीं होवे। कुरूप को देखकर घ्णा न करे। दोनों को दिव्य ज्ञान की नजरों से देखे कि ऊपर का चाम गोरा-काला है, शरीर में हाड-माँस सब एक जैसा है तथा जरा-सा रोग होने पर गल जाता है, सडांद (बदबू) मारने लगती है। इस प्रकार विवेक से भक्ति करे। यदि कोई सम्मान करता है, प्यार से बोलता है तो खुशी महसूस न करें। यदि कोई कुबोल (कुवचन) कहता है तो दुःख न मानें। उनकी बुद्धि के स्तर को जानकर शांत रहें। यदि कोई अच्छा भोजन खीर-खाण्ड, हलवा-पूरी खिलाता है तो उसी कारण उससे प्रभावित न हों। उसको उसका कर्म का फल मिलेगा। यदि कोई रूखा-सूखा भोजन खिलाए तो उसको अधिक भाव से प्रेम से खाना चाहिए। काम वासना (Sex) को महत्त्व न दें, वही भक्त वास्तव में परमेश्वर प्राप्ति कर सकता है। यदि काम वासना परेशान करे तो उसको भक्ति नाम स्मरण में लगाकर आनंद प्राप्त करें। उसी समय काम वासना मुरझा जाती है। काम वासना का नाश करने का तरीका :-

कबीर, परनारी को देखिये, बहन बेटी का भाव।
कह कबीर काम नाश का, यही सहज उपाय।।

मोक्ष प्राप्ति का अन्य भाव ''अनल (अलल) पक्षी जैसा भाव''

जैसे एक अनल पक्षी (अलल पंख) आकाश में रहता था। यह पक्षी अब लुप्त हो चुका है। इसके चार पैर होते थे। आगे वाले छोटे और पीछे वाले बड़े। इसका आकार बहुत बड़ा होता था। लम्बे-लम्बे पंख होते थे। पूरा पक्षी यानि युवा पक्षी चार हाथियों को एक साथ उठाकर आकाश में अपने परिवार के पास ले जाता था।

अनल पक्षी (अलल पक्षी) ऊपर वायु में रहता था। वहीं से मादा अनल अण्डे उत्पन्न कर देती थी। वह अण्डे उस स्थान पर छोड़ती थी जहाँ केले का वन होता था। केले एक-दूसरे में फँसकर गहरा वन बना लेते थे। हाथियों का झुण्ड (समूह) यानि सैंकड़ों हाथी भी केले के वन में रहते थे क्योंकि हाथी केले के पेड़ खा जाता है तथा केले के पेड़ों पर ही लेट जाता है। मस्ती करता रहता है। अलल पक्षी का अण्डा वायुमंडल से गुजरकर नीचे प्थ्वी तक आने में हवा के घर्षण से पककर बच्चा तैयार हो जाता था। वह अण्डा केले के पेड़ों के ऊपर गिरता था। केले के पेड़ों की सघनता के कारण वह अण्डा क्षतिग्रस्त नहीं होता था। केवल इतनी गति से केले के पेड़ों को तोड़कर प्थ्वी पर गिरता था कि अण्डा फूट जाए। अण्डे का आकार बहुत बड़ा होता था। उसका कवर भी सख्त मजबूत होता था। बच्चे के बचाव के लिए अण्डे के कवर तथा बच्चे के बीच में गद्देदार पदार्थ होता था जो प्थ्वी के ऊपर गिरते समय बच्चे को चोट लगने से बचाता था। अनल पक्षी का बच्चा प्थ्वी पर अन्य पक्षियों के बच्चों के साथ रहता था। उनसे मिलकर उड़ता था, परंतु उसकी अंतरआत्मा यह मानती थी कि यह मेरा घर-परिवार नहीं है, मेरा परिवार तो ऊपर है। मैंने ऊपर अपने परिवार में जाना है। यह मेरा संसार नहीं है। वह जब युवा हो जाता है तो हाथियों के झुण्ड पर झपट्टा मारता था। चार हाथियों को चारों पंजों

से उठाता था तथा एक हाथी को चौंच से पकड़कर उड़ जाता था। अपने परिवार के पास चला जाता था। साथ में उनके लिए आहार भी ले जाता था।

कबीर परमेश्वर जी ने सटीक उदाहरण बताकर भक्त को मार्गदर्शन किया है कि आप इस संसार के स्थाई वासी नहीं हैं। आपको यह छोड़कर जाना है। आपका परिवार ऊपर सत्यलोक में है। आप इस पृथ्वी के ऊपर गिरे हो। तत्त्वज्ञान प्राप्त भक्त के मन की दशा उस अनल (अलल) पक्षी के बच्चे जैसी होनी चाहिए। जब तक सतलोक जाने का समय नहीं आता तो सांसारिक व्यक्तियों के साथ मिलकर शिष्टाचार से रहो। चलते समय इनमें कोई लगाव नहीं रहना चाहिए। अपनी नाम-स्मरण की कमाई तथा पुण्य धर्म की कमाई साथ लेकर उड़ जाना है। अपने परिवार के पास अपने निज घर सतलोक में जाना है।

अनुराग सागर के पृष्ठ 152 का सारांश :-

इस पृष्ठ पर परमेश्वर ने शरीर के अंदर का गुप्त भेद बताया है। इस मानव शरीर में 72 नाड़ियां हैं। उनमें तीन (ईड़ा, पिंगला, सुष्मणा) मुख्य हैं। फिर एक विशेष नाड़ी है ''ब्रह्म रन्द्र''

परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि धर्मदास! मन ही ज्योति निरंजन है। इसने जीव को ऐसे नचा रखा है जैसे बाजीगर मर्कट (बंदर) को नचाता है। इस शरीर में 5 तत्त्व 25 प्रकृति तथा तीन गुण काल के तीन एजेंट हैं। जीव को धोखे में रखते हैं। इस शरीर में काल निरंजन तथा जीव दोनों की मुख्य भूमिका है। काल निरंजन मन रूप में सब पाप करवाता है। पाप जीव के सिर रख देता है।

अनुराग सागर के पृष्ठ 153 का सारांश :-

काल ने ऐसा धोखा कर रखा है कि जीव परमेश्वर को भूल गया है।

''मन कैसे पाप-पुण्य करवाता है''

मन ही काल-कराल है। यह जीव को नचाता है। सुंदर स्त्री को देखकर उससे भोग-विलास करने की उमंग मन में उठाता है। स्त्री भोगकर आनन्द मन (काल निरंजन) ने लिया, पाप जीव के सिर रख दिया।

{वर्तमान में सरकार ने सख्त कानून बना रखा है। यदि कोई पुरूष किसी स्त्री से बलात्कार करता है तो उसको दस वर्ष की सजा होती है। यदि नाबालिक से बलात्कार करता है तो आजीवन कारागार की सजा होती है। आनन्द दो मिनट का मन की प्रेरणा से तथा दुःख पहाड़ के समान। इसलिए पहले ही मन को ज्ञान की लगाम से रोकना हितकारी है।}

अनुराग सागर के पृष्ठ 154 का सारांश :-

पराये धन को देखकर मन उसे हड़पने की प्रेरणा करता है। चोरी कर जीव को दण्ड दिलाता है। परनिंदा, परधन हड़पना यह पाप है। काल इसी तरह जीव को कर्मों के बंधन में फंसाकर रखता है। संत से विरोध तथा गुरूद्रोह यह मन रूप से काल ही करवाता है जो घोर अपराध है।

''निरंजन चरित्र = काल का जाल''

परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि धर्मदास! मैं तेरे को धर्म (धर्मराय-काल) का जाल समझाता हूँ। काल निरंजन ने श्री कृष्ण में प्रवेश करके गीता का ज्ञान दिया। उसको कर्मयोग उत्तम बताकर युद्ध करवाया। ज्ञान योग से उसको भ्रमित किया। अर्जुन तो पहले ही नेक भाषा बोल रहा था जो ज्ञान था। कह रहा था कि युद्ध करके अपने ही कुल के भतीजे, भाई, साले, ससुर, चाचे-ताऊ को मारने से अच्छा तो भीख माँगकर निर्वाह कर लेंगे। मुझे ऐसे राज्य की आवश्यकता नहीं जो पाप से प्राप्त हो। उसको डरा-धमकाकर युद्ध करवाकर नरक का भागी बना दिया। ज्ञान योग का बहाना कर कर्म योग पर जोर देकर महापाप करा दिया।

अनुराग सागर के पृष्ठ 155 का सारांश :-

धर्मदास जी ने प्रश्न किया कि हे प्रभु! आपने काल-जाल समझाया, अब यह बताने की कृपा करें कि जीव को आपकी प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए?

''सतगुरू (कबीर जी) वचन''

''भक्त के 16 गुण (आभूषण)''

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! भवसागर यानि काल लोक से निकलने के लिए भक्ति की शक्ति की आवश्यकता होती है। परमात्मा प्राप्ति के लिए जीव में सोलह (16) लक्षण अनिवार्य हैं। इनको आत्मा के सोलह सिंगार (आभूषण) कहा जाता है।

1. ज्ञान 2. विवेक 3. सत्य 4. संतोष 5. प्रेम भाव 6. धीरज 7. निरधोषा (धोखा रहित) 8. दया 9. क्षमा 10. शील 11. निष्कर्मा 12. त्याग 13. बैराग 14. शांति निज धर्मा 15. भक्ति कर निज जीव उबारै 16. मित्र सम सबको चित धारै।

भावार्थ :- परमात्मा प्राप्ति के लिए भक्त में कुछ लक्षण विशेष होने चाहिऐं। ये 16 आभूषण अनिवार्य हैं।

1. तत्त्वज्ञान 2. विवेक 3. सत्य भाषण 4. परमात्मा के दिए में संतोष करे और उसको परमेश्वर की इच्छा जाने 5. प्रेम भाव से भक्ति करे तथा अन्य से भी मृदु भाषा में बात करे 6. धैर्य रखे, सतगुरू ने जो ज्ञान दिया है, उसकी सफलता के लिए हौंसला रखे फल की जल्दी न करे 7. किसी के साथ दगा (धोखा) नहीं करे 8. दया भाव रखे 9. भक्त तथा संत का आभूषण क्षमा भी है। शत्रु को भी क्षमा कर देना चाहिए 10. शील स्वभाव होना चाहिए। 11. भक्ति को निष्काम भाव से करे, सांसारिक लाभ प्राप्ति के उद्देश्य से नहीं करे 12. त्याग की भावना बहुत अनिवार्य है 13. बैराग्य होना चाहिए। संसार को असार तथा अपने जीवन को अस्थाई जानकर परमात्मा के प्रति विशेष लगाव होना मोक्ष में अति आवश्यक है 14. भक्त का विशेष गुण शांति होती है, यह भी अनिवार्य है 15. भक्ति करना यानि भक्ति करके अपने जीव का कल्याण कराऐं 16. प्रत्येक व्यक्ति के साथ मित्र के समान व्यवहार करना चाहिए।

ये उपरोक्त गुण होने के पश्चात् सत्यलोक जाया जाएगा। इनके अतिरिक्त गुरू की सेवा, गुरू पद्यति में विश्वास रखे। परमात्मा की भक्ति और संत समागम करना अनिवार्य है।

अनुराग सागर के पृष्ठ 156 तथा पृष्ठ 157 का सारांश :-

इन पृष्ठों पर भी यही ज्ञान है और विषय-विकार त्यागना चाहिए, तब भक्ति सफल होगी।

अनुराग सागर के पृष्ठ 158-159 का सारांश :-

परमेश्वर ने बताया है कि उपदेशी को चाहिए कि 15वें दिन कोई धार्मिक अनुष्ठान यानि पाठ कराना चाहिए। यदि 15 दिन में नहीं करा सकता है तो महीने में अवश्य कराए। निर्धन के लिए कहा है कि यदि कोई रंक हो तो वर्ष में दो बार कराए या वर्ष में एक बार अवश्य कराए। यदि वर्ष में नहीं कराएगा तो वह भक्त साकट (भक्तिभाव हीन) कहलावेगा। एक वर्ष में भी पाठ करवाए तो उसके जीव को मोक्ष में धोखा नहीं।

कबीर नाम श्रद्धा से जपे यानि गर्व के साथ कबीर जी का नाम ले। शर्म नहीं करे कि यह भी कोई परमात्मा का नाम है। ऐसे कहने वालों से डरे नहीं, शर्मावे नहीं और इसके साथ-साथ तेरा (धर्मदास) नाम भी आदर से कहे।

भावार्थ है कि आदरणीय धर्मदास के साथ परमात्मा रहे, उनको सत्यलोक लेकर गए, अपना यथार्थ परिचय दिया। धर्मदास जी ने अपने आँखों देखा, कानों परमेश्वर से सुना आध्यात्मिक ज्ञान कबीर सागर, कबीर बानी, कबीर बीजक, कबीर शब्दावली को लिखकर मानव समाज पर महान उपकार किया है। इसलिए धर्मदास जी की महिमा भी करनी चाहिए।

भक्त को चाहिए कि भक्ति-साधना तथा मर्यादा का पालन अन्तिम श्वांस तक करे। जैसे शूरवीर युद्ध के मैदान में या तो मार देता है या स्वयं वीरगति को प्राप्त हो जाता है। वह पीछे कदम नहीं हटाता। संत तथा भक्त का रणक्षेत्र भक्ति मन्त्र जाप तथा मर्यादा है। जो शिष्य गुरू से विमुख हो जाता है। नाम खण्डित कर देता है तो स्वाभाविक ही वह गुरू में कुछ दोष निकालेगा। जिस कारण से नरक में अग्नि कुण्ड में गिरेगा। यदि गुरू विमुख होकर भक्ति छोड़ देता है तो उसको भी बहुत हानि होती है।

उदाहरणः- जैसे इन्वर्टर को चार्जिंग पर लगा रखा है, वह चार्ज हो रहा है। यदि बीच में चार्जर निकाल लिया जाए तो वह इन्वर्टर जितना चार्ज हो गया था, उतनी देर लाभ देगा। फिर अचानक सर्व सुविधाऐं बंद हो जाएंगी। इसी प्रकार उस शिष्य की दशा जानें। गुरू शरण में रहकर मर्यादा में रहते हुए जितने दिन भक्ति की वह शक्ति आत्मा में जमा हो गई, उतनी आत्मा चार्ज हो गई। जिस दिन गुरू जी से विमुख हो गया, उसी दिन से भक्ति की शक्ति आनी बंद हो जाती है। यदि गुरू विमुख (गुरू से विरोध करके गुरू त्याग देना) होकर भी उसी गुरू द्वारा बताई गई साधना मन्त्र आदि करता है तो कोई लाभ नहीं होता। जैसे बिजली का

कनैक्शन कट जाने के पश्चात् पंखे, मोटर, बल्ब के स्विच (बटन) दबाते रहो, न पंखा चलेगा, न बल्ब जलेगा। यही दशा गुरू विमुख साधक की होगी। फिर नरक का भागी होगा। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

कबीर, मानुष जन्म पाकर खोवै, सतगुरू विमुखा युग–युग रोवै।
कबीर, गुरू विमुख जीव कतहु न बचै। अग्नि कुण्ड में जर–बर नाचै।।
कोटि जन्म विषधर को पावै। विष ज्वाला सही जन्म गमावै।।
बिष्टा (टट्टी) मांही क्रमि जन्म धरई। कोटि जन्म नरक ही परही।।

भावार्थ :- गुरू को त्याग देने वाला जीव बिल्कुल नहीं बचेगा। नरक स्थान पर अग्नि के कुण्डों में जल-बल (उबल-उबल) कर कष्ट पाएगा। वहाँ अग्नि के कष्ट से नाचेगा यानि उछल-उछलकर अग्नि में गिरेगा।

फिर करोड़ों जन्म विषधर (सर्प) की जूनी (शरीर) प्राप्त करेगा। सर्प के अपने अन्दर के विष की गर्मी बहुत परेशान करती है। गर्मी के मौसम में सर्प उस विष की उष्णता से बचने के लिए शीतलता प्राप्त करने के लिए चन्दन वृक्ष के ऊपर लिपटे रहते हैं। फिर वही गुरू विमुख यानि गुरू द्रोही बिष्टा (टट्टी-गुह) में कीड़े का जन्म प्राप्त करता है। इस प्रकार गुरू से दूर गया प्राणी महाकष्ट उठाता है। यदि गुरू नकली है तो उसको त्यागकर पूर्ण गुरू की शरण में चले जाने से कोई पाप नहीं लगता।

कबीर गुरू दयाल तो पुरूष दयाल। जेहि गुरू व्रत छुए नहीं काल।।

भावार्थ :- हे धर्मदास! यदि गुरू शिष्य के प्रति दयाल है यानि गुरू के दिल में शिष्य की अच्छी छवि है, मर्यादा में रहता है तो परमात्मा भी उस भक्त के ऊपर प्रसन्न है। अन्यथा उपरोक्त कष्ट शिष्य को भोगने पड़ेंगे।

पृष्ठ 160 का सारांश :-

इस पृष्ठ पर कुछ गुरू महिमा है तथा कोयल की चाणक्य नीति का ज्ञान है।

''काल का जीव सतगुरू ज्ञान नहीं मानता''

"कोयल-काग" का उदाहरण :- कोयल पक्षी कभी अपना भिन्न घौंसला बना कर अण्डे-बच्चे पैदा नहीं करती। कारण यह कि कोयल के अण्डों को कौवा (Crow) खा जाता है। इसलिए कोयल को ऐसी नीति याद आई कि जिससे उसके अण्डों को हानि न हो सके। कोयल जब अण्डे उत्पन्न करती है तो वह ध्यान रखती है कि कहाँ पर कौवी (Female Crow) ने अपने घौंसले में अण्डे उत्पन्न कर रखे हैं। जिस समय कौवी पक्षी भोजन के लिए दूर चली जाती है तो पीछे से कोयल उस कौवी के घौंसले में अण्डे पैदा कर देती है और दूर वृक्ष पर बैठ जाती है या आस-पास रहेगी। जिस समय कौवी घौंसले में आती है तो वह दो के स्थान पर चार अण्डे देखती है। वह नहीं पहचान पाती कि तेरे अण्डे कौन से हैं, अन्य के कौन-से हैं? इसलिए वह चारों अण्डों को पोषण करके बच्चे निकाल देती है। कोयल भी आसपास रहती है। अब कोयल भी अपने बच्चों को नहीं पहचानती है क्योंकि सब

बच्चों का एक जैसा रंग (काला रंग) होता है। जिस समय बच्चे उड़ने लगते हैं, तब कोयल निकट के अन्य वृक्ष पर बैठकर कुहु-कुहु की आवाज लगाती है। कोयल की बोली कोयल के बच्चों को प्रभावित करती है, कौवे वाले मस्त रहते हैं। कोयल की आवाज सुनकर कोयल के बच्चे उड़कर कोयल की ओर चल पड़ते हैं। कोयल कुहु-कुहु करती हुई दूर निकल जाती है, साथ ही कोयल के बच्चे भी आवाज से प्रभावित हुए कोयल के पीछे-पीछे दूर चले जाते हैं। कौवी विचार करती है कि ये तो गए सो गए, जो घौंसले में हैं उनको संभालती हूँ कि कहीं कोई पक्षी हानि न कर दे। यह विचार करके कौवी लौट आती है। इस प्रकार कोयल के बच्चे अपने कुल परिवार में मिल जाते हैं।

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास को समझाया है कि हे धर्मदास! तेरा पुत्र नारायण दास काग यानि काल का बच्चा है। उसके ऊपर मेरे प्रवचनों का प्रभाव नहीं पड़ा। आप दयाल (करूणामय सतपुरूष) के अंश हो। आपके ऊपर मेरी प्रत्येक वाणी का प्रभाव हुआ और आप खींचे चले आए। काल के अंश नारायण दास पर कोई असर नहीं हुआ। यही कहानी प्रत्येक परिवार में घटित होती है। जो अंकुरी हंस यानि पूर्व जन्म के भक्ति संस्कारी जो किसी जन्म में सतगुरू कबीर जी के सत्य कबीर पंथ में दीक्षित हुए थे, परंतु मुक्त नहीं हो सके। वे किसी परिवार में जन्मे हैं, सतगुरू की कबीर जी की वाणी सुनते ही तड़फ जाते हैं। आकर्षित होकर दीक्षा प्राप्त करके शिष्य बनकर अपना कल्याण कराते हैं। उसी परिवार में कुछ ऐसे भी होते हैं जो बिल्कुल नहीं मानते। अन्य जो दीक्षित सदस्य हैं, उनका भी विरोध तथा मजाक करते हैं। वे काल के अंश हैं। वे भी नारायण दास की तरह काल के दूतों द्वारा प्रचलित साधना ही करते हैं।

पृष्ठ 161 अनुराग सागर का सारांश :-

कबीर परमात्मा ने कहा कि हे धर्मदास! जिस प्रकार शूरवीर तथा कोयल के सुत (बच्चे) चलने के पश्चात् पीछे नहीं मुड़ते। इस प्रकार यदि कोई मेरी शरण में इस प्रकार धाय (दौड़कर) सब बाधाओं को तोड़कर परिवार मोह छोड़कर मिलता है तो उसकी एक सौ एक पीढ़ियों को पार कर दूँगा।

कबीर, भक्त बीज होय जो हंसा। तारूं तास के एकोतर बंशा।।
कबीर, कोयल सुत जैसे शूरा होई। यही विधि धाय मिलै मोहे कोई।।
निज घर की सुरति करै जो हंसा। तारों तास के एकोतर बंशा।।

''हंस (भक्त) लक्षण''

काग जैसी गंदी वृत्ति को त्याग देता है तो वह हंस यानि भक्त बनता है। काग (कौवा) निज स्वार्थ पूर्ति के लिए दूसरों का अहित करता है। किसी पशु के शरीर पर घाव हो जाता है तो कौवा उस घाव से नौंच-नौंचकर माँस खाता है, पशु की आँखों से आँसू ढ़लकते रहते हैं। कौए की बोली भी अप्रिय होती है। हंस (भक्त) को चाहिए कि अपनी कौए वाला स्वभाव त्यागे। निज स्वार्थवश किसी को कष्ट न देवे। कोयल की तरह मृदु भाषा बोले। ये लक्षण भक्त के होते हैं।

''ज्ञानी यानि सत्संगी के लक्षण''

सतगुरू का ज्ञान तथा दीक्षा प्राप्त करके यदि शिष्य जगत भाव में चलता है, वह मूर्ख है। वह भक्ति लाभ से वंचित रह जाता है। वह भक्ति में आगे नहीं बढ़ पाते। वे सार शब्द प्राप्ति योग्य नहीं बन पाते। यदि अंधे व्यक्ति का पैर बिष्टे (टट्टी) या गोबर पर रखा जाता है तो उसका कोई मजाक नहीं करता। कोई उसकी हाँसी नहीं करता। यदि आँखों वाला यानि भक्त कुठौर (गलत स्थान पर) जाता है (परनारी गमन, चोरी करना, मर्यादा तोड़ना, वर्जित वस्तु तथा साधना का प्रयोग करना कुठौर कहा है।) तो निंदा का पात्र होता है।

अनुराग सागर के पृष्ठ 162 तथा 163 का सारांश :-

''भक्त परमार्थी होना चाहिए''

जैसे गाय स्वयं तो जंगल में खेतों में घास खाकर आती है। स्वयं जल पीती है। मानव को अमृत दूध पिलाती है। उसके दूध से घी बनता है। गाय सुत यानि गाय का बच्छा हल में जोता जाता है। इंसान का पोषण करता है। गाय का गोबर भी मनुष्य के काम आता है। मृत्यु उपरांत गाय के शरीर के चमड़े से जूती बनती हैं जो मानव के पैरों को काँटों-कंकरों से रक्षा करती है। मानव जन्म प्राप्त प्राणी परमार्थ न करके भक्ति से वंचित रहकर पाप करने में अनमोल जीवन नष्ट कर जाता है। माँसाहारी नर राक्षस की तरह गाय को मारकर उसके माँस को खा जाता है। महापाप का भागी बनता है। इस सम्बन्ध की परमेश्वर कबीर जी की निम्न वाणी पढ़ें :-

''परमार्थी गऊ का दृष्टांत''

गऊको जानु परमार्थ खानी। गऊ चाल गुण परखहु ज्ञानी।।
आपन चरे तृण उद्याना। अँचवे जल दे क्षीर निदाना।।
तासु क्षीर घृत देव अघाहीं। गौ सुत नर के पोषक आहीं।।
विष्ठा तासु काज नर आवे। नर अघ कर्मी जन्म गमावे।।
टीका पुरे तब गौ तन नासा। नर राक्षस गोतन लेत ग्रासा।।
चाम तासु तन अति सुखदाई। एतिक गुण इक गोतन भाई।।

''परमार्थी संत लक्षण''

गौ सम संत गहै यह बानी। तो नहिं काल करै जिवहानी।।
नरतन लहि अस बुद्धी होई। सतगुरू मिले अमर है सोई।।
सुनि धर्मनि परमारथ बानी। परमारथते होय न हानी।।
पद परमारथ संत अधारा। गुरू सम लेई सो उतरे पारा।।
सत्य शब्द को परिचय पावै। परमारथ पद लोक सिधावै।।
सेवा करे विसारे आपा। आपा थाप अधिक संतापा।।
यह नर अस चातुर बुद्धिमाना। गुन सुभ कर्म कहै हम ठाना।।

ऊँचा कर्म अपने सिर लीन्हा। अवगुण कर्म पर सिर दीन्हा।।
तात होय शुभ कर्म विनाशा। धर्मदास पद गहो विश्वासा।।
आशा एक नामकी राखे। निज शुभकर्म प्रगट नहिं भाखे।।
गुरूपद रहे सदा लौ लीना। जैसे जलहि न विसरत मीना।।
गुरू के शब्द सदा लौ लावे। सत्यनाम निशदिन गुणगावे।।
जैसे जलहि न विसरे मीना। ऐसे शब्द गहे परवीना।।
पुरूष नामको अस परभाऊ। हंसा बहुरि न जगमहँ आऊ।।
निश्चय जाय पुरूष के पासा। कूर्मकला परखहु धर्मदासा।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी के माध्यम से मानव मात्र को संदेश व निर्देश दिया है। कहा है कि मानव को गाय की तरह परमार्थी होना चाहिए। जिनको सतगुरू मिल गया है, वे तो अमर हो जाएंगे। घोर अघों (पापों) से बच जाएंगे, सेवा करें तो अपनी महिमा की आशा न करें। यदि अपने आपको थाप (मान-बड़ाई के लिए अपने आपको महिमावान मान) लेगा तो उसको अधिक कष्ट होगा। शुभ कर्म नष्ट हो जाएंगे।

उपदेशी केवल एक नाम की आशा रखे। मान-बड़ाई की चाह हृदय से त्याग दे। अपने शुभ कर्म (दान या अन्य सेवा) किसी के सामने न बताए। गुरू जी के पद (चरण) यानि गुरू की शरण में ऐसे रहे जैसे जल में मीन रहती है। मछली एक पल भी पानी के बिना नहीं रह सकती। तुरंत मर जाती है। ऐसे गुरू की शरण को महत्त्व देवे। गुरू जी द्वारा दिए शब्द यानि जाप मंत्र (सतगुरू शब्द) जो सत्यनाम है यानि वास्तविक भक्ति मंत्र में सदा लीन रहे जो पुरूष (परमात्मा) का भक्ति मंत्र है, उसका ऐसा प्रभाव है, उसमें इतनी शक्ति है कि साधक पुनः संसार में जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता। वह वहाँ चला जाता है जो सनातन परम धाम, जहाँ परम शांति है। जहाँ जाने के पश्चात् साधक कभी लौटकर संसार में नहीं आता।

यही प्रमाण श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में है। गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा, उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम (शाश्वतम् स्थानम्) को प्राप्त होगा।(अध्याय 18 श्लोक 62)

गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि तत्त्वज्ञान प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर कभी संसार में नहीं आता। जिस परमेश्वर ने संसार रूपी वृक्ष की रचना की है, उसी की भक्ति करो।(अध्याय 15 श्लोक 4)

गीता ज्ञान दाता ने अपनी नाशवान अर्थात् जन्म-मरण की स्थिति गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5, 9 में तथा अध्याय 10 श्लोक 2 में स्पष्ट ही रखी है कि अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। पाठकजनो! गीता से स्पष्ट हुआ कि गीता ज्ञान दाता (काल ब्रह्म है जो श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके बोल रहा था) नाशवान है, जन्म-मरण के

चक्र में है तो उसके उपासक की भी यही स्थिति होती है। इसलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में वर्णित लाभ प्राप्त नहीं हो सकता। दूसरी बात यह सिद्ध होती है कि गीता ज्ञान दाता से कोई अन्य समर्थ तथा सर्व लाभदायक परमेश्वर है जिसकी शरण में जाने के लिए गीता ज्ञान दाता यानि काल ब्रह्म ने कहा है। वह परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी हैं। उन्होंने अपनी महिमा स्वयं ही कही है जो आप जी कबीर सागर में पढ़ रहे हैं। परमेश्वर ने अनुराग सागर पृष्ठ 13 पर कहा कि सत्य पुरूष द्वारा रची सृष्टि के विषय में बताई कथा का साक्षी किसको बनाऊँ क्योंकि सबकी उत्पत्ति बाद में हुई है। पहले अकेले सतपुरूष थे। यहाँ पर विवेक करने की बात यह है कि कबीर जी को ज्ञान कहाँ से हुआ? जब सृष्टि रचना के समय कोई नहीं था। इससे स्वसिद्ध है कि ये स्वयं पूर्ण परमात्मा सृष्टि के सृजनहार हैं। जिन महान आत्माओं को परमेश्वर कबीर जी मिले हैं, उन्होंने भी यही साक्ष्य दिया है कि :-

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

भावार्थ इस वाणी से ही स्पष्ट है।

''कूर्म कला परखो धर्मदासा'' का भावार्थ है कि जैसे कूर्म यानि कच्छवा आपत्ति के समय अपने मुख तथा पैरों को अपने अंदर छुपाकर निष्क्रिय हो जाता है। आपत्ति टलने के तुरंत पश्चात् अपने मार्ग पर चल देता है। इसी प्रकार भक्त को चाहिए कि यदि सांसारिक व्यक्ति आपके भक्ति मार्ग में बाधा उत्पन्न करे तो उसको उलटकर जवाब न देकर अपनी भक्ति को छुपाकर सुरक्षित रखे। सामान्य स्थिति होते ही फिर उसी गति से साधना करे। इस प्रकार करने से ''निश्चय जाय पुरूष के पासा'' **वह साधक परमात्मा के पास अवश्य चला जाएगा।**

अनुराग सागर पृष्ठ 163(281) पर :-

सोरठा :– हंस तहां सुख बिलसहीं, आनन्द धाम अमोल।
पुरूष तनु छवि निरखहिं, हंस करें किलोल।।

भावार्थ :- उपरोक्त ज्ञान के आधार से साधना करके साधक अमर धाम में चला जाता है। वहाँ पर आनन्द भोगता है। वह सतलोक बेसकीमती है। वहाँ पर सत्यपुरूष के शरीर की शोभा देखकर आनन्द मनाते हैं।

❖ दीक्षा लेकर नाम का स्मरण करना अनिवार्य है :-

अध्याय ''बीर सिंह बोध'' पृष्ठ 123 पर :-

राजा बीर सिंह की एक छोटी रानी सुंदरदेई थी। उसने भी परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा ले रखी थी। उसने सत्संग बहुत सुने थे। विश्वास कम था, नाम की कमाई यानि साधना नहीं करती थी। जब रानी का अंतिम समय आया तो यम के दूत राजभवन में प्रवेश कर गए। फिर यमदूत रानी के शरीर में प्रवेश कर गए और अंतिम श्वांस का इंतजार करने लगे। उस समय रानी सुंदरदेई के शरीर में बेचैनी हो गई। यमदूत दिखाई देने लगे। राजा ने रानी से पूछा कि क्या बात है? रानी

ने कहा कि मुझे राजपाट, महल, आभूषण, कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। रानी ने कहा कि साधु-भक्तों को बुलाकर परमात्मा की चर्चा कराओ। साधु तथा भक्त आकर परमात्मा की चर्चा तथा भक्ति करने लगे। उससे कोई लाभ नहीं हुआ। रानी के शरीर में कष्ट और बढ़ गया। अर्ध-अर्ध यानि आधा श्वांस चलने लगा। श्वांस खींच-खींचकर आने-जाने लगा। हृदय कमल को त्यागकर जीव भयभीत होकर त्रिकुटी की ओर भागा। यम दूतों ने चारों ओर से घेर लिया। चारों यमदूतों ने जीव को घेरकर कहा कि आप चलो! हरि (प्रभु) ने तुम्हें बुलाया है। तब रानी के जीव को सत्संग वचन याद आए। उसने यमदूतों से कहा कि हे बटपार! हे जालिमों! तुम यहाँ कैसे आ गए? हमारा सतगुरू हमारा मालिक है। आप हमें नहीं ले जा सकते। मेरे सतगुरू धनी (मालिक) ने मुझे नाम दिया है। मेरे गुरूजी आएंगे तो मैं जाऊँगी। यह बात सुनकर यम के दूत बोले कि यदि आपका कोई खसम (धनी) है तो उसको बुलाओ, नहीं तो हमारे साथ परमात्मा के दरबार में चलो। जीव ने कहा कि :-

धरनी (पृथ्वी) आकाश से नगर नियारा। तहाँ निवाजै धनी हमारा।।
अगम शब्द जब भाखै नाऊं। तब यम जीव के निकट नहीं आऊं।।

भावार्थ :- पहले तो रानी को विश्वास नहीं हो रहा था कि जो सतगुरू जी सत्संग में ज्ञान सुना रहे हैं, वह सत्य है। वह सोचती थी कि यह केवल कहानी है क्योंकि सब नौकर-नौकरानी आज्ञा मिलते ही दौड़े आते थे। मनमर्जी का खाना खाती थी, सुंदर वस्त्र, आभूषण पहनती थी। उसने सोचा था कि ऐसे ही आनन्द बना रहेगा। यह तो पूर्व जन्म की बैटरी चार्ज थी। वर्तमान में चार्जर मिला (नाम मिला) तो चालू नहीं किया यानि साधना नहीं की। जब बैटरी की चार्जिंग समाप्त हो जाती है, बैटरी डाउन हो जाती है तो सर्व सुविधाऐं बंद हो जाती हैं। फिर न पंखा चलता है, न बल्ब जगता है। बटन दबाते रहो, कोई क्रिया नहीं होती। इसी प्रकार जीव का पूर्व जन्म की भक्ति का धन यानि चार्जिंग समाप्त हो जाती है तो सर्व सुविधाऐं छीन ली जाती हैं। जीव को नरक में डाल दिया जाता है, तब उसको अक्ल आती है। उस समय वक्त हाथ से निकल चुका होता है। केवल पश्चाताप और रोना शेष रह जाता है। रानी सुंदरदेई ने सत्संग सुन रखा था। पूर्ण सतगुरू से दीक्षा ले रखी थी। नाम की कमाई नहीं की थी। वह गुरूद्रोही नहीं हुई थी। गुरू निंदा नहीं करती थी। रानी ने सतगुरू को याद किया कि हे सतगुरू! हे मेरे धनी! मेरे को यमदूतों ने घेर रखा है। मुझ दासी को छुड़ावो। मैंने आपकी दीक्षा ले रखी है। आज मुझे पता चला कि ऐसी आपत्ति में न पति, न पत्नी, ने बेटा-बेटी, भाई-बहन, राजा-प्रजा कोई सहायक नहीं होता। रानी के जीव ने हृदय से सतगुरू को पुकारा। तुरंत सतगुरू कबीर जी वहाँ उपस्थित हुए। रानी ने दौड़कर सतगुरू देव जी के चरण लिए। उसी समय यमदूत भागकर हरि यानि धर्मराज के पास गए और बताया कि उसका सतगुरू आया तो वहाँ पर प्रकाश हो गया। जीव ने सत सुकृत नाम जपा था। उसको इतना ही याद था। इस कारण से उसको यमदूतों से छुड़वाया तथा पुनः जीवन बढ़ाया। तब रानी ने दिल से भक्ति की। फिर सतगुरू

कबीर जी ने पुनः सतनाम, सारनाम दिया, उसकी कमाई की। संसार असार दिखाई देने लगा। राज, धन, परिवार पराया दिखाई दे रहा था। जाने का समय निकट लग रहा था। इस कारण से रानी ने तन-मन-धन सतगुरू चरणों में समर्पित करके भक्ति की तो सत्यलोक में गई। वहाँ परमेश्वर (सत्य पुरूष) ने रानी के जीव के सामने अपने ही दूसरे रूप सतगुरू से प्रश्न किया कि हे कड़िहार! (तारणहार) मेरे जीव को यमदूतों ने कैसे रोक लिया? सतगुरू रूप में कबीर जी ने कहा कि हे परमेश्वर! इसने दीक्षा लेकर भक्ति नहीं की। इस कारण से इसको यमदूतों ने घेर लिया था। मैंने छुड़वाया। परमेश्वर कबीर जी ने जीव से कहा कि आपने भक्ति क्यों नहीं की? सत्यलोक में कैसे आ गई?

सिर नीचा करके जीव ने कहा कि पहले मुझे विश्वास नहीं था। फिर यमदूतों की यातना देखकर मुझे आपकी याद आई। आपका ज्ञान सत्य लगा। आपको पुकारा। आपने मेरी रक्षा की। फिर मेरे को वापिस जीवन दिया गया। तब मैंने दिलोजान से आपकी भक्ति की। पूर्ण दीक्षा प्राप्त करके आपकी ही कृपा से गुरू जी के सहयोग से मैं यहाँ आपके चरणों में पहुँच पाई हूँ। सत्यलोक में जाकर भक्त अन्य भक्तों के पास भेज दिया जाता है। सुंदर अमर शरीर मिलता है। बहुत बड़ा आवास महल मिलता है। विमान आँगन में खड़ा है। सिद्धियां आदेश का इंतजार करती हैं। तुरंत विद्युत की तरह सक्रिय होती हैं जैसे बिजली का बटन (Switch) दबाते ही बिजली से चलने वाला यंत्र तुरंत कार्य करने लगता है। ऐसे वहाँ पर वचन का बटन (Switch) है। जो वस्तु चाहिए बोलिये। वस्तु-पदार्थ आपके पास उपस्थित होगा। जैसे भोजन खाने की इच्छा होते ही आपके भोजनस्थल पर गतिविधि प्रारम्भ हो जाएंगी, थाली-गिलास रखे जाएंगे। कुछ देर में खाने की इच्छा बनी तो सिद्धि से उठकर रसोई में रखे जाएंगे। मिनट पश्चात् इच्छा हुई तो भी उसी समय व्यवस्था हो जाएगी। घूमने की इच्छा हुई तो विमान में गतिविधि महसूस होगी। विमान के निकट जाते ही द्वार खुल जाएगा। विमान स्टार्ट हो जाएगा। जहाँ जिस द्वीप में जाने की इच्छा होगी, विचार करने पर विमान उसी ओर उड़ चलेगा। इच्छा करते ही ताजे-ताजे फल वृक्षों से तोड़कर लाकर आपके समक्ष रख दिए जाएंगे। सत्यलोक की नकल यह काल लोक है। इसी तरह स्त्री-पुरूष परिवार हैं। सत्यलोक में दो तरह से संतानों की उत्पत्ति होती है। शब्द से तथा मैथुन से। वह हंस पर निर्भर करता है। वचन से संतानोपत्ति वाला क्षेत्र सतपुरूष के सिंहासन के चारों ओर है। नर-नारी से परिवार वाला क्षेत्र उसके बाद में है। वचन से संतान उत्पन्न करने वाले केवल नर ही उत्पन्न करते हैं। सत्यलोक में वृद्धावस्था नहीं है। नर-नारी वाले क्षेत्र में लड़के तथा लड़कियां दोनों उत्पन्न करते हैं। विवाह करते हैं केवल वचन से। जो बच्चे उत्पन्न होते हैं, वे काल लोक से मुक्त होकर गए जीव जन्म लेते हैं। फिर कभी नहीं मरते, न वृद्ध होते। जो सत्यलोक में मुक्त होकर जाते हैं, उनको सर्वप्रथम सत्यपुरूष जी के दर्शन कराए जाते हैं। उस समय उसका वही स्वरूप रहता है जैसा पृथ्वी से आता है, परंतु वृद्ध नीचे से गया तो वहाँ सतपुरूष के सामने

उसी अवस्था व स्वरूप में जाता है। उसका प्रकाश सोलह सूर्यों के प्रकाश जितना हो जाता है। उसके पश्चात् उसको उस स्थान पर भेजा जाता है जो सबसे भिन्न है। वहाँ जाते ही उसका स्वरूप तो वैसा ही रहता है, लेकिन उसके शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों जैसा हो जाता है, परंतु यदि वद्ध नीचे से गया है तो युवा अवस्था हो जाती है। जवान है तो जवान ही रहता है, बालक है तो बालक ही रहता है। वहाँ पर कुछ को सत्य पुरूष के वचन से स्त्री-पुरूष का शरीर मिलता है। कुछ बीज रूप में सतपुरूष द्वारा बनाए जाते हैं जिनका फिर एक बार किसी के घर सत्यलोक में जन्म होगा, परिवार बनेगा। उस स्थान पर वे हंस एक बार जन्म लेंगे जो काल लोक तथा अक्षर लोक से मुक्त होकर जाते हैं। एकान्त स्थान पर रखे जाते हैं। वे दोनों क्षेत्रों में जन्म लेते हैं। (वचन से उत्पन्न होने वाले तथा स्त्री-पुरूष से जन्म लेने वाले में) स्त्री-पुरूष से उत्पत्ति की औसत अधिक होती है। यह औसत 10/90 होती है। यह 10% वचन से उत्पत्ति, 90% विवाह रीति से उत्पत्ति होती है।

सत्यलोक में स्त्री तथा नर के शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों के प्रकाश के समान होता है। मीनी सतलोक, मानसरोवर पहले हैं। वहाँ दोनों के शरीर का प्रकाश चार सूर्यों के समान होता है। फिर आगे जाते हैं। जब परब्रह्म के लोक में बने अष्ट कमल के पास पहुँचते हैं तो हंस तथा हंसनी यानि नर-नारी के शरीर का प्रकाश 12 सूर्यों के प्रकाश के समान हो जाता है। फिर सत्यलोक में बनी भंवर गुफा में प्रत्येक के शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों के समान हो जाता है।

प्रमाण कबीर सागर अध्याय ''मोहम्मद बोध'' पष्ठ 20, 21 तथा 22 पर दश मुकामी रेखताः-

''दश मुकामी रेखता''

पष्ठ 21 से कुछ अंश लिखता हूँ :-

भया आनन्द फन्द सब छोड़िया पहुँचा जहाँ सत्यलोक मेरा।।
{हंसनी (नारी रूप पुण्यात्माऐं) हंस (नर रूप पुण्यात्माऐं)}
हंसनी हंस सब गाय बजाय के साजि के कलश मोहे लेन आए।।
युगन युगन के बिछुड़े मिले तुम आय कै प्रेम करि अंग से अंग लाए।।
पुरूष दर्श जब दीन्हा हंस को तपत बहु जन्म की तब नशाये।।
पलिट कर रूप जब एक सा कीन्हा मानो तब भानु षोडश (16) उगाये।।
पहुप के दीप पयूष (अमत) भोजन करें शब्द की देह सब हंस पाई।।
पुष्प का सेहरा हंस और हंसनी सच्चिदानंद सिर छत्र छाए।।
दीपैं बहु दामिनी दमक बहु भांति की जहाँ घन शब्द को घमोड़ लाई।।
लगे जहाँ बरसने घन घोर कै उठत तहाँ शब्द धुनि अति सोहाई।।
सुन्न सोहैं हंस–हंसनी युत्थ (जोड़े–झुण्ड) है एकही नूर एक रंग रागै।।
करत बिहार (सैर) मन भावनी मुक्ति में कर्म और भ्रम सब दूर भागे।।
रंक और भूप (राजा) कोई परख आवै नहीं करत कोलाहल बहुत पागे।।

काम और क्रोध मदलोभ अभिमान सब छाड़ि पाखण्ड सत शब्द लागे।।
पुरूष के बदन (शरीर) कौन महिमा कहूँ जगत में उपमा कछु नाहीं पायी।।
चन्द और सूर (सूर्य) गण ज्योति लागै नहीं एक ही नख (नाखुन) प्रकाश भाई।।
परवाना जिन नाद वंश का पाइया पहुँचिया पुरूष के लोक जायी।।
कह कबीर यही भांति सो पाइहो सत्य पुरूष की राह सो प्रकट गायी।।

भावार्थ :- इस अमृतवाणी में स्पष्ट है कि परमेश्वर कबीर जी सतगुरू रूप में पृथ्वी से धर्मदास जी को लेकर सत्यलोक को चले तो रास्ते में 9 स्थान आए जैसे नासूत, मलकूत यह फारसी में शब्द है। इन सात आसमानों के पार अचिन्त, विष्णु लोक आदि के पार जब सत्यलोक में पहुँचा तो धर्मदास जी कह रहे हैं कि मेरे को सत्कार के साथ लेने को सत्यलोक के हंस (नर) हंसनी (नारी) गाते-नाचते ढ़ोल आदि साज-बाज बजाते हुए स्त्रियां सिर के ऊपर कलश रखकर लेने आए। उनके शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों के समान था। मेरे शरीर का प्रकाश भी उनके शरीर के प्रकाश के समान 16 सूर्यों के समान हो गया।

जो पृथ्वी लोक से मोक्ष प्राप्त करके हंस जाता है। वह पुहप द्वीप में ले जाया जाता है। वहाँ सर्व सुख है, वह सत्यलोक का हिस्सा है। परंतु सर्व प्रथम नीचे से गए मोक्ष प्राप्त जीव को पोहप द्वीप में रखा जाता है। यहाँ का दृश्य बताया जा रहा है। यहाँ से इसका जन्म अन्य स्थानों में परिवार में होता है। इसके पश्चात् उस स्थान का वर्णन है जहाँ नर-नारी से उत्पत्ति होकर परिवार बनता है। जहाँ पर नर-नारी के जोड़ों के समूह के समूह सुख से बैठे बातें करते हैं। बादल गरजते हैं, फव्वार पड़ती हैं। यह भिन्न स्थान है जहाँ सतलोक निवासी पिकनिक के लिए जाते हैं। कुछ स्थान ऐसे हैं जहाँ न बादल दिखाई देता है, वर्षा हो रही होती है।

❖ दीक्षा के पश्चात् साधक को क्या करना चाहिए? उसकी जानकारी पवित्र कबीर सागर के अध्याय ''धर्म बोध'' में भी है।

कृपा पढ़ें अध्याय ''धर्म बोध'' का सारांश :-

कबीर सागर में 33वां अध्याय ''धर्म बोध'' पृष्ठ 177(1521) पर है। इस अध्याय में परमेश्वर कबीर जी ने धर्म करने का विशेष ज्ञान बताया है। यह भी स्पष्ट किया है कि कबीर परमेश्वर के सच्चे पंथ में दिन में तीन बार संध्या की जाती है। संध्या का अर्थ है दो वक्त का मिलन। एक संध्या सुबह उससे दिन और रात्रि का मिलन होता है, रात्रि विदा होती है, दिन का शुभारंभ होता है। दूसरी संध्या दिन के बारह बजे होती है। उस समय चढ़ते दिन का दोपहर पूरा होता है, ढ़लते दिन की शुरूआत होती है, यह मध्य दिन की संध्या है। तीसरी संध्या शाम के समय होती है। उस समय दिन और रात्रि का मिलन होता है। वैसे आम जन शाम को संध्या कहते हैं। संध्या का अर्थ परमात्मा की स्तुति करना भी होता है।

वेदों में प्रमाण है कि जो जगत का तारणहार होगा, वह तीन बार की संध्या करता तथा करवाता है। सुबह और शाम पूर्ण परमात्मा की स्तुति-आरती तथा मध्यदिन में विश्व के सब देवताओं की स्तुति करने को कहता है। प्रमाण :- ऋग्वेद

मण्डल नं. 8 सूक्त 1 मंत्र 29 में तथा यजुर्वेद अध्याय 19 मंत्र 26 में है।

कबीर सागर में धर्म बोध अध्याय में पृष्ठ 177 पर भी यही प्रमाण है।

सांझ सकार मध्याह्न सन्ध्या तीनों काल।
धर्म कर्म तत्पर सदा कीजै सुरति सम्भाल।।

भावार्थ :- भक्तजनों को चाहिए कि तीनों काल (समय) की संध्या करे। सांझ यानि शाम को सकार यानि सुबह तथा मध्याहन् यानि दोपहर (दिन के मध्य) में संध्या करते समय सुरति यानि ध्यान आरती में बोली गई वाणी में रहे और धर्म के कार्य में सदा तैयार रहे, आलस नहीं करे।

धर्म बोध पृष्ठ 178(1522) पर :-

कबीर कोटिन कंटक घेरि ज्यों नित्य क्रिया निज कीन्ह।
सुमिरन भजन एकांत में मन चंचल गह लीन।।

भावार्थ :- भक्त के ऊपर चाहे करोड़ों कष्ट पड़े, परंतु अपनी नित्य की क्रिया (तीनों समय की संध्या) अवश्य करनी चाहिए तथा चंचल मन को रोककर एकान्त में परमात्मा की दीक्षा वाले नाम का जाप करें।

कबीर भक्तों अरू गुरू की सेवा कर श्रद्धा प्रेम सहित।
परम प्रभु (सत्य पुरूष) ध्यावही करि अतिश्य मन प्रीत।।

भावार्थ :- अपने गुरूदेव तथा सत्संग में या घर पर आए भक्तों की सदा आदर के साथ सेवा करें। श्रद्धा तथा प्रेम से सेवा करनी चाहिए। परम प्रभु यानि परम अक्षर पुरूष की भक्ति अत्यधिक प्रेम से करें।

''भक्त जती तथा सती होना चाहिए''

''जति के लक्षण''

पुरूष यति (जति) सो जानिये, निज त्रिया तक विचार।
माता बहन पुत्री सकल और जग की नार।।

भावार्थ :- यति पुरूष उसको कहते हैं जो अपनी स्त्री के अतिरिक्त अन्य स्त्री में पति-पत्नी वाला भाव न रखें। परस्त्री को आयु अनुसार माता, बहन या बेटी के भाव से जानें।

''सति स्त्री के लक्षण''

स्त्रि सो जो पतिव्रत धर्म धरै, निज पति सेवत जोय।।
अन्य पुरूष सब जगत में पिता भ्रात सुत होय।।
अपने पति की आज्ञा में रहै, निज तन मन से लाग।।
पिया विपरीत न कछु करै, ता त्रिया को बड़ भाग।।

भावार्थ :- सती स्त्री उसको कहते हैं जो अपने पति से लगाव रखे। अपने पति के अतिरिक्त संसार के अन्य पुरूषों को आयु अनुसार पिता, भाई तथा पुत्र के भाव से देखे यानि बरते। अपने पति की आज्ञा में रहे। मन-तन से सेवा करे, कोई कार्य पति के विपरीत न करे।

''दान करना कितना अनिवार्य है''

कबीर, मनोकामना बिहाय के हर्ष सहित करे दान।
ताका तन मन निर्मल होय, होय पाप की हान।।
कबीर, यज्ञ दान बिन गुरू के, निश दिन माला फेर।
निष्फल वह करनी सकल, सतगुरू भाखै टेर।।
प्रथम गुरू से पूछिए, कीजै काज बहोर।
सो सुखदायक होत है, मिटै जीव का खोर।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने बताया है कि बिना किसी मनोकामना के जो दान किया जाता है, वह दान दोनों फल देता है। वर्तमान जीवन में कार्य की सिद्धि भी होगी तथा भविष्य के लिए पुण्य जमा होगा और जो मनोकामना पूर्ति के लिए किया जाता है। वह कार्य सिद्धि के पश्चात् समाप्त हो जाता है। बिना मनोकामना पूर्ति के लिए किया गया दान आत्मा को निर्मल करता है, पाप नाश करता है।

❖ पहले गुरू धारण करो, फिर गुरूदेव जी के निर्देश अनुसार दान करना चाहिए। बिना गुरू के कितना ही दान करो और कितना ही नाम-स्मरण की माला फेरो, सब व्यर्थ प्रयत्न है। यह सतगुरू पुकार-पुकारकर कहता है।

❖ प्रथम गुरू की आज्ञा लें, तब अपना नया कार्य करना चाहिए। वह कार्य सुखदायक होता है तथा मन की सब चिंता मिटा देता है।

कबीर, अभ्यागत आगम निरखि, आदर मान समेत।
भोजन छाजन, बित यथा, सदा काल जो देत।।

भावार्थ :- आपके घर पर कोई अतिथि आ जाए तो आदर के साथ भोजन तथा बिछावना अपनी वित्तीय स्थिति के अनुसार सदा समय देना चाहिए।

सोई म्लेच्छ सम जानिये, गृही जो दान विहीन।
यही कारण नित दान करे, जो नर चतुर प्रविन।।

भावार्थ :- जो ग्रहस्थी व्यक्ति दान नहीं करता, वह तो म्लेच्छ यानि दुष्ट व्यक्ति के समान है। इसलिए हे बुद्धिमान! नित (सदा) दान करो।

पात्र कुपात्र विचार के तब दीजै ताहि दान। देता लेता सुख लह अन्त होय नहीं हान।।

भावार्थ :- दान कुपात्र को नहीं देना चाहिए। सुपात्र को दान हर्षपूर्वक देना चाहिए। सुपात्र गुरूदेव बताया है। फिर कोई भूखा है, उसको भोजन देना चाहिए। रोगी का उपचार अपने वित सामने धन देकर करना, बाढ़ पीड़ितों, भूकंप पीड़ितों को समूह बनाकर भोजन-कपड़े अपने हाथों देना सुपात्र को दिया दान कहा है। इससे कोई हानि नहीं होती।

''धर्म बोध पृष्ठ 179 का सारांश''

कबीर, फल कारण सेवा करै, निशदिन याचै राम।
कह कबीर सेवा नहीं, जो चाहै चौगुने दाम।।

भावार्थ :- जो किसी कार्य की सिद्धि के लिए सेवा (पूजा) करता है, दिन-रात

परमात्मा से माँगता रहता है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि वह सेवा सेवा नहीं जो चार गुणा धन सेवा के बदले इच्छा करता है।

कबीर, सज्जन सगे कुटम्ब हितु, जो कोई द्वारै आव।
कबहु निरादर न कीजिए, राखै सब का भाव।।

भावार्थ :- भद्र पुरूषों, सगे यानि रिश्तेदारों, कुटम्ब यानि परिवारजनों तथा हितु यानि आपके हितैषियों का आपके द्वार पर आना हो तो कभी अनादर नहीं करना चाहिए। सबका भाव रखना चाहिए।

कबीर, कोड़ी—कोड़ी जोड़ी कर कीने लाख करोर।
पैसा एक ना संग चलै, केते दाम बटोर।।

भावार्थ :- दान धर्म पर पैसा खर्च किया नहीं, लाखों-करोड़ों रूपये जमा कर लिए। संसार छोड़कर जाते समय एक पैसा भी साथ नहीं चलेगा चाहे कितना ही धन संग्रह कर लो।

जो धन हरिके हेत, धर्म राह नहीं लगात।
सो धन चोर लबार गह, धर छाती पर लात।।

भावार्थ :- जो धन परमात्मा के निमित खर्च नहीं होता, कभी धर्म कर्म में नहीं लगता, उसके धन को डाकू, चोर, लुटेरे छाती ऊपर लात धरकर यानि डरा-धमकाकर छीन ले जाते हैं।

सत का सौदा जो करै, दम्भ छल छिद्र त्यागै। अपने भाग का धन लहै, परधन विष सम लागै।।

भावार्थ :- अपने जीवन में परमात्मा से डरकर सत्य के आधार से सर्व कर्म करने चाहिएं जो अपने भाग्य में धन लिखा है, उसी में संतोष करना चाहिए। परधन को विष के समान समझें।

भूखा जहि घर ते फिरै, ताको लागै पाप। भूखों भोजन जो देत है, कटैं कोटि संताप।।

भावार्थ :- जिस घर से कोई भूखा लौट जाता है, उसको पाप लगता है। भूखों को भोजन देने वालों के करोड़ों विघ्न टल जाते हैं।

प्रथम संत को जीमाइए। पीछे भोजन भोग। ऐसे पाप को टालिये, कटे नित्य का रोग।।

भावार्थ :- यदि आपके घर पर कोई संत (भक्त) आ जाए तो पहले उसको भोजन कराना चाहिए, पीछे आप भोजन खाना चाहिए। इस प्रकार अपने सिर पर नित्य आने वाले पाप के कारण कष्ट को टालना चाहिए।

धर्म बोध पृष्ठ 180 का सारांश :-

कबीर, यद्यपि उत्तम कर्म करि, रहै रहित अभिमान।
साधु देखी सिर नावते, करते आदर मान।।

भावार्थ :- अभिमान त्यागकर श्रेष्ठ कर्म करने चाहिऐं। संत, भक्त को आता देखकर शीश झुकाकर प्रणाम तथा सम्मान करना चाहिए।

कबीर, बार—बार निज श्रवणतें, सुने जो धर्म पुराण।
कोमल चित उदार नित, हिंसा रहित बखान।।

भावार्थ :- भक्त को चाहिए कि वह बार-बार धर्म-कर्म के विषय में सत्संग ज्ञान

सुने और अपना चित कोमल रखे। अहिंसा परम धर्म है। ऐसे अहिंसा संबंधी प्रवचन सुनने चाहिऐं।

कबीर, न्याय धर्मयुक्त कर्म सब करैं, न करना कबहू अन्याय।
जो अन्यायी पुरूष हैं, बन्धे यमपुर जाऐं।।

भावार्थ :- सदा न्याययुक्त कर्म करने चाहिऐं। कभी भी अन्याय नहीं करना चाहिए। जो अन्याय करते हैं, वे यमराज के लोक में नरक में जाते हैं।

धर्म बोध पृष्ठ 181 का सारांश :-

कबीर, गृह कारण में पाप बहु, नित लागै सुन लोय।
ताहिते दान अवश्य है, दूर ताहिते होय।।
कबीर, चक्की चौंकै चूल्ह में, झाडू अरू जलपान।
गृह आश्रमी को नित्य यह, पाप पाँचै विधि जान।।

भावार्थ :- गृहस्थी को चक्की से आटा पीसने में, खाना बनाने में चूल्हे में अग्नि जलाई जाती है। चौंका अर्थात् स्थान लीपने में तथा झाडू लगाने तथा खाने तथा पीने में पाँच प्रकार से पाप लगते हैं। हे संसारी लोगो! सुनो! इन कारणों से आपको नित पाप लगते हैं। इसलिए दान करना आवश्यक है। ये पाप दान करने से ही नाश होंगे।

कबीर, कछु कटें सत्संग ते, कछु नाम के जाप। कछु संत के दर्शते, कछु दान प्रताप।।

भावार्थ :- भक्त के पाप कई धार्मिक क्रियाओं से समाप्त होते हैं। कुछ सत्संग-वचन सुनने से ज्ञान यज्ञ के कारण, कुछ नाम के जाप से, कुछ संत के दर्शन करने से तथा कुछ दान के प्रभाव से समाप्त होते हैं।

जैसे वस्त्र पहनते हैं। मिट्टी-धूल लगने से मैले होते हैं। उनको पानी-साबुन से धोया जाता है। इसी प्रकार नित्य कार्य में पाप लगना स्वाभाविक है। इसी प्रकार वस्त्र की तरह सत्संग वचन, नाम स्मरण, दान व संत दर्शन रूपी साबुन-पानी से नित्य धोने से आत्मा निर्मल रहती है। भक्ति में मन लगा रहता है।

कबीर, जो धन पाय न धर्म करत, नाहीं सद् व्यौहार।
सो प्रभु के चोर हैं, फिरते मारो मार।।

भावार्थ :- जो धन परमात्मा ने मानव को दिया है, उसमें से जो दान नहीं करते और न अच्छा आचरण करते हैं, वे परमात्मा के चोर हैं जो माया जोड़ने की धुन में मारे-मारे फिरते हैं। संत गरीबदास जी ने भी कहा है कि :-

जिन हर की चोरी करी और गए राम गुण भूल।
ते विधना बागुल किए, रहे ऊर्ध मुख झूल।।

यही प्रमाण गीता अध्याय 3 श्लोक 10 से 13 में कहा है कि जो धर्म-कर्म नहीं करते, जो परमात्मा द्वारा दिए धन से दान आदि धर्म कार्य नहीं करते, वे तो चोर हैं। वे तो अपना शरीर पोषण के लिए ही अन्न पकाते हैं। धर्म में नहीं लगाते, वे तो पाप ही खाते हैं।

''बच्चों को शिक्षा अवश्य दिलानी चाहिए''

कबीर, मात पिता सो शत्रु हैं, बाल पढ़ावैं नाहिं।
हंसन में बगुला यथा, तथा अनपढ़ सो पंडित माहीं।।

भावार्थ :- जो माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाते नहीं, वे अपने बच्चों के शत्रु हैं। अशिक्षित व्यक्ति शिक्षित व्यक्तियों में ऐसा होता है जैसे हंस पक्षियों में बगुला। यहाँ पढ़ाने का तात्पर्य धार्मिक ज्ञान कराने से है, सत्संग आदि सुनने से है।

यदि किसी व्यक्ति को आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है तो वह शुभ-अशुभ कर्मों को नहीं जान पाता। जिस कारण से वह पाप करता रहता है। जो सत्संग सुनते हैं। उनको सम्पूर्ण कर्मों का तथा अध्यात्म का ज्ञान हो जाता है। वह कभी पाप नहीं करता। वह हंस पक्षी जैसा है जो सरोवर से केवल मोती खाता है, जीव-जंतु, मछली आदि-आदि नहीं खाता। इसके विपरीत अध्यात्म ज्ञानहीन व्यक्ति बुगले पक्षी जैसे स्वभाव का होता है। बुगला पक्षी मछली, कीड़े-मकोड़े आदि-आदि जल के जंतु खाता है। शरीर से दोनों (हंस पक्षी तथा बुगला पक्षी) एक जैसे आकार तथा सफेद रंग के होते हैं। उनको देखकर नहीं पहचाना जा सकता। उनके कर्मों से पता चलता है। इसी प्रकार तत्त्वज्ञान युक्त व्यक्ति शुभ कर्मों से तथा तत्त्वज्ञानहीन व्यक्ति अशुभ कर्मों से पहचाना जाता है।

कबीर, पहले अपने धर्म को, भली भांति सिखलाय।
अन्य धर्म की सीख सुनि, भटकि बाल बुद्धि जाय।।

भावार्थ :- बच्चों को या परिवार के अन्य सदस्यों को पहले अपने धर्म का ज्ञान पूर्ण रूप से कराना चाहिए। जिनको अपने धर्म यानि धार्मिक क्रियाओं का ज्ञान नहीं, वह बालक जैसी बुद्धि का होता है। वे अन्य धर्म पंथ की शिक्षा सुनकर भटक जाते हैं। जिनको अपने धर्म (पंथ) का सम्पूर्ण ज्ञान है, वह भ्रमित नहीं होता।

धर्म बोध पंष्ठ 182 का सारांश :-

कबीर, जो कछु धन का लाभ हो, शुद्ध कमाई कीन।
ता धन के दशवें अंश को, अपने गुरू को दीन।।
दसवां अंश गुरू को दीजै। अपना जन्म सफल कर लीजै।।

भावार्थ :- शुद्ध नेक कमाई से जो लाभ होता है, उसका दसवां भाग अपने गुरूदेव को दान करना चाहिए।

कबीर, जे गुरू निकट निवास करै, तो सेवा कर नित्य।
जो कछु दूर बसै, पल—पल ध्यान से हित।।

भावार्थ :- यदि गुरू जी का स्थान आपके निवास के निकट हो तो प्रतिदिन सेवा के लिए जाइये। यदि दूर है तो उनकी याद पल-पल करनी चाहिए। इससे साधक का हित होता है यानि लाभ प्राप्त होता है।

कबीर, छठे मास गुरू दर्श करन ते, कबहु ना चुको हंस।
गुरू दर्श अरू सत्संग, विचार सो उधरै जात है वंश।।
कबीर, छठे मास ना करि सके, वर्ष में करो धाय।

वर्ष में दर्श नहिं करे, सो भक्त साकिट ठहराय।।
कबीर, जै गुरू परलोक गमन करे, सीख मानियो शीश।
हरदम गुरू को साथ जानि, सुमरो नित जगदीश।।
कबीर, गुरू मरा मत जानियो, वस्त्र त्यागा स्थूल।
सूक्ष्म देही गमन करि, खिला अमर वह फूल।।
कबीर, सतलोक में बैठी कर, गुरू निरखै तोहे।
गुरू तज ना और मानियो, अध्यात्म हानि होय।।
कबीर, गुरू के शिष्य की जगदीश करै सहाय।
नाम जपै अरू दान धर्म में कबहू न अलसाय।।
कबीर, जैसे रवि आकाश से, सबके साथ रहाय।
उष्णता अरू प्रकाश को दूरही ते पहुँचाय।।
कबीर, ऐसे गुरू जहाँ बसे सब पर करे रजा।
गुरू समीप जानकर सकल विकार करत लजा।।

भावार्थ :- गुरू जी के दर्शन छठे महीने अवश्य करें। सत्संग और गुरू दर्शन से पूरा वंश मुक्त हो जाता है। यदि छठे मास दर्शन नहीं कर सकता तो वर्ष में बेसब्रा होकर यानि अति उत्साह के साथ दर्शन करने जाए। यदि एक वर्ष में गुरू दर्शन नहीं करता है तो वह शिष्य भक्तिहीन माना जाता है।

यदि गुरू जी सतलोक चले गए तो उनकी शिक्षा को आधार मानकर अपना धर्म-कर्म करते रहिए। अपने गुरूदेव को पल-पल अपने साथ समझकर परमेश्वर का भजन करो, जो गुरू जी ने दीक्षा मंत्र दिए हैं, उनका जाप करते रहो।

गुरू जी को मरा नहीं समझे, यह तो स्थूल शरीर त्यागा है जैसे वस्त्र उतार दिए जाते हैं। शरीर तो सुरक्षित रहता है। इसी प्रकार स्थूल शरीर रूपी वस्त्र त्यागा है। नूरी शरीर से सतलोक चले गए हैं। वहाँ पर अमरत्व प्राप्त कर लिया है। आपका इंतजार कर रहे हैं। आपजी को भी तो जाना है। बिना मरे (स्थूल शरीर त्यागे) सत्यलोक जाया नहीं जा सकता। यह तो शिष्यों को भी त्यागना है। फिर गुरू जी के शरीर त्यागने का शोक न करके उनके द्वारा बताई गई साधना करे तथा मर्यादा का पालन करते हुए अपना जीवन सफल बनाऐं।

गुरूदेव सतलोक में बैठकर आपको देख रहा होता है। गुरू जी के संसार छोड़कर जाने के पश्चात् अन्य को गुरू रूप में नहीं देखना, नहीं तो भक्ति की हानि हो जाएगी।

गुरू जी के उपदेशी शिष्य की परमेश्वर सहायता करता है। शिष्य को गुरू जी के बताए नाम जाप तथा दान-धर्म करने में कभी आलस नहीं करना चाहिए।

जैसे सूर्य दूर आकाश से सबको उष्णता तथा प्रकाश प्रदान करता है, सबको अपने साथ दिखाई देता है। इसी प्रकार गुरू जी कहीं पर भी बैठा है, वहीं से अपने भक्तों पर कृपा करता है। गुरू जी को समीप तथा दृष्टा जानकर सब विषय-विकारों को करने में शर्म करके परहेज करे।

धर्म बोध पृष्ठ 183 का सारांश :-

कबीर, केते जनकादिक गृही जो निज धर्म प्रवीन।
पायो शुभगति आप ही औरनहू मति दीन।।

भावार्थ :- राजा जनक जैसे गृहस्थी अपने धर्म के विद्वान थे यानि मानव कर्म के ज्ञानी थे। जिस कारण से स्वयं भी शुभगति प्राप्त की यानि स्वर्ग प्राप्त किया तथा औरों को भी स्वर्ग प्राप्ति का मार्ग बताया।

कबीर, हरि के हेत न देत, धन देत कुमार्ग माहीं।
ऐसे अन्यायी अधम, बांधे यमपुर जाहीं।।

भावार्थ :- जो व्यक्ति धर्म नहीं करते और पैसे का गलत प्रयोग करते हैं, शराब पीते हैं, माँस खाते हैं, तम्बाकू सेवन करते हैं या व्यर्थ के दिखावे में खर्च करते हैं, ऐसे अन्यायी नीच यमलोक यानि नरकलोक में बाँधकर ले जाए जाते हैं।

''भक्त ब्यौहार कैसा हो?''

निजधन के भागी जेते सगे बन्धु परिवार। जैसा जाको भाग है दीजै धर्म सम्भार।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि संपत्ति के जो भी जितने भी भाग के कानूनी अधिकारी हैं, उनको पूरा-पूरा भाग देना चाहिए अपने धर्म-कर्म को ध्यान में रखकर यानि भक्त को चाहिए कि जिसका जितना हिस्सा बनता है, परमात्मा से डरकर पूरा-पूरा बाँट दे।

धर्म बोध पृष्ठ 184 का सारांश :-

कबीर, खाट पड़ै तब झखई नयनन आवै नीर।
यतन तब कछु बनै नहीं, तनु व्याप मृत्यु पीर।।

भावार्थ :- वृद्ध होकर या रोगी होकर जब मानव चारपाई पर पड़ा होता है और आँखों में आँसू बह रहे होते हैं, उस समय कोई बचाव नहीं हो सकता, मृत्यु के समय होने वाली पीड़ा हो रही होती है। कहते हैं कि जो भक्ति नहीं करते, उनका अन्त समय महाकष्टदायक होता है। उसके प्राण सरलता से नहीं निकलते, उसको इतनी पीड़ा होती है जैसे एक लाख बिच्छुओं ने डंक लगा दिया हो। उस समय यम के दूत उसका गला बंद कर देते हैं। व्यक्ति न बोल सकता है, न पूरा श्वांस ले पाता है। केवल आँखों से आँसू निकल रहे होते हैं। इसलिए भक्ति तथा शुभ कर्म जो ऊपर बताए हैं, मानव को अवश्य करने चाहिऐं।

कबीर, देखे जब यम दूतन को, इत उत जीव लुकाय।
महा भयंकर भेष लखी, भयभीत हो जाय।।

भावार्थ :- यम के दूतों का भयंकर रूप होता है। मृत्यु के समय यमदूत उसी धर्म व भक्तिहीन व्यक्ति को ही दिखाई देते हैं। उनको देखकर भय के मारे वह प्राणी शरीर में ही इधर-उधर छुपने की कोशिश करता है।

कबीर, भक्ति दान किया नहीं, अब रह कास की ओट।
मार पीट प्राण निकालहीं, जम तोड़ेंगे होठ।।

भावार्थ :- न गुरू किया, न भक्ति और न दान-धर्म किया, अब किसकी ओट

में बचेगा? यम के दूत मारपीट करके प्राण निकालेंगे और बिना विचारे चोट मारेंगे यानि बेरहम होकर पीट-पीटकर तेरे होठ फोड़ेंगे। होठ फोड़ना बेरहमी से पीटना अर्थात् निर्दयता से मारेंगे।

धर्म बोध पृष्ठ 185-186 पर सामान्य ज्ञान है।

धर्म बोध पृष्ठ 187 का सारांश :-

कबीर, मान अपमान सम कर जानै, तजै जगत की आश।
चाह रहित संस्य रहित, हर्ष शोक नहीं तास।।

भावार्थ :- भक्त को चाहे कोई अपमानित करे, उस और ध्यान न दे। उसकी बुद्धि पर रहम करे और जो सम्मान करता है, उस पर भी ध्यान न दे यानि किसी के सम्मानवश होकर अपना धर्म खराब न करे। हानि-लाभ को परमात्मा की देन मानकर संतोष करे।

कबीर, मार्ग चलै अधो गति, चार हाथ मांही देख।
पर तरिया पर धन ना चाहै समझ धर्म के लेख।।

भावार्थ :- भक्त मार्ग पर चलते समय नीचे देखकर चले। भक्त की दृष्टि चलते समय चार हाथ यानि 6 फुट दूर सामने रहनी चाहिए। धर्म-कर्म के ज्ञान का विचार करके परस्त्री तथा परधन को देखकर दोष दृष्टि न करे।

कबीर, पात्र कुपात्र विचार कर, भिक्षा दान जो लेत।
नीच अकर्मी सूम का, दान महा दुःख देत।।

भावार्थ :- संत यानि गुरू को अपने शिष्य के अतिरिक्त दान-भिक्षा नहीं लेनी चाहिए। कुकर्मी तथा अधर्मी का धन बहुत दुःखी करता है।

पृष्ठ 188 पर सामान्य ज्ञान है।

धर्म बोध पृष्ठ 189 पर :-

कबीर, इन्द्री तत्त्व प्रकृति से, आत्म जान पार।
जाप एक पल नहीं छूटै, टूट न पावै तार।।

भावार्थ :- आत्मा को पाँचों तत्त्वों से भिन्न जानै। शरीर आत्मा नहीं है। निरंतर सतनाम का जाप करे।

कबीर, जब जप करि के थक गए, हरि यश गावे संत।
कै जिन धर्म पुराण पढ़े, ऐसो धर्म सिद्धांत।।

भावार्थ :- यदि भक्त जाप करते-करते थक जाए तो परमात्मा की महिमा की वाणी पढ़े, यदि याद है तो गाए या अपने धर्म की पुस्तकों को पढ़े, यह धार्मिक सिद्धांत है।

धर्म बोध पृष्ठ 190 का सारांश :-

कबीर, ज्ञानी रोगी अर्थार्थी जिज्ञासू ये चार।
सो सब ही हरि ध्यावते ज्ञानी उतरे पार।।

भावार्थ :- परमात्मा की भक्ति चार प्रकार के व्यक्ति करते हैं :-

1. ज्ञानी :- ज्ञानी को विश्वास हो जाता है कि मानव जीवन केवल परमात्मा

की भक्ति करके जीव का कल्याण कराने के लिए प्राप्त होता है। उनको यह भी समझ होती है कि केवल एक पूर्ण परमात्मा की भक्ति से मोक्ष होगा, अन्य देवी-देवताओं की भक्ति से जन्म-मरण का क्लेश नहीं कटेगा। पूर्ण सतगुरू से दीक्षा लेकर बात बनेगी। इसलिए ज्ञानी भक्त पार होते हैं।

2. अर्थार्थी :- जो धन लाभ के लिए ही भक्ति करते हैं।

3. आर्त यानि संकट ग्रस्त :- केवल अपने संकट का नाश करने के लिए भक्ति करते हैं।

4. जिज्ञासु :- जिज्ञासु परमात्मा का ज्ञान अधूरा समझते हैं और वक्ता बनकर महिमा की भूख में जीवन नाश कर जाते हैं। यही प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 16-17 में भी है।

धर्म बोध पष्ठ 191 का सारांश :-

कबीर, क्षमा समान न तप, सुख नहीं संतोष समान।
तष्णा समान नहीं ब्याधी कोई, धर्म न दया समान।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि क्षमा करना बहुत बड़ा तप है। इसके समान तप नहीं है। संतोष के तुल्य कोई सुख नहीं है। किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा के समान कोई आपदा नहीं है और दया के समान धर्म नहीं है।

कबीर, योग (भक्ति) के अंग पाँच हैं, संयम मनन एकान्त।
विषय त्याग नाम रटन, होये मोक्ष निश्चिन्त।।

भावार्थ :- भक्ति के चार आवश्यक पहलु हैं। संयम यानि प्रत्येक कार्य में संयम बरतना चाहिए। धन संग्रह करने में, बोलने में, खाने-पीने में, विषय भोगों में संयम रखे यानि भक्त को कम बोलना चाहिए, विषय विकारों का त्याग करना चाहिए। परमात्मा का भजन तथा परमात्मा की वाणी प्रवचनों का मनन करना अनिवार्य है। ऐसे साधना तथा मर्यादा पालन करने से मोक्ष निश्चित प्राप्त होता है।

❖ पूर्ण परमात्मा भक्त की आयु भी बढ़ा देता है :-

ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 161 मंत्र 2 में कहा है कि पूर्ण प्रभु अपने भक्त का रोग समाप्त कर देता है। यदि रोगी की आयु शेष नहीं, वह मत्यु देवता के पास जाने वाला हो तो भी परमात्मा उसको स्वस्थ करके शत वर्ष यानि सौ वर्ष तक जीवन दे देता है। उसकी आयु वद्धि कर देता है। पढ़ें ''कबीर सागर'' के अध्याय ''गरूड़ बोध'' से प्रमाण :-

अध्याय ''गरूड़ बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 11वां अध्याय ''गरूड़ बोध'' पष्ठ 65(625) पर है :-

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया कि मैंने विष्णु जी के वाहन पक्षीराज गरूड़ जी को उपदेश दिया, उसको सष्टि रचना सुनाई। अमरलोक की कथा सत्यपुरूष की महिमा सुनकर गरूड़ देव अचम्भित हुआ। अपने कानों पर विश्वास नहीं कर रहे थे। मन-मन में विचार कर रहे थे कि मैं आज यह क्या सुन

रहा हूँ? मैं कोई स्वपन तो नहीं देख रहा हूँ। मैं किसी अन्य देश में तो नहीं चला गया हूँ। जो देश और परमात्मा मैंने सुना है, वह जैसे मेरे सामने चलचित्र रूप में चल रहा है। जब गरूड़ देव इन ख्यालों में खोए थे, तब मैंने कहा, हे पक्षीराज! क्या मेरी बातों को झूठ माना है। चुप हो गये हो। प्रश्न करो, यदि कोई शंका है तो समाधान कराओ। यदि आपको मेरी वाणी से दुःख हुआ है तो क्षमा करो। मेरे इन वचनों को सुनकर खगेश की आँखें भर आई और बोले कि हे देव! आप कौन हैं? आपका उद्देश्य क्या है? इतनी कड़वी सच्चाई बताई है जो हजम नहीं हो पा रही है। जो आपने अमरलोक में अमर परमेश्वर बताया है, यदि यह सत्य है तो हमें धोखे में रखा गया है। यदि यह बात असत्य है तो आप निंदा के पात्र हैं, अपराधी हैं। यदि सत्य है तो गरूड़ आपका दास खास है। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया कि मैंने कहा, हे गरूड़देव! जो शंका आपको हुई है, यह स्वाभाविक है, परंतु आपने संयम से काम लिया है। यह आपकी महानता है। परंतु मैं जो आपको अमरपुरूष तथा सत्यलोक की जानकारी दे रहा हूँ, वह परम सत्य है। मेरा नाम कबीर है। मैं उसी अमर लोक का निवासी हूँ। आपको काल ब्रह्म ने भ्रमित कर रखा है। यह ज्ञान ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी को भी नहीं है। आप विचार करो गरूड़ जी! जीव का जन्म होता है। आनन्द से रहने लगता है। परिवार विस्तार होता है। उसके पालन-पोषण में सांसारिक परंपराओं का निर्वाह करते-करते वृद्ध हो जाता है। जिस परिवार को देख-देखकर अपने को धन्य मानता है। उसी परिवार को त्यागकर संसार छोड़कर मजबूरन जाना पड़ता है। स्वयं भी रो रहा है, अंतिम श्वांस गिन रहा है। परिवार भी दुःखी है। यह क्या रीति है? क्या यह उचित है? गरूड़ देव बोले, हे कबीर देव! यह तो संसार का विधान है। जन्मा है तो मरना भी है। परमेश्वर जी ने कहा कि क्या कोई मरना चाहता है? क्या कोई वृद्धावस्था पसंद करता है? गरूड़ देव का उत्तर=नहीं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि यदि ऐसा हो कि न वृद्ध अवस्था हो, न मृत्यु तो कैसा लगे? गरूड़ देव जी ने कहा कि कहना ही क्या, ऐसा हो जाए तो आनन्द हो जाए परंतु यह तो ख्वाबी ख्याल (स्वपन विचार) जैसा है। हे धर्मदास! मैंने कहा कि वेदों तथा पुराणों को आप क्या मानते हो, सत्य या असत्य? गरूड़ देव जी ने कहा, परम सत्य।

देवी पुराण के तीसरे स्कंद में स्वयं विष्णु जी ने कहा कि हे माता! तुम शुद्ध स्वरूपा हो। यह सारा संसार तुमसे ही उद्भाषित हो रहा है। मैं ब्रह्मा तथा शंकर आपकी कृपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) हुआ करता है।

परमेश्वर कबीर जी के मुख कमल से ऐसे पुख्ता प्रमाण (सटीक प्रमाण) सुनकर गरूड़ देव चरणों में गिर गए। अपने भाग्य को सराहा और कहा कि जो देव सृष्टि की रचना, ब्रह्मा-विष्णु-महेश तथा दुर्गा देव तथा निरंजन तक की उत्पत्ति जानता है, वह ही रचनहार परमेश्वर है। आज तक किसी ने ऐसा ज्ञान नहीं बताया। यदि किसी जीव को पता होता, चाहे वह ऋषि-महर्षि भी है तो अवश्य

कथा करता। मैंने बड़े-बड़े मण्डलेश्वरों के प्रवचन सुने हैं। किसी के पास यह ज्ञान नहीं है। इनको वेदों तथा गीता का भी ज्ञान नहीं है। आप स्वयं को छुपाए हुए हो। मैंने आपको पहचान लिया है। कृपा करके मुझे शरण में ले लो परमेश्वर।

परमेश्वर कबीर जी ने गरूड़ से कहा कि आप पहले अपने स्वामी श्री विष्णु जी से आज्ञा ले लो कि मैं अपना कल्याण कराना चाहता हूँ। एक महान संत मुझे मिले हैं। मैंने उनका ज्ञान सुना है। यदि आज्ञा हो तो मैं अपना कल्याण करा लूँ। मैं आपका दास नौकर हूँ, आप मालिक हैं। हमें सब समय इकट्ठा रहना है। यदि मैं छिपकर दीक्षा ले लूँगा तो आपको दुःख होगा। गरूड़ ने ऐसा ही किया। विष्णु जी से सब बात बताई। श्री विष्णु जी ने कहा मैं आपको मना नहीं करता, आप स्वतंत्र हैं। आपने अच्छा किया, सत्य बता दिया। मुझे कोई एतराज नहीं है।

हे धर्मदास! मैंने गरूड़ को प्रथम मंत्र दीक्षा पाँच नाम (कमलों को खोलने वाले प्रत्येक देव की साधना के नाम) की दी। गरूड़ देव ने कहा कि हे गुरूदेव! यह मंत्र तो इन्हीं देवताओं के हैं। अमर पुरूष का मंत्र तो नहीं है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि ये इनकी पूजा के मंत्र नहीं हैं। ये इन देवताओं को अपने अनुकूल करके इनके जाल से छूटने की कूँजी (Key) है। इनके वशीकरण मंत्र हैं। जैसे भैंसे को आकर्षित करने के लिए यदि उसको भैंसा-भैंसा करते हैं तो वह आवाज करने वाले की ओर देखता तक नहीं। जब उसका वशीकरण नाम पुकारा जाता है, हुर्र-हुर्र तो वह तुरंत प्रभाव से सक्रिय हो जाता है। आवाज करने वाले की ओर दौड़ा आता है। आवाज करने वाला व्यक्ति उससे अपनी भैंस को गर्भ धारण करवाता है। इसी प्रकार आप यदि श्री विष्णु जी के अन्य किसी नाम का जाप करते रहें, वे ध्यान नहीं देते। जब आप इस मंत्र का जाप करोगे तो विष्णु देव जी तुरंत प्रभावित होकर साधक की सहायता करते हैं। ये देवता तीनों लोकों (पृथ्वी, स्वर्ग तथा पाताल) के प्रधान देवता हैं। ये केवल संस्कार कर्म लिखा ही दे सकते हैं। इस मंत्र के जाप से हमारे पुण्य अधिक तथा भक्ति धन अधिक संग्रहित हो जाता है। उसके प्रतिफल में ये देवता साधक की सहायता करते हैं। इस प्रकार इनकी साधना तथा पूजा का अंतर समझना है। जैसे अपने को आम खाने हैं तो पहले मेहनत, मजदूरी, नौकरी करेंगे, धन मिलेगा तो आम खाने को मिलेगा। नौकरी पूजा नहीं होती। उस समय हमारा पूज्य आम होता है। पूज्य की प्राप्ति के लिए किया गया प्रयत्न नौकरी है। इसी प्रकार अपने पूज्य परमेश्वर कबीर जी हैं तथा अमर लोक है। उसके लिए हम श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु, श्री शिव, श्री गणेश तथा श्री दुर्गा जी की मजदूरी करते हैं, साधना करते हैं। पूजा परमेश्वर की करते हैं। गरूड़ जी बड़े प्रसन्न हुए और इस अमृत ज्ञान की चर्चा हेतु श्री ब्रह्मा जी से मिले। उनको बताया कि मैंने एक महर्षि से अद्भुत ज्ञान सुना है। मुझे उनका ज्ञान सत्य लगा है। उन्होंने बताया कि आप (ब्रह्मा), विष्णु तथा शिव नाशवान हो, पूर्ण करतार नहीं हो। आप केवल भाग्य में लिखा ही दे सकते हो। आप किसी की आयु वृद्धि नहीं कर सकते हो। आप किसी के कर्म कम-अधिक नहीं कर सकते। पूर्ण परमात्मा अन्य है, अमर

लोक में रहता है। वह पाप कर्म काट देता है। वह मृत्यु को टाल देता है। आयु वृद्धि कर देता है। प्रमाण भी वेदों में बताया है। ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 161 मंत्र 2 में कहा है कि रोगी का रोग बढ़ गया है। वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है। तो भी मैं उस भक्त को मृत्यु देवता से छुड़वा लाऊँ, उसको नवजीवन प्रदान कर देता हूँ। उसको पूर्ण आयु जीने के लिए देता हूँ।

ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 161 मंत्र 5 में कहा है कि हे पुनर्जन्म प्राप्त प्राणी! तू मेरी भक्ति करते रहना। यदि तेरी आँखें भी समाप्त हो जाएंगी तो तेरी आँखें स्वस्थ कर दूँगा, तेरे को मिलूंगा भी यानि मैं तेरे को प्राप्त भी होऊँगा।

ब्रह्मा जी को वेद मंत्र कंठस्थ हैं। तुरंत समझ गए, परंतु संसार में लोकवेद के आधार से ब्रह्मा जी अपने आपको प्रजापिता यानि सबकी उत्पत्तिकर्ता मान रहे थे। वेदों को कठंस्थ (याद) कर लेना भिन्न बात है। वेद मंत्रों को समझना विशेष ज्ञान है। मान-बड़ाई वश होकर ब्रह्मा जी ने कहा कि वेदों का ज्ञान मेरे अतिरिक्त विश्व में किसी को नहीं है। इन मंत्रों का अर्थ गलत लगाया है। कबीर परमेश्वर ने ऐसे व्यक्तियों के विषय में कहा है कि :-

कबीर, जान बूझ साच्ची तजैं, करै झूठ से नेह।
ताकि संगत हे प्रभु, स्वपन में भी ना देय।।

शब्दार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि जो व्यक्ति प्रमाण आँखों देखकर भी झूठ को ही आधार मानता है, उस व्यक्ति से तो परमात्मा! स्वपन में भी ना मिलाना। वह इतना दुष्ट है। उससे ज्ञान चर्चा करना व्यर्थ है।

ब्रह्मा जी गरूड़ के वचन सुनकर अति क्रोधित हुए और कहा कि तेरी पक्षी वाली बुद्धि है। तेरे को कोई कुछ कह दे। उसी की बातों पर विश्वास कर लेता है। तेरे को अपनी अक्ल नहीं है। ब्रह्मा जी ने उसी समय विष्णु, महेश, इन्द्र तथा सब देवताओं व ऋषियों को बुला लिया। सभा लग गई। ब्रह्मा जी ने उनको बुलाने का कारण बताया कि गरूड़ आज नई बात कर रहा है कि ब्रह्मा-विष्णु-महेश नाशवान हैं। पूर्ण परमात्मा कोई अन्य है। वह अमर लोक में रहता है। तुम कर्ता नहीं हो। यह बात सुनकर श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी बहुत क्रोधित हुए और गरूड़ को ब्रह्मा वाले उलाहणें (दोष निकालकर बुरा-भला कहना) कहे। फिर सबने मिलकर निर्णय लिया कि माता (दुर्गा) जी से सत्य जानते हैं। सब मिलकर माता के पास गए। यही प्रश्न पूछा कि क्या हमारे (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) से अन्य कोई पूर्ण प्रभु है। क्या हम नाशवान हैं?

माता ने दो टूक जवाब दिया कि तुमको यह गलतफहमी (भ्रम) कब से हो गया कि तुम अविनाशी तथा जगत के कर्ता हो। यदि ऐसा है तो तुम मेरे भी कर्ता (बाप) हुए जबकि तुम्हारा जन्म मेरी कोख से हुआ है। वास्तव में परमेश्वर अन्य है, वही अविनाशी है। वही सबका कर्ता है। यह बात सुनकर सभा भंग हो गई, सब चले गए। परंतु ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी के गले में यह सत्य नहीं उतर पा रहा था। उन्होंने गरूड़ को बुलाया। गरूड़ ने आकर प्रणाम किया। आदेश पाकर बैठ गया।

तीनों देवताओं ने कहा, हे पक्षीराज! आपको कैसे विश्वास हो कि हम जगत के कर्ता हैं? आप जो चाहो, परीक्षा करो। गरूड़ जी उठकर उड़कर मेरे पास (कबीर जी के पास) आए तथा सब वृतांत बताया। तब मैंने कहा कि बंग देश (वर्तमान में बांग्लादेश) में एक ब्राह्मण का बारह वर्षीय बालक है। उसकी आयु समाप्त होने वाली है। वह कुछ दिन का मेहमान है। मैंने उस बालक को शरण में लेने के लिए ब्रह्मा, विष्णु, शिव की स्थिति बताई जो गरूड़ तेरे को बताई है। उस बालक ने बहुत विवाद किया और मेरे ज्ञान को नहीं माना। तब मैंने उस बालक से कहा कि तेरी आयु तीन दिन शेष है। यदि तेरे ब्रह्मा-विष्णु-शिव समर्थ हैं तो अपनी रक्षा कराओ। मैं इतना कहकर अंतर्ध्यान हो गया। बालक बेचैन है। उस बालक को लेकर देवताओं के पास जाओ। उनसे कुछ बनना नहीं है। फिर आप मेरे से ध्यान से बातें करना। मैं तेरे को आगे क्या करना है, वह बताऊँगा। गरूड़ जी उस बालक को लेकर ब्रह्मा-विष्णु-शिव के पास गए। गरूड़ ने बालक को समझाया कि आप उन देवताओं से कहना कि हम आपके भक्त हैं। मेरे दादा- परदादा, पिता और मैंने सदा आपकी पूजा की है। मेरे जीवन के दो दिन शेष हैं। मेरी आयु भी क्या है? कृपा मेरी आयु वृद्धि कर दें।

बच्चे ने यही विनय की तो तीनों ने कोशिश की परंतु व्यर्थ। फिर विचार किया कि धर्मराज (न्यायधीश) के पास चलते हैं। सबका हिसाब (account) उसी के पास है। उससे वृद्धि करा देते हैं। यह विचार करके सबके सब धर्मराज के पास गए। उनसे तीनों देवताओं ने कहा कि पहले तो यह बताओ कि इस ब्राह्मण बच्चे की कितनी आयु है? धर्मराज ने डॉयरी (रजिस्टर) देखकर बताया कि कल इसकी मृत्यु हो जाएगी। तीनों देवताओं ने कहा कि आप इस बच्चे की आयु वृद्धि कर दो। धर्मराज ने कहा, यह असंभव है। तीनों ने कहा कि हम आपके पास बार-बार नहीं आते, आज इज्जत-बेइज्जती का प्रश्न है। हमारे आये हुओं की इज्जत तो रख लो। धर्मराज ने कहा कि एक पल भी न बढ़ाई जा सकती है, न घटाई जा सकती है। यदि आप अपनी आयु इसको दे दो तो वृद्धि कर सकता हूँ।

यह सुनते ही सबकी हवा निकल गई। उस समय कहने लगे कि यह तो परमेश्वर ही कर सकता है। वहाँ से तुरंत चल पड़े और गरूड़ से कहा कि कोई और समर्थ शक्ति है तो तुम इसकी आयु बढ़वाकर दिखा दो। गरूड़ ने कबीर जी से ध्यान द्वारा (टेलीफोन से) सम्पर्क किया। परमेश्वर कबीर जी ने ध्यान द्वारा बताया कि आप इसके लिए मानसरोवर से जल ले आओ। वहाँ एक श्रवण नाम का भक्त मिलेगा। उसको मैंने सब समझा दिया है, आप अमृत ले आओ।

गरूड़ जी ने जैसी आज्ञा हुई, वैसा ही किया। अमृत लाकर उस बच्चे को पिला दिया। उस बालक के पास मैं गया। गरूड़ ने उसे सब समझा दिया कि अमृत तो बहाना है। ये स्वयं परमेश्वर हैं। इन्होंने जल मन्त्रित करके दिया था। बालक तुम दीक्षा ले लो। इस अमृत से तो दस दिन जीवित रहोगे। बालक ने मेरे से दीक्षा ली। जब बालक 15 दिन तक नहीं मरा तो गरूड़ ने तीनों ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव

जी को बताया कि वह बालक जीवित है। मेरे गुरू जी से दीक्षा ले ली है। उन्होंने उस बच्चे को पूर्ण आयु जीने का आशीर्वाद दे दिया है। ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों फिर धर्मराज के पास गए, साथ में गरूड़ भी गया। तीनों देवताओं ने धर्मराज से पूछा कि वह बालक कैसे जीवित है, उसको मर जाना चाहिए था। धर्मराज ने उसका खाता देखा तो उसकी आयु लम्बी लिखी थी। धर्मराज ने कहा कि यह ऊपर से ही होता है। यह तो कभी-कभी होता है। उस परमेश्वर की लीला को कौन जान सकता है?

तीनों देवताओं को आश्चर्य हुआ, परंतु मान-बड़ाई के कारण प्रत्यक्ष देखकर भी सत्य को माना नहीं। अपना अहम भाव नहीं त्यागा। गरूड़ को विश्वास अटल हो गया।

कबीर, राज तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह।
मान बड़ाई ईर्ष्या, दुर्लभ तजना येह।।

शब्दार्थ :- अध्यात्म ज्ञान के अभाव के कारण मानव को कुछ असाध्य बुराई घेर लेती हैं जैसे मान-बड़ाई, ईर्ष्या। मान-बड़ाई का अर्थ है पद या धन के अहंकार के कारण सम्मानित व्यक्ति। ये दोनों (सम्मान के कारण बड़प्पन यानि मान-बड़ाई तथा ईर्ष्या) ऐसी बुराई हैं, इनके अभिमान में अँधा होकर इन्हें नहीं छोड़ता। राज त्याग सकता है, स्त्री को त्याग सकता है, परंतु इन दोनों को त्यागना कठिन है।

इस गरूड़ बोध के अंत में वासुकी नाग कन्या वाला प्रकरण गलत तरीके से लिखा है। इसमें गरूड़ को गुरू पद पर चित्रार्थ कर रखा है। वह ऐसा नहीं है। जो भी किया, परमेश्वर कबीर जी ने किया है।

‘‘अब पढ़ें कुछ अमतवाणी गरूड़ बोध से‘‘

धर्मदास वचन

धर्मदास बीनती करै, सुनहु जगत आधार।
गरूड़ बोध भेद सब, अब कहो तत्त्व विचार।।

शब्दार्थ :- धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से गरूड़ देव जी के बारे में ज्ञान जानने की इच्छा से निवेदन किया कि हे संसार के धारण करने वाले परमात्मा मुझे गरूड़ देव पक्षी के विषय में यथार्थ ज्ञान बताने की कपा करें।

सतगुरू वचन (कबीर वचन)

प्रथम गरूड़ सों भैंट जब भयऊ। सत साहब मैं बोल सुनाऊ।
धर्मदास सुनो कहु बुझाई। जेही विधि गरूड़ को समझाई।।

शब्दार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी को बताया कि जब मैं प्रथम बार गरूड़ से मिला तो मैंने सत साहेब बोला। हे धर्मदास! सुनो जिस प्रकार गरूड़ को समझाया, वही विधि बताता हूँ।

गरूड़ वचन

सुना बचन सत साहब जबही। गरूड़ प्रणाम किया तबही।।

शीश नीवाय तिन पूछा चाहये। हो तुम कौन कहाँ से आये।।

शब्दार्थ :- जब गरूड़ पक्षी ने सत साहेब वचन सुना, उसी समय प्रणाम किया। सिर झुकाकर मुझसे पूछा कि आप कौन हो? कहाँ से आए हो?

ज्ञानी (कबीर) वचन

कहा कबीर है नाम हमारा। तत्त्वज्ञान देने आए संसारा।।
सत्यपुरूष है कुल का दाता। हम वाका सब भेद बताता।।
सत्यलोक से हम चलि आए। जीव छुड़ावन जग में प्रकटाए।।

शब्दार्थ :- कबीर ने कहा कि मैंने गरूड़ को बताया कि मेरा नाम कबीर है। सम्पूर्ण विश्व को तत्वज्ञान यानि यथार्थ अध्यात्म ज्ञान प्रदान करने आया हूँ। मैं सत्यलोक यानि सनातन परम धाम से चलकर आया हूँ। काल जाल से जीवों को छुड़वाने के लिए जग में प्रकट हुआ हूँ। सत्य पुरूष कुल का मालिक है। सबका पोषण करने वाला है। सबका दाता है। मैं उसका सम्पूर्ण भेद बता दूँ।

गरूड़ वचन

सुनत बचन अचम्भो माना। सत्य पुरूष है कौन भगवाना।।
प्रत्यक्षदेव श्री विष्णु कहावै। दश औतार धरि धरि जावै।।

शब्दार्थ :- कबीर जी ने बताया कि गरूड़ ने सत्य साहेब सुना तो आश्चर्य किया और पूछा कि यह कौन परमात्मा है? अध्यात्म ज्ञान से स्पष्ट है कि श्री विष्णु परमात्मा है। वही दस अवतार धारण करके पथ्वी पर आता है।

ज्ञानी (कबीर) बचन

तब हम कहया सुनो गरूड़ सुजाना। परम पुरूष है पुरूष पुराना।।(आदि का)
वह कबहु ना मरता भाई। वह गर्भ से देह धरता नाहीं।।
कोटि मरे विष्णु भगवाना। क्या गरूड़ तुम नहीं जाना।।
जाका ज्ञान बेद बतलावैं। वेद ज्ञान कोई समझ न पावैं।।
जिसने कीन्हा सकल बिस्तारा। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव का सिरजनहारा।।
जुनी संकट वह नहीं आवे। वह तो साहेब अक्षय कहावै।।

शब्दार्थ :- कबीर जी ने कहा है कि हे सज्जन गरूड़! सुनो यह सत्य पुरूष यानि परम पुरूष आदि परमात्मा है यानि सदा का भगवान है। वह कभी नहीं मरता तथा न गर्भ से जन्म लेता। हे गरूड़! क्या आपको पता नहीं कि करोड़ों विष्णु मर चुके हैं। जिस परम अक्षर पुरूष का ज्ञान वेदों में बताया है। उस वेद के ज्ञान को ठीक से कोई समझ नहीं सका। जिसने सर्व ब्रह्मण्डों का विस्तार किया है, जिसने ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव की उत्पत्ति की है, वह परमात्मा चौरासी लाख योनियों के संकट में नहीं आता। वह तो अविनाशी कहा जाता है।

गरूड़ वचन

राम रूप धरि विष्णु आया। जिन लंका का मारा राया।।
पूर्ण ब्रह्म है विष्णु अविनाशी। है बन्दी छोड़ सब सुख राशी।।
तेतीस कोटि देवतन की बन्द छुड़ाई। पूर्ण प्रभु हैं राम राई।।

शब्दार्थ :- गरूड़ ने कहा कि विष्णु जी ने राम का अवतार धारण करके श्रीलंका के राजा रावण को मारा था। श्री विष्णु जी अविनाशी पूर्ण ब्रह्म हैं। तेतीस करोड़ देवताओं को राजा रावण की कैद से छुड़वाया। वह सब सुखों की खान बंदी छोड़ है। श्री राम राजा पूर्ण परमात्मा हैं।

ज्ञानी (कबीर) वचन

तुम गरूड़ कैसे कहो अविनाशी। सत्य पुरूष बिन कटै ना काल की फांसी।।
जा दिन लंक में करी चढ़ाई। नाग फांस में बंधे रघुराई।।
सेना सहित राम बंधाई। तब तुम नाग जा मारे भाई।।
तब तेरे विष्णु बन्दन से छूटे। याकु पूजै भाग जाके फूटे।।
कबीर ऐसी माया अटपटी, सब घट आन अड़ी।
किस–किस कूं समझाऊँ, कूअै भांग पड़ी।।

शब्दार्थ :- कबीर जी ने कहा कि हे गरूड़ देव! आप श्री विष्णु जी को कैसे अविनाशी कहते हो? सत्यपुरूष के बिना काल की फाँस यानि कर्म बँधन समाप्त नहीं हो सकता। हे गरूड़! याद कर, जिस समय श्री रामचन्द्र जी ने श्रीलंका पर आक्रमण किया था। युद्ध के दौरान श्री राम तथा उसकी सब सेना नागफांस में बँधी थी। तुमने श्री राम तथा सर्व सेना को नागफांस काटकर मुक्त करवाया था। तब तेरे विष्णु बँधन से छूटे थे। श्री राम व सेना के लिए तो आप बंदी छोड़ हुए। जो श्री विष्णु को इष्ट रूप में पूजता है, उसका भाग्य फूटा है यानि खराब किस्मत वाला है। कबीर जी ने दुःखी मन से कहा कि काल ब्रह्म ने अपने मायाजाल से सर्व प्राणियों का घट यानि हृदय अज्ञान से भरा है। किस-किस को समझाऊँ, यह तो ऐसी समस्या है जैसे किसी ने कूँए के जल में एक क्विंटल भाँग कूट-पीसकर मिलाई हो। जो भी व्यक्ति उस कूँए के जल को पीएगा, उसको भी नशा हो जाएगा। जितने भी व्यक्ति उस भाँग को पीकर नशे में होते हैं, उन सबकी एक जैसी लड़खड़ाकर चाल, तुतलाई बोली होती है। यही दशा काल ब्रह्म के द्वारा भ्रमित प्राणियों की है। वे सब यही कहते हैं कि श्री विष्णु तथा श्री शिव, श्री ब्रह्मा अविनाशी प्रभु हैं। सबके उत्पत्ति, स्थिति तथा संहारकर्ता हैं। इन तीनों से अन्य कोई परमात्मा ही नहीं है।

गरूड़ वचन

ज्ञानी गरूड़ है दास तुम्हारा। तुम बिन नहीं जीव निस्तारा।।
इतना कह गरूड़ चरण लिपटाया। शरण लेवों अविगत राया।।
कबहु ना छोड़ूँ तुम्हारा शरणा। तुम साहब हो तारण तरणा।।
पत्थर बुद्धि पर पड़े है ज्ञानी। हो तुम पूर्ण ब्रह्म लिया हम जानी।।

शब्दार्थ :- गरूड़ जी ने कबीर जी से कहा है कि हे विद्वान कबीर जी! मैं गरूड़ आपका गुलाम हूँ। आपके बिना जीव का कल्याण संभव नहीं है। कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया कि इतनी बात कहकर गरूड़ मेरे चरणों से लिपट गया और बोला, हे परमेश्वर! मुझे शरण में ले लो। मैं कभी आपकी शरण नहीं छोडूंगा। आप वास्तव तरण-तारण यानि पूर्ण मोक्ष करने वाले हो। हे ज्ञानी कबीर जी! हम

जीवों की बुद्धि पर अज्ञान के पत्थर पड़े हैं। अब मुझे ज्ञान हो गया है कि आप ही पूर्ण ब्रह्म हैं।

ज्ञानी (कबीर) वचन

तब हम गरूड़ कुं पाँच नाम सुनाया। तब वाकुं संशय आया।।
यह तो पूजा देवतन की दाता। या से कैसे मोक्ष विधाता।।
तुमतो कहो दूसरा अविनाशी। वा से कटे काल की फांसी।।
नायब से कैसे साहेब डरही। कैसे मैं भवसागर तिरही।।

शब्दार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी को बताया कि गरूड़ की प्रार्थना पर मैंने उसे पाँच नाम का दीक्षा मंत्र दिया जो शरीर में बने कमलों में प्रकट देवताओं व देवी दुर्गा की साधना के हैं। तब गरूड़ को शंका हुई कि हे प्रभु! आपने तो ये मंत्र देवताओं की पूजा के दिए हैं। आपने तो बताया है कि इनसे दूसरा वास्तव अविनाशी सत्य पुरूष है। वह काल के बँधन को काटता है। इन देवताओं की पूजा से कैसे पूर्ण मोक्ष हो सकेगा? ये तो नायब यानि छोटे देव हैं। इनका साहब यानि मालिक काल प्रभु है। नायब यानि छोटे देवता से साहब यानि मालिक कैसे भय मानेगा यानि इन देवताओं की भक्ति से काल के जाल से कैसे छूट पाऐंगे?

ज्ञानी (कबीर) वचन

साधना को पूजा मत जानो। साधना कूं मजदूरी मानो।।
जो कोऊ आम्र फल खानो चाहै। पहले बहुते मेहनत करावै।।
धन होवै फल आम्र खावै। आम्र फल इष्ट कहावै।।
पूजा इष्ट पूज्य की कहिए। ऐसे मेहनत साधना लहिए।।
यह सुन गरूड़ भयो आनन्दा। संशय सूल कियो निकन्दा।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी से गरूड़ देव ने कहा कि हे परमेश्वर! आपने तो इन्हीं देवताओं के नाम मंत्र दे दिये। यह इनकी पूजा है। आपने बताया कि ये तो केवल 16 कला युक्त प्रभु हैं। काल एक हजार कला युक्त प्रभु है। पूर्ण ब्रह्म असँख्य कला का परमेश्वर है। आपने संष्टि रचना में यह भी बताया है कि काल ने आपको रोक रखा है। काल ब्रह्म के आधीन तीनों देवता ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी हैं। हे परमेश्वर! नायब (उप यानि छोटा) से साहब (स्वामी-मालिक) कैसे डरेगा? यानि ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी तो केवल काल ब्रह्म के नायब हैं। जैसे नायब तहसीलदार यानि छोटा तहसीलदार होता है। तो छोटे से बड़ा कैसे डर मानेगा? भावार्थ है कि ये काल ब्रह्म के नायब हैं। आपने इनकी भक्ति बताई है, इनके मंत्र जाप दिए हैं। ये नायब अपने साहब (काल ब्रह्म) से हमें कैसे छुड़वा सकेंगे? तब परमेश्वर कबीर जी ने पूजा तथा साधना में भेद बताया कि यदि किसी को आम्र फल यानि आम का फल खाने की इच्छा हुई है तो आम फल उसका पूज्य है। उस पूज्य वस्तु को प्राप्त करने के लिए किया गया प्रयत्न साधना कही जाती है। जैसे धन कमाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। उस धन से आम मोल लेकर खाया जाता है। इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा हमारा इष्ट देव यानि पूज्य देव है। जो देवताओं

के मंत्र का जाप मेहनत (मजदूरी) है। जो नाम जाप की कमाई रूपी भक्ति धन मिलेगा, उसको काल ब्रह्म में छोड़कर कर्जमुक्त होकर अपने इष्ट यानि पूज्य देव कबीर देव (कविर्देव) को प्राप्त करेंगे। यह बात सुनकर गरूड़ जी अति प्रसन्न हुए तथा गुरू के पूर्ण गुरू होने का भी साक्ष्य मिला कि पूर्ण गुरू ही शंका का समाधान कर सकता है और दीक्षा प्राप्ति की। गरूड़ को त्रेतायुग में शरण में लिया था। श्री विष्णु जी का वाहन होने के कारण तथा बार-बार उनकी महिमा सुनने के कारण तथा कुछ चमत्कार श्री विष्णु जी के देखकर गरूड़ जी की आस्था गुरू जी में कम हो गई, परंतु गुरू द्रोही नहीं हुआ। फिर किसी जन्म में मानव शरीर प्राप्त करेगा, तब परमेश्वर कबीर जी गरूड़ जी की आत्मा को शरण में लेकर मुक्त करेंगे। दीक्षा के पश्चात् गरूड़ जी ने ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी से ज्ञान चर्चा करने का विचार किया। गरूड़ जी चलकर ब्रह्मा जी के पास गए। उनसे ज्ञान चर्चा की।

'''गरूड़ वचन ब्रह्मा के प्रति''

ब्रह्मा कहा तुम कैसे आये। कहो गरूड़ मोहे अर्थाय।।
तब हम कहा सुनों निरंजन पूता। आया तुम्हें जगावन सूता।।
जन्म–मरण एक झंझट भारी। पूर्ण मोक्ष कराओ त्रिपुरारी।।

शब्दार्थ :- परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा लेने के पश्चात् तथा संसार की उत्पत्ति की कथा सुनकर गरूड़ जी को पूर्ण विश्वास हो गया कि जो ज्ञान पुराणों व वेदों में है, वह ज्ञान कबीर जी के ज्ञान से मिलता है तो जो अन्य ज्ञान है, वह गलत नहीं हो सकता। संष्टि की उत्पत्ति का ज्ञान उत्पत्तिकर्ता यानि परमेश्वर के बिना कोई नहीं बता सकता। यह ऋषि नहीं परमेश्वर हैं। यह विचार करके गरूड़ जी श्री ब्रह्मा जी के लोक में गए क्योंकि ब्रह्मा जी को वेदों का ज्ञाता माना जाता है। ब्रह्मा ने गरूड़ से आने का कारण जानना चाहा कि बताओ गरूड़ कैसे आना हुआ? गरूड़ ने कारण बताते हुए कहा कि हे ज्योति निरंजन के पुत्र यानि ब्रह्मा! सुनो मेरे आने का कारण, मैं आप जी को अज्ञान अंधकार में सोए हुए को तत्वज्ञान द्वारा जगाने यानि सतर्क करने आया हूँ। जन्म-मरण का भारी संकट है। आप अपना पूर्ण मोक्ष करवाओ।

''ब्रह्मा वचन''

हमरा कोई नहीं जन्म दाता। केवल एक हमारी माता।।
पिता हमारा निराकर जानी। हम हैं पूर्ण सारंगपाणी।।
हमरा मरण कबहु नहीं होवै। कौन अज्ञान में पक्षि सोवै।।
तबही ब्रह्मा विमान मंगावा। विष्णु, ब्रह्मा को तुरंत बुलावा।।
गए विमान दोनों पासा। पल में आन विराजे पासा।।
इन्द्र कुबेर वरूण बुलाए। तेतिस करोड़ देवता आए।।
आए ऋषि मुनी और नाथा। सिद्ध साधक सब आ जाता।।
ब्रह्मा कहा गरूड़ नीन्द मैं बोलै। कोरी झूठ कुफर बहु तोलै।।
कह कोई और है सिरजनहारा। जन्म–मरण बतावै हमारा।।

ताते मैं यह मजलिस जोड़ी। गरूड़ के मन क्या बातां दौड़ी।।
ऋषि मुनि अनुभव बताता। ब्रह्मा, विष्णु, शिव विधाता।।
निर्गुण सरगुण येही बन जावै। कबहु नहीं मरण मैं आवै।।

शब्दार्थ :- ब्रह्मा ने कहा कि हे गरूड़! हमारा जन्म-मत्यु होता ही नहीं। हमारा कोई माता-पिता नहीं, हमारी केवल एक माता है। हमारा पिता निराकार है। हम पूर्ण परमात्मा हैं। (सारंग माने धनुष, पाणी माने हाथ=हाथ में धनुष रखने वाले को काल लोक के प्राणी परमात्मा कहते हैं।) हे पक्षी गरूड़! तू अज्ञान निद्रा में सोया है। सुन! हमारा जन्म-मरण कभी नहीं होता। उसी समय ब्रह्मा ने विमान मँगवाकर चालक से कहा कि विष्णु और शिव को ले आओ। विमान दोनों को क्षण में लेकर आ गया। इसके साथ-साथ तेतीस करोड़ देवता तथा देवताओं के राजा इन्द्र तथा धन के देवता कुबेर, जल के देवता वरूण भी बुलाए। अठासी हजार ऋषिजन, नौ नाथ, चौरासी सिद्ध सबको बुलाया गया। पूरी सभा लग गई। ब्रह्म ने कहा कि गरूड़ ऐसी बातें कर रहा है जैसे कोई नींद में बड़बड़ाता है। सब झूठ कह रहा है। कह रहा है कि तुम ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव का जन्म-मत्यु होता है। तुमसे अन्य कोई सष्टि की रचना करने वाला परमात्मा है। इसलिए हमने यह सभा बुलाई है कि गरूड़ के मन में ये कैसी बातें आ रही हैं?

ब्रह्मा जी कहते रहे थे कि सब ऋषि व मुनि (साधक) अपना अनुभव बताते हैं कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जगत के उत्पत्तिकर्ता परमात्मा हैं। ये ही निर्गुण तथा सगुण बनकर लीला करते हैं। इनकी कभी मत्यु नहीं होती।

''विष्णु वचन''

पक्षीराज यह क्या मन में आई। पाप लगै बना आलोचक भाई।।
हमसे और कौन बडेरा दाता। हमहै कर्ता और चौथी माता।।
तुमरी मति अज्ञान हरलीनि। हम हैं पूर्ण करतार तीनी।।

शब्दार्थ :- विष्णु ने कहा कि हे पक्षियों के राजा गरूड़! तेरे मन में यह गलत बात कैसे आई कि हमारा जन्म-मरण होता है। आप तो निंदा के पात्र बन गए हैं। हमसे बड़ा कौन परमात्मा है? हम तीनों तथा चौथी माता दुर्गा ही इस संसार के कर्ता हैं। तेरी बुद्धि अज्ञान ने समाप्त कर दी है। हमसे कोई अन्य सष्टि का उत्पत्तिकर्ता बता रहा है। हम तीनों पूर्ण करतार यानि पूर्ण परमात्मा हैं। सष्टि के उत्पत्तिकर्ता हैं।

''महादेव वचन''

कह महादेव पक्षी है भोला। हृदय ज्ञान इन नहीं तोला।।
ब्रह्मा बनावै विष्णु पालै। हम सबका का करते कालै।।
और बता गरूड़ अज्ञानी। ऋषि बतावै तुम नहीं मानी।।
चलो माता से पूछै बाता। निर्णय करो कौन है विधाता।।
सबने कहा सही है बानी। निर्णय करेगी माता रानी।।
सब उठ गए माता पासा। आपन समस्या करी प्रकाशा।।

शब्दार्थ :- महादेव यानि शिव जी ने कहा कि यह पक्षी भोला है। इसने अपने ज्ञान की जाँच किए बिना ही बोल रहा है। ब्रह्मा जीव की उत्पत्ति करता है, विष्णु पालन करता है। मैं सहार करता हूँ। हे अज्ञानी गरूड़! तू बता, अन्य कौन समर्थ प्रभु है? श्री शिव जी ने उपस्थित सभा से कहा कि चलो माता दुर्गा जी से जानते हैं कि पूर्ण परमात्मा कौन है, निर्णय करके बताए। शिव जी की राय का सबने अनुमोदन किया। कहा कि आपकी बातें सही हैं। माता रानी निर्णय करेंगी। सभा में उपस्थित सब उठकर माता देवी जी के पास गए और अपनी समस्या बताई।

''माता वचन''

कहा माता गरूड़ बताओ। और कर्ता है कौन समझाओ।।

शब्दार्थ :- माता देवी ने गरूड़ से ही प्रश्न किया कि तुम ही बताओ कि संसार का विधाता यानि उत्पत्ति करने वाला इनसे भिन्न कौन है?

''गरूड़ वचन''

मात तुम जानत हो सारी। सच्च बता कहे न्याकारी।।
सभा में झूठी बात बनावै। वाका वंश समूला जावै।।
मैं सुना और आँखों देखा। करता अविगत अलग विशेषा।।
जहाँ से जन्म हुआ तुम्हारा। वह है सबका सरजनहारा।।
वेद जाका नित गुण गावैं। केवल वही एक अमर बतावै।।
मरहें ब्रह्मा विष्णु नरेशा। मर हैं सब शंकर शेषा।।
अमरपुरूष सत पुर रहता। अपने मुख सत्य ज्ञान वह कहता।।
वेद कहे वह पृथ्वी पर आवै। भूले जीवन को ज्ञान बतलावै।।
क्या ये झूठे शास्त्र सारे। तुम व्यर्थ बन बैठे सिरजनहारे।।
मान बड़ाई छोड़ो भाई। ताकि भक्ति करे अमरापुर जाई।।
माता कहना साची बाता। बताओ देवी है कौन विधाता।।

शब्दार्थ :- गरूड़ ने कहा, हे माता! आपको सब ज्ञान है। न्यायधीश को चाहिए कि वह सत्य बात कहे। जो न्यायकर्ता सभा में झूठी बात करता है तो यह परमात्मा का विधान है कि उसका वंश नष्ट होता है। गरूड़ ने आगे कहा कि हे माता! जिस परमेश्वर ने आपकी भी उत्पत्ति की है, वह सबका उत्पत्ति करता है। मैंने आँखों देखा और तत्वदर्शी से सुना है। वह कर्ता दिव्य अविगत विशेष है। वह भिन्न है।(अविगत का अर्थ है जिसका भेद गुप्त हो) वेदों में उसी की महिमा अधिक कही है। वेदों में बताया है कि केवल वही एक अविनाशी बताया है। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव की मृत्यु होगी। अविनाशी परमात्मा तो सतलोक (ऋतधामा) में रहता है। वही पृथ्वी पर प्रकट होकर यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान अपने मुख से बोली वाणी में बताता है। अज्ञान के कारण सत्य भक्ति मार्ग से भटके अच्छे साधकों को सत्य मार्ग का ज्ञान कराता है। यह सब वेदों में प्रमाण है। क्या ये सब शास्त्र झूठे हैं? हे तीनों देवताओ! आप फोकट सिरजनहार बने बैठे हो। हे भाई (ब्रह्मा-विष्णु-शिव)! मान-बड़ाई त्यागकर अपने जीव का कल्याण करवाओ। उस पूर्ण परमात्मा की

भक्ति करो। गरूड़ ने माता की ओर अभिमुख होकर प्रार्थना की कि हे माता! सत्य बताओ, कौन है संसार का उत्पत्तिकर्ता?

''माता (दुर्गा) वचन''

माता कह सुनो रे पूता। तुम जोगी तीनों अवधूता।।
भक्ति करी ना मालिक पाए। अपने को तुम अमर बताए।।
वह कर्ता है सबसे न्यारा। हम तुम सबका सिरजनहारा।।
गरूड़ कहत है सच्ची बानी। ऐसे बचन कहा माता रानी।।
सब उठ गए अपने अस्थाना। साच बचन काहु नहीं माना।।

शब्दार्थ :- माता देवी दुर्गा ने ब्रह्मा, विष्णु, शिव से कहा कि हे पुत्रो! सुनो! तुम तीनों स्वयं साधक हो। सत्य भक्ति की नहीं। अपने को अमर बता रहे हो क्योंकि तुम्हें परमात्मा मिला ही नहीं। वह संष्टि का उत्पत्तिकर्ता तो सबसे भिन्न है। उसी ने तुम्हारे और हमारे जीवों की आत्मा की उत्पत्ति की है। माता ने जब यह बात कही तो सभा के सब सदस्य व ब्रह्मा, विष्णु, महेश उठकर अपने-अपने स्थानों पर चले गए, परंतु माता की बात को भी सत्य नहीं माना।

''गरूड़ वचन''

ब्रह्मा विष्णु मोहे बुलाया। महादेव भी वहाँ बैठ पाया।।
तीनों कहे कोई दो प्रमाणा। तब हम तोहे साचा जाना।।
मैं कहा गुंगा गुड़ खावै। दुजे को स्वाद क्या बतलावै।।
मैं जात हूँ सतगुरू पासा। ला प्रमाण करू भ्रम विनाशा।।
त्रिदेव कहें लो परीक्षा हमारी। पूर्ण करें तेरी आशा सारी।।
हमही मारें हमही बचावैं। हम रहत सदा निर्दावैं।।
गरूड़ कहा हम करें परीक्षा। तुम पूर्ण तो लूं तुम्हारी दीक्षा।।
उड़ा वहाँ से गुरू पासे आया। सब वन्तात कह सुनाया।।

शब्दार्थ :- गरूड़ जी को श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी ने अपने पास श्री विष्णु लोक में बुलाया और कहा कि हे गरूड़! तुम कोई प्रमाण दो कि हमसे ऊपर कोई समर्थ शक्ति है, कोई अनुभव बताओ। तब हम आपकी बात को सत्य मानेंगे। गरूड़ जी ने उत्तर दिया कि जैसे गूंगा व्यक्ति गुड़ खाकर अन्य को उसका स्वाद नहीं बता सकता। वह उसका आनंद स्वयं ही महसूस करता है। प्रसन्नचित दिखाई देता है। इसी प्रकार मैं अपने अनुभव को आपसे साझा नहीं कर सकता। मैंने सतगुरू से सत्य आध्यात्मिक ज्ञान सुना है तथा पूर्ण परमात्मा को आँखों देखा है। आपको तो सतगुरू ही परमात्मा के दर्शन करवा सकते हैं। मैं अपने सतगुरू जी के पास जाता हूँ। आपको विश्वास करवाने के लिए कोई प्रमाण लाऊँगा जिससे आपकी शंका का समाधान हो सके। तीनों देवता बोले कि तू हमारी परीक्षा करके देख। हम तेरी सब मनोकामना पूर्ण कर देंगे। हम ही उत्पन्न करते हैं। हम ही पालन करते हैं। हम ही मारते हैं। हम ही मंत्यु से बचाते हैं। हम तीनों पूर्ण स्वतंत्र हैं। हम जो चाहें, वही कर सकते हैं। गरूड़ जी ने कहा कि मैं आपकी परीक्षा

लूँगा। यदि आप पूर्ण परमात्मा साबित हुए तो मैं आपका शिष्य बनूँगा। गरूड़ वहाँ से उड़कर सतगुरू कबीर जी के पास आया। कबीर जी उस समय जोगजीत नाम से प्रकट थे। जोगजीत जी (कबीर जी) को सब वृत्तांत बताया।

''सतगुरू (कबीर) वचन''

गरूड़ सुनो बंग देश को जाओ। बालक मरेगा कहो उसे बचाओ।।
दिन तीन की आयु शेषा। करो जीवित ब्रह्मा विष्णु महेशा।।
फिर हम पास आना भाई। हम बालक को देवैं जिवाई।।
बंग देश में गरूड़ गयो, बालक लिया साथ।
त्रिदेवा से अर्ज करी, जीवन दे बालक करो सुनाथ।।

शब्दार्थ :- कबीर जी ने कहा कि हे गरूड़! आप बंग देश (वर्तमान में बंगलादेश) में जाओ। वहाँ एक बालक की तीन दिन की आयु शेष है। उसकी मृत्यु होगी। उस बालक को लेकर ब्रह्मा, विष्णु, महेश के पास ले जाना। उनसे कहना कि इस बालक को जीवित करो। उनसे जीवित नहीं होगा। फिर मेरे पास बालक को ले आना। मैं जीवित कर दूँगा। गरूड़ जी अपने सतगुरू के आदेशानुसार बंग देश से बालक साथ लेकर तीनों देवताओं के पास गया और अर्ज की कि इस लड़के की आयु वृद्धि करके जीवन दान दो तो मानूँ कि आप समर्थ परमात्मा हो।

''त्रिदेव वचन''

धर्मराज पर है लेखा सारा। बासे जाने सब विचारा।।
गरूड़ और बालक सारे। गए धर्मराज दरबारे।।
धर्मराज से आयु जानी। दिन तीन शेष बखानी।।
याकी आयु बढ़ै नाहीं। मृत्यु अति नियड़े आयी।।
त्रिदेव कहँ आए राखो लाजा। हम क्या मुख दिखावैं धर्मराजा।।
धर्म कह आपन आयु दे भाई। तो बालक की आयु बढ़ जाई।।
चले तीनों नहीं पार बसाई। बने बैठे थे समर्थ राई।।
सुन गरूड़ यह सत्य है भाई। आई मृत्यु न टाली जाई।।

शब्दार्थ :- तीनों देवताओं ने कहा कि धर्मराज के पास सब जीवों की जन्म-मृत्यु का लेखा है। उससे बात करते हैं। गरूड़, बच्चा तथा तीनों देवता धर्मराज (काल ब्रह्म का न्यायधीश) के कार्यालय में गए और बालक की आयु कितनी शेष है, यह पता किया तो तीन दिन की आयु शेष पाई। धर्मराज ने कहा कि इसकी मृत्यु अति निकट है। आयु बढ़ नहीं सकती। तीनों देवताओं ने धर्मराज से कहा कि हे धर्मराज! हम आपके दरबार में आए हैं। हमारी इज्जत रखो। इस बालक की आयु वृद्धि कर दो। इस संसार में कैसे इज्जत पाऐंगे? धर्मराज ने कहा कि आपमें से कोई भी अपनी आयु दो तो आपकी मृत्यु हो जाएगी, बालक की आयु बढ़ जाएगी। गरूड़ ने बताया कि यह बात सुनकर तीनों उठकर चले गए जो स्वयंभू समर्थ बने बैठे थे। तीनों यह कहते हुए चले गए कि हे गरूड़! यह सत्य है कि जिसकी मृत्यु आ जाती है, उसे टाला नहीं जा सकता।

गरूड़ वचन

समर्थ में गुण ऐसा बताया। आयु बढ़ावै और अमर करवाया।।
अब मैं जाऊँ समर्थ पासा। बालक बचने की पूरी आशा।।
गया गरूड़ कबीर की शरणा। दया करो हो साहब जरणा(विश्वास)।।

शब्दार्थ :- गरूड़ ने कहा कि समर्थ में यह शक्ति बताई है कि साधक की आयु वद्धि करता है तथा जन्म-मरण को सदा के लिए समाप्त करके अमर कर देता है। अब मैं समर्थ परमेश्वर के पास जाता हूँ। लड़के की मत्यु टलने की पूरी आश है। यह कहकर गरूड़ जी ने बालक को उसके घर छोड़ा और कबीर परमेश्वर के पास गया और कहा कि हे परमात्मा! बच्चे को जीवित करने की दया करो ताकि जनता को आपके सामर्थ्य पर विश्वास हो सके।

''कबीर साहब वचन''

सुनो गरूड़ एक अमर बानी। यह अमत ले बालक पिलानी।।
जीवै बालक उमर बढ़ जावै। जग बिचरे बालक निर्दावै।।
बालक लाना मेरे पासा। नाम दान कर काल विनाशा।।
जैसा कहा गरूड़ ने कीन्हा। बालक कूं जा अमत दीना।।
ले बालक तुरंत ही आए। सतगुरू से दीक्षा पाए।।
आशीर्वाद दिया सतगुरू स्वामी। दया करि प्रभु अंतर्यामी।।
बदला धर्मराज का लेखा। ब्रह्मा विष्णु शिव आँखों देखा।।
गए फिर धर्मराज दरबारा। लेखा फिर दिखाऊ तुम्हारा।।
धर्मराज जब खाता खोला। अचर्ज देख मुख से बोला।।
परमेश्वर का यह खेल निराला। उसका क्या करत है काला।।
वो समर्थ राखनहारा। वाने लेख बदल दिया सारा।।
सौ वर्ष यह बालक जीवै। भक्ति ज्ञान सुधा रस पीवै।।
यह भी लेख इसी के माहीं। आँखों देखो झूठी नाहीं।।
देखा लेखा तीनों देवा। अचर्ज हुआ कहूँ क्या भेवा।।
बोले ब्रह्मा विष्णु महेशा। परम पुरूष है कोई विशेषा।।
जो चाहे वह मालिक करसी। वाकी शरण फिर कैसे मरसी।।
पक्षीराज तुम साचे पाये। नाहक हम मगज पचाऐ।।
करो तुम जो मान मन तेरा। तुम्हरा गरूड़ भाग बड़ेरा।।
पूर्ण ब्रह्म अविनाशी दाता। सच्च में है कोई और विधाता।।
इतना कह गए अपने धामा। गरूड़ और बालक करि प्रणामा।।
भक्ति करी बालक चित लाई। गरूड़ अरू बालक भये गुरू भाई।।
धर्मदास यह गरूड़ को बोधा। एक—एक वचन कहा मैं सोधा।।

शब्दार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने अपने करमण्डल (लोटे) से कुछ जल गरूड़ को दिया और कहा कि यह अमत जल है। इसे लड़के को पिला दे। इसको पीने से उसकी इच्छा दीक्षा लेने की बनेगी। काल का दबाव हट जाएगा। फिर उस

लड़के को मेरे पास लाकर दीक्षा दिलाना। उसका आने वाला काल (मृत्यु) समाप्त हो जाएगा। सतगुरू के आदेश का पालन गरूड़ ने किया। लड़के को अमृत पिलाया। उससे उसकी प्रबल इच्छा दीक्षा लेने की बनी। गरूड़ बच्चे को सतगुरू जी के पास लाया और दीक्षा दिलाई। परमात्मा ने बालक को आशीर्वाद देकर कृतार्थ किया। उसी समय धर्मराज जी का लेखा बदल गया। इसको तीनों देवताओं ने धर्मराज के दरबार में जाकर अपनी आँखों देखा। धर्मराज ने उसे पढ़कर सुनाया व दिखाया जिसमें लिखा था कि यह मनुष्य शरीरधारी जीव अब सौ वर्ष तक जीवित रहेगा तथा भक्ति भी करेगा। यह पूर्ण परमात्मा की ओर से आयु वृद्धि की गई है। धर्मराज ने पढ़ा तथा ब्रह्मा, विष्णु, शिव ने आँखों देखा। यह देखकर उनको आश्चर्य हुआ कि यह कैसे हुआ? धर्मराज ने भी देखकर आश्यर्च किया और कहा कि परमेश्वर की यह अद्भुत लीला है। उसका काल यानि काल ब्रह्म क्या कर सकता है? काल ब्रह्म द्वारा निर्धारित मृत्यु समय परमेश्वर के आदेश से समाप्त हो जाता है। वह अन्य समर्थ जीव का रक्षक है। उसने मेरी किताब में सब पुराने लेख बदल दिए। यह बच्चा सौ वर्ष तक जीवित रहेगा तथा भक्ति भी करेगा। यह भी इसी में लिखा है। मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ, आप स्वयं देख लो। आँखों देखकर ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी ने कहा कि यह आश्चर्य की बात है। वास्तव में कोई परम पुरूष अन्य है। वह जो चाहे सो कर सकता है। जो उसकी शरण में चला गया, वह कैसे मर सकता है? हे पक्षियों के राजा गरूड़! तुम्हारी बात सत्य पाई। हमने तो व्यर्थ में आपसे वाद-विवाद किया। तुम करो जो तेरे मन माने। हे गरूड़! तुम्हारा भाग्य अच्छा है। इतनी बात कहकर तीनों अपने-अपने धाम को चले गए। गरूड़ तथा लड़के ने उनको तथा धर्मराज को प्रणाम किया।

कबीर जी ने धर्मराज जी को बताया कि इस प्रकार वह लड़का तथा गरूड़ दोनों गुरू भाई बने। हे धर्मदास! यह है गरूड़ को शरण में लेने की कथा यानि गरूड़ बोध।

❖ श्री हनुमान जी के गुरू जी कौन थे? आप जी पढ़ें ''कबीर सागर'' से अध्याय ''हनुमान बोध'' का सारांश :-

अध्याय ''हनुमान बोध'' का सारांश

कबीर सागर के पृष्ठ 113 पर 12वां अध्याय ''हनुमान बोध'' है।

कबीर सागर के इस अध्याय में पवन सुत हनुमान जी को शरण में लेने का प्रकरण है। धर्मदास जी ने प्रश्न किया कि हे परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी! क्या आप अच्छी आत्मा पवन पुत्र हनुमान जी को भी मिले हो।

उत्तर (परमेश्वर कबीर जी का)= हाँ।

प्रश्न (धर्मदास जी का) :- हे प्रभु! क्या उन्होंने भी आपके ज्ञान को स्वीकारा? वे तो मेरे की तरह श्री राम उर्फ विष्णु जी में अटूट श्रद्धा रखते थे। उनको आपकी शरण में लेना तो सूर्य पश्चिम से उदय करने के समान है।

उत्तर (परमेश्वर कबीर जी का) :- परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास को पवन तनय हनुमान जी को शरण में लेने का वृतांत बताया। आप जी पढ़ें सरलार्थकर्ता (रामपाल दास) द्वारा हनुमान जी को कैसे परमेश्वर कबीर जी ने शरण में लिया तथा रामायण का संक्षिप्त वर्णन :-

रामायण ग्रन्थ में प्रकरण आता है कि एक बाली नाम का राजा था। उसका भाई सुग्रीव था। किसी कारण से बाली ने अपने भाई सुग्रीव को अपने राज्य से निकाल दिया। उसकी पत्नी को अपने कब्जे में पत्नी बनाकर रखा। सुग्रीव दूर देश में मायूस भ्रमण कर रहा था। हनुमान जी राम-राम करते हुए एक पहाड़ पर बैठे दिखाई दिए। दोनों की मित्रता हो गई। सुग्रीव ने अपना दुःख हनुमान जी से साझा किया। हनुमान जी ने शरणागत सुग्रीव की सहायता करने का वचन दिया। सुग्रीव ने हनुमान जी को बताया कि बाली में ऐसी सिद्धि है कि कोई उससे युद्ध करता है तो सामने वाले की आधी शक्ति बाली में प्रवेश कर जाती है। यह बात जानकर हनुमान जी भी शान्त रहे। युद्ध करने का इरादा त्याग दिया। उस समय रामचन्द्र पुत्र राजा दशरथ जी को बनवास हुआ था। उनकी पत्नी सीता जी तथा भाई लक्ष्मण भी वन में साथ गए थे। श्रीलंका के राजा रावण की बहन स्वरूपणखां ने लक्ष्मण को देखा तो उससे विवाह करने का प्रस्ताव रखा। लक्ष्मण ने कहा कि मेरा विवाह हो चुका है। (लक्ष्मण की पत्नी का नाम उर्मिला था।) शुर्पणखा ने बार-बार विवाह करने का आग्रह किया तो शेषनाग अवतार लक्ष्मण ने क्रोधवश उसका नाक काट दिया। शुर्पणखा ने अपनी दुर्दशा की दास्तां अपने भाई रावण से सुनाई और पूरा पता बताया। रावण ने प्रतिशोध लेने के लिए राम की पत्नी सीता का अपहरण करने की योजना बनाई। साधु वेश बनाकर अपने मामा मारीच के सहयोग से रावण ने सीता जी का अपहरण कर लिया।

सीता जी की खोज में श्री राम जी तथा श्री लक्ष्मण जी वन-वन भटक रहे थे। उसी समय उनको श्री हनुमान जी तथा श्री सुग्रीव जी मिले। आपस में परिचय हुआ। सुग्रीव ने श्री राम से अपना कष्ट बताया। श्री राम चन्द्र जी ने शर्त रखी कि यदि मैं आपका राज्य आपको दिला दूँ तो आपको सीता की खोज तथा वापसी के लिए मेरा सहयोग करना होगा। बात पक्की हो गई। श्री रामचन्द्र जी ने वृक्ष की ओट लेकर बाली को युद्ध करके मारकर सुग्रीव को राज तिलक कर दिया। सुग्रीव ने अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया। सीता जी की खोज के लिए चारों दिशा में खोजी भेजे गए। जटायु पक्षी ने श्री राम को बताया कि सीता माता को लंकेश्वर रावण उठा ले गया। उससे मैंने माता को छुड़वाने की चेष्टा की तो मेरे पँख काट दिए। रावण से बातचीत करके सीता को लौटाने के लिए श्री राम जी ने हनुमान को राजदूत बनाया। श्री रामचन्द्र जी ने श्री हनुमान जी को सीता को विश्वास दिलाने के लिए अपनी अँगूठी दी जिस पर श्री राम लिखा था। सीता उस अँगूठी से हनुमान पर विश्वास कर सकती थी कि जो मुझसे मिलने आया है, वह श्री राम का भेजा हुआ है। हनुमान जी श्री राम की मुंद्री लेकर आकाश मार्ग से उड़कर

श्रीलंका में गए। रावण का एक नौ लखा बाग था। उसमें सीता जी को रावण राक्षस ने कैद कर रखा था। हनुमान जी ने सीता माता को अँगूठी देकर अपना विश्वास दिलाया। सीता जी ने अपना सर्व कष्ट जो राक्षस रावण दे रहा था, हनुमान जी को बताया। सीता जी ने अपना कंगन (सुहाग का कड़ा) हाथ से निकालकर हनुमान जी को दिया। कहा कि भाई! आप यह कंगन श्री राम जी को दिखाओगे, तब उनको विश्वास होगा कि तुम सीता की खोज करके आए हो। हनुमान जी के साथ सीता जी ने आने से इंकार कर दिया कि मैं तेरे साथ नहीं चलूँगी। हनुमान जी ने फल खाने की इच्छा व्यक्त की तो सीता ने कहा, भाई! कोई फल झड़कर गिरा हो, वह फल खा सकते हो। फल तोड़कर खाने का मुझे भी आदेश नहीं है। इस बात से क्षुब्ध होकर हनुमान जी ने पहले तो पेड़ को गिराया। फिर पके हुए फल खाये। फिर उस वृक्ष को समुद्र में फैंक दिया। ऐसे हनुमान जी ने रावण का नौ लखा बाग उजाड़कर वृक्ष समुद्र में फैंक दिए। लंका के राजा रावण ने हनुमान की पूँछ पर कपड़े-रूई बाँधकर आग लगा दी थी। हनुमान ने अपनी दुम की अग्नि से रावण की लंका को आग के हवाले कर दिया।

इसके पश्चात् आकाश मार्ग से उड़कर समुद्र पार करके एक पहाड़ी पर उतरे। सुबह का समय था। पहाड़ पर जलाशय पवित्र जल से भरा था। पास ही बाग था जिसमें फलदार वृक्ष थे। हनुमान जी को भूख लगी थी। स्नान करने का विचार किया। कंगन को एक पत्थर पर रख दिया। स्नान करते समय भी हनुमान की एक आँख कंगन पर लगी थी। लंगूर बंदर आया। उसने कंगन उठाया और चल पड़ा। हनुमान जी को चिंता बनी कि कहीं बंदर इस कंगन को समुद्र में न फैंक दे, मेर परिश्रम पर पानी न फिर जाए। अब लंका में जाने का रास्ता भी बंद हो गया है। अजीब परेशानी में हनुमान बंदर के पीछे-पीछे चला। देखते-देखते बंदर ने वह कंगन एक ऋषि की कुटिया के बाहर रखे एक घड़े में डाल दिया और आगे दौड़ गया। हनुमान जी ने राहत की श्वांस ली।

कलश में झांककर कंगन निकालना चाहा तो देखा घड़े में एक जैसे अनेकों कंगन थे। हनुमान जी को फिर समस्या हुई। कंगन उठा-उठाकर देखे, कोई अंतर नहीं पाया। अपना कंगन कौन-सा है? कहीं मैं गलत कंगन ले जाऊँ और श्री राम कहे, यह कंगन सीता का नहीं है, मेरा प्रयत्न व्यर्थ हो जाएगा। सामने एक ऋषि हनुमान जी की परेशानी को देखकर मुस्करा रहा था। कुटिया के बाहर बैठा था। ऋषि जी बोले, आओ पवन पुत्र! किस समस्या में हो? हनुमान जी ने कहा कि ऋषि जी! श्री रामचन्द्र जी की पत्नी को लंका का राजा रावण अपहरण करके ले गया है। मैं पता करके आया हूँ। ऋषि जी ने कहा कि कौन-से नम्बर वाले रामचन्द्र की बात कर रहे हो? हनुमान जी को आश्चर्य हुआ कि ऋषि अपने होश-हवास में है या भाँग पी रखी है? हनुमान जी ने पूछा, हे ऋषि जी! क्या राम कई हैं? ऋषि जी ने कहा, हाँ, कई हो चुके हैं और आगे भी जन्मते-मरते रहेंगे। हनुमान जी को ऋषि का व्यवहार उचित नहीं लगा, परंतु ऋषि जी से विवाद करना भी हित में

नहीं जाना। ऋषि जी ने पूछा, आप फल खाओ। खाना बनाता हूँ, भोजन खाओ। थके हो, विश्राम करो।

हनुमान जी ने कहा, ऋषि जी! मेरी तो चैन-अमन ही समाप्त हो गई है। मेरे को सीता माता ने कंगन दिया था। उस कंगन के बिना श्री रामचन्द्र जी को विश्वास नहीं होना कि सीता की खोज हो चुकी है। उस कंगन को पत्थर पर रखकर मैं स्नान कर रहा था। बंदर ने उठाकर घड़े में डाल दिया। मेरी पहचान में नहीं आ रहा कि वास्तविक कंगन कौन-सा है। मेरे को तो सब एक जैसे लग रहे हैं।

ऋषि रूप में बैठे परमेश्वर कबीर जी ने कहा, हे पवन के लाडले! आप कोई एक कंगन उठा ले जाओ, कोई अंतर नहीं है और कहा कि जितने कंगन इसमें पड़े हैं। इतनी बार श्री राम पुत्र दशरथ को बनवास तथा सीता हरण और हनुमान द्वारा खोज हो चुकी है। हनुमान जी ने कहा, ऋषि जी! यह बताओ, आपकी बात मानता हूँ। पूछता हूँ कि प्रत्येक बार सीता हरण, हनुमान का खोज करके कंगन लाना और बंदर द्वारा घड़े में डालना होता है तो कंगन तो यहाँ रह गया, हनुमान लेकर क्या जाता है? ऋषि मुनीन्द्र जी ने कहा कि मैंने इस घड़े को आशीर्वाद दे रखा है कि जो वस्तु इसमें गिरे, वह दो एक समान हो जाऐं। यह कहकर ऋषि जी ने एक मिट्टी का कटोरा घड़े में डाला तो एक और कटोरा वैसा ही बन गया। ऋषि मुनीन्द्र जी ने कहा, हे हनुमान! आप एक कंगन ले जाओ, कोई परेशानी नहीं होगी। हनुमान जी के पास कोई अन्य विकल्प नहीं बचा था। उस घड़े से एक कंगन निकालकर उड़ चले।

श्री रामचन्द्र जी को हनुमान जी ने सीता जी की निशानी कंगन दिया तथा जो-जो बातें माता सीता ने कही थी, वे सब बताई। श्री रामचन्द्र जी कंगन देखकर भावुक हो गए। हनुमान जी को सीने से लगाया। कहा, हे संतजन! मैं आपका अहसान कैसे चुका पाऊँगा? आपने अपना जीवन जोखिम में डालकर मेरा महा कठिन कार्य किया है। यह कंगन सीता का ही है। अब सभा बुलाता हूँ। आगे का कार्यक्रम तैयार करते हैं। समुद्र पर पुल बनाने का विचार किया गया। नल-नील के हाथों में ऋषि मुनीन्द्र के आशीर्वाद से शक्ति थी कि वे अपने हाथों से जल में कोई वस्तु डाल देते तो वह डूबती नहीं थी। पत्थर, कांसी के बर्तन आदि जो भी वस्तु वे डालते, वह जल पर तैरती थी। उस समय नल-नील ने अभिमान करके अपनी महिमा की इच्छा से अपने गुरू ऋषि मुनीन्द्र का नाम नहीं लिया। जिस कारण से उनकी वह शक्ति समाप्त हो गई। रामचन्द्र जी तथा सर्व उपस्थित योद्धा हनुमान सहित महादुःखी हुए। तीन दिन तक श्री राम घुटनों पानी में खड़ा रहा। रास्ता देने की प्रार्थना करता रहा, परंतु समुद्र टस से मस नहीं हुआ। तब श्री राम ने लक्ष्मण से कहा कि मेरा अग्नि बाण निकाल, समुद्र को फूँक देता हूँ। लातों के भूत बातों से नहीं मानते। उसी समय समुद्र विप्र रूप धारकर श्री राम के सामने करबद्ध होकर खड़ा हो गया तथा कहा कि भगवन! मेरे अंदर संसार बसा है। आप

पाप के भागी मत बनो। आप ऐसा करो कि सर्प भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

आपकी सेना में नल-नील नाम के दो सैनिक हैं। उनको उनके गुरू जी का आशीर्वाद है। उनके हाथों से पत्थर भी मेरे ऊपर तैर सकते हैं। तब नल-नील से पत्थर डालकर दिखाने को कहा तो नल-नील ने अपनी महिमा चाही और गुरू को याद नहीं किया। जिस कारण से ऋषि मुनीन्द्र जी ने उनकी शक्ति छीन ली, पत्थर डूब गए। समुद्र ने उनकी गलती बताई। तब नल-नील जी ने अपने गुरू जी को याद किया।

श्री रामचन्द्र जी को भी महसूस हुआ कि जब गुरू अपने शिष्यों को शक्ति दे सकता है तो मेरे कार्य को भी कर सकते हैं। श्री रामचन्द्र जी विष्णु जी के अवतार थे। श्री विष्णु काल निरंजन के पुत्र हैं। जिस समय परमेश्वर कबीर जी प्रथम बार काल के लोक में आए थे तो ज्योति निरंजन ने पहले तो परमेश्वर के साथ झगड़ा किया था, जब वश नहीं चला तो चरणों में गिरकर क्षमा याचना की और कुछ आशीर्वाद भी लिए। उनमें से एक यह भी था कि मेरा अंश विष्णु त्रेतायुग में रामचन्द्र नाम से राजा दशरथ के घर जन्म लेगा, उसको बनवास होगा। उसके साथ उसकी पत्नी सीता भी होगी। उसे एक राक्षस लंका नगरी में उठाकर ले जाएगा। तब रामचन्द्र समुद्र के ऊपर पुल बनाना चाहेगा, वह नहीं बना पाएगा। आप वह पुल बनवाना। दूसरा आशीर्वाद लिया था कि द्वापर युग में वही कृष्ण रूप में जन्मेगा। मृत्यु उपरांत वह जगन्नाथ नाम से पुरी नगर में समुद्र के किनारे मन्दिर बनवाएगा। समुद्र उसको बनने नहीं देगा। आप उस मंदिर की समुद्र से रक्षा करना। परमेश्वर कबीर जी ने कहा था कि मैं वह कार्य करूँगा। उसी वचन का पालन करने के लिए ऋषि मुनीन्द्र रूप में परमेश्वर कबीर जी सेतुबन्द पर प्रकट हो गए और आते-आते पर्वत के चारों ओर अपनी सोटी (डण्डी) से रेखा अंकित कर आए।

नल-नील ने दूर से अपने गुरू जी को पहचान लिया और कहा, हमारे गुरू जी आ गए हैं। श्री रामचन्द्र जी ने अपनी समस्या बताई तथा विनम्र भाव से अपने कार्य की सिद्धि के लिए आशीर्वाद माँगा। परमेश्वर ने कहा, नल-नील ने गलती की। जिस कारण से इनकी शक्ति क्षीण हो गई है। मैंने सामने वाले पर्वत के चारों ओर रेखा लगाई है। उसके अंदर-अंदर के पत्थर लकड़ी से भी हल्के कर दिए हैं, वे डूबेंगे नहीं। हनुमान जी राम भक्त थे। उन्होंने उन पत्थरों पर राम-राम लिखा और उठाकर चले और रखा तो पत्थर डूबे नहीं। नल-नील शिल्पकार यानि निपुण राज-मिस्त्री भी थे। जिस कारण से नल तथा नील ने पत्थरों को तरासकर एक-दूसरे में फँसाकर जोड़ा था। पहले श्री राम से पत्थर तिरे नहीं, नल-नील भी असफल हुए। हनुमान खड़ा-खड़ा राम-राम ही कर रहा था। चाहता भी था कि पत्थर तैरें, परंतु सब व्यर्थ हुआ। ऋषि मुनीन्द्र जी (कबीर जी) ने पत्थर हल्के किए थे। जिस कारण से पत्थर समुद्र में डूबे नहीं थे। हनुमान जी तो अपना राम-राम का पाठ करने के लिए श्रद्धा से राम-राम पत्थरों पर लिख रहे थे। वे तो जहाँ भी

बैठते थे, वहीं पेड़-पौधों पर राम-राम लिखते रहते थे। हनुमान जी तो श्री रामचन्द्र जी पुत्र दशरथ को जानते भी नहीं थे। उससे पहले भी राम-राम का जाप किया करते थे। जैसा कि लोकवेद (दन्त कथा) सुनते आए हैं कि नल-नील ने पत्थर तैराए थे, तब पुल बना। कोई कहता था कि हनुमान जी ने पत्थरों पर राम-राम लिखा। जिस कारण से पत्थर तैरे थे। यह भी सुनते थे कि श्री राम ने पत्थर तैराए थे। कारण यह रहा है कि जो बातें पत्थर तैराने की हुई थी और मुनीन्द्र ऋषि जी ने कहा था कि मैंने पर्वत का पत्थर हल्का कर दिया है। यह वार्ता 20-30 व्यक्तियों के समक्ष हुई थी। शेष करोड़ों व्यक्ति युद्ध के लिए आए थे, वे तो आज्ञा मिलते ही पत्थर लाने लगे। उन्होंने देखा कि हनुमान जी राम-राम लिख रहे थे। अन्य उन पत्थरों को उठा-उठाकर ला रहे थे। आगे नल-नील पत्थरों से पुल बना रहे थे। श्री रामचन्द्र जी नल-नील को शाबाशी दे रहे थे। अन्य उपस्थित व्यक्तियों ने एक-दूसरे को बताया कि हनुमान जी ने पत्थरों के ऊपर राम-राम लिख दिया। जिस कारण से पत्थर जल पर तैर रहे हैं। कुछ को लगा कि नल-नील के हाथों में करामात है। जिस कारण से पत्थर तैर रहे हैं। इस प्रकार यह गलतफहमी यानि भ्रमणा फैल गई। पुल बनाकर युद्ध में लग गए। अधिकतर मर गए, कुछ बचे वे अपने-अपने घर चले गए। उन्होंने अपने-अपने नगर-गाँव में यह गलत सूचना फैला दी जो आज तक निर्विवाद चल रही है। सच्चाई यह है जो इस दास (रामपाल दास) ने बताई है। युद्ध हुआ। श्री राम की सेना पर नाग फांस शस्त्र छोड़ा गया। जिस कारण से श्री राम, हनुमान, जाम्बवंत, सुग्रीव, अंगद सहित सर्व सेना नागों (सर्पों) द्वारा बाँध दी गई। सर्प लिपट गए। हाथों को भी शरीर के साथ जकड़ दिया। जैसे ईखों को किसान बाँध देता है, ऐसे निष्क्रिय हो गए। तब गरूड़ को बुलाया गया। गरूड़ ने सर्व नाग काटे। तब सर्व सेना तथा श्री राम बँधन मुक्त हुए।

लक्ष्मण को तीर लगने से मूर्छा आ गई थी।(कोमा में चला गया था।) तब हनुमान जी लंका से वैद्य को उठाकर लाए। वैद्य ने कहा कि द्रोणागिरी पर्वत पर संजीवनी बूटी है। उसकी पहचान है कि वह रात्रि में जुगनू की तरह जगती है। सूर्योदय से पहले वह जड़ी लाई जाए तो लक्ष्मण जीवित हो सकता है, देर हो गई तो मत्यु निश्चित है। हनुमान जी को यह कार्य श्री राम जी ने सौंपा कि बजरंग बली! तेरे बिना यह कार्य सम्भव नहीं है। आज्ञा मिलते ही हनुमान जी आकाश मार्ग से उड़ चले। द्रोणागिरी पर राक्षसों ने अपनी माया से सब अन्य नकली जड़ी-बूटियों में भी चमक भर दी। वैद्य ने बताया था कि वे बहुत कम सँख्या में होती हैं। दिन में उनकी पहचान नहीं हो सकती क्योंकि उसके आसपास वैसी ही औषधि के पौधे उगते हैं। हनुमान जी को समझते देर नहीं लगी। उन्होंने द्रोणागिरी पर्वत को ही उठा लिया और आकाश मार्ग से चल पड़े। हनुमान जी ने लक्ष्मण और श्री राम द्वारा अपने भाई भरत के विषय में बताई शक्ति खटक रही थी। वे कहते थे कि यदि आज भरत होते तो अकेले रावण को तथा इसके लाख पुत्रों तथा सवा लाख नातियों (पोतों) को यमलोक भेज देते। हनुमान जी के मन में आया कि चलते-चलते भरत

की परीक्षा लेकर चलता हूँ। भरत को पता था कि रावण तथा राम युद्ध चल रहा है। आकाश मार्ग से पर्वत सहित हनुमान जी को जाते देख विचार किया कि कोई राक्षस जा रहा है। वह तो बहुत हानि कर सकता है। भरत जी ने तीर चलाया। हनुमान जी ने तीर लगने का बहाना करके हे राम-हे राम करते हुए धरती पर गिर गए। पर्वत को भी धरती के ऊपर रख दिया।

राम शब्द सुनकर भरत को समझते देर नहीं लगी कि यह तो कोई अपने पक्ष का है। निकट जाकर पूछा, आप कौन हो? कहाँ जा रहे हो? पर्वत किसलिए उठाया है? मेरा नाम भरत है। मैं श्री राम व लक्ष्मण का भाई हूँ। हनुमान जी ने बताया कि मेरा नाम हनुमान है। राम-रावण का युद्ध चल रहा है। आपके भाई लक्ष्मण को तीर लगने से मूर्छा आई है। वैद्य ने द्रोणागिरी पर उपचार की औषधि बताई है। मेरी पहचान में नहीं आई, इसलिए पर्वत ही ले जा रहा हूँ। सूर्य उदय होने से पहले पहुँचना है। अन्यथा लक्ष्मण की मत्यु हो जाएगी। आपने बिना सोचे-समझे तीर मार दिया, अब मैं कैसे समय पर पहुँच पाऊँगा? सूर्योदय के पश्चात् लक्ष्मण संसार में नहीं रहेगा। भरत ने तीर मारने का कारण बताया तथा कहा, हे अंजनी के लाल! चिंता न करो। आप द्रोणागिरी को उठाओ और बाण के अग्र भाग पर बैठो। अपने दोनों पैर आगे-पीछे करके खड़े हो जाओ। मैं तीर द्वारा आपको पर्वत सहित आपसे भी पहले लंका में भेज दूँगा।

हनुमान जी को अपनी शक्ति पर अत्यधिक गर्व था। जमीन पर रखे तीर पर दोनों पैर जँचाकर पर्वत को हाथ पर उठाकर हनुमान जी खड़े हो गए। भरत जी ने तीर को हनुमान जी तथा पर्वत सहित धरती से उठाकर धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ाने के लिए अपनी छाती के बराबर लाकर छोड़ने लगे तो हनुमान जी को आश्चर्य हुआ कि मेरे तथा द्रोणागिरी के भार को ऐसे उठा लिया जैसे केवल तीर को ही उठाया है। हनुमान जी ने कहा, हे दशरथ के लाल! मैं तो आपकी परीक्षा ले रहा था। मैं स्वस्थ हूँ। मैं स्वयं उड़कर समय से पहले पहुँच जाऊँगा। आपकी प्रशंसा आपके दोनों भाई किया करते थे। यदि भरत होता तो अकेला ही रावण तथा रावण की सेना के लिए पर्याप्त था। मेरे को उनकी बातों पर विश्वास नहीं हो पा रहा था। आज अपनी आँखों देख रहा हूँ। आप वास्तव में शूरवीर तथा बलवान हो। आपने मेरा भी अभिमान चकनाचूर कर दिया। यह कहकर हनुमान जी उस तीर से ही छलाँग लगाकर उड़ गए। उस समय तीर टस से मस नहीं हुआ।

विचार करने की बात है। यदि कोई भार उठाता है तो दोनों हाथों से या एक हाथ से पकड़कर उठा लेता है, परंतु उसी भार को किसी डण्डे से उठाना चाहे तो कदापि नहीं उठा सकता। थोड़े भार को ही डण्डे से उठा सकता है। भरत जी ने महाबली हनुमान जी तथा द्रोणागिरी को धरती से 50 फुट ऊपर उठा दिया। त्रेतायुग में मनुष्य की ऊँचाई लगभग 70 या 80 फुट होती थी। यह कोई सामान्य बात नहीं है। कोई किसी व्यक्ति को डण्डे से उठाकर देखे, कैसा महसूस होगा? लक्ष्मण को वैद्य ने संजीवनी औषधि पिलाकर स्वस्थ किया। युद्ध हुआ, रावण मारा

गया। रावण ने प्रभु शिव की भक्ति की थी। अपने दस बार शीश काटकर शिव जी को भेंट किए थे। दस बार शिव जी ने उसको वापिस कर दिए तथा आशीर्वाद दिया कि तेरी मृत्यु दस बार गर्दन काटने के पश्चात् होगी। रावण के दस बार सिर काटे गए थे। फिर नाभि में तीर लगने से नाभि अमृत नष्ट होने से रावण का वध हुआ था। दस बार सिर कटे, दस बार वापिस सिर धड़ पर लग गए। फिर विभीषण के बताने पर कि रावण की नाभि में अमृत है, रामचन्द्र ने रावण की नाभि में तीर मारने की पूरी कोशिश कर ली थी, परंतु रावण का ध्यान भी वहीं केन्द्रित था कि नाभि पर तीर न लगे। रामचन्द्र जी ने परमेश्वर को याद किया कि इस राक्षस को मारो, मेरी सहायता करो। हे महादेव! हे देवों के देव! हे महाप्रभु! मेरी सहायता करो। आपकी बेटी (सीता) महाकष्ट में है। आपके बच्चे तेतीस करोड़ देवता भी इसी राक्षस ने जेल में डाल रखे हैं। परमेश्वर कबीर जी ने उसी समय गुप्त रूप में रामचन्द्र के हाथों पर अपने सूक्ष्म हाथ रखे और तीर रावण की नाभि में मारा। तब रावण मरा।

{परमेश्वर कबीर जी की प्राप्ति के पश्चात् संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, हरियाणा प्रान्त) ने परमेश्वर कबीर जी की महिमा बताई है। कबीर जी ने बताया है कि :-

कबीर, कह मेरे हंस को, दुःख ना दीजे कोय।
संत दुःखाए मैं दुःखी, मेरा आपा भी दुःखी होय।।
पहुँचुँगा छन एक मैं, जन अपने के हेत।
तेतीस कोटि की बंध छुटाई, रावण मारा खेत।।
जो मेरे संत को दुःखी करैं, वाका खोऊँ वंश।
हिरणाकुश उदर विदारिया, मैं ही मारा कंस।।
राम—कृष्ण कबीर के शहजादे, भक्ति हेत भये प्यादे।।}

शब्दार्थ :- संत गरीबदास जी ने बताया है कि श्री रामचन्द्र जी व श्री कृष्ण जी की सहायता उनके शुभ कर्मों के परिणामस्वरूप कबीर जी ने की थी क्योंकि श्री राम तथा श्री कृष्ण जी भी तो उसी सम्राट कबीर के शहजाहे यानि राजकुमार हैं अर्थात् परमात्मा कबीर जी के सब जीव हैं और राम-कृष्ण यानि विष्णु तो अच्छी आत्मा हैं। उनकी भी रक्षा वही परमेश्वर कबीर जी करते हैं। वे जनता को सावधान करते हैं कि मेरे साधक को कोई कष्ट न देना। भक्त के कष्ट से मैं दुःखी होता हूँ। मैं अपने भक्त की रक्षा करने के लिए एक क्षण यानि सैकिण्ड में पहुँच जाऊँगा। इसी कारण जब श्री रामचन्द्र से रावण नहीं मर रहा था तो गुप्त रूप में मैंने राम का हाथ पकड़कर रावण की नाभि में तीर मारा था जिससे रावण की मृत्यु हुई। राम की सेना को बल दिया, हौंसला दिया। इसी प्रकार कृष्ण की सहायता करके कंस को मैंने ही मारा था। जो मेरे भक्तों को सताएगा, उसका कुल नाश कर दूँगा यानि उसके खानदान को समाप्त कर दूँगा।

लंका का राज्य रावण के छोटे भ्राता विभीषण को दिया। सीता की अग्नि

परीक्षा श्री राम ने ली। यदि रावण ने सीता मिलन किया है तो अग्नि में जलकर मर जाएगी। यदि सीता पाक साफ है तो अग्नि में नहीं जलेगी। सीता जी अग्नि में नहीं जली। उपस्थित लाखों व्यक्तियों ने सीता माता की जय बुलाई। सीता सती की पदवी पाई। रावण का वध आसौज मास की शुक्ल पक्ष की दसवीं को हुआ था।

रावण वध के 20 दिन बाद 14 वर्ष की वनवास अवधि पूरी करके श्रीराम, लक्ष्मण और सीता पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या नगरी में आए। उस दिन कार्तिक मास की अमावस्या थी। उस काली अमावस्या को गाय के घी के दीप अपने-अपने घरों के अंदर तथा ऊपर मण्डेरों पर जलाकर श्रीराम, सीता तथा लक्ष्मण के आगमन की खुशी मनाई। भरत ने अपने भाई श्री रामचन्द्र जी को राज्य लौटा दिया। एक दिन श्री रामचन्द्र जी से सीता ने कहा कि मैं युद्ध में लड़ने वाले योद्धाओं को कुछ इनाम देना चाहती हूँ। इनाम में सीता जी ने हनुमान जी को अपने गले से सच्चे मोतियों की माला निकालकर दे दी तथा कहा, हे हनुमान! यह अनमोल उपहार मैं आपको दे रही हूँ, बहुत सम्भाल कर रखना। हनुमान जी ने उस माला का मोती तोड़ा, फिर फोड़ा। फिर दूसरा, देखते-देखते सब मोती फोड़कर जमीन पर फैंक दिए। सीता जी को हनुमान जी का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा। क्रोध में भरकर कहने लगी कि हे मूर्ख! यह क्या कर दिया? ऐसी अनमोल माला का सर्वनाश कर दिया। तू वानर का वानर ही रहा। चला जा मेरी आँखों के सामने से। उस समय श्री रामचन्द्र जी भी सीता जी के साथ ही सिंहासन पर विराजमान थे। उन्होंने भी हनुमान के इस व्यवहार को अच्छा नहीं माना और चुप रहे। हनुमान जी ने कहा, माता जी! जिस वस्तु में राम-नाम अंकित नहीं है, वह मेरे किसी काम की नहीं है। मैंने मोती फोड़कर देखे हैं, इनमें राम-नाम नहीं निकला। इसलिए मेरे काम की नहीं है। सीता जी ने कहा, क्या तेरे शरीर में राम-नाम लिखा है? फिर इस शरीर को किसलिए साथ लिए है, इसको फैंक दे फाड़कर। उसी समय हनुमान जी ने अपना सीना चाक (चीर) कर दिखाया। उसमें राम-राम लिखा था। हनुमान जी उसी समय अयोध्या त्यागकर वहाँ से कहीं दूर चले गए।

श्री रामचन्द्र जी अपनी अयोध्या नगरी की जनता के दुःख दर्द जानने के लिए गुप्त रूप से रात्रि के समय वेश बदलकर घूमा करते थे। कुछ वर्ष उपरांत जब राजा रामचन्द्र जी रात्रि में अयोध्या की गलियों में विचरण कर रहे थे। एक घर से ऊँची-ऊँची आवाज आ रही थी। राजा रामचन्द्र जी ने निकट जाकर वार्ता सुनी। एक धोबी की पत्नी झगड़ा करके घर से चली गई थी। वह दो-तीन दिन अपने बहन के घर रही, फिर लौट आई। धोबी उसकी पिटाई कर रहा था। कह रहा था कि निकल जा मेरे घर से, तू दो रात बाहर रहकर आई है। मैं तेरे को घर में नहीं रखूँगा। तू कलंकित है। वह कह रही थी, मुझे सौगंध भगवान की। सौगंध है राजा राम की, मैं पाक साफ हूँ। आपने मारा तो मैं गुस्से से अपनी बहन के घर गई थी, मैं निर्दोष हूँ। धोबी ने कहा कि मैं दशरथ पुत्र रामचन्द्र नहीं हूँ जो अपनी कलंकित

पत्नी को घर ले आया है जो वर्षों रावण के साथ रही थी। अयोध्या नगरी के सब लोग-लुगाई चर्चा कर रहे हैं। क्या जीना है ऐसे व्यक्ति का जिसकी पत्नी अपवित्र हो गई हो। राजा राम ने धोबी के मुख से यह बात सुनी तो कानों में मानो गर्म तेल डाल दिया हो।

अगले दिन रामचन्द्र जी ने सभा बुलाई तथा नगरी में चल रही चर्चा के विषय में बताया और कहा कि यह चर्चा तब बंद हो सकती है, जब मैं सीता को घर से निकाल दूँगा। उसी समय सीता जी को सभा में बुलाया गया तथा घर से निकलने का आदेश दे दिया। कारण भी बता दिया। सीता जी ने विनय भी की कि हे स्वामी! आपने मेरी अग्नि परीक्षा भी ली थी। मैं भी आत्मा से कहती हूँ, रावण ने मेरे साथ मिलन नहीं किया। कारण था कि उसको एक ऋषि का शॉप था कि यदि तू किसी परस्त्री से बलात्कार करेगा तो तेरी उसी समय मत्यु हो जाएगी। यदि परस्त्री की सहमति से मिलन करेगा तो ऐसा नहीं होगा। जिस कारण से रावण मुझे छू भी नहीं सका मिलन के लिए। हे प्रभु! मैं गर्भवती हूँ। ऐसी स्थिति में कहाँ जाऊँगी? रावण जैसे व्यक्तियों का अभाव नहीं है। रामचन्द्र जी आदेश देकर सभा छोड़कर चले गए। कहते गए कि मैं निंदा का पात्र नहीं बनना चाहता। मेरे कुल को दाग लगेगा। सीता जी को धरती भी पैरों से खिसकती नजर आई। आसमान में अँधेरा छाया दिखाई दिया। संसार में कुछ दिनों का जीवन शेष लगा।

सीता अयोध्या छोड़कर चल पड़ी। मुड़-मुड़कर अपने राम को तथा उसके महलों को देखने की कोशिश करती रही और दूर जंगल में जाकर ऋषि वाल्मीकि जी की कुटिया के निकट थककर गिर गई, अचेत हो गई। ऋषि वाल्मीकि स्नान करने के लिए आश्रम से निकले। सामने एक युवती गर्भावस्था में अचेत पड़ी देखकर निकट गए। अपने आश्रम से औषधि लाए। सीता जी के मुख में डाली। गर्मी का मौसम था। ठण्डे जल के छींटे मुख पर मारे। उसी समय सीता जी सचेत होकर बैठ गई। ऋषि ने नाम और गाँव पूछा तो बताया कि नीचे पथ्वी, ऊपर आसमान, आगे कुछ बताने से इंकार कर दिया। ऋषि दयावान होते हैं। कहा, बेटी संसार तो स्वार्थ का है। धन्यवाद कर परमात्मा का, तू मेरे आश्रम में आ गई। बेटी मुझे अपना पिता मान और मेरे पास रह। सीता जी ऋषि वाल्मीकि जी के आश्रम में रहने लगी। ऋषि ने भी बात आगे नहीं बढ़ाई। परमेश्वर कबीर जी जो त्रेतायुग में ऋषि मुनीन्द्र जी के रूप में लीला करने आए थे। हनुमान जी से मिले। सत साहेब बोला। हनुमान जी ने राम-राम कहा तथा खड़ा होकर ऋषि जी का सत्कार किया तथा एक पत्थर पर स्वयं बैठ गए, दूसरे पर ऋषि को बैठने के लिए आग्रह किया। दोनों ने स्थान ग्रहण कर लिया। हनुमान जी ऋषि जी को पहचानने की कोशिश करने लगे। ऋषि जी ने कहा, क्या सोच रहे हो हनुमान? मैं वही ऋषि हूँ, मेरे आश्रम में वानर ने सीता जी का कंगन घड़े में डाला था। उसमें अन्य कंगन भी वैसे ही थे। हे हनुमान! वह कंगन कैसा रहा? हनुमान जी को पहचानते देर नहीं लगी और ऋषि जी को प्रणाम फिर किया। हे ऋषि जी! आपका कैसे आना हुआ?

परमेश्वर कबीर जी (मुनीन्द्र ऋषि रूप में) ने कहा, हे पवन पुत्र! मैं आपको भक्ति ज्ञान कराने आया हूँ। आप जिस दशरथ पुत्र रामचन्द्र की पूजा पूर्ण परमात्मा मानकर कर रहे हो। आप धोखे में हो। जो जन्मता-मरता है, वह पूर्ण परमात्मा नहीं हो सकता। पूर्ण परमात्मा तो अविनाशी है। हनुमान जी ने कहा, हे ऋषिवर! मैं आपके वचनों से आहत होता हूँ। मेरी भावनाओं को चोट लगती है। आप अन्य विषय पर चर्चा करें। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि यदि कोई व्यक्ति गलत रास्ते जा रहा हो, वह उस रास्ते को ठीक मानकर चल रहा हो जो डाकुओं के डेरे में जा रहा है। यदि कोई सज्जन पुरूष उसको बताए कि जिस रास्ते पर आप जा रहे हो, आपकी जान तथा माल को खतरा है, आगे डाकुओं का डेरा है। पहले मारते हैं, फिर लूटते हैं। यदि वह व्यक्ति कहे कि आप मेरी भावनाओं को चोटिल कर रहे हो, यह कितना सत्य है? हनुमान जी चुप रहे, परंतु मुस्कराए मानो कह रहे हों, आप सत्य कहते हो। हनुमान जी के चेहरे पर शान्ति का चिन्ह देखकर परमेश्वर ने बताया कि श्री रामचन्द्र जी, श्री विष्णु जी के अवतार हैं। श्री विष्णु जी, श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी का पिता काल ब्रह्म है। इसी को ज्योति निरंजन भी कहते हैं। काल को इसकी गलती के कारण शॉप लगा है कि एक लाख मानव शरीरधारी प्राणियों को प्रतिदिन खाया करेगा। सवा लाख प्रतिदिन उत्पन्न किया करेगा। जिस कारण से उसने अपने तीनों पुत्रों को एक-एक विभाग का स्वामी बना रखा है। श्री ब्रह्मा जी रजगुण हैं जिसके प्रभाव से सर्व प्राणी प्रेरित होकर संतान उत्पत्ति करते हैं। जिस कारण से ब्रह्मा को भूल से उत्पत्तिकर्ता मान रखा है। उत्पत्तिकर्ता तो पूर्ण परमात्मा है।

काल ने अपने दूसरे पुत्र विष्णु को कर्मानुसार पालन करने का विभाग दिया है, विष्णु सतगुण है। काल ने तीसरे पुत्र शिव तमगुण को इन एक लाख मानव शरीरधारी जीवों को मारकर उसके पास भेजने का विभाग दे रखा है। वह स्वयं अव्यक्त (गुप्त) रहता है। आप देख रहे हो, यहाँ कोई भी जीव अमर नहीं है, देवता भी मरते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शिव भी जन्मते-मरते हैं। जो पूरी आयु जीते हैं, वृद्धावस्था भी सब में आती है। एक लोक ऐसा है जहाँ पर वृद्धावस्था तथा मरण नहीं है। वहाँ कोई रावण किसी की पत्नी का अपहरण नहीं करता। आपकी आँखों के सामने लंका में हुए राम-रावण युद्ध में कितने व्यक्ति तथा अन्य प्राणी मारे गए। एक सीता को छुड़ाने के लिए। आपने श्री रामचन्द्र जी के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाकर लंका को जलाया। रावण का भाई अहिरावण जो पाताल का राजा था। वह राम तथा लक्ष्मण का अपहरण करके ले गया। उनकी बली देने वाला था। आप वहाँ गए और उन दोनों को जीवित लाए। आप ही बताऐं, वे परमात्मा हैं। जिस समय नाग फांस शस्त्र के छोड़ने से सर्पों ने श्री राम तथा आप तथा सर्व सेना व लक्ष्मण तक बाँध दिया था। सर्प आप सबको जकड़े हुए थे। आप सब विवश थे। कुछ समय में आप सबको रावण की सेना आसानी से काट डालती। उस समय गरूड़ को पुकारा गया। उसने नागों को काटा। आप तथा रामचन्द्र बंधनमुक्त हुए। यदि

परमात्मा इतना विवश है कि अपना बंधन नहीं काट सका तो पुजारियों का क्या होगा? विचार करो।

काटे बंधत विपत में, कठिन कियो संग्राम। चिन्हो रे नर प्राणियो, गरूड़ बड़ो के राम।।

शब्दार्थ :- इस वाणी का शब्दार्थ ऊपर किया है।

हनुमान जी ने कहा ऋषि जी! समुद्र पर पुल बनाना क्या आम आदमी का कार्य है? यह परमात्मा बिना नहीं बनाया जा सकता।

समन्दर पांटि लंका गयो, सीता को भरतार। अगस्त ऋषि सातों पीये, इनमें कौन करतार।।

शब्दार्थ :- यदि आप समुद्र के ऊपर सेतु बनाने से श्री रामचन्द्र जी को परमात्मा मानते हो तो अगस्त ऋषि ने सातों सागरों को पी लिया था। इनमें कौन है परमात्मा?

ऋषि मुनीन्द्र जी ने बताया कि आप भूल गए क्या? एक ऋषि आए थे। उन्होंने एक पर्वत के पत्थरों को अपनी डण्डी से रेखा खींचकर हल्का किया था। तब पत्थर तैरे थे, तब पुल बना था। रामचन्द्र तो तीन दिन से रास्ता माँग रहे थे। समुद्र ने ही बताया था नल-नील के विषय में। हनुमान जी ने कहा कि वह तो विश्वकर्मा जी थे जो वेश बदलकर श्री रामचन्द्र जी के बुलाने पर आए थे। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि विश्वकर्मा जी तो पुल का निर्माण कर सकते हैं, जल के ऊपर पत्थर नहीं तैरा सकते। नल-नील के हाथों में शक्ति थी। उनके हाथों से डाली गई वस्तु जल के ऊपर तैरा करती थी। उस दिन उनमें अभिमान आ गया था। उनकी शक्ति समाप्त हो गई थी। वह आशीर्वाद मेरा ही था। हनुमान जी ने कहा, क्या आप ऋषि मुनीन्द्र जी हैं? परमेश्वर जी ने कहा, हाँ। मुनीन्द्र जी ने कहा कि आपने अपने प्राणों की परवाह न करके राम जी के लिए क्या नहीं किया? जब सीता ने आपको अपशब्द कहे और घर छोड़ने को कहा। उस समय श्रीराम वहीं विराजमान थे। एक शब्द भी नहीं कहा कि सीता ऐसा न कर। पवन सुत अंदर से तो मान रहे थे, परंतु ऊपर से कह रहे थे कि ऋषि जी! किसी की आलोचना नहीं करनी चाहिए। मुनीन्द्र जी ने कहा कि सत्य कहना आलोचना नहीं होती। यदि श्री रामचन्द्र और सीता के अंदर अच्छे इंसान वाले गुण भी होते तो भी आपका आजीवन अहसान मानते और अपने चरणों में रखते। आप तो उनके बिना जीना भी उचित नहीं मानते। और सुनो! आपके साथ जैसा व्यवहार किया, उसका फल भी सीता तथा रामचन्द्र को मिल गया है। कुछ वर्षों के पश्चात् सीता को श्री राम ने घर से निकाल दिया। उस समय वह गर्भवती थी। यह सुनकर हनुमान की आँखों से आँसू निकल आए और ऋषि जी के चरणों में गिर गए। कुछ नहीं बोले। अयोध्यावासियों ने दो वर्ष दिपावली और दशहरा मनाया था। उसके पश्चात् बंद कर दिया था कि जिस देवी के लिए रावण मारा, आज वह फिर कितने रावणों का कष्ट झेलेगी। दीपमाला खुशी का प्रतीक है। जब राजा और रानी भिन्न-भिन्न हो गए तो न दीपावली राजा को अच्छी लगे और न प्रजा को। इसलिए दीपावली का पर्व उसी समय से बंद हो गया था। जो दो वर्ष मनाया था, उसी के आधार से भोली जनता

यह पर्व मना रही है।

इसी प्रकार दशहरा तथा रावण दहन की परंपरा चली आ रही है। यदि किसी के घर पर किसी जवान की मृत्यु हो जाती है तो वह परिवार तथा रिश्तेदार कोई त्यौहार नहीं मनाते।

हनुमान जी ने कहा, प्रभु! परमेश्वर की चर्चा करो। कबीर परमेश्वर जी ने सृष्टि रचना सुनाई। सत्यकथा सुनकर हनुमान जी गदगद हुए। सत्यलोक देखने की प्रार्थना की। परमेश्वर आकाश में उड़ गए। हनुमान जी देख रहे थे। कुछ देर अंतर्ध्यान हो गए। हनुमान जी चिंतित हो गए कि अब ये ऋषि कैसे मिलेंगे? इतने में आकाश में विशेष प्रकाश दिखाई दिया। हनुमान जी को दिव्य दृष्टि देकर सतलोक दिखाया। ऋषि मुनीन्द्र जी सिंहासन पर बैठे दिखाई दिए। उनके शरीर का प्रकाश अत्यधिक था। सिर पर मुकुट तथा राजाओं की तरह छत्र था। कुछ देर वह दृश्य दिखाकर दिव्य दृष्टि समाप्त कर दी। मुनीन्द्र जी नीचे आए। हनुमान जी को विश्वास हुआ कि ये परमेश्वर हैं। सत्यलोक सुख का स्थान है। परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा ली। अपना जीवन धन्य किया। मुक्ति के अधिकारी हुए। इस प्रकार पवित्र आत्मा परमार्थी स्वभाव हनुमान जी को परमेश्वर कबीर जी ने अपनी शरण में लिया। परमार्थी आत्मा को संसार तथा काल के स्वामी भले ही परोपकार का फल नहीं देते, परंतु परमेश्वर ऐसी आत्माओं को शरण में अवश्य लेते हैं क्योंकि ऐसी आत्मा ही परम भक्त बनकर भक्ति करते हैं और मोक्ष प्राप्त करते हैं। संसारिक व्यक्ति जो परमार्थी को धोखा देते हैं, वे आजीवन कष्टमय जीवन व्यतीत करते हैं।

श्री रामचन्द्र जी को अंत समय में अपने ही पुत्रों लव तथा कुश से पराजय का मुँह देखना पड़ा। सीता जी ने उनके दर्शन करना भी उचित नहीं समझा। देखते-देखते पृथ्वी में समा गई। इस ग्लानि से श्री रामचन्द्र जी ने अयोध्या के पास बह रही सरयु नदी में छलांग लगाकर अपनी जीवन लीला जल समाधि लेकर समाप्त की। परमार्थी हनुमान जी को निस्वार्थ दुःखियों की सहायता करने का फल मिला। परमात्मा स्वयं आए, मोक्ष मार्ग बताया। जीव का कल्याण हुआ। हनुमान जी फिर मानव जीवन प्राप्त करेंगे। तब परमेश्वर कबीर जी उनको शरण में लेकर मुक्त करेंगे। उस आत्मा में सत्य भक्ति बीज डल चुका है।

हम काल के जाल में कैसे फँसे?

इसका उत्तर कृपा पढ़ें अध्याय ''सृष्टि रचना'' में जो इसी पुस्तक ''जीने की राह'' के पृष्ठ 254 से 306 पर है।

''कबीर परमेश्वर जी की काल से वार्ता''

अब हम काल ब्रह्म के लोक में रह रहे हैं। आत्मा के ऊपर स्थूल आदि-आदि शरीर चढ़ाकर काल ने जीव बना दिए हैं। इसने जीव को भ्रमित किया है। पूर्ण परमात्मा जो आत्मा का जनक है, भुला दिया है। स्वयं को परमात्मा सिद्ध किए हैं। यह परमात्मा के अंश जीवात्मा को परेशान करता है ताकि परमात्मा दुःखी होए। यही मन रूप में

प्रत्येक आत्मा के साथ रहता है। गलती करवाता है, दण्ड जीवात्मा भोगती है। जैसे शराब आदि-आदि नशे की लत लगवाना, बलात्कार (Rape) करवाना और अन्य पाप करवाना। यह मन की प्रेरणा से काल करवाता है। जब आप जी लेखक (संत रामपाल) से दीक्षा लोगे, तब यह सीधा चलेगा क्योंकि जीवात्मा के साथ परमात्मा की शक्ति रहने लगती है। आत्मा को तत्वज्ञान से विवेक हो जाता है। परमात्मा की शक्ति के कारण आत्मा दृढ़ हो जाती है। काल ब्रह्म केवल कबीर परमात्मा से डरता है। संत गरीबदास जी ने कहा है :-

काल डरै करतार से, जय–जय–जय जगदीश।
जौरा जोड़ी झाड़ता, पग रज डारे शीश।।
गरीब, काल जो पीसे पीसना, जौरा है पनिहार।
ये दो असल मजदूर हैं, सतगुरू कबीर के दरबार।।

भावार्थ स्पष्ट है। परमात्मा कबीर जी हमारी आत्मा को काल जाल से निकालने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। काल ब्रह्म फँसाने का प्रयत्न करता है। आगे के प्रकरण में प्रत्यक्ष प्रमाण है।

जब परमेश्वर ने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की और अपने लोक में विश्राम करने लगे। उसके बाद हम सभी काल के ब्रह्मण्ड में रह कर अपना किया हुआ कर्मदण्ड भोगने लगे और बहुत दुःखी रहने लगे। सुख व शांति की खोज में भटकने लगे और हमें अपने निज घर सतलोक की याद सताने लगी तथा वहां जाने के लिए भक्ति प्रारंभ की। किसी ने चारों वेदों को कंठस्थ किया तो कोई उग्र तप करने लगा और हवन यज्ञ, ध्यान, समाधि आदि क्रियाएं प्रारम्भ की, लेकिन अपने निज घर सतलोक नहीं जा सके क्योंकि उपरोक्त क्रियाएं करने से अगले जन्मों में अच्छे समृद्ध जीवन को प्राप्त होकर (जैसे राजा-महाराजा, बड़ा व्यापारी, अधिकारी, देव-महादेव, स्वर्ग-महास्वर्ग आदि) वापिस लख चौरासी भोगने लगे। बहुत परेशान रहने लगे और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करने लगे कि हे दयालु ! हमें निज घर का रास्ता दिखाओ। हम हृदय से आपकी भक्ति करते हैं। आप हमें दर्शन क्यों नहीं दे रहे हो?

यह वृतान्त कबीर साहेब ने धर्मदास जी को बताते हुए कहा कि धर्मदास इन जीवों की पुकार सुनकर मैं अपने सतलोक से जोगजीत का रूप बनाकर काल लोक में आया। तब इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में जहां काल का निज घर है वहां पर तप्तशिला पर जीवों को भूनकर सूक्ष्म शरीर से पदार्थ निकाला जा रहा था। मेरे पहुंचने के बाद उन जीवों की जलन समाप्त हो गई। उन्होंने मुझे देखकर कहा कि हे पुरुष ! आप कौन हो? आपके दर्शन मात्र से ही हमें बड़ा सुख व शांति का आभास हो रहा है। तब मैंने बताया कि मैं पारब्रह्म परमेश्वर कबीर हूं। आप सब जीव मेरे लोक से आकर काल ब्रह्म के लोक में फंस गए हो। यह काल रोजाना एक लाख मानव के सुक्ष्म शरीर से पदार्थ निकालकर खाता है और बाद में नाना-प्रकार की योनियों में दण्ड भोगने के लिए छोड़ देता है। तब वे जीवात्माएं कहने लगी कि हे दयालु परमश्वेर! हमें इस काल की जेल से छुड़वाओ। मैंने बताया कि ये 21 ब्रह्मण्ड काल ने तीन बार तप करके मेरे से प्राप्त

किए हुए हैं जो आप यहां सब वस्तुओं का प्रयोग कर रहे हो ये सभी काल की हैं और आप सब अपनी इच्छा से घूमने के लिए आए हो। इसलिए अब आपके ऊपर काल ब्रह्म का बहुत ज्यादा ऋण हो चुका है और वह ऋण मेरे सच्चे नाम के जाप के बिना नहीं उतर सकता।

जब तक आप ऋण मुक्त नहीं हो सकते तब तक आप काल ब्रह्म की जेल से बाहर नहीं जा सकते। इसके लिए आपको मुझसे नाम उपदेश लेकर भक्ति करनी होगी। तब मैं आपको छुड़वा कर ले जाऊंगा। हम यह वार्ता कर ही रहे थे कि वहां पर काल ब्रह्म प्रकट हो गया और उसने बहुत क्रोधित होकर मेरे ऊपर हमला बोला। मैंने अपनी शब्द शक्ति से उसको मुर्छित कर दिया। फिर कुछ समय बाद वह होश में आया। मेरे चरणों में गिरकर क्षमा याचना करने लगा और बोला कि आप मुझ से बड़े हो, मुझ पर कुछ दया करो और यह बताओ कि आप मेरे लोक में क्यों आए हो ? तब मैंने काल पुरुष को बताया कि कुछ जीवात्माएं भक्ति करके अपने निज घर सतलोक में वापिस जाना चाहती हैं। उन्हें सतभक्ति मार्ग नहीं मिल रहा है। इसलिए वे भक्ति करने के बाद भी इसी लोक में रह जाती हैं। मैं उनको सतभक्ति मार्ग बताने के लिए और तेरा भेद देने के लिए आया हूं कि तूं काल है, एक लाख जीवों का आहार करता है और सवा लाख जीवों को उत्पन्न करता है तथा भगवान बन कर बैठा है। मैं इनको बताऊंगा कि तुम जिसकी भक्ति करते हो वह भगवान नहीं, काल है। इतना सुनते ही काल बोला कि यदि सब जीव वापिस चले गए तो मेरे भोजन का क्या होगा ? मैं भूखा मर जाऊंगा। आपसे मेरी प्रार्थना है कि तीन युगों में जीव कम संख्या में ले जाना और सबको मेरा भेद मत देना कि मैं काल हूँ, सबको खाता हूँ। जब कलियुग आए तो चाहे जितने जीवों को ले जाना। ये वचन काल ने मुझसे प्राप्त कर लिए। कबीर साहेब ने धर्मदास को आगे बताते हुए कहा कि सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग में भी मैं आया था और बहुत जीवों को सतलोक लेकर गया लेकिन इसका भेद नहीं बताया। अब मैं कलियुग में आया हूं और काल से मेरी वार्ता हुई है। काल ब्रह्म ने मुझ से कहा कि अब आप चाहे जितना जोर लगा लेना, आपकी बात कोई नहीं सुनेगा। प्रथम तो मैंने जीव को भक्ति के लायक ही नहीं छोड़ा है। उनमें बीड़ी, सिगरेट, शराब, मांस आदि दुर्व्यसन की आदत डाल कर इनकी वति को बिगाड़ दिया है। नाना-प्रकार की पाखण्ड पूजा में जीवात्माओं को लगा दिया है। दूसरी बात यह होगी कि जब आप अपना ज्ञान देकर वापिस अपने लोक में चले जाओगे तब मैं (काल) अपने दूत भेजकर आपके पंथ से मिलते-जुलते बारह पंथ चलाकर जीवों को भ्रमित कर दूंगा। महिमा सतलोक की बताएंगे, आपका ज्ञान कथेंगे लेकिन नाम-जाप मेरा करेंगे, जिसके परिणामस्वरूप मेरा ही भोजन बनेंगे। यह बात सुनकर कबीर साहेब ने कहा कि आप अपनी कोशिश करना, मैं सतमार्ग बताकर ही वापिस जाऊंगा और जो मेरा ज्ञान सुन लेगा वह तेरे बहकावे में कभी नहीं आएगा।

सतगुरु कबीर साहेब ने कहा कि हे निरंजन ! यदि मैं चाहूं तो तेरे सारे खेल को क्षण भर में समाप्त कर सकता हूँ, परंतु ऐसा करने से मेरा वचन भंग होता है। यह

सोच कर मैं अपने प्यारे हंसों को यथार्थ ज्ञान देकर शब्द का बल प्रदान करके सतलोक ले जाऊंगा और कहा कि -

कहो कबीर सुनो धर्मराया, हम शंखों हंसा पद परसाया।
जिन लीन्हा हमरा प्रवाना, सो हंसा हम किए अमाना।।

(पवित्र कबीर सागर में जीवों को भूल-भूलइयां में डालने के लिए तथा अपनी भूख को मिटाने के लिए तरह-२ के तरीकों का वर्णन)

द्वादस पंथ करूं मैं साजा, नाम तुम्हारा ले करूं अवाजा।
द्वादस यम संसार पठहो, नाम तुम्हारे पंथ चलैहो।।
प्रथम दूत मम प्रगटे जाई, पीछे अंश तुम्हारा आई।।
यही विधि जीवनको भ्रमाऊं, पुरुष नाम जीवन समझाऊं।।
द्वादस पंथ नाम जो लैहे, सो हमरे मुख आन समै है।।
कहा तुम्हारा जीव नहीं माने, हमारी ओर होय बाद बखानै।।
मैं दृढ़ फंदा रची बनाई, जामें जीव रहे उरझाई।।
देवल देव पाषान पूजाई, तीर्थ व्रत जप–तप मन लाई।।
यज्ञ होम अरू नेम अचारा, और अनेक फंद में डारा।।
जो ज्ञानी जाओ संसारा, जीव न मानै कहा तुम्हारा।।

(सतगुरु वचन)

ज्ञानी कहे सुनो अन्याई, काटों फंद जीव ले जाई।।
जेतिक फंद तुम रचे विचारी, सत्य शबद तै सबै बिंडारी।।
जौन जीव हम शब्द दृढावै, फंद तुम्हारा सकल मुकावै।।
चौका कर प्रवाना पाई, पुरुष नाम तिहि देऊं चिन्हाई।।
ताके निकट काल नहीं आवै, संधि देखी ताकहं सिर नावै।।

उपरोक्त विवरण से सिद्ध होता है कि जो अनेक पंथ चले हुए हैं। जिनके पास कबीर साहेब द्वारा बताया हुआ सतभक्ति मार्ग नहीं है, ये सब काल प्रेरित हैं। अतः बुद्धिमान को चाहिए कि सोच-विचार कर भक्ति मार्ग अपनांए क्योंकि मनुष्य जन्म अनमोल है, यह बार-बार नहीं मिलता। कबीर साहेब कहते हैं कि :-

कबीर मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार। तरूवर से पत्ता टूट गिरे, बहुर न लगता डारि।।

काल निरंजन द्वारा कबीर जी से तीन युगों में कम जीव ले जाने का वचन लेना

(विस्तृत व सम्पूर्ण वर्णन)

प्रश्न :- कबीर जी के नाम से चले 12 पंथों के वास्तविक मुखिया कौन हैं और तेरहवां पंथ कौन चलाएगा?

उत्तर :- जैसा कि कबीर सागर के संशोधनकर्ता स्वामी युगलानन्द (बिहारी) जी ने दुख व्यक्त किया है कि समय-समय पर कबीर जी के ग्रन्थों से छेड़छाड़ करके उनकी बुरी दशा कर रखी है।

उदाहरण :- परमेश्वर कबीर जी का जोगजीत के रूप में काल ब्रह्म के साथ विवाद हुआ था। वह ''स्वसमवेद बोध'' पृष्ठ 117 से 122 तक तथा ''अनुराग सागर'' 60 से 67 तक है।

परमेश्वर कबीर जी अपने पुत्र जोगजीत के रूप में काल के प्रथम ब्रह्माण्ड में प्रकट हुए जो इक्कीसवां ब्रह्माण्ड है जहाँ पर तप्त शिला बनी है। काल ब्रह्म ने जोगजीत के साथ झगड़ा किया। फिर विवश होकर चरण पकड़कर क्षमा याचना की तथा प्रतिज्ञा करवाकर कुछ सुविधा माँगी।

1. तीनों युगों (सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग) में थोड़े जीव पार करना।

2. जोर-जबरदस्ती करके जीव मेरे लोक से न ले जाना।

3. आप अपना ज्ञान समझाना। जो आपके ज्ञान को माने, वह आपका और जो मेरे ज्ञान को माने, वह मेरा।

4. कलयुग में पहले मेरे दूत प्रकट होने चाहिऐं, पीछे आपका दूत जाए।

5. त्रेतायुग में समुद्र पर पुल बनवाना। उस समय मेरा पुत्र विष्णु रामचंद्र रूप में लंका के राजा रावण से युद्ध करेगा, समुद्र रास्ता नहीं देगा।

6. द्वापर युग में बौद्ध शरीर त्यागकर जाऊँगा। राजा इन्द्रदमन मेरे नाम से (जगन्नाथ नाम से) समुद्र के किनारे मेरी आज्ञा से मंदिर बनवाना चाहेगा। उसको समुद्र बाधा करेगा। आप उस मंदिर की सुरक्षा करना। परमेश्वर ने सर्व माँगें स्वीकार कर ली और वचनबद्ध हो गए। तब काल ब्रह्म हँसा और कहा कि हे जोगजीत! आप जाओ संसार में। जिस समय कलयुग आएगा। उस समय मैं अपने 12 दूत (नकली सतगुरू) संसार में भेजूँगा। जब कलयुग 5505 वर्ष पूरा होगा, तब तक मेरे दूत तेरे नाम से (कबीर जी के नाम से) 12 कबीर पंथ चला दूँगा। कबीर जी ने जोगजीत रूप में काल ब्रह्म से कहा था कि कलयुग में मेरा नाम कबीर होगा और मैं कबीर नाम से पंथ चलाऊँगा। इसलिए काल ज्योति निरंजन ने कहा था कि आप कबीर नाम से एक पंथ चलाओगे तो मैं (काल) कबीर नाम से 12 पंथ चलाऊँगा। सर्व मानव को भ्रमित करके अपने जाल में फाँसकर रखूँगा। इनके अतिरिक्त और भी कई पंथ चलाऊँगा जो सतलोक, सच्चखण्ड की बातें किया करेंगे तथा सत्य साधना उनके पास नहीं होगी। जिस कारण से वे सत्यलोक की आश में गलत नामों को जाप करके मेरे जाल में ही रह जाऐंगे।

काल ब्रह्म ने पूछा था कि आप किस समय कलयुग में अपना सत्य कबीर पंथ चलाओगे? कबीर जी ने कहा था कि जिस समय कलयुग 5505 (पाँच हजार पाँच सौ पाँच) वर्ष बीत जाएगा, तब मैं अपना यथार्थ तेरहवां कबीर पंथ चलाऊँगा।

काल ने कहा कि उस समय से पहले मैं पूरी पृथ्वी के ऊपर शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करवाकर शास्त्रविरूद्ध ज्ञान बताकर झूठे नाम तथा गलत साधना के अभ्यस्त कर दूँगा। जब तेरा तेरहवां अंश आकर सत्य कबीर पंथ चलाएगा, उसकी बात पर कोई विश्वास नहीं करेगा, उल्टे उसके साथ झगड़ा करेंगे। कबीर जी को पता था कि जब कलयुग के 5505 वर्ष पूरे होंगे (सन् 1997

में) तब शिक्षा की क्रांति लाई जाएगी। सर्व मानव अक्षर ज्ञानयुक्त किया जाएगा। उस समय मेरा दास सर्व धार्मिक ग्रन्थों को ठीक से समझकर मानव समाज के रूबरू करेगा। सर्व प्रमाणों को आँखों देखकर शिक्षित मानव सत्य से परिचित होकर तुरंत मेरे तेरहवें पंथ में दीक्षा लेगा और पूरा विश्व मेरे द्वारा बताई भक्ति विधि तथा तत्त्वज्ञान को हृदय से स्वीकार करके भक्ति करेगा। उस समय पुनः सत्ययुग जैसा वातावरण होगा। आपसी रागद्वेष, चोरी-जारी, लूट-ठगी कोई नहीं करेगा। कोई धन संग्रह नहीं करेगा। भक्ति को अधिक महत्त्व दिया जाएगा। जैसे उस समय उस व्यक्ति को महान माना जा रहा होगा जिसके पास अधिक धन होगा, बड़ा व्यवसाय होगा, बड़ी-बड़ी कोठियाँ बना रखी होंगी, परंतु 13वें पंथ के प्रारम्भ होने के पश्चात् उन व्यक्तियों को मूर्ख माना जाएगा और जो भक्ति करेंगे, सामान्य मकान बनाकर रहेंगे, उनको महान, बड़े और सम्मानित व्यक्ति माना जाएगा।

''प्रमाण के लिए पवित्र कबीर सागर से भिन्न-भिन्न अध्यायों से अमृत बानी''

''कबीर जी तथा ज्योति निरंजन की वार्ता''

अनुराग सागर के पृष्ठ 62 से :-

''धर्मराय (ज्योति निरंजन) वचन''

धर्मराय अस विनती ठानी। मैं सेवक द्वितीया न जानी।।1
ज्ञानी बिनती एक हमारा। सो न करहू जिह से हो मोर बिगारा।।2
पुरूष दीन्ह जस मोकहं राजु। तुम भी देहहु तो होवे मम काजु।।3
अब मैं वचन तुम्हरो मानी। लीजो हंसा हम सो ज्ञानी।।4

पृष्ठ 63 से अनुराग सागर की वाणी :-

दयावन्त तुम साहेब दाता। ऐतिक कृपा करो हो ताता।।5
पुरूष शॉप मोकहं दीन्हा। लख जीव नित ग्रासन कीन्हा।।6

पृष्ठ 64 से अनुराग सागर की वाणी :-

जो जीव सकल लोक तव आवै। कैसे क्षुधा मोर मिटावै।।7
जैसे पुरूष कृपा मोपे कीन्हा। भौसागर का राज मोहे दीन्हा।।8
तुम भी कृपा मोपर करहु। जो माँगे सो मोहे देहो बरहु।।9
सतयुग, त्रेता, द्वापर मांहीं। तीनों युग जीव थोड़े जाहीं।।10
चौथा युग जब कलयुग आवै। तब तव शण जीव बहु जावै।।11

पृष्ठ 65 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 3 से :-

प्रथम दूत मम प्रकटै जाई। पीछे अंश तुम्हारा आई।।12

पृष्ठ 64 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 6 :-

ऐसा वचन हरि मोहे दीजै। तब संसार गवन तव कीजै।।13

''जोगजीत वचन=ज्ञानी बचन''

पृष्ठ 64 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 7 :-

अरे काल तुम परपंच पसारा। तीनों युग जीवन दुख डारा।।14
बीनती तोरी लीन्ह मैं जानि। मोकहं ठगा काल अभिमानी।।15
जस बीनती तू मोसन कीन्ही। सो अब बख्स तोहे दीन्ही।।16
चौथा युग जब कलयुग आवै। तब हम अपना अंश पठावैं।।17

''धर्मराय (काल) वचन''

पृष्ठ 64 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 17 :-

हे साहिब तुम पंथ चलाऊ। जीव उबार लोक लै जाऊ।।18

पृष्ठ 66 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 8, 9, 16 से 21:-

सन्धि छाप (सार शब्द) मोहे दिजे ज्ञानी। जैसे देवोंगे हंस सहदानी।।19
जो जन मोकूं संधि (सार शब्द) बतावै। ताके निकट काल नहीं आवै।।20
कहै धर्मराय जाओ संसारा। आनहु जीव नाम आधारा।।21
जो हंसा तुम्हरे गुण गावै। ताहि निकट हम नहीं जावैं।।22
जो कोई लेहै शरण तुम्हारी। मम सिर पग दै होवै पारी।।23
हम तो तुम संग कीन्ह ढ़िठाई। तात जान किन्ही लड़काइ।।24
कोटिन अवगुन बालक करही। पिता एक चित नहीं धरही।।25
जो पिता बालक कूं देहै निकारी। तब को रक्षा करै हमारी।।26
सारनाम देखो जेहि साथा। ताहि हंस मैं नीवाऊँ माथा।।27

ज्ञानी (कबीर) वचन

अनुराग सागर पृष्ठ 66 :-

जो तोहि देहुं संधि बताई। तो तूं जीवन को हइहो दुखदाई।।28
तुम परपंच जान हम पावा। काल चलै नहीं तुम्हरा दावा।।29
धर्मराय तोहि प्रकट भाखा। गुप्त अंक बीरा हम राखा।।30
जो कोई लेई नाम हमारा। ताहि छोड़ तुम हो जाना नियारा।।31
जो तुम मोर हंस को रोको भाई। तो तुम काल रहन नहीं पाई।।32

''धर्मराय (काल निरंजन) बचन''

पृष्ठ 62 तथा 63 से अनुराग सागर की वाणी :-

बेसक जाओ ज्ञानी संसारा। जीव न मानै कहा तुम्हारा।।33
कहा तुम्हारा जीव ना मानै। हमरी और होय बाद बखानै।।34
दृढ़ फंदा मैं रचा बनाई। जामें सकल जीव उरझाई।।35
वेद–शास्त्र समर्ति गुणगाना। पुत्र मेरे तीन प्रधाना।।36
तीनहू बहु बाजी रचि राखा। हमरी महिमा ज्ञान मुख भाखा।।37
देवल देव पाषाण पुजाई। तीर्थ व्रत जप तप मन लाई।।38
पूजा विश्व देव अराधी। यह मति जीवों को राखा बाँधि।।39
जग (यज्ञ) होम और नेम आचारा। और अनेक फंद मैं डारा।।40

''ज्ञानी (कबीर) वचन''

हमने कहा सुनो अन्याई। काटों फंद जीव ले जांई।।41

जेते फंद तुम रचे विचारी। सत्य शब्द ते सबै विडारी।।42
जौन जीव हम शब्द दढ़ावैं। फंद तुम्हारा सकल मुक्तावैं।।43
जबही जीव चिन्ही ज्ञान हमारा। तजही भ्रम सब तोर पसारा।।44
सत्यनाम जीवन समझावैं। हंस उभार लोक लै जावै।।45
पुरूष सुमिरन सार बीरा, नाम अविचल जनावहूँ।
शीश तुम्हारे पाँव देके, हंस लोक पठावहूँ।।46
ताके निकट काल नहीं आवै। संधि देख ताको सिर नावै।।48
(संधि = सत्यनाम+सारनाम)

''धर्मराय (काल) वचन''

पंथ एक तुम आप चलऊ। जीवन को सतलोक लै जाऊ।।49
द्वादश पंथ करूँ मैं साजा। नाम तुम्हारा ले करों आवाजा।।50
द्वादश यम संसार पठाऊँ। नाम कबीर ले पंथ चलाऊँ।।51
प्रथम दूत मेरे प्रगटै जाई। पीछे अंश तुम्हारा आई।।52
यहि विधि जीवन को भ्रमाऊँ। आपन नाम पुरूष का बताऊँ।।53
द्वादश पंथ नाम जो लैहि। हमरे मुख में आन समैहि।।54

शब्दार्थ :- वाणी नं. 1 से 54 का शब्दार्थ ऊपर कर दिया है।

''ज्ञानी (कबीर) वचन'' चौपाई

अध्याय ''स्वसमवेद बोध'' पृष्ठ 121 :-

अरे काल परपंच पसारा। तीनों युग जीवन दुख आधारा।।55
बीनती तोरी लीन मैं मानी। मोकहं ठगे काल अभिमानी।।56
चौथा युग जब कलयुग आई। तब हम अपना अंश पठाई।।57
काल फंद छूटै नर लोई। सकल सृष्टि परवानिक (दीक्षित) होई।।58
घर–घर देखो बोध (ज्ञान) बिचारा (चर्चा)। सत्यनाम सब ठोर उचारा।।59
पाँच हजार पाँच सौ पाँचा। तब यह वचन होयगा साचा।।60
कलयुग बीत जाए जब ऐता। सब जीव परम पुरूष पद चेता।।61

भावार्थ :- (वाणी सँख्या 55 से 61 तक) परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे काल! तूने विशाल प्रपंच रच रखा है। तीनों युगों (सतयुग, त्रेता, द्वापर) में जीवों को बहुत कष्ट देगा। जैसा तू कह रहा है। तूने मेरे से प्रार्थना की थी, वह मान ली। तूने मेरे साथ धोखा किया है, परतुं चौथा युग जब कलयुग आएगा, तब मैं अपना अंश यानि कृपा पात्र आत्मा भेजूँगा। हे काल! तेरे द्वारा बनाए सर्व फंद यानि अज्ञान आधार से गलत ज्ञान व साधना को सत्य शब्द तथा सत्य ज्ञान से समाप्त करेगा। उस समय पूरा विश्व प्रवानिक यानि उस मेरे संत से दीक्षा लेकर दीक्षित होगा। उस समय तक यानि जब तक कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच नहीं बीत जाता, सत्यनाम, मूल नाम (सार शब्द) तथा मूल ज्ञान (तत्त्वज्ञान) प्रकट नहीं करना है। परंतु जब कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष पूरा हो जाएगा, तब घर-घर में मेरे अध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा हुआ करेगी और सत्यनाम, सार शब्द को

सब उपदेशियों को प्रदान किया जाएगा। यह जो बात मैं कह रहा हूँ, ये मेरे वचन उस समय सिद्ध होंगे, जब कलयुग के 5505 (पाँच हजार पाँच सौ पाँच) वर्ष पूरे हो जाऐंगे। जब कलयुग इतने वर्ष बीत जाएगा। तब सर्व मानव प्राणी परम पुरूष यानि सत्य पुरूष के पद अर्थात् उस परम पद के जानकार हो जाऐंगे जिसके विषय में गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्त्वदर्शी संत के प्राप्त होने के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते। जिस परमेश्वर ने संसार रूपी वृक्ष का विस्तार किया है अर्थात् जिस परमेश्वर ने सृष्टि की रचना की है, उस परमेश्वर की भक्ति करो।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ है कि उस समय उस परमेश्वर के पद (सत्यलोक) के विषय में सबको पूर्ण ज्ञान होगा।

स्वसमवेद बोध पृष्ठ 170 :-

अथ स्वसम वेद की स्फुटवार्ता-चौपाई

एक लाख और असि हजारा। पीर पैगंबर और अवतारा।।62
सो सब आही निरंजन वंशा। तन धरी–धरी करैं निज पिता प्रशंसा।।63
दश अवतार निरंजन के रे। राम कृष्ण सब मांही बडेरे।।64
इनसे बड़ा ज्योति निरंजन सोई। यामें फेर बदल नहीं कोई।।65

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि बाबा आदम से लेकर हजरत मुहम्मद तक कुल एक लाख अस्सी हजार (1,80,000) पैगंबर तथा दस अवतार जो हिन्दु मानते हैं, ये सब काल के भेजे आए हैं। इन दस अवतारों में राम तथा कृष्ण प्रमुख हैं। ये सब काल की महिमा बनाकर सर्व जीवों को भ्रमित करके काल साधना दृढ़ कर गए हैं। इस सबका मुखिया ज्योति निरंजन काल (ब्रह्म) है।

स्वसमवेद बोध पृष्ठ 171(1515) :-

सत्य कबीर वचन

दोहे :- पाँच हजार अरू पाँच सौ पाँच जब कलयुग बीत जाय।
महापुरूष फरमान तब, जग तारन कूं आय।।66
हिन्दु तुर्क आदि सबै, जेते जीव जहान।
सत्य नाम की साख गही, पावैं पद निर्वान।।67
यथा सरितगण आप ही, मिलैं सिन्धु मैं धाय।
सत्य सुकृत के मध्य तिमि, सब ही पंथ समाय।।68
जब लग पूर्ण होय नहीं, ठीक का तिथि बार।
कपट–चातुरी तबहि लौं, स्वसम बेद निरधार।।69
सबही नारी–नर शुद्ध तब, जब ठीक का दिन आवंत।
कपट चातुरी छोड़ि के, शरण कबीर गहंत।।70
एक अनेक ह्वै गए, पुनः अनेक हों एक।
हंस चलै सतलोक सब, सत्यनाम की टेक।।71

घर घर बोध विचार हो, दुर्मति दूर बहाय।
कलयुग में सब एक होई, बरतें सहज सुभाय।।72
कहाँ उग्र कहाँ शुद्र हो, हरै सबकी भव पीर(पीड़)।।73
सो समान समदृष्टि है, समर्थ सत्य कबीर।।74

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि हे धर्मदास! मैंने ज्योति निरंजन यानि काल ब्रह्म से भी कहा था, अब आपको भी बता रहा हूँ।

स्वसमबेद बोध की वाणी सँख्या 66 से 74 का सरलार्थ :- जिस समय कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीत जाएगा, तब एक महापुरूष विश्व को पार करने के लिए आएगा। हिन्दु, मुसलमान आदि-आदि जितने भी पंथ तब तक बनेंगे और जितने जीव संसार में हैं, वे मानव शरीर प्राप्त करके उस महापुरूष से सत्यनाम लेकर सत्यनाम की शक्ति से मोक्ष प्राप्त करेंगे। वह महापुरूष जो सत्य कबीर पंथ चलाएगा, उस (तेरहवें) पंथ में सब पंथ स्वतः ऐसे तीव्र गति से समा जाएंगे जैसे भिन्न-भिन्न नदियाँ अपने आप निर्बाध दौड़कर समुद्र में गिर जाती है। उनको कोई रोक नहीं पाता। ऐसे उस तेरहवें पंथ में सब पंथ शीघ्रता से मिलकर एक पंथ बन जाएगा। परंतु जब तक ठीक का समय नहीं आएगा यानि कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष पूरे नहीं करता, तब तक मैं जो यह ज्ञान स्वसमवेद में बोल रहा हूँ, आप लिख रहे हो, निराधार लगेगा।

जिस समय वह निर्धारित समय आएगा। उस समय स्त्री-पुरूष उच्च विचारों तथा शुद्ध आचरण के होकर कपट, व्यर्थ की चतुराई त्यागकर मेरी (कबीर जी की) शरण ग्रहण करेंगे। परमात्मा से लाभ लेने के लिए एक ''मानव'' धर्म से अनेक पंथ (धार्मिक समुदाय) बन गए हैं, वे सब पुनः एक हो जाएंगे। सब हंस (निर्विकार भक्त) आत्माऐं सत्य नाम की शक्ति से सतलोक चले जाएंगे। मेरे अध्यात्म ज्ञान की चर्चा घर-घर में होगी। जिस कारण से सबकी दुर्मति समाप्त हो जाएगी। कलयुग में फिर एक होकर सहज बर्ताव करेंगे यानि शांतिपूर्वक जीवन जीएंगे। कहाँ उग्र अर्थात् चाहे डाकू, लुटेरा, कसाई हो, चाहे शुद्र, अन्य बुराई करने वाला नीच होगा। परमात्मा सत्य भक्ति करने वालों की भवपीर यानि सांसारिक कष्ट हरेगा यानि दूर करेगा। सत्य साधना से सबकी भवपीर यानि संसारिक कष्ट समाप्त हो जाएंगे और उस 13वें (तेरहवें) पंथ का प्रवर्तक सबको समान दृष्टि से देखेगा अर्थात् ऊँच-नीच में भेदभाव नहीं करेगा। वह समर्थ सत्य कबीर ही होगा। (मम् सन्त मुझे जान मेरा ही स्वरूपम्)

प्रश्न :- वह तेरहवां पंथ कौन-सा है, उसका प्रवर्तक कौन है?

उत्तर :- वह तेरहवां पंथ ''यथार्थ सत कबीर'' पंथ है। उसके प्रवर्तक स्वयं कबीर परमेश्वर जी हैं। वर्तमान में उसका संचालक उनका गुलाम रामपाल दास पुत्र स्वामी रामदेवानंद जी महाराज है। (अध्यात्मिक दृष्टि से गुरू जी पिता माने जाते हैं जो आत्मा का पोषण करते हैं।)

प्रमाण :- वैसे तो संत धर्मदास जी की वंश परंपरा वाले महंतो से जुड़े

श्रद्धालुओं ने अज्ञानतावश तेरहवां पंथ और संचालक धर्मदास की बिन्द (परिवार) की धारा वालों को सिद्ध करने की कुचेष्टा की है। परंतु हाथी के वस्त्र को भैंसे पर डालकर कोई कहे कि देखो यह वस्त्र भैंसे का है। बुद्धिमान तो तुरंत समझ जाते हैं कि यह भैंसा का वस्त्र नहीं है। यह तो भैंसे से कई गुणा लंबे-चौड़े पशु का है। भले ही वे ये न बता सकें कि यह हाथी का है।

उदाहरण :- पवित्र कबीर सागर के अध्याय ''कबीर चरित्र बोध'' के पृष्ठ 1834-1835 पर लिखा है।

तेरह गाड़ी कागजों को लिखना

एक समय दिल्ली के बादशाह ने कहा कि कबीर जी 13(तेरह) गाड़ी कागजों को ढ़ाई दिन यानि 60 घण्टे में लिख दे तो मैं उनको परमात्मा मान जाऊँगा। परमेश्वर कबीर जी ने अपनी डण्डी उन तेरह गाड़ियों में रखे कागजों पर घुमा दी। उसी समय सर्व कागजों में अमृतवाणी सम्पूर्ण अध्यात्मिक ज्ञान लिख दिया। राजा को विश्वास हो गया, परंतु अपने धर्म के व्यक्तियों (मुसलमानों) के दबाव में उन सर्व ग्रन्थों को दिल्ली में जमीन में गडवा दिया। कबीर सागर के अध्याय कबीर चरित्र बोध ग्रन्थ में पृष्ठ 1834-1835 पर गलत लिखा है कि जब मुक्तामणि साहब का समय आवेगा और उनका झण्डा दिल्ली नगरी में गड़ेगा। तब वे समस्त पुस्तकें पृथ्वी से निकाली जाएंगी। सो मुक्तामणि अवतार (धर्मदास के) वंश की तेरहवीं पीढ़ी वाला होगा।

विवेचन :- ऊपर वाले लेख में मिलावट का प्रमाण इस प्रकार है कि वर्तमान में धर्मदास जी की वंश गद्दी दामाखेड़ा जिला-रायगढ़ प्रान्त-छत्तीसगढ़ में है। उस गद्दी पर 14वें (चौदहवें) वंश गुरू श्री प्रकाशमुनि नाम साहेब विराजमान हैं। तेरहवें वंश गुरू श्री गृन्ध मुनि नाम साहेब थे जो वर्तमान सन् 2013 से 15 वर्ष पूर्व 1998 में शरीर त्याग गए थे। यदि तेरहवीं गद्दी वाले वंश गुरू के विषय में यह लिखा होता तो वे निकलवा लेते और दिल्ली झण्डा गाड़ते। ऐसा नहीं हुआ तो वह तेरहवां पंथ धर्मदास जी की वंश परंपरा से नहीं है।

फिर ''कबीर चरित्र बोध'' के पृष्ठ 1870 पर कबीर सागर में 12 (बारह) पंथों के नाम लिखे हैं जो काल (ज्योति निरंजन) ने कबीर जी के नाम से नकली पंथ चलाने को कहा था। उनमें सर्व प्रथम ''नारायण दास'' लिखा है। बारहवां पंथ गरीब दास का लिखा है। वास्तव में प्रथम चुड़ामणि जी हैं, जान-बूझकर काँट-छाँट की है।

उनको याद होगा कि परमेश्वर कबीर जी ने नारायण दास जी को तो शिष्य बनाया ही नहीं था। नारायण दास तो श्री कृष्ण जी के पुजारी थे। उसने तो अपने छोटे भाई चुड़ामणि जी का घोर विरोध किया था। जिस कारण से श्री चुड़ामणि जी कुदुर्माल चले गए थे। बाद में बाँधवगढ़ नगर नष्ट हो गया था। ''कबीर चरित्र बोध'' में पृष्ठ 1870 पर बारह पंथों के प्रवर्तकों के नाम लिखे हैं। उनमें प्रथम गलत

नाम लिखा है। शेष सही हैं। लिखा है :-

1. नारायण दास जी का पंथ 2. यागौ दास (जागु दास) जी का पंथ 3. सूरत गोपाल पंथ 4. मूल निरंजन पंथ 5. टकसारी पंथ 6. भगवान दास जी का पंथ 7. सतनामी पंथ 8. कमालीये (कमाल जी का) पंथ 9. राम कबीर पंथ 10. प्रेम धाम (परम धाम) की वाणी पंथ 11. जीवा दास पंथ 12. गरीबदास पंथ।

फिर ''कबीर बानी'' अध्याय के पृष्ठ 134 पर कबीर सागर में लिखा है कि:-

''वंश प्रकार''

प्रथम वंश उत्तम **(यह चुड़ामणि जी के विषय में कहा है।)**
दूसरे वंश अहंकारी **(यह यागौ यानि जागु दास जी का है।)**
तीसरे वंश प्रचंड **(यह सूरत गोपाल जी का है।)**
चौथे वंश बीरहे **(यह मूल निरंजन पंथ है।)**
पाँचवें वंश निन्द्रा **(यह टकसारी पंथ है।)**
छटे वंश उदास **(यह भगवान दास जी का पंथ है।)**
सातवें वंश ज्ञान चतुराई **(यह सतनामी पंथ है।)**
आठवें वंश द्वादश पंथ विरोध **(यह कमाल जी का कमालीय पंथ है।)**
नौवें वंश पंथ पूजा **(यह राम कबीर पंथ है।)**
दसवें वंश प्रकाश **(यह परम धाम की वाणी पंथ है।)**
ग्यारहवें वंश प्रकट पसारा **(यह जीवा पंथ है।)**
बारहवें वंश प्रकट होय उजियारा **(यह संत गरीबदास जी गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, प्रान्त-हरियाणा वाला पंथ है जिन्होंने परमेश्वर कबीर जी के मिलने के पश्चात् उनकी महिमा को तथा यथार्थ ज्ञान को बोला जिससे परमेश्वर कबीर जी की महिमा का कुछ प्रकाश हुआ।)**
तेरहवें वंश मिटे सकल अंधियारा {**यह यथार्थ कबीर पंथ है जो सन् 1994 से प्रारम्भ हुआ है जो मुझ दास (रामपाल दास) द्वारा संचालित है।**}

दामाखेड़ा वाले धर्मदास जी के वंश गद्दी वालों ने वास्तविक भेद छुपाने की कोशिश की तो है, परंतु सच्चाई को मिटा नहीं सके।

कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' के पृष्ठ पर 136 :-

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भूले जीव न जाय ठिकाना।।
तातें आगम कह हम राखा। वंश हमारा चुड़ामणि शाखा।।
प्रथम जग में जागु भ्रमावै। बिना भेद वह ग्रन्थ चुरावै।।
दूसर सुरति गोपाल होई। अक्षर जो जोग दृढ़ावै सोई।।

(विवेचन :- यहाँ पर प्रथम जागु दास बताया है जबकि वाणी स्पष्ट कर रही है कि वंश (प्रथम) चुड़ामणि है। दूसरा जागु दास। यही प्रमाण ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ 1870 में है। दूसरा जागु दास है। अध्याय ''स्वसमवेद बोध'' के पृष्ठ 155(1499) पर भी दूसरा जागु लिखा है। यहाँ प्रथम लिख दिया। यहाँ पर प्रथम

चुड़ामणि लिखना उचित है।)

तीसरा मूल निरंजन बानी। लोक वेद की निर्णय ठानी।।

(यह चौथा लिखना चाहिए।)

चौथे पंथ टकसार (टकसारी) भेद लौ आवै। नीर पवन को संधि बतावै।।

(यह पाँचवां लिखना चाहिए।)

पाँचवां पंथ बीज को लेखा। लोक प्रलोक कहै हम में देखा।।

(यह भगवान दास का पंथ है जो छटा लिखना चाहिए था।)

छटा पंथ सत्यनामी प्रकाशा। घट के माहीं मार्ग निवासा।।

(यह सातवां पंथ लिखना चाहिए।)

सातवां जीव पंथ ले बोलै बानी। भयो प्रतीत मर्म नहीं जानी।।

(यह आठवां कमाल जी का पंथ है।)

आठवां राम कबीर कहावै। सतगुरू भ्रम लै जीव दढ़ावै।।

(वास्तव में यह नौवां पंथ है।)

नौमें ज्ञान की कला दिखावै। भई प्रतीत जीव सुख पावै।।

(वास्तव में यह ग्यारहवां जीवा पंथ है। यहाँ पर नौमा गलत लिखा है।)

दसवें भेद परम धाम की बानी। साख हमारी निर्णय ठानी।।

(यह ठीक लिखा है, परंतु ग्यारहवां नहीं लिखा। यदि प्रथम चुड़ामणि जी को मानें तो सही क्रम बनता है। वास्तव में प्रथम चुड़ामणि जी हैं। इसके पश्चात् बारहवें पंथ गरीबदास जी वाले पंथ का वर्णन प्रारम्भ होता है। यह सांकेतिक है। संत गरीबदास जी का जन्म वि.संवत् 1774 (सतरह सौ चौहत्तर) में हुआ था। यहाँ गलती से सतरह सौ पचहत्तर लिखा है। यह प्रिन्ट में गलती है।)

संवत् सतरह सौ पचहत्तर (1775) होई। ता दिन प्रेम प्रकटें जग सोई।।
आज्ञा रहै ब्रह्म बोध लावै। कोली चमार सबके घर खावै।।
साखि हमारी ले जीव समझावै। असंख्य जन्म ठौर नहीं पावै।।
बारहवें (बारवै) पंथ प्रगट होवै बानी। शब्द हमारै की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मर्म नहीं पावै। ये बार (बारह) पंथ हमी (कबीर जी) को ध्यावैं।।
बारहें पंथ हमहि (कबीर जी ही) चलि आवैं। सब पंथ मिटा एक ही पंथ चलावैं।।
प्रथम चरण कलजुग निरयाना (निर्वाण)। तब मगहर मांडो मैदाना।।

भावार्थ :- यहाँ पर बारहवां पंथ संत गरीबदास जी वाला स्पष्ट है क्योंकि संत गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी मिले थे और उनका ज्ञान योग खोल दिया था। तब संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी की महिमा की वाणी बोली जो ग्रन्थ रूप में वर्तमान में प्रिन्ट करवा लिया गया है। विचार करना है। संत गरीबदास जी के पंथ तक 12 (बारह) पंथ चल चुके हैं। यह भी लिखा है कि भले ही संत गरीबदास जी ने मेरी महिमा की साखी-शब्द-चौपाई लिखी है, परंतु वे बारहवें पंथ के अनुयाई अपनी-अपनी बुद्धि से वाणी का अर्थ करेंगें, परंतु ठीक से न समझकर संत गरीबदास जी तक वाले पंथ के अनुयाई यानि बारह पंथों वाले मेरी वाणी को

ठीक से नहीं समझ पाएंगे। जिस कारण से असंख्य जन्मों तक सतलोक वाला अमर धाम ठिकाना प्राप्त नहीं कर पाऐंगे। ये बारह पंथ वाले कबीर जी के नाम से पंथ चलाएंगे और मेरे नाम से महिमा प्राप्त करेंगे, परंतु ये बारह के बारह पंथों वाले अनुयाई अस्थिर यानि स्थाई घर (सत्यलोक) को प्राप्त नहीं कर सकेंगे। फिर कहा है कि आगे चलकर बारहवें पंथ (संत गरीबदास जी वाले पंथ में) हम यानि स्वयं कबीर जी ही चलकर आएंगे, तब सर्व पंथों को मिटाकर एक पंथ चलाऊँगा। कलयुग का वह प्रथम चरण होगा, जिस समय मैं (कबीर जी) संवत् 1575 (ई. सन् 1518) को मगहर नगर (उत्तर प्रदेश) से निर्वाण प्राप्त करूँगा यानि कोई लीला करके सतलोक जाऊँगा।

परमेश्वर कबीर जी ने कलयुग को तीन चरणों में बाँटा है। प्रथम चरण तो वह जिसमें परमेश्वर लीला करके जा चुके हैं। बिचली पीढ़ी वह है जब कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीत जाएगा। अंतिम चरण में सब कतघ्नी हो जाएंगे, कोई भक्ति नहीं करेगा।

मुझ दास (रामपाल दास) का निकास संत गरीबदास वाले बारहवें पंथ से हुआ है। वह तेरहवां पंथ अब चल रहा है। परमेश्वर कबीर जी ने चलवाया है। गुरू महाराज स्वामी रामदेवानंद जी का आशीर्वाद है। यह सफल होगा और पूरा विश्व परमेश्वर कबीर जी की भक्ति करेगा।

संत गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी सतगुरू रूप में मिले थे। परमात्मा तो कबीर हैं ही। वे अपना ज्ञान बताने स्वयं पथ्वी पर तथा अन्य लोकों में प्रकट होते हैं। संत गरीबदास जी ने ''असुर निकंदन रमैणी'' में कहा है कि ''सतगुरू दिल्ली मंडल आयसी। सूती धरती सूम जगायसी। दिल्ली के तख्त छत्र फेर भी फिराय सी। चौंसठ योगनि मंगल गायसी।'' **संत गरीबदास जी के सतगुरू ''परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी'' थे।**

परमेश्वर कबीर जी ने कबीर सागर अध्याय ''कबीर बानी'' पष्ठ 136 तथा 137 पर कहा है कि बारहवां (12वां) पंथ संत गरीबदास जी द्वारा चलाया जाएगा।

संवत् सतरह सौ पचहत्तर (1775) होई। जा दिन प्रेम प्रकटै जग सोई।।
साखि हमारी ले जीव समझावै। असंख्यों जन्म ठौर नहीं पावै।।
बारहवें पंथ प्रगट हो बानी। शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मर्म ना पावैं। ये बारा (बारह) पंथ हमही को ध्यावैं।।
बारहवें पंथ हम ही चलि आवैं। सब पंथ मिटा एक पंथ चलावैं।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि 12वें (बारहवें) पंथ तक के अनुयाई मेरी महिमा की साखी जो मैंने (परमेश्वर कबीर जी ने) स्वयं कही है जो कबीर सागर, कबीर साखी, कबीर बीजक, कबीर शब्दावली आदि-आदि ग्रन्थों में लिखी हैं। उनको तथा जो मेरी कपा से गरीबदास जी द्वारा कही गई वाणी के गूढ़ रहस्यों को ठीक से न समझकर स्वयं गलत निर्णय करके अपने अनुयाईयों को समझाया करेंगें, परंतु सत्य से परिचित न होकर असँख्यों जन्म स्थाई घर अर्थात्

सनातन परम धाम (सत्यलोक) को प्राप्त नहीं कर सकेंगे। फिर मैं (परमेश्वर कबीर जी) उस गरीबदास वाले पंथ में आऊँगा जो कलयुग में पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष पूरे होने पर यथार्थ सत कबीर पंथ चलाया जाएगा। उस समय तत्त्वज्ञान पर घर-घर में चर्चा चलेगी। तत्त्वज्ञान को समझकर सर्व संसार के मनुष्य मेरी भक्ति करेंगे। सब अच्छे आचरण वाले बनकर शांतिपूर्वक रहा करेंगे। इससे सिद्ध है कि तेरहवां पंथ जो यथार्थ कबीर पंथ है, वह अब मुझ दास (रामपाल दास) द्वारा चलाया जा रहा है। कृपा परमेश्वर कबीर जी की है। जब परमेश्वर कबीर जी ''तोताद्रि'' स्थान पर ब्राह्मणों के भण्डारे में भैंसे से वेद-मंत्र बुलवा सकते हैं तो वे स्वयं भी बोल सकते थे। समर्थ की समर्थता इसी में है कि वे जिससे चाहें, अपनी महिमा का परिचय दिला सकते हैं। शायद इसीलिए परमेश्वर कबीर जी ने अपनी कृपा से मुझ दास (रामपाल दास) से यह 13वां (तेरहवां) पंथ चलवाया है।

कलयुग वर्तमान में कितना बीत चुका है?

हिन्दु धर्म में आदि शंकराचार्य जी का विशेष स्थान है। दूसरे शब्दों में कहें तो हिन्दु धर्म के सरंक्षक तथा संजीवन दाता भी आदि शंकराचार्य हैं। उनके पश्चात् जो प्रचार उनके शिष्यों ने किया, उसके परिणामस्वरूप हिन्दु देवताओं की पूजा की क्रान्ति-सी आई है। उनके ईष्ट देव श्री शंकर भगवान हैं। उनकी पूज्य देवी पार्वती जी हैं। इसके साथ श्री विष्णु जी तथा अन्य देवताओं के वे पुजारी हैं। विशेषकर ''पंच देव पूजा'' का विधान है :- 1. श्री ब्रह्मा जी 2. श्री विष्णु जी 3. श्री शंकर जी 4. श्री पारासर ऋषि जी 5. श्री कृष्ण द्वैपायन उर्फ श्री वेद व्यास जी पूज्य हैं।

पुस्तक ''जीवनी आदि शंकराचार्य'' में लिखा है कि आदि शंकराचार्य जी का जन्म 508 वर्ष ईशा जी से पूर्व हुआ था।

फिर पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' में भविष्यवाणी की थी जो आदि शंकराचार्य जी के जन्म से पूर्व की है। कहा है कि आदि शंकराचार्य जी का जन्म कलयुग के तीन हजार वर्ष बीत जाने के पश्चात् होगा।

अब गणित की रीति से जाँच करके देखते हैं, वर्तमान में यानि 2012 में कलयुग कितना बीत चुका है?

आदि शंकराचार्य जी का जन्म ईशा जी के जन्म से 508 वर्ष पूर्व हुआ।

ईशा जी के जन्म को हो गए = 2012 वर्ष

शंकराचार्य जी को कितने वर्ष हो गए =2012+508=2520 वर्ष।

ऊपर से हिसाब लगाएं तो शंकराचार्य जी का जन्म हुआ = कलयुग 3000 वर्ष बीत जाने पर।

कुल वर्ष 2012 में कलयुग कितना बीत चुका है =3000+2520=5520 वर्ष।

अब देखते हैं कि 5505 वर्ष कलयुग कौन-से सन् में पूरा होता है =

5520-5505 = 15 वर्ष 2012 से पहले।

2012-15 = 1997 ई. को कलयुग 5505 वर्ष पूरा हो जाता है। संवत् के

हिसाब से स्वदेशी वर्ष फाल्गुन महीने यानि फरवरी-मार्च में पूरा हो जाता है।

जो संतजन मानते हैं कि श्रीमद्भगवत गीता 5151 वर्ष पूर्व कही गई थी। वह गलत है।

''गुरू बिन मोक्ष नहीं''

प्रश्न :- क्या गुरू के बिना भक्ति नहीं कर सकते?

उत्तर :- भक्ति कर सकते हैं, परन्तु व्यर्थ प्रयत्न रहेगा।

प्रश्न :- कारण बताऐं?

उत्तर :- परमात्मा का विधान है जो सूक्ष्मवेद में कहा है :-

कबीर, गुरू बिन माला फेरते, गुरू बिन देते दान।
गुरू बिन दोंनो निष्फल है, पूछो वेद पुराण।।
कबीर, राम कृष्ण से कौन बड़ा, उन्हों भी गुरू कीन्ह।
तीन लोक के वे धनी, गुरू आगे आधीन।।
कबीर, राम कृष्ण बड़े तिन्हूं पुर राजा। तिन गुरू बन्द कीन्ह निज काजा।।

भावार्थ :- गुरू धारण किए बिना यदि नाम जाप की माला फिराते हैं और दान देते हैं, वे दोनों व्यर्थ हैं। यदि आप जी को संदेह हो तो अपने वेदों तथा पुराणों में प्रमाण देखें।

श्रीमद् भगवत गीता चारों वेदों का सारांश है। गीता अध्याय 2 श्लोक 7 में अर्जुन ने कहा कि हे श्री कृष्ण! मैं आपका शिष्य हूँ, आपकी शरण में हूँ। गीता अध्याय 4 श्लोक 3 में श्री कृष्ण जी में प्रवेश करके काल ब्रह्म ने अर्जुन से कहा कि तू मेरा भक्त है। पुराणों में प्रमाण है कि श्री रामचन्द्र जी ने ऋषि वशिष्ठ जी से नाम दीक्षा ली थी और अपने घर व राज-काज में गुरू वशिष्ठ जी की आज्ञा लेकर कार्य करते थे। श्री कृष्ण जी ने ऋषि संदीपनि जी से अक्षर ज्ञान प्राप्त किया तथा श्री कृष्ण जी के आध्यात्मिक गुरू श्री दुर्वासा ऋषि जी थे।

कबीर परमेश्वर जी हमें समझाना चाहते हैं कि आप जी श्री राम तथा श्री कृष्ण जी से तो किसी को बड़ा अर्थात् समर्थ नहीं मानते हो। वे तीन लोक के मालिक थे, उन्होंने भी गुरू बनाकर अपनी भक्ति की, मानव जीवन सार्थक किया। इससे सहज में ज्ञान हो जाना चाहिए कि अन्य व्यक्ति यदि गुरू के बिना भक्ति करता है तो कितना सही है? अर्थात् व्यर्थ है।

❖ गुरू के बिना देखा-देखी कही-सुनी भक्ति को लोकवेद के अनुसार भक्ति कहते हैं। लोकवेद का अर्थ है, किसी क्षेत्र में प्रचलित भक्ति का ज्ञान जो तत्वज्ञान के विपरीत होता है। लोकवेद के आधार से यह दास (संत रामपाल दास) श्री हनुमान जी, बाबा श्याम जी, श्री राम, श्री कृष्ण, श्री शिव जी तथा देवी-देवताओं की भक्ति करता था। हनुमान जी की भक्ति में मंगलवार का व्रत, बुन्दी का प्रसाद बाँटना, स्वयं देशी घी का गिच चुरमा खाता था, बाबा हनुमान को डालडा वनस्पति घी से बनी बुन्दी का भोग लगाता था। हरे राम, हरे कृष्ण,

कष्ण-कष्ण हरे-हरे का मन्त्र जाप करता था। किसी ने बता दिया कि :-

ओम् नाम सबसे बड़ा, इससे बड़ा न कोय।
ऊँ नाम का जाप करे, तो शुद्ध आत्मा होय।।

इस कारण से ओम् नाम का जाप शुरू कर दिया। ओम् नमो शिवायः, यह शिव का मन्त्र जाप करता था। ओम् भगवते वासुदेवायः नमः, यह विष्णु जी का जाप करता था। तीर्थों पर जाना, दान करना, वहाँ स्नान करना, यह भी लोकवेद के आधार से करने जाता था।

जैसे घर में सुख होते थे तो मैं मानता था कि ये सब मेरी उपरोक्त भक्ति के कारण हो रहे हैं। जैसे कक्षा में पास होना, विवाह होना, पुत्र तथा पुत्रियों का जन्म होना, नौकनी लगना। ये सर्व सुख उपरोक्त साधना से ही मानता था। कबीर परमेश्वर जी ने सूक्ष्म वेद में कहा है :-

कबीर, पीछे लाग्या जाऊं था, मैं लोक वेद के साथ।
रास्ते में सतगुरू मिले, दीपक दीन्हा हाथ।।

भावार्थ है कि साधक लोकवेद अर्थात् दन्त कथा के आधार से भक्ति कर रहा था। उस शास्त्रविरूद्ध साधना के मार्ग पर चल रहा था। रास्ते में अर्थात् भक्ति मार्ग में एक दिन तत्वदर्शी सन्त मिल गए। उन्होंने शास्त्रविधि अनुसार शास्त्र प्रमाणित साधना रूपी दीपक दे दिया अर्थात् सत्य शास्त्रानुकूल साधना का ज्ञान कराया तो जीवन नष्ट होने से बच गया। सतगुरू द्वारा बताये तत्वज्ञान की रोशनी में पता चला कि मैं गलत भक्ति कर रहा था। श्री मद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि शास्त्र विधि को त्यागकर जो साधक मनमाना आचरण करते हैं, उनको न तो सुख होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है और न ही गति अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है अर्थात् व्यर्थ साधना है। फिर गीता अध्याय 16 श्लोक 24 में कहा है कि अर्जुन! इससे तेरे लिए कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं।

जो उपरोक्त साधना यह दास (संत रामपाल दास) किया करता था तथा पूरा हिन्दू समाज कर रहा है, वह सब गीता-वेदों में वर्णित न होने से शास्त्र विरूद्ध साधना हुई जो व्यर्थ है।

कबीर, गुरू बिन काहु न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भुस छड़े मूढ़ किसाना।
कबीर, गुरू बिन वेद पढ़ै जो प्राणी, समझै न सार रहे अज्ञानी।।

इसलिए गुरू जी से वेद शास्त्रों का ज्ञान पढ़ना चाहिए जिससे सत्य भक्ति की शास्त्रानुकूल साधना करके मानव जीवन धन्य हो जाए।

''पूर्ण गुरू के वचन की शक्ति से भक्ति होती है''

उदाहरण :- गुरू जी से दीक्षा लेकर भक्ति करना लाभदायक है। बिना गुरू के भक्ति करने से कोई लाभ नहीं होता।

उदाहरण :-

❖ एक राजा की रानी बहुत धार्मिक थी। उसने परमेश्वर कबीर जी से

गुरू दीक्षा ले रखी थी। वह प्रतिदिन गुरू दर्शन के लिए जाया करती थी। राजा को यह अच्छा नहीं लगता था, परंतु वह अपनी पत्नी को वहाँ जाने से रोक नहीं पा रहा था। कारण, एक तो वह उस बड़े शक्तिशाली राजा की लड़की थी, दूसरे वह अपनी पत्नी को प्रसन्न देखना चाहता था।

एक दिन राजा ने अपनी पत्नी से कहा कि आप नाराज न हो तो बात कहूँ? रानी ने कहा कहो। राजा ने कहा कि आप अपने गुरू के पास जाती हैं, भक्ति तो गुरू के बिना भी हो सकती है। रानी ने कहा कि गुरू जी ने बताया है कि गुरू के बिना भक्ति करना व्यर्थ है। राजा ने कहा कि मैं तेरे साथ कल तेरे गुरू जी से मिलूँगा, उनसे यह बात स्पष्ट करूँगा।

राजा ने सन्त जी से प्रश्न किया कि आप जनता को मूर्ख बना रहे हो कि गुरू बिन भक्ति नहीं होती, क्यों भक्ति सफल नही होती? नाम मन्त्र जाप करने होते हैं। एक-दूसरे से पूछकर जाप कर लें, पर्याप्त है। सन्त ने कहा राजन्! आपकी बात में दम है, मैं आपके राज दरबार में आऊँगा। वहाँ इस बात का उत्तर दूँगा। निश्चित दिन को सन्त जी राजा के दरबार में गए। राजा सिंहासन पर विराजमान था, आस-पास सिपाही खड़े थे। संत के बैठने के लिए अलग से कुर्सी रखी थी। सन्त ने जाते ही आस-पास खड़े सिपाहियों से राजा की ओर हाथ करके कहा कि इसे गिरफ्तार कर लो। सिपाही टस से मस नहीं हुए। सन्त ने लगातार तीन बार यही वाक्य, आदेश दोहराया कि इसे गिरफ्तार कर लो, परन्तु राजा को सिपाहियों ने गिरफ्तार नहीं किया।

राजा को सन्त पर क्रोध आया कि यह कमबख्त मेरी पत्नी को इसलिए बहका रहा था कि इसके राज्य को प्राप्त कर लूँ। राजा ने एक बार कहा कि सिपाहियो इसे गिरफ्तार कर लो। राजा के हाथ का सन्त की ओर संकेत था। उसी समय सिपाहियों ने सन्त को गिरफ्तार कर लिया।

सन्त ने कहा कि हे राजन्! आप घर पर बुलाकर सन्त का अनादर कर रहे हो, यह अच्छी बात नहीं। राजा ने कहा आप यह क्या बकवास कर रहे थे। मुझे गिरफ्तार करने का आदेश दे रहे थे। सन्त ने कहा मैं आपके उस प्रश्न का उत्तर दे रहा था कि गुरू से दीक्षा लेकर भक्ति करना क्यों लाभदायक है? मुझे छुड़ाओ तो मैं आपको उत्तर दूँ। राजा ने सिपाहियों से कहा कि छोड़ दो। सिपाहियों ने सन्त को छोड़ दिया। सन्त ने कहा कि हे राजा जी! मैंने यही वाक्य कहा था, "इसे गिरफ्तार कर लो।" सिपाही टस से मस नहीं हुए। आप जी ने भी यही वाक्य कहा था कि तुरंत सिपाहियों ने मुझे गिरफ्तार कर लिया। आपके वचन में राज की शक्ति है। मेरे वचन में आध्यात्मिक शक्ति है। आप उसी नाम-जाप के लिए किसी को भक्ति के लिए कहोगे तो वह मन्त्र कोई कार्य नहीं करेगा। मैं वही नाम जाप करने को कहूँगा, वह तुरन्त प्रभाव से क्रियावान होगा। इसलिए पूर्ण सन्त से दीक्षा लेने से साधक में तुरंत आध्यात्मिक प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है, उसकी आत्मा में भक्ति का अंकुर निकल आता है। सूक्ष्म वेद में कहा है कि:-

सतगुरू पशु मानुष करि डारै, सिद्धि देय कर ब्रह्म बिचारें।

भावार्थ :- सतगुरू पहले मनुष्य को सत्संग सुना-सुनाकर नेक इंसान बनाते हैं, सर्व बुराईयों को छुड़वाते हैं। फिर अपनी भक्ति की सिद्धी अर्थात् शक्ति शिष्य के अन्तःकरण में शब्द से प्रवेश करके ब्रह्म अर्थात् परमात्मा की साधना करने के विचार प्रबल करते हैं जिससे साधक की रूचि भक्ति में दिनों-दिन बढ़ती है। फिर वह देवता बन जाता है। कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, बलिहारी गुरू आपना, घड़ी–घड़ी सौ–सौ बार।
मानुष से देवता किया, करत ना लाई बार।।

इसलिए कहा है कि :-

कबीर, गुरू बिन माला फेरते, गुरू बिन देते दान।
गुरू बिन दोनों निष्फल हैं, चाहे पूछो बेद पुराण।।
योग, यज्ञ तप दान करावै, गुरू विमुख फल कभी नहीं पावै।।

भावार्थ :- गुरू बिन नाम जाप की माला फिराते हैं या दान देते हैं, वह व्यर्थ है। यह वेदों तथा पुराणों में भी प्रमाण है। फिर अन्तिम चौपाई का भावार्थ है कि यदि दीक्षा लेकर फिर गुरू को छोड़कर उन्हीं मन्त्रों का जाप करता रहे तथा यज्ञ, हवन, दान भी करता रहे, वह भी व्यर्थ है। उसको कोई लाभ नहीं होगा।

कबीर, तांते सतगुरू शरणा लीजै, कपट भाव सब दूर करिजै।

अन्य प्रमाण :-

कबीर, गर्भयोगेश्वर गुरू बिना, करते हरि की सेव।
कहैं कबीर बैकुंठ से, फेर दिया सुखदेव।।
राजा जनक गुरू किया, फिर किन्ही हर की सेव।
कहैं कबीर बैंकुठ में, चले गए सुखदेव।।

भावार्थ :- ऋषि वेदव्यास जी के पुत्र सुखदेव जी अपने पूर्व जन्म की भक्ति की शक्ति से उड़कर स्वर्ग में चले जाते थे। एक दिन वे श्री विष्णु जी के लोक में बने स्वर्ग में प्रवेश करने लगे। वहाँ के कर्मचारियों ने ऋषि सुखदेव जी से स्वर्ग द्वार पर पूछा कि ऋषि जी अपने पुज्य गुरूजी का नाम बताओ। सुखदेव जी ने कहा कि गुरू की क्या अवश्यक्ता है? अन्य गुरू धारण करके यहाँ आए हैं, मेरे में स्वयं इतनी शक्ति है कि मैं बिना गुरू के आ गया हूँ। द्वारपालों ने बताया ऋषि जी यह आपकी पूर्व जन्म में संग्रह की हुई भक्ति की शक्ति है। यदि फिर से गुरू धारण करके भक्ति नहीं करोगे तो पूर्व की भक्ति कुछ दिन ही चलेगी। आपका मानव जीवन नष्ट हो जाएगा।

उदाहरण के लिए :- वर्तमान में इन्वर्टर की बैट्री को चार्जर लगाकर चार्ज कर रखा है। यदि चार्जर हटा दिया जाए तो भी इन्वर्टर अपना कार्य करता रहेगा क्योंकि उसमें ऊर्जा संग्रह हो चुकी है। कुछ समय पश्चात् वह सर्व कार्य करना छोड़ देता है, न ट्यूब जलेंगी, न पँखा चलेगा। उसको फिर से चार्ज करना अनिवार्य है। उसके लिए चार्जर चाहिए। चार्जर गुरू जानो, बिजली परमेश्वर जानो।

ऋषि सुखदेव में अपनी सिद्धि का अभिमान था, वह नहीं माना। बात भगवान विष्णु जी तक पहुँच गई। श्री विष्णु जी ने भी यह बात कही कि ऋषि जी पहले आप गुरू बनाओ, फिर यहाँ आओ। सुखदेव जी ने कहा भगवान पृथ्वी लोक पर मेरे समान कोई नहीं है, न कोई ढ़ंग का गुरू है। कृपा आप ही बताऐं कि मैं किसको गुरू बनाऊँ? श्री विष्णु जी ने बताया कि आप राजा जनक को गुरू बनाओ। यह कहकर श्री विष्णु जी अपने महल में चले गए। सुखदेव ऋषि वापिस पृथ्वी पर आए। राजा जनक से दीक्षा लेकर उनके बताए भक्ति मन्त्रों का जाप किया, तब ऋषि सुखदेव जी को स्वर्ग में रहने दिया। इसलिए गुरू बनाकर भक्ति करने से ही सफलता सम्भव है। बिना गुरू भक्ति, दान, आदि-आदि करना व्यर्थ है।

❖ गुरू पूरा हो, झूठे गुरू से कोई लाभ नहीं होता।

प्रश्न :- पूरे गुरू की क्या पहचान है? हम तो जिस भी सन्त से ज्ञान सुनते हैं, वह पूर्ण सतगुरू लगता है।

उत्तर :- सूक्ष्मवेद में गुरू के लक्षण बताए हैं :-

गरीब, सतगुरू के लक्षण कहूँ, मधुरे बैन विनोद।
चार वेद छः शास्त्र, कह अठारह बोध।।

सन्त गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, हरियाणा) को परमेश्वर कबीर जी मिले थे। उनकी आत्मा को ऊपर अपने सत्यलोक (सनातन परम धाम) में लेकर गए थे। ऊपर के सर्व लोकों का अवलोकन कराकर वापिस पृथ्वी पर छोड़ा था। उनको सम्पूर्ण आध्यात्म ज्ञान बताया था। उनका ज्ञानयोग परमेश्वर कबीर जी ने खोला था। उसके आधार से सन्त गरीबदास जी ने गुरू की पहचान बताई है कि जो सच्चा गुरू अर्थात् सतगुरू होगा, वह ऐसा ज्ञान बताता है कि उसके वचन आत्मा को आनन्दित कर देते हैं, बहुत मधुर लगते हैं क्योंकि वे सत्य पर आधारित होते हैं। कारण है कि सतगुरू चार वेदों तथा सर्व शास्त्रों का ज्ञान विस्तार से कहता है।

यही प्रमाण परमेश्वर कबीर जी ने सूक्ष्मवेद में कबीर सागर के अध्याय ''जीव धर्म बोध'' में पृष्ठ 1960 पर दिया है" :-

गुरू के लक्षण चार बखाना, प्रथम वेद शास्त्र को ज्ञाना।।
दुजे हरि भक्ति मन कर्म बानि, तीजे समदृष्टि करि जानी।।
चौथे वेद विधि सब कर्मा, ये चार गुरू गुण जानों मर्मा।।

सरलार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि जो सच्चा गुरू होगा, उसके चार मुख्य लक्षण होते हैं :-

1. सब वेद तथा शास्त्रों को वह ठीक से जानता है।

2. दूसरे वह स्वयं भी भक्ति मन-कर्म-वचन से करता है अर्थात् उसकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं होता।

3. तीसरा लक्षण यह है कि वह सर्व अनुयाईयों से समान व्यवहार करता है, भेदभाव नहीं रखता।

4. चौथा लक्षण यह है कि वह सर्व भक्ति कर्म वेदों (चार वेद तो सर्व जानते

हैं 1. ऋग्वेद, 2. यजुर्वेद, 3. सामवेद, 4. अथर्ववेद तथा पाँचवां वेद सूक्ष्मवेद है, इन सर्व वेदों) के अनुसार करता और कराता है।

❖ वेदों (चारों वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) में केवल ओम् = ॐ यह एक नाम है जाप करने का।

प्रमाण = यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 15 तथा 17 में।

मन्त्र 15 में कहा है कि ओम् (ॐ) नाम का स्मरण कार्य करते-करते करो, विशेष तड़फ के साथ करो, मनुष्य जीवन का परम कर्त्तव्य मानकर स्मरण करो, ॐ का जाप मृत्यु पर्यन्त करने से इतना अमरत्व प्राप्त हो जाएगा जितना ॐ के स्मरण से होता है। (यजुर्वेद 40/15)

❖ यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 17 में वेद ज्ञान दाता ब्रह्म ही है। कहा है कि जो पूर्ण परमात्मा है, वह तो परोक्ष (छुपा है यानि अव्यक्त) है। वह सबकी दृष्टि में नहीं आता। (उसकी जानकारी यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 में बताई है कि उसका यथार्थ ज्ञान तत्वदर्शी सन्त ही जानते हैं, उनसे सुनो) फिर यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 17 में आगे कहा है कि (अहम् खम् ब्रह्म) मैं ब्रह्म हूँ। मेरा ओम् = ॐ नाम है। मैं ऊपर दिव्य आकाश रूपी ब्रह्म लोक में रहता हूँ। (यजुर्वेद 40/17)

यही प्रमाण श्री देवी महापुराण :- (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी) के सातवें स्कंद में पृष्ठ 562-563 पर श्री देवी जी ने राजा हिमालय को बताया है कि राजन्! आप यदि आत्म-कल्याण चाहते हो तो मेरी भक्ति सहित सर्व बातों को छोड़ दो, केवल एक ॐ नाम का जाप करो, ब्रह्म प्राप्ति का उद्देश्य रखो। इससे आप ब्रह्म को प्राप्त हो जाओगे, वह ब्रह्म ब्रह्मलोक रूपी दिव्य आकाश में रहता है। इससे स्पष्ट हुआ कि वेदों मे केवल एक "ओम्" नाम ही जाप का है। श्रीमद् भगवत गीता जो वेदों का सारांश है, उसमें अध्याय 8 श्लोक 13 में कहा है :-

ओम् इति एकाक्षरम् ब्रह्म व्याहरन् माम् अनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन् देहम् सः याति परमाम् गतिम्।।

अनुवाद :- गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने कहा है कि मुझ ब्रह्म का केवल ओम् = ॐ, यह एक अक्षर है, इसका उच्चारण-स्मरण करता हुआ जो साधक शरीर त्यागकर जाता है, वह मृत्यु उपरान्त ॐ नाम के स्मरण से मिलने वाली परम गति अर्थात् ब्रह्म लोक को प्राप्त होता है।

श्री मद्भगवत गीता तथा वेदों में इसके अतिरिक्त अर्थात् "ओम्" = ॐ के अतिरिक्त कोई नाम ब्रह्म साधना का नहीं है।

प्रमाणित हुआ कि ॐ = ओम् नाम का जाप शास्त्र प्रमाणित है।

❖ गीता ज्ञान दाता ने स्पष्ट किया है कि अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, आगे भी होंगे। मेरी उत्पत्ति को ऋषि तथा देवतागण नहीं जानते। (गीता अध्याय/श्लोक 2/12, 4/5, 10/2)

इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता ब्रह्म नाशवान है तथा जन्मता-मरता

है। इसके पुजारी भी जन्म-मरण के चक्र में ही रहेंगे। इसलिए गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में कहा है कि ब्रह्म लोक में गए साधक भी पुनर्जन्म में रहते हैं। इसलिए गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि हे भारत! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा, उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परमशान्ति तथा सनातन परम धाम अर्थात् सत्यलोक को प्राप्त होगा।

❖ फिर गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जब तत्वदर्शी सन्त से तत्वज्ञान प्राप्त हो जाए, उसके बताए अनुसार साधना करके उसके पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। केवल उस परमेश्वर की पूजा करो।

गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है :-

जरा मरण मोक्षाय माम् आश्रित्य यतन्ति ये।
ते तत् ब्रह्म विदुः कृतस्नम् अध्यात्मम् कर्म च अखिलम्।।

भावार्थ :- गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि जो मेरे बताए ज्ञान पर आश्रित होकर अर्थात् मेरे कहे अनुसार तत्वदर्शी संतों से तत्वज्ञान जान लेते हैं। जो जरा अर्थात् वृद्धावस्था तथा मृत्यु के कष्ट से मोक्ष प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करते हैं। संसार की किसी कीमती वस्तु की इच्छा भक्ति के प्रतिफल में नहीं करते हैं। वे (तत् ब्रह्म विदुः) उस ब्रह्म को संपूर्ण आध्यात्म को और सर्व कर्मों को जानते हैं।

❖ अर्जुन ने गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में पूछा कि "तत् ब्रह्म" क्या है? इसका उत्तर गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 3 में दिया है। कहा है कि वह "परम अक्षर ब्रह्म" है।

❖ गीता अध्याय 8 श्लोक 5 तथा 7 में तो गीता ज्ञान दाता ने अपनी भक्ति करने को कहा है और विश्वास दिलाया है कि मेरी भक्ति से मुझे प्राप्त होगा, मेरी भक्ति से जन्म-मरण, कर्म चक्र बना रहेगा, युद्ध भी करना पड़ेगा, परमशान्ति नहीं हो सकती।

❖ फिर गीता ज्ञान दाता ने तुरन्त गीता अध्याय 8 श्लोक 8, 9, 10 में कहा है कि ''तत् ब्रह्म'' अर्थात् "परम अक्षर ब्रह्म" की भक्ति करने वाला उस सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् मेरे से दूसरे दिव्य परमेश्वर को प्राप्त होगा।

❖ इसी प्रकार परम अक्षर ब्रह्म की महिमा गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में बताई है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में दो पुरूष बताए हैं, एक क्षर पुरूष। यह गीता ज्ञान दाता है जिसका 21 ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है। यह गीता ज्ञान दाता ब्रह्म है।

दूसरा अक्षर पुरूष बताया है जिसका 7 शंख ब्रह्माण्ड का क्षेत्र है। ये दोनों नाशवान बताऐं हैं। इनके लोकों में सर्व जीव भी नाशवान बताए हैं:-

गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में बताया है कि :-

उत्तम पुरूषः तू अन्यः परमात्मा इति उदाहृतः
यः लोक त्रयम् आविश्य विभर्ति अव्ययः ईश्वरः

अनुवाद :- उत्तम पुरूष = पुरूषोत्तम अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म तो ऊपर वर्णित क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष से अन्य है जो परमात्मा कहा जाता है जो तीनों लोकों {क्षर पुरूष के 21 ब्रह्माण्डों के क्षेत्र वाला लोक, दूसरा अक्षर पुरूष के 7 शंख ब्रह्माण्डों वाला लोक, तीसरा ऊपर के चार लोकों (सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी लोक) इस प्रकार बने तीनों लोकों} में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है, वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है।

❖ **गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में इस परम अक्षर ब्रह्म की प्राप्ति के मन्त्र बताए हैं :-**

ऊँ तत् सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविधः स्मतः।
ब्राह्मणाः तेन वेदाः यज्ञाः च विहिता पुरा।।

ब्रह्मणः = सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति की साधना के अर्थात् परमेश्वर के उस परमपद को प्राप्त करने के मन्त्र बताए हैं, जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते हैं। जहाँ परम शान्ति को प्राप्त होते हैं जो सनातन परम धाम है।

ऊँ = "ब्रह्म" अर्थात् "क्षर पुरूष" का मन्त्र है जो प्रत्यक्ष है।

तत् = यह "अक्षर पुरूष" का जाप मन्त्र है। यह मन्त्र सांकेतिक है, वास्तविक मन्त्र सूक्ष्मवेद में बताया है। यह मन्त्र दीक्षा के समय दीक्षार्थी को सार्वजनिक किया जाता है, अन्य को नहीं बताया जाता।

सत् = यह "परम अक्षर पुरूष" की साधना का मन्त्र है। यह भी सांकेतिक है। दीक्षार्थी को दीक्षा के समय बताया जाता है। यथार्थ मन्त्र सूक्ष्मवेद में लिखा है। यही प्रमाण सामवेद के मंत्र सँख्या 822 में भी है कि तीन नाम के जाप से पूर्ण मोक्ष प्राप्त होता है :-

संख्या न. 822 सामवेद उतार्चिक अध्याय 3 खण्ड न. 5 श्लोक न. 8(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):-

मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नभिर्यतः परि कोशां असिष्यदत्।
त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरन्निन्द्रस्य वायुं सख्याय वर्धयन्।।8।।

मनीषिभिः—पवते—पूर्व्यः—कविर्—नभिः—यतः—परि—कोशान्—असिष्यदत्—त्रि—तस्य—नाम—जनयन्—मधु—क्षरनः—न—इन्द्रस्य—वायुम्—सख्याय—वर्धयन्।

शब्दार्थ—(पूर्व्यः) सनातन अर्थात् सबसे प्रथम प्रकट (कविर नभिः) कबीर परमेश्वर मानव रूप धारण करके अर्थात् गुरु रूप में प्रकट होकर (मनीषिभिः) बुद्धिमान भक्तों को (त्रि) तीन (नाम) मन्त्र अर्थात् नाम उपदेश देकर (पवते) पापरहित यानि पवित्र करके (जनयन्) जन्म व (क्षरनः) मत्यु से (न) रहित करता है तथा (तस्य) उसके (वायुम्) प्राण अर्थात् जीवन—स्वांसों को जो संस्कारवश गिनती के डाले हुए होते हैं को (कोशान्) अपने भण्डार से (सख्याय) मित्रता के आधार से (परि) पूर्ण रूप से (वर्धयन्) बढ़ाता है। (यतः) जिस कारण से (इन्द्रस्य) परमेश्वर के (मधु) वास्तविक आनन्द को (असिष्यदत्) अपने आशीर्वाद प्रसाद से प्राप्त करवाता है।

भावार्थ :- इस मन्त्र में स्पष्ट किया है कि पूर्ण परमात्मा कविर अर्थात् कबीर मानव शरीर में गुरु रूप में प्रकट होकर प्रभु प्रेमीयों को तीन नाम का जाप देकर सत्य भक्ति कराता है तथा उस मित्र भक्त को पवित्रकरके अपने आशीर्वाद से पूर्ण परमात्मा अर्थात् अपनी प्राप्ति का मार्ग बताकर पूर्ण सुख प्राप्त कराता है। साधक की आयु बढाता है। यही प्रमाण गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में है कि ओम्-तत्-सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविद्य स्मृतः भावार्थ है कि पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने का ॐ (1) तत् (2) सत् (3) यह मन्त्र जाप स्मरण करने का निर्देश है। इस नाम को तत्वदर्शी संत से प्राप्त करो। तत्वदर्शी संत के विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है तथा गीता अध्याय नं. 15 श्लोक नं. 1 व 4 में तत्वदर्शी सन्त की पहचान बताई तथा कहा है कि तत्वदर्शी सन्त से तत्वज्ञान जानकर उसके पश्चात् उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए। जहां जाने के पश्चात् साधक लौट कर संसार में नहीं आते अर्थात् पूर्ण मुक्त हो जाते हैं। उसी पूर्ण परमात्मा से संसार की रचना हुई है।

विशेष :- उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि पवित्र चारों वेद भी साक्षी हैं कि पूर्ण परमात्मा ही पूजा के योग्य है, उसका वास्तविक नाम कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है तथा तीन मंत्र के नाम का जाप करने से ही पूर्ण मोक्ष होता है।

यह तीन मन्त्र का जाप चारों वेदों के सारांश श्री मद्भगवत गीता में प्रमाण है कि इससे वह स्थान प्राप्त होता है, जहाँ जाने के बाद साधक लौटकर कभी संसार में नहीं आते। जो सनातन परम धाम है, जहाँ जाने के पश्चात् परम शान्ति प्राप्त होती है।

वेदों व गीता में यह अनमोल तीन नाम का मन्त्र अस्पष्ट अर्थात् सांकेतिक है। इसलिए चारों वेदों व गीतानुसार साधना करने से वह स्थान व परमात्मा प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए गीता अध्याय 4 श्लोक 32 तथा 34 में गीता ज्ञान दाता ने स्पष्ट किया है कि यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का यथार्थ ज्ञान (ब्रह्मणः मुखे) सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म अपने मुख-कमल से वाणी बोलकर बताता है, वह सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी कही जाती है, उसे तत्वज्ञान तथा सूक्ष्म वेद भी कहते हैं। उसके जानने के पश्चात् सर्वपापों से मुक्त हो जाता है। जिसमें सम्पूर्ण भक्ति मन्त्र तथा विधि बताई है। (गीता अध्याय 4 श्लोक 32)

❖ गीता अध्याय 4 श्लोक 34 = उस तत्वज्ञान को तू तत्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ, उनको दण्डवत् प्रणाम करने से, कपट छोड़कर नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्मा तत्व को भली-भाँति जानने वाले ज्ञानी महात्मा तुझे तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे। (गीता अध्याय 4 श्लोक 34)

सज्जनों ! वह तत्वदर्शी सन्त यह दास (संत रामपाल दास) है। वह तत्वज्ञान मेरे पास है। मेरे अतिरिक्त वर्तमान में किसी के पास नहीं है। विश्व में लगभग 7 अरब मानव आबादी है। इन अरबों मनुष्यों में मेरे अतिरिक्त कोई इस ज्ञान को जानने वाला नहीं है।

गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तक तो गीता ज्ञान दाता ने तीनों गुणों

(रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) की भक्ति करने वाले 1. राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, 2. मनुष्यों में नीच, 3. दूषित कर्म करने वाले, 4. मूर्ख मेरी भक्ति भी नहीं करते।

फिर गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 16 से 18 तक अपनी साधना करने वालों की स्थिति बताई है कि मेरी भक्ति चार प्रकार के (1. आर्त, 2. अथार्थी, 3. जिज्ञासु, 4. ज्ञानी) करते हैं। इनमें केवल ज्ञानी साधक श्रेष्ठ बताया, परंतु वह भी तत्वज्ञान न होने के कारण मेरे वाली अर्थात् ब्रह्म की अनुतम् अर्थात् घटिया गति में ही स्थित रह गया।

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 19 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मेरी पूजा भी जन्म-जन्मान्तरों के अन्त के जन्म में कोई ज्ञानी आत्मा ठीक से करता है। अन्यथा अन्य उपासना में ही लगे रहते हैं। यह बताने वाला महात्मा तो बहुत दुर्लभ है कि केवल वासुदेव अर्थात् सर्वगतम् ब्रह्म ही सब कुछ है। उसी की भक्ति से परम शान्ति प्राप्त होती है, उसी की भक्ति से सनातन परम धाम प्राप्त होता है। उसी की भक्ति से वह परम पद प्राप्त होता है जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते, वह परम अक्षर ब्रह्म सर्व का उत्पत्तिकर्ता है, वही संसार रूपी वृक्ष की मूल है जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है, वही पापनाशक है। वही पूर्ण मोक्षदायक है, उसी की भक्ति करनी चाहिए।

प्रिय पाठको! वह तत्वदर्शी सन्त वर्तमान में यह दास (संत रामपाल दास) है। मेरे पास सम्पूर्ण वेद-शास्त्रों का ज्ञान है। वासुदेव भगवान की भक्ति के सम्पूर्ण मन्त्र हैं।

अब ''वासुदेव'' की परिभाषा बताते हैं :-

''वासुदेव की परिभाषा''

गीता अध्याय 3 श्लोक 14-15 में कहा है कि सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं। अधिक जानकारी पृष्ठ 215-216 पर है, वहाँ से पढ़े। यहाँ पर केवल इस विषय को लेते हैं।

फिर कहा है कि ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष की उत्पत्ति अविनाशी परमात्मा से हुई है जिसके विषय में गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है। इससे सिद्ध है कि ''सर्वगतम् ब्रह्म'' = सर्वव्यापी परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् वासुदेव सदा ही यज्ञों में प्रतिष्ठित है।

विचार करें :- सर्वगतम् ब्रह्म का अर्थ है सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा। (गीता अध्याय 3 श्लोक 15)

1. श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी तीनों देवता एक ब्रह्माण्ड में बने तीनों लोकों (स्वर्ग लोक, पृथ्वी लोक, पाताल लोक) में केवल एक-एक विभाग अर्थात् गुण के प्रधान हैं। ये सर्वगतम् ब्रह्म अर्थात् सर्वव्यापी परमात्मा = वासुदेव नहीं हैं।

2. ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष :- यह केवल 21 ब्रह्माण्डों का प्रभु है। यह भी सर्वव्यापी अर्थात् वासुदेव नहीं है।

3. अक्षर पुरूष :- यह केवल 7 शंख ब्रह्माण्डों का प्रभु है, यह भी सर्वव्यापी अर्थात् वासुदेव नहीं है।

4. परम अक्षर ब्रह्म :- यह सर्व ब्रह्माण्डों का स्वामी है, सर्व का धारण-पोषण करने वाला है, यह वासुदेव है।

विशेष :- अधिक जानकारी के लिए पढ़ें इसी पुस्तक के "सृष्टि रचना" अध्याय में।

❖ जैसा कि आप जी को पूर्व में बताया है कि परम अक्षर ब्रह्म स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर अच्छी आत्माओं को मिलते हैं। उनको तत्वज्ञान बताते हैं। इसी विधानानुसार वही परमात्मा सन्त गरीबदास जी को (गाँव = छुड़ानी, जिला-झज्जर, प्रांत-हरियाणा) सन् 1727 में मिले थे। एक जिन्दा महात्मा की वेशभूषा में थे। गरीब दास जी की आत्मा को उस सनातन परम धाम में ले गए थे। फिर ऊपर के सर्व ब्रह्माण्डों तथा प्रभुओं की स्थिति बताकर तत्वज्ञान से परीचित कराकर वापिस शरीर में छोड़ा था। उस समय सन्त गरीब दास जी की आयु 10 वर्ष थी। उस दिन सन्त गरीबदास जी को मृत जानकर चिता पर रखकर अन्तिम संस्कार की तैयारी कर रहे थे। उसी समय उनकी आत्मा को शरीर में प्रवेश करा दिया। जीवित होने पर सर्व कुल के लोगों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसके पश्चात् सन्त गरीबदास जी ने एक अनमोल ग्रन्थ की रचना की। उसमें आँखों देखा तथा स्वयं परमात्मा द्वारा बताए ज्ञान को बताया जो एक गोपाल दास नामक दादू पंथी साधु ने लिखा था। जो वर्तमान में प्रिंट करा रखा है।

❖ पंजाब प्रान्त में लुधियाना शहर के पास एक वासीयर गाँव है। उसमें एक प्रभु प्रेमी व्यक्ति रामराय उर्फ झूमकरा रहता था। उसने सन्त गरीब दास जी की महिमा सुनी तो दर्शनार्थ गाँव छुड़ानी में चला आया। सन्त गरीबदास जी ने यह ज्ञान सुनाया जो इस दास (संत रामपाल दास) को सन्त गरीब दास से प्राप्त हुआ है जो आप जी को इस पुस्तक तथा अन्य पुस्तकों के द्वारा सुनाया है।

उस रामराय ने प्रश्न किया कि हे महात्मा जी! यह ज्ञान तो आज तक किसी ने नहीं बताया। सन्त गरीब दास जी ने वाणी के द्वारा बताया।

कोट्यों मध्य कोई नहीं राई झूमकरा, अरबों में कोई गरक सुनो राई झूमकरा।।

अनुवाद व भावार्थ :- सन्त गरीबदास जी ने बताया कि यह ज्ञान करोड़ों में किसी के पास नहीं मिलेगा, अरबों में किसी एक के पास मिलेगा। वह संत सर्व ज्ञान सम्पन्न सम्पूर्ण साधना के मन्त्रों से गरक अर्थात् परिपूर्ण होता है। प्रिय पाठको! वह संत वर्तमान में बरवाला जिला-हिसार वाला है। ज्ञान समझो और लाभ उठाओ।

प्रश्न :- प्राचीन काल से चली आ रही भक्ति की साधना को आप गलत कैसे कह सकते हो? जैसे तप सर्व ऋषिजन किया करते थे, हम सर्व हिन्दू समाज में देख रहे हैं - सब हरे कृष्णा, हरे राम, राधे-राधे श्याम मिला दे, ओम नमः शिवाय,

ओम नमो भगवते वासुदेवाय: नम:, जय सियाराम, राधे श्याम, ओम तत् सत्, में से कोई एक मन्त्र का जाप करते आ रहे हैं। वर्तमान में भी कर रहे हैं। श्री रामचन्द्र जी, श्री कष्ण जी को हम पूर्ण परमात्मा मानते हैं, इसलिए इनके नाम जपते हैं। आप इन नाम जाप मन्त्रों को व्यर्थ जाप बताते हैं, स्पष्टीकरण दें।

उत्तर :- प्राचीन काल में यदि यह साधना होती और ये मन्त्र होते तो श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 1-2 में गीता ज्ञान दाता ये नहीं कहते कि यह योग अर्थात् जो भक्ति विधि मैं गीता ज्ञान में बता रहा हूँ, यह अब लुप्त प्राय: हो गया है, नष्ट हो गया है। यह ज्ञान तथा भक्ति मैंने सूर्यदेव से कही था, फिर मनु को सूर्य ने, मनु ने अपने पुत्र इक्ष्वाकु को कहा, फिर कुछ राज ऋषियों ने जाना। अब बहुत समय से अर्थात् द्वापर से बहुत समय पहले से ही लुप्त था तथा मनु, इक्ष्वाकु आदि-आदि सर्व सत्ययुग के प्रथम चरण में हुए थे। यदि आप श्री रामचन्द्र जी पुत्र राजा दशरथ तथा श्री कष्ण चन्द्र पुत्र श्री वासुदेव को पूर्ण परमात्मा मानते हैं। इसलिए इनके नाम हरे राम, हरे कष्ण, आदि-आदि जाप करते हैं और इन्हीं से मोक्ष मानते हैं तो श्रीमद्भगवत गीता मे वर्णित यथार्थ प्राचीन योग अर्थात् भक्ति की विधि के विपरीत होने से व्यर्थ हैं। शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण हुआ। जिस कारण से उपरोक्त प्रश्न में लिखे अन्य मन्त्र भी शास्त्र प्रमाणित नहीं हैं, इसलिए व्यर्थ हैं। गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि जो पुरूष शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण करते हैं। उनको न तो सुख प्राप्त होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है, न उनकी गति होती है अर्थात् व्यर्थ साधना है। (गीता अध्याय 16 श्लोक 23)

❖ गीता अध्याय 16 श्लोक 24 में कहा है कि इससे तेरे लिए अर्जुन, कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। भावार्थ है कि जो भक्ति की विधि प्रमाणित शास्त्रों में (चारों वेदों = ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद तथा इन्हीं चारों वेदों का सारांश श्री मद्भगवत गीता तथा सूक्ष्मवेद = जो परमात्मा स्वयं ने अपने मुख से बोला था। ये भक्ति के ज्ञान तथा समाधान के प्रमाणित शास्त्र हैं) वर्णित नहीं है, वह शास्त्रविरूद्ध साधना है। इसलिए भक्ति के कौन-से कर्म करने चाहिए और कौन-से नहीं करने चाहिए, उनके लिए शास्त्रों को ही आधार मानों। शास्त्रों में वर्णित भक्ति विधि को अपनाओ और सब त्याग दो।

❖ श्री राम जी का जन्म त्रेतायुग के अन्तिम चरण में हुआ था। श्री कष्ण जी का जन्म द्वापरयुग के अन्तिम चरण में हुआ था। सत्ययुग से ही मानव भक्ति करता आ रहा है। उस समय कौन राम थे? आप कहोगे कि श्री विष्णु जी तो सत्ययुग से भी पहले के हैं और श्री राम, श्री कष्ण भी स्वयं श्री विष्णु जी ही थे। सत्ययुग में भी प्रमाण है कि महर्षि बाल्मिकी जी राम-राम नाम जपते थे, वे विष्णु-विष्णु नहीं जपते थे। इससे सिद्ध हुआ कि श्री विष्णु जी, श्री राम, श्री कष्ण जी से भिन्न कोई "राम" अर्थात् "मालिक" है। उस राम का जाप करना चाहिए जो गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में है। जिसके विषय में कहा है कि "तत् ब्रह्म" को

जानने वाले केवल जरा अर्थात् वृद्ध अवस्था तथा मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए ही भक्ति करते हैं। अर्जुन ने गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में प्रश्न किया कि वह ”तत् ब्रह्म“ क्या है?

गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में उत्तर दिया कि वह ”परम अक्षर ब्रह्म” है। गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 5, 7 में गीता दान दाता ने अपनी भक्ति करने को कहा है जिसका जाप मन्त्र गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 13 में बताया है। (ओम् इति एकाक्षरम् ब्रह्म व्याहरन् माम् अनुस्मरन्.......)

❖ गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 8, 9, 10 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य उस तत् ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करने को कहा है। उसकी भक्ति का नाम जाप मन्त्र गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में बताया है:-

ॐ तत् सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणाः तेन वेदाः च यज्ञाः च विहिताः पुरा।।

सरलार्थ :- ब्रह्मणः = सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति का ॐ, तत्, सत् मन्त्र के स्मरण का (निर्देशः) आदेश है। जो (त्रिविधः) तीन प्रकार से (स्मृतः) स्मरण के लिए कहा है (ब्राह्मणाः) विद्वान् अर्थात् तत्वदर्शी सन्त (तेन) उस (वेदाः) ज्ञान के आधार से भक्ति करते थे (च) और (यज्ञाः) धार्मिक यज्ञों का अनुष्ठान (च) और अन्य भक्ति कर्म (पुरा) सृष्टि की आदि अर्थात् सृष्टि के प्रारम्भ में (विहिता) किए जाते थे।

श्रीमद् भगवत गीता से सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता से अन्य कोई पूर्ण परमात्मा है जो श्री विष्णु जी, श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी से भी भिन्न है। जिसके विषय में गीता अध्याय 15 श्लोक 1, 4, 17 में तथा गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में तथा और अनेकों स्थानों पर गीता में कहा गया है, वह पूर्ण परमात्मा है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में दो पुरूष बताए हैं। दोनों नाशवान बताए हैं। उनके अन्तर्गत जितने प्राणी हैं, वे भी नाशवान हैं। (1) (क्षर पुरूष है, यह केवल इक्कीस ब्रह्माण्डों का प्रभु है, (2) अक्षर पुरूष यह 7 शंख ब्रह्माण्ड का प्रभु है। ये दोनों ही पूर्ण परमात्मा नहीं हैं। (गीता अध्याय 15 श्लोक 16)

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि उत्तमः पुरूषः तूः अन्यः अर्थात पुरूषोतम तो कोई ऊपर वर्णित दोनों पुरूषों (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) से भिन्न है जिसको (परमात्मा इति उदाहृतः) परमात्मा कहा गया है। (यः लोकत्रयम्) जो तीनों लोकों में (आविश्य विभर्ति) प्रवेश करके धारण-पोषण करता है, (अव्ययः ईश्वरः) अविनाशी परमेश्वर है। (गीता अध्याय 15 श्लोक 17)

❖ पूर्ण परमात्मा परम अक्षर ब्रह्म है सिद्ध हुआ। उसकी भक्ति का मन्त्र ॐ, तत्, सत् है, यह भी सिद्ध हुआ। ॐ, तत्, सत्, जो तीन मन्त्र हैं, ये उपरोक्त तीनों प्रभुओं (ॐ = क्षर पुरूष अर्थात् क्षर ब्रह्म गीता ज्ञान दाता का, तत् = यह सांकेतिक है जो इसी पुस्तक में पूर्व में विवरण है, वहाँ पढ़ें, यह तत् नाम जाप = अक्षर पुरूष का है) सत् = यह भी सांकेतिक है, अधिक विस्तार पूर्व में दिए प्रकरण में इसी पुस्तक

में पढ़ें। यह सत् मन्त्र परम अक्षर ब्रह्म) का है। श्री मद्भगवत गीता में ये पूर्ण मोक्ष प्राप्ति के सांकेतिक मन्त्र हैं। जो आज तक (सन् 2012 तक) किसी ने नहीं स्पष्ट किए। आप जी जो हरि ओम, तत् सत् जाप करते हैं, वह भी व्यर्थ है क्योंकि आप जी को तत् तथा सत् के वास्तविक मन्त्रों का ज्ञान नहीं है।

उदाहरण :- एक धनी व्यक्ति ने अपने धन को अपने घर में गढ़्ढ़ा खोदकर दबा दिया। उस स्थान का केवल धनी व्यक्ति को ही पता था। उस धनी व्यक्ति ने एक बही (पैड) में सांकेतिक स्थान लिख दिया। धनी व्यक्ति की मत्यु अचानक हो गई। पिता का संस्कार करके पुत्रों ने वह पैड उठाई जिसमें पिता जी कहता था कि इस बही में धन कहाँ है, यह लिखा है। जिसे पिता जी किसी को नहीं दिखाते थे।

धनी व्यक्ति के मकान के आगे आँगन था, उस आंगन के एक कोने में मन्दिर बना था। बही (पैड) में लिखा था कि चाँदनी चौदस रात्रि 2 बजे सारा धन मन्दिर के गुम्बज में दबा रखा है। लड़कों ने मन्दिर का गुम्बज रात्रि के 2 बजे फोड़कर धन खोजा, कुछ नहीं मिला। बच्चों को बड़ा दुःख हुआ। एक दिन उनके पिता का मित्र दूसरे गाँव से शोक व्यक्त करने आया। बच्चों ने यथास्थान पर धन न मिलने की चिंता जताई। उस धनी के मित्र ने वह बही मँगाई और व्याख्या पढ़ी तो कहा कि मन्दिर के गुम्बज का पुनः निर्माण कराओ। वैसा ही कराना। मैं फिर किसी दिन आऊँगा, तब धन वाला स्थान बताऊँगा। वह व्यक्ति चांदनी चौदस को आया। रात्रि के दो बजे जिस स्थान पर मन्दिर के गुम्बज की चाँद की रोशनी से छाया थी, उस स्थान पर खुदाई कराई। सारा धन जो बही में लिखा था, वह मिल गया। बच्चे खुश तथा धनी हुए।

आप जी जो हरि ॐ तत् सत् का जाप कर रहे हो। आप मन्दिर का गुम्बज खोद रहे हो, कुछ भी हाथ नहीं आएगा। यथास्थान वास्तविक मन्त्र मेरे (सन्त रामपाल दास के) पास हैं। उनको ग्रहण करके भक्ति धनी तथा सुखी होओ।

प्रश्न :- राधा जी गाँव-बरसाना (उत्तर प्रदेश) नजदीक वन्दावन की रहने वाली थी। वहाँ के व्यक्ति "राधे-राधे" नाम जपते हैं। सुबह-सुबह या कभी-कभी आपस में मिलते हैं तो वे राम-राम नहीं बुलाते। वे कहते हैं, चाचा राधे-राधे। चाचा कहता है कि बेटा राधे-राधे। क्या वे मूर्ख हैं?

उत्तर :- तत्वज्ञान के अभाव से लोकवेद को सत्य ज्ञान मानकर यह शास्त्रविरूद्ध मन्त्रों का जाप चल रहा है। वैसे तो आप जी को पूर्व में स्पष्ट कर ही दिया है कि गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि जो शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण करते हैं अर्थात् जो नाम जाप शास्त्रों में नहीं हैं, उनका जाप करते हैं, उनको न सुख प्राप्त होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है, न उनकी गति होती है अर्थात् व्यर्थ जाप साधना है। इससे तेरे लिए अर्जुन कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यह पहले बता चुका हूँ। अब बात है कि चाचा-भतीजा राधे-राधे शब्द क्यों उच्चारण करते हैं। आप जानते हैं कि राधा

जी कौन थी? राधा भगवान श्री कृष्ण जी की प्रेमिका थी। उस समय बरसाना गाँव के व्यक्ति राधा जी को कुल्टा, बदचलन, निर्लज आदि-आदि विशेषणों से सम्बोधित करते थे। कहते थे यह दूसरे गाँव के नंद बाबा के लड़के से छिप-छिपकर मिलने जाती है, इसे अपने घर पर भी न आने देना। बेटियों पर गलत प्रभाव पड़ेगा। श्रीमान् जी! अब उसी बरसाना के व्यक्ति राधा जी के लिए स्वयं (स्त्री-पुरूष, युवतियाँ) कहते हैं कि राधे-राधे श्याम मिला दे, जैसा कि आप जी ने पूर्व के प्रश्न में बताया था कि हम यह नाम भी जाप करते हैं। अब न राधा जी हैं और न श्री कृष्ण जी। अब बड़बड़ा रहे हैं सनिपात के ज्वर के रोगी की तरह राधे-राधे श्याम मिला दे। यही स्थिति अन्य मन्त्रों की हैं जो आपने पूर्व प्रश्न में कहे हैं, उनकी जानो। वे भी शास्त्र प्रमाणित न होने से व्यर्थ हैं।

❖ अब आपके इस प्रश्न का उत्तर बताता हूँ कि चाचा भी कहता है राधे-राधे, भतीजा भी कहता है राधे-राधे। आपको भी पता है कि राधा जी श्री कृष्ण जी की प्रेमिका थी। आपको यह भी पता है कि जब रूकमणी जी को श्री कृष्ण जी भगाकर रथ में बैठाकर लाने लगा तो रूकमणी जी का भाई अपनी बहन को छुड़ाने के लिए घोड़े पर सवार होकर पीछे दौड़ा था। श्री कृष्ण जी ने पहले तो उसे पीटा था। फिर रथ के पीछे बाँधकर घसीटा था। रूकमणी जी भी श्री कृष्ण जी की प्रेमिका थी। उनके बीच में रूकमणी का भाई आया था। उसकी क्या दशा की थी। श्री कृष्ण जी ने रूकमणी की प्रार्थना पर रूकमणी के भाई की जान बख्सी थी। यदि आज भगवान कृष्ण वर्तमान में होते, राधा भी होती और बरसाना वाले चाचा-भतीजा आपस में ये शब्द बोलते कि 'राधे-राधे' तो क्या श्री कृष्ण जी पसन्द करते? कभी नहीं, चाचा-भतीजा दोनों को रथ से बाँधकर घसीटते। यदि आप किसी की प्रेमिका का नाम लेकर बड़बड़ाओगे तो प्रेमी के ऊपर कैसी गुजरेगी? यदि ताकतवर होगा तो मुँह फोड़ देगा, कमजोर होगा तो रोएगा। उसकी जान को कोसेगा, क्या वह प्रसन्न होगा? नहीं। इसलिए ये नाम जो शास्त्र प्रमाणित नहीं हैं, उनका जाप व्यर्थ है। शास्त्र प्रमाणित नाम मेरे पास हैं। आओ और अपना कल्याण कराओ।

प्रश्न :- आपने प्रश्न (पूर्ण गुरू की क्या पहचान है?) के उत्तर में एक स्थान पर लिखा है कि प्रमाणित हुआ कि ॐ (ओम्) नाम का जाप शास्त्र प्रमाणित है। (काल ब्रह्म की पूजा करनी चाहिए या नहीं?) के उत्तर में बहुत सारे ऋषियों की पूजा को शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण कही है जो ॐ (ओम्) नाम का जाप करते थे।

उत्तर :- वे ऋषि जी ओम् (ॐ) नाम के जाप के साथ हठ करके घोर तप भी करते थे। जिस कारण से उनकी साधना को शास्त्र विरूद्ध कहा है। ओम् (ॐ) नाम का जाप शास्त्र प्रमाणित तो है, परंतु मोक्षदायक नहीं है जिससे अनुत्तम गति (मुक्ति) प्राप्त होती है। इसलिए उन ऋषियों की पूजा विधि शास्त्रविरूद्ध है। वेद तथा गीता में उस पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने को कहा है। उसकी भक्ति न करके मनमानी पूजा शास्त्रविरूद्ध है।

प्रश्न :- महर्षि बाल्मिकी जी तो सत्ययुग में हुए थे, वे भी राम-राम जपते थे। क्या यह मन्त्र भी शास्त्र प्रमाणित नहीं हैं?

उत्तर :- पूर्व में बताया है कि गीता अध्याय 4 श्लोक 1-2 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि यह ज्ञान मैंने सूर्य को सुनाया था। उसने अपने पुत्र मनु जी को सुनाया। फिर कुछेक राजऋषियों को प्राप्त हुआ। सत्ययुग के प्रारम्भ में ही ये सब सूर्य, मनु व राजर्षि हुए हैं। उनके बाद यह ज्ञान नष्ट हो गया था। महर्षि बाल्मिकी जी को सप्त ऋषि मिले थे। उन्होंने तपस्या करके सिद्धियाँ प्राप्त की थी। वही हठयोग करके तप विधि महर्षि बाल्मिकी जी को उन्होंने बता दी। जिस हठ योग तप को महर्षि बाल्मिकी जी ने तन-मन से श्रद्धा से किया। कुछ समय उपरान्त शरीर के ऊपर के भाग (सिर) में से आवाज सुनाई दी थी। वह थी "राम-राम"। उसी शब्द का उच्चारण महर्षि बाल्मिकी जी तपस्या के दौरान करने लगे। सुनने वाले को ऐसा लगता है जैसे ये मरा, मरा बोल रहे हैं, वास्तव में राम-राम का ही उच्चारण करते थे। उनको तपस्या का परिणाम मिला, उनमें सिद्धियाँ प्रवेश हो गईं। उनकी दिव्य दृष्टि खुल गई। जिस कारण से उन्होंने श्री रामचन्द्र जी के जन्म से हजारों वर्ष पूर्व ही रामायण अर्थात् श्री रामचन्द्र जी के जन्म की जीवन की सर्व घटनाऐं लिख दी थी, ग्रन्थ का नाम है "बाल्मिकी रामायण" जो संस्कृत भाषा में लिखी गई थी। राम-राम के जाप से कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं होता। परंतु परमात्मा का बोधक शब्द होने से उच्चारण करने से परमात्मा की भूल नहीं पड़ती। इसलिए राम-नाम के उच्चारण का प्रचलन हिन्दू धर्म में प्राचीन समय से है। जैसे स्वामी रामानन्द जी राम-राम शब्द से सम्बोधित करते थे। उसके शिष्य भी एक-दूसरे को राम-राम से सम्बोधित करते थे, परन्तु जाप मन्त्र "ॐ" था। इसी प्रकार हम कबीर पंथी "सत साहेब" बुलाते हैं। हमारा जाप मन्त्र अन्य है। उसी भक्ति से भगवान तक जाया जाता है। सूक्ष्म वेद में कहा है :-

सतगुरू मिले तो इच्छा मेटै, पद मिल पदै समाना।
चल हंसा उस लोक पठाऊँ, जो अजर अमर अस्थाना।
चार मुक्ति जहाँ चम्पी करती, माया हो रही दासी।
दास गरीब अभय पद परसै, मिलै राम अविनाशी।।

''भक्ति किस प्रभु की करनी चाहिए'' गीता अनुसार।

इसलिए सूक्ष्मवेद में कहा कि :-

"भजन करो उस रब का, जो दाता है कुल सब का"

श्रीमद् भगवत् गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में कहा है कि यह संसार ऐसा है जैसे पीपल का वृक्ष है। जो संत इस संसार रूपी पीपल के वृक्ष की मूल (जड़ों) से लेकर तीनों गुणों रूपी शाखाओं तक सर्वांग भिन्न-भिन्न बता देता है। (सः वेद वित्) वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला है अर्थात् वह तत्वदर्शी सन्त है।

अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान तथा वास्तविक आध्यात्म ज्ञान परमात्मा स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर अपने मुख कमल से सुनाता है। प्रमाण के लिए पढ़ें निम्न वेद मंत्र। इन मंत्रों की फोटोकापी कृप्या देखें पुस्तक ''गीता तेरा ज्ञान अमृत'' में जिनका अनुवाद आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानंद तथा उसके अनुयाईयों ने किया है। उसकी त्रुटियाँ लेखक (संत रामपाल दास) ने शुद्ध की हैं।

ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 86 मन्त्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 82 मन्त्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 96 मन्त्र 16 से 20, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 94 मन्त्र 1, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 95 मन्त्र 2, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 54 मन्त्र 3, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 20 मन्त्र 1 में प्रमाण है कि जो सर्व ब्रह्माण्डों का रचनहार, सर्व का पालनहार परमेश्वर है। वह सर्व भुवनों के ऊपर के लोक में बैठा है। (ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 54 मन्त्र 3) वह परमात्मा वहाँ से गति करके अर्थात् सशरीर चलकर यहाँ पृथ्वी पर आता है, भक्तों के संकटों का नाश करता है। उसका नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है। यहाँ पर अच्छी आत्माओं को मिलता है, उनको तत्वज्ञान अपने मुख कमल से बोलकर बताता है। वह परमात्मा ऊपर के लोक में बैठा है। (ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 86 मन्त्र 26-27, मण्डल 82 मन्त्र 1-2 तथा मण्डल नं. 9 सूक्त 20 मन्त्र 1)

परमात्मा पृथ्वी पर कवियों की तरह आचरण करता हुआ विचरण करता है। (ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 94 मन्त्र 1)

परमात्मा अपने मुख से वाणी बोलकर साधकों को भक्ति करने की प्रेरणा करता है। परमात्मा भक्ति के गुप्त मन्त्रों का आविष्कार करता है। (ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 95 मन्त्र 2)

परमात्मा तत्वज्ञान को कविर्वाणी (कबीर वाणी) द्वारा लोकोक्तियों, दोहों, चौपाईयों द्वारा बोलकर सुनाता है। वह कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है जो सन्त रूप में प्रकट होता है। उस परमेश्वर द्वारा ऋषि या सन्तों द्वारा रची असँख्यों वाणियाँ जो तत्वज्ञान है, वे उसके अनुयाईयों के लिए अमृत तुल्य आनंददायक होती हैं।

वह परमेश्वर प्रसिद्ध कवियों में से भी एक प्रसिद्ध कवि की पदवी भी प्राप्त करते हैं। उनको कवि कहते हैं, परंतु वह परमात्मा होता है। वह परमात्मा तीसरे मुक्ति धाम (सत्यलोक) में विराजमान है। जैसे मनुष्य अन्य वस्त्र धारण करता है, ऐसे ही वह परमात्मा भिन्न-भिन्न रूपों में पृथ्वी पर प्रकट होता है। उपरोक्त ऋग्वेद के मन्त्रों से स्पष्ट है कि परमात्मा अपने अमर धाम से चलकर पृथ्वी पर प्रकट होता है। वह अच्छी आत्माओं को मिलता है। वह तत्वदर्शी सन्त की भूमिका करके तत्व ज्ञान दोहों, चौपाईयों, शब्दों द्वारा बोलता है। उस परमेश्वर ने सन् 1398 से 1518 तक 120 वर्ष पृथ्वी पर भारत वर्ष की पावन धरती पर काशी शहर में जुलाहे (धाणक) के रूप में रहकर तत्वज्ञान बताया था।

कबीर, अक्षर पुरूष एक पेड़ है, क्षर पुरूष वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।

विशेष :- कबीर वाणी पुस्तक में एक वाणी ऐसे भी लिखी है :-

कबीर, अक्षर पुरूष वृक्ष का तना है, क्षर पुरूष है डार।
त्रयदेव शाखा भए, पात जानों संसार।।

सरलार्थ :- वृक्ष का जो हिस्सा पृथ्वी से बाहर दिखाई देता है। उसकी जानकारी बताई है कि वृक्ष का जो तना होता है, उसे तो "अक्षर पुरूष" जानें। तने के ऊपर कई मोटी डार निकलती हैं, उनमें से एक डार को ''क्षर पुरूष'' जानें। फिर उस डार के मानों तीन शाखा निकली हैं। वे तीनों देवता :- (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) जानें और उन शाखाओं पर लगे पत्ते जीव-जन्तु जानें।

परमेश्वर कबीर जी ने तत्वज्ञान में सब ज्ञान बताया है। गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में भी कहा है कि यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों की जानकारी (ब्रह्मणः मुखे) सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म ने अपने मुख कमल से बोली, वाणी में विस्तार के साथ कही है, वह तत्वज्ञान है।

गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में कहा है कि जो तत्वज्ञान परमात्मा स्वयं बताता है। उसको उसके कृपा पात्र सन्त ही समझते हैं। उस तत्वज्ञान को तू तत्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ। उनको दण्डवत् प्रणाम (पृथ्वी पर पेट के बल लम्बा लेटकर प्रणाम) करके, नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे तत्वदर्शी सन्त तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

परमेश्वर ने यह तत्वज्ञान स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर बताया था। गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में तत्वदर्शी सन्त की पहचान बताई है कि जो सन्त संसार रूपी वृक्ष को मूल (जड़) से लेकर सर्व अंगों को जानता है, वह तत्वदर्शी सन्त है।

❖ अब जानें संसार रूपी वृक्ष के सर्वांग :-

1. मूल (जड़) :- यह परम अक्षर ब्रह्म है जो सबका मालिक है। सबकी उत्पत्ति करता है। सबका धारण-पोषण करने वाला है जिसकी जानकारी गीता अध्याय 8 श्लोक 1 के प्रश्न का उत्तर गीता अध्याय 8 के ही श्लोक 3, 8, 9, 10 तथा 20, 21, 22 में दिया है। उसी का वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में है। जैसे गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में दो पुरूष बताए हैं :- एक "क्षर पुरूष" दूसरा "अक्षर पुरूष", ये दोनों तथा इनके अन्तर्गत जितने शरीरधारी प्राणी हैं, वे सब नाशवान हैं। जीव आत्मा तो किसी की नहीं मरती।

गीता अध्याय 15 के ही श्लोक 17 में कहा है कि (उत्तम पुरूषः) अर्थात् पुरूषोत्तम तो (अन्यः) अन्य ही है जिसे (परमात्मा इति उदाहृतः) परमात्मा कहा जाता है (यः लोक त्रयम्) जो तीनों लोकों में (अविश्य विभर्ती) प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है (अव्ययः ईश्वरः) अविनाशी परमेश्वर है, यह परम अक्षर ब्रह्म संसार रूपी वृक्ष की मूल (जड़) रूप परमेश्वर है। यह वह परमात्मा है जिसके विषय में सन्त गरीब दास जी ने कहा है :-

"भजन करो उस रब का, जो दाता है कुल सब का"

यह असँख्यों ब्रह्माण्डों का मालिक है। यह क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष का भी मालिक तथा उत्पत्तिकर्ता है।

2. अक्षर पुरूष :- यह संसार रूपी वृक्ष का तना जानें। यह 7 शंख ब्रह्माण्डों का मालिक है, नाशवान है।

3. क्षर पुरूष :- यह गीता ज्ञान दाता है, इसको "क्षर ब्रह्म" भी कहते हैं। इसे संसार वृक्ष की डार जानों। यह केवल 21 ब्रह्माण्डों का मालिक है, नाशवान है।

4. तीनों देवता (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) संसार रूपी वृक्ष की तीन शाखाऐं :- ये एक ब्रह्माण्ड में बने तीन लोकों (पृथ्वी लोक, पाताल लोक तथा स्वर्ग लोक) में एक-एक विभाग के मन्त्री हैं, मालिक हैं।

जैसे = रजगुण विभाग के श्री ब्रह्मा जी मालिक हैं, जिसके प्रभाव से सर्व प्राणी सन्तानोत्पत्ति करते हैं। सतगुण विभाग के श्री विष्णु जी मालिक हैं, जिससे एक-दूसरे में ममता बनी रहती है, कर्मानुसार सर्व का किया फल देते हैं। तमोगुण विभाग के श्री शंकर जी मालिक हैं, जिसके कारण सर्व का अन्त होता है और पात रूप में संसार के प्राणी जानो। यह है संसार रूपी वृक्ष के सर्वांगों की भिन्न-भिन्न जानकारी। यह ज्ञान स्वयं परमेश्वर कबीर जी ने अपने मुख कमल से बोला था। वह कबीर वाणी, कबीर बीजक, कबीर शब्दावली तथा कबीर सागर में श्री धनी धर्मदास (बाँधवगढ़ वाले) द्वारा लिखा गया था। उस परमेश्वर ने तो बताया ही था या वर्तमान में इस दास (संत रामपाल दास) ने समझा है। यह कृपा परमेश्वर कबीर जी की ही है कि सम्पूर्ण आध्यात्म ज्ञान मुझे प्राप्त है।

गीता अध्याय 15 श्लोक 1 के अनुसार तत्वदर्शी सन्त की पहचान से भी यह सिद्ध हुआ कि यह दास (संत रामपाल दास) वह तत्वदर्शी सन्त है।
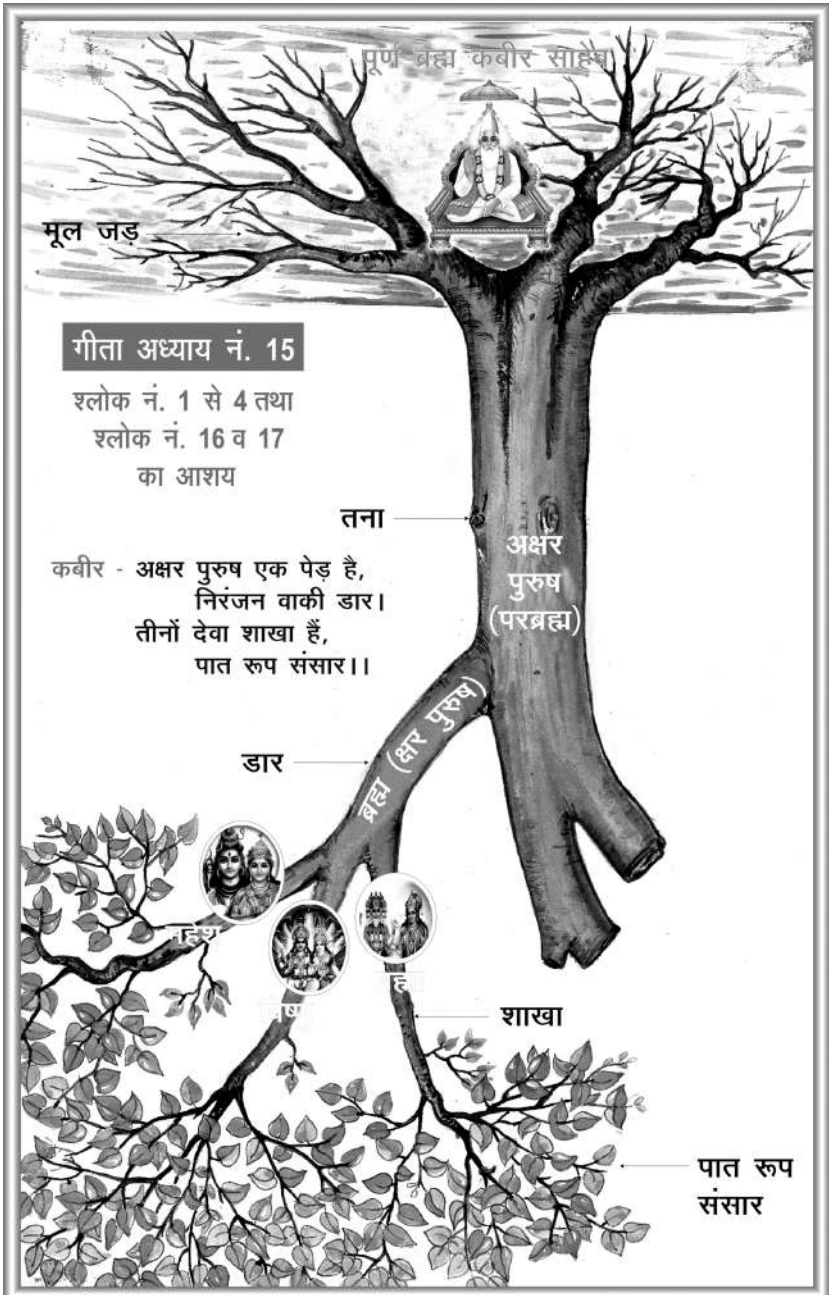
ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष का चित्र

गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16 से 17 का सांराश रूप चित्र।

पुनः प्रसंग पर आते हैं कि ''भजन करो उस रब का, जो दाता है कुल सब का।''

अभी तक तो यही बताया है कि भक्ति करनी चाहिए परंतु अब यह स्पष्ट करते हैं कि भक्ति किसकी करें? 1. श्री ब्रह्मा जी रजगुण की या 2. श्री विष्णु जी सतगुण की या 3. तमगुण श्री शिव जी रूपी तीनों शाखाओं की या फिर 4. क्षर पुरूष गीता ज्ञान दाता डार की या 5. अक्षर पुरूष तना की या 6. परम अक्षर पुरूष = मूल की।

उदाहरण :- यदि हम नर्सरी से कोई आम का पौधा लाते हैं, उसको अपने खेत या घर के आँगन में रोपते हैं तो कैसे रोपते हैं?

जमीन में गढ्ढ़ा खोदते हैं, पौधे की मूल (जड़ों) को गढ्ढ़े में रखकर मिट्टी से ढ़क देते हैं। फिर पौधे की मूल (जड़ों) में पानी से सिंचाई करते हैं, खाद डालते हैं अर्थात् पौधे की जड़ की पूजा करते हैं। जड़ों से आहार तने में, तना अपने अनुसार आहार रखकर बचा हुआ आगे डार में भेज देता है। डार अपने लिए आवश्यक आहार रखकर शेष शाखाओं में भेज देती है। इसी प्रकार शाखाऐं शेष भोजन पत्तों तक भेजती हैं। इस प्रकार वह पौधा पेड़ बनकर फल देता है।

पाठक जन बहुत बुद्धिमान हैं। समझ गए होंगे कि हमने किस परमात्मा की पूजा करनी चाहिए?

सूक्ष्मवेद में परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि :-

कबीर, एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाय।
माली सींचै मूल कूँ, फूलै फलै अघाय।।

एक मूल मालिक की पूजा करने से सर्व देवताओं की पूजा हो जाती है जो शास्त्रानुकूल है। जो तीनों देवताओं में से एक या दो (श्री विष्णु सतगुण तथा श्री शंकर तमगुण) की पूजा करते हैं या तीनों की पूजा ईष्ट रूप में करते हैं तो वह गीता अध्याय 13 श्लोक 10 में वर्णित अव्यभिचारिणी भक्ति न होने से व्यर्थ है। जैसे कोई स्त्री अपने पति के अतिरिक्त अन्य पुरूष से शारीरिक सम्बन्ध नहीं करती, वह अव्यभिचारिणी स्त्री है। जो कई पुरूषों से सम्पर्क करती है, वह व्यभिचारिणी होने से समाज में निन्दनीय होती है। वह पति के दिल से उतर जाती है।

शास्त्रानुकूल साधना अर्थात् सीधा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधे का चित्र इसी पुस्तक के पृष्ठ 232 पर व शास्त्रविरूद्ध साधना अर्थात् उल्टा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा पृष्ठ 233 पर देखें।

ब्रह्मा
शिव
विष्णु
गीता अध्याय नं. 15
श्लोक नं. 1 से 4 तथा
श्लोक नं. 16 व 17
का आशय
डार ब्रह्म
(क्षर पुरुष)
कबीर – अक्षर पुरूष एक पेड़ है
क्षर पुरूष (निरंजन) वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।
कबीर – हम ही अलख अल्लाह हैं
मूल रूप करतार।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का,
मैं ही सिरजनहार।।
तना
(अक्षर पुरुष परब्रह्म)
कबीर साहेब
(मूल जड़)
शास्त्रानुकूल साधना
अर्थात सीधा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा
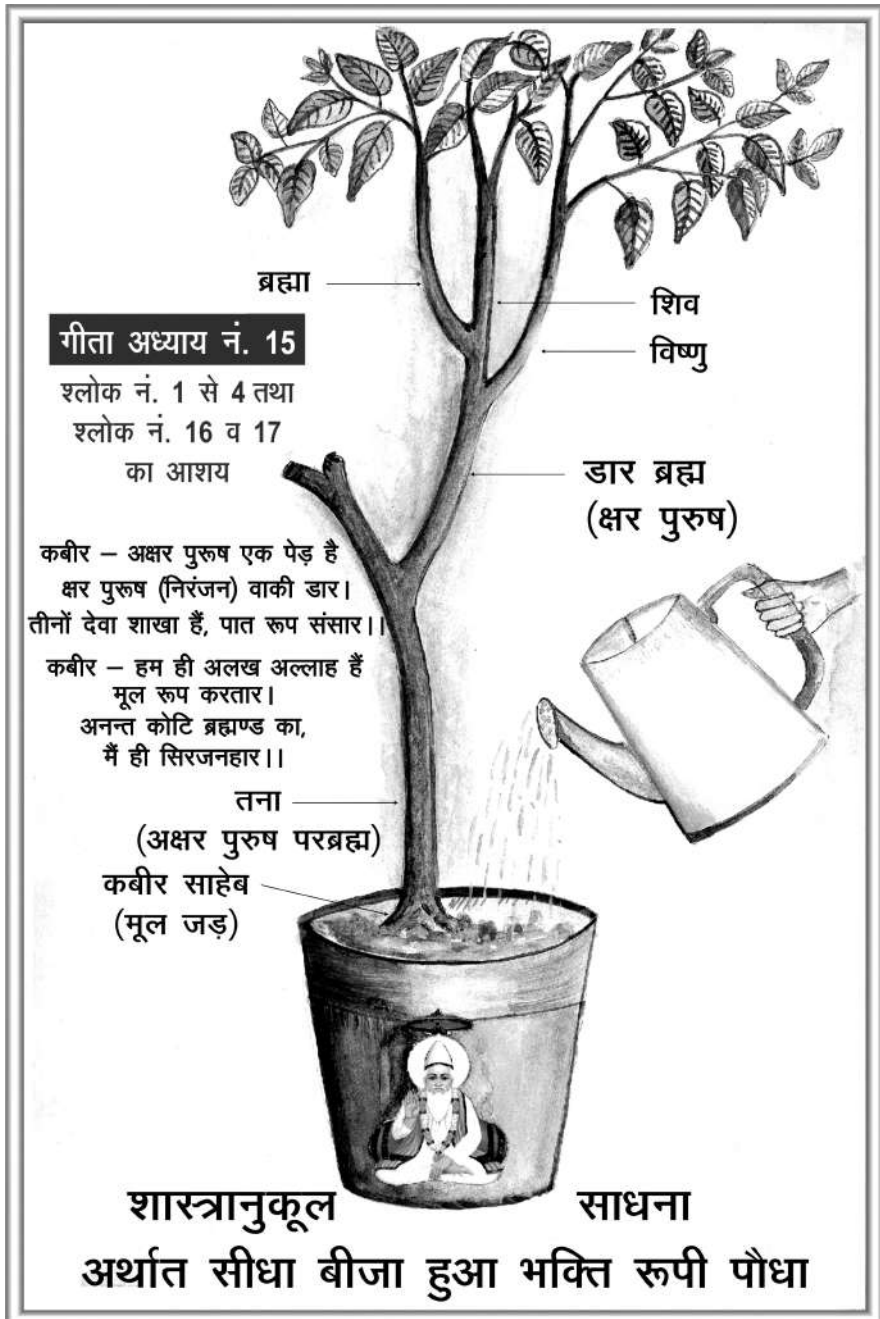
गीता अध्याय नं. 15
श्लोक नं. 1 व 2 तथा
16-17 का आशय
पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब
मूल जड़
कबीर – अक्षर पुरूष एक पेड़ है,
क्षर पुरूष (निरंजन) वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।
तना
अक्षर ब्रह्म अर्थात्
अक्षर पुरुष (परब्रह्म)
कबीर – हम ही अलख अल्लाह हैं
मूल रूप करतार।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का,
मैं ही सिरजनहार।।
डार
(क्षर पुरुष)
विष्णु (शाखा)
शिव
ब्रह्मा
जो पूर्ण परमात्मा को
इष्ट रूप में न पूजकर
अन्य देवों की पूजा
करते हैं।
शास्त्रविरुद्ध साधना
अर्थात उल्टा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा

उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि एक मूल मालिक की भक्ति करने से साधक का आत्म-कल्याण सम्भव है।

अन्य प्रमाण :- गीता अध्याय 3 श्लोक 10 से 15 में इसी उपरोक्त भक्ति का समर्थन किया है।

❖ गीता अध्याय 3 श्लोक 10 = प्रजापति ने अर्थात् कुल के मालिक ने सृष्टि के आदि में यज्ञ सहित अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों के ज्ञान सहित प्रजाओं को उत्पन्न करके आदेश दिया था कि तुम सब धार्मिक अनुष्ठानों द्वारा वृद्धि को प्राप्त होओ। यह यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान तुम लोगों को ईच्छित भोग प्रदान करने वाले हैं। (गीता अध्याय 3 श्लोक 10)

❖ इस शास्त्रानुकूल धार्मिक अनुष्ठान द्वारा देवताओं (संसार रूपी पौधे की शाखाओं) को उन्नत करो अर्थात् पूर्ण परमात्मा (मूल मालिक) को ईष्ट मानकर साधना करने से शाखाऐं अपने आप उन्नत हो जाती हैं जैसाकि पूर्व में स्पष्ट हो चुका है। फिर वे देवता (शाखाऐं बड़ी होकर फल देंगी) तुम लोगों को उन्नत करें अर्थात् जब हम शास्त्रानुकूल साधना करेंगे तो हमारे भक्ति कर्म बनेंगे, कर्मों का फल ये तीनों देवता (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी रूपी शाखाऐं ही) देते हैं। इस प्रकार एक-दूसरे को उन्नत करते हुए तुम्हारा कल्याण होगा तथा इससे दूसरे परमात्मा को प्राप्त हो जाओगे। (यह ज्ञान गीता ज्ञान दाता बता रहा है) (गीता अध्याय 3 श्लोक 11)

❖ शास्त्रानुकुल किए यज्ञ अर्थात् अनुष्ठानों द्वारा बढ़ाए हुए देवता अर्थात् संसार रूपी पौधे की शाखाऐं तुम लोगों को बिना माँगे ही इच्छित भोग निश्चय ही देते रहेंगे। जैसे पौधे की मूल की सिंचाई करने से पौधा पेड़ बन जाता है व शाखाऐं फलों से लदपद हो जाती हैं। फिर उस वृक्ष की शाखाऐं अपने आप प्रतिवर्ष फल देती रहेंगी यानि आप जी का किया शास्त्रानुकूल भक्ति कर्म का फल जो संचित हो जाता है, उसे यही देवता आपको देते रहेंगे, आप माँगो या न माँगो। यदि उन देवताओं द्वारा दिया गया आपका कर्म संस्कार का धन पुनः धर्म में नहीं लगाया तो वह साधक भक्ति का चोर है। वह भविष्य में पुण्य रहित होकर हानि उठाता है। (गीता अध्याय 3 श्लोक 12)

❖ यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाले संतजन सब पापों से मुक्त हो जाते हैं। भावार्थ है कि तत्वदर्शी सन्त सर्वप्रथम परम अक्षर ब्रह्म को भोग लगाकर फिर बचे हुए भोजन को सर्व भक्तों में वितरित करता है। यह पहचान है सत्य साधना की तो वह सन्त सर्व भक्ति मन्त्र भी शास्त्रानुकूल देता है। जिस कारण से साधक सर्व पापों से मुक्त होकर सत्यलोक में चला जाता है और जो पापी लोग शास्त्रविधि अनुसार धार्मिक क्रियाऐं नहीं करते या धर्म नहीं करते, केवल अपने शरीर पोषण के लिए अन्न पकाते हैं। वे तो पाप को ही खाते हैं। (गीता अध्याय 3 श्लोक 13)

❖ सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं अर्थात् अन्न खाने से शरीर में संतानोत्पत्ति का पदार्थ बनता है जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है। अन्न की

उत्पत्ति वृष्टि से होती है। वर्षा शास्त्रविधि अनुसार किए गए यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान से होती है। यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान शास्त्रों में वर्णित विधि से किए जाते हैं। कर्म को ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरूष से उत्पन्न हुए जान क्योंकि हम ब्रह्म (काल) के लोक में आए हैं तो हमको कर्म करके ही सब प्राप्त होता है। जब हम सत्यलोक में थे, तब बिना कर्म किए सब प्राप्त था। इसलिए कहा है कि कर्म को ब्रह्म (काल) से उत्पन्न जान तथा ब्रह्म (काल) की उत्पत्ति अविनाशी परमात्मा से हुई। (जिसका वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में है तथा सृष्टि रचना अध्याय में पढ़ें।) इससे सिद्ध होता है कि (सर्वगतम् ब्रह्म) सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म सदा ही यज्ञों में अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों में (प्रतिष्ठितम्) प्रतिष्ठित है अर्थात् सब धार्मिक क्रियाओं में परम अक्षर ब्रह्म ईष्ट रूप में पूज्य है। (गीता अध्याय 3 श्लोक 14-15)

परम अक्षर ब्रह्म गीता ज्ञान दाता से अन्य है।

गीता ज्ञान दाता ने स्वयं गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि हे भारत! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की शरण में जा, उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा शाश्वत स्थान अर्थात् सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि तत्वदर्शी सन्त मिलने के पश्चात् तत्वज्ञान रूपी शस्त्र द्वारा अज्ञान को काटकर परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर कभी संसार में जन्म नहीं लेते अर्थात् उनको सनातन परम धाम प्राप्त हो जाता है, जहाँ परमशान्ति है, कोई कष्ट नहीं है, वहाँ मृत्यु नहीं होती, वहाँ वृद्धावस्था नहीं होती, किसी पदार्थ का अभाव नहीं हैं। जिस परमेश्वर से संसार रूपी वृक्ष की प्रवृत्ति विस्तार को प्राप्त हुई है, उसी परमेश्वर की भक्ति करनी चाहिए।

❖ गीता अध्याय 13 श्लोक 17 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि वह परब्रह्म अर्थात् मेरे से दूसरा प्रभु दूसरे शब्दों में परम अक्षर ब्रह्म(जिसके विषय में गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में कहा है।) ज्योतियों का भी ज्योति, माया से अति परे कहा जाता है, बोधरूप (जानने योग्य) परमात्मा तत्वज्ञान से प्राप्त करने योग्य है और सबके हृदय में विशेष रूप से स्थित है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 17)

विचार करें :- जिस तत्वज्ञान से परम अक्षर ब्रह्म प्राप्त होता है, उसे सूक्ष्म वेद भी कहते हैं। उसका ज्ञान गीता ज्ञान दाता को नहीं है। इसलिए गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 4 श्लोक 32 तथा 34 में बताया है कि यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का विस्तारपूर्वक ज्ञान स्वयं (ब्रह्मणः मुखे) सच्चिदानन्द घन ब्रह्म परमात्मा अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म अपने मुख कमल से बोलकर बताता है जो सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी कही जाती है, उसे तत्वज्ञान कहते हैं। उसे जानकर साधक सर्व पापों से मुक्त हो जाता है। (गीता अध्याय 4 श्लोक 32)

❖ पाठकों से निवेदन है कि गीता अध्याय 4 श्लोक 32 के मूल पाठ में

"ब्रह्मणः" शब्द है। गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित गीता या अन्य स्थानों से प्रकाशित गीता में अनुवादकों ने ब्रह्मणः का अर्थ "वेद" किया है जो गलत है।

गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में भी "ब्रह्मणः" शब्द है, उसमें अनुवादकों ने ठीक अर्थ "सच्चिदानन्द घन ब्रह्म" किया है। इसलिए गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में "ब्रह्मणः मुखे" का अर्थ सच्चिदानन्द घन ब्रह्म के मुख कमल से उच्चरित वाणी में करना उचित है।

गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि उस तत्वज्ञान को जिसे परमेश्वर अपने मुख कमल से बताता है, तू तत्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ, उनको दण्डवत् प्रणाम करने से, नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म तत्व को भली-भाँति जानने वाले तत्वदर्शी महात्मा तुझे तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

प्रभु प्रेमी पाठक जनों! इससे सिद्ध हुआ कि वह तत्वज्ञान जिससे परम अक्षर परमात्मा प्राप्त होता है, गीता ग्रन्थ में नहीं है। गीता चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) का संक्षिप्त रूप है, उनका सारांश है। इससे सिद्ध हुआ कि सूक्ष्मवेद वाला तत्वज्ञान किसी भी प्रचलित सद्ग्रन्थ में नहीं है। वह ज्ञान मेरे (सन्त रामपाल दास) पास है, विश्व में किसी के पास नहीं है।

प्रश्न :- क्या श्री ब्रह्मा जी रजगुण, श्री विष्णु जी सतगुण तथा श्री शिव जी तमगुण भी ईष्ट रूप में पूज्य नहीं है? हिन्दू धर्म में इन्हीं देवताओं की पूजा की जाती है। हिन्दू धर्मगुरू, शंकराचार्य तथा अन्य इन्हीं की पूजा ईष्ट रूप में मानकर करने को कहते हैं, वे स्वयं भी करते हैं। आपकी बात अविश्वसनीय लगती है, क्या आप गीता में प्रमाणित कर सकते हैं?

उत्तर :- हिन्दू धर्म के धर्मगुरूओं को अपने सद्ग्रन्थों का ही ज्ञान नहीं। जैसे अक्षर ज्ञान देने वाले अध्यापक को अपने पाठ्यक्रम की पुस्तकों के उल्लेख का ही ज्ञान नहीं तो वह अध्यापक विद्यार्थियों के लिए हानिकारक होता है। वह शिक्षक ठीक नहीं, यही दशा हिन्दू धर्म के धर्मगुरूओं की है।

प्रमाण :- श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि तीनों गुणों से (रजगुण श्री ब्रह्मा जी से उत्पत्ति, सतगुण श्री विष्णु जी से स्थिति तथा तमगुण श्री शंकर जी से संहार) जो हो रहा है, उसका निमित मैं हूँ, परंतु उनमें मैं तथा वे मुझमें नहीं हैं। (गीता अध्याय 7 श्लोक 12),

पहले यह प्रमाणित करते हैं कि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव शंकर है :-

1. मार्कण्डेय पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित केवल हिन्दी सचित्र मोटा टाईप) के पृष्ठ 123 पर लिखा है कि ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश ब्रह्म की प्रधान शक्तियाँ हैं। ये ही तीन गुण हैं, ये ही तीन देवता हैं।

2. श्री देवी पुराण (श्री खेमचन्द श्री कृष्ण चन्द वैंकेटेश्वर प्रैस मुम्बई से प्रकाशित) के तीसरे स्कंद के अध्याय 5 श्लोक 8 में कहा है :-

यदि दयादर्मना सदा अम्बिके कथम् अहम् विहितः तमोगुणः
कमलजः रजगुणः कथम् विहितः च श्री हरिः सतगुणः (देवी पुराण 3/5/8)

अनुवाद :- भगवान शिव अपनी माता दुर्गा जी से प्रश्न कर रहे हैं कि हे मातः! यदि आप हम पर दयायुक्त हैं तो मुझे तमोगुण क्यों उत्पन्न किया? कमल से उत्पन्न ब्रह्मा जी को रजोगुण तथा श्री विष्णु जी को सतगुण क्यों बनाया?

❖ इससे प्रमाणित हुआ कि 1. रजगुण कहो चाहे ब्रह्मा जी कहो, 2. सतगुण कहो चाहे विष्णु जी कहो, 3. तमगुण कहो चाहे शिव जी कहो।

गीता अध्याय 7 श्लोक 12 का भावार्थ :- गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म है। प्रमाण गीता अध्याय 11 श्लोक 31-32, अध्याय 11 श्लोक 31 में अर्जुन ने पूछा कि:- हे महानुभाव! आप कौन हैं? जबकि श्री कृष्ण जी तो अर्जुन के साले थे। श्री कृष्ण जी की बहन सुभद्रा का विवाह अर्जुन से हुआ था। विचार करें कि यदि गीता ज्ञान दाता श्री कृष्ण होते तो अर्जुन को यह जानने की नौबत नहीं आती कि आप कौन हो? क्या जीजा अपने साले को नहीं जानता? वास्तव में श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके काल ब्रह्म गीता ज्ञान बोल रहा था। ("अधिक प्रमाण के लिए पढ़ें पुस्तकें "गीता तेरा ज्ञान अमृत", ''गहरी नजर गीता में'', "ज्ञान गंगा", आध्यात्मिक ज्ञान गंगा तथा देखें सत्संगों की D.V.D. श्री मद्भगवत गीता का ज्ञान किसने बोला। ये सब हमारी Web Site = www.jagatgururampalji.org पर उपलब्ध है, निःशुल्क डाउनलोड कर सकते हैं। You Tube पर भी Search कर सकते हैं। (Satsang Barwala Ashram या Sant Rampal Ji) गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म है जो गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में स्वयं कह रहा है कि मैं काल हूँ, अब प्रवृत हुआ हूँ अर्थात् अब प्रकट हुआ हूँ। यदि श्री कृष्ण जी गीता ज्ञान बोल रहे होते तो यह नहीं कहते कि मैं अब आया हूँ क्योंकि श्री कृष्ण जी तो पहले ही विद्यमान थे। श्री कृष्ण जी ने कभी पहले नहीं कहा कि मैं काल हूँ, न कभी बाद में कहा कि सबका नाश करने वाला बढ़ा हुआ काल हूँ। कौरवों की सभा में अपना विराट रूप भी दिखाया था। विराट रूप भक्ति युक्त प्रत्येक आत्मा का होता है। कोई-कोई ही इसे प्रकट कर सकता है। यह भक्ति की शक्ति अनुसार होता है।

गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 11 श्लोक 47 में कहा है कि अर्जुन! मेरा यह विराट रूप तेरे अतिरिक्त पहले किसी ने नहीं देखा है। "पाठकों से निवेदन है कि श्री कृष्ण जी ने तो अपना विराट रूप पहले कौरवों की सभा में दिखाया था" जो उपस्थित सैंकड़ों कौरवों सहित हजारों ने देखा था। यदि श्री कृष्ण जी गीता ज्ञान बोल रहे होते तों यह कदापि नहीं कहते कि यह मेरा विराट रूप तेरे अतिरिक्त पहले किसी ने नहीं देखा था। इससे स्पष्ट है कि गीता ज्ञान दाता "काल ब्रह्म" है जिसे गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में क्षर पुरूष कहा गया है। जिसने गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में कहा है कि :-

"ओम् इति एकाक्षरम् ब्रह्म व्याहरन् माम् अनुस्मरन्
यः प्रयाति त्यजन् देहम् सः याति परमाम् गतिम्"

सरलार्थ :- गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि (माम् ब्रह्म) मुझ ब्रह्म का (ओम् इति एकाक्षरम्) यह एक ऊँ अक्षर है। (व्याहरन्) उच्चारण करके (अनुस्मरन्) स्मरण करता हुआ (यः प्रयाति त्यजन् देहम्) जो साधक शरीर त्यागकर जाता है, (सः याति परमाम् गतिम्) वह ऊँ नाम से होने वाली परम गति को प्राप्त होता है, इसी को और स्पष्ट करता हूँ।

श्री देवी पुराण (सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) के सातवें स्कंद में पृष्ठ 562-563 पर प्रकरण इस प्रकार है :-

श्री देवी जी राजा हिमालय को ब्रह्म ज्ञानोपदेश देती है। कहा कि हे राजन्! तू ओम् (ऊँ) नाम का जाप कर जिससे ब्रह्म की प्राप्ति होती है। यह ऊँ नाम ब्रह्म जाप मन्त्र है और सब बातों को, पूजाओं को त्यागकर केवल एक ॐ नाम का जाप कर, ब्रह्म प्राप्ति का उद्देश्य रख, तेरा कल्याण हो। इससे ब्रह्म को प्राप्त हो जाएगा, वह ब्रह्म दिव्य आकाश रूपी ब्रह्म लोक में रहता है। इस देवी महापुराण से स्पष्ट हुआ कि ओम् (ऊँ) नाम जाप ब्रह्म का है।

अन्य प्रमाण :- श्री शिव महापुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित सचित्र मोटा टाईप) के विध्वेश्वर संहिता के पृष्ठ 23 से 25 पृष्ठ पर प्रकरण इस प्रकार है:-

एक समय श्री ब्रह्मा जी रजगुण तथा विष्णु जी सतोगुण का युद्ध हो गया। कारण था कि श्री ब्रह्मा जी ने श्री विष्णु जी के निवास पर जाकर कहा कि हे अभिमानी! तूने मेरे आने पर उठकर सत्कार नहीं किया, तू पुत्र होकर भी पिता का सत्कार नहीं करता। मैं सर्व जगत की उत्पत्ति करने वाला सबका पिता हूँ। यह वचन सुनकर श्री विष्णु जी को अंदर से तो बहुत क्रोध आया परंतु ऊपर से मुस्कुराते हुए कहा कि आजा पुत्र, मैं तेरा पिता हूँ। तेरी उत्पत्ति मेरे नाभि कमल से हुई है। इसी बात पर दोनों ने हथियार उठा लिए, आपस में युद्ध करने लगे। उसी समय काल ब्रह्म ने इन दोनों के बीच में एक तेजोमय स्तंभ खड़ा कर दिया। जिस कारण से दोनों ने युद्ध करना बंद कर दिया। उसी समय काल ब्रह्म ने अपने पुत्र शिव का रूप बनाया तथा अपनी पत्नी दुर्गा को पार्वती बनाकर उनके पास प्रकट हो गए। उन दोनों से कहा कि तुम दोनों को ज्ञान नहीं है कि यहाँ का ईश कौन है? मैं ब्रह्म हूँ। यह संसार मेरा है, हे विष्णु तथा ब्रह्मा! तुम दोनों ने तप करके मेरे से एक-एक कृत प्राप्त किए हैं। ब्रह्मा को सृष्टि की उत्पत्ति तथा विष्णु को स्थिति। पुत्रो सुनो! मैनें इसी प्रकार महेश तथा रूद्र को भी एक-एक कृत संहार तथा तिरोभाव दिए हैं। फिर कहा है कि मेरा एक अक्षर ओम् (ॐ) मन्त्र जाप करने का है। यह पाँच अवयवों (अ, उ, म, नाद तथा बिन्दु) का संग्रह एक ''ॐ'' अक्षर मन्त्र बना है। पाठक जनों को स्पष्ट हुआ कि ''ॐ'' एक अक्षर ब्रह्म का जप मंत्र है। यह भी स्पष्ट हुआ कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री महेश से अन्य काल ब्रह्म है और ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी तीनों काल ब्रह्म के पुत्र हैं।

अन्य प्रमाण :- श्री शिव महापुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, सचित्र मोटा टाईप) में रूद्र संहिता के पृष्ठ 110 पर लिखा है कि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण

विष्णु तथा तमगुण शिव तीनों देवताओं में गुण हैं। मैं इनसे भिन्न हूँ।

इन सर्व प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म है, इसे श्राप लगा है कि यह प्रतिदिन एक लाख मानव शरीरधारी प्राणियों को खाएगा तथा सवा लाख प्रतिदिन उत्पन्न करेगा।

इस कारण से इसने अपने तीनों पुत्रों को एक-एक गुणयुक्त बना रखा है, इनके शरीर से निकल रहे गुणों का सूक्ष्म प्रभाव प्रत्येक प्राणी को विवश करके कार्य करवाता है। जैसे रसोई घर में मिर्चों का छौंक लगता है, छींक आती है। उन छींकों को कोई नहीं रोक पाता। स्थूल रूप में मिर्च रसोई घर में होती हैं, उनसे निकले गुण ने दूर कमरे में बैठे व्यक्तियों को प्रभावित कर दिया।

इसी प्रकार तीनों देवता (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) अपने-अपने लोकों में रहते हैं, परन्तु उनके शरीर से निकल रहे गुणों का सूक्ष्म प्रभाव तीनों लोकों (स्वर्ग लोक, पाताल लोक, पथ्वी लोक) के प्राणियों को प्रभावित करता रहता है। जिससे काल ब्रह्म के लिए एक लाख मानव का आहार तैयार होता है। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 12 में गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने कहा है किः-

❖ तीनों गुणों से जो कुछ भी हो रहा है, उसका निमित कारण मैं ही हूँ। जैसे रजगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति, सतगुण विष्णु जी से स्थिति तथा तमगुण शिव जी से संहार होता है। यह सब मेरे लिए ही इनके द्वारा हो रहा है ऐसा जान, परन्तु वे मुझमें और मैं उनमें नहीं हूँ क्योंकि काल ब्रह्म इन तीनों देवताओं से भिन्न रहता है। (गीता अध्याय 7 श्लोक 12)

❖ सारा संसार इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) पर ही मोहित है। इन्हीं तक ज्ञान रखता है। इन तीनों देवताओं से परे मुझको तथा (अव्ययम्) उस अविनाशी परमात्मा को नहीं जानता। (गीता अध्याय 7 श्लोक 13)

❖ क्योंकि यह अलौकिक त्रिगुणमयी मेरी माया (अर्थात् मेरे पुत्रों द्वारा फैलाया मायाजाल) बड़ी दुस्तर है, निक्कमी है। जो साधक केवल मुझ (काल ब्रह्म) को भजते हैं, वे इस माया (ब्रह्मा, विष्णु, महेश की भक्ति से होने वाले लाभ से अधिक लाभ ब्रह्म भक्ति में है। इसलिए कहा है कि जो इन तीनों से मिलने वाले लाभ को त्यागकर काल ब्रह्म की साधना करते हैं, वे इनका उल्लंघन करके अर्थात् इनकी साधना का त्याग कर देते हैं) का उल्लंघन कर जाते हैं। (गीता अध्याय 7 श्लोक 14)

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 15 में कहा है कि :- तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) रूपी मायाजाल द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है अर्थात् जो साधक इन तीनों देवताओं से भिन्न प्रभु को नहीं जानते। इन्हीं से मिलने वाले नाममात्र लाभ से ही मोक्ष मानकर इन्हीं से चिपके रहते हैं, इन्हीं की पूजा करते रहते हैं। ऐसे व्यक्ति असुर स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख जन मुझ काल ब्रह्म को नहीं

भजते। (गीता अध्याय 7 श्लोक 15)

गीता अध्याय 14 श्लोक 19 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जिस समय दष्टा अर्थात् तत्वज्ञान सुनने वाला और जो तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) की ईष्ट रूप में पूजा करने वाला अपनी पुरानी धारणा को नहीं बदलता अर्थात् इन तीनों के अतिरिक्त किसी को कर्ता नहीं मानता और इन तीनों से परे पूर्ण परमात्मा का ज्ञान भी प्राप्त कर लेता है, वह मेरे ही जाल में रह जाता है। (गीता अध्याय 14 श्लोक 19)

गीता अध्याय 14 श्लोक 20 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि देहधारी मनुष्य इन तीनों का उल्लंघन करके अर्थात् इन तीनों की पूजा त्यागकर ही जन्म-मरण तथा वद्धावस्था के तथा अन्य सब दुःखों से मुक्त होकर परमानन्द अर्थात् गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में वर्णित परम शान्ति तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होता है।

सारांश :- तीनों देवताओं (ब्रह्मा जी रजगुण, विष्णु जी सतगुण तथा शिव जी तमगुण) की पूजा करने वाले राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख कहा है। भावार्थ है कि इनकी पूजा नहीं करनी चाहिए।

कारण :- 1. श्री ब्रह्मा जी रजगुण की पूजा हिरण्यकश्यप ने की थी, अपने पुत्र प्रहलाद का शत्रु बन गया, राक्षस कहलाया, कुत्ते वाली मौत मरा।

2. श्री शिव जी तमगुण की पूजा रावण ने की थी, जगतजननी सीता को उठाया, पत्नी बनाने की कुचेष्टा की, राक्षस कहलाया, कुत्ते की मौत मरा। भस्मासुर ने भी तमगुण शिव जी की पूजा की थी, राक्षस कहलाया, बेमौत मारा गया।

3. श्री विष्णु जी की पूजा करने वाले वैष्णव कहलाते हैं। एक समय हरिद्वार में एक कुम्भ का पर्व लगा। उस पर्व में स्नान करने के लिए सर्व सन्त (गिरी, पुरी, नाथ, नागा) पहुँच गए। नागा श्री शिव जी तमगुण के पुजारी होते हैं तथा वैष्णव श्री विष्णु सतगुण के पुजारी होते हैं। सभी हरिद्वार में हर की पैड़ी पर स्नान करने की तैयारी करने लगे जो सँख्या में लगभग 20 हजार थे। कुछ देर बाद इतनी ही सँख्या में वैष्णव साधु हर की पैड़ियों पर पहुँच गए। वैष्णव साधुओं ने नागाओं से कहा कि हम श्रेष्ठ हैं, हम पहले स्नान करेंगे। इसी बात पर झगड़ा हो गया। तलवार, कटारी, छुरों से लड़ने लगे, लगभग 25 हजार दोनों पक्षों के साधु तीनों गुणों के उपासक कटकर मर गए।

इसलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) के उपासकों को राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूर्ख कहा है।

इससे सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा रजगुण, श्री विष्णु सतगुण तथा श्री शिव तमगुण की भक्ति करने वाले मूर्ख, राक्षस, मनुष्यों में नीच तथा घटिया कर्म करने वाले मूर्ख व्यक्ति हैं अर्थात् इनकी पूजा करना श्रीमद् भगवत गीता में मना किया है, इनकी ईष्ट रूप में पूजा करना व्यर्थ है।

''पूजा तथा साधना में अंतर''

प्रश्न :- काल ब्रह्म की पूजा करनी चाहिए या नहीं? गीता में प्रमाण दिखाऐं।

उत्तरः- नहीं करनी चाहिए। पहले आप जी को पूजा तथा साधना का भेद बताते हैं।

भक्ति अर्थात् पूजा :- जैसे हमारे को पता है कि पथ्वी के अन्दर मीठा शीतल जल है। उसको प्राप्त कैसे किया जा सकता है? उसके लिए बोकी के द्वारा जमीन में सुराख किया जाता है, उस सुराख (Bore) में लोहे की पाईप डाली जाती है, फिर हैण्डपम्प (नल) की मशीन लगाई जाती है, तब वह शीतल जीवनदाता जल प्राप्त होता है।

हमारा पूज्य जल है, उसको प्राप्त करने के लिए प्रयोग किए उपकरण तथा प्रयत्न साधना जानें। यदि हम उपकरणों की पूजा में लगे रहे तो जल प्राप्त नहीं कर सकते, उपकरणों द्वारा पूज्य वस्तु प्राप्त होती है।

अन्य उदाहरण :- जैसे पतिव्रता स्त्री परिवार के सर्व सदस्यों का सत्कार करती है, सास-ससुर का माता-पिता के समान, ननंद का बड़ी-छोटी बहन के समान, जेठ-देवर का बड़े-छोटे भाई के समान, जेठानी-देवरानी का बड़ी-छोटी बहनों के समान, परंतु वह पूजा अपने पति की करती है। जब वे अलग होते हैं तो अपने हिस्से की सर्व वस्तुऐं उठाकर अपने पति वाले मकान में ले जाती है।

अन्य उदाहरण :- जैसे हमारी इच्छा आम खाने की होती है, हमारे लिए आम का फल पूज्य है। उसे प्राप्त करने के लिए धन की आवश्यकता पड़ती है। धन संग्रह करने के लिए मजदूरी/नौकरी/खेती-बाड़ी करनी पड़ती है, तब आम का फल प्राप्त होता है। इसलिए आम पूज्य है तथा अन्य क्रिया साधना है। साध्य वस्तु को प्राप्त करने के लिए साधना करनी पड़ती है, साधना भिन्न है, पूजा अर्थात् भक्ति भिन्न है। स्पष्ट हुआ।

प्रश्न चल रहा है कि क्या ब्रह्म की पूजा करनी चाहिए। उत्तर में कहा है कि नहीं करनी चाहिए। अब श्रीमद् भगवत गीता में प्रमाण दिखाते हैं।

गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में तो गीता ज्ञान दाता ने बता दिया कि तीनों गुणों (रजगुण श्री ब्रह्मा जी, सतगुण श्री विष्णु जी तथा तमगुण श्री शिव जी) की भक्ति व्यर्थ है। फिर गीता अध्याय 7 के श्लोक 16-17-18 में गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने अपनी भक्ति से होने वाली गति अर्थात् मोक्ष को "अनुत्तम" अर्थात् घटिया बताया है। बताया है कि मेरी भक्ति चार प्रकार के व्यक्ति करते हैं।

1. अर्थार्थी :- धन लाभ के लिए वेदों अनुसार अनुष्ठान करने वाले।

2. आर्त :- संकट निवारण के लिए वेदों अनुसार अनुष्ठान करने वाले।

3. जिज्ञासु :- परमात्मा के विषय में जानने के इच्छुक।

(ज्ञान ग्रहण करके स्वयं वक्ता बन जाने वाले)

इन तीनों प्रकार के ब्रह्म पुजारियों को व्यर्थ बताया है।

4. ज्ञानी :- ज्ञानी को पता चलता है कि मनुष्य जन्म बड़ा दुर्लभ है। मनुष्य जीवन प्राप्त करके आत्म-कल्याण कराना चाहिए। उन्हें यह भी ज्ञान हो जाता है कि अन्य देवताओं की पूजा से मोक्ष लाभ होने वाला नहीं है। इसलिए एक परमात्मा की भक्ति अनन्य मन से करने से पूर्ण मोक्ष संभव है। उनको तत्वदर्शी सन्त न मिलने से उन्होंने जैसा भी वेदों को जाना, उसी आधार से ब्रह्म को एक समर्थ प्रभु मानकर यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 15 से ओम् नाम लेकर भक्ति की, परन्तु पूर्ण मोक्ष नहीं हुआ। ओम् (ॐ) नाम ब्रह्म साधना का है, उससे ब्रह्मलोक प्राप्त होता है जोकि पूर्व में प्रमाणित किया जा चुका है। गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में कहा है कि ब्रह्म लोक प्रयन्त सब लोक पुनरावर्ती में हैं अर्थात् ब्रह्म लोक में गए साधक भी पुनः लौटकर संसार में जन्म-मत्यु के चक्र में गिरते हैं।

काल ब्रह्म की साधना से वह मोक्ष प्राप्त नहीं होता जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में बताया है कि ”तत्वज्ञान से अज्ञान को काटकर परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी वापिस नहीं आते।‘‘

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि ये ज्ञानी आत्मा (जो चौथे नम्बर के ब्रह्म के साधक कहें हैं) हैं तो उदार अर्थात् नेक, परंतु ये तत्वज्ञान के अभाव से मेरी अनुत्तम् गति में ही स्थित रहे। गीता ज्ञान दाता ने अपनी साधना से होने वाली गति को भी अनुत्तम अर्थात् घटिया कहा है, इसलिए ब्रह्म पूजा करना भी उचित नहीं।

कारण :- एक चुणक नाम का ऋषि ज्ञानी आत्मा था। उसने ओम् (ॐ) नाम का जाप तथा हठयोग हजारों वर्ष किया। जिससे उसमें सिद्धियाँ आ गई। ब्रह्म की साधना करने से जन्म-मत्यु, स्वर्ग-नरक का चक्र सदा बना रहेगा क्योंकि गीता अध्याय 2 श्लोक 12, गीता अध्याय 4 श्लोक 5, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने कहा है कि अर्जुन! तेरे और मेरे अनेकों जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। तू, मैं तथा ये सर्व राजा लोग पहले भी जन्में थे, आगे भी जन्मेंगे। यह न सोच कि हम सब अब ही जन्में हैं। मेरी उत्पत्ति को महर्षिजन तथा ये देवता नहीं जानते क्योंकि ये सब मेरे से उत्पन्न हुए हैं।

इससे स्वसिद्ध है कि जब गीता ज्ञान दाता ब्रह्म भी जन्मता-मरता है तो इसके पुजारी अमर कैसे हो सकते हैं? इससे यह सिद्ध हुआ कि ब्रह्म की उपासना से वह मोक्ष नहीं हो सकता जो गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है। इन श्लोकों में गीता ज्ञान दाता ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि हे भारत! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर परम अक्षर ब्रह्म की शरण में जा। उस परमेश्वर की कपा से ही तू परमशान्ति को तथा सनातन परमधाम अर्थात् सत्यलोक को प्राप्त होगा। तत्वज्ञान समझकर उसके पश्चात् परमात्मा के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। विचार करें कि गीता ज्ञान दाता तो स्वयं जन्मता-मरता है। इसलिए ब्रह्म की पूजा

से होने वाली गति अनुत्तम कही है।

अब चुणक ऋषि का प्रसंग आगे सुनाते हैं :- चुणक ऋषि ने ऊँ (ओम्) नाम का जाप तथा हठ योग किया। वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) में बताई भक्ति से परमात्मा प्राप्ति नहीं होती। इसका प्रमाण गीता अध्याय 11 श्लोक 47-48 में है। गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने बताया है कि हे अर्जुन! मुझ काल ब्रह्म का यह विराट रूप है। मेरे इस रूप के दर्शन तेरे अतिरिक्त पहले किसी को नहीं हुए, मैंने तेरे ऊपर अनुग्रह करके यह रूप दिखाया है। मेरे इस रूप के दर्शन अर्थात् ब्रह्म प्राप्ति न तो वेदों में वर्णित विधि से अर्थात् ऊँ नाम के जाप से, न तप से, न हवन आदि-आदि यज्ञों से होते हैं अर्थात् वेदों में वर्णित विधि से ब्रह्म प्राप्ति नहीं होती। यही कारण रहा कि चुणक जैसे ऋषि भी ब्रह्म को निराकार कहते रहे। चुणक ऋषि में सिद्धियाँ आ गई। जिस कारण से संसार में प्रसिद्ध हो गया। सिद्धि प्राप्त साधक अपनी वर्षों की साधना से की गई चार्ज बैट्री से किसी को श्राप देकर अपनी भक्ति का नाश करते हैं, किसी को आशीर्वाद देकर अपनी भक्ति का नाश करते हैं। किसी पर सिद्धि से जन्त्र-मन्त्र करके अपनी भक्ति का नाश करते हैं तथा संसार में प्रशंसा के पात्र बनकर स्वयं प्रभु बन बैठते हैं।

एक मानधाता चक्रवर्ती राजा था। उसका पूरी पृथ्वी पर राज्य था। उसने अपने राज्य में यह जाँचना चाहा कि क्या पृथ्वी के अन्य राजा जो मेरे आधीन हैं क्या उनमें से कोई स्वतन्त्र होना चाहता है? इसलिए राजा ने अपने निजी घोड़े के गले में एक पत्र लिखकर बाँध दिया कि जिस किसी राजा को मानधाता राजा की पराधीनता स्वीकार न हो, वह इस घोड़े को पकड़ ले और युद्ध के लिए तैयार हो जाए, राजा के पास 72 अक्षौणी सेना है। उस घोड़े के साथ सैंकड़ों सैनिक भी चले। सारी पृथ्वी पर चक्कर लगाया। किसी राजा ने उस घोड़े को नहीं पकड़ा। इससे स्पष्ट हो गया कि पूरी पृथ्वी के छोटे राजा अपने चक्रवर्ती शासक मानधाता के आधीन हैं। सर्व सैनिक जो घोड़े के साथ थे, खुशी से वापिस आ रहे थे। रास्ते में ऋषि चुणक की कुटिया थी। चुणक ऋषि ने सैनिकों से पूछा जो घोड़ों पर सवार थे कि हे सैनिको! कहाँ गए थे? इस घोड़े का सवार कहाँ गया? सैनिकों ने ऋषि जी को सर्व बात बताई। ऋषि ने कहा क्या किसी ने राजा मानधाता का युद्ध नहीं स्वीकारा? सैनिक बोले कि है किसी की बाजुओं में दम, पिलाया है किसी माता ने दूध जो हमारे राजा के साथ युद्ध कर ले। राजा के पास 72 अक्षौणी अर्थात् 72 करोड़ सेना है। जॉड़ तोड़ देंगे यदि किसी ने युद्ध करने की हिम्मत की तो। ऋषि चुणक जो काल ब्रह्म का पुजारी था ने कहा कि हे सैनिको! आपके राजा का युद्ध मैंने स्वीकार कर लिया, यह घोड़ा बाँध दो मेरी कुटिया वाले वृक्ष से। सैनिक बोले कि हे कंगले! तेरे पास दाने तो खाने को नहीं हैं, क्या युद्ध करेगा तू राजा मानधाता के साथ? अपनी भक्ति कर ले, क्यों श्यात् बोल दे रही है तेरी अर्थात् तेरी क्यों सामत आई है? ऋषि ने कहा, जो होगा सो देखा जाएगा। जाओ, कह दो तुम्हारे राजा को कि तुम्हारा युद्ध चुणक ऋषि ने स्वीकार कर लिया है। राजा को पता चला तो सोचा कि आज एक कंगाल सिरफिरे ऋषि की हिम्मत हुई है, कल कोई अन्य

हिम्मत करेगा। बुराई को प्रारम्भ में ही समाप्त कर देना चाहिए। जनता को भयभीत करने के लिए एक व्यक्ति को मारने के लिए राजा ने 72 करोड़ सेना की चार टुकड़ियाँ बनाई। एक टुकड़ी 18 करोड़ सैनिक पहले भेजे ऋषि से युद्ध करने के लिए। काल ब्रह्म के पुजारी चुणक ऋषि ने सिद्धि शक्ति से चार पुतलियाँ बनाई अर्थात् चार परमाणु बम्ब तैयार किए। एक पुतली छोड़ी, उसने 18 करोड़ सेना को काट डाला। राजा ने दूसरी टुकड़ी भेजी। ऋषि ने दूसरी पुतली छोड़ी। इस प्रकार राजा मानधाता की 72 क्षौणी सेना का नाश काल ब्रह्म के पुजारी चुणक ने कर दिया।

विचार करें :- ऋषि-महर्षियों को राजाओं के बीच में टाँग नहीं अड़ानी चाहिए। कारण यह है कि ऋषिजनों ने हजारों वर्ष ॐ नाम का जाप किया परमात्मा प्राप्ति के लिए। परमात्मा मिला नहीं क्योंकि गीता अध्याय 11 श्लोक 47-48 में लिखा है कि वेदों में (चारों वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद) वर्णित भक्ति विधि से ब्रह्म प्राप्ति नहीं है। इसलिए इससे ऋषियों में सिद्धियाँ प्रकट हो जाती हैं। अज्ञानता के कारण उसी भूल-भूलइया को ये भक्ति की उपलब्धि मान बैठे। जिस कारण से भक्ति करके भी उस पद को नहीं प्राप्त कर सके, जहाँ जाने के पश्चात् पुनः जन्म नहीं होता क्योंकि इनको तत्वदर्शी सन्त नहीं मिले। सूक्ष्म वेद में कहा कि :-

कबीर, गुरू बिन काहू न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भुस छड़े मूढ़ किसाना।
गुरू बिन वेद पढ़े जो प्राणी, समझे न सार रहे अज्ञानी।।
गरीब, बहतर क्षौणी खा गया, चुणक ऋषिश्वर एक।
देह धारें जौरा फिरें, सबही काल के भेष।।

भावार्थ :- तत्वदर्शी सन्त गुरू न मिलने के कारण जो साधना साधक करते हैं, वह शास्त्र विधि त्यागकर मनमाना आचरण होता है जिससे कोई लाभ साधक को नहीं होता। गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में प्रमाण है कि हे भारत! जो साधक शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण करता है, उसको न तो सुख होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है और न ही उसकी गति अर्थात् मोक्ष होता है। इससे तेरे लिए शास्त्र ही प्रमाण हैं कि कौन-सी साधना करनी चाहिए और कौन-सी नहीं करनी चाहिए।

गुरू बिना अर्थात् तत्वदर्शी सन्त के बिना चाहे वेदों को पढ़ते रहो, चाहे उनको कण्ठस्थ भी करलो जैसे पहले के ब्राह्मण वेदों के मन्त्रों को याद कर लेते थे। जो चारों वेदों के मन्त्र याद कर लेता था, वह चतुर्वेदी कहलाता था। जो तीन वेदों के मन्त्रों को याद कर लेता था, वह त्रिवेदी कहलाता था। परंतु उनको वेदों के गूढ़ रहस्यों का ज्ञान न होने के कारण वे ऋषिजन वेदों को पढ़कर-घोटकर भी अज्ञानी रहे। सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

''पीठ मनुखा दाख लदी है, ऊँट खात बबूल।''

भावार्थ है कि पहले के समय में रेगिस्तान में ऊँटों पर मुनक्का दाख लादकर ले जाते थे। ऊँट पीठ पर तो इतनी स्वादिष्ट मनुका दाख लादे हुए होता था और स्वयं बबूल (कीकर) पेड़ के काँटों में मुख मार-मारकर बबूल के पत्ते खा रहा होता

था। बिना ज्ञान के सर्व ऋषि जी चारों वेदों रूपी मनुका दाख को लादे फिरते थे और पूजा करते थे काल ब्रह्म रूपी बबूल की जिससे न सनातन परम धाम और न ही परम शांति प्राप्त होती थी। फिर सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

बनजारे के बैल ज्यों, फिरा देश–विदेश।
खाण्ड छोड़ भुष खात है, बिन सतगुरू उपदेश।।

भावार्थ है कि पहले के समय में बैलों के ऊपर गधे की तरह थैला (बोरा) रखकर उसमें खाण्ड भरकर बनजारे अर्थात् व्यापारी लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाते-ले जाते थे। बैल की पीठ पर बोरे में खाण्ड है, स्वयं भुष खाया करता। इसी प्रकार गुरू द्वारा तत्वज्ञान न मिलने के कारण ऋषिजन वेदों रूपी खाण्ड (चीनी) को तो कण्ठस्थ करके रखते थे। उनको ठीक से न समझकर साधना वेद विरूद्ध करते थे।

उदाहरण के लिए :-

श्री देवी पुराण (सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) के 5वें स्कंद पष्ठ 414 पर लिखा है :- वेद व्यास जी ने कहा कि सत्ययुग के ब्राह्मण वेद के पूर्ण विद्धान थे। वे देवी अर्थात् श्री दुर्गा जी की पूजा करते थे। प्रत्येक गाँव में श्री देवी का मंदिर बनवाने की उनकी प्रबल इच्छा थी।

पाठकजन विचार करें :-

चारों वेदों में तथा इन्हीं वेदों के सारांश श्रीमद् भगवत गीता में कहीं पर भी देवी की पूजा करने का निर्देश नहीं है तो सत्ययुग के ब्राह्मण क्या खाक विद्वान थे वेदों के। इसी श्री देवी पुराण के 7वें स्कंद में पष्ठ 562, 563 पर श्री देवी जी ने राजा हिमालय से कहा था कि तू मेरी पूजा भी त्याग दे। यदि ब्रह्म प्राप्ति चाहता है तो और सब बातों को त्यागकर केवल ओम् (ॐ) का जाप कर। यह ब्रह्म का मंत्र है। इससे ब्रह्म को प्राप्त हो जाएगा। वह ब्रह्म ब्रह्मलोक रूपी दिव्य आकाश में रहता है। पाठकजन आसानी से समझेंगे कि जब सत्ययुग के ब्राह्मणों का यह ज्ञान तथा साधना थी तो वर्तमान के ब्राह्मणों को क्या ज्ञान होगा? इसी श्री देवी पुराण के 5वें स्कन्द में पष्ठ 414 पर यह भी लिखा है कि सत्ययुग में जो राक्षस समझे जाते थे, वे कलयुग में ब्राह्मण माने जाते हैं। ब्राह्मण कोई जाति विशेष नहीं है। जो परमात्मा अर्थात् ब्रह्म के लिए प्रयत्नशील है, वही ब्राह्मण कहलाता है चाहे किसी भी जाति का हो। वर्तमान में परंपरागत ब्राह्मण कम हैं। संत रूप में ब्रह्मज्ञान देने वाले अधिक हैं जो ब्राह्मण अर्थात् मार्गदर्शक गुरू कहलाते हैं और तत्वज्ञानहीन हैं। इसलिए कहा है कि तत्वदर्शी गुरू के बिना किसी को वेदों के गूढ़ रहस्यों का ज्ञान नहीं हुआ, जिस कारण से वेदों को पढ़ते थे, परंतु साधना वेद विरूद्ध करते थे। वेदों व गीता में तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की पूजा करना निषेध है। सर्व हिन्दू समाज ज्ञानहीन संतों द्वारा इन्हीं तीनों देवताओं पर केन्द्रित कर रखा है, श्री देवी दुर्गा तथा विष्णु जी, शिव जी की भक्ति कर तथा करा रहे हैं। पहले से ही यह लोकवेद (दंत कथा) का ज्ञान चला आ रहा है जो आज मेरे सामने दीवार बनकर खड़ी है। मैं शास्त्रोक्त ज्ञान बताता हूँ, प्रोजैक्टर पर

दिखाता हूँ। परंतु पहले के अज्ञान को सत्य मानकर सत्य को आँखों देखकर भी विश्वास नहीं कर रहे। विरोध करते हैं, जेल में भिजवा देते हैं।

सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

गरीब, वेद पढ़ैं पर भेद न जानें, बाँचैं पुराण अठारह।
पत्थर की पूजा करें, बिसरे सिरजनहारा।।

भावार्थ है कि वेद तथा अठारह पुराणों को पढ़ते हैं और मूर्ति की पूजा करते हैं। वेदोक्त सर्व के सजनहार परम अक्षर ब्रह्म को भूल गए हैं। अन्य प्रभुओं की पूजा करके उस परम शक्ति तथा सनातन परम धाम अर्थात् परमेश्वर के उस परम पद से वंचित रह जाते हैं जो गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है। सूक्ष्मवेद में लिखा है कि :-

गुरूवां गाम बिगाड़े संतो, गुरूवां गाम बिगाड़े।
ऐसे कर्म जीव के ला दिए, फिर झड़ैं नहीं झाड़े।।

भावार्थ है कि वेद ज्ञानहीन तत्वज्ञान से अपरीचित गुरूओं ने गाँव के गाँव में शास्त्रविरूद्ध ज्ञान व भक्ति का अज्ञान सुनाकर उनको इतना भ्रमित कर दिया कि वे अब समझाए से भी शास्त्र विरूद्ध साधना को त्यागने के लिए तैयार नहीं होते।

गीता अध्याय 16 श्लोक 23 में लिखा है कि शास्त्र विधि त्यागकर मनमाना आचरण करने से न तो सिद्धि प्राप्त होती है, न सुख प्राप्त होता है और न गति होती है अर्थात् व्यर्थ साधना है।

दूसरी ओर आप जी ने चुणक ऋषि की कथा में पढ़ा कि ऋषि चुणक जी को सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। पाठकों को यह समझना है कि सिद्धि भक्ति का बाई प्रोडैक्ट है, जैसे जौं का भी भूस (तूड़ा) होता है जिसमें तुस बहुत होते हैं। पशु खाता है तो मुख में जख्म कर देते हैं। यह सिद्धि प्राप्त होती है काल ब्रह्म की भक्ति से जो चुणक ऋषि जी को प्राप्त हुई।

जो शास्त्र विधि अनुसार भक्ति करने से सिद्धि प्राप्त होती है, वह गेहूँ का भुस (तूड़ा) समझें जो पशुओं के लिए उपयोगी तथा खाने में सुगम होता है। भावार्थ है कि शास्त्रविधि अनुसार साधना न करने से जो सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं, वे साधक को नष्ट करती हैं क्योंकि अज्ञानतावश ऋषिजन उनका प्रयोग करके किसी की हानि कर देते हैं, किसी को आशीर्वाद देकर अपनी भक्ति की शक्ति जो ॐ नाम के जाप से होती है, उसको समाप्त करके फिर से खाली हो जाते हैं।

जैसे चुणक ऋषि जी ने मानधाता चक्रवर्ती राजा की 72 करोड़ सेना का नाश कर दिया, अपनी भक्ति की सिद्धि भी खो दी। सूक्ष्मवेद में कहा है कि :-

गरीब, बहतर क्षौणी क्षय करी, चुणक ऋषिश्वर एक।
देह धारें जौरा (मत्यु) फिरैं, सब ही काल के भेष।।

भावार्थ :- ऋषियों में सर्वश्रेष्ठ ऋषि चुणक जी ने 72 करोड़ सेना का नाश कर दिया। ये दिखाई तो देते हैं महात्मा, लेकिन जब इनसे पाला पड़ता है तो ये निकलते हैं सर्प जैसे, जरा-सी बात पर श्राप दे देना, किसी से बेमतलब पंगा ले लेना इनके लिए आम बात होती है।

''ऋषि दुर्वासा की कारगुजारी''

❖ एक दुर्वासा नाम के काल ब्रह्म के पुजारी (ब्रह्म साधक) थे। वे चले जा रहे थे। रास्ते में एक अप्सरा (स्वर्ग की स्त्री) सुन्दर मोतियों की माला पहने हुए थी। ऋषि दुर्वासा ने कहा कि यह माला मुझे दे। देवपरी को पता था कि ये ऋषि तो सर्प जैसे हैं, यदि मना कर दिया तो श्राप दे देते हैं। उस अप्सरा ने तुरन्त माला गले से निकाली और ऋषि को आदर के साथ थमा दी। दुर्वासा ऋषि ने वह माला सिर पर बालों के जूड़े में डाल ली। चला जा रहा था। आगे से स्वर्ग का राजा इन्द्र अपने एरावत हाथी पर बैठा आ रहा था। उसके आगे-आगे अप्सराऐं तथा गंद्धर्व जन गाते-बजाते चल रहे थे, और भी करोड़ों देवी-देवता साथ-साथ सम्मान में चल रहे थे। दुर्वासा ऋषि ने माला अपने सिर से उठाकर इन्द्र की ओर फैंक दी। इन्द्र ने वह माला हाथी की गर्दन पर रख दी। हाथी ने वह माला अपने सूंड से उठाकर जमीन पर फैंक दी। जैसे इन्द्र को कोई भक्त या देव कोई फूलमाला भेंट करता था तो इन्द्र उसको बाद में हाथी की गर्दन पर रख देता था जब इन्द्र हाथी पर बैठा हो। हाथी उसे उठाकर नीचे फैंक देता था। हाथी ने उसी रूटीन (**Routine**) में वह माला नीचे फैंक दी थी।

इस बात से ऋषि दुर्वासा कुपित हो गये और बोले कि हे इन्द्र! तेरे को राज्य का अभिमान है। मेरे द्वारा दी गई माला का तूने अनादर किया है। मैं श्राप देता हूँ कि तेरा सर्व राज्य नष्ट हो जाए। देवराज इन्द्र एकदम काँपने लगा और बोला हे विप्र! मैंने आपकी माला को आदर से ग्रहण करके हाथी के ऊपर रखा था। हाथी ने अपनी औपचारिकतावश नीचे डाल दी, मुझे क्षमा करें। बार-बार करबद्ध होकर हाथी से नीचे उतरकर दण्डवत् प्रणाम करके भी क्षमा याचना इन्द्र ने की, परंतु दुर्वासा ऋषि नहीं माने और कहा कि जो मैंने कह दिया वह वापिस नहीं हो सकता। कुछ ही समय में इन्द्र का सर्वनाश हो गया, स्वर्ग उजड़ गया।

❖ एक बार ऋषि दुर्वासा जी द्वारका नगरी के पास जंगल में कुछ समय के लिए रूके। द्वारकावासियों को पता चला कि दुर्वासा जी अपनी नगरी के पास आए हैं। ये त्रिकालदर्शी महात्मा हैं, सिद्धियुक्त ऋषि हैं। द्वारकावासी श्री क ष्ण से अधिक शक्तिशाली किसी को नहीं मानते थे। श्री क ष्ण के पुत्र श्री प्रद्यूमन सहित कई यादवों ने योजना बनाई कि सुना है दुर्वासा जी त्रिकालदर्शी हैं, मन की बात भी बता देते हैं, अन्तर्यामी हैं, उनकी परीक्षा लेते हैं। यह विचार करके प्रद्यूमन को गर्भवती स्त्री का स्वांग बनाकर दस-बारह व्यक्ति साथ चले। एक व्यक्ति को उसका पति बना लिया। दुर्वासा जी के पास जाकर कहा कि हे ऋषि जी! इस स्त्री पर परमात्मा की क पा बहुत दिनों पश्चात् हुई है, इसको गर्भ रहा है, यह इसका पति है। ये दोनों उतावले हैं कि हमें पता चले कि गर्भ में लड़का है या कन्या। आप तो अन्तर्यामी हैं, क प्या बताऐं? उन्होंने प्रद्यूमन के पेट पर एक छोटी कढ़ाई बाँध रखी थी, उसके ऊपर रूई का लोगड़ तथा पुराने वस्त्र बाँधकर गर्भ बना रखा था, ऊपर स्त्री वस्त्र पहना रखे थे। ऋषि दुर्वासा जी ने दिव्य द ष्टि से देखा और जाना कि

ये मेरा मजाक करने आए हैं। दुर्वासा जी ने कहा कि इस गर्भ से यादव कुल का नाश होगा, इतना कहकर क्रोधित हो गए। सर्व व्यक्ति वहाँ से खिसक गए।

नगरी में यह बात आग की तरह फैल गई कि ऋषि दुर्वासा जी ने श्राप दे दिया है कि यादवों का नाश होगा। उनको विश्वास था कि हमारे साथ सर्व शक्तिमान भगवान अखिल ब्रह्माण्ड के नायक श्री कृष्ण हैं। दुर्वासा के श्राप का प्रभाव हम पर नहीं हो पाएगा। फिर भी कुछ बुद्धिमान यादव इकट्ठे होकर श्री कृष्ण जी के पास गए तथा ऋषि दुर्वासा से किया बच्चों का मजाक तथा ऋषि दुर्वासा द्वारा दिये श्राप का वृत्तांत बताया। सर्व वार्ता सुनकर श्री कृष्ण जी ने कुछ देर सोचकर कहा कि उन बच्चों को साथ लेकर दुर्वासा जी के पास जाओ और क्षमा याचना करो। दुर्वासा के पास गए, क्षमा याचना की, परंतु दुर्वासा ने कहा कि जो मैंने बोल दिया, वह वापिस नहीं हो सकता।

सर्व व्यक्ति फिर से श्री कृष्ण जी के पास गये तथा सर्व बात बताई। द्वारका में भोजन भी नहीं बना। सर्व नगरी चिन्ता में डूब गई। श्री कृष्ण जी ने कहा कि चिन्ता किस बात की। जो वस्तु गर्भ रूप में प्रयोग की थीं, उन्ही से तो हमारा विनाश होना बताया है। ऐसा करो, कपड़ों तथा रूई को जलाकर तथा लोहे की कढ़ाई को पत्थर पर घिसाकर प्रभास क्षेत्र (यमुना नदी के किनारे एक स्थान का नाम है) में यमुना नदी में डाल दो। वहीं बैठकर घिसाओ, वहीं चूरा दरिया में डाल दो, वहीं पर राख पानी में डाल दो। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी। जब गर्भ की वस्तुऐं ही नहीं रहेंगी तो हमारा नाश कैसे होगा? यह बात द्वारिकावासियों को अच्छी लगी और अपने को संकट मुक्त माना। श्री कृष्ण जी के आदेशानुसार सब किया गया। कढ़ाई का एक कड़ा पूरी तरह नहीं घिस पाया। उसको वैसे ही यमुना नदी में फैंक दिया। वह एक मछली ने चमकीला खाद्य पदार्थ जानकर खा लिया। उस मछली को बालीया नामक भील ने पकड़ लिया। जब मछली को काटा तो उससे निकली धातु की जाँच करने के पश्चात् उसको अपने तीर को आगे के हिस्से में विषयुक्त करवाकर लगवा लिया, उसे सुरक्षित रख लिया। जो कढ़ाई का लोहे का चूरा पानी में डाला था, वह लम्बे सरकण्डे जैसे घास के रूप में यमुना नदी के किनारे-किनारे पर उग गया।

कुछ समय उपरांत द्वारिका नगरी में उत्पात मचने लगा। छोटी-सी बात पर एक-दूसरे का कत्ल करने लगे। आपस में वैर-विरोध बढ़ गया। नगर के लोगों की यह दशा देखकर नगरी के गणमान्य व्यक्ति भगवान श्री कृष्ण जी के पास गए और जो कुछ भी नगरी में हो रहा था, बताया और कारण तथा समाधान श्री कृष्ण जी से जानने की इच्छा व्यक्त की क्योंकि श्री कृष्ण जी यादव तथा पाण्डवों के आध्यात्मिक गुरू थे। संकट का निवारण गुरूदेव से ही कराया जाता है। श्री कृष्ण जी ने कारण बताया कि दुर्वासा ऋषि का श्राप फल रहा है। समाधान है कि सर्व नर (Male) यादव चाहे आज का जन्मा भी लड़का क्यों न हो, सब प्रभास क्षेत्र में जहाँ पर उस कढ़ाई का चूर्ण डाला था, जाकर यमुना में स्नान करो, तुम श्राप मुक्त हो जाओगे। सर्व द्वारिकावासियों ने श्री कृष्ण जी के आदेश का पालन किया। सर्व

नर यादव प्रभास क्षेत्र में श्राप मुक्त होने के उद्देश्य से स्नान करने के लिए चले गए। ऋषि दुर्वासा के श्राप के कारण सर्व यादव समूह बनाकर इकट्ठे हो गए। पहले स्नान किया कि श्राप मुक्त होने के पश्चात् हो सकता है कि आपसी मन-मुटाव दूर हो जाए। परंतु ऐसा कुछ नहीं हुआ। पहले सबने स्नान किया, फिर आपस में गाली-गलोच शुरू हुआ। फिर उस घास को उखाड़कर एक-दूसरे को मारने लगे। जो घास (सरकण्डे) लोहे की कढ़ाई के चूर्ण से उगा था, वह तलवार जैसा कार्य करने लगा। सरकण्डे को मारते ही सिर धड़ से अलग होकर गिरने लगा। इस प्रकार सर्व यादव आपस में लड़कर मृत्यु को प्राप्त हो गए। कुछ दो सौ - चार सौ शेष रहे थे। उसी समय श्री कृष्ण जी भी वहीं पहुँच गए। उन्होंने भी उस घास को उखाड़ा। उसके लोहे के मूसल बन गए। शेष बचे अपने कुल के व्यक्तियों को स्वयं श्री कृष्ण जी ने मौत के घाट उतारा।

इसके पश्चात् श्री कृष्ण जी एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगे। इतने में देवयोग से वह बालीया नामक भील जिसने उस लोहे की कढ़ाई के कड़े का विषाक्त तीर (Arrow) बनवाया था, उसी तीर को लेकर शिकार की खोज में उस स्थान पर आ गया जहाँ पर श्री कृष्ण जी विश्राम कर रहे थे। श्री कृष्ण जी के दायें पैर के तलवे में पद्म बना था, उसमें सौ वॉट के बल्ब जैसी चमक थी। वृक्ष की झूर्मुट नीचे तक लटकी थी। उनके बीच से पद्म की चमक स्पष्ट नहीं दिख रही थी। बालीया भील ने सोचा कि यह हिरण की आँख दिखाई दे रही है, इसलिए तीर चला दिया हिरण को मारने के उद्देश्य से। जब तीर श्री कृष्ण जी के पैर में लगा तो श्री कृष्ण जी ने कहा मर गया रे, मर गया। बालीया भील को आभास हुआ कि तीर किसी व्यक्ति को लग गया। दौड़कर गया तो देखा द्वारिकाधीश मारे दर्द के तड़फ रहे थे। बालीया ने कहा कि हे महाराज! मुझसे धोखे से तीर चल गया। आपके पैर की चमक को मैंने हिरण की आँख जानकर तीर मार दिया, मुझसे गलती हो गई, क्षमा करो महाराज। श्री कृष्ण जी ने कहा कि तेरे से कोई गलती नहीं हुई है। यह तेरा और मेरा पिछले जन्म का लेन-देन है, वह मैंने चुका दिया है। तू त्रेतायुग में सुग्रीव का भाई बाली था, मैं रामचन्द्र पुत्र दशरथ था। मैंने भी तेरे को वृक्ष की औट लेकर धोखे से मारा था। वह अदला-बदला (Tit for tat) पूरा किया है।

इस प्रकार दुर्वासा ऋषि के श्राप से सर्व यादव कुल का नाश हुआ जो वर्तमान में यादव हैं। ये वो हैं जो उस समय माताओं के गर्भ में थे, बाद में उत्पन्न हुए थे।

सूक्ष्मवेद में लिखा है :- गरीब, दुर्वासा कोपे तहाँ, समझ न आई नीच।
छप्पन करोड़ यादव कटे, मची रूधिर की कीच।।

सरलार्थ :- दुर्वासा ने बच्चों के मजाक को इतनी गंभीरता से लिया कि उनके कुल का नाश करने का श्राप दे दिया। उस नीच दुर्वासा ने यह भी नहीं सोचा कि क्या अनर्थ हो जाएगा। बात कुछ भी नहीं थी, दुर्वासा नीच ऋषि ने इतना जुल्म कर दिया कि छप्पन करोड़ यादव कटकर मर गए और रक्त के बहने से कीचड़ बन गया।

इसी प्रकार चुणक ऋषि ने बेमतलब पंगा लेकर मानधाता राजा की 72 करोड़ सेना का नाश कर दिया।

❖ एक कपिल नाम के ऋषि थे जिनको भगवान विष्णु के 24 अवतारों में से एक अवतार भी माना जाता है, वे तपस्या कर रहे थे।

एक सगड़ राजा था। उसके 60 हजार पुत्र थे। किसी ऋषि ने बताया कि यदि एक तालाब, एक कुआँ, एक बगीचा बना दिया जाए तो एक अश्वमेघ यज्ञ जितना फल मिलता है। राजा सगड़ के लड़कों ने यह कार्य शुरू कर दिया। समझदार व्यक्तियों ने उनसे कहा कि आप ऐसे जगह-जगह तालाब, कुएँ, बगीचे बनाओगे तो पथ्वी पर अन्न उत्पन्न करने के लिए स्थान ही नहीं रहेगा। किसी राजा ने विरोध किया तो उससे लड़ाई कर ली। उन राजा सगड़ के लड़कों ने एक घोड़ा अपने साथ लिया। उसके गले में पत्र लिखकर बाँध दिया कि यदि कोई हमारे कार्य में बाधा करेगा, वह इस घोड़े को पकड़ ले और युद्ध के लिए तैयार हो जाए। उन सिरफिरों से कौन टक्कर ले? पथ्वी देवी भगवान विष्णु जी के पास गई। एक गाय का रूप धारण करके कहा कि हे भगवान! पथ्वी पर एक सगड़ राजा है। उसके 60 हजार पुत्र हैं। उनको ऐसी सिरड़ उठी है कि मेरे को खोद डाला। वहाँ मनुष्यों के खाने के लिए अन्न भी उत्पन्न नहीं हो सकता। भगवान विष्णु ने कहा तुम जाओ, वे अब कुछ नहीं करेंगे। भगवान विष्णु ने देवराज इन्द्र को बुलाया और समझाया कि राजा सघड़ के 60 हजार लड़के यज्ञ कर रहे हैं। यदि उनकी 100 यज्ञ पूरी हो गई तो तुम्हारी इन्द्र गद्दी उनको देनी पड़ेगी, समय रहते कुछ बनता है तो कर ले। इन्द्र ने हलकारे अर्थात् अपने नौकर भेजे, उनको सब समझा दिया। रात्रि के समय राजा सघड़ के पुत्र सोए पड़े थे। घोड़ा वक्ष से बाँध रखा था। उन देवराज के फरिश्तों ने घोड़ा खोलकर कपिल तपस्वी की जाँघ पर बाँध दिया। कपिल ऋषि वर्षों से तपस्यारत था। जिस कारण से उसका शरीर अस्थिपिंजर जैसा हो गया था। आसन पदम लगाए हुए था, टाँगें पतली-पतली थी। जैसे वक्ष की जड़ों की मिट्टी वर्षा के पानी से बह जाती हैं और जड़ों के बीच में 6-7 इंच का अन्तर (Gap) हो जाता है, ऋषि कपिल जी की टाँगें ऐसी थीं। इन्द्र के हलकारों ने घोड़े को टाँगों के बीच के रास्ते में से जाँघ के पास रस्से से बाँध दिया।

राजा के लड़कों ने सुबह उठते ही घोड़ा देखा। उसकी खोज में युद्ध करने की तैयारी करके 60 हजार का लंगार चल पड़ा। घोड़े के पद्चिन्हों के साथ-साथ कपिल मुनि के आश्रम में पहुँच गए। घोड़े को बँधा देखकर सगड़ राजा के पुत्रों ने ऋषि की ही कोख में (दोनों बाजुओं के नीचे काखों को हरियाणवी भाषा में हींख कहते हैं) भाले चुभो दिए। कपिल ऋषि की पलकें इतनी लम्बी बढ़ चुकी थी कि जमीन पर जा टिकी थी। ऋषि को पीड़ा हुई तो क्रोधवश पलकों को हाथों से उठाया, आँखों से अग्नि बाण छूटे। 60 हजार सगड़ के पुत्रों की सेना की पूली-सी बिछ गई अर्थात् 60 हजार सगड़ के बेटे मरकर ढ़ेर हो गए।

सूक्ष्मवेद में कहा है कि :- 60 हजार सगड़ के होते, कपिल मुनिश्वर खाए।
जै परमेश्वर की करें भक्ति, तो अजर–अमर हो जाए।।
72 क्षौणी खा गया, चुणक ऋषिश्वर एक।
देह धारें जौरा फिरैं, सभी काल के भेष।।

दुर्वासा कोपे तहाँ, समझ न आई नीच।
56 करोड़ यादव कटे, मची रूधिर की कीच।।

भावार्थ :- कपिल मुनि जी, चुणक मुनि जी तथा दुर्वासा मुनि जी संसार में कितने प्रसिद्ध हैं, ये सब काल ब्रह्म की भक्ति करने वाले भेषधारी ऋषि हैं। ये चलती-फिरती मौत थी। चलती-फिरती मनुष्य रूप में घाल हैं। (घाल = एक मिट्टी के छोटे मटके को तांत्रिक विद्या से आकाश में उड़ाकर दुश्मन पर छोड़ता है। उससे बहुत हानि होती है।) गलती से भोले प्राणी इनको महान आत्मा मानते हैं।

ये सब ज्ञानी आत्मा थे, ये सब उदार हृदय के थे। इन्होंने परमात्मा प्राप्ति के लिए अपना कल्याण कराने के लिए तन-मन-धन अर्पित कर दिया, परंतु तत्वदर्शी सन्त न मिलने के कारण इन्होंने काल ब्रह्म को एक समर्थ प्रभु मानकर गलती की और उसी की साधना ओम् (ॐ) नाम के जाप के साथ तथा अधिक हठ योग समाधि के द्वारा की, जिससे परमात्मा प्राप्ति तो है ही नहीं, उल्टा हानि होती है क्योंकि यह साधना शास्त्र विरूद्ध है।

गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि शास्त्रविधि को त्यागकर जो मनमाना आचरण करते हैं, उनकी साधना व्यर्थ है। वे उदार आत्माऐं इसी कारण काल ब्रह्म की अनुत्तम गति में स्थित रहें।

गीता अध्याय 17 श्लोक 5, 6 में कहा है कि :-

❖ जो मनुष्य शास्त्र विधि रहित केवल मन कल्पित घोर तप को तपते हैं और दम्भ अहंकार से युक्त, कामना आसक्ति अभिमान से युक्त हैं। (गीता अध्याय 17 श्लोक 5)

❖ शरीर में स्थित सर्व कमलों में देव शक्तियों तथा पूर्ण परमात्मा तथा मुझे भी कंश करने वाले अर्थात् कष्ट देने वाले अज्ञानियों को तू असुर स्वभाव के जान। (गीता अध्याय 17 श्लोक 6)

❖ यही प्रमाण गीता अध्याय 16 श्लोक 17 से 20 में है।

❖ वे अपने आपको श्रेष्ठ मानने वाले घमण्डी पुरूष धन और मान के मद से युक्त होकर केवल नाममात्र यज्ञों द्वारा पाखण्ड से शास्त्रविधि रहित पूजन करते हैं। (गीता अध्याय 16 श्लोक 17)

❖ अहंकार, बल, घमण्ड, कामना, क्रोध आदि के वश और दूसरों की निन्दा करने वाले पुरूष अपने और दूसरों के शरीर में स्थित मुझसे द्वेष करने वाले होते हैं। (गीता अध्याय 16 श्लोक 18)

❖ उन द्वेष करने वाले पापाचीर क्रूरकर्मी "जो वचन से करोंड़ों व्यक्तियों की हत्या करने वाले" नराधमों अर्थात् नीच मनुष्यों को मैं संसार में बार-बार आसुरी अर्थात् राक्षसी योनियों में ही डालता हूँ। (गीता अध्याय 16 श्लोक 19) सूक्ष्मवेद में भी इन्हें नीच कहा है :- दुर्वासा कोपे तहाँ, समझ न आई नीच।
56 करोड़ यादव कटे, मची रूधीर की कीच।।

❖ हे अर्जुन! वे मूर्ख मुझको न प्राप्त होकर ही जन्म-जन्म में आसुरी योनियों को प्राप्त होते हैं, उससे भी अति नीच गति को प्राप्त होते हैं अर्थात् घोर

नरक में गिरते हैं। (गीता अध्याय 17 श्लोक 20)

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता ने अपनी साधना से होने वाली गति को भी इसलिए अनुत्तम अर्थात् घटिया बताया है, कहा है कि :-

❖ गीता अध्याय 7 श्लोक 18 = गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जो चौथी प्रकार के ज्ञानी साधक हैं, वे सभी हैं तो उदार क्योंकि परमात्मा प्राप्ति के लिए अपने शरीर के नष्ट होने की भी प्रवाह नहीं की और हजारों वर्ष भूखे-प्यासे साधनारत रहे, परंतु तत्वदर्शी सन्त न मिलने के कारण वे सभी मेरी अनुत्तम अर्थात् घटिया गति अर्थात् ब्रह्म साधना से होने वाले मोक्ष जो ऊपर ऋषियों को हुआ, उसमें स्थित रहे अर्थात् जन्म-मरण, चौरासी लाख योनियों के चक्कर वाली गति में रह गए। (गीता अध्याय 7 श्लोक 18)

❖ निष्कर्ष :- चुणक ऋषि, दुर्वासा ऋषि तथा कपिल ऋषि ने जो ओम् (ॐ) नाम जाप किया, उसकी भक्ति के फलस्वरूप ये कुछ समय ब्रह्म लोक में जाऐंगे। वहाँ भक्ति समाप्त करके फिर पृथ्वी पर राजा बनेंगे क्योंकि सूक्ष्मवेद में लिखा है :- तप से राज, राज मध मानम्, जन्म तीसरे शुकर स्वानम्।

फिर कुत्ता, गधा बनेंगे, फिर नरक जाएंगे। जब कुत्ते बनेंगे, तब इनके सिर में कीड़े पड़ेंगे। जो व्यक्ति इनके श्राप से मरे थे, उनका पाप इनको भोगना पड़ेगा, कीड़े इनका माँस चुन-चुनकर खाऐंगे। इसलिए गीता में भी ऐसे साधकों के विषय में जो बताया है, वो आप जी ने ऊपर पढ़ लिया।

❖ उपरोक्त कथाओं का सारांश :-

1. ब्रह्म साधना अनुत्तम (घटिया) है।

2. तीन ताप को श्री कृष्ण जी भी समाप्त नहीं कर सके। श्राप देना तीन ताप (दैविक ताप) में आता है। दुर्वासा के श्राप के शिकार स्वयं श्री कृष्ण सहित सर्व यादव भी हो गए।

3. श्री कृष्ण जी ने श्रापमुक्त होने के लिए यमुना में स्नान करने के लिए कहा, यह समाधान बताया था। उससे श्राप नाश तो हुआ नहीं, यादवों का नाश अवश्य हो गया। विचार करें :- जो अन्य सन्त या ब्राह्मण जो ऐसे स्नान या तीर्थ करने से संकट मुक्त करने की राय देते हैं, वे कितनी कारगर हैं? अर्थात् व्यर्थ हैं क्योंकि जब भगवान त्रिलोकी नाथ द्वारा बताए समाधान यमुना स्नान से कुछ लाभ नहीं हुआ तो अन्य टट्पुँजियों, ब्राह्मणों व गुरूओं द्वारा बताए स्नान आदि समाधान से कुछ होने वाला नहीं है।

4. पहले श्री कृष्ण जी ने दुर्वासा के श्राप से बचाव का तरीका बताया था। उस कढ़ाई को घिसाकर चूर्ण बनाकर प्रभास क्षेत्र में यमुना नदी में डाल दो। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी, बाँस भी रह गया, 56 करोड़ यादवों की बाँसुरी भी बज गई।

सज्जनो! वर्तमान में बुद्धिमान मानव है, शिक्षित है, मेरे द्वारा (सन्त रामपाल

दास द्वारा) बताए ज्ञान को शास्त्रों से मिलाओ, फिर भक्ति करके देखो, क्या कमाल होता है।

❖ प्रसंग आगे चलाते हैं :-

1. तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) की भक्ति करना व्यर्थ सिद्ध हुआ।

2. गीता ज्ञान दाता ब्रह्म की भक्ति स्वयं गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अनुत्तम बताई है। उसने गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में उस परमेश्वर अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की शरण में जाने को कहा है। यह भी कहा है कि उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शान्ति तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

3. गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 में संसार रूपी वृक्ष का वर्णन है तथा तत्वदर्शी सन्त की पहचान भी बताई है। संसार रूपी वृक्ष के सब हिस्से, जड़ें (मूल) कौन परमेश्वर है? तना कौन प्रभु है, डार कौन प्रभु है, शाखाऐं कौन-कौन देवता हैं? पात रूप संसार बताया है।

इसी अध्याय 15 श्लोक 16 में स्पष्ट किया है कि :-

1. क्षर पुरूष (यह 21 ब्रह्माण्ड का प्रभु है) :- इसे ब्रह्म, काल ब्रह्म, ज्योति निरंजन भी कहा जाता है। यह नाशवान है। हम इसके लोक में रह रहे हैं। हमें इसके लोक से मुक्त होना है तथा अपने परमात्मा कबीर जी के पास सत्यलोक में जाना है।

2. अक्षर पुरूष :- यह 7 संख ब्रह्माण्डों का प्रभु है, यह भी नाशवान है। हमने इसके 7 संख ब्रह्माण्डों के क्षेत्र से होकर सत्यलोक जाना है। इसलिए इसका टोल टैक्स देना है। बस इससे हमारा इतना ही काम है।

❖ गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि :-

उत्तमः पुरूषः तू अन्यः परमात्मा इति उदाहृतः।
यः लोक त्रयम् आविश्य विभर्ति अव्ययः ईश्वरः।।

सरलार्थ :- गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में कहे दो पुरूष, एक क्षर पुरूष दूसरा अक्षर पुरूष हैं। इन दोनों से अन्य है उत्तम पुरूष अर्थात् पुरूषोत्तम, उसी को परमात्मा कहते हैं जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है। (गीता अध्याय 15 श्लोक 17) गीता अध्याय 3 श्लोक 14-15 में भी स्पष्ट किया है कि सर्वगतम् ब्रह्म अर्थात् सर्वव्यापी परमात्मा, जो सचिदानन्द घन ब्रह्म है, उसे वासुदेव भी कहते हैं जिसके विषय में गीता अध्याय 7 श्लोक 19 में कहा है। वही सदा यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों में प्रतिष्ठित है अर्थात् ईष्ट रूप में पूज्य है।

पूर्ण गुरू से दीक्षा लेकर मर्यादा में रहकर भक्ति करो। इस प्रकार जीने की राह पर चलकर संसार में सुखी जीवन जीऐं तथा मोक्ष रूपी मंजिल को प्राप्त करें।

''सृष्टि रचना''

(सूक्ष्मवेद से निष्कर्ष रूप सृष्टि रचना का वर्णन)

प्रभु प्रेमी आत्माऐं प्रथम बार निम्न सृष्टि रचना को पढ़ेंगे तो ऐसे लगेगा जैसे दन्त कथा हो, परंतु सर्व पवित्र सद्ग्रन्थों के प्रमाणों को पढ़कर दाँतों तले ऊंगली दबाऐंगे कि यह वास्तविक अमृत ज्ञान कहाँ छुपा था? कृप्या धैर्य के साथ पढ़ें तथा इस अमृत ज्ञान को सुरक्षित रखें। आपकी एक सौ एक पीढ़ी तक काम आएगा। पवित्रात्माऐं कृप्या सत्यनारायण (अविनाशी प्रभु/सतपुरूष) द्वारा रची सृष्टि रचना का वास्तविक ज्ञान पढ़ें।

1. पूर्ण ब्रह्म :- इस सृष्टि रचना में सतपुरुष-सतलोक का स्वामी (प्रभु), अलख पुरुष-अलख लोक का स्वामी (प्रभु), अगम पुरुष-अगम लोक का स्वामी (प्रभु) तथा अनामी पुरुष-अनामी अकह लोक का स्वामी (प्रभु) तो एक ही पूर्ण ब्रह्म है, जो वास्तव में अविनाशी प्रभु है जो भिन्न-२ रूप धारण करके अपने चारों लोकों में रहता है। जिसके अन्तर्गत असंख्य ब्रह्माण्ड आते हैं।

2. परब्रह्म :- यह केवल सात संख ब्रह्माण्ड का स्वामी (प्रभु) है। यह अक्षर पुरुष भी कहलाता है। परन्तु यह तथा इसके ब्रह्माण्ड भी वास्तव में अविनाशी नहीं है।

3. ब्रह्म :- यह केवल इक्कीस ब्रह्माण्ड का स्वामी (प्रभु) है। इसे क्षर पुरुष, ज्योति निरंजन, काल आदि उपमा से जाना जाता है। यह तथा इसके सर्व ब्रह्माण्ड नाशवान हैं।

(उपरोक्त तीनों पुरूषों (प्रभुओं) का प्रमाण पवित्र श्री मद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी है।)

4. ब्रह्मा :- ब्रह्मा इसी ब्रह्म का ज्येष्ठ पुत्र है, विष्णु मध्य वाला पुत्र है तथा शिव अंतिम तीसरा पुत्र है। ये तीनों ब्रह्म के पुत्र केवल एक ब्रह्माण्ड में एक विभाग (गुण) के स्वामी (प्रभु) हैं तथा नाशवान हैं। विस्तृत विवरण के लिए कृप्या पढ़ें निम्न लिखित सृष्टि रचना :-

{कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने सुक्ष्म वेद अर्थात् कबिर्बाणी में अपने द्वारा रची सृष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया है जो निम्नलिखित है}

सर्व प्रथम केवल एक स्थान 'अनामी (अनामय) लोक' था। जिसे अकह लोक भी कहा जाता है, पूर्ण परमात्मा उस अनामी लोक में अकेला रहता था। उस परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है। सभी आत्माऐं उस पूर्ण धनी के शरीर में समाई हुई थी। इसी कविर्देव का उपमात्मक (पदवी का) नाम अनामी पुरुष है। (पुरुष का अर्थ प्रभु होता है। प्रभु ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया है, इसलिए मानव का नाम भी पुरुष ही पड़ा है।) अनामी पुरूष के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश संख सूर्यो की रोशनी से भी अधिक है।

विशेष :- जैसे किसी देश के आदरणीय प्रधान मंत्री जी का शरीर का नाम तो अन्य होता है तथा पद का उपमात्मक (पदवी का) नाम प्रधानमंत्री होता है। कई बार प्रधानमंत्री जी अपने पास कई विभाग भी रख लेते हैं। तब जिस भी विभाग

परमेश्वर कबीर साहेब के असंख्य ब्रह्मण्डों का लघु चित्र

अनामी लोक : इस लोक में कबीर साहेब अनामी पुरूष रूप में रहते हैं। यहाँ अकेले हैं।

अगम लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अगम पुरूष रूप में रहते हैं।

अलख लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अलख पुरूष रूप में रहते हैं।
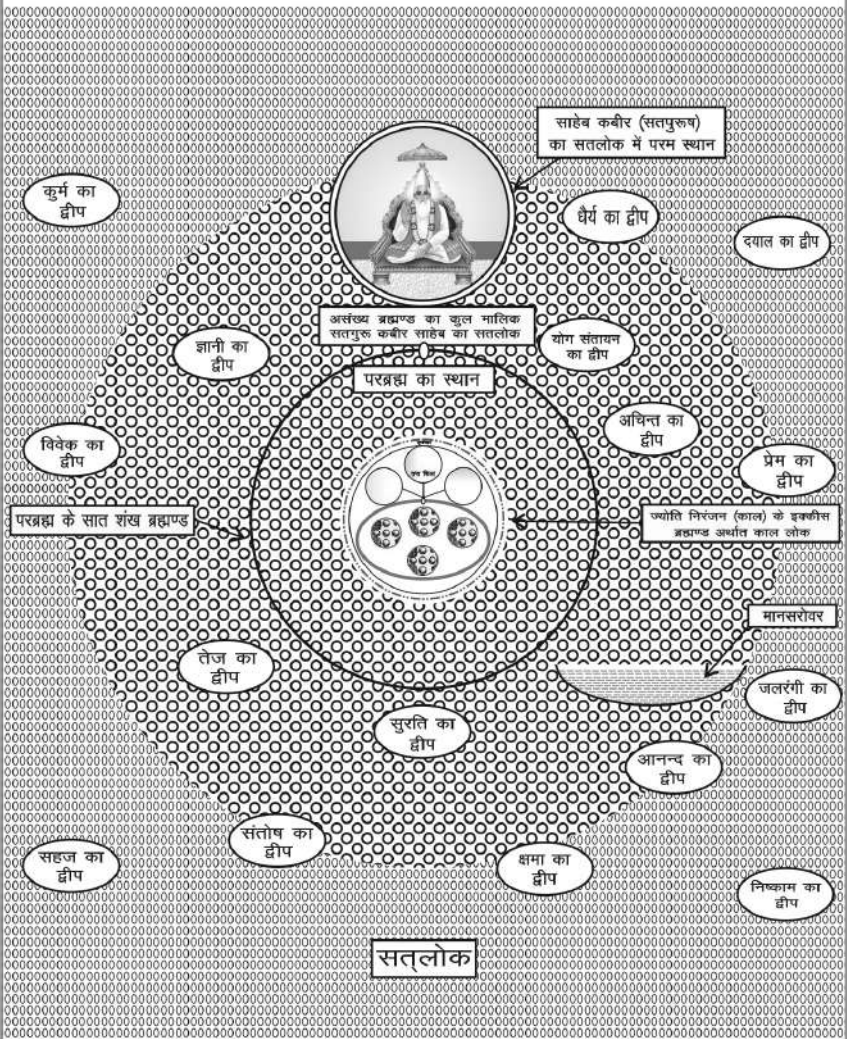
के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करते हैं तो उस समय उसी पद को लिखते हैं। जैसे गृह मंत्रालय के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करेगें तो अपने को गृह मंत्री लिखेगें। वहाँ उसी व्यक्ति के हस्ताक्षर की शक्ति कम होती है। इसी प्रकार कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की रोशनी में अंतर भिन्न-२ लोकों में होता जाता है।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने नीचे के तीन और लोकों (अगमलोक, अलख लोक, सतलोक) की रचना शब्द(वचन) से की। यही पूर्णब्रह्म परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही अगम लोक में प्रकट हुआ तथा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अगम लोक का भी स्वामी है तथा वहाँ इनका उपमात्मक (पदवी का) नाम अगम पुरुष अर्थात् अगम प्रभु है। इसी अगम प्रभु का मानव सदृश शरीर बहुत तेजोमय है जिसके एक रोम (शरीर के बाल) की रोशनी खरब सूर्य की रोशनी से भी अधिक है।

यह पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबिर देव=कबीर परमेश्वर) अलख लोक में प्रकट हुआ तथा स्वयं ही अलख लोक का भी स्वामी है तथा उपमात्मक (पदवी का) नाम अलख पुरुष भी इसी परमेश्वर का है तथा इस पूर्ण प्रभु का मानव सदृश शरीर तेजोमय (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित है। एक रोम (शरीर के बाल) की रोशनी अरब सूर्यों के प्रकाश से भी ज्यादा है।

यही पूर्ण प्रभु सतलोक में प्रकट हुआ तथा सतलोक का भी अधिपति यही है। इसलिए इसी का उपमात्मक (पदवी का) नाम सतपुरुष (अविनाशी प्रभु)है। इसी का नाम अकालमूर्ति - शब्द स्वरूपी राम - पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं। इसी सतपुरुष कविर्देव (कबीर प्रभु) का मानव सदृश शरीर तेजोमय है। जिसके एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है।

इस कविर्देव (कबीर प्रभु) ने सतपुरुष रूप में प्रकट होकर सतलोक में विराजमान होकर प्रथम सतलोक में अन्य रचना की।

एक शब्द (वचन) से सोलह द्वीपों की रचना की। फिर सोलह शब्दों से सोलह पुत्रों की उत्पत्ति की। एक मानसरोवर की रचना की जिसमें अमृत भरा। सोलह पुत्रों के नाम हैं :-(1) ''कूर्म'', (2)''ज्ञानी'', (3) ''विवेक'', (4) ''तेज'', (5) ''सहज'', (6) ''सन्तोष'', (7)''सुरति'', (8) ''आनन्द'', (9) ''क्षमा'', (10) ''निष्काम'', (11) 'जलरंगी' (12)''अचिन्त'', (13) ''प्रेम'', (14) ''दयाल'', (15) ''धैर्य'' (16) ''योग संतायन'' अर्थात् ''योगजीत''।

सतपुरुष कविर्देव ने अपने पुत्र अचिन्त को सत्यलोक की अन्य रचना का भार सौंपा तथा शक्ति प्रदान की। अचिन्त ने अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की शब्द से उत्पत्ति की तथा कहा कि मेरी मदद करना। अक्षर पुरुष स्नान करने मानसरोवर पर गया, वहाँ आनन्द आया तथा सो गया। लम्बे समय तक बाहर नहीं आया। तब अचिन्त की प्रार्थना पर अक्षर पुरुष को नींद से जगाने के लिए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने उसी मानसरोवर से कुछ अमृत जल लेकर एक अण्डा बनाया तथा उस अण्डे

में एक आत्मा प्रवेश की तथा अण्डे को मानसरोवर के अमंत जल में छोड़ा। अण्डे की गड़गड़ाहट से अक्षर पुरुष की निंद्रा भंग हुई। उसने अण्डे को क्रोध से देखा जिस कारण से अण्डे के दो भाग हो गए। उसमें से ज्योति निंरजन (क्षर पुरुष) निकला जो आगे चलकर 'काल' कहलाया। इसका वास्तविक नाम ''कैल'' है। तब सतपुरुष (कविर्देव) ने आकाशवाणी की कि आप दोनों बाहर आओ तथा अचिंत के द्वीप में रहो। आज्ञा पाकर अक्षर पुरुष तथा क्षर पुरुष (कैल) दोनों अचिंत के द्वीप में रहने लगे (बच्चों की नालायकी उन्हीं को दिखाई कि कहीं फिर प्रभुता की तड़फ न बन जाए, क्योंकि समर्थ बिन कार्य सफल नहीं होता) फिर पूर्ण धनी कविर्देव ने सर्व रचना स्वयं की। अपनी शब्द शक्ति से एक राजेश्वरी (राष्ट्री) शक्ति उत्पन्न की, जिससे सर्व ब्रह्माण्डों को स्थापित किया। इसी को पराशक्ति परानन्दनी भी कहते हैं। पूर्ण ब्रह्म ने सर्व आत्माओं को अपने ही अन्दर से अपनी वचन शक्ति से अपने मानव शरीर सदंश उत्पन्न किया। प्रत्येक हंस आत्मा का परमात्मा जैसा ही शरीर रचा जिसका तेज 16 (सोलह) सूर्यों जैसा मानव सदंश ही है। परन्तु परमेश्वर के शरीर के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ों सूर्यों से भी ज्यादा है। बहुत समय उपरान्त क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) ने सोचा कि हम तीनों (अचिन्त - अक्षर पुरुष - क्षर पुरुष) एक द्वीप में रह रहे हैं तथा अन्य एक-एक द्वीप में रह रहे हैं। मैं भी साधना करके अलग द्वीप प्राप्त करूँगा। उसने ऐसा विचार करके एक पैर पर खड़ा होकर सत्तर (70) युग तक तप किया।

"आत्माऐं काल के जाल में कैसे फँसी?"

विशेष :- जब ब्रह्म (ज्योति निरंजन) तप कर रहा था हम सभी आत्माऐं, जो आज ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्माण्डों में रहते हैं इसकी साधना पर आसक्त हो गए तथा हृदय से इसे चाहने लगे। अपने सुखदाई प्रभु सत्य पुरूष से विमुख हो गए। जिस कारण से पतिव्रता पद से गिर गए। पूर्ण प्रभु के बार-बार सावधान करने पर भी हमारी आसक्ति क्षर पुरुष से नहीं हटी। {यही प्रभाव आज भी काल संष्टि में विद्यमान है। जैसे नौजवान बच्चे फिल्म स्टारों (अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों) की बनावटी अदाओं तथा अपने रोजगार उद्देश्य से कर रहे भूमिका पर अति आसक्त हो जाते हैं, रोकने से नहीं रूकते। यदि कोई अभिनेता या अभिनेत्री निकटवर्ती शहर में आ जाए तो देखें उन नादान बच्चों की भीड़ केवल दर्शन करने के लिए बहु संख्या में एकत्रित हो जाती हैं। 'लेना एक न देने दो' रोजी रोटी अभिनेता कमा रहे हैं, नौजवान बच्चे लुट रहे हैं। माता–पिता कितना ही समझाऐं किन्तु बच्चे नहीं मानते। कहीं न कहीं, कभी न कभी, लुक–छिप कर जाते ही रहते हैं।}

पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) ने क्षर पुरुष से पूछा कि बोलो क्या चाहते हो? उसने कहा कि पिता जी यह स्थान मेरे लिए कम है, मुझे अलग से द्वीप प्रदान करने की कंपा करें। हक्का कबीर (सत् कबीर) ने उसे 21 (इक्कीस) ब्रह्माण्ड प्रदान कर दिए। कुछ समय उपरान्त ज्योति निरंजन ने सोचा इस में कुछ रचना करनी

चाहिए। खाली ब्रह्माण्ड(प्लाट) किस काम के। यह विचार कर 70 युग तप करके पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर प्रभु) से रचना सामग्री की याचना की। सतपुरुष ने उसे तीन गुण तथा पाँच तत्व प्रदान कर दिए, जिससे ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने अपने ब्रह्माण्डों में कुछ रचना की। फिर सोचा कि इसमें जीव भी होने चाहिए, अकेले का दिल नहीं लगता। यह विचार करके 64 (चौसठ) युग तक फिर तप किया। पूर्ण परमात्मा कविर् देव के पूछने पर बताया कि मुझे कुछ आत्मा दे दो, मेरा अकेले का दिल नहीं लग रहा। तब सतपुरुष कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि ब्रह्म तेरे तप के प्रतिफल में मैं तुझे और ब्रह्माण्ड दे सकता हूँ, परन्तु मेरी आत्माओं को किसी भी जप-तप साधना के फल रूप में नहीं दे सकता। हाँ, यदि कोई स्वेच्छा से तेरे साथ जाना चाहे तो वह जा सकता है। युवा कविर् (समर्थ कबीर) के वचन सुन कर ज्योति निरंजन हमारे पास आया। हम सभी हंस आत्मा पहले से ही उस पर आसक्त थे। हम उसे चारों तरफ से घेर कर खड़े हो गए। ज्योति निंरजन ने कहा कि मैंने पिता जी से अलग 21 ब्रह्माण्ड प्राप्त किए हैं। वहाँ नाना प्रकार के रमणीय स्थल बनाए हैं। क्या आप मेरे साथ चलोगे? हम सभी हंसों ने जो आज 21 ब्रह्माण्डों में परेशान हैं, कहा कि हम तैयार हैं यदि पिता जी आज्ञा दें तब क्षर पुरुष पूर्ण ब्रह्म महान् कविर् (समर्थ कबीर प्रभु) के पास गया तथा सर्व वार्ता कही। तब कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि मेरे सामने स्वीकृति देने वाले को आज्ञा दूंगा। क्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष (कविरमितौजा=कविर अमित औजा यानि जिसकी शक्ति का कोई वार नहीं, वह कबीर) दोनों हम सभी हंसात्माओं के पास आए। सत् कविर्देव ने कहा कि जो हंस आत्मा ब्रह्म के साथ जाना चाहता है हाथ ऊपर करके स्वीकृति दे। अपने पिता के सामने किसी की हिम्मत नहीं हुई। किसी ने स्वीकृति नहीं दी। बहुत समय तक सन्नाटा छाया रहा। तत्पश्चात् एक हंस आत्मा ने साहस किया तथा कहा कि पिता जी मैं जाना चाहता हूँ। फिर तो उसकी देखा-देखी (जो आज काल (ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्माण्डों में फंसी हैं) हम सभी आत्माओं ने स्वीकृति दे दी। परमेश्वर कबीर जी ने ज्योति निरंजन से कहा कि आप अपने स्थान पर जाओ। जिन्होंने तेरे साथ जाने की स्वीकृति दी है मैं उन सर्व हंस आत्माओं को आपके पास भेज दूंगा। ज्योति निरंजन अपने 21 ब्रह्माण्डों में चला गया। उस समय तक यह इक्कीस ब्रह्माण्ड सतलोक में ही थे।

तत्पश्चात् पूर्ण ब्रह्म ने सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को लड़की का रूप दिया परन्तु स्त्री इन्द्री नहीं रची तथा सर्व आत्माओं को (जिन्होंने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) के साथ जाने की सहमति दी थी) उस लड़की के शरीर में प्रवेश कर दिया तथा उसका नाम आष्ट्रा (आदि माया/ प्रकृति देवी/ दुर्गा) पड़ा तथा सत्य पुरूष ने कहा कि पुत्री मैंने तेरे को शब्द शक्ति प्रदान कर दी है जितने जीव ब्रह्म कहे आप उत्पन्न कर देना। पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर साहेब) अपने पुत्र सहज दास के द्वारा प्रकृति को क्षर पुरुष के पास भिजवा दिया। सहज दास जी ने ज्योति निरंजन को बताया कि पिता जी ने इस बहन के शरीर में उन सर्व आत्माओं को प्रवेश कर

दिया है जिन्होंने आपके साथ जाने की सहमति व्यक्त की थी तथा इसको पिता जी ने वचन शक्ति प्रदान की है, आप जितने जीव चाहोगे प्रकृति अपने शब्द से उत्पन्न कर देगी। यह कह कर सहजदास वापिस अपने द्वीप में आ गया।

युवा होने के कारण लड़की का रंग-रूप निखरा हुआ था। ब्रह्म के अन्दर विषय-वासना उत्पन्न हो गई तथा प्रकृति देवी के साथ अभद्र गति विधि प्रारम्भ की। तब दुर्गा ने कहा कि ज्योति निरंजन मेरे पास पिता जी की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है। आप जितने प्राणी कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। आप मैथुन परम्परा शुरु मत करो। आप भी उसी पिता के शब्द से अण्डे से उत्पन्न हुए हो तथा मैं भी उसी परमपिता के वचन से ही बाद में उत्पन्न हुई हूँ। आप मेरे बड़े भाई हो, बहन-भाई का यह योग महापाप का कारण बनेगा। परन्तु ज्योति निरंजन ने प्रकृति देवी की एक भी प्रार्थना नहीं सुनी तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (भग) प्रकृति को लगा दी तथा बलात्कार करने की ठानी। उसी समय दुर्गा ने अपनी इज्जत रक्षा के लिए कोई और चारा न देख सुक्ष्म रूप बनाया तथा ज्योति निरंजन के खुले मुख के द्वारा पेट में प्रवेश करके पूर्णब्रह्म कविर् देव से अपनी रक्षा के लिए याचना की। उसी समय कविर्देव (कविर् देव) अपने पुत्र योग संतायन अर्थात् जोगजीत का रूप बनाकर वहाँ प्रकट हुए तथा कन्या को ब्रह्म के उदर से बाहर निकाला तथा कहा कि ज्योति निरंजन आज से तेरा नाम 'काल' होगा। तेरे जन्म-मृत्यु होते रहेंगे। इसीलिए तेरा नाम क्षर पुरुष होगा तथा एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को प्रतिदिन खाया करेगा व सवा लाख उत्पन्न किया करेगा। आप दोनों को इक्कीस ब्रह्माण्ड सहित निष्कासित किया जाता है। इतना कहते ही इक्कीस ब्रह्माण्ड विमान की तरह चल पड़े। सहज दास के द्वीप के पास से होते हुए सतलोक से सोलह संख कोस (एक कोस लगभग 3 कि. मी. का होता है) की दूरी पर आकर रूक गए।

विशेष विवरण - अब तक तीन शक्तियों का विवरण आया है।

1. पूर्णब्रह्म जिसे अन्य उपमात्मक नामों से भी जाना जाता है, जैसे सतपुरुष, अकालपुरुष, शब्द स्वरूपी राम, परम अक्षर ब्रह्म/पुरुष आदि। यह पूर्णब्रह्म असंख्य ब्रह्माण्डों का स्वामी है तथा वास्तव में अविनाशी है।

2. परब्रह्म जिसे अक्षर पुरुष भी कहा जाता है। यह वास्तव में अविनाशी नहीं है। यह सात शंख ब्रह्माण्डों का स्वामी है।

3. ब्रह्म जिसे ज्योति निरंजन, काल, कैल, क्षर पुरुष तथा धर्मराय आदि नामों से जाना जाता है, जो केवल इक्कीस ब्रह्माण्ड का स्वामी है। अब आगे इसी ब्रह्म (काल) की सृष्टि के एक ब्रह्माण्ड का परिचय दिया जाएगा, जिसमें तीन और नाम आपके पढ़ने में आयेंगे - ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव। ब्रह्म तथा ब्रह्मा में भेद - एक ब्रह्माण्ड में बने सर्वोपरि स्थान पर ब्रह्म (क्षर पुरुष) स्वयं तीन गुप्त स्थानों की रचना करके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी प्रकृति (दुर्गा) के सहयोग से तीन पुत्रों की उत्पत्ति करता है।

एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र
शुन्य स्थान
परमेश्वर का राजदूत भवन
महाविष्णु रूप में काल (ब्रह्म)
सतोगुण प्रधान क्षेत्र
जटा कुण्डली झील
महाशिव रूप में काल
तमोगुण प्रधान क्षेत्र
महाब्रह्मा रूप में काल
रजोगुण प्रधान क्षेत्र
ब्रह्म लोक
सप्तपुरी
अठासी हजार द्वीप
धर्मराय का लोक
मानसरोवर
दुर्गा लोक
नकली अनामी लोक
नकली अगम लोक
नकली अलख लोक
नकली सतलोक
महाइन्द्र का द्वीप
मीठे जल का समुद्र
महास्वर्ग
सुमेरू पर्वत
फलदार वृक्षों का वन
स्वर्ग
नरक
जटा कुण्डली झील
विष्णु लोक
शिव लोक
इन्द्र का लोक
सूर्य
ब्रह्मा लोक
पृथ्वी
चन्द्रमा
वितल
महातल
अतल
सूतल
तलातल
रसातल
पाताल लोक
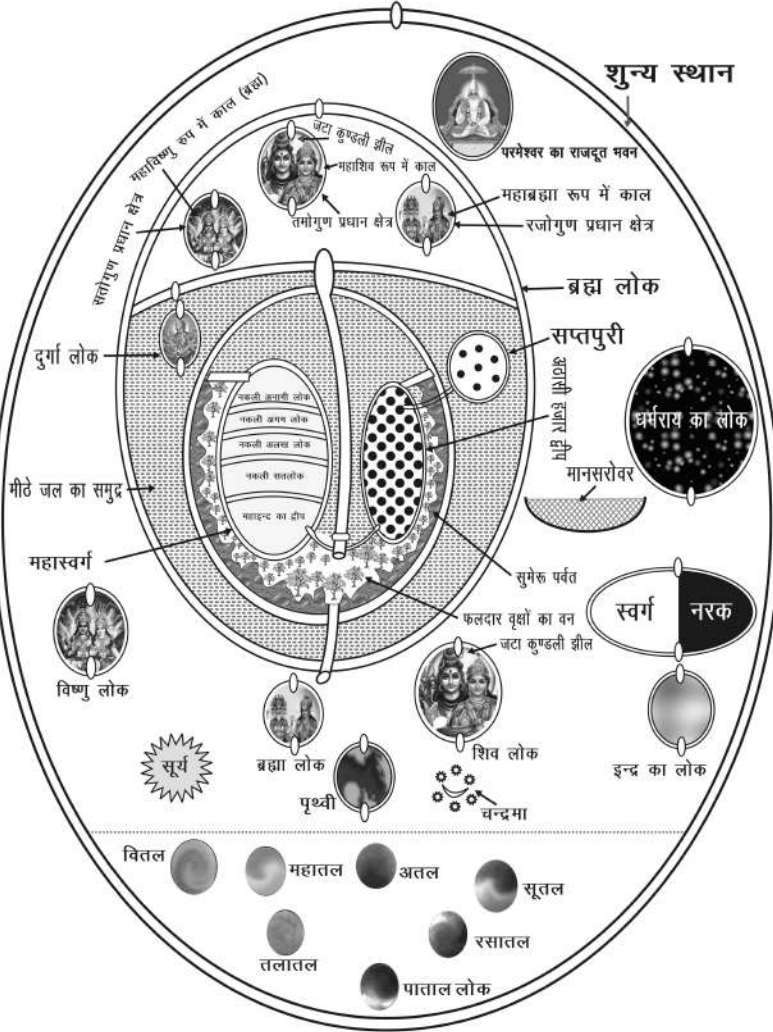
उनके नाम भी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ही रखता है। जो ब्रह्म का पुत्र ब्रह्मा है वह एक ब्रह्माण्ड में केवल तीन लोकों (पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) में एक रजोगुण विभाग का मंत्री (स्वामी) है। इसे त्रिलोकीय ब्रह्मा कहा है तथा ब्रह्म जो ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप में रहता है उसे महाब्रह्मा व ब्रह्मलोकिय ब्रह्मा कहा है। इसी ब्रह्म (काल) को सदाशिव, महाशिव, महाविष्णु भी कहा है।

श्री विष्णु पुराण में प्रमाण :- चतुर्थ अंश अध्याय 1 पृष्ठ 230-231 पर श्री ब्रह्मा जी ने कहा :- जिस अजन्मा, सर्वमय विधाता परमेश्वर का आदि, मध्य, अन्त, स्वरूप, स्वभाव और सार हम नहीं जान पाते (श्लोक 83)

जो मेरा रूप धारण कर संसार की रचना करता है, स्थिति के समय जो पुरूष रूप है तथा जो रूद्र रूप से विश्व का ग्रास कर जाता है, अनन्त रूप से सम्पूर्ण जगत् को धारण करता है। (श्लोक 86)

”श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी की उत्पत्ति“

काल (ब्रह्म) ने प्रकृति (दुर्गा) से कहा कि अब मेरा कौन क्या बिगाडेगा? मन मानी करूंगा प्रकृति ने फिर प्रार्थना की कि आप कुछ शर्म करो। प्रथम तो आप मेरे बड़े भाई हो, क्योंकि उसी पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) की वचन शक्ति से आप की (ब्रह्म की) अण्डे से उत्पत्ति हुई तथा बाद में मेरी उत्पत्ति उसी परमेश्वर के वचन से हुई है। दूसरे मैं आपके पेट से बाहर निकली हूँ, मैं आपकी बेटी हुई तथा आप मेरे पिता हुए। इन पवित्र नातों में बिगाड़ करना महापाप होगा। मेरे पास पिता की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है, जितने प्राणी आप कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूंगी। ज्योति निरंजन ने दुर्गा की एक भी विनय नहीं सुनी तथा कहा कि मुझे जो सजा मिलनी थी मिल गई, मुझे सतलोक से निष्कासित कर दिया। अब मनमानी करूंगा। यह कह कर काल पुरूष (क्षर पुरूष) ने प्रकृति के साथ जबरदस्ती शादी की तथा तीन पुत्रों (रजगुण युक्त - ब्रह्मा जी, सतगुण युक्त - विष्णु जी तथा तमगुण युक्त - शिव शंकर जी) की उत्पत्ति की। जवान होने तक तीनों पुत्रों को दुर्गा के द्वारा अचेत करवा देता है, फिर युवा होने पर श्री ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, श्री विष्णु जी को शेष नाग की शैय्या पर तथा श्री शिव जी को कैलाश पर्वत पर सचेत करके इक्ट्ठे कर देता है। तत्पश्चात् प्रकृति (दुर्गा) द्वारा इन तीनों का विवाह कर दिया जाता है तथा एक ब्रह्माण्ड में तीन लोकों (स्वर्ग लोक, पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) में एक-एक विभाग के मंत्री (प्रभु) नियुक्त कर देता है। जैसे श्री ब्रह्मा जी को रजोगुण विभाग का तथा विष्णु जी को सत्तोगुण विभाग का तथा श्री शिव शंकर जी को तमोगुण विभाग का तथा स्वयं गुप्त (महाब्रह्मा - महाविष्णु - महाशिव) रूप से मुख्य मंत्री पद को संभालता है। एक ब्रह्माण्ड में एक ब्रह्मलोक की रचना की है। उसी में तीन गुप्त स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान स्थान है जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) स्वयं महाब्रह्मा (मुख्यमंत्री) रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महासावित्री रूप में रखता है। इन दोनों के संयोग से जो पुत्र

इस स्थान पर उत्पन्न होता है वह स्वतः ही रजोगुणी बन जाता है। दूसरा स्थान सतोगुण प्रधान स्थान बनाया है। वहाँ पर यह क्षर पुरुष स्वयं महाविष्णु रूप बना कर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महालक्ष्मी रूप में रख कर जो पुत्र उत्पन्न करता है उसका नाम विष्णु रखता है, वह बालक सतोगुण युक्त होता है तथा तीसरा इसी काल ने वहीं पर एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें यह स्वयं सदाशिव रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महापार्वती रूप में रखता है। इन दोनों के पति-पत्नी व्यवहार से जो पुत्र उत्पन्न होता है उसका नाम शिव रख देते हैं तथा तमोगुण युक्त कर देते हैं। (प्रमाण के लिए देखें पवित्र श्री शिव महापुराण, विद्यवेश्वर संहिता पृष्ठ 24-26 जिस में ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र तथा महेश्वर से अन्य सदाशिव है तथा रूद्र संहिता अध्याय 6 तथा 7, 9 पृष्ठ नं. 100 से, 105 तथा 110 पर अनुवाद कर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित तथा पवित्र श्रीमद्देवीमहापुराण तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 114 से 123 तक, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवाद कर्ता हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी) फिर इन्हीं को धोखे में रख कर अपने खाने के लिए जीवों की उत्पत्ति श्री ब्रह्मा जी द्वारा तथा स्थिति (एक-दूसरे को मोह-ममता में रख कर काल जाल में रखना) श्री विष्णु जी से तथा संहार (क्योंकि काल पुरुष को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर से मैल निकाल कर खाना होता है उसके लिए इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में एक तप्तशिला है जो स्वतः गर्म रहती है, उस पर गर्म करके मैल पिंघला कर खाता है, जीव मरते नहीं परन्तु कष्ट असहनीय होता है, फिर प्राणियों को कर्म आधार पर अन्य शरीर प्रदान करता है) श्री शिव जी द्वारा करवाता है। जैसे किसी मकान में तीन कमरे बने हों। एक कमरे में अश्लील चित्र लगे हों। उस कमरे में जाते ही मन में वैसे ही मलिन विचार उत्पन्न हो जाते हैं। दूसरे कमरे में साधु-सन्तों, भक्तों के चित्र लगे हों तो मन में अच्छे विचार, प्रभु का चिन्तन ही बना रहता है। तीसरे कमरे में देश भक्तों व शहीदों के चित्र लगे हों तो मन में वैसे ही जोशीले विचार उत्पन्न हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार ब्रह्म (काल) ने अपनी सूझ-बूझ से उपरोक्त तीनों गुण प्रधान स्थानों की रचना की हुई है।

''तीनों गुण क्या हैं? प्रमाण सहित''

''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। ब्रह्म (काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''

प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पृष्ठ सं. 24 से 26 विद्यवेश्वर संहिता तथा पृष्ठ 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।

दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके

सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कंद, अध्याय 5 पृष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति की : कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर तुम्हारी कृपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) होती है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकृति और सनातनी देवी हो। भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ ? अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हो। इस संसार की सृष्टि-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्पर रहते हैं।

उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाशन मुम्बई, इसमें संस्कृत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पृष्ठ 10, श्लोक 42:-

ब्रह्मा – अहम् ईश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः
के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा। (42)

हिन्दी अनुवाद :- हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकृति तथा सनातनी देवी हो।

पृष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदां•बिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः।(8)

अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किस लिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् जीवों के जन्म-मृत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया?

श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।

निष्कर्ष :- उपरोक्त प्रमाणों से प्रमाणित हुआ की रजगुण - ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव है ये तीनों नाशवान है। दुर्गा का पति ब्रह्म (काल) है यह उसके साथ भोग विलास करता है।

"ब्रह्म (काल) की अव्यक्त रहने की प्रतिज्ञा"

सूक्ष्मवेद से शेष सृष्टि रचना-------

तीनों पुत्रों की उत्पत्ति के पश्चात् ब्रह्म ने अपनी पत्नी दुर्गा (प्रकृति) से कहा मैं प्रतिज्ञा करता हुँ कि भविष्य में मैं किसी को अपने वास्तविक रूप में दर्शन नहीं दूंगा। जिस कारण से मैं अव्यक्त माना जाऊँगा। दुर्गा से कहा कि आप मेरा भेद किसी को मत देना। मैं गुप्त रहूँगा। दुर्गा ने पूछा कि क्या आप अपने पुत्रों को भी दर्शन नहीं

दोगे? ब्रह्म ने कहा मैं अपने पुत्रों को तथा अन्य को किसी भी साधना से दर्शन नहीं दूंगा, यह मेरा अटल नियम रहेगा। दुर्गा ने कहा यह तो आपका उत्तम नियम नहीं है जो आप अपनी संतान से भी छुपे रहोगे। तब काल ने कहा दुर्गा मेरी विवशता है। मुझे एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करने का शाप लगा है। यदि मेरे पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को पता लग गया तो ये उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्य नहीं करेंगे। इसलिए यह मेरा अनुत्तम नियम सदा रहेगा। जब ये तीनों कुछ बड़े हो जाऐं तो इन्हें अचेत कर देना। मेरे विषय में नहीं बताना, नहीं तो मैं तुझे भी दण्ड दूंगा, दुर्गा इस डर के मारे वास्तविकता नहीं बताती। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24 में कहा है कि यह बुद्धिहीन जन समुदाय मेरे अनुत्तम नियम से अपरिचित हैं कि मैं कभी भी किसी के सामने प्रकट नहीं होता अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ। इसलिए मुझ अव्यक्त को मनुष्य रूप में आया हुआ अर्थात् कृष्ण मानते हैं।

(अबुद्धयः) बुद्धि हीन (मम्) मेरे (अनुत्तमम्) अनुत्तम अर्थात् घटिया (अव्ययम्) अविनाशी (परम् भावम्) विशेष भाव को (अजानन्तः) न जानते हुए (माम् अव्यक्तम्) मुझ अव्यक्त को (व्यक्तिम्) मनुष्य रूप में (आपन्नम) आया (मन्यन्ते) मानते हैं अर्थात् मैं कृष्ण नहीं हूँ। (गीता अध्याय 7 श्लोक 24)

गीता अध्याय 11 श्लोक 47 तथा 48 में कहा है कि यह मेरा वास्तविक काल रूप है। इसके दर्शन अर्थात् ब्रह्म प्राप्ति न वेदों में वर्णित विधि से, न जप से, न तप से तथा न किसी क्रिया से हो सकती है।

जब तीनों बच्चे युवा हो गए तब माता भवानी (प्रकृति, अष्टंगी) ने कहा कि तुम सागर मन्थन करो। प्रथम बार सागर मन्थन किया तो (ज्योति निरंजन ने अपने श्वांसों द्वारा चार वेद उत्पन्न किए। उनको गुप्त वाणी द्वारा आज्ञा दी कि सागर में निवास करो) चारों वेद निकले वह ब्रह्मा ने लिए। वस्तु लेकर तीनों बच्चे माता के पास आए तब माता ने कहा कि चारों वेदों को ब्रह्मा रखे व पढे।

नोट :- वास्तव में पूर्णब्रह्म ने, ब्रह्म अर्थात् काल को पाँच वेद प्रदान किए थे। लेकिन ब्रह्म ने केवल चार वेदों को प्रकट किया। पाँचवां वेद छुपा दिया। जो पूर्ण परमात्मा ने स्वयं प्रकट होकर कविर्गिर्भीः अर्थात् कविर्वाणी (कबीर वाणी) द्वारा लोकोक्तियों व दोहों के माध्यम से प्रकट किया है।

दूसरी बार सागर मन्थन किया तो तीन कन्याऐं मिली। माता ने तीनों को बांट दिया। प्रकृति (दुर्गा) ने अपने ही अन्य तीन रूप (सावित्री,लक्ष्मी तथा पार्वती) धारण किए तथा समुन्द्र में छुपा दी। सागर मन्थन के समय बाहर आ गई। वही प्रकृति तीन रूप हुई तथा भगवान ब्रह्मा को सावित्री, भगवान विष्णु को लक्ष्मी, भगवान शंकर को पार्वती पत्नी रूप में दी। तीनों ने भोग विलास किया, सुर तथा असुर दोनों पैदा हुए।

{जब तीसरी बार सागर मन्थन किया तो चौदह रत्न ब्रह्मा को तथा अमृत विष्णु को व देवताओं को, मद्य(शराब) असुरों को तथा विष परमार्थ शिव ने अपने कंठ में ठहराया। यह तो बहुत बाद की बात है।} जब ब्रह्मा वेद पढ़ने लगा तो पता चला कि कोई सर्व ब्रह्माण्डों की रचना करने वाला कुल का मालिक पुरूष (प्रभु) और है। तब

ब्रह्मा जी ने विष्णु जी व शंकर जी को बताया कि वेदों में वर्णन है कि सृजनहार कोई और प्रभु है परन्तु वेद कहते हैं कि भेद हम भी नहीं जानते, उसके लिए संकेत है कि किसी तत्वदर्शी संत से पूछो। तब ब्रह्मा माता के पास आया और सब वृतांत कह सुनाया। माता कहा करती थी कि मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं है। मैं ही कर्ता हूँ। मैं ही सर्वशक्तिमान हूँ परन्तु ब्रह्मा ने कहा कि वेद ईश्वर कृत हैं यह झूठ नहीं हो सकते। दुर्गा ने कहा कि तेरा पिता तुझे दर्शन नहीं देगा, उसने प्रतिज्ञा की हुई है। तब ब्रह्मा ने कहा माता जी अब आप की बात पर अविश्वास हो गया है। मैं उस पुरूष (प्रभु) का पता लगाकर ही रहूँगा। दुर्गा ने कहा कि यदि वह तुझे दर्शन नहीं देगा तो तुम क्या करोगे? ब्रह्मा ने कहा कि मैं आपको शक्ल नहीं दिखाऊँगा। दूसरी तरफ ज्योति निरंजन ने कसम खाई है कि मैं अव्यक्त रहूँगा किसी को दर्शन नहीं दूंगा अर्थात् 21 ब्रह्माण्ड में कभी भी अपने वास्तविक काल रूप में आकार में नहीं आऊँगा।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 24

अव्यक्तम्, व्यक्तिम्, आपन्नम्, मन्यन्ते, माम्, अबुद्धयः।
परम्, भावम्, अजानन्तः, मम, अव्ययम्, अनुत्तमम्।।24।।

अनुवाद : (अबुद्धयः) बुद्धिहीन लोग (मम्) मेरे (अनुतमम्) अश्रेष्ठ (अव्ययम्) अटल (परम्) परम (भावम्) भावको (अजानन्तः) न जानते हुए (अव्यक्तम्) अदृश्यमान (माम्) मुझ कालको (व्यक्तिम्) नर रूप आकार में कृष्ण (आपन्नम्) प्राप्त हुआ (मन्यन्ते) मानते हैं।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 25

न, अहम्, प्रकाशः, सर्वस्य, योगमायासमावृतः।
मूढः, अयम्, न, अभिजानाति, लोकः, माम्, अजम्, अव्ययम्।।25।।

अनुवाद : (अहम्) मैं (योगमाया समावृतः) योगमायासे छिपा हुआ (सर्वस्य) सबके (प्रकाशः) प्रत्यक्ष (न) नहीं होता अर्थात् अदृश्य अर्थात् अव्यक्त रहता हूँ इसलिये (अजम्) जन्म न लेने वाले (अव्ययम्) अविनाशी अटल भावको (अयम्) यह (मूढः) अज्ञानी (लोकः) जनसमुदाय संसार (माम्) मुझे (न) नहीं (अभिजानाति) जानता अर्थात् मुझको कृष्ण समझता है। क्योंकि ब्रह्म अपनी शब्द शक्ति से अपने नाना रूप बना लेता है, यह दुर्गा का पति है इसलिए इस मंत्र में कह रहा है कि मैं श्री कृष्ण आदि की तरह दुर्गा से जन्म नहीं लेता।

"ब्रह्मा का अपने पिता (काल/ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए प्रयत्न"

तब दुर्गा ने ब्रह्मा जी से कहा कि अलख निरंजन तुम्हारा पिता है परन्तु वह तुम्हें दर्शन नहीं देगा। ब्रह्मा ने कहा कि मैं दर्शन करके ही लौटूंगा। माता ने पूछा कि यदि तुझे दर्शन नहीं हुए तो क्या करेगा ? ब्रह्मा ने कहा मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। यदि पिता के दर्शन नहीं हुए तो मैं आपके समक्ष नहीं आऊंगा। यह कह कर ब्रह्मा जी व्याकुल होकर उत्तर दिशा की तरफ चल दिया जहाँ अन्धेरा ही अन्धेरा है। वहाँ ब्रह्मा ने चार युग तक ध्यान लगाया परन्तु कुछ भी प्राप्ति नहीं हुई। काल ने आकाशवाणी की कि जीव उत्पत्ति क्यों नहीं की ? भवानी ने कहा कि आप का ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा जिद्द करके आप की तलाश में गया है। ब्रह्मा के बिना जीव उत्पति का सब कार्य असम्भव है। ब्रह्म

(काल) ने कहा उसे वापिस बुला लो। मैं उसे दर्शन नहीं दूँगा। तब दुर्गा (प्रकति) ने अपनी शब्द शक्ति से गायत्री नाम की लड़की उत्पन्न की तथा उसे ब्रह्मा को लौटा लाने को कहा। गायत्री ब्रह्मा जी के पास गई परंतु ब्रह्मा जी समाधि लगाए हुए थे उन्हें कोई आभास ही नहीं था कि कोई आया है। तब आदि कुमारी (प्रकति) ने गायत्री को ध्यान द्वारा बताया कि इस के चरण स्पर्श कर। तब गायत्री ने ऐसा ही किया। ब्रह्मा जी का ध्यान भंग हुआ तो क्रोध वश बोले कि कौन पापिन है जिसने मेरा ध्यान भंग किया है। मैं तुझे शाप दूंगा। गायत्री कहने लगी कि मेरा दोष नहीं है पहले मेरी बात सुनो तब शाप देना। मेरे को माता ने तुम्हें लौटा लाने को कहा है क्योंकि आपके बिना जीव उत्पत्ति नहीं हो सकती। ब्रह्मा ने कहा कि मैं कैसे जाऊँ? पिता जी के दर्शन हुए नहीं, ऐसे जाऊँ तो मेरा उपहास होगा। यदि आप माता जी के समक्ष यह कह दें कि ब्रह्मा को पिता (ज्योति निरंजन) के दर्शन हुए हैं, मैंने अपनी आँखो से देखा है तो मैं आपके साथ चलूं। तब गायत्री ने कहा कि आप मेरे साथ संभोग (सैक्स) करोगे तो मैं आपकी झूठी साक्षी (गवाही) भरूंगी। तब ब्रह्मा ने सोचा कि पिता के दर्शन हुए नहीं, वैसे जाऊँ तो माता के सामने शर्म लगेगी और चारा नहीं दिखाई दिया, फिर गायत्री से रति क्रिया (संभोग) की।

तब गायत्री ने कहा कि क्यों न एक गवाह और तैयार किया जाए। ब्रह्मा ने कहा बहुत ही अच्छा है। तब गायत्री ने शब्द शक्ति से एक लड़की (पुहपवति नाम की) पैदा की तथा उससे दोनों ने कहा कि आप गवाही देना कि ब्रह्मा ने पिता के दर्शन किए हैं। तब पुहपवति ने कहा कि मैं क्यों झूठी गवाही दूँ ? हाँ, यदि ब्रह्मा मेरे से रति क्रिया (संभोग) करे तो गवाही दे सकती हूँ। गायत्री ने ब्रह्मा को समझाया (उकसाया) कि और कोई चारा नहीं है तब ब्रह्मा ने पुहपवति से संभोग किया तो तीनों मिलकर आदि माया (प्रकति) के पास आए। दोनों देवियों ने उपरोक्त शर्त इसलिए रखी थी कि यदि ब्रह्मा माता के सामने हमारी झूठी गवाही को बता देगा तो माता हमें शाप दे देगी। इसलिए उसे भी दोषी बना लिया।

(यहाँ महाराज गरीबदास जी कहते हैं कि – ''दास गरीब यह चूक धुरों धुर'')

"माता (दुर्गा) द्वारा ब्रह्मा को शॉप देना"

तब माता ने ब्रह्मा से पूछा क्या तुझे तेरे पिता के दर्शन हुए? ब्रह्मा ने कहा हाँ मुझे पिता के दर्शन हुए हैं। दुर्गा ने कहा साक्षी बता। तब ब्रह्मा ने कहा इन दोनों के समक्ष साक्षात्कार हुआ है। देवी ने उन दोनों लड़कियों से पूछा क्या तुम्हारे सामने ब्रह्म का साक्षात्कार हुआ है तब दोनों ने कहा कि हाँ, हमने अपनी आँखों से देखा है। फिर भवानी (प्रकति) को संशय हुआ कि मुझे तो ब्रह्म ने कहा था कि मैं किसी को दर्शन नहीं दूंगा, परन्तु ये कहते हैं कि दर्शन हुए हैं। तब अष्टंगी ने ध्यान लगाया और काल/ज्योति निरंजन से पूछा कि यह क्या कहानी है? ज्योति निंरजन जी ने कहा कि ये तीनों झूठ बोल रहे हैं। तब माता ने कहा तुम झूठ बोल रहे हो। आकाशवाणी हुई है कि इन्हें कोई दर्शन नहीं हुए। यह बात सुनकर ब्रह्मा ने कहा कि माता जी मैं सौगंध

खाकर पिता की तलाश करने गया था। परन्तु पिता (ब्रह्म) के दर्शन हुए नहीं। आप के पास आने में शर्म लग रही थी। इसलिए हमने झूठ बोल दिया। तब माता (दुर्गा) ने कहा कि अब मैं तुम्हें शाप देती हूँ।

ब्रह्मा को शॉप : -- तेरी पूजा जग में नहीं होगी। आगे तेरे वंशज होंगे वे बहुत पाखण्ड करेंगे। झूठी बात बना कर जग को ठगेंगे। ऊपर से तो कर्म काण्ड करते दिखाई देंगे अन्दर से विकार करेंगे। कथा पुराणों को पढ़कर सुनाया करेंगे, स्वयं को ज्ञान नहीं होगा कि सद्ग्रन्थों में वास्तविकता क्या है, फिर भी मान वश तथा धन प्राप्ति के लिए गुरु बन कर अनुयाइयों को लोकवेद (शास्त्र विरुद्ध दंत कथा) सुनाया करेंगे। देवी-देवों की पूजा करके तथा करवाके, दूसरों की निन्दा करके कष्ट पर कष्ट उठायेंगे। जो उनके अनुयाई होंगे उनको परमार्थ नहीं बताएंगे। दक्षिणा के लिए जगत को गुमराह करते रहेंगे। अपने आपको सबसे श्रेष्ठ मानेंगे, दूसरों को नीचा समझेंगे। जब माता के मुख से यह सुना तो ब्रह्मा मुर्छित होकर जमीन पर गिर गया। बहुत समय उपरान्त होश में आया।

गायत्री को शॉप : -- तेरे कई सांड पति होंगे। तू मतलोक में गाय बनेगी।

पुहपवति को शॉप : -- तेरी जगह गंदगी में होगी। तेरे फूलों को कोई पूजा में नहीं लाएगा। इस झूठी गवाही के कारण तुझे यह नरक भोगना होगा। तेरा नाम केवड़ा केतकी होगा। {हरियाणा में कुसोंधी कहते हैं। यह गंदगी (कुरड़ियों) वाली जगह पर होती है।}

इस प्रकार तीनों को शाप देकर माता भवानी बहुत पछताई। {इस प्रकार पहले तो जीव बिना सोचे मन (काल निरंजन) के प्रभाव से गलत कार्य कर देता है परन्तु जब आत्मा (सतपुरूष अंश) के प्रभाव से उसे ज्ञान होता है तो पीछे पछताना पड़ता है। जिस प्रकार माता–पिता अपने बच्चों को छोटी सी गलती के कारण ताड़ते हैं (क्रोधवश होकर) परन्तु बाद में बहुत पछताते हैं। यही प्रक्रिया मन (काल–निंरजन) के प्रभाव से सर्व जीवों में क्रियावान हो रही है।} हाँ, यहाँ एक बात विशेष है कि निरंजन (काल-ब्रह्म) ने भी अपना कानून बना रखा है कि यदि कोई जीव किसी दुर्बल जीव को सताएगा तो उसे उसका बदला देना पड़ेगा। जब आदि भवानी (प्रकति, अष्टंगी) ने ब्रह्मा, गायत्री व पुहपवति को शाप दिया तो अलख निंरजन (ब्रह्म-काल) ने कहा कि हे भवानी (प्रकति/अष्टंगी) यह आपने अच्छा नहीं किया। अब मैं (निरंजन) आपको शाप देता हूँ कि द्वापर युग में तेरे भी पाँच पति होंगे। (द्रोपदी ही आदिमाया का अवतार हुई है।) जब यह आकाश वाणी सुनी तो आदि माया ने कहा कि हे ज्योति निंरजन (काल) मैं तेरे वश पड़ी हूँ जो चाहे सो कर ले।

{सष्टि रचना में दुर्गा जी के अन्य नामों का बार-बार लिखने का उद्देश्य है कि पुराणों, गीता तथा वेदों में प्रमाण देखते समय भ्रम उत्पन्न नहीं होगा। जैसे गीता अध्याय 14 श्लोक 3-4 में काल ब्रह्म ने कहा है कि प्रकति तो गर्भ धारण करने वाली सब जीवों की माता है। मैं उसके गर्भ में बीज स्थापित करने वाला पिता हूँ। गीता अध्याय 4 श्लोक 4 में कहा है कि प्रकति से उत्पन्न तीनों गुण जीवात्मा को कर्मों के बँधन में बाँधते हैं।-(लेख समाप्त)।

इस प्रकरण में प्रकृति तो दुर्गा है तथा तीनों गुण तीनों देवता यानि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव के सांकेतिक नाम हैं।}

"विष्णु का अपने पिता (काल/ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए प्रस्थान व माता का आशीर्वाद पाना"

इसके बाद विष्णु से प्रकृति ने कहा कि पुत्र तू भी अपने पिता का पता लगा ले। तब विष्णु अपने पिता जी काल (ब्रह्म) का पता करते-करते पाताल लोक में चले गए, जहाँ शेषनाग था। उसने विष्णु को अपनी सीमा में प्रविष्ट होते देख कर क्रोधित हो कर जहर भरा फुंकारा मारा। उसके विष के प्रभाव से विष्णु जी का रंग सांवला हो गया, जैसे स्प्रे पेंट हो जाता है। तब विष्णु ने चाहा कि इस नाग को मजा चखाना चाहिए। तब ज्योति निरंजन (काल) ने देखा कि अब विष्णु को शांत करना चाहिए। तब आकाशवाणी हुई कि विष्णु अब तू अपनी माता जी के पास जा और सत्य-सत्य सारा विवरण बता देना तथा जो कष्ट आपको शेषनाग से हुआ है, इसका प्रतिशोध द्वापर युग में लेना। द्वापर युग में आप (विष्णु) तो कृष्ण अवतार धारण करोगे और कालीदह में कालिन्द्री नामक नाग, शेष नाग का अवतार होगा।

ऊँच होई के नीच सतावै, ताकर ओएल (बदला) मोही सों पावै।
जो जीव देई पीर पुनी काँहु, हम पुनि ओएल दिवावें ताहूँ।।

तब विष्णु जी माता जी के पास आए तथा सत्य-सत्य कह दिया कि मुझे पिता के दर्शन नहीं हुए। इस बात से माता (प्रकृति) बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि पुत्र तू सत्यवादी है। अब मैं अपनी शक्ति से पिता से मिलाती हूँ तथा तेरे मन का संशय खत्म करती हूँ।

कबीर, देख पुत्र तोहि पिता भीटाऊँ, तौरे मन का धोखा मिटाऊँ।
मन स्वरूप कर्ता कह जानों, मन ते दूजा और न मानो।
स्वर्ग पाताल दौर मन केरा, मन अस्थीर मन अहै अनेरा।
निंरकार मन ही को कहिए, मन की आस निश दिन रहिए।
देख हूँ पलटि सुन्य मह ज्योति, जहाँ पर झिलमिल झालर होती।।

इस प्रकार माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने विष्णु से कहा कि मन ही जग का कर्ता है, यही ज्योति निरंजन है। ध्यान में जो एक हजार ज्योतियाँ नजर आती हैं वही उसका रूप है। जो शंख, घण्टा आदि का बाजा सुना, यह महास्वर्ग में निरंजन का ही बज रहा है। तब माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने कहा कि हे पुत्र तुम सब देवों के सरताज हो और तेरी हर कामना व कार्य मैं पूर्ण करूंगी। तेरी पूजा सर्व जग में होगी। आपने मुझे सच-सच बताया है। काल के इक्कीस ब्रह्माण्ड़ों के प्राणियों की विशेष आदत है कि अपनी व्यर्थ महिमा बनाता है। जैसे दुर्गा जी श्री विष्णु जी को कह रही है कि तेरी पूजा जग में होगी। मैंने तुझे तेरे पिता के दर्शन करा दिए। दुर्गा ने केवल प्रकाश दिखा कर श्री विष्णु जी को बहका दिया। श्री विष्णु जी भी प्रभु की यही स्थिति अपने अनुयाइयों को समझाने लगे कि परमात्मा का केवल प्रकाश दिखाई देता है। परमात्मा निराकार

है। इसके बाद आदि भवानी रूद्र(महेश जी) के पास गई तथा कहा कि महेश तू भी कर ले अपने पिता की खोज तेरे दोनों भाइयों को तो तुम्हारे पिता के दर्शन नहीं हुए उनको जो देना था वह प्रदान कर दिया है अब आप माँगो जो माँगना है। तब महेश ने कहा कि हे जननी ! मेरे दोनों बड़े भाईयों को पिता के दर्शन नहीं हुए फिर प्रयत्न करना व्यर्थ है। कृपा मुझे ऐसा वर दो कि मैं अमर (मृत्युंजय) हो जाऊँ। तब माता ने कहा कि यह मैं नहीं कर सकती। हाँ युक्ति बता सकती हूँ, जिससे तेरी आयु सबसे लम्बी बनी रहेगी। विधि योग समाधि है (इसलिए महादेव जी ज्यादातर समाधि में ही रहते हैं)। इस प्रकार माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने तीनों पुत्रों को विभाग बांट दिए : --

भगवान ब्रह्मा जी को काल लोक में लख चौरासी के चोले (शरीर) रचने (बनाने) का अर्थात् रजोगुण प्रभावित करके संतान उत्पत्ति के लिए विवश करके जीव उत्पत्ति कराने का विभाग प्रदान किया। भगवान विष्णु जी को इन जीवों के पालन पोषण (कर्मानुसार) करने, तथा मोह-ममता उत्पन्न करके स्थिति बनाए रखने का विभाग दिया।

भगवान शिव शंकर (महादेव) को संहार करने का विभाग प्रदान किया क्योंकि इनके पिता निरंजन को एक लाख मानव शरीर धारी जीव प्रतिदिन खाने पड़ते हैं।

यहां पर मन में एक प्रश्न उत्पन्न होगा कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर जी से उत्पत्ति, स्थिति और संहार कैसे होता है। ये तीनों अपने-२ लोक में रहते हैं। जैसे आजकल संचार प्रणाली को चलाने के लिए उपग्रहों को ऊपर आसमान में छोड़ा जाता है और वे नीचे पृथ्वी पर संचार प्रणाली को चलाते हैं। ठीक इसी प्रकार ये तीनों देव जहां भी रहते हैं इनके शरीर से निकलने वाले सूक्ष्म गुण की तरंगें तीनों लोकों में अपने आप हर प्राणी पर प्रभाव बनाए रहती है।

उपरोक्त विवरण एक ब्रह्माण्ड में ब्रह्म (काल) की रचना का है। ऐसे-ऐसे क्षर पुरुष (काल) के इक्कीस ब्रह्माण्ड हैं।

परन्तु क्षर पुरूष (काल) स्वयं व्यक्त अर्थात् वास्तविक शरीर रूप में सबके सामने नहीं आता। उसी को प्राप्त करने के लिए तीनों देवों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी, शिव जी) को वेदों में वर्णित विधि अनुसार भरसक साधना करने पर भी ब्रह्म (काल) के दर्शन नहीं हुए। बाद में ऋषियों ने वेदों को पढ़ा। उसमें लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि' (पवित्र यजुर्वेद अ. 1 मंत्र 15) परमेश्वर सशरीर है तथा पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 में लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूर् असि'। इस मंत्र में दो बार वेद गवाही दे रहा है कि सर्वव्यापक, सर्वपालन कर्ता सतपुरुष सशरीर है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 8 में कहा है कि (कविर् मनिषी) जिस परमेश्वर की सर्व प्राणियों को चाह है, वह कविर् अर्थात् कबीर है। उसका शरीर बिना नाड़ी (अस्नाविरम्) का है, (शुक्रम्) वीर्य से बनी पाँच तत्व से बनी भौतिक (अकायम्) काया रहित है। वह सर्व का मालिक सर्वोपरि सत्यलोक में विराजमान है, उस परमेश्वर का तेजपुंज का (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित शरीर है जो शब्द रूप अर्थात् अविनाशी है। वही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है जो सर्व ब्रह्माण्डों की रचना करने वाला (व्यदधाता) सर्व ब्रह्माण्डों का रचनहार (स्वयम्भूः) स्वयं प्रकट होने वाला

(यथा तथ्य अर्थान्) वास्तव में (शाश्वत्) अविनाशी है (गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में भी प्रमाण है।) भावार्थ है कि पूर्ण ब्रह्म का शरीर का नाम कबीर (कविर देव) है। उस परमेश्वर का शरीर नूर तत्व से बना है। परमात्मा का शरीर अति सूक्ष्म है जो उस साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार जीव का भी सुक्ष्म शरीर है जिसके ऊपर पाँच तत्व का खोल (कवर) अर्थात् पाँच तत्व की काया चढ़ी होती है जो माता-पिता के संयोग से (शुक्रम) वीर्य से बनी है। शरीर त्यागने के पश्चात् भी जीव का सुक्ष्म शरीर साथ रहता है। वह शरीर उसी साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार परमात्मा व जीव की स्थिति को समझें। वेदों में ओ३म् नाम के स्मरण का प्रमाण है जो केवल ब्रह्म साधना है। इस उद्देश्य से ओ३म् नाम के जाप को पूर्ण ब्रह्म का मान कर ऋषियों ने भी हजारों वर्ष हठयोग (समाधि लगा कर) करके प्रभु प्राप्ति की चेष्टा की, परन्तु प्रभु दर्शन नहीं हुए, सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। उन्हीं सिद्धी रूपी खिलौनों से खेल कर ऋषि भी जन्म-मृत्यु के चक्र में ही रह गए तथा अपने अनुभव के शास्त्रों में परमात्मा को निराकार लिख दिया। ब्रह्म (काल) ने कसम खाई है कि मैं अपने वास्तविक रूप में किसी को दर्शन नहीं दूँगा। मुझे अव्यक्त जाना करेंगे (अव्यक्त का भावार्थ है कि कोई आकार में है परन्तु व्यक्तिगत रूप से स्थूल रूप में दर्शन नहीं देता। जैसे आकाश में बादल छा जाने पर दिन के समय सूर्य अदृश हो जाता है। वह दृश्यमान नहीं है, परन्तु वास्तव में बादलों के पार ज्यों का त्यों है, इस अवस्था को अव्यक्त कहते हैं।)। (प्रमाण के लिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25, अध्याय 11 श्लोक 48 तथा 32)

पवित्र गीता जी बोलने वाला ब्रह्म (काल) श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके कह रहा है कि अर्जुन मैं बढ़ा हुआ काल हूँ और सर्व को खाने के लिए आया हूँ। (गीता अध्याय 11 का श्लोक नं. 32) यह मेरा वास्तविक रूप है, इसको तेरे अतिरिक्त न तो कोई पहले देख सका तथा न कोई आगे देख सकता है अर्थात् वेदों में वर्णित यज्ञ-जप-तप तथा ओ३म् नाम आदि की विधि से मेरे इस वास्तविक स्वरूप के दर्शन नहीं हो सकते। (गीता अध्याय 11 श्लोक नं 48) मैं कृष्ण नहीं हूँ, ये मूर्ख लोग कृष्ण रूप में मुझ अव्यक्त को व्यक्त (मनुष्य रूप) मान रहे हैं। क्योंकि ये मेरे घटिया नियम से अपरिचित हैं कि मैं कभी वास्तविक इस काल रूप में सबके सामने नहीं आता। अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ (गीता अध्याय 7 श्लोक नं. 24-25) विचार करें :- अपने छुपे रहने वाले विधान को स्वयं अश्रेष्ठ (अनुत्तम) क्यों कह रहे हैं?

यदि पिता अपनी सन्तान को भी दर्शन नहीं देता तो उसमें कोई त्रुटि है जिस कारण से छुपा है तथा सुविधाएं भी प्रदान कर रहा है। काल (ब्रह्म) को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करना पड़ता है तथा 25 प्रतिशत प्रतिदिन जो ज्यादा उत्पन्न होते हैं उन्हें ठिकाने लगाने के लिए तथा कर्म भोग का दण्ड देने के लिए चौरासी लाख योनियों की रचना की हुई है। यदि सबके सामने

ब्रह्म लोक का लघु चित्र
महाविष्णु रूप में काल
जटा कुण्डली झील
महाब्रह्मा रूप में काल
महाशिव रूप में काल
सतोगुण प्रधान क्षेत्र
तमोगुण प्रधान क्षेत्र
रजोगुण प्रधान क्षेत्र
शुन्य स्थान
दुर्गा लोक
सप्तपुरी
नकली अनामी लोक
नकली अगम लोक
नकली अलख लोक
नकली सतलोक
महाइन्द्र का द्वीप
अठासी हजार द्वीप
मीठे जल का समुद्र
महास्वर्ग
सुमेरु पर्वत
फलदार वृक्षों का वन
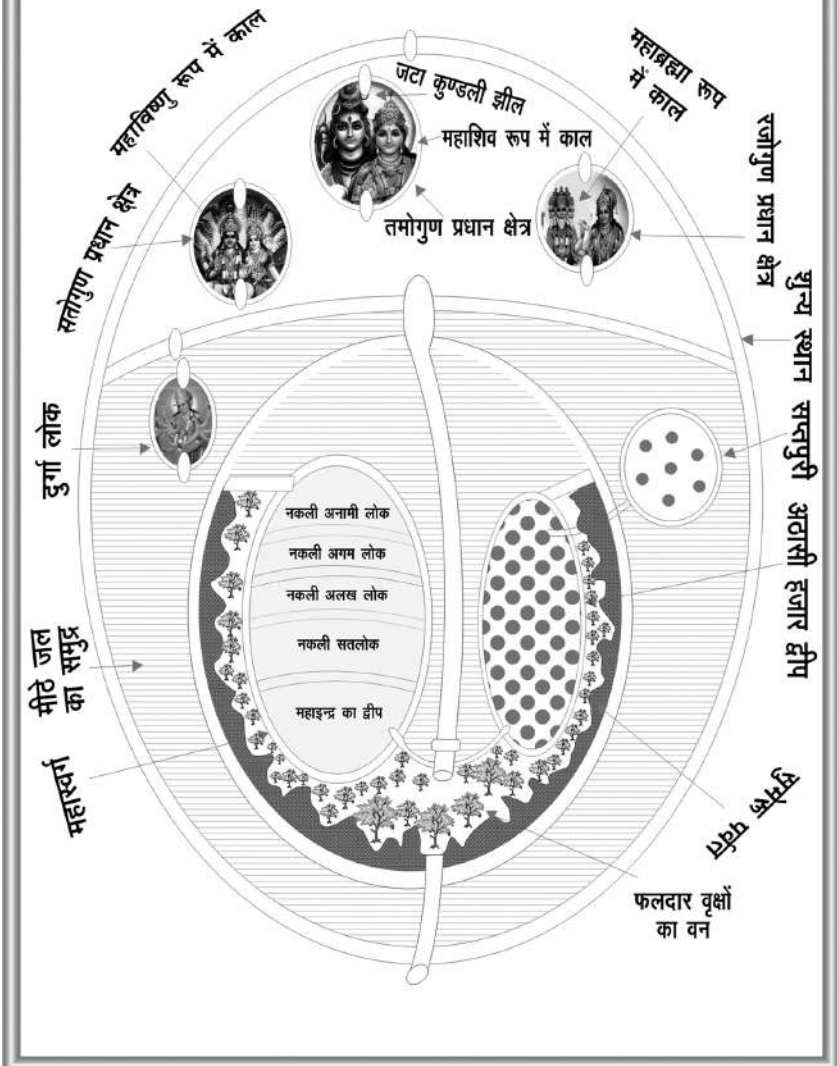
ज्योति निरंजन (काल) ब्रह्म के लोक (21 ब्रह्मण्ड) का लघु चित्र
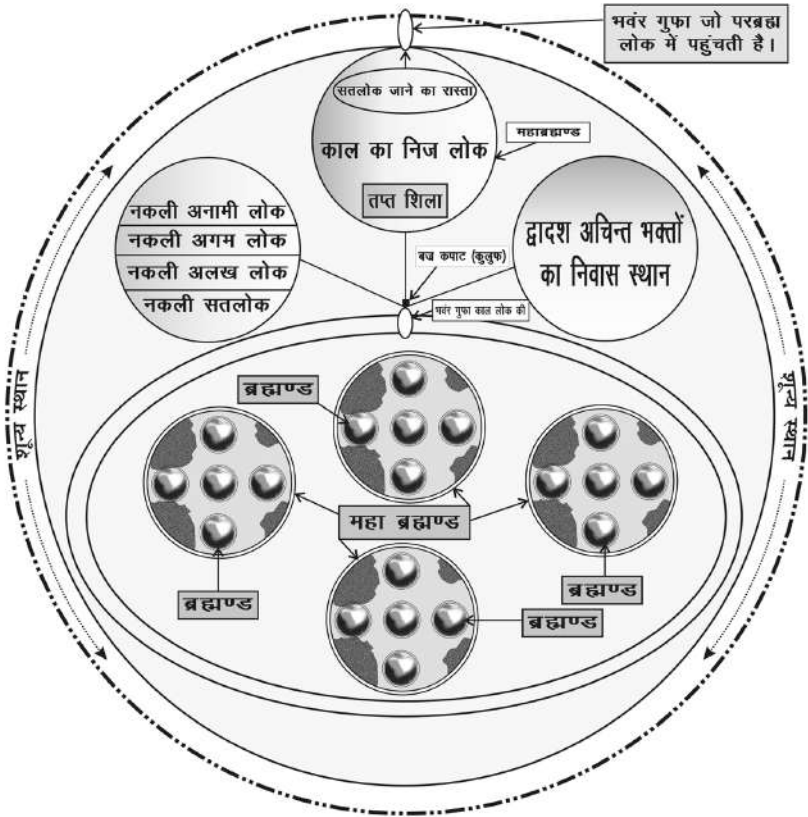
बैठकर किसी की पुत्री, किसी की पत्नी, किसी के पुत्र, माता-पिता को खा गए तो सर्व को ब्रह्म से घृणा हो जाए तथा जब भी कभी पूर्ण परमात्मा कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) स्वयं आए या अपना कोई संदेशवाहक (दूत) भेंजे तो सर्व प्राणी सत्यभक्ति करके काल के जाल से निकल जाएं।

इसलिए धोखा देकर रखता है तथा पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 18,24,25 में अपनी साधना से होने वाली मुक्ति (गति) को भी (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ कहा है तथा अपने विधान (नियम)को भी (अनुत्तम) अश्रेष्ठ कहा है।

प्रत्येक ब्रह्माण्ड में बने ब्रह्मलोक में एक महास्वर्ग बनाया है। महास्वर्ग में एक स्थान पर नकली सतलोक - नकली अलख लोक - नकली अगम लोक तथा नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखा देने के लिए प्रकृति (दुर्गा/आदि माया) द्वारा करवा रखी है। कबीर साहेब का एक शब्द है 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है' में वाणी है कि 'काया भेद किया निरवारा, यह सब रचना पिण्ड मंझारा है। माया अविगत जाल पसारा, सो कारीगर भारा है। आदि माया किन्ही चतुराई, झूठी बाजी पिण्ड दिखाई, अविगत रचना रचि अण्ड माहि वाका प्रतिबिम्ब डारा है।'

एक ब्रह्माण्ड में अन्य लोकों की भी रचना है, जैसे श्री ब्रह्मा जी का लोक, श्री विष्णु जी का लोक, श्री शिव जी का लोक। जहाँ पर बैठकर तीनों प्रभु नीचे के तीन लोकों (स्वर्गलोक अर्थात् इन्द्र का लोक - पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) पर एक-एक विभाग के मालिक बन कर प्रभुता करते हैं तथा अपने पिता काल के खाने के लिए प्राणियों की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्यभार संभालते हैं। तीनों प्रभुओं की भी जन्म व मृत्यु होती है। तब काल इन्हें भी खाता है। इसी ब्रह्माण्ड {इसे अण्ड भी कहते हैं क्योंकि ब्रह्माण्ड की बनावट अण्डाकार है, इसे पिण्ड भी कहते हैं क्योंकि शरीर (पिण्ड) में एक ब्रह्माण्ड की रचना कमलों में टी.वी. की तरह देखी जाती है} में एक मानसरोवर तथा धर्मराय (न्यायधीश) का भी लोक है तथा एक गुप्त स्थान पर पूर्ण परमात्मा अन्य रूप धारण करके रहता है जैसे प्रत्येक देश का राजदूत भवन होता है। वहाँ पर कोई नहीं जा सकता। वहाँ पर वे आत्माऐं रहती हैं जिनकी सत्यलोक की भक्ति अधूरी रहती है। जब भक्ति युग आता है तो उस समय परमेश्वर कबीर जी अपना प्रतिनिधी पूर्ण संत सतगुरु भेजते हैं। इन पुण्यात्माओं को पृथ्वी पर उस समय मानव शरीर प्राप्त होता है तथा ये शीघ्र ही सत भक्ति पर लग जाते हैं तथा सतगुरु से दीक्षा प्राप्त करके पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर जाते हैं। उस स्थान पर रहने वाले हंस आत्माओं की निजी भक्ति कमाई खर्च नहीं होती। परमात्मा के भण्डार से सर्व सुविधाऐं उपलब्ध होती हैं। ब्रह्म (काल) के उपासकों की भक्ति कमाई स्वर्ग-महा स्वर्ग में समाप्त हो जाती है क्योंकि इस काल लोक (ब्रह्म लोक) तथा परब्रह्म लोक में प्राणियों को अपना किया कर्मफल ही मिलता है।

क्षर पुरुष (ब्रह्म) ने अपने 20 ब्रह्माण्डों को चार महाब्रह्माण्डों में विभाजित किया है। एक महाब्रह्माण्ड में पाँच ब्रह्माण्डों का समूह बनाया है तथा चारों ओर से अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है तथा चारों महाब्रह्माण्डों को भी फिर

अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड की रचना एक महाब्रह्माण्ड जितना स्थान लेकर की है। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में प्रवेश होते ही तीन रास्ते बनाए हैं। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में भी बांई तरफ नकली सतलोक, नकली अलख लोक, नकली अगम लोक, नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखे में रखने के लिए आदि माया (दुर्गा) से करवाई है तथा दांई तरफ बारह सर्व श्रेष्ठ ब्रह्म साधकों (भक्तों) को रखता है। फिर प्रत्येक युग में उन्हें अपने संदेश वाहक (सन्त सतगुरू) बनाकर पृथ्वी पर भेजता है, जो शास्त्र विधि रहित साधना व ज्ञान बताते हैं तथा स्वयं भी भक्तिहीन हो जाते हैं तथा अनुयाइयों को भी काल जाल में फंसा जाते हैं। फिर वे गुरु जी तथा अनुयाई दोनों ही नरक में जाते हैं। फिर सामने एक ताला (कुलुफ) लगा रखा है। वह रास्ता काल (ब्रह्म) के निज लोक में जाता है। जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) अपने वास्तविक मानव सदृश काल रूप में रहता है। इसी स्थान पर एक पत्थर की टुकड़ी तवे के आकार की (चपाती पकाने की लोहे की गोल प्लेट सी होती है) स्वतः गर्म रहती है। जिस पर एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर को भूनकर उनमें से गंदगी निकाल कर खाता है। उस समय सर्व प्राणी बहुत पीड़ा अनुभव करते हैं तथा हाहाकार मच जाती है। फिर कुछ समय उपरान्त वे बेहोश हो जाते हैं। जीव मरता नहीं। फिर धर्मराय के लोक में जाकर कर्माधार से अन्य जन्म प्राप्त करते हैं तथा जन्म-मृत्यु का चक्कर बना रहता है। उपरोक्त सामने लगा ताला ब्रह्म (काल) केवल अपने आहार वाले प्राणियों के लिए कुछ क्षण के लिए खोलता है। पूर्ण परमात्मा के सत्यनाम व सारनाम से यह ताला स्वयं खुल जाता है। ऐसे काल का जाल पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर साहेब) ने स्वयं ही अपने निजी भक्त धर्मदास जी को समझाया।

"परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्डों की स्थापना"

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने आगे बताया है कि परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने अपने कार्य में गफलत की क्योंकि यह मानसरोवर में सो गया तथा जब परमेश्वर (मैंनें अर्थात् कबीर साहेब ने) उस सरोवर में अण्डा छोड़ा तो अक्षर पुरुष (परब्रह्म) ने उसे क्रोध से देखा। इन दोनों अपराधों के कारण इसे भी सात संख ब्रह्माण्ड़ों सहित सतलोक से बाहर कर दिया। अन्य कारण अक्षर पुरुष (परब्रह्म) अपने साथी ब्रह्म (क्षर पुरुष) की विदाई में व्याकुल होकर परमपिता कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की याद भूलकर उसी को याद करने लगा तथा सोचा कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तो बहुत आनन्द मना रहा होगा, वह स्वतंत्र राज्य करेगा, मैं पीछे रह गया तथा अन्य कुछ आत्माऐं जो परब्रह्म के साथ सात संख ब्रह्माण्डों में जन्म-मृत्यु का कर्मदण्ड भोग रही हैं, उन हंस आत्माओं की विदाई की याद में खो गई जो ब्रह्म (काल) के साथ इक्कीस ब्रह्माण्डों में फंसी हैं तथा पूर्ण परमात्मा, सुखदाई कविर्देव की याद भुला दी। परमेश्वर कविर् देव के बार-बार समझाने पर भी आस्था कम नहीं हुई। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने सोचा कि मैं भी अलग स्थान प्राप्त करूं तो अच्छा रहे। यह सोच

कर राज्य प्राप्ति की इच्छा से सारनाम का जाप प्रारम्भ कर दिया। इसी प्रकार अन्य आत्माओं ने (जो परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्डों में फंसी हैं) सोचा कि वे जो ब्रह्म के साथ आत्माऐं गई हैं वे तो वहाँ मौज-मस्ती मनाऐंगे, हम पीछे रह गये। परब्रह्म के मन में यह धारणा बनी कि क्षर पुरुष अलग होकर बहुत सुखी होगा। यह विचार कर अन्तरात्मा से भिन्न स्थान प्राप्ति की ठान ली। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने हठ योग नहीं किया, परन्तु केवल अलग राज्य प्राप्ति के लिए सहज ध्यान योग विशेष कसक के साथ करता रहा। अलग स्थान प्राप्त करने के लिए पागलों की तरह विचरने लगा, खाना-पीना भी त्याग दिया। अन्य कुछ आत्माऐं जो पहले काल ब्रह्म के साथ गई आत्माओं के प्रेम में व्याकुल थी, वे अक्षर पुरूष के वैराग्य पर आसक्त होकर उसे चाहने लगी। पूर्ण प्रभु के पूछने पर परब्रह्म ने अलग स्थान माँगा तथा कुछ हंसात्माओं के लिए भी याचना की। तब कविर्देव ने कहा कि जो आत्मा आपके साथ स्वेच्छा से जाना चाहें उन्हें भेज देता हूँ। पूर्ण प्रभु ने पूछा कि कौन हंस आत्मा परब्रह्म के साथ जाना चाहता है, सहमति व्यक्त करे। बहुत समय उपरान्त एक हंस ने स्वीकृति दी, फिर देखा-देखी उन सर्व आत्माओं ने भी सहमति व्यक्त कर दी। सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को स्त्री रूप बनाया, उसका नाम ईश्वरी माया (प्रकृति सुरति) रखा तथा अन्य आत्माओं को उस ईश्वरी माया में प्रवेश करके अचिन्त द्वारा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) के पास भेजा। (पतिव्रता पद से गिरने की सजा पाई।) कई युगों तक दोनों सात संख ब्रह्माण्डों में रहे, परन्तु परब्रह्म ने दुर्व्यवहार नहीं किया। ईश्वरी माया की स्वेच्छा से अंगीकार किया तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (योनि) बनाई। ईश्वरी देवी की सहमति से संतान उत्पन्न की। इस लिए परब्रह्म के लोक (सात संख ब्रह्माण्डों) में प्राणियों को तप्तशिला का कष्ट नहीं है तथा वहाँ पशु-पक्षी भी ब्रह्म लोक के देवों से अच्छे चरित्र युक्त हैं। आयु भी बहुत लम्बी है, परन्तु जन्म - मृत्यु कर्माधार पर कर्मदण्ड तथा परिश्रम करके ही उदर पूर्ति होती है। स्वर्ग तथा नरक भी ऐसे ही बने हैं। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) को सात संख ब्रह्माण्ड उसके इच्छा रूपी भक्ति ध्यान अर्थात् सहज समाधि विधि से की उस की कमाई के प्रतिफल में प्रदान किये तथा सत्यलोक से भिन्न स्थान पर गोलाकार परिधि में बन्द करके सात संख ब्रह्माण्डों सहित अक्षर ब्रह्म व ईश्वरी माया को निष्कासित कर दिया।

पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) असंख्य ब्रह्माण्डों जो सत्यलोक आदि में हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्डों तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्डों का भी प्रभु (मालिक) है अर्थात् परमेश्वर कविर्देव कुल का मालिक है।

श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी आदि के चार-चार भुजाएं तथा 16 कलाएं हैं तथा प्रकृति देवी (दुर्गा) की आठ भुजाएं हैं तथा 64 कलाएं हैं। ब्रह्म (क्षर पुरुष) की एक हजार भुजाएं हैं तथा एक हजार कलाएं है तथा इक्कीस ब्रह्माण्डों का प्रभु है। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) की दस हजार भुजाऐं हैं तथा दस हजार कला हैं तथा सात संख ब्रह्माण्डों का प्रभु है। पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष अर्थात्

सतपुरुष) की असंख्य भुजाएं तथा असंख्य कलाएं हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्ड व परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्डों सहित असंख्य ब्रह्माण्डों का प्रभु है। प्रत्येक प्रभु अपनी सर्व भुजाओं को समेट कर केवल दो भुजाएं भी रख सकते हैं तथा जब चाहें सर्व भुजाओं को भी प्रकट कर सकते हैं। पूर्ण परमात्मा परब्रह्म के प्रत्येक ब्रह्माण्ड में भी अलग स्थान बनाकर अन्य रूप में गुप्त रहता है। यूं समझो जैसे एक घूमने वाला कैमरा बाहर लगा देते हैं तथा अन्दर टी.वी. (टेलीविजन) रख देते हैं। टी. वी. पर बाहर का सर्व दृश्य नजर आता है तथा दूसरा टी.वी. बाहर रख कर अन्दर का कैमरा स्थाई करके रख दिया जाए, उसमें केवल अन्दर बैठे प्रबन्धक का चित्र दिखाई देता है। जिससे सर्व कर्मचारी सावधान रहते हैं।

इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा अपने सतलोक में बैठ कर सर्व को नियंत्रित किए हुए हैं तथा प्रत्येक ब्रह्माण्ड में भी सतगुरु कविर्देव विद्यमान रहते हैं जैसे सूर्य दूर होते हुए भी अपना प्रभाव अन्य लोकों में बनाए हुए है।

"पवित्र अथर्ववेद में सृष्टि रचना का प्रमाण"

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 1 :-

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
सः बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।। 1।।

ब्रह्म—ज—ज्ञानम्—प्रथमम्—पुरस्तात्—विसिमतः—सुरुचः—वेनः—आवः—सः—बुध्न्याः —उपमा—अस्य—विष्ठाः—सतः—च—योनिम्—असतः—च—वि वः

अनुवाद :— (प्रथमम्) प्राचीन अर्थात् सनातन (ब्रह्म) परमात्मा ने (ज) प्रकट होकर (ज्ञानम्) अपनी सूझ—बूझ से (पुरस्तात्) शिखर में अर्थात् सतलोक आदि को (सुरुचः) स्वइच्छा से बड़े चाव से स्वप्रकाशित (विसिमतः) सीमा रहित अर्थात् विशाल सीमा वाले भिन्न लोकों को रचा। उस (वेनः) जुलाहे ने ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर (आवः) सुरक्षित किया (च) तथा (सः) वह पूर्ण ब्रह्म ही सर्व रचना करता है (अस्य) इसलिए उसी (बुध्न्याः) मूल मालिक ने (योनिम्) मूलस्थान सत्यलोक की रचना की है (अस्य) इस के (उपमा) सदृश अर्थात् मिलते जुलते (सतः) अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म के लोक कुछ स्थाई (च) तथा (असतः) क्षर पुरुष के अस्थाई लोक आदि (वि वः) आवास स्थान भिन्न (विष्ठाः) स्थापित किए।

भावार्थ :- पवित्र वेदों को बोलने वाला ब्रह्म (काल) कह रहा है कि सनातन परमेश्वर ने स्वयं अनामय (अनामी) लोक से सत्यलोक में प्रकट होकर अपनी सूझ-बूझ से कपड़े की तरह रचना करके ऊपर के सतलोक आदि को सीमा रहित स्वप्रकाशित अजर - अमर अर्थात् अविनाशी ठहराए तथा नीचे के परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्माण्ड व इनमें छोटी-से छोटी रचना भी उसी परमात्मा ने अस्थाई की है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 2 :-

इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः।

तस्मा एतं सुरुचं ह्वारमह्यं घर्मं श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे।।2।।

इयम्—पित्र्या—राष्ट्रि—एतु—अग्रे—प्रथमाय—जनुषे—भुवनेष्ठाः—तस्मा—एतम्—सुरुचम् — हवारमह्यम्—धर्मम्—श्रीणान्तु—प्रथमाय—धास्यवे

अनुवाद :— (इयम्) इसी (पित्र्या) जगतपिता परमेश्वर ने (एतु) इस (अग्रे) सर्वोत्तम् (प्रथमाय) सर्व से पहली माया परानन्दनी (राष्ट्रि) राजेश्वरी शक्ति अर्थात् पराशक्ति जिसे आकर्षण शक्ति भी कहते हैं, को (जनुषे) उत्पन्न करके (भुवनेष्ठाः) लोक स्थापना की (तस्मा) उसी परमेश्वर ने (सुरुचम्) बड़े चाव के साथ स्वेच्छा से (एतम्) इस (प्रथमाय) प्रथम उत्पत्ति की शक्ति अर्थात्। पराशक्ति के द्वारा (ह्वारमह्यम्) एक दूसरे के वियोग को रोकने अर्थात् आकर्षण शक्ति के (श्रीणान्तु) गुरूत्व आकर्षण को परमात्मा ने आदेश दिया सदा रहो उस कभी समाप्त न होने वाले (धर्मम्) स्वभाव से (धास्यवे) धारण करके ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर रोके हुए है।

भावार्थ :- जगतपिता परमेश्वर ने अपनी शब्द शक्ति से राष्ट्री अर्थात् सबसे पहली माया राजेश्वरी उत्पन्न की तथा उसी पराशक्ति के द्वारा एक-दूसरे को आकर्षण शक्ति से रोकने वाले कभी न समाप्त होने वाले गुण से उपरोक्त सर्व ब्रह्माण्डों को स्थापित किया है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 3 :-

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति।

ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ।।3।।

प्र—यः—जज्ञे—विद्वानस्य—बन्धुः—विश्वा—देवानाम्—जनिमा—विवक्ति—ब्रह्मः—ब्रह्मणः—उज्जभार—मध्यात्—निचैः—उच्चैः—स्वधा—अभिः—प्रतस्थौ

अनुवाद :— (प्र) सर्व प्रथम (देवानाम्) देवताओं व ब्रह्माण्डों की (जज्ञे) उत्पति के ज्ञान को (विद्वानस्य) जिज्ञासु भक्त का (यः) जो (बन्धुः) वास्तविक साथी अर्थात् पूर्ण परमात्मा ही अपने निज सेवक को (जनिमा) अपने द्वारा संजन किए हुए को (विवक्ति) स्वयं ही ठीक—ठीक विस्त्तार पूर्वक बताता है कि (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा ने (मध्यात्) अपने मध्य से अर्थात् शब्द शक्ति से (ब्रह्मः) ब्रह्म—क्षर पुरूष अर्थात् काल को (उज्जभार) उत्पन्न करके (विश्वा) सारे संसार को अर्थात् सर्व लोकों को (उच्चैः) ऊपर सत्यलोक आदि (निचैः) नीचे परब्रह्म व ब्रह्म के सर्व ब्रह्माण्ड (स्वधा) अपनी धारण करने वाली (अभिः) आकर्षण शक्ति से (प्र तस्थौ) दोनों को अच्छी प्रकार स्थित किया।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा अपने द्वारा रची संष्टि का ज्ञान तथा सर्व आत्माओं की उत्पत्ति का ज्ञान अपने निजी दास को स्वयं ही सही बताता है कि पूर्ण परमात्मा ने अपने मध्य अर्थात् अपने शरीर से अपनी शब्द शक्ति के द्वारा ब्रह्म (क्षर पुरुष/काल) की उत्पत्ति की तथा सर्व ब्रह्माण्डों को ऊपर सतलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक आदि तथा नीचे परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्माण्डों को अपनी धारण करने वाली आकर्षण शक्ति से ठहराया हुआ है।

जैसे पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने अपने निजी सेवक अर्थात् सखा श्री धर्मदास जी, आदरणीय गरीबदास जी आदि को अपने द्वारा रची संष्टि

का ज्ञान स्वयं ही बताया। उपरोक्त वेद मंत्र भी यही समर्थन कर रहा है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 4

सः हि दिवः सः पृथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत्।

महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सद्म पार्थिवं च रजः।।4।।

:—हि—दिवः—स—पृथिव्या—ऋतस्था—मही—क्षेमम्—रोदसी—अकस्भायत्—

महान् —मही—अस्कभायद्—विजातः—धाम्—सदम्—पार्थिवम्—च—रजः

अनुवाद — (सः)उसी सर्वशक्तिमान परमात्मा ने (हि) निःसंदेह (दिवः) ऊपर के चारों दिव्य लोक जैसे सत्य लोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी अर्थात् अकह लोक अर्थात् दिव्य गुणों युक्त लोकों को (ऋतस्था) सत्य स्थिर अर्थात् अजर—अमर रूप से स्थिर किए (स) उन्हीं के समान (पृथिव्या) नीचे के पृथ्वी वाले सर्व लोकों जैसे परब्रह्म के सात संख तथा ब्रह्म/काल के इक्कीस ब्रह्माण्ड (मही) पृथ्वी तत्व से (क्षेमम्) सुरक्षा के साथ (अस्कभायत्) ठहराया (रोदसी) आकाश तत्व तथा पृथ्वी तत्व दोनों से ऊपर नीचे के ब्रह्माण्डों को{जैसे आकाश एक सुक्ष्म तत्व है, आकाश का गुण शब्द है, पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के लोक शब्द रूप रचे जो तेजपुंज के बनाए हैं तथा नीचे के परब्रह्म (अक्षर पुरूष) के सप्त संख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म/क्षर पुरूष के इक्कीस ब्रह्माण्डों को पृथ्वी तत्व से अस्थाई रचा} (महान्) पूर्ण परमात्मा ने (पार्थिवम्) पृथ्वी वाले (वि) भिन्न—भिन्न (धाम्) लोक (च) और (सदम्) आवास स्थान (मही) पृथ्वी तत्व से (रजः) प्रत्येक ब्रह्माण्ड में छोटे—छोटे लोकों की (जातः) रचना करके (अस्कभायत्) स्थिर किया।

भावार्थ :- ऊपर के चारों लोक सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक, यह तो अजर-अमर स्थाई अर्थात् अविनाशी रचे हैं तथा नीचे के ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोकों को अस्थाई रचना करके तथा अन्य छोटे-छोटे लोक भी उसी परमेश्वर ने रच कर स्थिर किए।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 5

सः बुध्न्यादाष्ट्र जनुषोऽभ्यग्रं बृहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट्।

अहर्यच्छुक्रं ज्योतिषो जनिष्टाथ द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः।।5।।

सः—बुध्न्यात्—आष्ट्र—जनुषेः—अभि—अग्रम्—बृहस्पतिः—देवता—तस्य—सम्राट—अहः— यत्—शुक्रम्—ज्योतिषः—जनिष्ट—अथ—द्युमन्तः—वि—वसन्तु—विप्राः

अनुवाद :— (सः) उसी (बुध्न्यात्) मूल मालिक से (अभि—अग्रम्) सर्व प्रथम स्थान पर (आष्ट्र) अष्टँगी माया—दुर्गा अर्थात् प्रकृति देवी (जनुषेः) उत्पन्न हुई क्योंकि नीचे के परब्रह्म व ब्रह्म के लोकों का प्रथम स्थान सतलोक है यह तीसरा धाम भी कहलाता है (तस्य) इस दुर्गा का भी मालिक यही (सम्राट) राजाधिराज (बृहस्पतिः) सबसे बड़ा पति व जगतगुरु (देवता) परमेश्वर है। (यत्) जिस से (अहः) सबका वियोग हुआ (अथ) इसके बाद (ज्योतिषः) ज्योति रूप निरंजन अर्थात् काल के (शुक्रम्) वीर्य अर्थात् बीज शक्ति से (जनिष्ट) दुर्गा के उदर से उत्पन्न होकर (विप्राः) भक्त आत्माएं (वि) अलग से (द्युमन्तः) मनुष्य लोक तथा स्वर्ग लोक में ज्योति निरंजन के आदेश से दुर्गा ने कहा (वसन्तु) निवास करो, अर्थात् वे निवास करने लगी।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के चारों लोकों में से जो नीचे से सबसे प्रथम अर्थात् सत्यलोक में आष्ट्रा अर्थात् अष्टंगी (प्रकृति देवी/दुर्गा) की उत्पत्ति की। यही राजाधिराज, जगतगुरु, पूर्ण परमेश्वर (सतपुरुष) है जिससे सबका वियोग हुआ है। फिर सर्व प्राणी ज्योति निरंजन (काल) के (वीर्य) बीज से दुर्गा (आष्ट्रा) के गर्भ द्वारा उत्पन्न होकर स्वर्ग लोक व पृथ्वी लोक पर निवास करने लगे।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 6

नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्व्यस्य धाम।
एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन् नु।।6।।

नूनम्—तत्—अस्य—काव्यः—महः—देवस्य—पूर्व्यस्य—धाम—हिनोति—पूर्वे—विषिते—एष— जज्ञे—बहुभिः—साकम्—इत्था—अर्धे—ससन्—नु।

अनुवाद – (नूनम्) निसंदेह (तत्) वह पूर्ण परमेश्वर अर्थात् तत् ब्रह्म ही (अस्य) इस (काव्यः) भक्त आत्मा जो पूर्ण परमेश्वर की भक्ति विधिवत करता है को वापिस (महः) सर्वशक्तिमान (देवस्य) परमेश्वर के (पूर्व्यस्य) पहले के (धाम) लोक में अर्थात् सत्यलोक में (हिनोति) भेजता है।

(पूर्वे) पहले वाले (विषिते) विशेष चाहे हुए (एष) इस परमेश्वर को व (जज्ञे) सृष्टि उत्पति के ज्ञान को जान कर (बहुभिः) बहुत आनन्द (साकम्) के साथ (अर्धे) आधा (ससन्) सोता हुआ (इत्था) विधिवत् इस प्रकार (नु) सच्ची आत्मा से स्तुति करता है।

भावार्थ :- वही पूर्ण परमेश्वर सत्य साधना करने वाले साधक को उसी पहले वाले स्थान (सत्यलोक) में ले जाता है, जहाँ से बिछुड़ कर आए थे। वहाँ उस वास्तविक सुखदाई प्रभु को प्राप्त करके खुशी से आत्म विभोर होकर मस्ती से स्तुति करता है कि हे परमात्मा असंख्य जन्मों के भूले-भटकों को वास्तविक ठिकाना मिल गया। इसी का प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16 में भी है।

आदरणीय गरीबदास जी को इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) स्वयं सत्यभक्ति प्रदान करके सत्यलोक लेकर गए थे, तब अपनी अमृतवाणी में आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने आँखों देखकर कहा:-

गरीब, अजब नगर में ले गए, हमकुँ सतगुरु आन।
झिलके बिम्ब अगाध गति, सुते चादर तान।।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 7

योऽथर्वाणं पित्तरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

यः—अथर्वाणम्—पित्तरम्—देवबन्धुम्—बृहस्पतिम्—नमसा—अव—च— गच्छात्—त्वम्—विश्वेषाम्—जनिता—यथा—सः—कविर्देवः—न—दभायत्—स्वधावान्

अनुवाद :– (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पित्तरम्) जगत पिता (देव बन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बृहस्पतिम्) जगतगुरु (च) तथा (नमसा) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को (अव) सुरक्षा के साथ (गच्छात्) सतलोक गए हुओं को अर्थात् जिनका पूर्ण मोक्ष हो गया, वे सत्यलोक में जा चुके हैं।

उनको सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्माण्डों की (जनिता) रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः/ कविर्देवः) कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

भावार्थ :- इस मंत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया कि उस परमेश्वर का नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है, जिसने सर्व रचना की है।

जो परमेश्वर अचल अर्थात् वास्तव में अविनाशी (गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी प्रमाण है) जगत् गुरु, आत्माधार, जो पूर्ण मुक्त होकर सत्यलोक गए हैं उनको सतलोक ले जाने वाला, सर्व ब्रह्माण्डों का रचनहार, काल (ब्रह्म) की तरह धोखा न देने वाला ज्यों का त्यों वह स्वयं कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है। यही परमेश्वर सर्व ब्रह्माण्डों व प्राणियों को अपनी शब्द शक्ति से उत्पन्न करने के कारण (जनिता) माता भी कहलाता है तथा (पित्तरम्) पिता तथा (बन्धु) भाई भी वास्तव में यही है तथा (देव) परमेश्वर भी यही है। इसलिए इसी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की स्तुति किया करते हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या च द्रविणंम त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम् देव देव। इसी परमेश्वर की महिमा का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तृत विवरण है।

"पवित्र ऋग्वेद में सृष्टि रचना का प्रमाण"

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 1

सहस्त्रशीर्षा पुरूषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।1।।

सहस्त्रशिर्षा–पुरूषः–सहस्राक्षः–सहस्त्रपात्
स–भूमिम्–विश्वतः–वृत्वा–अत्यातिष्ठत् –दशंगुलम्।

अनुवाद :– (पुरूषः) विराट रूप काल भगवान अर्थात् क्षर पुरूष (सहस्रशिर्षा) हजार सिरों वाला (सहस्राक्षः) हजार आँखों वाला (सहस्रपात्) हजार पैरों वाला है (स) वह काल (भूमिम्) पृथ्वी वाले इक्कीस ब्रह्माण्डों को (विश्वतः) सब ओर से (दशंगुलम्) दसों अंगुलियों से अर्थात् पूर्ण रूप से काबू किए हुए (वृत्वा) गोलाकार घेरे में घेर कर (अत्यातिष्ठत्) इस से बढ़कर अर्थात् अपने काल लोक में सबसे न्यारा भी इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में ठहरा है अर्थात् रहता है।

भावार्थ :- इस मंत्र में विराट (काल/ब्रह्म) का वर्णन है। (गीता अध्याय 10-11 में भी इसी काल/ब्रह्म का ऐसा ही वर्णन है अध्याय 11 मंत्र नं. 46 में अर्जुन ने कहा है कि हे सहस्राबाहु अर्थात् हजार भुजा वाले आप अपने चतुर्भुज रूप में दर्शन दीजिए।)

जिसके हजारों हाथ, पैर, हजारों आँखे, कान आदि हैं वह विराट रूप काल प्रभु अपने आधीन सर्व प्राणियों को पूर्ण काबू करके अर्थात् 20 ब्रह्माण्डों को गोलाकार

परिधि में रोककर स्वयं इनसे ऊपर (अलग) इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में बैठा है।

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 2

पुरूष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।2।।

पुरूष–एव–इदम्–सर्वम्–यत्–भूतम्–यत्–च–भाव्यम्
उत–अमतत्वस्य– इशानः–यत्–अन्नेन–अतिरोहति

अनुवाद :– (एव) इसी प्रकार कुछ सही तौर पर (पुरूष) भगवान है वह अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म है (च) और (इदम्) यह (यत्) जो (भूतम्) उत्पन्न हुआ है (यत्) जो (भाव्यम्) भविष्य में होगा (सर्वम्) सब (यत्) प्रयत्न से अर्थात् मेहनत द्वारा (अन्नेन) अन्न से (अतिरोहति) विकसित होता है। यह अक्षर पुरूष भी (उत) सन्देह युक्त (अमतत्वस्य) मोक्ष का (इशानः) स्वामी है अर्थात् भगवान तो अक्षर पुरूष भी कुछ सही है परन्तु पूर्ण मोक्ष दायक नहीं है।

भावार्थ :- इस मंत्र में परब्रह्म (अक्षर पुरुष) का विवरण है जो कुछ भगवान वाले लक्षणों से युक्त है, परन्तु इसकी भक्ति से भी पूर्ण मोक्ष नहीं है, इसलिए इसे संदेहयुक्त मुक्ति दाता कहा है। इसे कुछ प्रभु के गुणों युक्त इसलिए कहा है कि यह काल की तरह तप्तशिला पर भून कर नहीं खाता। परन्तु इस परब्रह्म के लोक में भी प्राणियों को परिश्रम करके कर्माधार पर ही फल प्राप्त होता है तथा अन्न से ही सर्व प्राणियों के शरीर विकसित होते हैं, जन्म तथा मत्यु का समय भले ही काल (क्षर पुरुष) से अधिक है, परन्तु फिर भी उत्पत्ति प्रलय तथा चौरासी लाख योनियों में यातना बनी रहती है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 3

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरूषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामतं दिवि।।3।।

तावान्–अस्य–महिमा–अतः–ज्यायान्–च–पुरूषः
पादः–अस्य–विश्वा– भूतानि–त्रि–पाद्–अस्य–अमतम्–दिवि

अनुवाद :– (अस्य) इस अक्षर पुरूष अर्थात्। परब्रह्म की तो (एतावान्) इतनी ही (महिमा) प्रभुता है। (च) तथा (पुरूषः) वह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर तो (अतः) इससे भी (ज्यायान्) बड़ा है (विश्वा) समस्त (भूतानि) क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष तथा इनके लोकों में तथा सत्यलोक तथा इन लोकों में जितने भी प्राणी हैं (अस्य) इस पूर्ण परमात्मा परम अक्षर पुरूष का (पादः) एक पैर है अर्थात् एक अंश मात्र है। (अस्य) इस परमेश्वर के (त्रि) तीन (दिवि) दिव्य लोक जैसे सत्यलोक–अलख लोक–अगम लोक (अमतम्) अविनाशी (पाद्) दूसरा पैर है अर्थात् जो भी सर्व ब्रह्माण्डों में उत्पन्न है वह सत्यपुरूष पूर्ण परमात्मा का ही अंश या अंग है।

भावार्थ :- इस ऊपर के मंत्र 2 में वर्णित अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की तो इतनी ही महिमा है तथा वह पूर्ण पुरुष कविर्देव तो इससे भी बड़ा है अर्थात् सर्वशक्तिमान है तथा सर्व ब्रह्माण्ड उसी के अंश मात्र पर ठहरे हैं। इस मंत्र में तीन लोकों का वर्णन इसलिए है क्योंकि चौथा अनामी (अनामय) लोक अन्य रचना से पहले का है। यही तीन प्रभुओं (क्षर पुरुष-अक्षर पुरुष तथा इन दोनों से अन्य परम अक्षर पुरुष)

का विवरण श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक संख्या 16-17 में है {इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास साहेब जी कहते हैं कि:-

गरीब, जाके अर्ध रूम पर सकल पसारा, ऐसा पूर्ण ब्रह्म हमारा।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरु पुरुष कबीर हैं, कुल के सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय दादू साहेब जी कह रहे हैं कि :-

जिन मोकुं निज नाम दिया, सोई सतगुरु हमार।
दादू दूसरा कोए नहीं, कबीर सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय नानक साहेब जी देते हैं कि :-

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर कून करतार।
हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब, पृष्ठ नं. 721, महला 1, राग तिलंग)

कून करतार का अर्थ होता है सर्व का रचनहार, अर्थात् शब्द शक्ति से रचना करने वाला शब्द स्वरूपी प्रभु, हक्का कबीर का अर्थ है सत् कबीर, करीम का अर्थ दयालु, परवरदिगार का अर्थ परमात्मा है।}

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 4

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्व ङ्व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।4।।

त्रि–पाद–ऊर्ध्वः–उदैत्–पुरूषः–पादः–अस्य–इह–अभवत्–पूनः
ततः– विश्वङ्– व्यक्रामत्–सः–अशनानशने–अभि

अनुवाद :– (पुरूषः) यह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् अविनाशी परमात्मा (ऊर्ध्वः) ऊपर (त्रि) तीन लोक जैसे सत्यलोक–अलख लोक–अगम लोक रूप (पाद) पैर अर्थात् ऊपर के हिस्से में (उदैत्) प्रकट होता है अर्थात् विराजमान है (अस्य) इसी परमेश्वर पूर्ण ब्रह्म का (पादः) एक पैर अर्थात् एक हिस्सा जगत रूप (पुनर्) फिर (इह) यहाँ (अभवत्) प्रकट होता है (ततः) इसलिए (सः) वह अविनाशी पूर्ण परमात्मा (अशनानशने) खाने वाले काल अर्थात् क्षर पुरूष व न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष के भी (अभि)ऊपर (विश्वङ्)सर्वत्र (व्यक्रामत्)व्याप्त है अर्थात् उसकी प्रभुता सर्व ब्रह्माण्डों व सर्व प्रभुओं पर है वह कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है।

भावार्थ :- यही सर्व सृष्टि रचनहार प्रभु अपनी रचना के ऊपर के हिस्से में तीनों स्थानों (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) में तीन रूप में स्वयं प्रकट होता है अर्थात् स्वयं ही विराजमान है। यहाँ अनामी लोक का वर्णन इसलिए नहीं किया क्योंकि अनामी लोक में कोई रचना नहीं है तथा अकह (अनामय) लोक शेष रचना से पूर्व का है फिर कहा है कि उसी परमात्मा के सत्यलोक से बिछुड़ कर नीचे के ब्रह्म व परब्रह्म के लोक उत्पन्न होते हैं और वह पूर्ण परमात्मा खाने वाले ब्रह्म अर्थात् काल से (क्योंकि ब्रह्म/काल विराट शाप वश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को खाता है) तथा न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरुष से (परब्रह्म

प्राणियों को खाता नहीं, परन्तु जन्म-मत्यु, कर्मदण्ड ज्यों का त्यों बना रहता है) भी ऊपर सर्वत्र व्याप्त है अर्थात् इस पूर्ण परमात्मा की प्रभुता सर्व के ऊपर है, कबीर परमेश्वर ही कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है जैसे सूर्य अपने प्रकाश को सर्व के ऊपर फैला कर प्रभावित करता है, ऐसे पूर्ण परमात्मा ने अपनी शक्ति रूपी रेंज (क्षमता) को सर्व ब्रह्माण्डों को नियन्त्रित रखने के लिए छोड़ा हुआ है जैसे मोबाईल फोन का टावर एक देशिय होते हुए अपनी शक्ति अर्थात् मोबाइल फोन की रेंज (क्षमता) चहुं ओर फैलाए रहता है। इसी प्रकार पूर्ण प्रभु ने अपनी निराकार शक्ति सर्व व्यापक की है जिससे पूर्ण परमात्मा सर्व ब्रह्माण्डों को एक स्थान पर बैठ कर नियन्त्रित रखता है।

इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास जी महाराज दे रहे हैं (अमतवाणी राग कल्याण)

तीन चरण चिन्तामणी साहेब, शेष बदन पर छाए।
माता, पिता, कुल न बन्धु, ना किन्हें जननी जाये।।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 5

तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरूषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।5।।

तस्मात्—विराट्—अजायत—विराजः—अधि—पुरूषः
स—जातः—अत्यरिच्यत— पश्चात् —भूमिम्—अथः—पुरः।

अनुवाद :— (तस्मात्) उसके पश्चात् उस परमेश्वर सत्यपुरूष की शब्द शक्ति से (विराट्) विराट अर्थात् ब्रह्म, जिसे क्षर पुरूष व काल भी कहते हैं (अजायत) उत्पन्न हुआ है (पश्चात्) इसके बाद (विराजः) विराट पुरूष अर्थात् काल भगवान से (अधि) बड़े (पुरूषः) परमेश्वर ने (भूमिम्) पथ्वी वाले लोक, काल ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोक को (अत्यरिच्यत) अच्छी तरह रचा (अथः) फिर (पुरः) अन्य छोटे—छोटे लोक (स) उस पूर्ण परमेश्वर ने ही (जातः) उत्पन्न किया अर्थात् स्थापित किया।

भावार्थ :- उपरोक्त मंत्र 4 में वर्णित तीनों लोकों (अगमलोक, अलख लोक तथा सतलोक) की रचना के पश्चात पूर्ण परमात्मा ने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) की उत्पत्ति की अर्थात् उसी सर्व शक्तिमान परमात्मा पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) से ही विराट अर्थात् ब्रह्म (काल) की उत्पत्ति हुई। यही प्रमाण गीता अध्याय 3 मन्त्र 15 में है कि अक्षर पुरूष अर्थात् अविनाशी प्रभु से ब्रह्म उत्पन्न हुआ यही प्रमाण अर्थववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 सुक्त 3 में है कि पूर्ण ब्रह्म से ब्रह्म की उत्पत्ति हुई उसी पूर्ण ब्रह्म ने (भूमिम्) भूमि आदि छोटे-बड़े सर्व लोकों की रचना की। वह पूर्णब्रह्म इस विराट भगवान अर्थात् ब्रह्म से भी बड़ा है अर्थात् इसका भी मालिक है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 15

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरूषं पशुम्।।15।।

सप्त—अस्य—आसन्—परिधयः—त्रिसप्त—समिधः—कताः

देवा—यत्—यज्ञम्— तन्वानाः— अबध्नन्—पुरूषम्—पशुम् ।

अनुवाद :— (सप्त) सात संख ब्रह्माण्ड तो परब्रह्म के तथा (त्रिसप्त) इक्कीस ब्रह्माण्ड काल ब्रह्म के (समिधः) कर्मदण्ड दुःख रूपी आग से दुःखी (कंताः) करने वाले (परिधयः) गोलाकार घेरा रूप सीमा में (आसन्) विद्यमान हैं (यत्) जो (पुरूषम्) पूर्ण परमात्मा की (यज्ञम्) विधिवत् धार्मिक कर्म अर्थात् पूजा करता है (पशुम्) बलि के पशु रूपी काल के जाल में कर्म बन्धन में बंधे (देवा) भक्तात्माओं को (तन्वानाः) काल के द्वारा रचे अर्थात् फैलाये पाप कर्म बंधन जाल से (अबध्नन्) बन्धन रहित करता है अर्थात् बन्दी छुड़ाने वाला बन्दी छोड़ है।

भावार्थ :- सात संख ब्रह्माण्ड परब्रह्म के तथा इक्कीस ब्रह्माण्ड ब्रह्म के हैं जिन में गोलाकार सीमा में बंद पाप कर्मों की आग में जल रहे प्राणियों को वास्तविक पूजा विधि बता कर सही उपासना करवाता है जिस कारण से बलि दिए जाने वाले पशु की तरह जन्म-मंत्यु के काल (ब्रह्म) के खाने के लिए तप्त शिला के कष्ट से पीड़ित भक्तात्माओं को काल के कर्म बन्धन के फैलाए जाल को तोड़कर बन्धन रहित करता है अर्थात् बंधन छुड़वाने वाला बन्दी छोड़ है। इसी का प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 32 में है कि कविरंघारिसि (कविर्) कबिर परमेश्वर (अंघ) पाप का (अरि) शत्रु (असि) है अर्थात् पाप विनाशक कबीर है। बम्भारिसि (बम्भारि) बन्धन का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर (असि) है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।16।।

यज्ञेन्—अयज्ञम—अ—यजन्त—देवाः—तानि—धर्माणि—प्रथमानि— आसन्—ते—ह—नाकम्— महिमानः— सचन्त— यत्र—पूर्वे—साध्याः—सन्ति देवाः ।

अनुवाद :— जो (देवाः) निर्विकार देव स्वरूप भक्तात्माएं (अयज्ञम्) अधूरी गलत धार्मिक पूजा के स्थान पर (यज्ञेन) सत्य भक्ति धार्मिक कर्म के आधार पर (अयजन्त) पूजा करते हैं (तानि) वे (धर्माणि) धार्मिक शक्ति सम्पन्न (प्रथमानि) मुख्य अर्थात् उत्तम (आसन्) हैं (ते ह) वे ही वास्तव में (महिमानः) महान भक्ति शक्ति युक्त होकर (साध्याः) सफल भक्त जन (नाकम्) पूर्ण सुखदायक परमेश्वर को (सचन्त) भक्ति निमित कारण अर्थात् सत्भक्ति की कमाई से प्राप्त होते हैं, वे वहाँ चले जाते हैं। (यत्र) जहाँ पर (पूर्वे) पहले वाली संष्टि के (देवाः) पापरहित देव स्वरूप भक्त आत्माएं (सन्ति) रहती हैं।

भावार्थ :- जो निर्विकार (जिन्होने मांस,शराब, तम्बाकू सेवन करना त्याग दिया है तथा अन्य बुराईयों से रहित है वे) देव स्वरूप भक्त आत्माएं शास्त्र विधि रहित पूजा को त्याग कर शास्त्रानुकूल साधना करते हैं वे भक्ति की कमाई से धनी होकर काल के ऋण से मुक्त होकर अपनी सत्य भक्ति की कमाई के कारण उस सर्व सुखदाई परमात्मा को प्राप्त करते हैं अर्थात् सत्यलोक में चले जाते हैं जहाँ पर सर्व प्रथम रची संष्टि के देव स्वरूप अर्थात् पाप रहित हंस आत्माएं रहती हैं।

जैसे कुछ आत्माएं तो काल (ब्रह्म) के जाल में फंस कर यहाँ आ गई, कुछ परब्रह्म के साथ सात संख ब्रह्माण्डों में आ गई, फिर भी असंख्य आत्माएं जिनका

विश्वास पूर्ण परमात्मा में अटल रहा, जो पतिव्रता पद से नहीं गिरी वे वहीं रह गई, इसलिए यहाँ वही वर्णन पवित्र वेदों ने भी सत्य बताया है। यही प्रमाण गीता अध्याय 8 के श्लोक संख्या 8 से 10 में वर्णन है कि जो साधक पूर्ण परमात्मा की सतसाधना शास्त्रविधि अनुसार करता है वह भक्ति की कमाई के बल से उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त होता है अर्थात् उसके पास चला जाता है। इससे सिद्ध हुआ कि तीन प्रभु हैं ब्रह्म - परब्रह्म - पूर्णब्रह्म। इन्हीं को 1. ब्रह्म - ईश - क्षर पुरुष 2. परब्रह्म - अक्षर पुरुष/अक्षर ब्रह्म ईश्वर तथा 3. पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म - परमेश्वर - सतपुरुष आदि पर्यायवाची शब्दों से जाना जाता है।

यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17 से 20 में स्पष्ट है कि पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) शिशु रूप धारण करके प्रकट होता है तथा अपना निर्मल ज्ञान अर्थात् तत्वज्ञान (कविर्गीर्भिः) कबीर वाणी के द्वारा अपने अनुयाइयों को बोल-बोल कर वर्णन करता है। वह कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ब्रह्म (क्षर पुरुष) के धाम तथा परब्रह्म (अक्षर पुरुष) के धाम से भिन्न जो पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष) का तीसरा ऋतधाम (सतलोक) है, उसमें आकार में विराजमान है तथा सतलोक से चौथा अनामी लोक है, उसमें भी यही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अनामी पुरुष रूप में मनुष्य सदृश आकार में विराजमान है।

''पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण में सृष्टि रचना का प्रमाण''

''ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के माता—पिता''

(दुर्गा और ब्रह्म के योग से ब्रह्मा, विष्णु और शिव का जन्म)

पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण तीसरा स्कन्द अध्याय 1-3(गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी जी, पृष्ठ नं. 114 से)

पृष्ठ नं. 114 से 118 तक विवरण है कि कितने ही आचार्य भवानी को सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करने वाली बताते हैं। वह प्रकृति कहलाती है तथा ब्रह्म के साथ अभेद सम्बन्ध है। {जैसे पत्नी को अर्धांगनी भी कहते हैं अर्थात् दुर्गा ब्रह्म (काल) की पत्नी है।} एक ब्रह्माण्ड की सृष्टि रचना के विषय में राजा श्री परीक्षित के पूछने पर श्री व्यास जी ने बताया कि मैंने श्री नारद जी से पूछा था कि हे देवर्षे ! इस ब्रह्माण्ड की रचना कैसे हुई? मेरे इस प्रश्न के उत्तर में श्री नारद जी ने कहा कि मैंने अपने पिता श्री ब्रह्मा जी से पूछा था कि हे पिता श्री इस ब्रह्माण्ड की रचना आपने की या श्री विष्णु जी इसके रचयिता हैं या शिव जी ने रचा है? सच-सच बताने की कृपा करें। तब मेरे पूज्य पिता श्री ब्रह्मा जी ने बताया कि बेटा नारद, मैंने अपने आपको कमल के फूल पर बैठा पाया था, मुझे ज्ञान नहीं कि इस अगाध जल में मैं कहाँ से उत्पन्न हो गया। एक हजार वर्ष तक पृथ्वी का अन्वेषण करता रहा, कहीं जल का ओर-छोर नहीं पाया। फिर आकाशवाणी हुई कि तप करो। एक हजार वर्ष तक तप किया। फिर सृष्टि करने की आकाशवाणी हुई। इतने में मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस आए, उनके भय से मैं

कमल का डण्ठल पकड़ कर नीचे उतरा। वहाँ भगवान विष्णु जी शेष शैय्या पर अचेत पड़े थे। उनमें से एक स्त्री (प्रेतवत प्रविष्ट दुर्गा) निकली। वह आकाश में आभूषण पहने दिखाई देने लगी। तब भगवान विष्णु होश में आए। अब मैं तथा विष्णु जी दो थे। इतने में भगवान शंकर भी आ गए। देवी ने हमें विमान में बैठाया तथा ब्रह्म लोक में ले गई। वहाँ एक ब्रह्मा, एक विष्णु तथा एक शिव और देखा फिर एक देवी देखी,उसे देख कर विष्णु जी ने विवेक पूर्वक निम्न वर्णन किया (ब्रह्म काल ने भगवान विष्णु को चेतना प्रदान कर दी, उसको अपने बाल्यकाल की याद आई तब बचपन की कहानी सुनाई)।

पृष्ठ नं. 119-120 पर भगवान विष्णु जी ने श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी से कहा कि यह हम तीनों की माता है, यही जगत् जननी प्रकृति देवी है। मैंने इस देवी को तब देखा था जब मैं छोटा सा बालक था, यह मुझे पालने में झुला रही थी।

तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 123 पर श्री विष्णु जी ने श्री दुर्गा जी की स्तुति करते हुए कहा - तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्हीं से उद्भासित हो रहा है, मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर हम सभी तुम्हारी कृपा से ही विद्यमान हैं। हमारा आविर्भाव (जन्म) और तिरोभाव (मृत्यु) हुआ करता है अर्थात् हम तीनों देव नाशवान हैं, केवल तुम ही नित्य (अविनाशी) हो, जगत जननी हो, प्रकृति देवी हो।

भगवान शंकर बोले - देवी यदि महाभाग विष्णु तुम्हीं से प्रकट (उत्पन्न) हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा भी तुम्हारे ही बालक हुए। फिर मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम्हीं हो।

विचार करें :- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी नाशवान हैं। मृत्युंजय (अजर-अमर) व सर्वेश्वर नहीं हैं तथा दुर्गा (प्रकृति) के पुत्र हैं तथा ब्रह्म (काल-सदाशिव) इनका पिता है।

तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 125 पर ब्रह्मा जी के पूछने पर कि हे माता! वेदों में जो ब्रह्म कहा है वह आप ही हैं या कोई अन्य प्रभु है ? इसके उत्तर में यहाँ तो दुर्गा कह रही है कि मैं तथा ब्रह्म एक ही हैं। फिर इसी स्कंद अ. 6 के पृष्ठ नं. 129 पर कहा है कि अब मेरा कार्य सिद्ध करने के लिए विमान पर बैठ कर तुम लोग शीघ्र पधारो (जाओ)। कोई कठिन कार्य उपस्थित होने पर जब तुम मुझे याद करोगे, तब मैं सामने आ जाऊँगी। देवताओं मेरा (दुर्गा का) तथा ब्रह्म का ध्यान तुम्हें सदा करते रहना चाहिए। हम दोनों का स्मरण करते रहोगे तो तुम्हारे कार्य सिद्ध होने में तनिक भी संदेह नहीं है।

उपरोक्त व्याख्या से स्वसिद्ध है कि दुर्गा (प्रकृति) तथा ब्रह्म (काल) ही तीनों देवताओं के माता-पिता हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु व शिव जी नाशवान हैं व पूर्ण शक्ति युक्त नहीं हैं।

तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी) की शादी दुर्गा (प्रकृति देवी) ने की। पृष्ठ नं. 128-129 पर, तीसरे स्कंद में।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 12

ये, च, एव, सात्विकाः, भावाः, राजसाः, तामसाः, च, ये,

मतः, एव, इति, तान्, विद्धि, न, तु, अहम्, तेषु, ते, मयि ।।

अनुवाद : (च) और (एव) भी (ये) जो (सात्विकाः) सत्वगुण विष्णु जी से स्थिति (भावाः) भाव हैं और (ये) जो (राजसाः) रजोगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति (च) तथा (तामसाः) तमोगुण शिव से संहार हैं (तान्) उन सबको तू (मतः,एव) मेरे द्वारा सुनियोजित नियमानुसार ही होने वाले हैं (इति) ऐसा (विद्धि) जान (तु) परन्तु वास्तवमें (तेषु) उनमें (अहम्) मैं और (ते) वे (मयि) मुझमें (न) नहीं हैं।

''पवित्र शिव महापुराण में सृष्टि रचना का प्रमाण''

(काल ब्रह्म व दुर्गा से विष्णु, ब्रह्मा व शिव की उत्पत्ति)

इसी का प्रमाण पवित्र श्री शिव पुराण गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, इसके अध्याय 6 रूद्र संहिता, पृष्ठ नं. 100 पर कहा है कि जो मूर्ति रहित परब्रह्म है, उसी की मूर्ति भगवान सदाशिव है। इनके शरीर से एक शक्ति निकली, वह शक्ति अम्बिका, प्रकृति (दुर्गा), त्रिदेव जननी (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी को उत्पन्न करने वाली माता) कहलाई। जिसकी आठ भुजाऐं हैं। वे जो सदाशिव हैं, उन्हें शिव, शंभू और महेश्वर भी कहते हैं। (पृष्ठ नं. 101 पर) वे अपने सारे अंगों में भस्म रमाये रहते हैं। उन काल रूपी ब्रह्म ने एक शिवलोक नामक क्षेत्र का निर्माण किया। फिर दोनों ने पति-पत्नी का व्यवहार किया जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा (शिव पुराण पृष्ठ नं. 102)।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 7 पृष्ठ नं. 103 पर ब्रह्मा जी ने कहा कि मेरी उत्पत्ति भी भगवान सदाशिव (ब्रह्म-काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) के संयोग से अर्थात् पति-पत्नी के व्यवहार से ही हुई। फिर मुझे बेहोश कर दिया।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 9 पृष्ठ नं. 110 पर कहा है कि इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र इन तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (काल-ब्रह्म) गुणातीत माने गए हैं।

यहाँ पर चार सिद्ध हुए अर्थात् सदाशिव (काल-ब्रह्म) व प्रकृति (दुर्गा) से ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव उत्पन्न हुए हैं। तीनों भगवानों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की माता जी श्री दुर्गा जी तथा पिता जी श्री ज्योति निरंजन (ब्रह्म) है। यही तीनों प्रभु रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी हैं।

''पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी में सृष्टि रचना का प्रमाण''

इसी का प्रमाण पवित्र गीता जी अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 तक है। ब्रह्म (काल) कह रहा है कि प्रकृति (दुर्गा) तो मेरी पत्नी है, मैं ब्रह्म (काल) इसका पति हूँ। हम दोनों के संयोग से सर्व प्राणियों सहित तीनों गुणों (रजगुण - ब्रह्मा जी, सतगुण - विष्णु जी, तमगुण - शिवजी) की उत्पत्ति हुई है। मैं (ब्रह्म) सर्व प्राणियों का पिता हूँ तथा प्रकृति (दुर्गा) इनकी माता है। मैं इसके उदर में बीज स्थापना करता हूँ जिससे सर्व

प्राणियों की उत्पत्ति होती है। प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) जीव को कर्म आधार से शरीर में बांधते हैं।

यही प्रमाण अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16, 17 में भी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्,
छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित् ।।

अनुवाद : (ऊर्ध्वमूलम्) ऊपर को पूर्ण परमात्मा आदि पुरुष परमेश्वर रूपी जड़ वाला (अधःशाखम्) नीचे को तीनों गुण अर्थात् रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु व तमगुण शिव रूपी शाखा वाला (अव्ययम्) अविनाशी (अश्वत्थम्) विस्तारित पीपल का वृक्ष है, (यस्य) जिसके (छन्दांसि) जैसे वेद में छन्द है ऐसे संसार रूपी वृक्ष के भी विभाग छोटे–छोटे हिस्से टहनियाँ व (पर्णानि) पत्ते (प्राहुः) कहे हैं (तम्) उस संसाररूप वृक्षको (यः) जो (वेद) इसे विस्तार से जानता है (सः) वह (वेदवित्) पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 2

अधः, च, ऊर्ध्वम्, प्रसृताः, तस्य, शाखाः, गुणप्रवृद्धाः,
विषयप्रवालाः, अधः, च, मूलानि, अनुसन्ततानि, कर्मानुबन्धीनि, मनुष्यलोके ।।

अनुवाद : (तस्य) उस वृक्षकी (अधः) नीचे (च) और (ऊर्ध्वम्) ऊपर (गुणप्रवृद्धाः) तीनों गुणों ब्रह्मा–रजगुण, विष्णु–सतगुण, शिव–तमगुण रूपी (प्रसृता) फैली हुई (विषयप्रवालाः) विकार– काम क्रोध, मोह, लोभ अहंकार रूपी कोपल (शाखाः) डाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव (कर्मानुबन्धीनि) जीवको कर्मों में बाँधने की (मूलानि) जड़ें अर्थात् मुख्य कारण हैं (च) तथा (मनुष्यलोके) मनुष्यलोक – अर्थात् पृथ्वी लोक में (अधः) नीचे – नरक, चौरासी लाख जूनियों में (ऊर्ध्वम्) ऊपर स्वर्ग लोक आदि में (अनुसन्ततानि) व्यवस्थित किए हुए हैं।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 3

न, रूपम्, अस्य, इह, तथा, उपलभ्यते, न, अन्तः, न, च, आदिः, न, च,
सम्प्रतिष्ठा, अश्वत्थम्, एनम्, सुविरूढमूलम्, असंगशस्त्रेण, दृढेन, छित्वा ।।

अनुवाद : (अस्य) इस रचना का (न) नहीं (आदिः) शुरूवात (च) तथा (न) नहीं (अन्तः) अन्त है (न) नहीं (तथा) वैसा (रूपम्) स्वरूप (उपलभ्यते) पाया जाता है (च) तथा (इह) यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी (न) नहीं है (सम्प्रतिष्ठा) क्योंकि सर्वब्रह्माण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति का मुझे भी ज्ञान नहीं है (एनम्) इस (सुविरूढमूलम्) अच्छी तरह स्थाई स्थिति वाला (अश्वत्थम्) मजबूत स्वरूपवाले संसार रूपी वृक्ष के ज्ञान को (असंङ्गशस्त्रेण) पूर्ण ज्ञान रूपी (दृढेन्) दृढ़ सूक्षम वेद अर्थात् तत्वज्ञान के द्वारा जानकर (छित्वा) काटकर अर्थात् निरंजन की भक्ति को क्षणिक अर्थात् क्षण भंगुर जानकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म तथा परब्रह्म से भी आगे पूर्णब्रह्म की तलाश करनी चाहिए।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 4

ततः, पदम्, तत्, परिमार्गितव्यम्, यस्मिन्, गताः, न, निवर्तन्ति, भूयः,
तम्, एव्, च, आद्यम्, पुरुषम्, प्रपद्ये, यतः, प्रवृत्तिः, प्रसृता, पुराणी ।।

अनुवाद : जब तत्वदर्शी संत मिल जाए (ततः) इसके पश्चात् (तत्) उस परमात्मा के (पदम्) पद स्थान अर्थात् सतलोक को (परिमार्गितव्यम्) भली भाँति खोजना चाहिए (यस्मिन्) जिसमें (गताः) गए हुए साधक (भूयः) फिर (न, निवर्तन्ति) लौटकर संसार में नहीं आते (च) और (यतः) जिस परमात्मा–परम अक्षर ब्रह्म से (पुराणी) आदि (प्रवृतिः) रचना–सृष्टि (प्रसृता) उत्पन्न हुई है (तम्) अज्ञात (आद्यम्) आदि यम अर्थात् मैं काल निरंजन (पुरुषम्) पूर्ण परमात्मा की (एव) ही (प्रपद्ये) मैं शरण में हूँ तथा उसी की पूजा करता हूँ।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 16

द्वौ, इमौ, पुरुषौ, लोके, क्षरः, च, अक्षरः, एव, च,
क्षरः, सर्वाणि, भूतानि, कूटस्थः, अक्षरः, उच्यते।।

अनुवाद : (लोके) इस संसारमें (द्वौ) दो प्रकारके (क्षरः) नाशवान् (च) और (अक्षरः) अविनाशी (पुरुषौ) भगवान हैं (एव) इसी प्रकार (इमौ) इन दोनों प्रभुओं के लोकों में (सर्वाणि) सम्पूर्ण (भूतानि) प्राणियों के शरीर तो (क्षरः) नाशवान् (च) और (कूटस्थः) जीवात्मा (अक्षरः) अविनाशी (उच्यते) कहा जाता है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 17

उत्तमः, पुरुषः, तु, अन्यः, परमात्मा, इति, उदाहृतः,
यः, लोकत्रयम् आविश्य, बिभर्ति, अव्ययः, ईश्वरः।।

अनुवाद : (उत्तमः) उत्तम (पुरुषः) प्रभु (तु) तो (अन्यः) उपरोक्त दोनों प्रभुओं ''क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष'' से भी अन्य ही है (इति) यह वास्तव में (परमात्मा) परमात्मा (उदाहृतः) कहा गया है (यः) जो (लोकत्रयम्) तीनों लोकों में (आविश्य) प्रवेश करके (बिभर्ति) सबका धारण पोषण करता है एवं (अव्ययः) अविनाशी (ईश्वरः) ईश्वर (प्रभुओं में श्रेष्ठ अर्थात् समर्थ प्रभु) है।

भावार्थ - गीता ज्ञान दाता प्रभु ने केवल इतना ही बताया है कि यह संसार उल्टे लटके वृक्ष तुल्य जानो। ऊपर जड़ें (मूल) तो पूर्ण परमात्मा है। नीचे टहनीयां आदि अन्य हिस्से जानों। इस संसार रूपी वृक्ष के प्रत्येक भाग का भिन्न-भिन्न विवरण जो संत जानता है वह तत्वदर्शी संत है जिसके विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है। गीता अध्याय 15 श्लोक नं. 2-3 में केवल इतना ही बताया है कि तीन गुण रूपी शाखा हैं। यहां विचारकाल में अर्थात् गीता में आपको मैं (गीता ज्ञान दाता) पूर्ण जानकारी नहीं दे सकता क्योंकि मुझे इस संसार की रचना के आदि व अंत का ज्ञान नहीं है। उस के लिए गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है कि किसी तत्व दर्शी संत से उस पूर्ण परमात्मा का ज्ञान जानों इस गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में उस तत्वदर्शी संत की पहचान बताई है कि वह संसार रूपी वृक्ष के प्रत्येक भाग का ज्ञान कराएगा। उसी से पूछो। गीता अध्याय 15 के श्लोक 4 में कहा है कि उस तत्वदर्शी संत के मिल जाने के पश्चात् उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए अर्थात् उस तत्वदर्शी संत के बताए अनुसार साधना करनी चाहिए जिससे पूर्ण मोक्ष (अनादि मोक्ष) प्राप्त होता है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट किया है कि तीन प्रभु हैं एक क्षर पुरूष (ब्रह्म) दूसरा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) तीसरा परम अक्षर पुरूष (पूर्ण ब्रह्म)। क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष वास्तव में अविनाशी नहीं हैं। वह अविनाशी परमात्मा तो इन

दोनों से अन्य ही है। वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है।

उपरोक्त श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में यह प्रमाणित हुआ कि उल्टे लटके हुए संसार रूपी वृक्ष की मूल अर्थात् जड़ तो परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म है जिससे पूर्ण वृक्ष का पालन होता है तथा वृक्ष का जो हिस्सा पृथ्वी के तुरन्त बाहर जमीन के साथ दिखाई देता है वह तना होता है उसे अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म जानों। उस तने से ऊपर चल कर अन्य मोटी डार निकलती है उनमें से एक डार को ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष जानों तथा उसी डार से अन्य तीन शाखाएं निकलती हैं उन्हें ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जानों तथा शाखाओं से आगे पत्ते रूप में सांसारिक प्राणी जानों। उपरोक्त गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट है कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तथा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) तथा इन दोनों के लोकों में जितने प्राणी हैं उनके स्थूल शरीर तो नाशवान हैं तथा जीवात्मा अविनाशी है अर्थात् उपरोक्त दोनों प्रभु व इनके अन्तर्गत सर्व प्राणी नाशवान हैं। भले ही अक्षर पुरुष (परब्रह्म) को अविनाशी कहा है परन्तु वास्तव में अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य है। वह तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका पालन-पोषण करता है। उपरोक्त विवरण में तीन प्रभुओं का भिन्न-भिन्न विवरण दिया है।
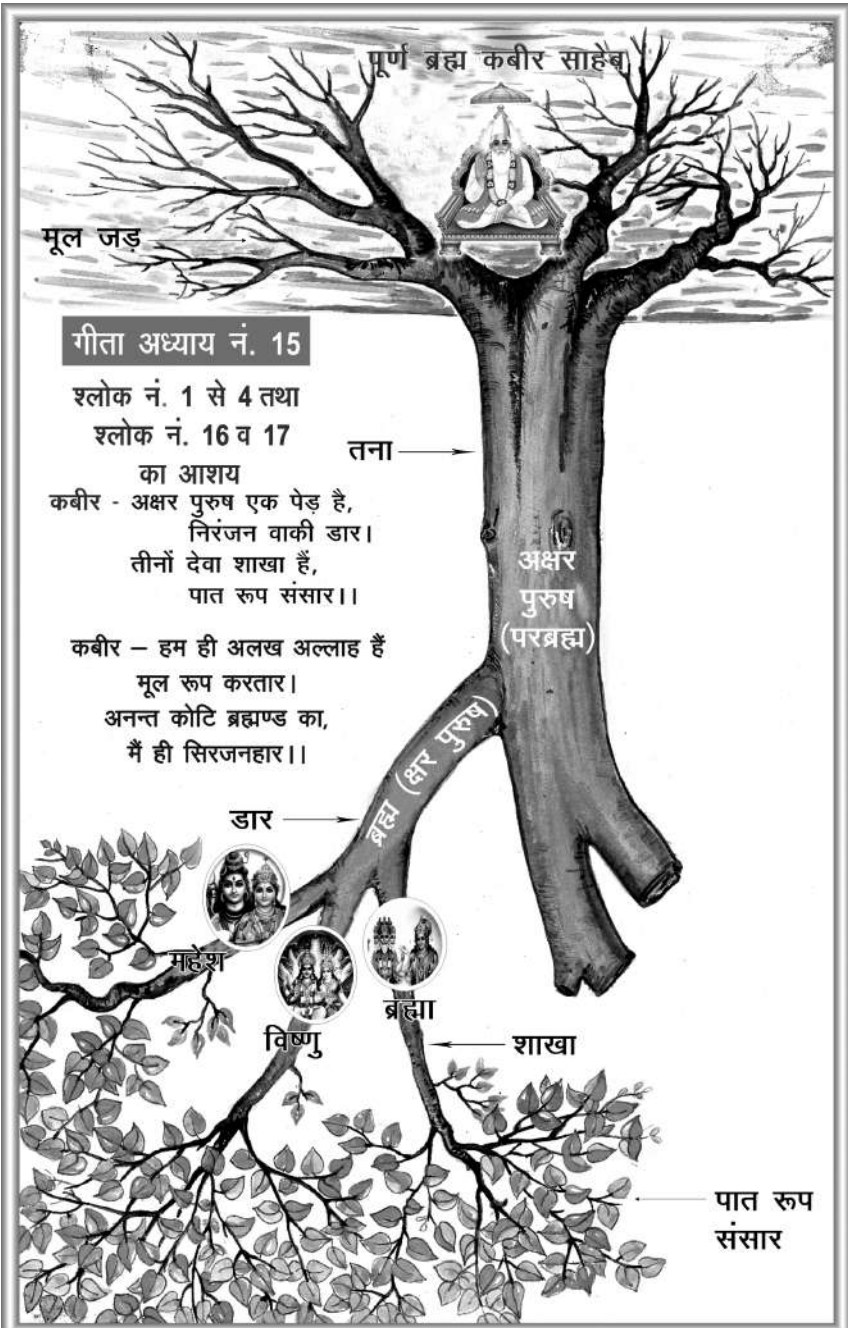
ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ
संसार रूपी वृक्ष का चित्र

"पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुरान शरीफ में सृष्टि रचना का प्रमाण"

इसी का प्रमाण पवित्र बाईबल में तथा पवित्र कुरान शरीफ में भी है।

कुरान शरीफ में पवित्र बाईबल का भी ज्ञान है, इसलिए इन दोनों पवित्र सद्ग्रन्थों ने मिल-जुल कर प्रमाणित किया है कि कौन तथा कैसा है सृष्टि रचनहार तथा उसका वास्तविक नाम क्या है।

पवित्र बाईबल (उत्पत्ति ग्रन्थ पृष्ठ नं. 2 पर, अ. 1:20 - 2:5 पर)

छटवां दिन :— प्राणी और मनुष्य :

अन्य प्राणियों की रचना करके 26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, जो सर्व प्राणियों को काबू रखेगा। 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की।

29. प्रभु ने मनुष्यों के खाने के लिए जितने बीज वाले छोटे पेड़ तथा जितने पेड़ों में बीज वाले फल होते हैं वे भोजन के लिए प्रदान किए हैं, (माँस खाना नहीं कहा है।)

सातवां दिन :— विश्राम का दिन :

परमेश्वर ने छः दिन में सर्व सृष्टि की उत्पत्ति की तथा सातवें दिन विश्राम किया।

पवित्र बाईबल ने सिद्ध कर दिया कि परमात्मा मानव सदृश शरीर में है, जिसने छः दिन में सर्व सृष्टि की रचना की तथा फिर विश्राम किया।

पवित्र कुरान शरीफ (सुरत फुर्कानि 25, आयत नं. 52, 58, 59)

आयत 52 :— फला तुतिअल् — काफिरन् व जहिद्हुम बिही जिहादन् कबीरा (कबीरन्)।।52।

इसका भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी का खुदा (प्रभु) कह रहा है कि हे पैगम्बर ! आप काफिरों (जो एक प्रभु की भक्ति त्याग कर अन्य देवी—देवताओं तथा मूर्ति आदि की पूजा करते हैं) का कहा मत मानना, क्योंकि वे लोग कबीर को पूर्ण परमात्मा नहीं मानते। आप मेरे द्वारा दिए इस कुरान के ज्ञान के आधार पर अटल रहना कि कबीर ही पूर्ण प्रभु है तथा कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष करना (लड़ना नहीं) अर्थात् अडिग रहना।

आयत 58 :— व तवक्कल् अलल् — हय्यिल्लजी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही व कफा बिही बिजुनूबि अिबादिही खबीरा (कबीरा)।।58।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी जिसे अपना प्रभु मानते हैं वह अल्लाह (प्रभु) किसी और पूर्ण प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है कि ऐ पैगम्बर उस कबीर परमात्मा पर विश्वास रख जो तुझे जिंदा महात्मा के रूप में आकर मिला था। वह कभी मरने वाला नहीं है अर्थात् वास्तव में अविनाशी है। तारीफ के साथ उसकी पाकी (पवित्र महिमा) का गुणगान किए जा, वह कबीर अल्लाह (कविर्देव) पूजा के योग्य है तथा अपने उपासकों के सर्व पापों को विनाश करने वाला है।

आयत 59 :— अल्ल्जी खलकस्समावाति वल्अर्ज व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्अर्शि अर्रह्मानु फस्अल् बिही खबीरन्(कबीरन्)।।59।।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद को कुरान शरीफ बोलने वाला प्रभु (अल्लाह) कह रहा है कि वह कबीर प्रभु वही है जिसने जमीन तथा आसमान के बीच में जो भी विद्यमान है सर्व सृष्टि की रचना छः दिन में की तथा सातवें दिन ऊपर अपने सत्यलोक में सिंहासन पर विराजमान हो (बैठ) गया। उसके विषय में जानकारी किसी (बाखबर) तत्वदर्शी संत से पूछो

उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति कैसे होगी तथा वास्तविक ज्ञान तो किसी तत्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो, मैं नहीं जानता।

उपरोक्त दोनों पवित्र धर्मों (ईसाई तथा मुसलमान) के पवित्र शास्त्रों ने भी मिल-जुल कर प्रमाणित कर दिया कि सर्व सृष्टि रचनहार, सर्व पाप विनाशक, सर्व शक्तिमान, अविनाशी परमात्मा मानव सदृश शरीर में आकार में है तथा सत्यलोक में रहता है। उसका नाम कबीर है, उसी को अल्लाहु अकबिरू भी कहते हैं।

आदरणीय धर्मदास जी ने पूज्य कबीर प्रभु से पूछा कि हे सर्वशक्तिमान ! आज तक यह तत्वज्ञान किसी ने नहीं बताया, वेदों के मर्मज्ञ ज्ञानियों ने भी नहीं बताया। इससे सिद्ध है कि चारों पवित्र वेद तथा चारों पवित्र कतेब (कुरान शरीफ आदि) झूठे हैं। पूर्ण परमात्मा ने कहा :-

कबीर, बेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहिं।

भावार्थ है कि चारों पवित्र वेद (ऋग्वेद - अथर्ववेद - यजुर्वेद - सामवेद) तथा पवित्र चारों कतेब (कुरान शरीफ - जबूर - तौरात - इंजिल) गलत नहीं हैं। परन्तु जो इनको नहीं समझ पाए वे नादान हैं।

"पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर् देव) जी की अमृतवाणी में सृष्टि रचना"

विशेष :- निम्न अमृतवाणी सन् 1403 से {जब पूज्य कविर्देव (कबीर परमेश्वर) लीलामय शरीर में पाँच वर्ष के हुए} सन् 1518 {जब कविर्देव (कबीर परमेश्वर) मगहर स्थान से सशरीर सतलोक गए} के बीच में लगभग 600 वर्ष पूर्व परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी द्वारा अपने निजी सेवक (दास भक्त) आदरणीय धर्मदास साहेब जी को सुनाई थी तथा धनी धर्मदास साहेब जी ने लिपिबद्ध की थी। परन्तु उस समय के पवित्र हिन्दुओं तथा पवित्र मुसलमानों के नादान गुरुओं (नीम-हकीमों) ने कहा कि यह धाणक (जुलाहा) कबीर झूठा है। किसी भी सद् ग्रन्थ में श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के माता-पिता का नाम नहीं है। ये तीनों प्रभु अविनाशी हैं इनका जन्म मृत्यु नहीं होता। न ही पवित्र वेदों व पवित्र कुरान शरीफ आदि में कबीर परमेश्वर का प्रमाण है तथा परमात्मा को निराकार लिखा है। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। भोली आत्माओं ने उन विचक्षणों (चतुर गुरुओं) पर विश्वास कर लिया कि सचमुच यह कबीर धाणक तो अशिक्षित है तथा गुरु जी शिक्षित हैं, सत्य कह रहे होंगे। आज वही सच्चाई प्रकाश में आ रही है तथा अपने सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र सद्ग्रन्थ साक्षी हैं। इससे सिद्ध है कि पूर्ण परमेश्वर, सर्व सृष्टि रचनहार, कुल करतार तथा सर्वज्ञ कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही है जो काशी

(बनारस) में कमल के फूल पर प्रकट हुए तथा 120 वर्ष तक वास्तविक तेजोमय शरीर के ऊपर मानव सदृश शरीर हल्के तेज का बना कर रहे तथा अपने द्वारा रची सृष्टि का ठीक-ठीक (वास्तविक तत्व) ज्ञान देकर सशरीर सतलोक चले गए। कृपा प्रेमी पाठक पढ़ें निम्न अमृतवाणी परमेश्वर कबीर साहेब जी द्वारा उच्चारितः-

धर्मदास यह जग बौराना। कोइ न जाने पद निरवाना।।
यहि कारन मैं कथा पसारा। जगसे कहियो राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवोंका भरम नशाओ।।
अब मैं तुमसे कहों चिताई। त्रयदेवनकी उत्पति भाई।।
कुछ संक्षेप कहों गुहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।
भरम गये जग वेद पुराना। आदि रामका का भेद न जाना।।
राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोइ बिरला जाने।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।
माँ अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारुण वंशन अंजन।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछेसे माया उपजाई।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।
कामदेव धर्मराय सत्ताये। देवी को तुरतही धर खाये।।
पेट से देवी करी पुकारा। साहब मेरा करो उबारा।।
टेर सुनी तब हम तहाँ आये। अष्टंगी को बंद छुड़ाये।।
सतलोक में कीन्हा दुराचारि, काल निरंजन दिन्हा निकारि।।
माया समेत दिया भगाई, सोलह संख कोस दूरी पर आई।।
अष्टंगी और काल अब दोई, मंद कर्म से गए बिगोई।।
धर्मराय को हिकमत कीन्हा। नख रेखा से भगकर लीन्हा।।
धर्मराय किन्हाँ भोग विलासा। मायाको रही तब आसा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव विस्त्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
पुरुष गम्य कैसे को पावै। काल निरंजन जग भरमावै।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।
तीन देव सो उनको धावें। निरंजन का वे पार ना पावें।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।
अकाल पुरुष काहू नहिं चीन्हां। काल पाय सबही गह लीन्हां।।
ब्रह्म काल सकल जग जाने। आदि ब्रह्मको ना पहिचाने।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।
तीनों गुण का यह विस्त्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।

गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार।
कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरैं पार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने निजी सेवक श्री धर्मदास साहेब जी को कह रहे हैं कि धर्मदास यह सर्व संसार तत्वज्ञान के अभाव से विचलित है। किसी को पूर्ण मोक्ष मार्ग तथा पूर्ण सृष्टि रचना का ज्ञान नहीं है। इसलिए मैं आपको मेरे द्वारा रची सृष्टि की कथा सुनाता हूँ। बुद्धिमान व्यक्ति तो तुरंत समझ जायेंगे। परन्तु जो सर्व प्रमाणों को देखकर भी नहीं मानेंगे तो वे नादान प्राणी काल प्रभाव से प्रभावित हैं, वे भक्ति योग्य नहीं। अब मैं बताता हूँ तीनों भगवानों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी) की उत्पत्ति कैसे हुई? इनकी माता जी तो अष्टंगी (दुर्गा) है तथा पिता ज्योति निरंजन (ब्रह्म, काल) है। पहले ब्रह्म की उत्पत्ति अण्डे से हुई। फिर दुर्गा की उत्पत्ति हुई। दुर्गा के रूप पर आसक्त होकर काल (ब्रह्म) ने गलती (छेड़-छाड़) की, तब दुर्गा (प्रकृति) ने इसके पेट में शरण ली। मैं वहाँ गया जहाँ ज्योति निरंजन काल था। तब भवानी को ब्रह्म के उदर से निकाल कर इक्कीस ब्रह्माण्ड समेत 16 संख कोस की दूरी पर भेज दिया। ज्योति निरंजन (धर्मराय) ने प्रकृति देवी (दुर्गा) के साथ भोग-विलास किया। इन दोनों के संयोग से तीनों गुणों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की उत्पत्ति हुई। इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की ही साधना करके सर्व प्राणी काल जाल में फंसे हैं। जब तक वास्तविक मंत्र नहीं मिलेगा, पूर्ण मोक्ष कैसे होगा?

विशेषः- प्रिय पाठक विचार करें कि श्री ब्रह्मा जी श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की स्थिति अविनाशी बताई गई थी। सर्व हिन्दु समाज अभी तक तीनों परमात्माओं को अजर, अमर व जन्म-मृत्यु रहित मानते रहे जबकि ये तीनों नाश्वान हैं। इन के पिता काल रूपी ब्रह्म तथा माता दुर्गा (प्रकृति/अष्टांगी) हैं जैसा आप ने पूर्व प्रमाणों में पढ़ा यह ज्ञान अपने शास्त्रों में भी विद्यमान है परन्तु हिन्दु समाज के कलयुगी गुरूओं, ऋषियों, सन्तों को ज्ञान नहीं। जो अध्यापक पाठ्यक्रम (सलेबस) से ही अपरिचित है वह अध्यापक ठीक नहीं (विद्वान नहीं) है, विद्यार्थियों के भविष्य का शत्रु है। इसी प्रकार जिन गुरूओं को अभी तक यह नहीं पता कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं? तो वे गुरू, ऋषि,सन्त ज्ञान हीन हैं। जिस कारण से सर्व भक्त समाज को शास्त्र विरूद्ध ज्ञान (लोक वेद अर्थात् दन्त कथा) सुना कर अज्ञान से परिपूर्ण कर दिया। शास्त्रविधि विरूद्ध भक्तिसाधना करा के परमात्मा के वास्तविक लाभ (पूर्ण मोक्ष) से वंचित रखा सबका मानव जन्म नष्ट करा दिया क्योंकि श्री मद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में यही प्रमाण है कि जो शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण पूजा करता है। उसे कोई लाभ नहीं होता पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने पाँच वर्ष की लीलामय आयु में सन् 1403 से ही सर्व शास्त्रों युक्त ज्ञान अपनी अमृतवाणी (कविरवाणी) में बताना प्रारम्भ किया था। परन्तु उन अज्ञानी गुरूओं ने यह ज्ञान भक्त समाज तक

नहीं जाने दिया। जो वर्तमान में सर्व सद्ग्रन्थों से स्पष्ट हो रहा है इससे सिद्ध है कि कर्विदेव (कबीर प्रभु) तत्वदर्शी सन्त रूप में स्वयं पूर्ण परमात्मा ही आए थे।

“आदरणीय गरीबदास साहेब जी की अमृतवाणी में सृष्टि रचना का प्रमाण”

आदि रमैणी (सद् ग्रन्थ पृष्ठ नं. 690 से 692 तक)

आदि रमैंणी अदली सारा। जा दिन होते धुंधुंकारा।।1।।
सतपुरुष कीन्हा प्रकाशा। हम होते तखत कबीर खवासा ।।2।।
मन मोहिनी सिरजी माया। सतपुरुष एक ख्याल बनाया।।3।।
धर्मराय सिरजे दरबानी। चौसठ जुगतप सेवा ठांनी।।4।।
पुरुष पृथिवी जाकूं दीन्ही। राज करो देवा आधीनी।।5।।
ब्रह्माण्ड इकीस राज तुम्ह दीन्हा। मन की इच्छा सब जुग लीन्हा।।6।।
माया मूल रूप एक छाजा। मोहि लिये जिनहूँ धर्मराजा।।7।।
धर्म का मन चंचल चित धार्या। मन माया का रूप बिचारा।।8।।
चंचल चेरी चपल चिरागा। या के परसे सरबस जागा।।9।।
धर्मराय कीया मन का भागी। विषय वासना संग से जागी।।10।।
आदि पुरुष अदली अनरागी। धर्मराय दिया दिल सें त्यागी।।11।।
पुरुष लोक सें दीया ढहाही। अगम दीप चलि आये भाई।।12।।
सहज दास जिस दीप रहंता। कारण कौंन कौंन कुल पंथा।।13।।
धर्मराय बोले दरबानी। सुनो सहज दास ब्रह्मज्ञानी।।14।।
चौसठ जुग हम सेवा कीन्ही। पुरुष पृथिवी हम कूं दीन्ही।।15।।
चंचल रूप भया मन बौरा। मनमोहिनी ठगिया भौंरा।।16।।
सतपुरुष के ना मन भाये। पुरुष लोक से हम चलि आये।।17।।
अगर दीप सुनत बड़भागी। सहज दास मेटो मन पागी।।18।।
बोले सहजदास दिल दानी। हम तो चाकर सत सहदानी।।19।।
सतपुरुष सें अरज गुजारूं। जब तुम्हारा बिवाण उतारूं।।20।।
सहज दास को कीया पीयाना। सत्यलोक लीया प्रवाना।।21।।
सतपुरुष साहिब सरबंगी। अविगत अदली अचल अभंगी।।22।।
धर्मराय तुम्हरा दरबानी। अगर दीप चलि गये प्रानी।।23।।
कौंन हुकम करी अरज अवाजा। कहां पठावौ उस धर्मराजा।।24।।
भई अवाज अदली एक साचा। विषय लोक जा तीन्यूं बाचा।।25।।
सहज विमाँन चले अधिकाई। छिन में अगर दीप चलि आई।।26।।
हमतो अरज करी अनरागी। तुम्ह विषय लोक जावो बड़भागी।।27।।
धर्मराय के चले विमाना। मानसरोवर आये प्राना।।28।
मानसरोवर रहन न पाये। दरै कबीरा थांना लाये।।29।।
बंकनाल की विषमी बाटी। तहां कबीरा रोकी घाटी।।30।।

इन पाँचों मिलि जगत बंधाना। लख चौरासी जीव संताना।।31।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया। धर्मराय का राज पठाया।।32।।
यौह खोखा पुर झूठी बाजी। भिसति बैकुण्ठ दगासी साजी।।33।।
कृतिम जीव भुलांनें भाई। निज घर की तो खबरि न पाई।।34।।
सवा लाख उपजें नित हंसा। एक लाख विनशें नित अंसा।।35।।
उपति खपति प्रलय फेरी। हर्ष शोक जौंरा जम जेरी।।36।।
पाँचों तत्त्व हैं प्रलय माँही। सत्त्वगुण रजगुण तमगुण झांई।।37।।
आठों अंग मिली है माया। पिण्ड ब्रह्माण्ड सकल भरमाया।।38।।
या में सुरति शब्द की डोरी। पिण्ड ब्रह्माण्ड लगी है खोरी।।39।।
श्वासा पारस मन गह राखो। खोल्हि कपाट अमीरस चाखो।।40।।
सुनाऊं हंस शब्द सुन दासा। अगम दीप है अग है बासा।।41।।
भवसागर जम दण्ड जमाना। धर्मराय का है तलबांना।।42।।
पाँचों ऊपर पद की नगरी। बाट बिहंगम बंकी डगरी।।43।।
हमरा धर्मराय सों दावा। भवसागर में जीव भरमावा।।44।।
हम तो कहैं अगम की बानी। जहाँ अविगत अदली आप बिनानी।।45।।
बंदी छोड़ हमारा नामं। अजर अमर है अस्थीर ठामं।।46।।
जुगन जुगन हम कहते आये। जम जौंरा सें हंस छुटाये।।47।।
जो कोई मानें शब्द हमारा। भवसागर नहीं भरमें धारा।।48।।
या में सुरति शब्द का लेखा। तन अंदर मन कहो कीन्ही देखा।।49।।
दास गरीब अगम की बानी। खोजा हंसा शब्द सहदानी।।50।।

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि यहाँ पहले केवल अंधकार था तथा पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी सत्यलोक में तख्त (सिंहासन) पर विराजमान थे। हम वहाँ चाकर थे। परमात्मा ने ज्योति निरंजन को उत्पन्न किया। फिर उसके तप के प्रतिफल में इक्कीस ब्रह्माण्ड प्रदान किए। फिर माया (प्रकृति) की उत्पत्ति की। युवा दुर्गा के रूप पर मोहित होकर ज्योति निरंजन (ब्रह्म) ने दुर्गा (प्रकृति) से बलात्कार करने की चेष्टा की। ब्रह्म को उसकी सजा मिली। उसे सत्यलोक से निकाल दिया तथा शाप लगा कि एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का प्रतिदिन आहार करेगा, सवा लाख उत्पन्न करेगा। यहाँ सर्व प्राणी जन्म-मृत्यु का कष्ट उठा रहे हैं। यदि कोई पूर्ण परमात्मा का वास्तविक शब्द (सच्चानाम जाप मंत्र) हमारे से प्राप्त करेगा, उसको काल की बंद से छुड़वा देंगे। हमारा बन्दी छोड़ नाम है। आदरणीय गरीबदास जी अपने गुरु व प्रभु कबीर परमात्मा के आधार पर कह रहे हैं कि सच्चे मंत्र अर्थात् सत्यनाम व सारशब्द की प्राप्ति कर लो, पूर्ण मोक्ष हो जायेगा। नहीं तो नकली नाम दाता संतों व महन्तों की मीठी-मीठी बातों में फंस कर शास्त्र विधि रहित साधना करके काल जाल में रह जाओगे। फिर कष्ट पर कष्ट उठाओगे।

||गरीबदास जी महाराज की वाणी||

(सत ग्रन्थ साहिब पृष्ठ नं. 690 से सहाभार)

माया आदि निरंजन भाई, अपने जाऐ आपै खाई।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर चेला, ऊँ सोहं का है खेला।।
सिखर सुन्न में धर्म अन्यायी, जिन शक्ति डायन महल पठाई।।
लाख ग्रासै नित उठ दूती, माया आदि तख्त की कुती।।
सवा लाख घड़िये नित भांडे, हंसा उतपति परलय डांडे।
ये तीनों चेला बटपारी, सिरजे पुरुषा सिरजी नारी।।
खोखापुर में जीव भुलाये, स्वपना बहिस्त वैकुंठ बनाये।
यो हरहट का कुआ लोई, या गल बंध्या है सब कोई।।
कीड़ी कुजंर और अवतारा, हरहट डोरी बंधे कई बारा।
अरब अलील इन्द्र हैं भाई, हरहट डोरी बंधे सब आई।।
शेष महेश गणेश्वर ताहिं, हरहट डोरी बंधे सब आहिं।
शुक्रादिक ब्रह्मादिक देवा, हरहट डोरी बंधे सब खेवा।।
कोटिक कर्ता फिरता देख्या, हरहट डोरी कहूँ सुन लेखा।
चतुर्भुजी भगवान कहावैं, हरहट डोरी बंधे सब आवैं।।
यो है खोखापुर का कुआ, या में पड़ा सो निश्चय मुवा।

ज्योति निरंजन (कालबली) के वश होकर के ये तीनों देवता (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) अपनी महिमा दिखाकर जीवों को स्वर्ग नरक तथा भवसागर में (लख चौरासी योनियों में) भटकाते रहते हैं। ज्योति निरंजन अपनी माया से नागिनी की तरह जीवों को पैदा करते हैं और फिर मार देते हैं। जिस प्रकार उसको नागिनी खा जाती है। फन मारते समय कई अण्डे फूट जाते हैं क्योंकि नागिनी के काफी अण्डे होते हैं। जो अण्डे फूटते हैं उनमें से बच्चे निकलते हैं यदि कोई बच्चा नागिनी अपनी दुम से अण्डों के चारों ओर कुण्डली बनाती है फिर उन अण्डों पर अपना फन मारती है। जिससे अण्डा फूट जाता है। उसमें से बच्चा निकल जाता है। कुण्डली (सर्पनी की दुम का घेरा) से बाहर निकल जाता है तो वह बच्चा बच जाता है नहीं तो कुण्डली में वह (नागिनी) छोड़ती नहीं। जितने बच्चे उस कुण्डली के अन्दर होते हैं उन सबको खा जाती है।

माया काली नागिनी, अपने जाये खात। कुण्डली में छोड़ै नहीं, सौ बातों की बात।।

इसी प्रकार यह कालबली का जाल है। निरंजन तक की भक्ति पूरे संत से नाम लेकर करेगें तो भी इस निरंजन की कुण्डली (इक्कीस ब्रह्माण्डों) से बाहर नहीं निकल सकते। स्वयं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आदि माया शेराँवाली भी निरंजन की कुण्डली में है। ये बेचारे अवतार धार कर आते हैं और जन्म-मृत्यु का चक्कर काटते रहते हैं। इसलिए विचार करें सोहं जाप जो कि ध्रुव व प्रहलाद व शुकदेव ऋषि ने जपा, वह भी पार नहीं हुए। क्योंकि श्री विष्णु पुराण के प्रथम अंश के अध्याय 12 के श्लोक 93 में पृष्ठ 51 पर लिखा है कि ध्रुव केवल एक कल्प अर्थात् एक हजार चतुर्युग तक ही मुक्त है। इसलिए

काल लोक में ही रहे तथा 'ऊँ नमः भगवते वासुदेवाय' मन्त्र जाप करने वाले भक्त भी कृष्ण तक की भक्ति कर रहे हैं, वे भी चौरासी लाख योनियों के चक्कर काटने से नहीं बच सकते। यह परम पूज्य कबीर साहिब जी व आदरणीय गरीबदास साहेब जी महाराज की वाणी प्रत्यक्ष प्रमाण देती हैं।

अनन्त कोटि अवतार हैं, माया के गोविन्द।
कर्ता हो हो अवतरे, बहुर पड़े जग फंध।।

सतपुरुष कबीर साहिब जी की भक्ति से ही जीव मुक्त हो सकता है। जब तक जीव सतलोक में वापिस नहीं चला जाएगा तब तक काल लोक में इसी तरह कर्म करेगा और की हुई नाम व दान धर्म की कमाई स्वर्ग रूपी होटलों में समाप्त करके वापिस कर्म आधार से चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीर में कष्ट उठाने वाले काल लोक में चक्कर काटता रहेगा। माया (दुर्गा) से उत्पन्न हो कर करोड़ों गोबिन्द(ब्रह्मा-विष्णु-शिव) मर चुके हैं। भगवान का अवतार बन कर आये थे। फिर कर्म बन्धन में बन्ध कर कर्मों को भोग कर चौरासी लाख योनियों में चले गए। जैसे भगवान विष्णु जी को देवर्षि नारद का शाप लगा। वे श्री रामचन्द्र रूप में अयोध्या में आए। फिर श्री राम जी रूप में बाली का वध किया था। उस कर्म का दण्ड भोगने के लिए श्री कृष्ण जी का जन्म हुआ। फिर बाली वाली आत्मा शिकारी बना तथा अपना प्रतिशोध लिया। श्री कृष्ण जी के पैर में विषाक्त तीर मार कर वध किया। महाराज गरीबदास जी अपनी वाणी में कहते हैं :-

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया, और धर्मराय कहिये।
इन पाँचों मिल परपंच बनाया, वाणी हमरी लहिये।।
इन पाँचों मिल जीव अटकाये, जुगन–जुगन हम आन छुटाये।
बन्दी छोड़ हमारा नामं, अजर अमर है अस्थिर ठामं।।
पीर पैगम्बर कुतुब औलिया, सुर नर मुनिजन ज्ञानी।
येता को तो राह न पाया, जम के बंधे प्राणी।।
धर्मराय की धूमा–धामी, जम पर जंग चलाऊँ।
जोरा को तो जान न दूगां, बांध अदल घर ल्याऊँ।।
काल अकाल दोहूँ को मोसूं, महाकाल सिर मूंडू।
मैं तो तख्त हजूरी हुकमी, चोर खोज कूं ढूंढू।।
मूला माया मग में बैठी, हंसा चुन–चुन खाई।
ज्योति स्वरूपी भया निरंजन, मैं ही कर्ता भाई।।
संहस अठासी दीप मुनीश्वर, बंधे मुला डोरी।
ऐत्यां में जम का तलबाना, चलिए पुरुष कीशोरी।।
मूला का तो माथा दागूं, सतकी मोहर करूंगा।
पुरुष दीप कूं हंस चलाऊँ, दरा न रोकन दूंगा।।
हम तो बन्दी छोड़ कहावां, धर्मराय है चकवै।
सतलोक की सकल सुनावां, वाणी हमरी अखवै।।
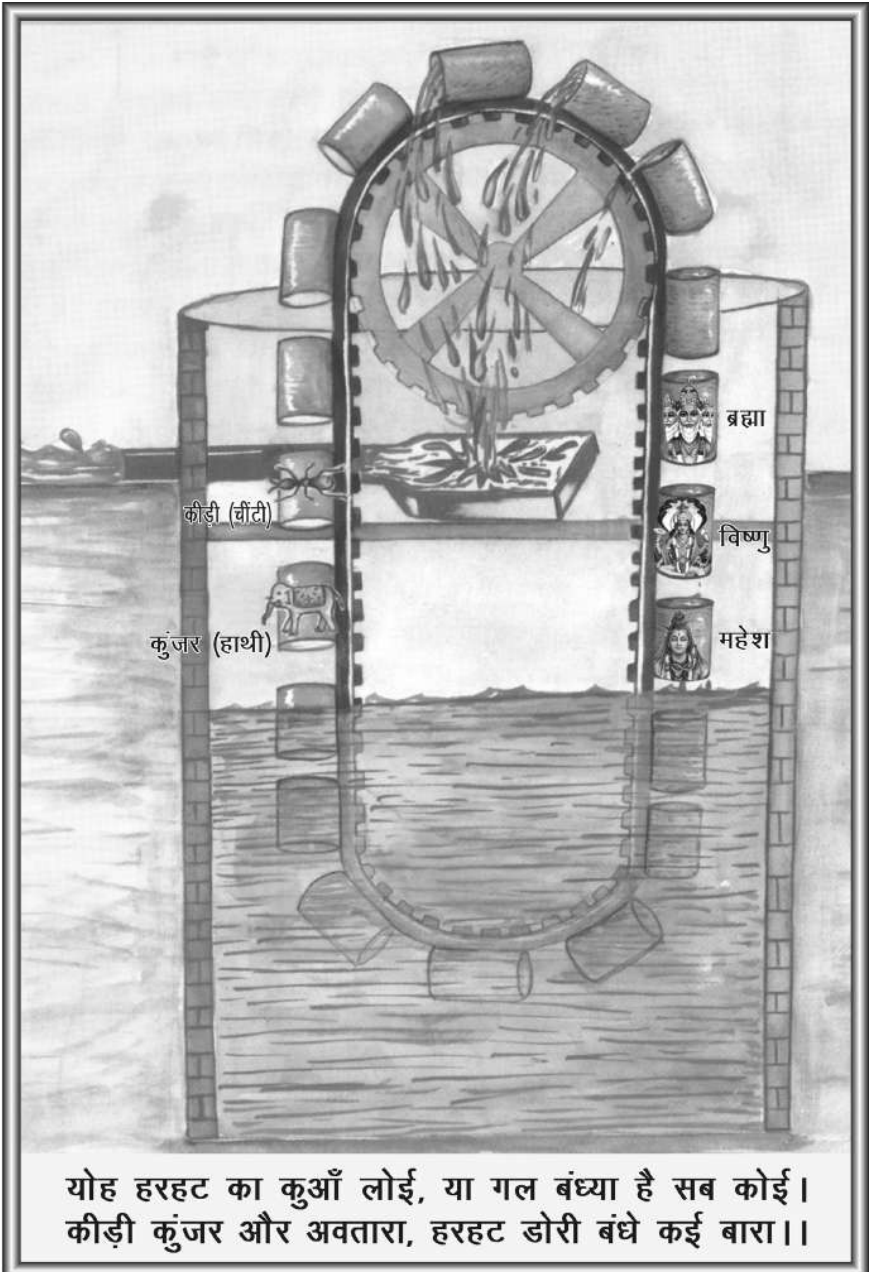
योह हरहट का कुआँ लोई, या गल बंध्या है सब कोई।
कीड़ी कुंजर और अवतारा, हरहट डोरी बंधे कई बारा।।

काल लोक में जन्म–मरण रूपी हरहट (चक्र)

नौ लख पटट्न ऊपर खेलूं, साहदरे कूं रोकूं।
द्वादस कोटि कटक सब काटूं, हंस पठाऊँ मोखूं।।
चौदह भुवन गमन है मेरा, जल थल में सरबंगी।
खालिक खलक खलक में खालिक, अविगत अचल अभंगी।।
अगर अलील चक्र है मेरा, जित से हम चल आए।
पाँचों पर प्रवाना मेरा, बंधि छुटावन धाये।।
जहाँ ओंकार निरंजन नाहीं, ब्रह्मा विष्णु वेद नहीं जाहीं।
जहाँ करता नहीं जान भगवाना, काया माया पिण्ड न प्राणा।।
पाँच तत्व तीनों गुण नाहीं, जोरा काल दीप नहीं जाहीं।
अमर करूं सतलोक पठाँऊ, तातैं बन्दी छोड़ कहाऊँ।।

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की महिमा बताते हुए आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि हमारे प्रभु कविर् (कविर्देव) बन्दी छोड़ हैं। बन्दी छोड़ का भावार्थ है काल की कारागार से छुटवाने वाला, काल ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्डों में सर्व प्राणी पापों के कारण काल के बंदी हैं। पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब पाप का विनाश कर देते हैं। पापों का विनाश न ब्रह्म, न परब्रह्म, न ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी कर सकते हैं। केवल जैसा कर्म है, उसका वैसा ही फल दे देते हैं। इसीलिए यजुर्वेद अध्याय 5 के मन्त्र 32 में लिखा है 'कविरंघारिरसि' कविर्देव (कबीर परमेश्वर) पापों का शत्रु है, 'बम्भारिरसि' बन्धनों का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ है।

इन पाँचों (ब्रह्मा-विष्णु-शिव-माया और धर्मराय) से ऊपर सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) है। जो सतलोक का मालिक है। शेष सर्व परब्रह्म-ब्रह्म तथा ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी व आदि माया नाशवान परमात्मा हैं। महाप्रलय में ये सब तथा इनके लोक समाप्त हो जाएंगे। आम जीव से कई हजार गुणा ज्यादा लम्बी इनकी उम्र है। परन्तु जो समय निर्धारित है वह एक दिन पूरा अवश्य होगा। आदरणीय गरीबदास जी महाराज कहते हैं :-

शिव ब्रह्मा का राज, इन्द्र गिनती कहां। चार मुक्ति वैकुंण्ठ समझ, येता लह्या।।
संख जुगन की जुनी, उम्र बड़ धाारिया। जा जननी कुर्बान, सु कागज पारिया।।
येती उम्र बुलंद मरैगा अंत रे। सतगुरु लगे न कान, न भैंटे संत रे।।

चाहे संख युग की लम्बी उम्र भी क्यों न हो वह एक दिन समाप्त जरूर होगी। यदि सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब के नुमाँयदे पूर्ण संत(गुरु) जो तीन नाम का मंत्र (जिसमें एक ओ3म + तत् + सत् सांकेतिक हैं) देता है तथा उसे पूर्ण संत द्वारा नाम दान करने का आदेश है, उससे उपदेश लेकर नाम की कमाई करेंगे तो हम सतलोक के अधिकारी हंस हो सकते हैं। सत्य साधना बिना बहुत लम्बी उम्र कोई काम नहीं आएगी क्योंकि निरंजन लोक में दुःख ही दुःख है।

कबीर, जीवना तो थोड़ा ही भला, जै सत सुमरन होय।
लाख वर्ष का जीवना, लेखै धरै ना कोय।।

कबीर साहिब अपनी (पूर्णब्रह्म की) जानकारी स्वयं बताते हैं कि इन परमात्माओं

से ऊपर असंख्य भुजा का परमात्मा सतपुरुष है जो सत्यलोक (सच्च खण्ड, सतधाम) में रहता है तथा उसके अन्तर्गत सर्वलोक [ब्रह्म (काल) के 21 ब्रह्माण्ड व ब्रह्मा, विष्णु, शिव शक्ति के लोक तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्माण्ड व अन्य सर्व ब्रह्माण्ड] आते हैं और वहाँ पर सत्यनाम-सारनाम के जाप द्वारा जाया जाएगा जो पूरे गुरु से प्राप्त होता है। सच्चखण्ड (सतलोक) में जो आत्मा चली जाती है उसका पुनर्जन्म नहीं होता। सतपुरुष (पूर्णब्रह्म) कबीर साहेब (कविर्देव) ही अन्य लोकों में स्वयं ही भिन्न-भिन्न नामों से विराजमान हैं। जैसे अलख लोक में अलख पुरुष, अगम लोक में अगम पुरुष तथा अकह लोक में अनामी पुरुष रूप में विराजमान हैं। ये तो उपमात्मक नाम हैं, परन्तु वास्तविक नाम उस पूर्ण पुरुष का कविर्देव (भाषा भिन्न होकर कबीर साहेब) है।

"आदरणीय नानक साहेब जी की वाणी में सृष्टि रचना का संकेत"

श्री नानक साहेब जी की अमृतवाणी, महला 1, राग बिलावलु, अंश 1 (गु.ग्र. पृ. 839)

आपे सचु कीआ कर जोड़ि। अंडज फोड़ि जोडि विछोड़।।
धरती आकाश कीए बैसण कउ थाउ। राति दिनंतु कीए भउ–भाउ।।
जिन कीए करि वेखणहारा।(3)
त्रितीआ ब्रह्मा–बिसनु–महेसा। देवी देव उपाए वेसा।।(4)
पउण पाणी अगनी बिसराउ। ताही निरंजन साचो नाउ।।
तिसु महि मनुआ रहिआ लिव लाई। प्रणवति नानकु कालु न खाई।।(10)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि सच्चे परमात्मा (सतपुरुष) ने स्वयं ही अपने हाथों से सर्व सृष्टि की रचना की है। उसी ने अण्डा बनाया फिर फोड़ा तथा उसमें से ज्योति निरंजन निकला। उसी पूर्ण परमात्मा ने सर्व प्राणियों के रहने के लिए धरती, आकाश, पवन, पानी आदि पाँच तत्व रचे। अपने द्वारा रची सृष्टि का स्वयं ही साक्षी है। दूसरा कोई सही जानकारी नहीं दे सकता। फिर अण्डे के फूटने से निकले निरंजन के बाद तीनों श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की उत्पत्ति हुई तथा अन्य देवी-देवता उत्पन्न हुए तथा अनगिनत जीवों की उत्पत्ति हुई। उसके बाद अन्य देवों के जीवन चरित्र तथा अन्य ऋषियों के अनुभव के छः शास्त्र तथा अठारह पुराण बन गए। पूर्ण परमात्मा के सच्चे नाम (सत्यनाम) की साधना अनन्य मन से करने से तथा गुरु मर्यादा में रहने वाले (प्रणवति) को श्री नानक जी कह रहे हैं कि काल नहीं खाता।

राग मारु(अंश) अमृतवाणी महला 1(गु.ग्र.पृ. 1037)

सुनहु ब्रह्मा, बिसनु, महेसु उपाए। सुने वरते जुग सबाए।।
इसु पद बिचारे सो जनु पुरा। तिस मिलिए भरमु चुकाइदा।।(3)
साम वेदु, रुगु जुजरु अथरबणु। ब्रहमें मुख माइआ है त्रैगुण।।
ता की कीमत कहि न सकै। को तिउ बोले जिउ बुलाईदा।।(9)

उपरोक्त अमृतवाणी का सारांश है कि जो संत पूर्ण सृष्टि रचना सुना देगा तथा बताएगा कि अण्डे के दो भाग होकर कौन निकला, जिसने फिर ब्रह्मलोक की सुन्न

में अर्थात् गुप्त स्थान पर ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी की उत्पत्ति की तथा वह परमात्मा कौन है जिसने ब्रह्म (काल) के मुख से चारों वेदों (पवित्र ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) को उच्चारण करवाया, वह पूर्ण परमात्मा जैसा चाहे वैसे ही प्रत्येक प्राणी को बुलवाता है। इस सर्व ज्ञान को पूर्ण बताने वाला सन्त मिल जाए तो उसके पास जाइए तथा जो सभी शंकाओं का पूर्ण निवारण करता है, वही पूर्ण सन्त अर्थात् तत्वदर्शी है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 929 अमृत वाणी श्री नानक साहेब जी की राग रामकली महला 1 दखणी ओअंकार

ओअंकारि ब्रह्मा उतपति। ओअंकारू कीआ जिनि चित। ओअंकारि सैल जुग भए। ओअंकारि बेद निरमए। ओअंकारि सबदि उधरे। ओअंकारि गुरुमुखि तरे। ओनम अखर सुणहू बीचारु। ओनम अखरु त्रिभवण सारु।

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि ओंकार अर्थात् ज्योति निरंजन (काल) से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई। कई युगों मस्ती मार कर ओंकार (ब्रह्म) ने वेदों की उत्पत्ति की जो ब्रह्मा जी को प्राप्त हुए। तीन लोक की भक्ति का केवल एक ओउम् मंत्र ही वास्तव में जाप करने का है। इस ओउम् शब्द को पूरे संत से उपदेश लेकर अर्थात् गुरू धारण करके जाप करने से उद्धार होता है।

विशेष :– श्री नानक साहेब जी ने तीनों मंत्रों (ओउम् + तत् + सत्) का स्थान-स्थान पर रहस्यात्मक विवरण दिया है। उसको केवल पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) ही समझ सकता है तथा तीनों मंत्रों के जाप को उपदेशी को समझाया जाता है।

(पृ. 1038) उत्तम सतिगुरु पुरुष निराले, सबदि रते हरि रस मतवाले।
रिधि, बुधि, सिधि, गिआन गुरु ते पाइए, पूरे भाग मिलाईदा।।(15)
सतिगुरु ते पाए बीचारा, सुन समाधि सचे घरबारा।
नानक निरमल नादु सबद धुनि, सचु रामैं नामि समाइदा (17)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि वास्तविक ज्ञान देने वाले सतगुरु तो निराले ही हैं, वे केवल नाम जाप को जपते हैं, अन्य हठयोग साधना नहीं बताते। यदि आप को धन दौलत, पद, बुद्धि या भक्ति शक्ति भी चाहिए तो वह भक्ति मार्ग का ज्ञान पूर्ण संत ही पूरा प्रदान करेगा, ऐसा पूर्ण संत बड़े भाग्य से ही मिलता है। वही पूर्ण संत विवरण बताएगा कि ऊपर सुन्न (आकाश) में अपना वास्तविक घर (सत्यलोक) परमेश्वर ने रच रखा है।

उसमें एक वास्तविक सार नाम की धुन (आवाज) हो रही है। उस आनन्द में अविनाशी परमेश्वर के सार शब्द से समाया जाता है अर्थात् उस वास्तविक सुखदाई स्थान में वास हो सकता है, अन्य नामों तथा अधूरे गुरुओं से नहीं हो सकता।

आंशिक अमृतवाणी महला पहला (श्री गु. ग्र. पृ. 359-360)

सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप त्यागी वादं।(1)
सिंडी सबद सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं।(2)

हरि कीरति रह रासि हमारी गुरु मुख पंथ अतीतं (3)
सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरण अनेकं।
कह नानक सुणि भरथरी जोगी पारब्रह्म लिव एकं।(4)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि हे भरथरी योगी जी आप की साधना भगवान शिव तक है, उससे आप को शिव नगरी (लोक) में स्थान मिला है और शरीर में जो सिंगी शब्द आदि हो रहा है वह इन्हीं कमलों का है तथा टेलीविजन की तरह प्रत्येक देव के लोक से शरीर में सुनाई दे रहा है।

हम तो एक परमात्मा पारब्रह्म अर्थात् सर्व से पार जो पूर्ण परमात्मा है अन्य किसी और एक परमात्मा में लौ (अनन्य मन से लग्न) लगाते हैं।

हम ऊपरी दिखावा (भस्म लगाना, हाथ में दंडा रखना) नहीं करते। मैं तो सर्व प्राणियों को एक पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) की सन्तान समझता हूँ। सर्व उसी शक्ति से चलायमान हैं। हमारी मुद्रा तो सच्चा नाम जाप गुरु से प्राप्त करके करना है तथा क्षमा करना हमारा बाणा (वेशभूषा) है। मैं तो पूर्ण परमात्मा का उपासक हूँ तथा पूर्ण सतगुरु का भक्ति मार्ग इससे भिन्न है।

अमृतवाणी राग आसा महला 1 (श्री गु. ग्र. पृ. 420)

।।आसा महला 1।। जिनी नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई। मूलु छोड़ि डाली लगे किआ पावहि छाई।।1।। साहिबु मेरा एकु है अवरु नहीं भाई। किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई।।3।। गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए। नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए।।8।।18।।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि जो पूर्ण परमात्मा का वास्तविक नाम भूल कर अन्य भगवानों के नामों के जाप में भ्रम रहे हैं वे तो ऐसा कर रहे हैं कि मूल (पूर्ण परमात्मा) को छोड़ कर डालियों (तीनों गुण रूप रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिवजी) की सिंचाई (पूजा) कर रहे हैं। उस साधना से कोई सुख नहीं हो सकता अर्थात् पौधा सूख जाएगा तो छाया में नहीं बैठ पाओगे। भावार्थ है कि शास्त्र विधि रहित साधना करने से व्यर्थ प्रयत्न है। कोई लाभ नहीं। इसी का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में भी है। उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने के लिए मनमुखी (मनमानी) साधना त्याग कर पूर्ण गुरुदेव को समर्पण करने से तथा सच्चे नाम के जाप से ही मोक्ष संभव है, नहीं तो मृत्यु के उपरांत नरक जाएगा।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 843-844)

।।बिलावलु महला 1।। मैं मन चाहु घणा साचि विगासी राम। मोही प्रेम पिरे प्रभु अबिनासी राम।। अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीऐ। किरपालु सदा दइआलु दाता जीआ अंदरि तूं जीऐ। मैं आधारु तेरा तू खसमु मेरा मै ताणु तकीआ तेरओ। साचि सूचा सदा नानक गुरसबदि झगरु निबेरओ।।4।।2।।

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि अविनाशी पूर्ण

परमात्मा नाथों का भी नाथ है अर्थात् देवों का भी देव है (सर्व प्रभुओं श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी तथा ब्रह्म व परब्रह्म पर भी नाथ है अर्थात् स्वामी है) मैं तो सच्चे नाम को हृदय में समा चुका हूँ। हे परमात्मा ! सर्व प्राणी का जीवन आधार भी आप ही हो। मैं आपके आश्रित हूँ आप मेरे मालिक हो। आपने ही गुरु रूप में आकर सत्यभक्ति का निर्णायक ज्ञान देकर सर्व झगड़ा निपटा दिया अर्थात् सर्व शंका का समाधान कर दिया।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 721, राग तिलंग महला 1)

यक अर्ज गुफतम् पेश तो दर कून करतार।
हक्का कबीर करीम तू बेअब परवरदिगार।
नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पाखाक।

उपरोक्त अमृतवाणी में स्पष्ट कर दिया कि हे (हक्का कबीर) आप सत्कबीर (कून करतार) शब्द शक्ति से रचना करने वाले शब्द स्वरूपी प्रभु अर्थात् सर्व सृष्टि के रचन हार हो, आप ही बेएब निर्विकार (परवरदिगार) सर्व के पालन कर्ता दयालु प्रभु हो, मैं आपके दासों का भी दास हूँ।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 24, राग सीरी महला 1)

तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहा आस ऐहो आधार।
नानक नीच कहै बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में प्रमाण किया है कि जो काशी में धाणक (जुलाहा) है यही (करतार) कुल का सृजनहार है। अति आधीन होकर श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मैं सत कह रहा हूँ कि यह धाणक अर्थात् कबीर जुलाहा ही पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) है।

विशेष :- उपरोक्त प्रमाणों के सांकेतिक ज्ञान से प्रमाणित हुआ सृष्टि रचना कैसे हुई? पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति करनी चाहिए जो पूर्ण संत से नाम लेकर ही संभव है।

''अन्य संतों द्वारा सृष्टि रचना की दन्त कथा''

अन्य संतों द्वारा जो सृष्टि रचना का ज्ञान बताया है वह कैसा है?

कृप्या निम्न पढ़ें :- सृष्टि रचना के विषय में राधास्वामी पंथ के सन्तों के व धन-धन सतगुरू पंथ के सन्त के विचार :-

पवित्र पुस्तक जीवन चरित्र परम संत बाबा जयमल सिंह जी महाराज'' पृष्ठ नं. 102-103 से ''सृष्टि की रचना'' (सावन कृपाल पब्लिकेशन, दिल्ली)

''पहले सतपुरुष निराकार था, फिर इजहार (आकार) में आया तो ऊपर के तीन निर्मल मण्डल (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) बन गया तथा प्रकाश तथा मण्डलों का नाद (धुनि) बन गया।''

पवित्र पुस्तक सारवचन (नसर) प्रकाशक :- राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग आगरा, ''सृष्टि की रचना'' पृष्ठ 8 :-

''प्रथम धूंधूकार था। उसमें पुरुष सुन्न समाध में थे। जब कुछ रचना नहीं हुई थी। फिर

जब मौज हुई तब शब्द प्रकट हुआ और उससे सब रचना हुई, पहले सतलोक और फिर सतपुरुष की कला से तीन लोक और सब विस्तार हुआ।''

यह ज्ञान तो ऐसा है जैसे एक समय कोई बच्चा नौकरी लगने के लिए साक्षात्कार (इन्टरव्यू) के लिए गया। अधिकारी ने पूछा कि आप ने महाभारत पढ़ा है। लड़के ने उत्तर दिया कि उंगलियों पर रट रखा है। अधिकारी ने प्रश्न किया कि पाँचों पाण्डवों के नाम बताओ। लड़के ने उत्तर दिया कि एक भीम था, एक उसका बड़ा भाई था, एक उससे छोटा था, एक और था तथा एक का नाम मैं भूल गया। उपरोक्त सृष्टि रचना का ज्ञान तो ऐसा है।

सतपुरुष व सतलोक की महिमा बताने वाले व पाँच नाम (औंकार - ज्योति निरंजन - ररंकार - सोहं - सत्यनाम) देने वाले व तीन नाम (अकाल मूर्ति - सतपुरुष - शब्द स्वरूपी राम) देने वाले संतों द्वारा रची पुस्तकों से कुछ निष्कर्ष :-

संतमत प्रकाश भाग 3 पृष्ठ 76 पर लिखा है कि ''सच्चखण्ड या सतनाम चौथा लोक है'', यहाँ पर 'सतनाम' को स्थान कहा है। फिर इस पवित्र पुस्तक के पृष्ठ नं. 79 पर लिखा है कि ''एक राम दशरथ का बेटा, दूसरा राम 'मन', तीसरा राम 'ब्रह्म', चौथा राम 'सतनाम', यह असली राम है।'' फिर पवित्र पुस्तक संतमत प्रकाश पहला भाग पृष्ठ नं. 17 पर लिखा है कि ''वह सतलोक है, उसी को सतनाम कहा जाता है।'' पवित्र पुस्तक 'सार वचन नसर यानि वार्तिक' पृष्ठ नं. 3 पर लिखा है कि ''अब समझना चाहिए कि राधा स्वामी पद सबसे उच्चा मुकाम है कि जिसको संतों ने सतलोक और सच्चखण्ड और सार शब्द और सत शब्द और सतनाम और सतपुरुष करके ब्यान किया है।'' पवित्र पुस्तक सार वचन (नसर) आगरा से प्रकाशित पृष्ठ नं. 4 पर भी उपरोक्त ज्यों का त्यों वर्णन है। पवित्र पुस्तक 'सच्चखण्ड की सड़क' पृष्ठ नं. 226 ''संतों का देश सच्चखण्ड या सतलोक है, उसी को सतनाम- सतशब्द-सारशब्द कहा जाता है।''

विशेष :- उपरोक्त व्याख्या ऐसी लगी जैसे किसी ने जीवन में न तो शहर देखा, न कार देखी और न पैट्रोल देखा है, न ड्राईवर का ज्ञान हो कि ड्राईवर किसे कहते हैं और वह व्यक्ति अन्य साथियों से कहे कि मैं शहर में जाता हूँ, कार में बैठ कर आनंद मनाता हूँ। फिर साथियों ने पूछा कि कार कैसी है, पैट्रोल कैसा है और ड्राईवर कैसा है, शहर कैसा है? उस गुरु जी ने उत्तर दिया कि शहर कहो चाहे कार एक ही बात है, शहर भी कार ही है, पैट्रोल भी कार को ही कहते हैं, ड्राईवर भी कार को ही कहते हैं, सड़क भी कार को ही कहते हैं।

आओ विचार करें - सतपुरुष तो पूर्ण परमात्मा है, सतनाम वह दो मंत्र का नाम है जिसमें एक ओ३म् + तत् सांकेतिक है तथा इसके बाद सारनाम साधक को पूर्ण गुरु द्वारा दिया जाता है। यह सतनाम तथा सारनाम दोनों स्मरण करने के नाम हैं। सतलोक वह स्थान है जहाँ सतपुरुष रहता है। पुण्यात्माएं स्वयं निर्णय करें सत्य तथा असत्य का।

''भक्ति मर्यादा''

नाम (दीक्षा) लेने वाले व्यक्तियों के लिए आवश्यक जानकारी

1. पूर्ण गुरु से दीक्षा लेनी चाहिए :-

पूर्ण गुरु की पहचान : - आज कलियुग में भक्त समाज के सामने पूर्ण गुरु की पहचान करना सबसे जटिल प्रश्न बना हुआ है। लेकिन इसका बहुत ही लघु और साधारण-सा उत्तर है कि जो गुरु शास्त्रों के अनुसार भक्ति करता है और अपने अनुयाइयों अर्थात् शिष्यों द्वारा करवाता है वही पूर्ण संत है। चूंकि भक्ति मार्ग का संविधान धार्मिक शास्त्र जैसे - कबीर साहेब की वाणी, नानक साहेब की वाणी, संत गरीबदास जी महाराज की वाणी, संत धर्मदास जी साहेब की वाणी, वेद, गीता, पुराण, कुरआन, पवित्र बाईबल आदि हैं। जो भी संत शास्त्रों के अनुसार भक्ति साधना बताता है और भक्त समाज को मार्ग दर्शन करता है तो वह पूर्ण संत है अन्यथा वह भक्त समाज का घोर दुश्मन है जो शास्त्रों के विरूद्ध साधना करवा रहा है। इस अनमोल मानव जन्म के साथ खिलवाड़ कर रहा है। ऐसे गुरु या संत को भगवान के दरबार में घोर नरक में उल्टा लटकाया जाएगा।

उदाहरण के तौर पर जैसे कोई अध्यापक सलेबस (पाठयक्रम) से बाहर की शिक्षा देता है तो वह उन विद्यार्थियों का दुश्मन है।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 15

न, माम्, दुष्कृतिनः, मूढाः, प्रपद्यन्ते, नराधमाः,
मायया, अपहृतज्ञानाः, आसुरम्, भावम्, आश्रिताः ।।

अनुवाद : माया के द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है ऐसे आसुर स्वभावको धारण किये हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करनेवाले मूर्ख मुझको नहीं भजते अर्थात् वे तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की साधना ही करते रहते हैं।

यजुर्वेद अध्याय न. 40 श्लोक न. 10 (संत रामपाल दास जी द्वारा भाषा-भाष्य)

अन्यदेवाहुःसम्भवादन्यदाहुरसम्भवात्, इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।।10।।

हिन्दी अनुवाद :- परमात्मा के बारे में सामान्यत निराकार अर्थात् कभी न जन्मने वाला कहते हैं। दूसरे आकार में अर्थात् जन्म लेकर अवतार रूप में आने वाला कहते हैं। जो टिकाऊ अर्थात् पूर्णज्ञानी अच्छी प्रकार सुनाते हैं उसको इस प्रकार सही तौर पर वही समरूप अर्थात् यथार्थ रूप में भिन्न-भिन्न रूप से प्रत्यक्ष ज्ञान कराते हैं।

गीता अध्याय नं. 4 का श्लोक नं. 34

तत्, विद्धि, प्रणिपातेन, परिप्रश्नेन, सेवया,
उपदेक्ष्यन्ति, ते, ज्ञानम्, ज्ञानिनः, तत्वदर्शिनः ।।

अनुवाद : उसको समझ उन पूर्ण परमात्मा के ज्ञान व समाधान को जानने वाले संतोंको भलीभाँति दण्डवत् प्रणाम करनेसे उनकी सेवा करनेसे और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करनेसे वे परमात्म तत्व को भली भाँति जानने वाले ज्ञानी महात्मा

तुझे उस तत्वज्ञान का उपदेश करेंगे।

2. नशीली वस्तुओं का सेवन निषेध :-- हुक्का, शराब, बीयर, तम्बाखु, बीड़ी, सिगरेट, हुलास सूँघना, गुटखा, मांस, अण्डा, सुल्फा, अफीम, गांजा और अन्य नशीली चीजों का सेवन तो दूर रहा किसी को नशीली वस्तु लाकर भी नहीं देनी है। बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज इन सभी नशीली वस्तुओं को बहुत बुरा बताते हुए अपनी वाणी में कहते हैं कि -

सुरापान मद्य मांसाहारी, गमन करै भोगैं पर नारी। सतर जन्म कटत हैं शीशं, साक्षी साहिब है जगदीशं।।
पर द्वारा स्त्री का खोलै, सतर जन्म अंधा होवै डोलै। मदिरा पीवै कड़वा पानी, सत्तर जन्म श्वान के जानी।।
गरीब, हुक्का हरदम पिवते, लाल मिलावैं धूर। इसमें संशय है नहीं, जन्म पिछले सूर।।1।।
गरीब, सो नारी जारी करै, सुरा पान सौ बार। एक चिलम हुक्का भरै, डुबै काली धार।।2।।
गरीब, सूर गऊ कुं खात है, भक्ति बिहुनें राड। भांग तम्बाखू खा गए, सो चाबत हैं हाड।।3।।
गरीब, भांग तम्बाखू पीव हीं, सुरा पान सैं हेत। गौस्त मट्टी खाय कर, जंगली बनें प्रेत।।4।।
गरीब, पान तम्बाखू चाब हीं, नास नाक में देत। सो तो इरानै गए, ज्यूं भड़भूजे का रेत।।5।।
गरीब, भांग तम्बाखू पीवहीं, गोस्त गला कबाब। मोर मंग कूं भखत हैं, देगें कहां जवाब।।6।।

3. तीर्थ स्थानों पर जाना निषेध :-- किसी प्रकार का कोई व्रत नहीं रखना है। कोई तीर्थ यात्रा नहीं करनी, न कोई गंगा स्नान आदि करना, न किसी अन्य धार्मिक स्थल पर स्नानार्थ व दर्शनार्थ जाना है। किसी मन्दिर व ईष्ट धाम में पूजा व भक्ति के भाव से नहीं जाना कि इस मन्दिर में भगवान है। भगवान कोई पशु तो है नहीं कि उसको पुजारी जी ने मन्दिर में बांध रखा है। भगवान तो कण-कण में व्यापक है। ये सभी साधनाएँ शास्त्रों के विरुद्ध हैं।

जरा विचार करके देखो कि ये सभी तीर्थ स्थल (जैसे जगन्नाथ का मन्दिर, बदरीनाथ, हरिद्वार,मक्का-मदीना, अमर नाथ, वैष्णो देवी, वृन्दावन, मथुरा, बरसाना, अयोध्या राम मन्दिर, काशी धाम, छुड़ानी धाम आदि), मन्दिर, मस्जिद, गुरु द्वारा, चर्च व ईष्ट धाम आदि ऐसे स्थल हैं जहाँ पर कोई संत रहते थे। वे वहाँ पर अपनी भक्ति साधना करके अपना भक्ति रूपी धन जोड़ करके शरीर छोड़ कर अपने ईष्ट देव के लोक में चले गए। तत्पश्चात् उनकी यादगार को प्रमाणित रखने के लिए वहाँ पर किसी ने मन्दिर, किसी ने मस्जिद, किसी ने गुरु द्वारा, किसी ने चर्च या किसी ने धर्मशाला आदि बनवा दी। ताकि उनकी याद बनी रहे और हमारे जैसे तुच्छ प्राणियों को प्रमाण मिलता रहे कि हमें ऐसे ही कर्म करने चाहिए जैसे कि इन महान आत्माओं ने किये हैं। ये सभी धार्मिक स्थल हम सभी को यही संदेश देते हैं कि जैसे भक्ति साधना इन नामी संतों ने की है ऐसी ही आप करो। इसके लिए आप इसी तरीके से साधना करने वाले व बताने वाले संतों को तलाश करो और फिर जैसा वे कहें वैसा ही करो। लेकिन बाद में इन स्थानों की ही पूजा प्रारम्भ हो गई जो कि बिल्कुल व्यर्थ है और शास्त्रों के विरुद्ध है।

ये सभी स्थान तो एक ऐसे स्थान की भांति हैं जहाँ पर किसी हलवाई ने भट्ठी बना कर जलेबी, लड्डु आदि बना कर स्वयं खा कर और अपने सगे-साथियों को

खिला कर चले गए। उसके बाद में उस स्थान पर न तो वह हलवाई है और न ही मिठाई। फिर तो वहाँ केवल भट्ठी ही है। वह न तो हमारे को मिठाई बनाना सिखला सकती है और न ही हमारा पेट (उदर) भर सकती है। अब कोई कहे कि आओ भईया! आपको वह भट्ठी दिखा कर लाऊँगा जहाँ पर एक हलवाई ने मिठाई बनाई थी। चलो चलते हैं। वहाँ जा कर उस भट्ठी को देख लिया और सात चक्कर भी काट आए। क्या आपको मिठाई मिली? क्या आपको मिठाई बनाने की विधि बताने वाला हलवाई मिला? इसके लिए आपने वैसा ही हलवाई खोजना होगा जो सबसे पहले आपको मिठाई खिलाए और बनाने की विधि भी बताए। फिर जैसे वे कहे केवल वही करना, अन्य नहीं।

ठीक इसी प्रकार तीर्थ स्थानों की पूजा न करके वैसे ही संतों की तलाश करो जो शास्त्रों के अनुसार पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब की भक्ति करते व बताते हों। फिर जैसे वे कहे केवल वही करना, अपनी मन मानी नहीं करना।

सामवेद संख्या नं. 1400 उतार्चिक अध्याय नं. 12 खण्ड नं. 3 श्लोक नं. 5(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):-

भद्रा वस्त्रा समन्या३वसानो महान् कविर्निवचनानि शंसन्।
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागविर्देववीतौ।।5।।

हिन्दी :- चतुर व्यक्तियों ने अपने वचनों द्वारा पूर्ण परमात्मा (पूर्ण ब्रह्म) की पूजा का सत्यमार्ग दर्शन न करके अमृत के स्थान पर आन उपासना (जैसे भूत पूजा, पितर पूजा, श्राद्ध निकालना, तीनों गुणों की पूजा (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शंकर) तथा ब्रह्म-काल की पूजा मन्दिर-मसजिद-गुरूद्वारों-चर्चो व तीर्थ-उपवास तक की उपासना) रूपी फोड़े व घाव से निकले मवाद को आदर के साथ आचमन करा रहे होते हैं। उसको परमसुखदायक पूर्ण ब्रह्म कबीर सहशरीर साधारण वेशभूषा में (''वस्त्र का अर्थ है वेशभूषा-संत भाषा में इसे चोला भी कहते हैं। जैसे कोई संत शरीर त्याग जाता है तो कहते हैं कि महात्मा तो चोला छोड़ गए।'') सत्यलोक वाले शरीर के समान दूसरा तेजपुंज का शरीर धारण करके आम व्यक्ति की तरह जीवन जी कर कुछ दिन संसार में रह कर अपनी शब्द-साखियों के माध्यम से सत्यज्ञान को वर्णन करके पूर्ण परमात्मा के छुपे हुए वास्तविक सत्यज्ञान तथा भक्ति को जाग्रत करते हैं।

गीता अध्याय नं. 16 का श्लोक नं. 23

यः, शास्त्रविधिम्, उत्सृज्य, वर्तते, कामकारतः, न, सः,
सिद्धिम्, अवाप्नोति, न, सुखम्, न, पराम्, गतिम्।।

अनुवाद : जो पुरुष शास्त्र विधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है वह न सिद्धि को प्राप्त होता है न परम गति को और न सुख को ही।

गीता अध्याय नं. 6 का श्लोक नं. 16

न, अति, अश्र्नतः, तु, योगः, अस्ति, न, च, एकान्तम्,
अनश्र्नतः, न, च, अति, स्वप्नशीलस्य, जाग्रतः, न, एव, च, अर्जुन।।

अनुवाद : हे अर्जुन! यह योग अर्थात् भक्ति न तो बहुत खाने वाले का और न बिल्कुल न खाने वाले का न एकान्त स्थान पर आसन लगाकर साधना करने वाले का तथा न बहुत शयन करने के स्वभाव वाले का और न सदा जागने वाले का ही सिद्ध होता है।

पूजैं देई धाम को, शीश हलावै जो। गरीबदास साची कहै, हद काफिर है सो।।
कबीर, गंगा काठै घर करै, पीवै निर्मल नीर। मुक्ति नहीं हरि नाम बिन, सतगुरु कहैं कबीर।।
कबीर, तीर्थ कर–कर जग मूवा, उडै पानी न्हाय। राम ही नाम ना जपा, काल घसीटे जाय।।
गरीब, पीतल ही का थाल है, पीतल का लोटा। जड़ मूरत को पूजतें, आवैगा टोटा।।
गरीब, पीतल चमच्चा पूजिये, जो थाल परोसै। जड़ मूरत किस काम की, मति रहो भरोसै।।
कबीर, पर्वत पर्वत मैं फिर्या, कारण अपने राम। राम सरीखे जन मिले, जिन सारे सब काम।।

4. पितर पूजा निषेध :-- किसी प्रकार की पितर पूजा, श्राद्ध निकालना आदि कुछ नहीं करना है। भगवान श्री कृष्ण जी ने भी इन पितरों की व भूतों की पूजा करने से साफ मना किया है। गीता जी के अध्याय नं. 9 के श्लोक नं. 25 में कहा है कि -

यान्ति, देवव्रताः, देवान्, पितृऋन्, यान्ति, पितृव्रताः।
भूतानि, यान्ति, भूतेज्याः, मद्याजिनः, अपि, माम्।

अनुवाद : देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं पितरों को पूजने वाले पितरों को प्राप्त होते हैं भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं और मतानुसार पूजन करने वाले भक्त मुझसे ही लाभान्वित होते हैं।

बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज और कबीर साहिब जी महाराज भी कहते हैं

''गरीब, भूत रमै सो भूत है, देव रमै सो देव। राम रमै सो राम है, सुनो सकल सुर भेव।।''

इसलिए उस (पूर्ण परमात्मा) परमेश्वर की भक्ति करो जिससे पूर्ण मुक्ति होवे। वह परमात्मा पूर्ण ब्रह्म सतपुरुष (सत कबीर) है। इसी का प्रमाण गीता जी के अध्याय नं. 18 के श्लोक नं. 46 में है।

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।।46।।

अनुवाद : जिस परमेश्वरसे सम्पूर्ण प्राणियोंकी उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत् व्याप्त है, उस परमेश्वरकी अपने स्वाभाविक कर्मोंद्वारा पूजा करके मनुष्य परमसिद्धिको प्राप्त हो जाता है।।63।।

गीता अध्याय नं. 18 का श्लोक नं. 62 :--

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।।62।।

अनुवाद : हे भरतवंशोभ्द्रव अर्जुन! तू सर्वभावसे उस ईश्वरकी ही शरणमें चला जा। उसकी कृपासे तू परम शान्ति (संसारसे सर्वथा उपरति) को और अविनाशी परमपदको प्राप्त हो जायगा।

सर्वभाव का तात्पर्य है कि कोई अन्य पूजा न करके मन-कर्म-वचन से एक परमेश्वर में आस्था रखना।

गीता अध्याय नं. 8 का श्लोक नं. 22 :--

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया।
यस्यान्तः स्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम्।।22।।

अनुवाद : हे पृथानन्दन अर्जुन! सम्पूर्ण प्राणी जिसके अन्तर्गत हैं और जिससे यह सम्पूर्ण संसार व्याप्त है, वह परम पुरुष परमात्मा तो अनन्यभक्तिसे प्राप्त होनेयोग्य है।

अनन्य भक्ति का तात्पर्य है एक परमेश्वर (पूर्ण ब्रह्म) की भक्ति करना, दूसरे देवी-देवताओं अर्थात् तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की नहीं। गीता जी के अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1 से 4 :--

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्,
छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित्।।1।।

अनुवाद : ऊपर को जड़ वाला नीचे को शाखा वाला अविनाशी विस्तृत संसार रूपी पीपल का वृक्ष है, जिसके छोटे-छोटे हिस्से या टहनियाँ, पत्ते कहे हैं, उस संसार रूप वृक्ष को जो इस प्रकार जानता है। वह पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 2

अधः, च, ऊर्ध्वम्, प्रसृताः, तस्य, शाखाः, गुणप्रवृद्धाः, विषयप्रवालाः,
अधः, च, मूलानि, अनुसन्ततानि, कर्मानुबन्धीनि, मनुष्यलोके।।2।।

अनुवाद : उस वृक्षकी नीचे और ऊपर तीनों गुणों ब्रह्मा-रजगुण, विष्णु-सतगुण, शिव-तमगुण रूपी फैली हुई विकार काम क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार रूपी कोपल डाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव ही जीवको कर्मोमें बाँधने की भी जड़ें अर्थात् मूल कारण हैं तथा मनुष्यलोक, स्वर्ग, नरक लोक पृथ्वी लोक में नीचे (चौरासी लाख जूनियों में) ऊपर व्यस्थित किए हुए हैं।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 3

न, रूपम्, अस्य, इह, तथा, उपलभ्यते, न, अन्तः, न, च, आदिः, न, च,
सम्प्रतिष्ठा, अश्वत्थम्, एनम्, सुविरूढमूलम्, असङ्गशस्त्रेण, दृढेन, छित्वा।।3।।

अनुवाद : इस रचना का न शुरूवात तथा न अन्त है न वैसा स्वरूप पाया जाता है तथा यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी नहीं है क्योंकि सर्वब्रह्मण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति का मुझे भी ज्ञान नहीं है इस अच्छी तरह स्थाई स्थिति वाला मजबूत स्वरूपवाले निर्लेप तत्वज्ञान रूपी दृढ़ शस्त्र से अर्थात् निर्मल तत्वज्ञान के द्वारा काटकर अर्थात् निरंजन की भक्ति को क्षणिक जानकर। (3)

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 4

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्ति प्रसृता पुराणी।।4।।

अनुवाद : उसके बाद उस परमपद परमात्मा की खोज करनी चाहिये।

जिसको प्राप्त हुए मनुष्य फिर लौटकर संसारमें नहीं आते और जिससे अनादिकालसे चली आनेवाली यह संष्टि विस्तारको प्राप्त हुई है, उस आदि पुरुष परमात्माके ही मैं शरण हूँ।

इस प्रकार स्वयं भगवान श्री कष्ण ने इन्द्र जो देवी-देवताओं का राजा है कि पूजा भी छुड़वा कर उस परमात्मा की भक्ति करने के लिए ही प्रेरणा दी थी। जिस कारण उन्होंने गोवर्धन पर्वत को उठाकर इन्द्र के कोप से ब्रजवासियों की रक्षा की।

गरीब, इन्द्र चढ़ा ब्रिज डुबोवन, भीगा भीत न लेव।
इन्द्र कढाई होत जगत में, पूजा खा गए देव।।
कबीर, इस संसार को, समझाऊँ कै बार।
पूँछ जो पकड़ै भेढ की, उतरा चाहै पार।।

5. गुरु आज्ञा का पालन :-- गुरुदेव जी की आज्ञा के बिना घर में किसी भी प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान नहीं करवाना है। जैसे बन्दी छोड़ अपनी वाणी में कहते हैं कि :- "गुरु बिन यज्ञ हवन जो करहीं, मिथ्या जावे कबहु नहीं फलहीं।"

कबीर, गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दोनों निष्फल हैं, पूछो वेद पुराण।।

6. माता मसानी पूजना निषेध :-- आपने खेत में बनी मंढी या किसी खेड़े आदि की या किसी अन्य देवता की समाध नहीं पूजनी है। समाध चाहे किसी की भी हो बिल्कुल नहीं पूजनी है। अन्य कोई उपासना नहीं करनी है। यहाँ तक कि तीनों गुणों (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) की पूजा भी नहीं करनी है। केवल गुरु जी के बताए अनुसार ही करना है।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 15

न, माम्, दुष्कतिनः, मूढाः, प्रपद्यन्ते, नराधमाः,
मायया, अपहृतज्ञानाः, आसुरम्, भावम्, आश्रिताः ।।

अनुवाद : मायाके द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है ऐसे आसुर स्वभावको धारण किये हुए मनुष्य नीच दुषित कर्म करनेवाले मूर्ख मुझको नहीं भजते अर्थात् वे तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की साधना ही करते रहते हैं।

कबीर, माई मसानी शेढ शीतला, भैरव भूत हनुमंत। परमात्मा उनसे दूर है, जो इनको पूजंत।।
कबीर, सौ वर्ष तो गुरु की सेवा, एक दिन आन उपासी। वो अपराधी आत्मा, परै काल की फांसी।।
गुरु को तजै भजै जो आना। ता पसुवा को फोकट ज्ञाना।।

7. संकट मोचन कबीर साहेब हैं :-- कर्म कष्ट (संकट) होने पर कोई अन्य ईष्ट देवता की या माता मसानी आदि की पूजा कभी नहीं करनी है। न किसी प्रकार की बुझा पड़वानी है। केवल बन्दी छोड़ कबीर साहिब को पूजना है जो सभी दुःखों को हरने वाले संकट मोचन हैं।

सामवेद संख्या न. 822 उतार्चिक अध्याय 3 खण्ड न. 5 श्लोक न. 8 (संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):-

मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नभिर्यतः परि कोशां असिष्यदत्।

त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरन्निन्द्रस्य वायुं सख्याय वर्धयन्।।8।।

हिन्दी :-सनातन अर्थात् अविनाशी कबीर परमेश्वर हृदय से चाहने वाले श्रद्धा से भक्ति करने वाले भक्तात्मा को तीन मन्त्र उपेदश देकर पवित्र करके जन्म व मृत्यु से रहित करता है तथा उसके प्राण अर्थात् जीवन-स्वांसों को जो संस्कारवश अपने मित्र अर्थात् भक्त के गिनती के डाले हुए होते हैं को अपने भण्डार से पूर्ण रूप से बढ़ाता है। जिस कारण से परमेश्वर के वास्तविक आनन्द को अपने आशीर्वाद प्रसाद से प्राप्त करवाता है।

कबीर, देवी देव ठाढे भये, हमको ठौर बताओ। जो मुझ(कबीर) को पूजैं नहीं, उनको लूटो खाओ।।
कबीर, काल जो पीसै पीसना, जोरा है पनिहार। ये दो असल मजूर हैं, सतगुरु के दरबार।।

8. अनावश्यक दान निषेध :- कहीं पर और किसी को दान रूप में कुछ नहीं देना है। न पैसे, न बिना सिला हुआ कपड़ा आदि कुछ नहीं देना है। यदि कोई दान रूप में कुछ मांगने आए तो उसे खाना खिला दो, चाय, दूध, लस्सी, पानी आदि पिला दो परंतु देना कुछ भी नहीं है। न जाने वह भिक्षुक उस पैसे का क्या दुरूपयोग करे। जैसे एक व्यक्ति ने किसी भिखारी को उसकी झूठी कहानी जिसमें वह बता रहा था कि मेरे बच्चे ईलाज बिना तड़फ रहे हैं। कुछ पैसे देने की कृपा करें को सुनकर भावनावस होकर 100 रु दे दिए। वह भिखारी पहले पाव शराब पीता था उस दिन उसने आधा बोतल शराब पीया और अपनी पत्नी को पीट डाला। उसकी पत्नी ने बच्चों सहित आत्म हत्या कर ली। आप द्वारा किया हुआ वह दान उस परिवार के नाश का कारण बना। यदि आप चाहते हो कि ऐसे दुःखी व्यक्ति की मदद करें तो उसके बच्चों को डॉक्टर से दवाई दिलवा दें, पैसा न दें।

कबीर, गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान। गुरु बिन दोनों निष्फल हैं, पूछो वेद पुरान।।

9. झूठा खाना निषेध :-- ऐसे व्यक्ति का झूठा नहीं खाना है जो शराब, मांस, तम्बाखु, अण्डा, बीयर, अफीम, गांजा आदि का सेवन करता हो।

10. सत्यलोक गमन (देहान्त) के बाद क्रिया-कर्म निषेध :- यदि परिवार में किसी की मौत हो जाती है, चिता में अग्नि कोई भी दे सकता है, घर का या अन्य तथा अग्नि प्रज्वलित करते समय मंगलाचरण बोल दें। तो उसके फूल आदि कुछ नहीं उठाने हैं, यदि उस स्थान को साफ करना अनिवार्य है तो उन अस्थियों को उठाकर स्वयं ही किसी स्थान पर चलते पानी में बहा दें। उस समय मंगलाचरण उच्चारण कर दें। न पिंड आदि भरवाने हैं, न तेराहमी, छः माही, बरसोधी, पिंड भी नहीं भरवाने हैं तथा श्राद्ध आदि कुछ नहीं करना है। किसी भी अन्य व्यक्ति से हवन आदि नहीं करवाना है। सम्बन्धी तथा रिश्तेदारों आदि जो शोक व्यक्त करने आए उनके लिए कोई भी एक दिन नियुक्त करें। उस दिन प्रतिदिन करने वाला नित्य नियम करें, ज्योति जागृत करें, फिर सर्व को खाना खिलाऐं। यदि आपने उसके (मरने वाले के) नाम पर कुछ धर्म करना है तो अपने गुरुदेव जी की आज्ञा ले कर बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की अमृतमयी वाणी का अखण्ड पाठ करवाना चाहिए। यदि पाठ करने की आज्ञा न मिले तो परिवार के उपदेशी भक्त चार दिन या सात दिन घर

में एक अखण्ड जोत देशी घी की जलाऐ तथा ब्रह्म गायत्री मन्त्र प्रतिदिन चार बार करें तथा तीन या एक बार के मन्त्र का दान संकल्प सतलोक वासी को करें। जैसा उचित समझे एक, दो, तीन तक मन्त्र के जाप का फल उसे दान करें। प्रतिदिन की तरह ज्योति व आरती, नाम स्मरण करते रहना है, यह याद रखते हुए कि:-

कबीर, साथी हमारे चले गए, हम भी चालन हार। कोए कागज में बाकी रह रही, ताते लाग रही वार।।
कबीर, देह पड़ी तो क्या हुआ, झूठा सभी पटीट। पक्षी उड़या आकाश कूं, चलता कर गया बीट।।

''कर्म काण्ड के विषय में सत्य कथा''

मेरे (संत रामपाल दास के) पूज्य गुरूदेव स्वामी राम देवानन्द जी महाराज को सोलह वर्ष की आयु में किसी महात्मा के सत्संग सुनने से वैराग हो गया था। एक दिन वे खेतों में गये हुए थे। पास में ही वन था। वे वन में जाकर किसी मृत जानवर की हड्डियों के पास अपने कपड़े फाड़कर फैंक जाते हैं और स्वयं महात्मा जी के साथ चले जाते हैं।

जब उनकी खोज हुई तो उनके घर वालों ने देखा कि वन में हड्डियों के पास फटे हुए कपड़े पड़े हैं तो उन्होंने सोचा कि किसी जंगली जानवर ने उन्हें खा लिया है। उन कपड़ों तथा हड्डियों को उठा कर घर पर ले आते हैं और अंतिम संस्कार कर देते हैं। उसके बाद तेरहवीं तथा छःमाही करते हैं और फिर श्राद्ध शुरू हो जाते हैं।

जब मेरे पूज्य गुरूदेव बहुत वृद्ध हो चुके थे तो वे एक बार घर पर गये। तब उन घर वालों को यह पता चला कि ये जीवित हैं और घर छोड़कर चले गये थे। उन्होंने बताया कि जब ये घर छोड़कर चले गये थे तो इनकी खोज हुई। वन में इनके कपड़े मिले। उनके पास कुछ हड्डियाँ पड़ी थी। तो हमने सोचा कि किसी जंगली जानवर ने इनको खा लिया है और उन कपड़ों तथा हड्डियों को घर पर लाकर अंतिम संस्कार कर दिया।

फिर मैंने (संत रामपाल दास ने) मेरे पूज्य गुरूदेव के छोटे भाई की पत्नी से पूछा कि जब हमारे पूज्य गुरूदेव घर छोड़कर चले गये थे तो तुमने पीछे से क्या किया? उसने बताया कि जब मैं ब्याही आई थी तो उस समय मुझे इनके श्राद्ध निकलते मिले थे। मैं अपने हाथों से इनके लगभग 70 श्राद्ध निकाल चुकी हूँ। उसने बताया कि जब घर में कोई नुकसान हो जाता था जैसे कि भैंस का दूध न देना, थन में खराबी आ जाना, कोई और नुकसान हो जाना आदि तो हम स्यानों के पास बूझा पड़वाने के लिए जाते थे तो वे कहते थे कि तुम्हारें घर में कोई निःसन्तान (अनमैरिड) मरा हुआ है। तुम्हारे को वह दुःखी कर रहा है। फिर हम उसके कपड़े आदि देते हैं।

तब मैंने कहा कि ये तो दुनिया का उद्धार कर रहे हैं। ये किसको दुःख दे रहे थे। ये तो अब सुख दाता हैं। फिर मैंने (सन्त रामपाल जी महाराज ने) उस वृद्धा से कहा कि अब तो ये आपके सामने हैं, अब तो ये व्यर्थ की साधना जैसे श्राद्ध निकालने बंद कर दो। तब उसने कहा कि यह तो पुरानी रिवाज है, यह कैसे छोड़ दूं? अर्थात् हम अपनी पुरानी रिवाजों में इतने लीन हो चुके हैं कि प्रत्यक्ष प्रमाण होने पर कि वह

गलत कर रहे हैं छोड़ नहीं सकते। इससे प्रमाणित होता है कि श्राद्ध निकालना, पितर पूजा करना आदि सब व्यर्थ हैं।

11. बच्चे के जन्म पर शास्त्र विरूद्ध पूजा निषेध :-- बच्चे के जन्म पर कोई छटी आदि नहीं मनानी है। सुतक के कारण प्रतिदिन की तरह करने वाली पूजा, भक्ति, आरती, ज्योति जगाना आदि बंद नहीं करनी है।

इसी संदर्भ में एक संक्षिप्त कथा बताता हूँ कि एक व्यक्ति की शादी के दस वर्ष पश्चात् पुत्र हुआ था। पुत्र की खुशी में उसने बहुत ही खुशी मनाई। बीस-पच्चीस गाँवों को भोजन के लिए आमन्त्रित किया और बहुत ही गाना-बजाना हुआ अर्थात् काफी पैसा खर्च किया। फिर एक वर्ष के बाद उस पुत्र का देहान्त हो जाता है। फिर वही परिवार टक्कर मार कर रोता है और अपने दुर्भाग्य को कोसता है। इसलिए कबीर साहेब हमें बताते हैं कि :-

कबीर, बेटा जाया खुशी हुई, बहुत बजाये थाल। आना जाना लग रहा, ज्यों कीड़ी का नाल।।
कबीर, पतझड़ आवत देख कर, बन रोवै मन माहिं। ऊंची डाली पात थे, अब पीले हो हो जाहिं।।
कबीर, पात झड़ंता यूं कहै, सुन भई तरूवर राय। अब के बिछुड़े नहीं मिला, न जाने कहां गिरेंगे जाय।
कबीर, तरूवर कहता पात से, सुनों पात एक बात। यहाँ की याहे रीति है, एक आवत एक जात।।

12. देई धाम पर बाल उतरवाने जाना निषेध :-- बच्चे के किसी देई धाम पर बाल उतरवाने नहीं जाना है। जब देखो बाल बड़े हो गए, कटवा कर फैंक दो। एक मन्दिर में देखा कि श्रद्धालु भक्त अपने लड़के या लड़कियों के बाल उतरवाने आए। वहाँ पर उपस्थित नाई ने बाहर के रेट से तीन गुना पैसे लीये और एक कैंची भर बाल काट कर मात-पिता को दे दिए। उन्होंने श्रद्धा से मन्दिर में चढ़ाए। पुजारी ने एक थैले में डाल लिए। रात्री को उठा कर दूर एकांत स्थान पर फैंक दिए। यह केवल नाटक बाजी है। क्यों न पहले की तरह स्वाभाविक तरीके से बाल उतरवाते रहें तथा बाहर डाल दें। परमात्मा नाम से प्रसन्न होता है पाखण्ड से नहीं।

13. नाम जाप से सुख :-- नाम (उपदेश) को केवल दुःख निवारण की दृष्टि कोण से नहीं लेना चाहिए बल्कि आत्म कल्याण के लिए लेना चाहिए। फिर सुमिरण से सर्व सुख अपने आप आ जाते हैं।

''कबीर, सुमिरण से सुख होत है, सुमिरण से दुःख जाए।
कहैं कबीर सुमिरण किए, सांई माहिं समाय।।''

14. व्याभीचार निषेध :-- पराई स्त्री को माँ-बेटी-बहन की दृष्टि से देखना चाहिए। व्याभीचार महापाप है। जैसे :--

गरीब, पर द्वारा स्त्री का खोलै। सत्तर जन्म अन्धा हो डोलै।।सुरापान मद्य मांसाहारी। गवन करें भोगैं पर नारी।। सत्तर जन्म कटत हैं शीशं। साक्षी साहिब है जगदीशं।। पर नारी ना परसियों, मानो वचन हमार। भवन चर्तुदश तास सिर, त्रिलोकी का भार।। पर नारी ना परसियो, सुनो शब्द सलतंत। धर्मराय के खंभ से, अर्धमुखी लटकंत।।

15. निन्दा सुनना व करना निषेध :-- अपने गुरु की निंदा भूल कर भी न करें और न ही सुनें। सुनने से अभिप्राय है यदि कोई आपके गुरु जी के बारे में मिथ्या बातें

करें तो आपने लड़ना नहीं है बल्कि यह समझना चाहिए कि यह बिना विचारे बोल रहा है अर्थात् झूठ कह रहा है।

गुरु की निंदा सुनै जो काना। ताको निश्चय नरक निदाना।।
अपने मुख निंदा जो करहीं। शुकर श्वान गर्भ में परहीं।।

निन्दा तो किसी की भी नहीं करनी है और न ही सुननी है। चाहे वह आम व्यक्ति ही क्यों न हो। कबीर साहेब कहते हैं कि -

"तिनका कबहू न निन्दीये, जो पांव तले हो। कबहु उठ आखिन पड़े, पीर घनेरी हो।।"

16. गुरु दर्श की महिमा :-- सतसंग में समय मिलते ही आने की कोशिश करे तथा सतसंग में नखरे (मान-बड़ाई) करने नहीं आवे। अपितु अपने आपको एक बीमार समझ कर आवे। जैसे बीमार व्यक्ति चाहे कितने ही पैसे वाला हो, चाहे उच्च पदवी वाला हो जब हस्पताल में जाता है तो उस समय उसका उद्देश्य केवल रोग मुक्त होना होता है। जहाँ डॉक्टर लेटने को कहे लेट जाता है, बैठने को कहे बैठ जाता है, बाहर जाने का निर्देश मिले बाहर चला जाता है। फिर अन्दर आने के लिए आवाज आए चुपके से अन्दर आ जाता है। ठीक इसी प्रकार यदि आप सतसंग में आते हो तो आपको सतसंग में आने का लाभ मिलेगा अन्यथा आपका आना निष्फल है। सतसंग में जहाँ बैठने को मिल जाए वहीं बैठ जाए, जो खाने को मिल जाए उसे परमात्मा कबीर साहिब की रजा से प्रसाद समझ कर खा कर प्रसन्न चित्त रहे।

कबीर, संत मिलन कूं चालिए, तज माया अभिमान। जो—जो कदम आगे रखे, वो ही यज्ञ समान।।
कबीर, संत मिलन कूं जाईए, दिन में कई—कई बार। आसोज के मेह ज्यों, घना करे उपकार।।
कबीर, दर्शन साधु का, परमात्मा आवै याद। लेखे में वोहे घड़ी, बाकी के दिन बाद।।
कबीर, दर्शन साधु का, मुख पर बसै सुहाग। दर्श उन्हीं को होत हैं, जिनके पूर्ण भाग।।

17. गुरु महिमा :-- यदि कहीं पर पाठ या सतसंग चल रहा हो या वैसे गुरु जी के दर्शनार्थ जाते हों तो सर्व प्रथम गुरु जी को दण्डवत्(लम्बा लेट कर) प्रणाम करना चाहिए बाद में सत ग्रन्थ साहिब व तसवीरें जैसे साहिब कबीर की मूर्ति - गरीबदास जी की व स्वामी राम देवानन्द जी व गुरु जी की मूर्ति को प्रणाम करें जिससे सिर्फ भावना बनी रहेगी। मूर्ति पूजा नहीं करनी है। केवल प्रणाम करना पूजा में नहीं आता यह तो भक्त की श्रद्धा को बनाए रखने में सहयोग देता है। पूजा तो वक्त गुरु व नाम मन्त्र की करनी है जो पार लगाएगा।

कबीर, गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागुं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविन्द दियो मिलाय।।

कबीर, गुरु बड़े हैं गोविन्द से, मन में देख विचार। हरि सुमरे सो रह गए, गुरु भजे होय पार।।
कबीर, हरि के रूठतां, गुरु की शरण में जाय।कबीर गुरु जै रूठजां, हरि नहीं होत सहाय।।

कबीर, सात समुन्द्र की मसि करूं, लेखनि करूं बनिराय।
धरती का कागज करूं, तो गुरु गुन लिखा न जाय।।

18. मॉंस भक्षण निषेध :--अण्डा व मांस भक्षण व जीव हिंसा नहीं करनी है। यह महापाप होता है। जैसे साहेब कबीर जी महाराज व गरीबदास जी महाराज ने बताया है:-

कबीर, जीव हने हिंसा करे, प्रकट पाप सिर होय। निगम पुनि ऐसे पाप तें, भिस्त गया नहिं कोय।।1।।
कबीर, तिलभर मछली खायके, कोटि गऊ दे दान। काशी करौंत ले मरे, तो भी नरक निदान।।2।।
कबीर, बकरी पाती खात है, ताकी काढी खाल। जो बकरीको खात है, तिनका कौन हवाल।।3।।
कबीर, गला काटि कलमा भरे, कीया कहै हलाल। साहब लेखा मांगसी, तब होसी कौन हवाल।।4।।
कबीर, दिनको रोजा रहत हैं, रात हनत हैं गाय। यह खून वह वंदगी, कहुं क्यों खुशी खुदाय।।5।।
कबीर, कबिरा तेई पीर हैं, जो जानै पर पीर। जो पर पीर न जानि है, सो काफिर बेपीर।।6।।
कबीर, खूब खाना है खीचडी, मांहीं परी टुक लौन। मांस पराया खायकै, गला कटावे कौन।।7।।
कबीर, मुसलमान मारैं करदसो, हिंदू मारैं तरवार। कहे कबीर दोनूं मिलि, जैहैं यमके द्वार।।8।।
कबीर, मांस अहारी मानव, प्रत्यक्ष राक्षस जानि। ताकी संगति मति करै, होइ भक्ति में हानि।।9।।
कबीर, मांस खांय ते ढेड़ सब, मद पीवैं सो नीच। कुलकी दुरमति पर हरै, राम कहै सो ऊंच।।10।।
कबीर, मांस मछलिया खात हैं, सुरापान से हेत। ते नर नरकै जाहिंगे, माता पिता समेत।।11।।
गरीब, जीव हिंसा जो करते हैं, या आगे क्या पाप। कंटक जुनी जिहान में, सिंह भेड़िया और सांप।।
झोटे बकरे मुरगे ताई। लेखा सब ही लेत गुसाईं।। मंग मोर मारे महमंता। अचरा चर हैं जीव अनंता।।

जिह्वा स्वाद हिते प्राना। नीमा नाश गया हम जाना।।
तीतर लवा बुटेरी चिड़िया। खूनी मारे बड़े अगड़िया।।
अदले बदले लेखे लेखा। समझ देख सुन ज्ञान विवेका।।
गरीब, शब्द हमारा मानियो, और सुनते हो नर नारि।
जीव दया बिन कुफर है, चले जमाना हारि।।

अनजाने में हुई हिंसा का पाप नहीं लगता। बन्दी छोड़ कबीर साहिब कहते हैं :

''इच्छा कर मारै नहीं, बिन इच्छा मर जाए। कहैं कबीर तास का, पाप नहीं लगाए।।''

19. गुरु द्रोही का सम्पर्क निषेध :-- यदि कोई भक्त गुरु जी से द्रोह (गुरु जी से विमुख हो जाता है) करता है वह महापाप का भागी हो जाता है। यदि किसी को मार्ग अच्छा न लगे तो अपना गुरु बदल सकता है। यदि वह पूर्व गुरु के साथ बैर व निन्दा करता है तो वह गुरु द्रोही कहलाता है। ऐसे व्यक्ति से भक्ति चर्चा करने में उपदेशी को दोष लगता है। उसकी भक्ति समाप्त हो जाती है।

गरीब, गुरु द्रोही की पैड़ पर, जे पग आवै बीर। चौरासी निश्चय पड़ै, सतगुरु कहैं कबीर।।
कबीर, जान बुझ साची तजै, करै झूठे से नेह। जाकी संगत हे प्रभु, स्वपन में भी ना देह।।

अर्थात् गुरु द्रोही के पास जाने वाला भक्ति रहित होकर नरक व लख चौरासी जूनियों में चला जाएगा।

20. जुआ निषेध :-- जुआ-ताश कभी नहीं खेलना चाहिए।

कबीर, मांस भखै और मद पिये, धन वेश्या सों खाय। जूआ खेलि चोरी करै, अंत समूला जाय।।

21. नाच-गान निषेध :-- किसी भी प्रकार के खुशी के अवसर पर नाचना व अश्लील गाने गाना भक्ति भाव के विरूद्ध है। जैसे एक समय एक विधवा बहन किसी खुशी के अवसर पर अपने रिश्तेदार के घर पर गई हुई थी। सभी खुशी के साथ नाच-गा रहे थे परंतु वह बहन एक तरफ बैठ कर प्रभु चिंतन में लगी हुई थी। फिर उनके रिश्तेदारों ने उससे पूछा कि आप ऐसे क्यों निराश बैठे हो? आप भी हमारे की

तरह नाचों, गाओ और खुशी मनाओ। इस पर वह बहन कहती है कि किस की खुशी मनाऊँ? मुझ विधवा का एक ही पुत्र था वह भी भगवान को प्यारा हो चुका है। अब क्या खुशी है मेरे लिए? ठीक इसी प्रकार इस काल के लोक में प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति है। यहाँ पर गुरु नानक देव जी की वाणी है कि :-

ना जाने काल की कर डारै, किस विधि ढल पासा वे।
जिन्हादे सिर ते मौत खुड़गदी, उन्हानूं केड़ा हांसा वे।।
साध मिलें साडी शादी (खुशी) होंदी, बिछड़ दां दिल गिरि (दुःख) वे।
अखदे नानक सुनो जिहाना, मुश्किल हाल फकीरी वे।।

कबीर साहेब जी महाराज भी कहते हैं कि :--

कबीर, झूठे सुख को सुख कहै, मान रहा मन मोद।
सकल चबीना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद।।
कबीर, बेटा जाया खुशी हई, बहुत बजाये थाल।
आवण जाणा लग रहा, ज्यों कीड़ी का नाल।।

विशेष :- स्त्री तथा पुरूष दोनों ही परमात्मा प्राप्ति के अधिकारी हैं। स्त्रियों को मासिक धर्म (Maínces) के दिनों में भी अपनी दैनिक पूजा, ज्योति लगाना आदि बन्द नहीं करना चाहिए, न ही किसी के देहान्त या जन्म पर भी दैनिक पूजा कर्म बन्द नहीं करना है।

नोट :-- जो भक्तजन इन इक्कीस सुत्रीय आदेशों का पालन नहीं करेगा उसका नाम समाप्त हो जाएगा। यदि अनजाने में कोई गलती हो भी जाती है तो वह माफ हो जाती है और यदि जान बुझकर कोई गलती की है तो वह भक्त नाम रहित हो जाता है। इसका समाधान यही है कि गुरुदेव जी से क्षमा याचना करके दोबारा नाम उपदेश लेना होगा।

लेखक
संत रामपाल दास महाराज
सतलोक आश्रम, बरवाला
जिला-हिसार, हरियाणा (भारत)

''शास्त्रानुकूल भक्ति साधना से हुए भक्तों को लाभ''

''गुर्दे ठीक करना व शैतान को इंसान बनाना''

मैं भक्त जगदीश पुत्र श्री प्रभुराम, गाँव-पंजाब खोड़, दिल्ली-81 । डी. टी. सी. (दिल्ली ट्रांस्पोर्ट कॉर्पोरेशन) में मकैनिक हूँ। मुझे शराब ने राक्षस वत्ति का इन्सान बना दिया था। शराब पीना, मुर्गे खाना, सिगरेट पीना, हुक्का पीना।

मैं नौकरी से शाम को लगभग 7 या 8 बजे आता था। कई बार घर आने में शराब ज्यादा पीने पर 9 या 10 भी बज जाते थे। शराब में पागल हुए एक बार इधर एक बार उधर लड़खड़ाते हुए पैरों से घर में घुसता था। आते ही पत्नी व बच्चों को पीटना शुरु कर देना, हर रोज घर में कहर होता था। जिन बच्चों को प्यार के साथ अपनी छाती से लगाना चाहिए था वे मासूम बच्चे मुझको देखकर चारपाई के नीचे घुस जाते थे। बच्चे अपने पिता जी के घर आने की राह देखते हैं कि पापा जी आएगें, हमारे लिए खाने की चीजें लाएगें। परन्तु मैं खाने की चीजों की बजाय शराब में पागल हुए लाल आँखों से उनको मारने लग जाता था।

दूसरी तरफ मेरी धर्मपत्नी सुमित्रा देवी भी अपने दुःखी जीवन के साथ खतरनाक बीमारी से जूझती हुई स्वांस पूरे कर रही थी। उसके दोनों गुर्दे खराब हो चुके थे। डॉक्टरों ने कह दिया था कि दवाई खाते रहो। लेकिन छः महीने से ज्यादा यह जीवित नहीं रह सकती। ऑल इंडिया मैडीकल और डॉ. राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल दिल्ली से भी यह रिपोर्ट मिली कि गुर्दे खराब हो चुके हैं और यह छः महीने से ज्यादा जीवित नहीं रह सकती और साथ में दवाई भी अंत समय तक खाते रहना होगा। उन मासूम बच्चों का क्या हाल होगा जिनका पिता शराब पीता हो, माँ मत्युशैय्या पर हो। कोई वजन का कार्य नहीं कर सकती। तो उन बच्चों को जब यह पता चला कि तुम्हारी मम्मी (माता जी) भी छः महीने से ज्यादा जीवित नहीं रहेगी तो उन बच्चों की आँखों से आंसु बहते रहते थे। एक तो पिता जी शराबी और दूसरी तरफ हमारी माता जी जानलेवा बीमारी से पीड़ित, हमारा क्या होगा? तीन लड़के तथा एक लड़की अपनी माता जी के पास गिरकर रोने लगे तथा कहा कि हे भगवान हम सब को भी हमारी माता जी के साथ ही अपने पास बुला लेना। यहाँ किसके सहारे जीयेंगे ?

परमात्मा ने उन बच्चों की भी पुकार सुनी और हमारे भी शुभ कर्म उदय हुए कि हमारे पड़ोस में ही भक्तमति निहाली देवी ने अपने गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज की आज्ञानुसार 30-31-1 जनवरी 1997 को सतगुरु गरीबदास जी महाराज की अमतमयी वाणी तीन दिन का अखण्ड पाठ अपने घर करवाया। जिसमें संत रामपाल जी महाराज ने 31 दिसम्बर 1996 को रात्री में 9 से 11 बजे तक सत्संग किया। मेरी धर्मपत्नी सुमित्रा देवी भी पड़ोस में सत्संग सुनने के लिए चली गई। थोड़ी देर बाद मैं (जगदीश) भी अपनी नौकरी से घर आ गया। घर आने पर बच्चों से पता चला कि हमारी माता जी पड़ोस में माई निहाली देवी के घर सत्संग सुनने के लिए गई है। यह सुनकर मैं बहुत क्रोधित हुआ और मैंने कहा कि कहाँ पाखंडियों

के पास चली गई? मैं अभी उसको पीटते हुए घर लाता हूँ। यह विचार कर मैं भक्तमति निहाली देवी के घर चला गया। मैंने शराब पी रखी थी। जब मैं निहाली माई के घर पहुँचा तो संत रामपाल जी महाराज सत्संग कर रहे थे। बहुत-से भक्तजन सत्संग सुन रहे थे। उन सभी को देखकर मैं कुछ नहीं बोला और चुपचाप सबसे पीछे बैठ गया। मैंने सत्संग सुना। सत्संग में महाराज जी ने बताया कि :-

शराब पीवैं कड़वा पानी, सत्तर जन्म श्वान के जानी।

गरीब, सो नारी जारी करैं, सुरापान सो बार। एक चिलम हुक्का भरैं, डूबैं काली धार।।

कबीर, मानुष जन्म पाय कर, नहीं भजैं हरि नाम। जैसे कुआ जल बिना, खुदवाया किस काम।।

महाराज जी ने सत्संग में बताया कि जिन बच्चों को पिता जी ने सीने से लगाना चाहिए, उस शराबी व्यक्ति को देखकर बच्चे चारपाई के नीचे छुप जाते हैं। शराबी व्यक्ति आप भी दुःखी, धनहानि, समाज में इज्जत समाप्त तथा परिवार तथा पड़ोस व रिश्तेदारों तक को परेशान करके बद्दुआऐं प्राप्त करता है। जैसे शराबी की पत्नी व बच्चे तो कहर का शिकार होते ही हैं, पंन्तु पत्नी के माता-पिता, भाई-बहन आदि भी दिन-रात चिंतित रहते हैं। सर्व पाप का भार उस नादान शराबी के सिर पर आता है। मनुष्य जन्म प्रभु ने भक्ति करके आत्मकल्याण करने को दिया है, इसको शराब आदि में नष्ट नहीं करना चाहिए। जैसे बच्चा स्कूल में शिक्षा ग्रहण नहीं करता, आवारा गर्दी में घूमता रहता है। वह शिक्षा से वंचित रह जाता है। फिर सारी आयु मजदूरी करके जीवन निर्वाह करता है। फिर उसे याद आता है कि यदि में आवारागर्दी न करता तो आज अन्य सहपाठियों की तरह बड़ा अधिकारी होता। परन्तु अब क्या बने, यह तो उस समय सोचना था। कबीर साहेब कहते हैं किः-

अच्छे दिन पीछे गये, गुरु से किया न हेत। अब पछतावा क्या करे, जब चिड़ियां चुग गई खेत।।

इसी प्रकार यदि मनुष्य जन्म में जो प्राणी प्रभु भक्ति नहीं करता वह पशु-पक्षियों की योनियों को प्राप्त होता है। जो व्यक्ति शराब पीता है, वह शराब के नशे में खाने की भरी थाली को लात मारता है। भक्ति न करने से भिन्न-भिन्न प्राणियों की योनियों में कष्ट उठाता है। कभी वह कुत्ते की योनी धारण करता है। कुत्ता सारी रात सर्दी में भी गली में रहता है। ऊपर से वर्षा तथा सर्दियों की रात्रि में महाकष्ठ उठाता है। सुबह भूख सताती है। किसी घर की रसोई में घुसने की चेष्टा करता है। घर वाले डण्डा या पत्थर मारते हैं। कुत्ता बहुत देर तक चिल्लाता रहता है। फिर अन्य घर में घुसता है, वहाँ न जाने रोटी मिलेगी या सोटी (डण्डा)। यदि वहाँ भी डण्डा नसीब में हुआ तो वह शराबी जो अब कुत्ता बना है, गाँव के बाहर जाता है। भूख से व्याकुल हुआ मनुष्यों का मल खाता है। यदि वह नादान प्राणी जब मनुष्य शरीर में था, सत्संग में आता, अच्छे विचार सुनता, बुराई त्यागकर अपना कल्याण करवाता तथा बच्चों को अच्छी शिक्षा तथा प्रभु की दीक्षा प्रदान करवाता, सदा सुखी हो जाता। शराब का नशा कुछ समय रहता है। परमात्मा के नाम भजन से हुए सुख का आनन्द सदा साथ रहता है।

उपरोक्त सत्संग आदरणीय संत रामपाल जी महाराज का सुन कर मेरी शराब छू मंत्र हो गई। आँखों से आंसु बह चले। घर चला गया, नींद नहीं आई। 1 जनवरी

1997 को दोपहर 1.30 बजे अपनी पत्नी को साथ लेकर संत रामपाल जी महाराज के पास गया, उनसे आत्म कल्याण के लिए उपदेश प्राप्त किया। उसके बाद आज (2005) तक शराब, तम्बाकु तथा मांस छुआ भी नहीं। मेरी पत्नी ने भी सतगुरु रामपाल जी से उपदेश लिया। उस दिन के बाद वह बिल्कुल स्वस्थ है। डॉक्टरों के ईलाज तथा बीमारी की एक्स-रे आदि की रिपोर्ट आज भी हमारे घर रखी है। जन-जन को दिखाते हैं। संत रूप में आए परमेश्वर के संदेश वाहक संत रामपाल को पहचानों। मुफ्त नाम उपदेश प्राप्त करके कप्या अपना कल्याण करवाऐं।

भक्त जगदीश दास

''11000 वॉल्टेज के तार से छुड़वाना''

मैं भक्त सुरेश दास पुत्र श्री चाँद राम निवासी गांव धनाना, जिला सोनीपत जो कि फिलहाल शास्त्री नगर रोहतक (हरियाणा) का निवासी हूँ। सतगुरु जी से नाम उपदेश लेने से पहले मेरे घर की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी, परिवार का कोई भी ऐसा सदस्य नहीं था जो कि कभी बीमार न रहता हो, मेरी पत्नी को भूत-प्रेत बहुत ही ज्यादा परेशान करते थे। इतना कष्ट रहने के बावजूद हम देवी देवताओं की बहुत पूजा करते थे तथा मेरी हनुमान जी में बहुत ज्यादा आस्था थी। लेकिन घर में संकट पर संकट आते जा रहे थे। किसी भी काम में बरकत नहीं हो रही थी। पूर्ण परमात्मा सतगुरु रामपाल जी महाराज जी मेरे परिवार के होने के कारण हम उनको पूर्ण परमात्मा नहीं मान पाये जिसका खामियाजा हमें कई वर्षों तक झेलना पड़ा। तभी गांव सिंहपुरा निवासी भक्त विकास ने मुझे बताया कि आपके घर में पूर्ण परमात्मा जगत् गुरु रामपाल जी महाराज आये हुए हैं और आप कहां सोये पड़े हो, तो मैंने कहा कि काल ने हमें कष्ट ही इतना दे रखा है कि हमें वहां के बारे में जानने का टाईम ही नहीं मिला। सारा समय डाक्टरों के चक्कर काटने में चला जाता है। ऊपर से आर्थिक तंगी भी बहुत रहती है। उस भक्त ने मुझे काफी समझाया, पूर्ण परमात्मा की ऐसी दया हुई कि मैं संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेने के लिए अक्तूबर 2010 में सतलोक आश्रम बरवाला में पहुँचा। नाम उपदेश लेने के बाद सतगुरु जी ने अपना दया का पिटारा खोल दिया और मुझे वो सुख अनुभव होने लगे जिनका वर्णन इस जुबान से कर पाना बहुत मुश्किल है।

मेरी पत्नी को भूत-प्रेत सता रहे थे। सतगुरु देव जी की दया से अब वह पूर्ण रूप से ठीक है। 7 सितम्बर 2011 को मेरा लड़का मोहित उम्र 12 साल जो कि मेरे कहने पर मिस्त्री को बुलाने के लिए गया था। मेरा लड़का मिस्त्री के मकान की छत पर चढ़ गया तथा छज्जे पर चला गया। छज्जे के साथ ऊपर 11000 (ग्यारह हजार) वोलटेज के बिजली के तार थे। लड़के तथा तारों के बीच में केवल एक फीट की दूरी थी। जब वह उनके नजदीक गया तो तारों ने लड़के को खेंच लिया और लड़के के सिर पर तार चिपक गया तथा एक इन्च गहरा घुस गया व मुंह जल गया और बिजली सारे शरीर में प्रवेश करके पैर के अंगूठे की हड्डी को तोड़ कर निकलने लगी। उसी समय सतगुरु रामपाल जी महाराज आकाश मार्ग से आए तथा मेरे लड़के को बहुत ही चमकदार (तेजोमय) शरीर सहित दिखाई दिये

जैसे हजारों ट्यूबों का प्रकाश हो रहा हो। उन्होंने लड़के का हाथ पकड़ कर बिजली से छुड़ाकर छज्जे पर लिटा दिया। फिर लड़के की सतगुरु जी से बहुत बातें हुई तथा जब सतगुरु जी जाने लगे तो लड़के ने पूछा कि गुरु जी कहां जा रहे हो तो गुरु जी ने कहा कि बेटा मैं तेरे साथ हूँ तू घबरा मत। उस समय मेरे लड़के मोहित की माता जी भी वहीं पर थी। उसने यह दृश्य अपनी आँखों देखा तथा वह बहुत घबरा गई। क्योंकि लड़के के शरीर से बिजली के लपटें निकल रही थी।

उसके बाद हम लड़के को पी. जी. आई. रोहतक हॉस्पिटल में लेकर गये। वहां पर भी लड़के को गुरु जी दिखाई दिये व मेरे लड़के ने कहा कि गुरु जी मेरे साथ हैं। आप घबराओ मत। यदि आज हम गुरु जी की शरण में नहीं होते तो हमारा लड़का आज जिंदा नहीं होता तथा मेरी पत्नी को भी प्रेत मार डालते, हम उजड़ने से बच गये। यह सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की ही दया है।

सर्व पाठकों से प्रार्थना है कि मेरी सत्यकथा को पढ़कर आप जी भी सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की शरण में आकर अपना समय रहते कल्याण कराऐं तथा प्रारब्ध में लिखे कर्मों के कारण जो घटनाऐं घटनी होती हैं उन से पूर्ण रूप से बचोगे। सतगुरु रामपाल जी महाराज के सतसंग वचनों में मैंने सुना था कि पूर्ण परमात्मा कबीर जी बन्दी छोड़ हमारे सर्व पापों को नाश कर देते हैं। ऐसा ही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 161 मंत्र 2 में तथा मण्डल 9 सुक्त 80 मंत्र 2 में भी लिखा है कि यदि किसी रोगी की प्राण शक्ति क्षीण हो चुकी है तथा उसकी आयु भी शेष न रही हो तो उसके प्राणों की रक्षा करूं तथा उसे सौ वर्ष आयु प्रदान करके अर्थात् उसकी आयु बढ़ा कर साधक को सर्व सुख प्रदान करता हूँ।

सज्जनों सतगुरु रामपाल जी महाराज ने अपने अमृत वचनों में यह भी बताया है कि प्रत्येक प्राणी अपने किए कर्मों के अनुसार ही सुख व दुःख प्राप्त करता है। दुःख तो पाप कर्मों का फल है तथा सुख पुण्य कर्मों का फल है। अभी तक सर्व सन्त, आचार्य, गुरु यही कहते रहे हैं कि जो प्रारब्ध कर्म का भोग है वह तो प्राणी को भोग कर ही समाप्त करना होगा। हे सभ्य पाठकों ! सतगुरु रामपाल जी महाराज कहते हैं कि पाप कर्म से दुःख होता है। यदि पाप कर्मों का नाश हो जाए तो दुःख का स्वतः अन्त हो जाता है। यदि भक्ति करते-२ भी पाप कर्म का फल (दुःख) भोगना ही पड़े तो भक्ति की आवश्यकता ही समाप्त हो जाती है। 7 सितम्बर 2011 को हमारे प्रारब्ध कर्म के पाप के कारण मेरे पुत्र मोहित की मृत्यु होनी थी। हमारे सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की कृपा से परम पुज्य कबीर परमेश्वर जी ने हमारे पाप का नाश कर दिया तथा मेरे बच्चे की जीवन रक्षा करके आयु बढ़ा दी। यदि 7 सितम्बर 2011 को प्रारब्ध कर्म के फलस्वरूप मेरा बेटा मर जाता तो हम सर्व परिवार के सदस्य भक्ति त्याग देते तथा नास्तिक हो जाते। क्योंकि हमें उस समय परमात्मा का पूर्ण ज्ञान नहीं था। अब भगवान पर अत्यधिक विश्वास हो गया है। यह भी विश्वास हो गया कि परम पूज्य कबीर जी ही परमेश्वर हैं। ये पाप नाशक सर्व सुखदायक व पूर्ण मोक्षदायक हैं तथा सतगुरु रामपाल जी महाराज उन्हीं के भेजे उनके अवतार आए हैं। अतः आप जी से पुनः प्रार्थना है कि

अविलम्ब सतलोक आश्रम बरवाला में पहुँचे तथा उपदेश लेकर कल्याण कराऐं। आप जी से प्रार्थना करने का मेरा उद्देश्य यह है कि मेरे जैसे दुःखीया बहुत हैं। मेरी उपरोक्त आत्मकथा को पढ़कर विचार करके वे भी मेरे की तरह संकटों का निवारण करा सकेंगे तथा सुखी हो सकेंगे।

यह संसार समझदा नाहीं, कहंदा शाम दोपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे (समय) नूं।।

भक्त सुरेश दास पुत्र श्री चाँद राम,
शास्त्री नगर, रोहतक, मोब. नं. 09829588628

'भक्त दीपक दास के परिवार की आत्म कथा''

।। बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज जी की दया ।।

मुझ दास का नाम दीपक दास पुत्र श्री बलजीत सिंह, गांव महलाना जिला सोनीपत है। हम तीन पीढ़ियों से राधास्वामी पंथ डेरा बाबा जैमल सिंह से नाम उपदेशी थे। सबसे पहले मेरी दादी जी की माता जी यानि मेरे पिता जी की नानी जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा था। उसके बाद मेरे दादा-दादी जी और फिर मेरे माता-पिता जी ने भी राधास्वामी पंथ के संत गुरविन्द्र सिंह जी से नाम लिया हुआ था। हम भी गुरविन्द्र जी महाराज को पूर्ण पुरूष मानते थे तथा इस पंथ में पूर्ण श्रद्धा यह सोच कर रखते थे कि यह संसार में प्रभु प्राप्ति का श्रेष्ट पंथ है और उनके विशाल डेरे और विशाल संगत समूह को देखकर विशेष आकर्षित थे और सेवा करने के लिए डेरा बाबा जैमल सिंह व्यास (पंजाब) में तथा छत्तरपुर पूसा रोड़ दिल्ली भी जाते रहते थे। लेकिन इस पंथ में उम्र विशेष में नाम दिया जाता है इसलिए अभी मैं इस पात्रता के लिए अयोग्य था।

मेरे माता-पिता जिस दिन छत्तरपुर से नाम लेने के लिए गये हुए थे उसी दिन मेरे छोटे भाई (उम्र 5) के हाथ से पड़ोस के एक बच्चे की आँख में कोई वस्तु अनजाने में लग गई। जब शाम को नाम उपदेश लेकर मेरे माता-पिता वापिस आए। उसी दिन से हमारा व हमारे पड़ोसियों का वैर हो गया कि आपके बेटे ने हमारे बेटे की आँख में जानबूझ कर चोट मारी है और उसी दिन से हमारे ऊपर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा।

उसी दौरान मेरे दादा जी का बीमारी के कारण देहांत हो गया जब मेरे दादा जी का पार्थिक शरीर दूसरे कमरे में रखा हुआ था तो उस समय मेरी दादी जी, जिनका देहांत हुए 12 वर्ष हो चुके थे, मेरी बुआ प्रेमवती में प्रेत की तरह प्रवेश करके बोली। (मेरी दादी ने भी राधास्वामी पंथ से प्राप्त पाँच नामों की बहुत ज्यादा साधना कर रखी थी। वे नियमित रूप से तीन बजे ही व दिन में भी भजन व सुमरन करने के लिए बैठ जाती थी और घण्टों राधास्वामी पंथ के बताये नामों का जाप व अभ्यास किया करती थी।) कि आज तुम्हारे दादा जी का जीवन संस्कार समाप्त हो गया इसलिए मैं तुम्हें संभालने आई हूँ। मेरी दादी जी को जीवित अवस्था में सांस की बीमारी के कारण खांसी रहती थी वे बारह साल के बाद भी

ज्यों की त्यों ही खांस रही थी। तब हमने पूछा कि ''दादी जी आप तो बहुत दुःखी दिखाई दे रही हो, क्या आप सतलोक नहीं गई''। तब मेरी दादी ने कहा कि ''बेटा मैंने गलत साधना के कारण अपना अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ कर दिया और अब मत्यु के पश्चात् भूत योनि में कष्ट उठा रही हूँ। मैं कहीं सतलोक में नहीं गई'' मेरी माता जी ने आश्चर्य के साथ पूछा कि ''माँ ! क्या आपको आपके गुरू चरण सिंह जी महाराज ने नहीं संभाला? तब मेरी दादी जी ने अत्यंत दुःख के साथ कहा कि ''उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं कि और मैं आज भी ऐसे ही दुःखी हो रही हूँ''।

उस घटना के दो साल बाद एक दिन मेरी दूसरी बुआ कमला देवी के अंदर मेरे दादा जी प्रेतवत् प्रवेश करके बोले और कहा कि ''मैं तो बहुत दुःखी हूँ तथा मेरी कोई गति नहीं हुई, मैं नहाना चाहता हूँ''। यह सुनकर मेरी माता जी ने दुःख व आश्चर्य से कहा कि ''आप तो सतलोक में गए थे, क्या वहाँ पर नहाने के लिए पानी भी नहीं है''? लेकिन दादा जी ने कोई जवाब नहीं दिया। फिर मेरी माता जी मेरे दादा जी (यानि जो कि मेरी बुआ कमला देवी में प्रेतवत् प्रवेश थे) को नहलाने लगी तो वह कहने लगे कि ''बेटी मैं अपने आप नहा लूंगा'' तो मेरी माता जी ने दादा जी को हालांकि वह मेरी बुआ जी में प्रवेश थे, इसलिए बुआ वाले कपड़े ही पहना दिये, तो मेरा दादा जी बोले ''बस बेटी मेरी धोती ले आओ, मैं बांध लूंगा''। मेरी माता जी ने ऐसे ही एक चद्दर पकड़ा दी, जो उन्होंने कपड़ों के ऊपर से ही लपेट ली। फिर कहा कि ''मेरे लिए चाय बनाओ और जल्दी-२ में ही चाय पी ली''। मैंने पूछा कि दादा जी! आप सतलोक नहीं गए तो उन्होंने कहा कि ''बेटा मैं तो बहुत कष्ट में हूँ''। मेरी माता जी ने फिर पूछा कि आप तो राधास्वामी हजूर चरण सिंह जी महाराज से नाम उपदेशी थे, भक्ति भी करते थे, क्या उन्होंने आपकी कोई संभाल नहीं की? तब मेरे दादा जी (जो मेरी बुआ कमला देवी में प्रेतवत् प्रवेश थे) ने कहा कि ''उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं की, मैं तो ऐसे ही धक्के खाता फिर रहा हूँ।''

उसी दौरान मेरी आँखें भी इतनी कमजोर हो गई थी कि मुझे कम दिखाई देने लग गया था और चश्मा बार-बार बदलवाना पड़ा था। मैं एक दोस्त के साथ पढ़ने के लिए उसके पास जाता था। वहाँ पर भक्त संतराम जी ने मुझे पूर्ण ब्रह्म के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज की महिमा सुनाई तथा कहा कि आप सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो आपकी आँखें ठीक हो जाएगी तथा कहा कि इन्हीं कष्टों और दुःखों से हम जीवों को निकालने के लिए परमेश्वर कबीर साहेब संत का रूप धारण करके आते हैं। मैंने कहा कि ''मेरे माता पिता जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा है।'' भक्त संतराम जी ने कहा कि ''वह पंथ पूर्ण नहीं है, उनकी भक्ति साधना से न तो सतलोक प्राप्ति होगी और न ही जीवन में कभी कर्म की मार टल सकेगी, उसे तो सिर्फ कबीर साहेब का नुमाईदा पूर्ण संत ही टाल सकता है।''

मेरे पिता जी को साँस की बिमारी थी, दस कदम चलने पर ही वे बेहाल हो

जाते थे और सांस की बीमारी के कारण दम फूलने लगता था, हाई और लो ब्लड प्रैशर की भी बीमारी थी। मेरे पिता जी को इलैक्शन डयूटी के दौरान हार्ट अटैक हुआ पर कर्म संस्कार वश वे बच गये, लेकिन तब हम यह सोचते रहे कि राधास्वामी पंथी संत गुरविन्द्र सिंह जी महाराज ने हार्ट अटैक से बचा लिया, बड़ी रजा की।

लेकिन उसके बाद तो हमने सर्दियों की एक-एक रात में अपने पिता जी का एक-एक साँस टूटते देखा है, बिल्कुल मंत प्राय हो जाते थे और सिवाय बैठ कर रोने के हम कुछ नहीं कर पाते थे, क्योंकि दवाईयों का भी आखिर आ चुका था, डाक्टर जितनी ज्यादा से ज्यादा डोज दवाई की बढ़ा सकते थे, बढ़ा चुके थे। इससे ज्यादा वे खुराक को नहीं बढ़ा सकते थे। मेरी माता जी डेरे बाबा जैमल सिंह से लाया हुआ प्रशाद उन्हें खिलाती और राधास्वामी पंथी गुरूविन्द्र सिंह जी महाराज की मूर्ति के सामने बैठ कर प्रार्थना करती और रोती। उसी समय मेरे छोटे भाई को ओपरे (प्रेत प्रकोप) की शिकायत रहने लगी। वह रात को चमक कर उठ जाता था तथा कहता था कि ''कोई मेरा पैर पकड़ कर खींच रहा है और मुझे सोने नहीं दे रहा है'' वह भी बहुत बीमार रहने लगा। पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर जी की दया से मुझ दास को 8 अक्तूबर 1998 को सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश प्राप्त हुआ। सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की असीम कंपा से बीस दिन के अंदर ही मेरा चश्मा उतर गया तथा मैंने दवाई खाना भी छोड़ दिया। मुझे सतगुरू रामपाल जी महाराज पर पूरा विश्वास हो गया था। भक्त संतराम जी ने घर पर आकर मेरे माता पिता जी को भी समझाया कि आप पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब के नुमाईदे पूर्ण संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो, आपके सर्व कष्टों का निवारण हो जाएगा।

उसके बाद मैंने भी अपने माता पिता को समझाया तो वे बोले ''हम पहले तो राधास्वामी थे, अब सन्त रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेगें, दुनिया क्या कहेगी''? तब मैंने कहा कि ''पिता जी, यदि एक डाक्टर से इलाज नहीं हो रहा तो क्या दूसरा डाक्टर नहीं बदलते?'' परन्तु दुःखी बहुत थे, कुछ समय बाद कबीर परमेश्वर जी की शरण में आ गये और राधास्वामी पंथ के उन पांच नामों का त्याग करके, पूर्ण संत सतगुरु रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश ले लिया।

सतगुरू कबीर साहेब जी कहते हैं ''शरण पड़े को गुरू संभाले जान के बालक भोला रे'' सारे परिवार के नाम लेने के साथ ही हमारे अच्छे दिन शुरू हो गये। मेरे भाई का ओपरा (प्रेतबाधा) ठीक हो गया, पिता जी का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो गया, पहले वे दस कदम भी नहीं चल सकते थे, अब एक आदमी के साथ लग कर चीनी की बोरी को उठा देते हैं। आज हमारा परिवार पूर्ण परमात्मा के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज जी की शरण में उनकी दया से पूर्ण सुखी है।

परन्तु हमारे दादा-दादी व पिता जी की नानी जी के मनुष्य जीवन का जो नुकसान हुआ उसकी भरपाई किसी भी प्रकार से नहीं हो सकती। यदि किसी आदमी की जान बचाने के लिए लाखों और करोड़ों रूपये खर्च कर दिए जाए और

उसकी जान बच जाए तो उसे उस खर्च हुए पैसे का कोई मलाल नहीं होता, और सोचता है कि चलो जान तो बची। लेकिन आज चाहे कितनी भी कीमत चुकाने पर भी मेरे दादा-दादी का जीवन जो कि शास्त्रविरूद्ध साधना (राधास्वामी पंथ द्वारा बताए पाँच नामों की साधना) करने से बिल्कुल व्यर्थ चला गया (वे भूत और पितर की योनियों में कष्ट भोग रहे हैं), वापिस नहीं आ सकता। जो घिनौना मजाक ये नकली सन्त और पंथ सर्व समाज के साथ कर रहे हैं, क्योंकि चौरासी लाख योनियाँ भोगने के पश्चात् मिलने वाले अनमोल मनुष्य जीवन को, जो पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने का एकमात्र साधन है उसे बर्बाद कर रहे हैं। इस महाक्षति की आपूर्ति किसी भी कीमत से नहीं की जा सकती।

सतगुरू जी! आपने बड़ी दया की हम तुच्छ जीवों पर जो अपना सत्य ज्ञान देकर अपनी शरण में बुला लिया अन्यथा हम भी पीढ़ी दर पीढ़ी से प्राप्त इस शास्त्रविरूद्ध साधना में अपने मनुष्य जन्म को समाप्त करके कहीं भूत और पितरों की योनियों में चले जाते और इस शास्त्रविधियुक्त सत्भक्ति से वंचित रह जाते।

सर्व बुद्धिजीवी समाज से प्रार्थना है कि अभी भी समय है। इस सत्य ज्ञान को समझे तथा निष्पक्ष होकर निर्णय करें। बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज के चरणों में आकर सत्भक्ति प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन का कल्याण करवाएं।

भक्त दीपक दास
मोब. +918571973093

परमेश्वर की असीम कंपा

बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज की जय

यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 में प्रमाण है कि पूर्ण परमात्मा पापी से भी पापी व्यक्तियों के भी सम्पूर्ण पापों का नाश करके भयंकर रोगों से भी मुक्त कर देते हैं। जिसका मैं जीता जागता उदाहरण हूँ।

मैं केशव मैनाली पुत्र श्री इन्द्र प्रसाद मैनाली गाँव विकास समिति हरिऔन, जिला सर्लाही, नेपाल का निवासी हूँ और वर्तमान में काठमाण्डू उपत्यका टिमी भक्तपुर में घर बनाकर रहता हूं। मैं चुरे भावर (नेपाल) नाम के राजनैतिक पार्टी का अध्यक्ष एवं पूर्व सभासद हूँ। मेरा मोबाईल नं. +00977-9841892583 है। मेरे ऊपर सतगुरू रामपाल जी महाराज ने चमत्कारी कंपा कर मुझे और मेरे परिवार के सम्पूर्ण दुःखों को नाश कर सुखी बना दिया।

संसार की नजर में मैं सुखी और सम्मानित जीवन जी रहा था परन्तु मैं अपनी बीमारियों के कारण बहुत ही दुःखी था। मैं पिछले 20 बर्षो से खूनी बवासीर से पीड़ित था और शौच करते समय अत्यधिक पीड़ा सहन करनी पड़ती थी साथ ही 8 वर्षो से क्रोनिक ब्रोंकाइटिस से पीड़ित था। राजनैतिक कर्मी होने के कारण बहुत लोगों से मिलना पड़ता था और हमेशा मुख पर कपड़ा या हाथ रखकर बोलना पड़ता था। मैंने अपने रोगों के इलाज के लिए अच्छे से अच्छे डाक्टरों को दिखाया। परन्तु कोई फायदा नहीं हुआ। जबकी मैंने धर्म के नाम पर अज्ञानी संतो के चक्कर

में पड़कर अपने जीवन के 62 वर्ष बर्बाद चुका था।

मुझे यह बातें सतगुरू रामपाल जी महाराज जी से नाम उपदेश लेने के बाद पता चला। नेपाल संसद का सभासद होने के कारण सरकारी खर्चों पर मैं संसार के किसी भी डाक्टर से अपने रोग का ईलाज करवा सकता था। परन्तु नेपाल के मेडिकल बोर्ड ने इसके लिए सिफारिश नहीं की क्योंकि उनके अनुसार मेरा रोग लाईलाज था और कोई भी डाक्टर मुझे ठीक नहीं कर सकता। अब तो मुझे लगता था कि जीवनपर्यन्त दुःख भोगना पड़ेगा और हमेशा दवा खाते रहना पड़ेगा।

एक दिन मैं शोकमग्न बैठा था मुझे मेरे मित्र भक्त भोला दास जो कई वर्षों से सतगुरू रामपाल जी महाराज का शिष्य था मेरे दुःखों को सुनकर सतगुरू जी से उपदेश लेने पर आपके दुःखों का अवश्य नाश होगा। यह कहकर विश्वास दिलाने लगा। मैं तथाकथित बड़े-बड़े संतों की संगत करके थक चुका था। उस मित्र की वाणी मेरे लिए अंधेरे में दीपक के प्रकाश के समान मेरे मन को छू गयी। मैं तीसरे दिन ही सतलोक आश्रम चण्डीगढ़ रोड बरवाला, जिला हिसार, हरियाणा (भारत) के लिए चल दिया तथा अपनी पत्नी को भी लिया क्योंकि घुटने की हड्डी घिस जाने के कारण वह भी बहुत परेशान थी और उसकी आँखों में जल बिन्दु नामक एक लाईलाज रोग था तथा अपने छोटे पुत्र की पत्नी को भी साथ में ले लिया। मुझे रास्ते में नेपाल के कई भक्तजन मिल गए जो सतलोक आश्रम में जा रहे थे इस प्रकार मैं बिना कोई परेशानी सतलोक आश्रम आ गया।

मैं संतो व महंतो के स्वार्थ से परिचित था तथा सतगुरू रामपाल जी महाराज का कोई पुस्तक व प्रवचन नहीं सुना था, किसी के कहने मात्र से आ गया था। अतः आते ही नाम उपदेश लेने के लिए तैयार नहीं था। मेरा सौभाग्य ही था कि मेरा आना ही सतसंग समागम के समय हुआ और मुझे सतगुरू देव का सतसंग सुनने को मिला जिसमें मुझे पता चला कि इस संसार के सभी धर्मगुरू, सभी पंड़ित, सभी पुरोहित अपने निजी स्वार्थ के लिए धर्म के नाम पर लोगों को काल-जाल में फँसाकर हम भोली-भाली आत्माओं को नरक भेजने का प्रपंच रच रहे हैं वे न तो कभी परमेश्वर से मिले है और न ही उन्हें परमेश्वर की सत्यभक्ति का ज्ञान है और यह काम वे चन्द रूपयों तथा समाज में सम्मान पाने मात्र के लिए कर रहे हैं। परन्तु मैं फिर भी नाम उपदेश लेने के लिए तैयार नहीं हुआ लेकिन मेरी पत्नी तुरन्त नामदान के लिए तैयार थी। क्योंकि नाम दान लिए बिना गुरू दर्शन तथा गुरू का आर्शीवाद मिलना संभव नहीं था। यह शायद मुझ पर राजनीति का ही रंग शेष था जो मैं किसी का विश्वास नहीं करता था। फिर भी आपस में सलाह मशवरा करके हम तीनों ने नाम उपदेश तारीख 2 मई 2012 को लिया और गुरू जी के दर्शन के लिए गया। वहाँ पर दया के सागर हम पर कृपा दृष्टि करने के लिए जैसे तैयार खड़े थे। जैसे ही मैंने अपने रोगों के बारे में कहा तो सतगुरू देव जी बोले ”सब ठीक हो जाएगा“ का आर्शीवाद मेरे सिर पर हाथ रखकर दिया और मेरे साथ चमत्कार हो गया। सुबह शौच जाने पर पाखाने से खून गिरा और उसके साथ ही बवासीर मानो समाप्त ही हो गया। दो दिन आश्रम में रहने पर क्रोनिक

ब्रोंकाइटिस करीब 80 प्रतिशत ठीक हो गया था जो अब पूरा ठीक हो चुका है। मात्र महीने दो महीने में कभी-कभी कुछ खाँसी हो जाती है। पत्नी के घुटने का रोग भी ठीक हो गया। काठमाण्ड़ो आने पर काठमाण्डू के उसी अस्पताल में उनकी आँख का पुनः परीक्षण करवाया। डाक्टर भी यह देखकर आश्चर्यचकित हो गए कि उनकी आँखो में जल बिन्दु नामक रोग का कोई नामो निशान भी नहीं है और आँखे पूर्णतया ठीक हैं।

मेरा रोग मुक्ति का चमत्कार परिवार, रिश्तेदारी तथा पड़ोस में चारों तरफ फैल गया। मेरे परिवार के अन्य सदस्य भी किसी न किसी रोग से परेशान थे। जैसे मेरे बड़े भाई जो खुद एक डाक्टर है उनका सारा शरीर फूल (Swelling) जाता था। मेरी बेटी को महीनावारी (मेनसेज) के समय असाध्य रूप से पेट में दर्द होता था। मेरी दूसरी बेटी जो पेशे से वकील है साइटिका और गले की हड्डी घिसने के रोग से जीवन से निराश हो चुकी थी तथा मेरी बहन का पति भी जल बिन्दु रोग से पीड़ित था। सभी मेरे ऊपर सदगुरूदेव की कृपा से बहुत ही प्रभावित हुए। तब तक मैं आश्रम के नियमों और भक्ति भाव से थोड़ा बहुत परिचित हो गया था। मैंने सभी को ”ज्ञान गंगा“ पुस्तक अच्छी तरह पढ़ने के लिए प्रेरित किया। अगली बार जब मैं आश्रम आने लगा तो सभी को साथ ले लिया। सभी ने नाम उपदेश लिया विश्वास के साथ भक्ति की। आज सभी रोग मुक्त होकर सुखी जीवन जी रहे हैं।

सतगुरू रामपाल जी महाराज पूर्ण परमात्मा के प्रतिरूप नहीं ”पूर्ण परमात्मा“ ही हैं जो अपने को छुपाकर रख रहें हैं और अपने को ”पूर्ण परमात्मा का दास“ कहते हैं और धरती पर फँसे हुए जीवों को बन्धन मुक्त करके सतलोक ले जाने के लिए आए हैं। हमारे सदग्रन्थों में प्रमाण है कि जब कलयुग का पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीत जाएगा तो तारणहार संत, जग तारण के लिए धरती पर आऐंगे।

”कबीर, पाँच हजार अरू पाँच सौ पाँच जब कलयुग बीत जाए
महापुरूष फरमान तब जग तारण को आए“।।

सर्व प्रेमी भक्तों! समय आ गया है, पूर्ण संत भी आ गए हैं और ज्ञान अमृत वर्षा कर रहें हैं। वर्तमान के सभी नकली संत महंत रूपी ठगों से बचो और जल्द से जल्द सदगुरू के चरण में आकर निःशुल्क नाम उपदेश लेकर अपना कल्याण कराओ और पूर्ण मोक्ष प्राप्त करो। ।। सत साहेब ।।

केशव प्रसाद मैनाली (दास),
काठमांण्डू (नेपाल)
फोन नं. +00977-9841892583

❖❖❖

➢ सतलोक आश्रम की अन्य पुस्तकें (आध्यात्मिक ज्ञान गंगा, ज्ञान गंगा, गहरी नजर गीता में, गीता तेरा ज्ञान अमृत, सृष्टि रचना सम्पूर्ण, मानवता का ह्रास तथा विकास आदि) हमारी वेबसाईट (www.jagatgururampalji.org) से डाउनलोड कर सकते हैं।